Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Samaj Foundation Chennai

BHUGOL 1938 G.K.V.

omain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113723

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

RF-73

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र
सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

सितम्बर १९३८

गु. पुस्तकालय
५-१०-३८

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी.ए.

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"-कार्यालय

संक्षिप्त परिचय

१९२४ के मई महीने में "भूगोल" मासिक पत्र स्थापित किया गया। गत १९ वर्षों में इस पत्र ने जो भूगोल सम्बन्धी साहित्य तयार किया है उसका पता गत १९ वर्षों की फाइलों और साथ में दिये हुए सूची-पत्र से लग सकता है। पर सच्चा भूगोल-साहित्य घर बैठे कल्पनामात्र या केवल विदेशी पुस्तकों के आधार पर नहीं लिखा जा सकता। इसके लिये भ्रमण की आवश्यकता है। इसी लिये "भूगोल" के यात्रा-विभाग की ओर से समस्त भारतवर्ष, लंका, बरमा, ईरान, इराक़, सिरिया, पेलेस्टाइन, मिस्र, सूडान, टर्की, बलगेरिया, यूगोस्लेविया, हङ्गरी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवेकिया, जर्मनी, डेन्मार्क, बेल्जियम, फ्रांस, इंगलैंड, स्काटलैंड, आयरलैंड, नार्वे, स्वेडन, फिनलैंड और रूस की यात्रा की गई।

हमारा विश्वास है कि देश की आज़ादी प्राप्त करने और कायम रखने के लिये अपने देशवासियों को संसार के प्रत्येक भाग का ठीक ठीक ज्ञान रखना आवश्यक है। भावी स्वाधीन भारत के राजदूत जब दूसरे देशों में जायेंगे तो उन देशों का पूरा ज्ञान होना चाहिये। इसी लक्ष्य को सामने रखकर आपका "भूगोल" कार्यालय, भूगोलसम्बन्धी दुर्लभ, पुस्तकों और नक़्शों का संग्रह करता रहा है।

आपका कर्तव्य—हम चाहते हैं कि यह काम अधिक संगठित ढंग से और अधिक तेज़ी से हो। इसलिये आप से प्रार्थना है कि आप इस राष्ट्रीय काम में हमारा हाथ बटावें। आप स्वयं और अपने मित्रों को "भूगोल" का ग्राहक बनाकर हमारी सहायता कर सकते हैं। जितने अधिक ग्राहक होंगे उतनी ही आसानी से हम यात्राक्रम और पुस्तक संग्रह को बढ़ा सकते हैं।

जिस तरह विदेशी वस्त्र को रोकने के लिये खादी का प्रचार आवश्यक है उसी तरह हर साल लाखों रुपयों की बाहर से आने वाली भौगोलिक पुस्तकों को रोकने के लिये आवश्यक है कि हिन्दी में उनकी बराबरी करने वाली और उनसे बढ़कर पुस्तकें तैयार हों। अभी तक हिन्दी में लगभग २० पुस्तकें तैयार हैं। आप उनकी बिक्री बढ़ाकर दूसरी पुस्तकों की रचना में सहायक हो सकते हैं।

भावी कार्य-क्रम—देहाती जनता और विद्यार्थियों के लिये हमने देश-दर्शन नाम की पुस्तक-माला का आयोजन किया है। इसमें २०० पुस्तकें होंगी। एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होगी। पुस्तक चित्रों और नक़्शों से खूब सुसज्जित होगी। निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जायगी। काग़ज़ कवर, छपाई सफ़ाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ होगी। फिर भी डेढ़ सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) होगा। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ४०) होगा। इस सम्बन्ध में मध्यप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री और वर्तमान प्रधान मन्त्री पं० रविशङ्कर शुक्ल जी की सम्मति पढ़िये और देश-दर्शन के ग्राहक बनकर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने में श्रेय लीजिये। आशा है आप लौटती डाक से ही अपना आर्डर भेजने की कृपा करेंगे।

निवेदक—
रामनारायण मिश्र

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—संसार की हवाई फौज	१
२—दक्षिण दिशा में (विद्या भूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.) ...	४
३—गुप्त कालीन व्यापार	८
४—पाताल प्रवेश (ठा० कर्ण सिंह सब० डि० इं० बांदा) ...	१२
५—मध्य भारत की भौगोलिक परिस्थिति एवं उसका प्रभाव (लाल भानु सिंह बाघेल) ...	१३
६—आस्ट्रेलिया की लोमड़ियाँ	१५
७—जातियों का कोष	१६
८—लोहा और फौलाद	२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113723
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
COMPILED
113723

"भूगोल"

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, विहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १६] आश्विन सं० १९९५, सितम्बर १९३८ [सं० ५

संसार की हवाई फौज

लड़ाई छिड़ जाने पर हवाई जहाज़ बनाने वाले कारख़ाने शायद उतनी तेज़ी से तयार न कर सक्ते जितनी तेज़ी से वे नष्ट होते हैं। इस लिये हर एक देश इस बात का प्रवन्ध करता है कि हर एक लड़ने वाले हवाई जहाज़ के पीछे तीन चार दूसरे जहाज़ ज़रूरत के लिये तयार रहें।

इस प्रकार यदि किसी देश में १००० सैनिक हवाई जहाज घोषित किये जाते हैं तो इसका अर्थ यह होता है कि वहाँ तीन या चार हजार हवाई जहाज़ और तयार रहते हैं। इस लिये किसी देश के सैनिक हवाई जहाजों का ठीक ठीक पता लगना कठिन हो जाता है। जर्मनी ने अपनी हवाई शक्ति और भी गुप्त रक्खा। इस लिये जर्मनी के हवाई जहाज़ों की संख्या किसी ने २५,००० किसी ने ३७००, किसी ने १०,००० बतलाई पर इसमें संदेह नहीं कि इस समय जर्मनी के सैनिक हवाई जहाजों की संख्या १५०० से कम नहीं है। जर्मनी में हवाई जहाज तो तेज़ी से बने लेकिन उनके चलाने वाले उड़ाके उतनी तेज़ी से तयार न किये जा सके। इनको सिखाने में अक्सर दुर्घटनायें हुईं जिन्हें जर्मन सरकार को अक्सर छिपाना पड़ा। जर्मनी के सैनिक हवाई जहाज़ों में बाम्ब गिराने वाले कई प्रकार के बाम्ब गिराने वाले हैं। इन में आधे से अधिक बड़े बड़े जहाज़ हैं जो एक टन (२७ मन) से अधिक बाम्ब एक बार में ले जा सकते हैं। इनका रेडियस या अर्द्ध व्यास जाकर लौट आने का फासला ४०० मील से ऊपर है। इस पर जर्मनी के सैनिक हवाई जहाज़ योरुप की बड़ी बड़ी राजधानियों में बाम्ब गिराकर बड़ी आसानी से लौट आ सकते हैं। जर्मन मशीनें अच्छी अवश्य गिनी जाती हैं लेकिन स्पेन में जिन जर्मन हवाई जहाजों का प्रयोग हुआ। उनकी रफ़ार रूसी इटेलियन और अमरीकन हवाई जहाजों के मुकाबिले में कम रही। उनकी संहारक शक्ति भी कम थी। १२००० फुट से अधिक ऊँचाई पर इन जहाज़ों की योग्यता में और भी कमी हो गई। लेकिन जर्मनी में जो नये ढंग के हवाई जहाज़ बन रहे हैं उनकी रफ्तार फी घंटे २०० मील है। जर्मनी में हवाई जहाज़ों की संख्या भी बढ़ रही है। शीघ्र ही यह संख्या ढाई या तीन हज़ार हो जायगी। इतने ही हवाई जहाज़ रिज़र्व रहेंगे।

बड़ी लड़ाई के बाद जर्मनी में लड़ाई के हवाई जहाज़ खुल्लम खुल्ला न बन सके। अतः जर्मनी ने सिविल (जन साधारण के काम वाले) हवाई जहाज़ तयार करने में अपनी योग्यता बढ़ाई। लेकिन सिविल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फौजी जहाजों में बदले जा सकते थे। इस तरह के २०० सिविल हवाई जहाज बाम्ब गिराने वाले जहाजों में बदले जा सकते हैं। पर अब जर्मनी में खुल्लम खुल्ला फौजी तैयारी हो रही है। इस लिये इस प्रकार के अर्द्ध सैनिक हवाई जहाजों के बढ़ाने की आवश्यकता न रही। फिर भी इस तरह के जहाज शान्ति के समय सिखाने और लड़ाई के समय लड़ने के काम आ सकते हैं। जर्मनी में हवाई जहाज और खेल की कई संस्थायें हैं। इनमें ५००० जर्मन हवाई जहाज उड़ाने की शिक्षा पा रहे हैं। वे रिजर्व का काम दे सकते हैं और लड़ाई के समय कमसे कम ५०० पाइलट (उड़ाके) सेना के लिये दे सकते हैं। इटली ने भी बड़ी गुप्तरीति से अपनी हवाई सेना बढ़ाई। एबीसीनिया की लड़ाई के बाद इटली ने बड़ी तेज़ी से हवाई जहाज़ों की फौज बढ़ाई। इस समय वहां लगभग १५०० हवाई जहाज़ हैं और वर्ष के अन्त में २००० हो जायँगे। इनमें एक तिहाई जहाज़ बाम्ब गिराने वाले हैं। वे ज़मीन को चीज़ों (फ़ौज, शहर आदि) पर निशाना लगाकर बाम्ब गिराने वाले हैं। एबीसीनिया की नाजुक स्थिति को सँभालने के लिये लगभग २०० हवाई जहाज़ इरीट्रिया और इटेलियन सुमालीलैंड में हैं। इतने ही जहाज लिबिया और डोडेकनीज़ (द्वीप समूह) में हैं। जब से इटली ने स्पेन की गृहकलह में हस्तक्षेप करने का निश्चय किया तब से बहुत से हवाई जहाज़ इटली ने स्पेन में भेज दिये हैं इटली अपने हवाई जहाज़ों को शांति के समय सिखाने के लिये और लड़ाई के समय लिबिया और एबीसीनिया भेज सकती है। खतरे के समय दूर दूर बिखरे हुए हवाई जहाज़ बड़ी आसानी से फिर इटली में इकट्ठे किये जा सकते हैं। योरुप की दूसरी शक्तियों के हवाई जहाज इतनी तेजी से उपनिवेशों से खतरे के समय घर नहीं लौट सकते हैं। इटली में २२० मील प्रति घंटे की चाल से उड़ने वाले ऐसे नये जहाज़ बन रहे हैं जिनका अर्द्ध व्यास ५०० मील है अर्थात् वे ५०० मील उड़ा कर बाम्ब गिराने के बाद फिर वापिस लौट सकते हैं। इस प्रकार ये जहाज़ लिबिया से उड़ कर सिकन्दरिया पोर्ट सईद और दक्षिणी ग्रीस यूनन में बाम्ब गिराकर लौट सकते हैं। भूमध्यसागर के अत्यन्त दूर के सिरे

इन हवाई जहाज़ों की पहुँच के बाहर कहे जा सकते हैं। लेकिन इटली की भौगोलिक स्थिति खतरे से खाली नहीं है। इटली एक तंग और लम्बा देश है। तट बहुत लम्बा है। तट या स्थल सीमा के पास बसे हुए नगरों पर बड़ी आसानी से बाम्ब गिराये जा सकते हैं।

फ्रांस में कुछ समय तक हवाई जहाज़ों का बेड़ा सब से अधिक था, फिर फ्रांस पिछड़ गया। १९३७ में फ्रांस में लगभग १४०० हवाई जहाज थे। इनमें १००० हवाई जहाज़ घर पर रहते थे, शेष उत्तरी अफ्रीका, लेवांट (सिरिया) फ्रेञ्च इण्डो चीन आदि उपनिवेशों में बँटे हुए थे। फ्रांस के पुराने जहाज़ नये ढंग के नहीं हैं। फ्रांस में बाम्ब गिराने वाले हवाई जहाज़ जर्मनी से कम हैं। लेकिन इस समय फ्रांस अपने हवाई जहाज़ों की संख्या को ड्योढ़ा कर रहा है। नये ढंग के जहाज़ कहीं अधिक भारी बाम्ब ले जा सकेंगे। ब्रिटेन में कुछ समय पहले केवल ८८० लड़ाका जहाज़ थे। लेकिन योरुप की स्थिति बिगड़ने लगी। एबीसीनिया की लड़ाई ने ब्रिटेन को चौकन्ना कर दिया। भूमध्यसागर की दुर्घटनाओं ने उसे डरा दिया। १९३६ में यहाँ ११०० सैनिक हवाई जहाज़ थे। इनमें २०० भारतवर्ष और ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे भागों में थे। घर पर केवल ९०० हवाई जहाज़ रह गये। लेकिन हवाई जहाज़ों की संख्या तेज़ी से बढ़ाई जा रही है। कुछ समय में २००० हो जायगी। २२० बढ़िया मशीनें हैं। ५ नये एअरक्राफ्ट केरियर बन रहे हैं। इनसे ७०० लड़ाका जहाज़ उपनिवेशों में पहुँचाये जा सकते हैं। ब्रिटेन के सिंगिल सीट फाइटर (हवाई जहाज़) दुनिया भर में सब से तेज़ हैं। वे एक घंटे में २८० मील की चाल से उड़ते हैं। कुछ जहाज़ ३०० मील फी घंटे की चाल से उड़ते हैं। बाम्ब गिराने वाले भारी हवाई जहाज़ २२० मील फी घंटे की चाल से उड़ते हैं। वे २००० मील तक धावा मार सकते हैं।

रूस का हवाई बेड़ा योरुप भर में सब से अधिक बड़ा है। यहाँ लगभग ४००० सैनिक हवाई जहाज़ हैं। इनमें लगभग तीन चौथाई लड़ने वाले जहाज़ हैं। ४०० बाम्ब गिराने वाले भारी हवाई जहाज़ हैं जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूँकि रूस का राष्ट्र कई हजार मील तक फैला हुआ है इसलिये रूस ने इस बात पर विशेष ध्यान दिया कि उसके लड़ाका जहाज़ बहुत दूर जाकर लौट सकें। स्पेन की गृह-कलह में रूस के हवाई जहाज जर्मनी और इटली के जहाज़ों से बहुत बढ़िया सिद्ध हुए। रूस के उड़ाका लोगों को बहुत अच्छी शिक्षा दी जाती है।

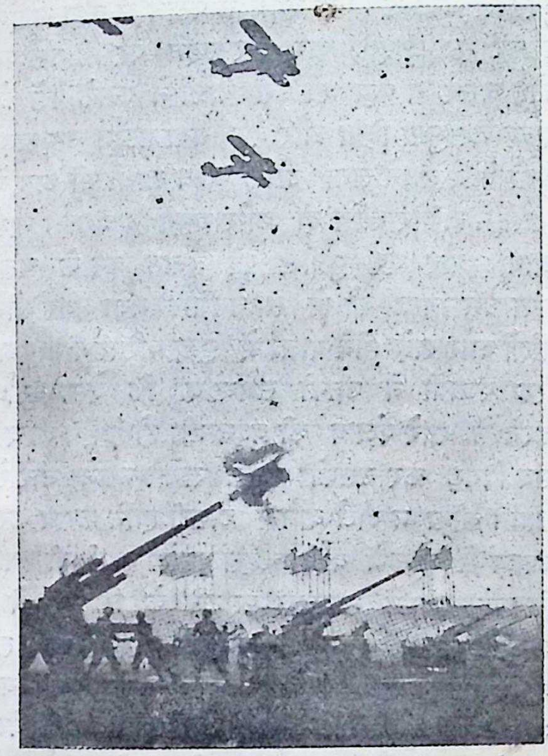

जर्मनी में हवाई जहाज़ उड़ाने वाली (एण्टी एअर क्रफ़्ट तोपों) और हवाई जहाज़ों की बनावटी लड़ाई।

जापान में १९३६ के अन्त में ८६० हवाई जहाज़ थे। इनमें आधे से अधिक हवाई जहाज़ जल-सेना को सहायता देने वाले थे। वे नये ढंग के नहीं थे। बाम्ब गिराने वाले हवाई जहाज़ बहुत कम थे। इसके बाद जापान ने अपने हवाई जहाज़ तेज़ी से बढ़ाये। लगभग एक तिहाई जहाज़ बाम्ब गिराने वाले बन गये। इनकी रेंज (गश्त लगाने को सीमा) १००० मील है। सैनिक जहाज़ों की संख्या इस समय १४०० से अधिक है। इनमें ८०० हवाई जहाज़ जलसेना की सहायता करने वाले हैं। १९३८ के जनवरी महीने में संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ११०० सैनिक हवाई

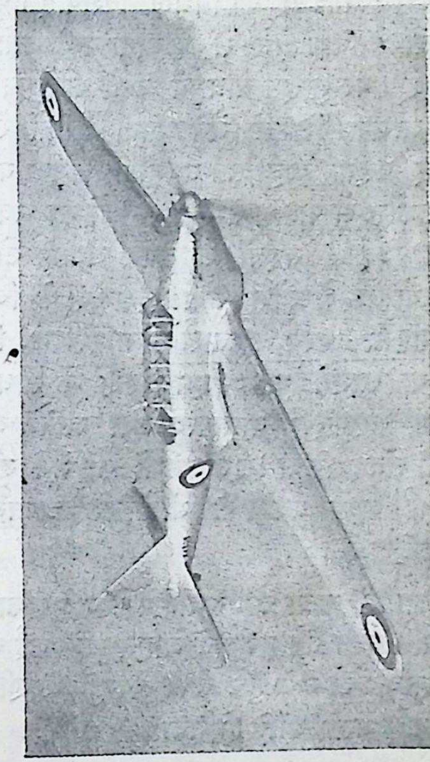

बम्ब गिराने वाला एक जहाज़

जहाज़ थे। ८०० बन रहे थे। १९४० में इनकी संख्या बढ़ कर २३२० हो जायगी। १९४१ में वहाँ जलसेना की सहायता करने वाले २०७० हवाई जहाज़ तैयार हो जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण दिशा में

[विद्या भूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.]

सिन्धबाद जहाज़ी की यात्रा बड़ी विचित्र है। उसमें नये-नये देशों की अद्भुत बातों का वर्णन ऐसे अनोखे ढंग से किया गया है कि शुरू करने के बाद छोड़ने को जी नहीं चाहता। सचाई के साथ साथ उसमें मिथ्या का मिश्रण विशेष है। कल्पना की मात्रा अधिक होने से वह यात्रा बड़ी मनोरञ्जक हो गई है। परन्तु इस यात्रा में उन्हीं बातों का वर्णन किया जायगा जिनको मैंने अपनी आँखों से देखा है। यह कहना अनुचित न होगा कि इस यात्रा में मैंने आकाश से पाताल तक की चीजों का अवलोकन किया। विशाल महलों से लेकर जंगली टोडों की झोपड़ियों तक में प्रवेश किया। देश देश के चित्ताकर्षक प्राकृतिक दृश्य, अनोखे रस्म रिवाज़, विचित्र वेश-भूषा सामने आये। इस भ्रमण के साथ साथ मैंने कुछ सामुद्रिक, वानस्पत्य तथा खनिज वस्तुओं का भी संग्रह किया। इन चीज़ों को मैंने डी० ए० वी० हाई स्कूल प्रयाग के भौगोलिक अजायब घर में रख दिया है।

काश्मीर यात्रा को समाप्ति के बाद लंका देखने की प्रबल इच्छा मेरे हृदय में जागृत हुई। कई कारणों से कोलम्बो तो न पहुँच सका परन्तु दक्षिणी भारत का भ्रमण भली भाँति हो गया।

तारीख़ ६ जून सन् १९३८ को आगरा कैंट स्टेशन से २१॥।-) का टिकट मदरास के लिये ख़रीदा और रात के दस बजे (Peshawar Madras Grand Express) से रवाना हुआ। भीड़ काफी थी जैसे तैसे बैठने को जगह मिली। बाहर अँधेरे का राज था इससे कोई चीज दिखाई नहीं देती थी। गाड़ी के अन्दर भी अन्धेर नगरी थी कुछ पंजाबी पठान तो लम्बी तान कर सो रहे थे। लेकिन कुछ यात्री स्थान न पाकर खड़े ही थे अगर कोई उनको जगाने की हिम्मत करता था तो वे उससे लड़ने लगते थे। स्टेशनों पर चीज़ बेचने वालों को ख़ूब तंग करते थे, पाँच सरदे लेकर एक छिपा दिया और चार का दाम दिया। जूते बेचने वाले से जूते लेकर एक ने पहन लिये न कीमत देता था और न जूते ही वापस करता था। वह बेचारा सिपाही को बुलाकर लाया और उसने बहुत धमकाकर उसके जूते दिला दिये। शिकायत भी बेकार थी क्यों कि टिकट बाबू उठकर बैठो कहते हुए चले जाते थे। एक यात्री ने पठान से कहा साहब उठकर बैठ जाइये, कई बार कहने पर भी उस पर कोई असर न पड़ा तो उस यात्री ने उसके पैरों को पकड़ कर घुमा दिया और बैठ गया पठान उठ खड़ा हुआ और लड़ने लगा उसके अन्य साथी भी आगये यात्री ने जंज़ीर खींच दी और गाड़ी रुक गई। गार्ड आया और एक पुलीस को तैनात कर के चला गया उस यात्री को तो स्थान मिल गया मगर सोने वालों और खड़े होने वालों में कुछ परिवर्तन न हुआ एक पंजाबी ने उनको समझाया कि ऐसा बर्ताव करने से सारे पंजाब की बदनामी होती है। तो वह सब बिगड़ कर उसको बनाने लगे। उसने धीरे से कहा। सीख न दीजै बानरा अपनी हानि कराय, इस उपद्रव से ट्रेन में बड़ी चहल पहल रहती थी। वह सिकन्दराबाद में सरकारी पलटन के सिपाही थे। काज़ी पेट जंकशन पर उन्होंने गाड़ी बदल ली और शान्ति स्थापित हो गई। हमारी गाड़ी ग्वालियर झाँसी होती हुई बीना पहुँची। बीना सुनते ही अंधेरा भागने लगा और ऊषा की लालिमा दिखलाई पड़ने लगी। मेरी भी आंख खुल गई।

७ जून को ७ बजे भोपाल के स्टेशन पर पहुँचे वर्षा आरम्भ हो गई। ऐसा प्रतीत होता था कि ग़र्मी को हटाने के लिये भूपाल ताल से जल लाकर छिड़काव किया गया है। हवा, गाड़ी दोनों ही ठंडी हो गईं। इटारसी जंकशन से सुरंगें शुरू हो गईं तीसरे पहर के बाद नागपुर पहुँचे यहाँ बाग की चर्चा शुरू हो गई। पंजाबी महाशय ने कहा "सी० पी० में साँप बहुत पाये जाते हैं"। मुझे चाँदा जाना है वहाँ ठहरने का कैसा प्रबन्ध है। एक सज्जन ने कहा "किसी धर्मशाला अथवा सराय में ठहर जाइयेगा"।

एक छोटे से स्टेशन पर एक विचित्र घटना हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। एक मुसलमान के साथ बहुत सा सामान और कई बच्चे थे। वह बीबी और बच्चों को गाड़ी में बिठाकर स्वयं ही सामान रखने लगा। आधा सामान ही रखने पाया था कि गाड़ी छूट गई और वह बेचारा स्टेशन पर ही रह गया। अकेली बीबी रेल में घबराने लगी। लोगों ने उसे समझाया। एक पंजाबी ने उठकर उसके लिये चंदा इकट्ठा किया। हिंदू मुसलिम का यहाँ कोई भेद न था। सब ने कुछ न कुछ दिया। शहर की गन्दी जातीयता का यहाँ नाम तक न था। एक हिन्दू बालक मुसलमान की दाढ़ी से खेल रहा था। सिक्ख फलों के टुकड़े काट काट कर सब के बच्चों को दे रहे थे। यह देख कर मुझे केसव दास के भारद्वाज आश्रम की याद आगई।

'केशव दास' मृगज-बछेरु चोषैं बाधनीन, चाटत सुरभिबाघ बालक बदन हैं।

सिंहन की सटा ऐंचैं कलभ करनि करि,
सिंहन को आसन गयंद को रदन है।
फणी के फणन पर नाचत मुदित मोर,
क्रोध न विरोध जहां मदन मदन हैं।
वानर फिरत डोरे डोरे अंध तापसीन,
शिव को समाज कैधौं ऋषिको सदन हैं।

वर्धा से गाड़ी चाँदा पहुँची, दिल्ली के मि० भटनागर यहाँ पर उतर पड़े। ये महाशय व्यापार कुशल मालूम होते थे इन्होंने मुझे छोटे २ व्यापार की कई युक्तियां बताईं। चांदा के कमिश्नर ने कुछ व्यापार सम्बन्धी सलाह लेने के लिये बुलाया था।

८ जून को सुबह द्विनकाल पर आंख खुली तो सफेद लुंगी बाँधे हुये लोग दिखलाई देने लगे। इस मदरासी लिवास को देखकर हमारे तरफ का एक आदमी धीरे से बोला "क्या इस स्टेशन पर सभी मुसलमान हैं। बेचने वाला कोई हिन्दू नहीं है"? और यह जानकर कि ये सब हिन्दू हैं उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

९ बजे के लगभग वैजवाड़ा का जंकशन आ गया पूड़ी कचौड़ी का स्थान इटली, उपमा, तोश, (चीला) मुरुक और वड़ों ने ले लिया। काफ़ी काफ़ी की पुकार सुनाई पड़ने लगी। चावल साँभर (इमली का पना)

रसम् के राज्य में प्रविष्ट हो गये। मैंने भी इस अनुपम उपमा का आस्वादन किया।

तिनाली का स्टेशन आते ही मुझे तिनाली राम की याद आ गई। वह दक्षिण के 'बीरबल' कहलाते थे। उनके लतीफे और चुटकुले बड़े मनोरंजक हैं।

शाम को ५॥ बजे हमारी गाड़ी मदरास आ पहुँची। मैं मोतीराम गुजराती के हिन्दूलाज साहूकार पेट में ठहरा।≈) प्रति .खुराक ॥) प्रति दिन एक कोठरी के तय हुए। शहर पर एक सरसरी दृष्टि डालने के लिये मैं रात को निकला। मदरासी लिवास बहुत ही सीधा सादा है। बंगालियों ने तो सिर्फ टोपी ही छोड़ी परन्तु उन्होंने टोपी जूते दोनों का त्याग कर दिया। लुंगी की तरह श्वेत धोती लपेटे हुए बहुत ही मामूली कमीज़ में नंगे सिर और नंगे पैर, बिखेरे हुए बाल, मद्रास की सड़क पर आपको बहुत से लोग मिलेंगे। इस सरल मूर्तियों की तुलना बंबई के नख-शिख भूषित उन फैशनेबुल बाबुओं से कीजिये। भारतवर्ष के तीन बड़े बड़े नगरों में पृथक पृथक तीन निराली धारा बहती हैं।

नया देश-नया-वेष-नई बोली। न मैं उनकी बात समझता न वे मेरी। न किसी से जान न पहचान अकेला ही सड़क पर घूमने लगा बाबुओं से तो अंगरेजी में बात कर लेता था। परन्तु कुली आदि से संकेत द्वारा ही काम लिया जाता था। घूमते घूमते थक गया तो होटल में आकर सो गया।

९ बजे सुबह उठ कर आर्य समाज मंदिर में गया। वहां ठहरने के लिये कोई विशेष प्रबन्ध न था इस लिये महाशय समुद्रम् ने पास की धर्मशाला में मुझे ठहरा दिया। महाराज छठवें जार्ज का जन्मदिवस होने के कारण चार आने के दिन भर के लिये ट्राम का रियायती टिकट मिल गया। मैं ट्राम में बैठ कर समुद्र स्थान को चल दिया।

मद्रास भारत का तीसरे नम्बर का शहर और पांचवें नम्बर का बन्दरगाह है। स्नान के बाद मैं समुद्र के किनारे किनारे बन्दरगाह की ओर चलने लगा। मार्ग में एक मछुवे का बालक मिला वह भी साथ हो लिया। आपस में हम दोनों केवल संकेत से ही बात कर सकते थे। कुछ मछुये के बालक तर बालू से खाने के लिये केकड़े निकालने का प्रयत्न कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे थे। एक गोरा लहरों में उछल उछल कर बड़े आनन्द से नहा रहा था। थोड़ी दूर चलने पर बन्दरगाह आ गया यह कृत्रिम बन्दरगाह बांध से समुद्र का पानी घेर कर बनाया गया है। यहाँ समुद्र बिल्कुल शान्त है। इसके विपरीत दूसरी ओर पानी वल्लियों उछल रहा था। मैंने पहले पहल स्पंज (Sponge) इसी बन्दर में देखे। वे शान्त जल में बड़ी सुस्ती से तैर रहे थे। उनमें कुछ रंगीन भी थे। जो बहुत भले मालूम होते थे। समुद्र फेन की तरह स्पंज के विषय में भी लोगों की मिथ्या धारणा है। जिस तरह समुद्र फेन समुद्र का झाग नहीं बल्कि एक जल जीव है। उसी प्रकार स्पंज भी एक जल जीव है। मैं पामबन (Pamban) से बहुत से समुद्रफेन लाया हूँ। समुद्र के छाग सूख कर कैसा रूप धारण कर लेते हैं इसके नमूने भी मेरे पास हैं। लौटते हुए पुराने लोहे का एक ढेर मिला एक सज्जन ने बतलाया कि यह विलायत भेज दिया जाता है। और वहाँ से नया रूप लेकर फिर यहाँ आ जाता है।

मद्रास का चिड़िया घर (Zoo) कलकत्ते की अपेक्षा छोटा है। सफेद मोर रङ्गीन मोर की तरह नाचता था परन्तु रङ्गीन मोर सौन्दर्य्य में अधिक चित्ताकर्षक था। दक्षिण अमरीका का लामा ऊँट की तरह गर्दन उठाये खड़ा हुआ था।

Aquarium (मछली घर) मद्रास की एक विशेष वस्तु है। इसमें अनेक प्रकार की जिन्दा मछलियाँ हैं। इस प्रकार की विचित्र मछलियाँ मैंने आज तक नहीं देखी थीं। शीशे के बड़े बड़े टैंकों (tanks) में वे किलोल कर रही थीं। आक्सीजन जल के अन्दर बराबर जा रही थी। (scorpion fish) बीछू मछली का खेल मुझे बहुत पसन्द आया। यह सेई (porcupine) की तरह अपने असंख्य कांटों को फैला कर मोर की तरह नाचती थी। star fish के दो नमूने ले कर आगे चल दिया।

Triplicane beacg समुद्र तट शाम को वायु सेवन के लिये सुन्दर स्थान है। हज़ारों स्त्री पुरुष बालू पर बैठ कर रेडियो सुनते हैं तरह तरह की चहल पहल रहती है।

पकड़ी अदियार थियासेफी का केन्द्र है। इसका क्षेत्रफल २६२ एकड़ है। यहाँ के पुस्तकालय में सैकड़ों भोजपत्र पर हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकें देखीं। प्राचीन लेखनी भी वहीं पर रक्खी हुई थी। इसे स्याही में डुबाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। एक विशाल वट वृक्ष यहाँ पर सैकड़ों वर्ष से खड़ा हुआ है। संसार के वट वृक्षों में इसका तीसरा नम्बर है। यह उत्तर से दक्षिण २०० फ़ुट और पूर्व से पश्चिम १६० फ़ुट है। कलकत्ते का वट वृक्ष इससे अधिक बड़ा है। लेकिन इसमें यह विशेषता है कि इसका मुख्य तना अभी तक मौजूद है। एनीबीसेंट की समाधि भी दर्शनीय है। नारियल का बाग और खिले हुए गुलमुहर के पेड़ अदियार की शोभा बढ़ाते हैं।

मद्रास का light house (दीप स्तंभ) समुद्र के कुछ दूर law college के पास स्थित है। दो आने का टिकट ले कर उसकी २५० फ़ुट ऊँची चोटी पर चढ़ गया। यहाँ से कुल शहर का दृष्य अत्यंत मनोरम दिखलाई देता है। सायंकाल में उसमें रोशनी होती है। और गुम्बद घूमता रहता है। वहाँ से लौट कर वाला जी आदि कई मन्दिर देखे।

२१ जून को प्रसिद्ध किला St. George को देखा वह किला अंग्रेजों का भारत में सबसे पहला settlement है। इसे अंगरेजी राज्य की नीव कहना चाहिये, एक खाई से घिरा हुआ है, और उसमें तीन फाटक है। अंदर जाने के लिये पास (Pass) का झंझट था। पहरेदार से बिना पूछे मैं जल्दी से अन्दर जा कर एक दूकान दार से बातचीत करने लगा। और आगे बढ़ा तो एक आदमी खड़ा हुआ मिला। मैंने उससे अंग्रेज़ी में पूछा "क्या मैं किला देख सकता हूँ।" उसने उत्तर दिया "क्या आपके पास पास (Pass) है।" मैंने कहा "नहीं"। मैं उत्तरी भारत से आया हूँ क्या आप मेरी मदद करेंगे। उसने मुझे डरा दिया कि वह गोरा आ रहा है। वह विना पास न जाने देगा। अगर उसे मालूम हो गया तो वह आपको जरूर लौटा देगा। आप इस रास्ते से सीधे चले जाइये और दूसरे फाटक से निकल जाइये। Thanks (धन्यवाद) देकर मैं आगे बढ़ा। एक ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दफ्तर थे। एक गिरजा घर भी था। मैं दूसरे फाटक पर आगया पहरेदार ऊँघ रहा था मैं बाहर निकल आया और सड़क के दूसरी ओर चाँदमारी देखने लगा। यह (Pride of Madras) (मद्रास की शान) कहलाता है।

सड़क को छोड़कर मैं फिर समुद्र के पास आया।

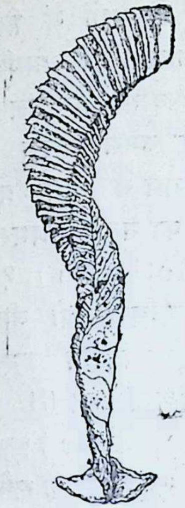
शंख के अंडे का खोल

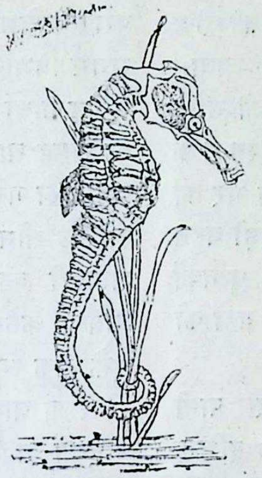
समुद्री घोड़ा

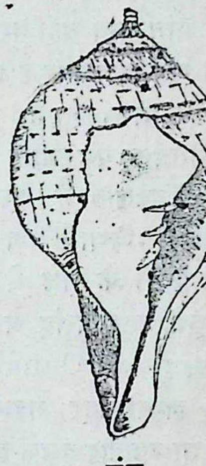
शंख

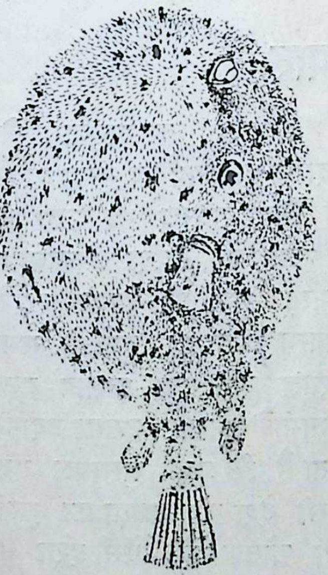
मद्रास मत्स्यागार की फूली हुई पफर नाम कीविचित्र मछली

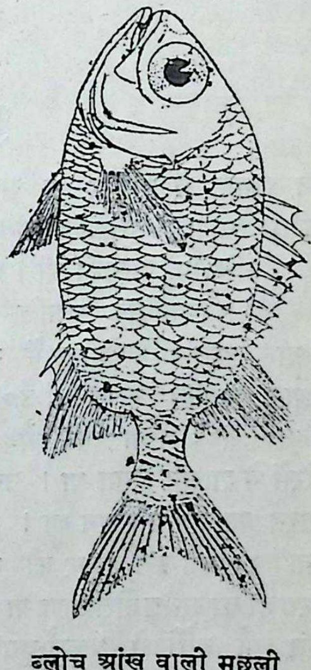
ब्लोच आंख वाली मछली

मरीना रोड समुद्र से कुछ हट कर कई मील तक गई है। सड़क के एक तरफ़ समुद्र की ओर फूल पत्तियों की एक कतार है। दूर दूर पर बेंच मिलती जाती हैं। दूसरी तरफ़ बड़ी बड़ी इमारतें हैं। प्रातः

तट पर से कुछ सीपियाँ इकट्ठी कीं। (Aquarium) के पास गौरी शंख, सुब्रह्मराय शङ्ख (शिव), गणेष शङ्ख, विष्णु शङ्ख, दूध शङ्ख, मान शङ्ख, अभिषेक शङ्ख, रावण किरीट, सीता गर्भ, काल वाहन तथा (sea horse) समुद्री घोड़ा आदि वस्तुयें मोल लीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल को मूर मारकैट (moore market) देखने गया। बम्बई के क्राफड मारकेट तथा कलकत्ते की ह्यूलेट मारकेट की तरह यह बाजार भी अपनी सजधज के लिये मशहूर है। दुकानों को जगमगाती चीजें मन को सहसा मोह लेती हैं। एक पैसे की चीज का एक रुपया मांग लेना यहाँ बुरा नहीं माना जाता। इसके पास ही गुदड़ी बाजार है। श्मशान की भांति यहाँ भी ज्ञानोदय हो सकता है। समय और स्थान के भेद से मूल्य में अंतर पड़ जाता है। दुनिया भर की चीजें आपबीती बतलाती हैं। इसी लिये गुदड़ी बहुत प्यारी है। सैकड़ों विद्यार्थी अपनी पुरानी पुस्तकों को अन्य विद्यार्थियों के हाथ बेच रहे थे। यहाँ की यह विशेषता मुझे बहुत पसंद आई।

(Buckingham Canal) यह खारी पानी की २५० मील लम्बी नहर मद्रास के उत्तर दक्षिण गई है। बहुत सा व्यापार इसके द्वारा होता है। उत्तर में बैजवाड़ा और दक्षिण में ६० मील तक जाती है।

मदरास के म्यूजियम में मैंने कई चीजें देखी यह अजायब घर कई विभागों में विभाजित है। पूरातत्व विभाग में बौद्ध कालीन मूर्ति आदि वस्तुयें हैं। भूगर्भ विभाग में खनिज पदार्थ और वनस्पति विभाग में पेड़ पौधों के अंग और उनसे उत्पन्न हुई वस्तुओं का संग्रह था। प्राणि विभाग में नाना प्रकार के मृत पक्षी देखे गये। चैचू हट का नमूना, अमरावती स्तूप, तारों के तीन टुकड़े (Metiorite) १६००-१९०० शताब्दी का वृक्ष कार्नवालिस तथा नील की वृहत् मूर्तियाँ, कनेम्बरी पुस्तकालय विशेष उल्लेखनीय हैं। मुझे ठीक स्मरण नहीं कि अर्जेंटाइन (S. America की पम्पा घास (Pumpa Grass) इस म्यूजियम में देखी या बंगलोर में। यह कास के सफेद फूल की तरह सुन्दर मालूम देती थी। (असमाप्त)

गुप्त-कालीन व्यापार

उपक्रम

प्राचीन समय में संसार के सभ्य देशों का भारतवर्ष शिरमौर था। इसकी सभ्यता चरम सीमा को पहुँच चुकी थी। भारत न केवल आध्यात्मिक उन्नत्ति की पराकाष्ठा को पहुँचा था, परन्तु भौतिक क्षेत्र में भी पर्याप्त वृद्धि कर चुका था। प्राचीन भारत में ई० स० ३०० से लेकर ई० स० ६०० यानी तीन सौ वर्षों तक गुप्त वंश के नरेशों ने शासन किया था। उस समय सभी क्षेत्रों में भारत का सर्वोच्च स्थान था। संसार में ऐसा कोई देश नहीं था जो इस प्रकार की उन्नति अवस्था में हो। भारत ही का सर्वत्र बोलवाला था। इन्हीं कारणों से इन तीन सौ वर्षों को 'स्वर्ण-युग' के नाम से पुकारते हैं। इस लेख में तत्कालीन व्यापार की अवस्था, सामग्री तथा साधन का संक्षेप रीति से वर्णन किया जायगा।

गुप्त काल में प्रजा धन धान्य से पूर्ण थी। राजा तथा प्रजा बहुत धन पुन्य में व्यय करते थे। व्यापार की महानता का अनुमान किया जा सकता है। सर्वदा से भारतवर्ष का मुख्य व्यवसाय कृषि रहा है। इसी लिए शासक भी प्रजा के हित के लिए कृषि की उन्नति का सर्वदा चिन्तन करते रहे हैं। राजा समस्त भूमि को नापकर उसके सिचाई का सुन्दर प्रबन्ध करता था। गुप्तों के समय में भी इसके लिए विशाल नहर तथा तालाव बनवाए गए थे। सुदर्शन नामक कासार उसका उदाहरण था। इससे प्रगट होता है कि प्रजा सुसम्पन्न तथा समृद्धशाली थी। किसी देश की जनता का सुखी रहना उसके उन्नति का द्योतक है। ऐसी दशा में प्रजा अच्छी तरह व्यापार में भी सहयोग कर सकती है। आधुनिक समय में सभी व्यापार में उन्नत देशों की जनता सुखी तथा सम्पन्न हैं। दुखी तथा निर्धन मनुष्य व्यापार के लिए उपयुक्त नहीं होते। गुप्तों की समृद्धशाली राज्य में व्यापार की उन्नति पर्याप्त अवस्था तक पहुँची थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समितियों के हाथ में था जिसको श्रेणी कहते थे।

व्यापारिक संस्थाएँ

श्रेणी आधुनिक व्यापारिक व्यापारिक संस्थाओं के समान थी जो व्यापार का नियम तथा नीति निर्धारित करती थी गुप्तकालीन श्रेणियों का वर्णन अधिकता से स्मृति ग्रन्थों तथा राजाओं के मुहरों में पाया जाता है। याज्ञवल्क स्मृति में श्रेणियों के नियमों का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। समिति के कितने सदस्य थे, उनका आपस में क्या सम्बन्ध था तथा सभापति आदि के अधिकारों का वर्णन मिलता है। गुप्तकालीन मुहरों में 'श्रेणी सार्थवाह' 'कुलिक निगम' तथा 'श्रेणी सार्थवाह कुलिक निगम' आदि वाक्य मिलते हैं। इन मुहरों की अधिकता से यह तात्पर्य निकलता है कि उस समय अनेक संस्थाएँ थीं जो व्यापार का काम करतीं थीं। ऐसी संस्थाएँ पाटलिपुत्र, वैसाली, उज्जैन भरौंच तथा दशपुर आदि स्थानों में विद्यमान थीं जिसके कारण वे स्थान व्यापारिक केन्द्र बन गए थे। इन स्थानों का सजीव तथा अत्यन्त सुन्दर वर्णन गुप्त लेखों में मिलता है जिसका वर्णन स्थानाभाव के कारण नहीं किया जा सकता। गुरवों की राजधानी पाटलिपुत्र एक विशाल नगर था। मध्य देश में यह सब से बड़ा नगर था। वैसाली की शोभा अकथनोय थी। नगर के शोभा के साथ यहां की व्यापारिक संस्थाओं का कार्य मनुष्यों के दिल में एक कौतूहल पैदा कर देता था। यह एक मुख्य केन्द्र था जिसका आर्थिक उन्नति में बहुत बड़ा हाथ था [आ० स० रि० १९०३-४] गुप्तकाल में मालवा की उज्जैनी नगरी मध्यस्थ का काम करती थी। उत्तरी भारत तथा भरौंच के बीच का मार्ग दसी नगर से होकर जाता था। उज्जैनी के सदृश दशपुर भी एक समृद्धशाली नगर था। बम्बई प्रांत का भरौंच (भृगुकच्छ) नगर व्यापारिक दृष्टि से एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था। यह एक मुख्य बन्दरगाह था जहाँ से फारस, मिश्र तथा पश्चिम के देशों में भारत का माल जाता था। इसी प्रकार अनेक स्थान वैभव तथा व्यापार के लिए प्रसिद्ध थे जहां पर श्रेणी स्थापित की गई थी।

व्यापारिक मार्ग

गुप्तकालीन व्यापार दोनों स्थल तथा जल-मार्गों से होता था। ... गया था। पूर्व तथा पश्चिमी देशों में भारत की बनी हुई वस्तुएँ प्रयोग में लाई जाती थीं। आधुनिक काल के समान भारत की दुखद अवस्था नहीं थी, परन्तु वे समस्त देश अपने आवश्यकीय पदार्थों के लिए भारत का मुख देखते थे। यानी भारतीय व्यापार सर्वोन्नत था। अरब, फारस, रोम, मिश्र देशों से भारत का व्यापार होता था।

भारतीय व्यापारियों के सुविधा के लिए बड़ी बड़ी सड़कें बनाई गई थीं। गुप्तकाल से पूर्व भी

स्थल-मार्ग

पाटलिपुत्र से अफ़गानिस्तान तक १०० मील लम्बी सड़क बनाई गई थी। साधारण सड़कें भी बहुत स्थानों में बनी हुई थीं। [सरकार-पोलिटिकल इन्स्टीच्यूशन एण्ड थियरी आफ हिन्दू पृ० १०२-३] गुप्त राजाओं ने इनका प्रयोग युद्ध मार्ग के लिए भी आवश्यक समझा था, अतएव चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पारसियों को विजय करने के लिए पर्याप्त संख्या में सड़कें बनवाया था [पारसिकान् ततो जेतुं प्रतस्थे स्थल वर्त्मना-रघु०] उस समय का भारतीय चीनी यात्री फाहियान ने अपनी पूरी यात्रा स्थल से समाप्त की थी। उसकी सकुशल यात्रा से ज्ञात होता है कि गुप्तों के राज्य में स्थलमार्ग अत्यन्त सुरक्षित थे। ठगों तथा डाकुओं का नामोनिशान तक न था। व्यापार में बड़ी सुविधा थी। भड़ौच से पाटलिपुत्र तक व्यापार चलता था। पेरिप्लस ने लिखा है कि भरौंच से व्यापारिक सामग्रियाँ विभक्त की जाती थीं जो विभिन्न मार्ग से होकर सारे देश में भेजी जाती थीं। स्थलमार्ग से स्वदेश ही नहीं परन्तु विदेश से भी व्यापार होता था। अरब, फारस, चीन वैविलोनियां आदि से भारत का व्यापारिक सम्बन्ध था। योरप तक स्थल से व्यापार होता था। एक मार्ग पालमारा होते रोम तथा सीरिया की ओर तथा दूसरा आक्सस कैसिपयन सागर से मध्य योरप तक पहुँचता था [इनसाइक्लोपिडिया बृटेनिका भा० २ पृ० २५९]।

स्थल मार्ग के अतिरिक्त गुप्तकाल में जलमार्ग से भी व्यापार पर्याप्त मात्रा में होता था। इसके लिए

जल-मार्ग

बड़े बड़े जहाजी बेड़े बनाए गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम में अफ्रिका और योरप तक भारतीय जहाज व्यापार की सामग्री लेकर जाते थे। इन सूदुरदेशों के सिवाय व्यापार भारत के किनारे तथा समीपवर्ती टापुओं से भी होता था। गुप्तकाल से पूर्व ही रोम तथा भारत का व्यापार वृद्धि पर था। कुषाण काल में भारतीय रेशमी, रंग मसाले तथा मोती आदि के विनिमय में रोमन सिक्के (सोने के) आते थे। रोम के सोने की मुद्राओं की संख्या बहुत मिलती है। इसी कारण से प्लीनी ने (ई० स० ८) में रोमन लोगों की विलासिता की निन्दा की है। क्योंकि यदि वे लोग भारत से सुख और विलास की सामग्री न मँगाते तो रोमन सिक्के भारत में न जाते। उसने लिखा है कि करोड़ों रुपयों के सुगन्धित पदार्थ, आभूषण, वस्त्र आदि प्रत्येक वर्ष भारत से खरीदे [जे० आर० ए० एस० १९०४ पृ० ५५८] इतना नहीं; रोमन निवासी भारत में व्यापार के लिए आते, परन्तु तामिल तथा पाण्ड्य नरेशों के यहाँ नौकरी करने लगते प्राचीन तामिल तथा संस्कृत साहित्य में यवन और रोमन शब्द का प्रयोग मिलता है। रोमक से रोम नगर तथा यवन से ग्रीक और रोमन लोगों का तात्पर्य है। इस कथन से ज्ञात होता है कि ईसा की प्रथम शताब्दी से भारत का पश्चिमी देशों से व्यापारिक सम्बन्ध था। भारत के समीप जावा, सुमात्रा कम्बोडिया, स्याम आदि देशों से भी बराबर व्यापार होता था। वहां भारतीयों ने अपना निवास-स्थान बनाया था।

जलमार्गीय व्यापार की पुष्टि जावा के बारोबुडुर नामक मन्दिर पर अंकित चित्रों से होती है। इनमें बड़े बड़े जहाजों का यात्रा तथा व्यापारिक नावों के चित्र हैं। इन चित्रों से ज्ञात होता है कि भारतीय नावों पर सामग्री लेकर व्यापार निमित्त अन्यत्र जा रहे हैं। गुप्त शासकों ने व्यापार विनिमय में सुविधा के लिये अपने सिक्कों को तौल रोमन सिक्कों के बराबर तैयार कराया था। रोमन सिक्के देनेरियस (Danerius) के नाम से पुकारे जाते थे और गुप्त सिक्के दीनार के नाम से प्रसिद्ध थे। पश्चिमी देशों से आफ्रिका आदि के समीप टापुओं में गुप्तों के सिक्के मिले हैं जो विनिमय की प्रामाणिकता सिद्ध करते है। (मुकर्जी-इंडियन शिपिंग पृष्ठ १८९) उन देशों के लिये सुपारा तथा भरौंच बन्दरगाहों से भारतीय माल बाहर जाता था। बराहमिहिर (ई० स० ६००) भरुकच्छ का उल्लेख किया है (गिरि सलिल दुर्ग कोसल भरुकच्छ समुद्र रोमक तुषाराः) पूरब में मलाया द्वीपों से होते व्यापारी लोग चीन तक चले जाते थे। चीनी इतिहास में भारतीय व्यापार का उल्लेख मिलता है। कालिदास ने चीनी रेशमी वस्त्रों का वर्णन किया है—

चीनांशुकमिव केतो प्रतिवातं नीयमानस्य।

—शाकुं० १।३२

संतान काकीर्ण महापथं त-

चीनांशुकैः कल्पित केतुमालम्।

—कुमार० ७।३

जिससे गुप्तकालीन व्यापार की पुष्टि होती है। इस प्रकार पश्चिम तथा पूरब में एक स्थायी जलमार्ग स्थापित हो गया था।

इन जलमार्गीय व्यापार से ज्ञात होता है कि गुप्त काल में समुद्र यात्रा के लिये जहाज तथा बड़े बड़े नाव तैयार किये गये थे। साहित्य तथा चित्र-कला के प्रमाणों से उपर्युक्त कथन की पुष्टि होती है। कालिदास ने वंग निवासियों तथा धनमित्र को जहाजो कला में निपुण बतलाया है।

पोत निर्माण

वङ्गायनुत्खाय तरसानेता नौसाधनाद्यतान।

—रघु० ४।३६

समुद्र व्यवहारी सार्थवाहो धनमित्रो नाम

नौ व्यसने विपन्नः।

—शाकुं० ६

गुप्तकाल में शकों का उत्क्रमय तथा जावा के उपनिवेश का उल्लेख मिलता है। ईसा की पाँचवीं सदी के प्रारम्भ में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सौराष्ट्र तथा मालवा पर विजय प्राप्त की थी तथा शकों को परास्त किया था। इसी युद्ध के पश्चात् शकों ने निरापद भूमि को खोज कर जावा को उपनिवेश बनाया। इसकी पुष्टि एक लेख (इ० ए० भा० ५ पृ० ३१४) और जावा के एक जनश्रुति से होती है। इस जनश्रुति में ई० स० ६०० के लगभग किसी गुजरात नरेश की जावा यात्रा का वर्णन मिलता है। (हिस्ट्री आफ जावा भा० २ पृ० ८२) उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौराष्ट्र के निवासी जलमार्गीय व्यापार में अत्यन्त निपुण समझे जाते थे (बील-बुधिस्टीक रेकर्ड भा० २ पृ० २६९) व्यापार ही एक मुख्य कारण था जिसकी वजह से भारतीयों ने भिन्न भिन्न देशों ने उपनिवेश बनाया था। गुप्तों ने अपना राज्य विस्तार के लिये द्वीपों पर भी आक्रमण किया था। प्रयाग की प्रशस्ति में समुद्रगुप्त द्वारा 'सर्व द्वीय वासिभिः' पर आक्रमण करने का वर्णन मिलता है। कालिदास ने भी जावा सुमात्रा आदि द्वीपों का वर्णन ममासा द्वोप के नाम से किया है। (रघु० ६।५७) गुप्तकालीन चीनो यात्री फाहियान ने अपनी अन्तिम यात्रा (ताम्रलिप्ती से सिंहल तथा स्वदेश) जहाज़ों द्वारा हो समाप्त की थी। उसने वर्णन किया है—"फिर व्यापारियों के एक वृहत्पोत पर चढ़ा; समुद्र में दक्षिण-पश्चिम ओर चला। संस्कृत प्रतियों को पाकर वह एक व्यापारी के बड़े पोत पर चढ़ा। उसमें २०० से अधिक मनुष्य थे। एक छोटी नौका समुद्र-यात्रा के क्षति के रक्षार्थ बड़े पोत से बँधी हुई थी।" (फाहियान की यात्रा)

इन सब विवरणों से ज्ञात होता है कि गुप्तकाल में भारत रोम, चीन तथा अन्य द्वीपों से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सम्बन्ध था। इतने विस्तीर्ण जलमार्ग के लिये सुदृढ़ जहाज़ तथा बड़ो नौकाएँ अवश्य बनती होंगी। भारत में अजंता तथा बोरोबुडुर के चित्रों में जहाज़ और नावों के समावेश से सिद्ध होता था कि भारतीय पोतकला में निपुण अवश्य होंगे। अन्यथा चित्रों से उनका समावेश होना सहज न था। इन्हीं पोतों द्वारा गुप्तकाल में जलमार्गीय व्यापार होता था।

व्यापारिक सामग्री

भारत से अधिकतर रेशम, ऊन, मलमल आदि भिन्न भिन्न प्रकारों के सूक्ष्म वस्त्र, मणि, मोती, हीरे, हाथीदाँत, मोर-पंख, सुगन्धित द्रव्य तथा मसाले विदेशों में जाया करते थे। मिश्र का आधुनिक खोज में वहाँ की ममियों की पुरानी कबरों से बारीक भारतीय मलमल भी मिली है (ओझा-मध्यकालीन भारत पृ० १६७)। ये भारतीय मलमल उस समय से लेकर १८वीं सदी यानी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय तक तैयार होते थे। ढाके का मलमल उसका एक उदाहरण है। विदेशो व्यापार के कारण भारत समृद्धिशाली तथा अतुलनीय वैभवयुक्त हो गया था। जैसा कहा गया है कि प्लीनी में लिखा है कि प्रति वर्ष रोमन राज्य से करोड़ों रुपया भारत में आता था जिसके बदले सुख की सामग्री और वस्त्र आदि वहाँ जाता था। प्राचीन समय में भारत में व्यवसाय तथा उद्योग धन्धों की अवस्था बहुत ही उच्च कोटि की थी। सब से सुन्दर व्यवसाय वस्त्रों का होता था। नाना प्रकार के वस्त्र तैयार किये जाते जिस प्रकार के वस्त्र तैयार करना आजकल अत्यन्त कठिन है। भारत में सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रकार के छींट, मलमल तथा शाल बनते थे। कपड़े रँगने की भी कला बहुत उन्नत थी। इस प्रकार अनेक रसायनिक क्रिया प्रचलित थी। (फाहियान की यात्रा विवरण)

बैंक

जैसा कहा गया है कि प्राचीन भारत में व्यापार पूँजीपतियों के हाथ में नहीं था परन्तु इसका संचालन छोटे छोटे गण या श्रेणी करते थे। गण की प्रथा बहुत समय से प्रचलित थी। गुप्तकालीन गणों या श्रेणी का वर्णन किया जा चुका है। व्यापार के अतिरिक्त श्रेणी सिक्के के शुद्धता पर भी ध्यान खूब देते थे। इनकी सुव्यवस्था तथा समुचित नियमों के कारण बैंक का काम भी श्रेणियों के जिम्मे कर दिया गया था। यदि उन नियमों को कोई उल्लंघन करता तो व्यापार की हानि उसी व्यक्ति को पूरी करनी पड़ती।

प्रमादा नासितं दाप्यं प्रतिषिद्धं कृतं च यत्।

—नारदः

सारी जनता अपना धन श्रेणी के पास जमा करती। श्रेणी से समयानुसार कर्ज भी लेती थी। परोपकारार्थ जितना धन संग्रह किया जाता वह श्रेणी के पास रख दिया जाता था। कुछ नियम बनाये जाते थे जिसके अनुसार श्रेणी उस धन के सूद से मन्दिर में राग भोग की सामग्री, धूप दीप तथा मरम्मत किया जाता था। कभी कभी सर्वसाधारण के व्यवहार के लिये तालाब और कूप भी खोदवाये जाते थे। इस प्रकार संग्रहित धन श्रेणी के बैंक में जमा किया जाता था। शासक भी इन कारणों से श्रेणी के नियमों का आदर करता था। उनके नियमों को ध्यान में रखते हुए अपना नियम बनाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति जनपदान् धर्मान् श्रेणी धर्मान्श्च धर्मवित्।
समीक्ष कुल धर्मान्श्च स्वधर्म प्रतिपादयेत्॥

—मनु० ८।४१

इन सब कारणों से साधारण जनता भी व्यापार में भाग लेती थी। आजकल की तरह थोड़े से धनी मानी मनुष्य न थे परन्तु श्रेणी के कारण सर्वसाधारण के पास सम्पत्ति थी। गुप्तकालीन सिक्कों की असंख्य गणना से यह प्रगट होता है कि सर्वसाधारण भी समृद्धिशाली तथा वैभव सम्पन्न थे। आधुनिक काल की अचर परिस्थिति में रह कर प्राचीन भारत के अतुल वैभव, व्यापार में सर्वोच्च स्थान तथा तत्कालीन भारतीय महत्ता का अनुमान करना अत्यन्त कठिन काम है। इस संक्षेप वर्णन से उसकी महानता का आभास मात्र मिल सकता है।

—वासुदेव उपाध्याय, एम० ए०

पाताल प्रवेश

(अनुवादक ठा० कर्ण सिंह सब० डि० इं० बांदा)

(२) भेदिया कागज़

काका जी का अभ्यास-गृह एक छोटा सा संग्रहालय था। नाना प्रकार के पत्थर के टुकड़े पृथक् २ अलमारियों में रक्खे थे। प्रति दिन शाम को नये सिरे से संभाल कर रखना होता था। कारण यह कि प्रोफ़ेसर साहब एक स्थान से किसी वस्तु को उठा कर पुनः वहाँ रखना न जानते थे। मुझे भी उसे संभालने में बड़ा आनन्द आता था। अमुक मूल्यवान खनिज वस्तुओं को तो प्रतिदिन संभाल कर साफ़ रखना ही पड़ता था। ग्रेफ़ायट ऐंथ्रेसाइट लिग्नाइट, पीट, बीटयुमेन, रेसीन पर तो मैं कभी धूल की एक कनी भी न पड़ने देता था।

परन्तु इस समय मेरा ध्यान इस प्रदर्शन की ओर न था मेरा ध्यान तो काका की ओर था। वह एक आराम कुर्सी पर किसी फटी पुरानी रुमाल को हाथ में लिये बैठे थे। बीच बीच में चश्मा में से आंखें चमक जाती थी।

"आहा! क्या आनन्द की पुस्तक है!!

कितनी उत्तम! वह बोल उठे। निश्चय ही पुस्तकों के पीछे काका पागल तो थे ही। परन्तु आज असाधारण आनन्द विभोर थे।

"क्यों देखा, देखा? इधर देख, मैं आज एक गुप्त खज़ाना पुरानी पुस्तकें बेचने वाले के पास से सवेरे खोज लाया!"

"खूब"! मैं उत्साह से बोल उठा। प्रोफ़ेसर साहब मेरे ऊपरी मन को न देख सके वह अपनी पुस्तक में मस्त थे।

"देख; कितनी उत्तम? जिल्द कैसी अच्छी बनी है? बिल्कुल ठीक खुलती है न? देख; चाहे जिस पन्ना को खोल लो, ठीक खुल जाता ठीक बन्द हो जाता है? नही? वाह! बन्द हो जाने पर तनिक भी सन्धि नहीं रह जाती है! ७ शताब्दियाँ बीत जाने पर भी पुस्तक का कुछ भी नहीं बिगड़ता। "यह कहते हुये काका जी ने कई बार पुस्तक खोली और बन्द किया।

साहस करके मैं बोला: "किस की लिखी है?"

काका उत्साहित हो गये "यह पुस्तक १२वीं सदी में आइसलेण्ड निवासी एक विख्यात विद्वान ने लिखी है।"

"जर्मन भाषा में यह उसका अनुवाद है?" मैंने पूछा,

"भाषान्तर! मैं उसे अवश्य खरीदूंगा; यह तो मूल पुस्तक आइसलेण्ड की भाषा में ही लिखी हुई है।"

"यह बात? छपाई भी बड़ी सुन्दर है?" प्रशंसा करते हुये मैंने कहा।

"मूर्ख! यह छपी हुई है? दिखलाई नहीं देता? यह तो हाथ की लिखी है! रूनिका लिपि में लिखी है। क्या रूनिक का अर्थ भी तुझे समझाना होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं" !

"तब ठीक, काका आगे बोले, अत्यन्त प्राचीन काल में यह लिपि आइसलेण्ड में प्रचलित थी। किंवदन्ती है कि 'ओडीन' देव ने इस लिपि का आविष्कार किया था।

उनका व्याख्यान न मालूम कितना और चलता; इतने में पुस्तक में से एक कागज का टुकड़ा निकल पड़ा आगे हम दोनों का ध्यान उस ओर आकर्षित हो गया।

"अरे यह क्या ?" प्रोफ़ेसर साहब ने सावधानी से उस कागज के टुकड़े को उठा लिया। न मालूम कब से यों ही इस पुस्तक में पड़ा होगा। पांच इंच लम्बे, तीन इंच चौड़े इस टुकड़े का मूल्य अब एक श्वान के मूल्य से बढ़कर था। 'रूनिक' लिपि में उस पर एक विचित्र रीति से—ऊपर से नीचे को लिखा था।

प्रोफ़ेसर साहब बड़बड़ाते हुये बार २ उस कागज को देखते रहे। मुंह पर बार २ क्रोध और आवेग के चिन्ह प्रकट हो रहे थे।

दो का घण्टा बजा, और नौकरानी तुरन्त ही कमरे में आ दाखिल हुई। "प्रोफ़ेसर साहब ! भोजन तैयार है ?"

"भाड़ में डाल अपने भोजन को !"

नौकरानी आगे का वाक्य सुनने के लिये खड़ी न रह सकी !" मैं भी साथ ही भोजनालय में चला गया। भोजन की मेज़ पर सारा सामान परोसा हुआ रक्खा था। मैंने थोड़ी देर प्रोफ़ेसर साहब की प्रतीक्षा की। पर परसी थाली रखी होने पर अधिक प्रतीक्षा करना जरा मुश्किल है, वह भी भूखे पेट; यह समझने की बात है। अन्ततोगत्वा मैंने भोजन करना आरम्भ कर दिया। अरे आज कुछ अधिक भी खा गया।

"प्रोफ़ेसर साहब को आज क्या हो गया है ?" नौकरानी ने पूछा।

"आज की गरज तो ऐसी है कि बिना बरसे न रहेगा !!" मैंने कहा।

इतने में अभ्यास गृह में से काका जी की आवाज आ पहुँची। मैं अधकुल्ला किये ही दौड़ गया।

मध्य भारत की भौगोलिक परिस्थिति एवं उसका प्रभाव

(लेखक लाल भानुसिंह बाघेल)

पर्वतराज हिमालय की नन्दादेवी, धवलागिरि तथा गौरीशंकर चोटियों एवं उनकी अधित्यकाओं से सीधे दक्षिण की यात्रा में गंगा के विस्तृत मैदान के अनन्तर पैरों को धीरे धीरे पुनः ऊँचाई का अनुभव होने लगता है कि एकाएक एक और भूधर का दर्शन होता है। यह ऊँचाई एवं विस्तार में पर्वतराज का बच्चा भी नहीं, किन्तु अवस्था में उसका पिता हो सकता है। इसकी श्रेणियां पूर्व-पश्चिम बिहार से बंबई प्रान्त तक दण्डायमान उत्तर एवं दक्षिण भारत को अलग करती हैं यही विन्ध्याचल है। इस की अधित्यका एवं उपत्यकाएँ समतल, पठार का रूप धारण करती हैं। वे सैकड़ो मील विस्तृत हैं। यही विन्ध्यपृष्ठ है बघेल खण्ड (रीवा राज्य) के पूर्व से इसकी पूर्वी सीमा प्रारम्भ होती है। यहां इस पर्वत की एक और भुजा उत्तर पश्चिम की ओर बढ़ कर गंगा के मैदान से इसे अलग ही नहीं करती किन्तु अपनी खड़ी दीवार से एकदम इसे ऊपर उठा कर मध्यभारत की माल भूमि का श्रीगणेश भी करती है। बुन्देलखण्ड में यही श्रेणी छिन्न-भिन्न होकर वहाँ के वृहत् तालाबों का आधार बनती है। ग्वालियर में इस श्रेणी की न्यूनता के कारण ही मध्यभारत की पश्चिमोत्तरी सीमा यमुना-चम्वल तक पहुँच जाती है। दक्षिणी श्रेणी बघेलखण्ड से मालवा तक समान रूप से खड़ी हुई पश्चिम की ओर ढालू होकर नर्मदा जल-धारा उत्पन्न करती है। विन्ध्याचल के इस प्रकार विस्तार एवं आकार के कारण ही जो प्रान्त रीवा राज्य के उत्तरी भाग में एक संकीर्ण उच्चसम भूमि (प्लेटो) देख पड़ता है। वही पश्चिम की ओर क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौड़ा होता हुआ चम्बल के बराबर हो जाता है। इसके उत्तर में अत्यन्त उपजाऊ और विस्तृत गंगा का मैदान है। पश्चिम में गुजरात का सुन्दर प्रान्त और पश्चिमोत्तर में राजपूताना का अगम्य रेगिस्तान है। पूर्व में छोटा नागपुर का जंगली प्रान्त और दक्षिण में विन्ध्य और सतपुड़ा पर्वत की अगम्य श्रेणियाँ तथा नर्मदा एवं ताप्ती की जलधाराएं बहती हैं।

सारा प्रान्त एक हजार से तीन हजार फुट की उंचाई में कर्क रेखा के उत्तर-दक्षिण विस्तृत है। नर्मदा की घाटी को छोड़कर प्रान्त भर का ढाल गंगा की ओर है। इसमें कई बड़ी २ नदियाँ बहती हैं। वर्षा में वे उमड़ पड़ती हैं। पर ग्रीष्म में उनका पानी पाताल पहुँचने का प्रयत्न करता है। उनके दोनों किनारे प्रायः ऐसे ऊँचे, जैसे कि पहाड़ी नदियों के होते हैं। न उनमें नावें चल सकती हैं न उनसे नहरें निकल सकती हैं। इस प्रकार सजल होने पर भी प्रान्त शुष्क है। किन्तु सारी भूमि पर्वतों की अधित्यका, उपत्यका एवं नदियों के बेसिन से बनी होने के कारण उपजाऊ है। उँचाई के कारण समशीतोष्ण एवं उष्ण कटिबन्ध के ताप के उत्ताप का दुःख नहीं है। अगम श्रेणियों, घाटियों और रक्षित बनों के अतिरिक्त शेष भाग का जल-वायु (मालवा का तो बहुत ही) उत्तम है। औसत आबादी १२० प्रति वर्ग मील पड़ती है।

मध्यभारत की ऐसी भौगोलिक परिस्थिति के कारण स्थल मार्ग भारतवर्ष की तरह मध्यभारत में भी प्राचीन काल से पश्चिमोत्तर से ही आने-जाने का मार्ग प्रशस्त रहा है। अतएव, गंगा का उपजाऊ मैदान, राजपूताना का अगम्य रेगिस्तान, एवं गुजरात का सुन्दर प्रदेश विदेशी लुटेरे डाकुओं के रोकने में मध्यभारत के लिये ढाल का काम करते आये हैं।; किन्तु अपने उन्मुक्त मार्ग एवं अपनी उर्वरता के कारण मालवा उतना सुरक्षित नहीं रह सका जितना बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड सुरक्षित रहे हैं।

पर्वतीय प्रदेश होने के कारण ही प्राचीन काल से उत्तर और दक्षिण भारत के मार्ग में होने पर भी आवागमन का यहाँ से कोई प्रशस्त मार्ग नहीं रहा। मालवा से पश्चिम समुद्र निकट होने के कारण वहाँ का व्यापार यद्यपि गुजरात से कुछ होता था, पर शेष प्रान्त अपनी परिस्थिति के कारण कभी व्यापारिक नहीं रहा। किन्तु मनुष्य-जीवनोपयोगी वस्तुओं के लिये उसे कभी परमुखापेक्षी भी नहीं रहना पड़ा। २० से ४० इंच की औसत वर्षा अल्पजलापेक्षी (कपास, गेहूँ इत्यादि) एवं बहुजलापेक्षी (धान इत्यादि) पौधों को पर्याप्त प्रमाण में उत्पन्न करती है। चरखों के समय में बुन्देलखण्ड एवं चन्देरी (ग्वालियर) अपने वस्त्रों के लिये बहुत प्रसिद्ध थे। बुन्देलखण्ड के अस्त्र अब भी प्रसिद्ध हैं।* साहित्य (धारानगरी) संगीत (ग्वालियर) एवं कला-कौशल (सांची, भिलसा, भरहुत, खजुराहो कालिंजर इत्यादि) की यहाँ उत्तरोत्तर उन्नति होती गई है।

स्वाधीन-जीवी प्रदेश होने के कारण ही यहाँ के शासकगण सदा से स्वतन्त्र होते आये हैं और शुष्क किन्तु अधिक उष्ण प्रान्त न होने के कारण यहाँ की मनुष्य जाति सदा से बहादुर जाति रही है। कछुला, प्रगार, चन्देल, बुन्देला एवं बाघेला वीर सदैव से स्वतन्त्रता के लिये लड़ते रहे हैं। मनुष्य जीवनोपयोगी सब सामग्री सम्पन्न होने पर भी व्यापारिक प्रान्त न होने के कारण ही आबादी १२० प्रति वर्गमील से अधिक नहीं बढ़ी है। उज्जैन आदि में जहाँ कहीं प्रान्तीय व्यापार होता था। वहाँ की आबादी भी अधिक थी; किन्तु आज कल रेलों के समय में अब वह दशा नहीं रही। अब किसी देश की भौगोलिक परिस्थिति में रेल मार्ग का भी पर्याप्त भाग होता है। यद्यपि मध्यभारत की प्रान्तीय परिस्थिति रेलमार्ग में भी बाधक हुई है; किन्तु रेलों की रेलापेली में इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, ग्वालियर, भोपाल और सतना यहाँ के व्यापार के केन्द्र हो रहे हैं। इनमें इन्दौर ही सबसे प्रमुख है; क्यों कि एक तो मध्यभारत के सब से उपजाऊ प्रान्त मालवा में इसकी स्थिति है, दूसरे भारत के फाटक बम्बई से इटारसी द्वारा, यह जुड़ा हुआ है और प्रान्त की राजधानी भी है।

* स्वाधीन भारत के समय में यहां भी उत्तमोत्तम शस्त्रास्त्र बनाये जाते थे। उनमें तलवारें विशेष उत्तम होती थीं। और वे खास खास स्थानों की अपने अपने ढंग की होती थीं, जैसे सूरत की सुधी, गुजरात की तलवार, हुगली और बर्दवान (बङ्गाल) का तेगा, बूँदी की कटार इत्यादि। किन्तु बुन्देलखण्ड इन सब प्रकारों की नकल कर के अपने यहां सब प्रकार की तलवारें तैयार करता था। —लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्ट्रेलिया की लोमड़ियाँ

किसी समय डिंगो या आस्ट्रेलिया का जंगली कुत्ता वहाँ के स्क्वेटरों (मेष-वालों) या भेड़ों के मालिकों का जानी दुश्मन था। वह उनके भेड़ों को मारकर खा डालने में बड़ा होशियार हो गया था। इसी से डिंगों को नष्ट करने में लाखों रुपये खर्च किये गये और असीम प्रयत्न किये गये। फल यह हुआ कि आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की तरह डिंगों आस्ट्रेलिये के किसी किसी भाग में केवल इनी गिनी संख्या में शेष रह गये हैं। जिन भागों में भेड़ें पाली जाती हैं उनमें डिंगों का प्रायः बिल्कुल भय नहीं रह गया है। दुर्भाग्य से बहुत से भागों में डिंगों का स्थान लोमड़ी ने ले लिया है।

जैसे रेबिट (बड़े जंगली चूहों) को लाने वाले लोगों को यह ध्यान न आया कि इनसे आस्ट्रेलिया में कितनी हानि होगी इसी तरह लोमड़ी लाने वालों ने भी इस बात पर विचार न किया कि लोमड़ी से वहाँ क्या क्या हानि होगी। कुछ वर्षों पहले अंग्रेज़ लोग इंगलैंड से आस्ट्रेलिया में लोमड़ी इस लिये लाये थे कि आस्ट्रेलिया में भी उन्हें लोमड़ी का शिकार करने का अवसर मिले। मेलबोर्न को छोड़ कर आस्ट्रेलिया के और किसी भाग में लोमड़ी का शिकार लोकप्रिय न हो सका। लेकिन आस्ट्रेलिया में लोमड़ियों की संख्या बड़ी तेज़ी से बढ़ी। आस्ट्रेलिया की ज़मीन और जलवायु लोमड़ियों को विशेष रूप से अनुकूल सिद्ध हुई। उनकी संख्या तो तेज़ी से बढ़ी ही उनका क़द भी बढ़ गया। आस्ट्रेलिया की लोमड़ियाँ इंगलैंड की लोमड़ियों से क़द में कहीं अधिक बड़ी हो गई हैं। क़द के बढ़ने के साथ साथ लोमड़ियों की चालाकी में किसी तरह की कमी नहीं हुई। अंग्रेज़ी लोमड़ी बन्दूक वाले आदमी से कम डरती है। वह जानती है कि उस पर गोली नहीं छोड़ी जायगी। इस लिये कभी कभी बन्दूक लिये मनुष्य लोमड़ी के निकट पहुँच जाता है। लेकिन आस्ट्रेलिया की लोमड़ी जानती है कि बन्दूक वाला मनुष्य उसके ऊपर गोली छोड़े बिना नहीं रह सकता इस लिये वह बन्दूक वाले के पास नहीं फटकती है। हाँ निहत्थे आदमी को देख कर कभी कभी वह चुपचाप खड़ी रहती है। इंगलैंड की लोमड़ी तो भेड़ के बच्चों पर ही हमला करती है। उन्हें बचाने के लिये इंगलैंड के गड़रिये तरह तरह की तरकीबें करते हैं। लेकिन आस्ट्रेलिया की लोमड़ी क़द में इतनी बढ़ गई है कि वह भेड़ों पर भी हमला करने में नहीं हिचकिचाती मेमने (भेड़ के बच्चे) इतने अधिक होते हैं कि उनको लोमड़ी से बचाना असम्भव सा हो जाता है। इसी से भेड़ पालने वाले लोमड़ी को मारने की ताक में रहते हैं। आस्ट्रेलिया में जो लोग रैबिट (सफेद बड़े चूहे) फँसाते हैं वे भी लोमड़ी को पसन्द नहीं करते हैं। आस्ट्रेलिया के किसान रेबिट को नष्ट करने के लिये रैबिट फँसाने वालों की सहायता लेते हैं। इसके बदले में वे उन्हें खाने पीने की चीजें दे देते हैं। उनको इन रैबिटों से बड़ी आमदनी होती है वे उन्हें बेचकर काफी धन कमाते हैं। रैबिट फंसाने वाले लोग एक साथ प्रायः तीन सौ जाल लगाते हैं। इस लिये एक दिन में वे एक जाल को एक बार से अधिक नहीं देख सकते। फिर भी जब फँसाने वाले लोग जाल को देखने आते हैं तो उन्हें अक्सर एक एक जाल में समूचे रैबिट की जगह रैबिट की एक एक टांग फंसी मिलती है। उसके शेष भाग को लोमड़ियां खा जाती हैं। इससे रैबिट फंसाने वाले लोग नाराज़ होकर लोमड़ियों को मारने की कोशिश करते हैं। एक लोमड़ी की खाल से भी उन्हें आठ दस शिलिंग (६ या सात रुपये) मिल जाते हैं।

लोमड़ी वैसे तो बड़ी होशियार होती है। लेकिन जब वह फंसे हुए रैबिट की आवाज़ सुनती है तो वह सब सावधानी छोड़ कर रैबिट को खाने के लिये सीधी जाती है। वह जानती है कि यदि उसने देर की तो कोई दूसरी लोमड़ी आकर उस रैबिट को चट कर जायगी। शिकारी जाल के पास छिपा रहता है और नजदीक आने पर लोमड़ी का शिकार करता है। कभी कभी वह रैबिट की बनावटी आवाज़ करता है। लोमड़ी धोखे में आकर नजदीक आती है और मारी जाती है। अब तो एक कम्पनी ने ऐसी सीटी तयार की है जिसकी आवाज़ फंसे हुए रैबिट की तरह होती है। इस से लोमड़ियों को मारने में बड़ी सहायता मिल रही है। लेकिन लोमड़ियों की हिम्मत बढ़ती जा रही है। एक बार एक लोमड़ी ने शिकारी के कन्धे पर चढ़ कर उसके गाल में काट खाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातियों का कोष

अ

अकवोई—गायना इन्डियन की एक उपजाति। ये लोग केरिब भाषा बोलते हैं। पर ये लोग केरिब लोगों से क़द में कुछ छोटे होते हैं। ये लोग बिना दीवारों के घर बनाते हैं और मुर्दों को खड़ा गाड़ते हैं।

अबचासी—ये लोग काकेशस के सिरकेशियन की एक उपजाति हैं। ये लोग छोटे पर मज़बूत होते हैं और ब्रूनेट भाषा बोलते हैं।

अबरास्बो—ये वेली प्रदेश में रहते हैं और माड़ी से मिलते जुलते हैं।

अकम्बा—पूर्वी अफ़्रीक़ा के बान्टू भाषा भाषी लोग। ये अपर ताना के दक्षिण में ऊँचे ढालों पर रहते हैं। वे ऊपरी दाँतों को कुछ तोड़ लेते हैं और बीच वाले निचले दाँतों को निकाल डालते हैं। वे अपने बच्चों को बड़ा प्यार करते हैं।

अफ़ग़ान—अफ़ग़ान, गिल्ज़ई, पठान, दुर्रानी, हज़ारा, ताजिक और ऐमक आदि लोग हैं। ये लोग ईरानी हैं। पर इन में मन्गोलियन की मिलावट है। ये परवतो बोलते हैं।

अयगर—बोलिविया के पठार पर रहने वाले मूल निवासी। ये लोग बड़े मज़बूत होते हैं और लामा (जानवर) पालते हैं। ये ऊपर से ईसाई हैं। लेकिन इनका विश्वास है कि असली देवता हिम प्रदेश में रहते हैं।

अरब लोग—अरब देश के लोग जो उत्तरी अफ़्रीका और एशिया के कुछ भागों में भी मिलते हैं।

अलफचूर—मलय प्रायद्वीप की एक जाति।

अमरीकन इन्डियन—ये लोग उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के रक्षित स्थानों में रक्खे जाते हैं। इन की संख्या घट कर प्रायः ४ लाख रह गई है। उत्तरी और मध्य अमरीका में वे एथेबास्कन अलगोन्क्वियन इटोकोई, सिओन सेलीशन, शोशोन-नथआटलन भाषा बोलते हैं। दक्षिणी अमरीका के इन्डियन लोग अराबक, केरिब, तूपी, तपुय्या, प्यूलची और सेने का भाषा बोलते हैं।

अलगोंक्विन—उत्तरी अमरीका की एक जाति।

अरवा—याका लोग मझा में रहते हैं। उन के गाँवों में दो बड़े फाटक दुष्टात्माओं को निकालने के लिये रहते हैं।

अन्टानोसी—मेडेगास्कर के दक्षिण और मध्य में रहने वाले लोग।

अन्टान्कराना—मेडागास्कर के उत्तरी सिरे पर रहने वाले लोग।

अन्टाइमोरो—मेडेगास्कर के धुर दक्षिणी सिरे पर रहने वाले लोग। वे एक प्रकार के हब्शी हैं।

अज़टेक—मेक्सिको के प्राचीन लोग। इन के घरों के तीन भाग होते हैं। देवालय, भोजनालय और अन्न रखने का घर।

अनामी—अनाम में रहने वाले लोग। यह श्याम देश की थाई भाषा बोलते हैं। इनके दाढ़ी कम होती है। ये बड़े चालाक होते हैं।

अबाबुआ—वेली-बोमो-काँड़ी प्रदेश के बाँटू भाषा भाषी लोग। ये बेल्जियनकाँगो में रहते हैं। इन का क़द मामूली होता है। ये लोग चतुर शिकारी होते हैं और हाथियों को विषैले भालों से मारते हैं। वे बड़े हँसमुख होते हैं और अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं।

अमाम्बे—टैंगनिका के पठार व न्यासा की एक बाँटू जाति। ये लोग निचले भाग के दो दाँत निकाल डालते हैं।

अत्न—अचिन की एक जाति।

अटायल—फारमूसा द्वीप के उत्तरी भाग में रहने वाले लोग। ये लोग ज्वार, बाजरा, चावल, सुअर और हिरण का गोश्त खाते हैं।

अज़ान्डी—नील-बेल के जल विभाजक के पास मध्य अफ़्रीका में रहने वाले मूल निवासी। पहले मनुष्याहारी होने के कारण ये नियाम-नियाम कहलाते थे। पहले ये लोग बड़े लड़का होते थे।

अपाची—उत्तरी अमरीका के वे लोग जो एथेबास्कन भाषा बोलते हैं। ये लोग बहुत बात करते हैं।

अराकन—चिली देश के मूल निवासी।

अलपायन जाति—यह छोटे सिर के लिये प्रसिद्ध हैं।

अराबक—दक्षिणी अमरीका के मूल निवासी जो ऊपरी पेरेग्वे से लेकर वेनिज़्वेला तक फैले हुये हैं।

अबाटवा—(बाटवा) मध्य अफ्रीका में बेंगव्यूलो झील के दक्षिण में लुआपूला नदी के दलदलों में रहने वाले हबशी लोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवार—काकेशस के लेसघियन लोग। वे बड़े लड़ाका होते हैं। छठीं सदी में वे डेन्यूब नदी के समीप आ बसे।

अशान्टी—गोल्ड कोस्ट के लड़ाका लोग।

अटिओ—बेल्जियन काँगो में स्टेनले पूल के उत्तर में रहने वाले बटेके लोग। बटेके का अर्थ बौना है।

अदिघी—सिरकेशियन लोग।

अन्टी—अरावाकन लोग जो कम्पा भी कहलाते हैं। ये लोग ऊपरी यूकेयाली के बनों में रहते हैं।

अचीनी—सुमात्रा के लोग। ये बड़े लड़ाका होते हैं और खेती करते हैं। वे मलय लोगों से अधिक काले तथा अधिक लम्बे होते हैं।

अफ्रीदी—पेशावर के पास वाले पठान लोग।

असीनी बोइन—मानटाना के रक्षित स्थानों में रहने वाले रेड इन्डियन लोग।

अम्बुन्दू—सैन पाल डि लोअंडा के पृष्ठ प्रदेश में रहने वाले बान्टू भाषा भाषी लोग।

अरून्टा या अरूँडा—मध्य आस्ट्रेलिया के लोग जो माकुम्बा नदी से मेकडोनल पर्वत तक फैले हुये हैं।

अनेटोलियन भाषायें—इन्डो यूरोपियन भाषायें जिन में आर्मेनियन और विलीन फ्रिजियन और सिदियन भाषायें भी शामिल हैं।

अरेकूना—गायना के केरिब भाषा भाषी लोग। ये लोग सवन्ना प्रदेश में रहते हैं और मिट्टी के घर बनाते हैं।

अल्बेनियन—अलबेनिया के रहने वाले।

अबोर—ब्रह्मपुत्र की घाटी के उत्तर पूर्व की ओर वाली पहाड़ियों में रहते हैं और तिब्बती-बरमी भाषा बोलते हैं जो आसाम के उत्तर में बोली जाती है।

अशाँगो—विषुवत् रेखा के फ्राँसी सी प्रदेश के बाँटू भाषा भाषी लोग।

आ

आर्य द्राविड़—संयुक्त प्राँत, बिहार लंका आदि के रहने वाले।

आइबेरियन—इतिहास के पूर्व दक्षिणी-पश्चिमी योरुप के रहने वाले।

आइसलैंडर—आइसलैंड द्वीप में रहने वाले स्कैंडनेवियन लोग।

आइरिश—आयर लैंड के निवासी।

आर्मेनियन—आर्मेनिया देश (पठार) के रहने वाले लोग।

आस्ट्रेलियन—आस्ट्रेलिया के मूल निवासी लोग बड़े दयालु होते हैं। लेकिन ये प्रायः नष्ट हो रहे हैं।

इ

इजो—नाइजर-डेल्टा के लोग ये लोग बड़े मज़बूत होते हैं और पाम आयल (तेल) के कारबार में दलाली का काम करते हैं।

इलोंगोट—फिलीपाइन के लोग। ये लोग नाटे लेकिन मज़बूत होते हैं। इनके यहाँ विवाह तब होता है जब दूल्हा किसी को मारकर उसका सिर ले आता है। नौ दिन के बाद यह सिर दुलहिन के घर में गाड़ दिया जाता है।

इमेरेशियन—अपर और मध्य रिओन घाटी में रहने वाले जार्जियन लोग।

इन्का—बोलिविया के लोग। पहले ये लोग पीरू देश में राज्य करते थे।

इन्डोनेशियन—पूर्वी द्वीप समूह के निवासी।

इट्टू—हारा ज़िले में बोली जाने वाली भाषा।

इरूला—नीलगिरी के काले लोग।

इरोकाई—पूर्वी बन में रहते हैं। ये लोग उत्तरी अमरीका के केवल रक्षित स्थानों में रहते हैं।

इन्गुश—काकेशस के लोग। कहा जाता है कि ये लोग बड़े चोर होते हैं।

ईडो या बीनी—बेनिन तथा उसके निकटस्थ देश प्राचीन काल में एक महान् राज्य का केन्द्र होने से सुविख्यात थे जो सत्रहवीं शताब्दी में गोल्ड कोस्ट तक विस्तृत था। बेनिन मानव बलिदान के कारण कलुषित था। राजा सुव्यवस्थित था तथा श्रेणीबद्ध कर्मचारियों द्वारा घिरा रहता था। वह अपने कुल का निर्धारण किसी योरब के द्वारा करता था। लगभग ७२० वर्ष पूर्व योरुब ने किसी निकटस्थ राजा के कुल को अपने अधीन करके (उस कुल के कुछ लोग अब तक बेनिन में थोड़े बहुत अधिकार का उपभोग कर रहे हैं) एक राज कुल की नींव दिया था। ईडो लोग लोअर नाइजर की भाषा बोलते हैं जो टोगोलैंड के ईव तथा कुकुरुकु से समानता रखती हैं। ईडो लोग शूरबीर तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिमानी होते हैं। उनके नेता अपने को योरुप के निवासियों से उत्तम समझते थे। हाँ; वे लोग अपने पड़ोसियों से अधिक समझदार तथा कम स्वच्छन्द रहते हैं। उनके घरों में सच्ची छत नहीं रहती। प्रत्येक कोठरी के मध्य में एक खुला स्थान रहता है। जिससे ख़राब ऋतु में जल-वृष्टि से बचाव नहीं रहता।

इजिप्शियन (मिस्री)—इजिप्ट देश के निवासी हैं। सात हजार वर्ष पहले से लेकर अब तक यहाँ की जन संख्या मिश्रित हो गई है जो चिपटी नाक वाले हेमिटिक लोगों के दो भिन्न समुदाय का सम्मिश्रण है। दो हज़ार वर्ष पश्चात् मेडिटेरेनियन (भूमध्यसागर) के लम्बे सिर वाले मनुष्य हेमिटिक लोगों के स्थान में बसने लगे। वे रोम राज्य के पूर्व अठारहवीं शताब्दी में बहुत बलवान हो गये। उसी समय अल्पाइन के गोल सिर वाले मनुष्य सुविख्यात शक्ति धारण किये। देश की जनसंख्या में अब भी लम्बे सिर वालों का बाहुल्य है। किन्तु प्रान्तानुसार उनमें कुछ विभिन्नता है। एस्यूट के ऊपर मुसलमान लोग अधिकतर लम्बे सिर वाले तथा चौड़ी नाक वाले हैं। और इसके नीचे वाले डेल्टा में योरुप के अल्पाइन तथा मेडिटेरेनियन लोगों की बढ़ती है।

इँगलिश—इँग्लैंड के रहने वाले लोग।

इथिओपियन—गाला आदि पूर्वी अफ्रीका के लोग।

इगाबो—नाइजर नदी के पूर्व के सोम्बो लोग।

इगोरोट—फिलीपाइन द्वीप समूह के लोग। ये लोग बड़े अच्छे किसान होते हैं कभी कभी वे किसी पहाड़ों के पूरे ढाल को सींच लेते हैं। इनका रंग हल्का पीला या भूरा होता है। इनकी नाक चपटी और क़द नाटा होता है। टिंगुयान, इटनेग, बनयान, नीलयान आदि इनकी उपजातियाँ हैं।

ई

ईकोई—क्रास नदी से कुछ दूर नाइजीरिया की बान्टू बोलने वाली एक जाति है।

ईबो—नाइजर नदी के निचले भाग में रहने वाले हब्शी लोग। इनकी संख्या लगभग ४० लाख है। ये लोग बड़े खुले दिल और उदार होते हैं।

ईबीबिओ—नाइजीरिया के दक्षिण पूर्व में रहने वाले हबशी लोग।

उ

उज़बेग—समरकन्द, बुख़ारा आदि के तुर्की लोग। जो फ़रग़ाना के किपचक लोगों से मिलते हैं। १४ वीं सदी में उज़बेग ख़ाँ इनका नेता था। इसीसे इनका भी यह नाम पड़ गया। अब ये लोग बद्दू जीवन छोड़कर धीरे २ बसने लगे हैं। लकड़ी और मिट्टी के घर बन जाने पर भी इनके यहाँ गर्मियों में फेल्ट के डेरे अब भी दिखाई देते हैं। ये लोग कज़्ज़ाक और किरगीज़ लोगों से बहुत कुछ मिलते हैं।

ए

एन्टलीज़ प्रदेश—पश्चिमी द्वीप समूह जहाँ अरावक और केरिब लोग रहते थे।

एबिसीनियन—ये लोग एबीसीनिया के रहने वाले हैं यह शब्द हबशी से बिगड़ कर बना है। ये लोग ईसाई हैं। अमहारिक और टिग्नी भाषा बोलते हैं।

एन्टीमेटिना—या होवा। ये लोग मेडेगास्कर में रहते हैं।

एलुन्डा—अंगोला की बाँटू भाषा बोलने वाली एक जाति।

एल्यूट—एस्किमो की एक उपशाखा जो एल्यूशियन द्वीप और अलास्का में रहती है।

एमेज़ान—ओरिनीको जातियाँ। ये लोग एक समय में आधे दक्षिणी अमरीका को घेरे हुए थे। उत्तर-पश्चिम के लोग अरावक और केरिब भाषा बोलते थे। दक्षिण-पूर्व के लोग तूपी और तपुय्या भाषा बोलते थे। ये लोग मछली मारते हैं और शिकार तथा खेती करते हैं। ये लम्बे लम्बे घरों में रहते हैं। ये लोग कम कपड़े पहनते हैं और ढोल से ख़बरें (सिगनल) पहुँचाते हैं। गायना के रहने वाले सूती कपड़े भी बुनते हैं।

ऐ

ऐटा—फिलीपाइन द्वीप के हबशी लोग जो पहाड़ी प्रदेश में रहते हैं। इनके बाल ऊन के समान घूँघरदार और काले होते हैं। इनकी नाक कम लम्बी लेकिन अधिक चौड़ी होती है। होठ मोटे होते हैं। ये लोग मछली मार कर, शिकार करके और वन से खाद्य पदार्थ एकत्रित करके निर्वाह करते हैं। ये लोग बड़े ईमानदार होते हैं।

ऐनू—जापान और दक्षिणी साखालियन के लोग। ये लोग छोटे पर मज़बूत होते हैं। इनका चेहरा कुछ चौड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। नौ सदियों तक उन्होंने सारे जापान को घेर रक्खा। वे भालू के सम्मानार्थ बड़ा त्योहार मनाते हैं।

अं

अंडमानी—इनका क़द लगभग ४ फुट १० इञ्च होता है। ये लोग बहुत कम कपड़ा पहनते हैं और मछली मार कर गुज़ारा करते हैं।

अंडी—यहूदी ढंग के काकेशस लोग। ये अखार भाषा बोलते हैं।

अंगोनी—इन लोगों की उत्पत्ति ज़ुलू लोगों से हुई है। वे न्यासा झील के पश्चिम में रहते हैं और बाँटू भाषा बोलते हैं।

क

कनका—(मनुष्य) मैसूर और दक्षिणी बम्बई प्रान्त की भाषा।

कछारी—आसाम के कछार में रहने वाले लोग।

कवापल—अल्जीरिया के बर्बर लोग।

कवार्डियन—काकेशस के मुसलमान लोग। वे अपनी सिरकेशियन भाषा को अरबी अक्षरों में लिखते हैं।

कदापन—बोर्नियो के क्लेमान्टन लोग।

कराया—ब्रेज़िल के इण्डियन लोग। जो अरगुआया नदी के किनारे रहते हैं।

कशगई—दक्षिणी फारस के लोग।

कलामाँटन—बोर्नियो के वे मूल निवासी जो खेती करते हैं।

कलाबीत—बोर्नियो के कलामाँटन लोग।

कनूरी—चाड झील के दक्षिण-पश्चिम के लोग जो सूडानी भाषा बोलते हैं। वे लोग बड़े लम्बे और काले होते हैं। पर वे हासा या मज़दूर लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

करेलियन—पूर्वी फिन लोग। इस शब्द का अर्थ ग्वाला है। ये लोग अपने पड़ोसी रूसी लोगों से मिलते हैं।

कवाबिश—एँग्लो-इजिप्शियन सूडान के धनी और शक्तिशाली लोग।

कवीरी—न्यूगिनी की फ़्लाई नदी के मुहाने पर रहने वाले लोग।

कछिन—इरावदी के निकास के पास रहने वाले लोग।

कनेम्बू—नाइजीरिया के उत्तरी प्रान्तों के लोग जो चाड झील के दक्षिण-पश्चिम में रहते हैं। कनेम्बू शब्द का अर्थ है कनेम का मनुष्य।

करेन—श्याम के पश्चिम की ओर बरमा के रहने वाले।

काकचिक्विल—क्विचे के दक्षिण में ग्वाटे माला के लोग।

काडूविग्रो—ग्रेनचाको के ग्वे कुरु लोग जो खेती करते हैं। वे जुलाहे और कुम्हार का काम करने में भी निपुण हैं।

काज़ीकुमुक—काकेशस के लाक या लेसगियन लोग। इस प्रदेश में यही लोग पहले पहल मुसलमान हुए थे इसलिये इन्हें गाज़ी भी कहते हैं।

काल्काडून—पूर्वी क्विन्सलैंड के मूल निवासी।

कामचाडल—(इटेलमीज) कमश्चटका के प्राचीन साइबेरियन लोग।

•कारागा—पूर्वी अल्टाई के तुर्की लोग।

काराकल्पक—(काली टोपी वाले) आमू नदी के तुर्की लोग।

कायन—बोर्नियो के बौने लोग।

कायपो—ब्रेज़िल की अरागुआया नदी के पश्चिम में रहने वाले लोग।

कायाखा—मानखमेर भाषा बोलने वाले स्याम के लोग

काफ़िर—(१) उत्तरी-पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान के लोग। ये लोग हिन्दुस्तानी हैं जिन्होंने मुसल्मान होने से इन्कार कर दिया। ये लोग बड़े बीर होते हैं और अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं। (२) नैटाल के बाँटू लोग।

कामिलो रोई—आस्ट्रेलिया के मूल निवासी जो न्यू साउथ वेल्स के उत्तर में रहते हैं।

कारामुन्डी—आस्ट्रेलिया के मूल निवासी जो प्रायः नष्ट हो चुके हैं।

काकेशियन—गोरे लोग।

काघुना—इरोकोई समूह के अमरीकन इण्डियन जो राज्यक्रान्ति के समय कनाडा चले गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किकुयु—पूर्वी अफ्रीका के वे लोग जो कीनिया पर्वत के पश्चिम में रहते हैं।

किपचक—स्वर्ण समुदाय (गोल्डियन होर्ड) के लोग।

किवई—लोअर फ़्लाई नदी और न्यूगिनी के पापुअन लोग।

किरग़ीज़—तूरानी तुर्क लोग।

किरेई या किरैट—मंगोलिया के उत्तर-पश्चिम में रहने वाले तूरानी तुर्क लोग या किरगीज़ लोग।

किस्त—काकेशस के मुसलमान लोग।

किंओवा—अमरीकन इण्डियन लोग जो मिसूरी और आर्कांसारन में रहते थे।

क्विचुआ—बोलिविया के रेड इण्डियन लोग। इनको चरका भी कहते हैं। पोटोसी में वे अब भी वही पोशाक पहनते हैं।

क्विचे—ग्वाटेमाला के मध्य भाग में रहने वाले लोग। इनका क़द काला और रंग पीला होता है। ये लोग खेती करते हैं।

कीनेयाह—बोर्नियो की एक प्रधान जाति।

क्री—मेकेंज़ी प्रदेश के रेड इण्डियन लोग। ये लोग बड़े ईमानदार और अतिथि-सेवी होते हैं।

कुबू—सुमात्रा के घुमक्कड़ लोग।

कुआनयामा—दक्षिणी अंगोला और उत्तरी डमारा-लैंड के बाँटू भाषा-भाषी लोग।

कुविरी—नेलसन अन्तरीप के रहने वाले न्यूगिनी के लोग।

कुई—खोंड लोग।

कुर्द—लघु एशियाई (एशिया माइनर) और आरमीनिया के पठार पर रहने वाले लम्बे लोग।

कुनामा—दक्षिणी इरीट्रिया के सूडानी बोलने वाले लोग।

कुरुम्बा—नीलगिरि के लोग।

कुयोनो—फिलीपाइन लोग। इनका रंग पीला और बाल खड़े होते हैं। इनके पैर का बड़ा अँगूठा बड़ा लम्बा होता है। वह दूसरी अँगुलियों से बहुत अलग होता है।

कुशापट—पूर्वी अफ्रीका के अगाओ, गाला, सुमाली अफ़रसाहो आदि लोग।

कूटेनाई—ब्रिटिश कोलम्बिया के कूटेनाका लोग। ये लोग छाल की विचित्र नाव रखते हैं। पहले ये लोग नदी और झील के तट पर ही रहते थे। अब हाल में ये लोग घोड़े पर भी चढ़ने लगे हैं।

क्रू—तट तथा लाइबेरिया के पृष्ठ प्रदेश में रहने वाले हबशी लोग। ये लोग नाव चलाने में प्रसिद्ध हैं। ये अपने माथे के नीचे नीला टीका लगाते हैं।

केई—द्वीपीय मूल निवासियों और मलय लोगों के मेल से उत्पन्न लोग। ये लोग मेलमेल (श्रेष्ठ), रिनरिन (प्रजा) और ईरी नाम के तीन वर्गों में बँटे हुए हैं।

क्वेसी—(ख्वेसी) लाइबेरिया के वे लोग जो मैंडिंगो भाषा बोलते हैं।

क्रेज या क्रेडी—बहरुलगज़ल के चौड़े सिर वाले लोग। ये लोग कुछ छोटे होते हैं।

केलिफोर्निया क्षेत्र—वह ज़िला जिसमें ऐसे लोग बसे हैं कि जिनके पास नाव या मिट्टी के बर्तन भी नहीं हैं। ये लोग जंगली बीजों पर निर्वाह करते हैं।

केनेलोस या क्विजोस—इक्वेडार में नापो के निकास के पास रहने वाले लोग।

केरिब—दक्षिणी अमरीका के वे लोग जिनमें अका-वाय, बकेरी, गालिबी, मकूसी, रुकियन आदि लोग शामिल हैं।

केशिबो या कारापेची—यूकेयाली के पश्चिम में नोअन लोग।

केल्ट—इटेलोकेल्ट समूह की भाषा बोलने वाले लोग।

कैज़क—अरल, कास्पियन बेसिन के उत्तर-पूर्व में रहने वाले लोग। ये लोग किरग़ीज़ लोगों से मिलते जुलते हैं। ये लोग घोड़े और शेर पालते हैं।

कैटिश—मध्य आस्ट्रेलिया के मूल निवासी। ये बेरो-क्रीक के आस पास बसे हैं। इनका रहन-सहन आरुँटा लोगों से मिलता जुलता है।

कोली—पश्चिमी हिन्दुस्तान की एक जाति।

कोहिस्तानी—कोहिस्तान के तानिक लोग।

कोम्बे या नगुम्बी—स्पैनिशगिनी के तट पर बेनिटो और केम्पो नदियों के बीच में रहने वाले लोग जो बाँटू भाषा बोलते हैं।

कोएडे—पूर्वी पुर्चगाली अफ्रीका में मसालू नदी के पास रहने वाले मकोरडे लोग।

कोजेर—मध्य अफ्रीका के दारफ़ूर लोग। इनका रंग ज़ैतून रंग का होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113723

कोरियन—कोरिया के रहने वाले।

केरिब्वी—मलय प्रदेश की एक जाति। ये लोग पडांग के पास पहाड़ी प्रदेश में रहते हैं।

कोर्याक—कमचटका के पास के रहने वाले पेलिओ साइबेरियन लोग। ये लोग मछली मार कर और रेनडियर पाल कर अपना निर्वाह करते हैं।

कोटा—नीलगिरि प्रदेश के दस्तकार लोग।

कोटोको—चाड झील के दक्षिण में लम्बे सूडानो लोग। ये लोग लकड़ी के टुकड़ों को सी कर नाव बनाते हैं।

क्रोबो—गोल्डकोस्ट के ट्वी लोग।

कोमाञ्चो—शोशोनियन भाषा बोलने वाले व्योमिंग के रेड इण्डियन लोग।

कोसाक—रूस के लड़ाका सिपाही।

क्रो—अमरीकन इण्डियन लोग जो सिओन भाषा बोलते हैं।

ख

खा (मनुष्य)—इण्डोचीन के लोग।

खालकस—लोअर मंगोलिया के लोग।

खासी—आसाम की खासी पहाड़ियों के लोग।

खेमर—कम्बोडिया और स्याम के ये लोग जो मान खमेर भाषा बोलते हैं।

खोंड या कोंढ (गोंड)—उड़ीसा के पहाड़ियों के द्राविड़ लोग। धान की खेती करने के लिये ये लोग बन को जला दिया करते हैं।

ग

गलेगो—गेलिशिया उत्तरी पश्चिमी स्पेन की भाषा।

गाया अक्रा—गोल्ड कोस्ट के लोग।

गारो—खासी के पश्चिम में आसाम के लोग।

ग़िल्ज़ा या खि़ल्जी—पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान के तुर्की लोग।

गिल्याक—उत्तरी साखालियन के लोग जिनका मुख्य पेशा मछली मारना है।

ग्रीक—वर्तमान ग्रीस (यूनान) के लोग।

गुरखा—नैपाल के लोग।

गुरियन—सुराम (काकेशस) पर्वत के जार्जियन लोग।

गुआनाको प्रदेश—केपहार्न से बोलिविया तक का वह प्रदेश जिसमें बद्दू लोग रहते हैं।

गुआरानी—पेरेग्वे और दक्षिणी ब्रैज़िल के लोग।

गुआकुरु—पेरेग्वे के वर्ण संकर लोग।

गोला—सिअरालिओन और लाइबेरिया की सीमा के लोग।

च

च्यूस्यर—जार्जिया के वर्ण संकर लोग।

चाम—कोचीन चाइना के लोग।

चान्टोज़—तुर्किस्तान के वर्ण संकर लोग। ये लोग खेती और व्यापार करते हैं।

चारगर—चिली और शान्सी के उत्तर वाले प्रान्तों में रहने वाले मंगोल लोग।

चारुआ—यूरुग्वे के लोग बोला का प्रयोग करते हैं और घोड़े पर सवार होकर शिकार करते हैं।

चिकासा—अकूला हामा के मकूगियन लोग जो कोलम्बस के आने से पहले मिसीसिपी स्टेट में बस गये थे।

चिचाअकी—दक्षिणी अमरीका का उत्तरी भाग इसमें वह फिरके रहते हैं जो विषैले तीर चलाते हैं। इस तरह के कुछ लोग कोलम्बिया में भी रहते हैं।

चिन—ब्रह्मा के पहाड़ी लोग। इसी से चिन्डविन नाम (इरावदी नदी की सहायक नदी का) पड़ा है।

चिलकट—अलास्का के तिनकिट लोग जो अपने कम्बलों के लिये मशहूर हैं।

चिनूक—प्रशान्त महासागर के तट पर बसने वाले लोग कोलम्बिया नदी के उत्तर में बसे हुये थे। आजकल वे प्रायः नष्ट हो गये हैं।

चिप्पेवा—अलोन्क्विन जाति के ओजिवा लोग।

चिप्पेवियान—कनैडा के एटोवास्कन लोग।

चिरिग्वानो—ग्रेन चाको के पूर्व में रहने वाले कम्बा लोग।

चित्राली—हिन्दुकुश के दक्षिण में रहने वाले लोग। इनका सिर गोल होता है।

चिक्विटो—तूवी भाषा बोलने वाले बोलिविया के लोग। इनका रंग ज़ैतूनी और क़द नाटा होता है। ये लोग बड़े ईमानदार और मेहनती होते हैं।

चीनी—चीन देश के निवासी। उत्तर के लोग मन्चू और दक्षिण के लोग मिआओत्से कहलाते हैं। चीनी लोग बड़े ईमानदार और मेहनती होते हैं।

चुकची—साइबेरिया के धुर उत्तर-पूर्व में रहने वाले पेलिओ साइबेरियन लोग। इनकी दो जातियाँ हैं। एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति के लोग रेनडियर पालते हैं दूसरी जाति मछली मारती है।

चुवास—कज़ान प्रदेश के फिनिक लोग। ये लोग बड़े मेहनती और कम खर्च होते हैं। वे बड़े अच्छे किसान होते हैं।

चेचेन—मध्य टेरेक आसा आदि के लोग। इनमें किस्त, गलगई और इन्गुश लोग शामिल हैं। ये लोग अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं।

चेरेमिस—वालगा प्रदेश के फिनिक लोग। इनके सिर छोटे, आखें तंग, दाढ़ी छोटी और नाक चपटीहोती है।

चेरोकी—वर्जिनिया के इरोक्विन लोग।

चेचीन—मैदान के रेडइन्डियन जो अल्गान्क्वियन भाषा बोलते हैं और सूर्य-नृत्य करते हैं।

चोलो या चोला—बोलविया के वर्ण संकर इन्डियन लोग।

चोलोन—हुआलागा के बायें किनारे पर रहने वाले दक्षिणी अमरीका के लोग।

चोन्टाल—निकारेगुआ के पोपोलूका लोग। नाहुआटल भाषा में चोनटान अजनबी को कहते हैं।

चोरोटेगा—निकारेगुआ और मेक्सिको के वे लोग जो माँग्वे भाषा बोलते थे।

चोकटा—मिसीसिपी नदी के समीप रहनेवाले मस्कोगियन लोग। ये लोग मुरदों की हड्डियों को साफ करके हड्डी को घरों में जमा करते थे।

ज

जगतई भाषायें—तुर्की-तारतारी भाषायें जिसमें उईगुट, कोमन, जगतई, उसबेग, तुर्कोमन और कज़ान भाषायें शामिल हैं।

जर्मन—जर्मनी के रहने वाले लोग।

जम्बी—सुमात्रा के मलय लोग।

जम्बो—एबीसीनिया के वे लोग जो सोबात नदी के किनारे पर रहते हैं।

जाट—उत्तरी-पश्चिमी भारत के किसान लोग। पुराने समय में इन्होंने सिन्ध की घाटी को जीता था।

जापानी—जापान के लोग। इनमें माँचू और कोरिया का रुधिर भी मिला है।

जार्जियन—काकेशस के दक्षिण में रहने वाले कर्थिली लोग।

जाकुन—मलय प्रायद्वीप के वर्ण संकर लोग। ये प्रायः मलय प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में रहते हैं। इनके बाल खड़े होते हैं।

जावानी—जावा द्वीप के रहने वाले लोग। इनका रंग हल्का और बाल सीधे होते हैं। इनका सिर गोल होता है, ये सुंडा के लोगों से क़द में बड़े होते हैं।

जिप्सी—बञ्जारे, नट लोगों की तरह के घुमक्कड़ लोग। फारस और तुर्किस्तान में वे लूली और मलङ्ग कहलाते हैं सिरिया में उन्हें चिंगने कहते हैं। इँग्लैंड में इस तरह के लोग बहुत कम हैं। रूस में वे बहुत अधिक हैं।

जिवारो—एमेज़ान के निकास के पास के लोग। ये लोग वड़े स्वाभाविक भक्त होते हैं। इन्हें स्वतन्त्रता बड़ी प्रिय होती है।

ज़िरियन—फिनिक लोग जो मामूली क़द, भूरे बाल, और गोल सिर के होते हैं।

जुकून—बेन्यू नदी के दक्षिण में सूडानी बोलने वाले लोग।

जुलू—(अमाज़ुलू) दक्षिणी पूर्वी अफ्रीका के बाँटू भाषा भाषी लड़ाका लोग।

ज़ूनी—उत्तरी अमरीका के दक्षिण-पश्चिम में रहने वाले प्यूबलो लोग।

जेर्क्री—(शेक्री) नाइजीरिया में नदी के पास के रहने वाले लोग।

जेफी—पू लोगों के ही रूपान्तर हैं।

ज़ेपोटेक—छोटे सिर वाले मेक्सिको के निवासी जो स्पेन वालों के आक्रमण के समय प्रशान्त महासागर की ओर रहते थे।

ट

टर्क—टर्की के लोग जो शायद प्राचीन हूण लोगों के सम्बन्धी हैं।

टर्को—ईरानी, बलूची, बरुही और अफ़ग़ान लोग।

टस्केरोरा—नार्थ केरोलिना के सन इकट्ठा करने वाले इन्डियन लोग।

टश—जार्जियन लोग जो प्रायः काकेशस के उत्तर में रहते हैं।

टावस्टियन—पश्चिमी फ़िन लोग। जो अपने को टोलेस्टो नदी के पास रहने वाले कहते हैं इनका शरीर चौड़ा और भारी होता है। इनकी आँखें तिरछी, भूरी या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीली होती हैं। ये लोग ईमानदार लेकिन बदला लेनेवाले और सुस्त होते हैं।

टापीरो—न्यूगिनी के हबशी लोग जो मिमिका नदी के निकास के पास रहते हैं। पापुअन लोगों से इनका रंग कुछ हल्का (गोरा) होता है। इनका क़द ५ फुट से ५ फुट ४ इं० तक लम्बा होता है।

टिंगुयन या इटनेग—उत्तरी लूज़न के पहाड़ी लोग जो धान की खेती करते हैं।

टिंलकिट—एलास्का के पच्छिमी तट पर रहने वाले अमरीकन इण्डियन लोग। इनका सिर गोल और रङ्ग पीला होता है।

टिकीटिकी—ऊपरी इटूरी नदी के बौने लोग। जो काँगो और नील नदी के बीच में रहते हैं। ये लोग बद्दू होते हैं। ये लोग अटिश्रो या बेटेके लोगों से मिलते जुलते हैं। ये लोग चट्टानों में आश्रय लेते हैं। शिकार की चीज़ें देकर मंगबेट्टू या मौम्बू लोगों से फल, हथियार और कपड़ा मोल लेते हैं।

टुंगस—निग्रोसाइबेरियन लोग। जिनमें गोल्डी, मांचू और ओरोचोन आदि लोग शामिल हैं। शिकार करने में ये लोग बड़ी वीरता दिखलाते हैं। ये शमानी होते हैं।

टेडा—चाड झील के उत्तर और ताइबस्ती पठार में रहने वाले सहारा रेगिस्तान के लोग। इनका रंग काला होता है लेकिन ये हबशी नहीं होते हैं। ये लोग टीबू और कनूरी लोगों से मिलते हैं।

टेलिगू—आन्ध्र प्रान्त की भाषा।

टेंगरेसे—जावा के पूर्व में रहने वाले पहाड़ी लोग। इनके सिर लम्बे, नाक चौड़ी और बाल घूँघुर वाले होते हैं। ये लोग दक्षिणी भारत के उन लोगों की सन्तान हैं जो यहाँ ७वीं सदी से आने लगे।

टेहुआना—मेक्सिको के टेहुआस्टी पेक प्रदेश में रहने वाले ज़ेपोटेक लोग।

टेहेलची—पेटोगोनिया के मूल निवासी। इनका क़द बहुत लम्बा (५ फुट ८ इञ्च से ६ फुट तक) होता है। ये लोग अधिकतर गुआनाको का मांस खाते हैं।

टोडा—नीलगिरि की पहाड़ियों पर रहने वाली एक जाति। पहले इन लोगों में कन्या को मार डालने की चाल थी। इसलिये स्त्रियाँ बहुत कम हो गईं और एक स्त्री के कई पति होने लगे।

टोबा—पिल्कोमेयो और बरमेजो के बीच में रहने वाले बोलविया के लोग। ये लोग लम्बे होते हैं और चिरीगुआनो लोगों से उनका रंग अधिक काला होता है।

टोमक—वे बल्गेरियन लोग जो मुसल्मान हो गये।

टोंगा—न्यासा झील के पश्चिम में रहने वाले बाँटू भाषा-भाषी लोग। इसी नाम के कुछ लोग इन्हाम्बेन के पास तट पर रहते हैं।

टोपा—पाँडीचीरी के पुर्तगीज़ लोग।

ड

डच–हालैंड के लोग। और डुंगन (ज़ुंगन या ज़ुंगर) इलाई नदी के पास वाले प्रदेश के पश्चिमी मंगोलियाटिकी टारटार लोग। ये लोग मुसल्मान हैं लेकिन चीनी ढंग से रहते हैं।

डनाकिन या अफार—हेमायटिक जाति के वे लोग जो एबीसीनिया और समुद्र के बीच वाले खुश्क प्रदेश में रहते हैं। बनावट में येला सुमाली से मिलते हैं। लेकिन इनमें अरबीपन बहुत कम है।

डाकोटा या सिओक्स—ये लोग सुपीरियर झील के दक्षिण-पश्चिम मैदान में रहते थे। इनकी संख्या इस समय ३०,००० से अधिक नहीं है।

डाफला—हिमालय प्रदेश के बाँधिन लोग जो शिकार से रोज़ी कमाते हैं।

डुसून—बोर्नियो के इन्डोनेशियन लोग जो खेती करते हैं।

ड्रूस—लेबनान और एन्टीलेबनान के लोग। ये लोग अरबी बोलते हैं। नाम मात्र को इनका मत ईसाई है।

डेनी या टिनेह—उत्तरी अमरीका में मेकेंज़ी-समुदाय के लोग। ये लोग छाल के रेशे से जाल बनाकर केरिबो हिरण को पकड़ते हैं। इसी मांस से उनका गुज़ारा होता है। इस मांस के पकाने के लिये वे स्प्रूस लकड़ी की बनी हुई टोकरी से हाँडी का काम लेते हैं। वे लोहे के टुकड़ों से आग बना लेते हैं फिर वे आग में पत्थरों को गरम कर लेते हैं। अन्त में वे इन्हीं गरम पत्थरों को मांस से भरी हुई टोकरी में डाल डाल कर अपना भोजन पका लेते हैं।

डेलावेर या लेनापी—एल्गोंक्वियन समुदाय के लोग जो पहले डेलावेर नदी के बेसिन में रहते थे।

डेन—डेनमार्क के लोग। इनकी भाषा वही है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नार्वेजियन लोगों की है। निओलिथिक समय से पहले यह देश बसा नहीं था।

त

तगबानुआ—फिलीपाइन के केलिमिथेन द्वीप समूह के निवासी। क़द में ये लोग छोटे होते हैं पर इनकी टाँगें बड़ी लम्बी होती हैं। ये बड़े मेहनती होते हैं।

तनगुत—दक्षिणी-पश्चिमी चीन के मंगोल और दूसरे लोग।

तगाल—बोर्नियो के लम्बे और मज़बूत लोग।

तगालोग—मेनिल्ला के पास रहने वाले फिलीपायन लोग।

तलामान्का—चिब्चा भाषा बोलनेवाले कोस्टारिका के लोग।

तराञ्ची या इलाई तारतार—तुर्की लोग जो रूसी तुर्किस्तान में आकर बस गये। जब चिंगेज़ ख़ाँ ने कुल्जा पर अधिकार कर लिया तभी ये लोग इधर आये थे। ये लोग सार्ट लोगों के सम्बन्धी हैं। लेकिन ये लोग खेती करते हैं और अपनी स्त्रियों को अधिक स्वतन्त्रता देते हैं।

तरास्को—मेक्सिको के मेचोआकन प्रदेश के व्यूरेपेचा लोग। ये लोग बड़े बीर और दयालु होते हैं। इनकी स्त्रियाँ अपने बच्चों को कन्धों पर लटका कर ले जाती हैं।

ताजिक—गोल सिर वाले पूर्वी फ़ारस के लोग। ये लोग खेती करते हैं। पहाड़ी प्रदेश में रहने वाले लोग परसीवान (फारसी की एक उप-भाषा) बोलने के कारण परसीवाल कहलाते हैं। मैदान में रहने वाले दिखन (किसान) कहलाते हैं।

तामिल—उत्तरी लङ्का और दक्षिणी हिन्दुस्तान के लोग। इनमें पल्लाई, एयीन और वेल्लाल जातियों के सिर लम्बे होते हैं। दूसरे लोगों के सिर चौड़े होते हैं। इनकी द्राविड़ भाषा बड़ी पुरानी है। शुद्ध भाषा कोशेन और बिगड़ी हुई भाषा को कोदुम कहते हैं।

तानला—मेडेगास्कर के घने बनों में रहने वाले हबशी लोग।

ताई या थाई—स्याम इन्डोचीन और चीन के वे लोग जो स्यामी चीनी भाषा बोलते हैं। लोलो लोगों को छोड़ कर ये लोग इस प्रदेश के बड़े पुराने रहने वाले हैं। लड़कपन में इनकी बुद्धि बड़ी तीव्र होती है और ये लोग सीखने में बड़े कुशल होते हैं। लेकिन नशीली तम्बाकू पीने के कारण बड़ी उम्र में वे बड़े सुस्त हो जाते हैं।

ताराहुमारे—मेक्सिको के उत्तरी पहाड़ी प्रदेश में रहने वाले लोग। इनका रंग कुछ भूरा और शरीर गठीला होता है।

तारतार—मध्य एशिया के असली तारतार लोग तो नष्ट हो गये। परन्तु यह शब्द पश्चिमी एशिया के तुर्क लोगों के लिये प्रयुक्त होता है। ये लोग मंगोल लोगों से हिल मिल गये। तारतारी भाषाओं में तुर्की तारतारी, किरग़ीज़, बश्कीर, नोगाई, कोमान, कारचल, काराकल्पक, मश्चेरक और साइबेरियन भाषायें शामिल हैं।

गविंजुर—नूबिया के लोग। इन्हीं में चाड झील के दक्षिण-पश्चिम में रहने वाले शूवा अरबी भी शामिल हैं। कहते हैं कि ये लोग ट्यूनिस से यहाँ आये।

तुकानो—एमेज़ान प्रदेश के लोग जो देशाना लोगों के दुश्मन हैं। इनका सिर गोल होता है। ये मछली मार कर खाते हैं और बेटोया भाषा बोलते हैं।

तुगाई या कैया-कैया—न्यूगिनी के मनुष्याहारी लोग।

तुर्की—मध्य एशिया के लोग जो खेती करते हैं। तुर्की लोगों में याकूत, किरगीज़, उज़बेग, टर्कमान आदि लोग शामिल हैं। पश्चिमी तुर्कों की भाषा में डरबेन्ट, अज़र बैजान, क्राइमियन, अनाटोलियन और रुमेलियन भाषायें शामिल हैं। अनाटोलियन और रुमेलियन के मिलने से ओस्मानली भाषा बनी है।

तुर्कीतारतारी—इन लोगों में क़ज़ान तारतार, तारतार, क्राइमिया के तारतार, तौरिदा, किरग़ीज़, कास्पियन के नोगई और ओरनबर्ग में बश्कीर शामिल हैं।

तुरकाना—रुडाल्फ झील के पच्छिम में पूर्वी अफ्रीका के लोग। ये संसार भर के मनुष्यों से अधिक लम्बे होते हैं। इनकी औसत ऊँचाई ७ फुट होती है। ये लोग ढोर पालते और मछली मारते हैं।

तूरानी—पारसी लोगों के अवस्ता ग्रन्थों में तूरा (तुरया) शब्द उन प्रदेशों के लिये आया है जिन्हें आजकल तूरान कहते हैं। तारतारी का दूसरा नाम तूरान है।

तोरज—सेले बीस द्वीप के जंगली लोग। ये लोग सीधे सादे और ईमानदार होते हैं।

तोमत—खीवा के पड़ोस में रहने वाले तुर्की लोग।

तौरेग—सहारा के बर्बर लोग जिन्हें अस्थेनावा (अल्बेनन्टरवालास्तान) के रहने वाले कहते हैं।

—क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोहा और फौलाद

बहुत पुराने समय में मनुष्य अनाज और तरकारी उगाना नहीं जानते थे। वे जंगली जानवरों का शिकार करके उनके मांस से अपना पेट भरते थे। उन दिनों जङ्गली जानवर बहुत थे। लेकिन उनको मारना कठिन था। उस समय के लोगों के हथियार बहुत भद्दे थे। वे तेज़ पत्थरों को लकड़ी में बांध कर भाला बनाते थे।

एक बार कुछ लोगों ने काले पत्थरों के ढेर के पास आग जलाई। इन्हीं में एक

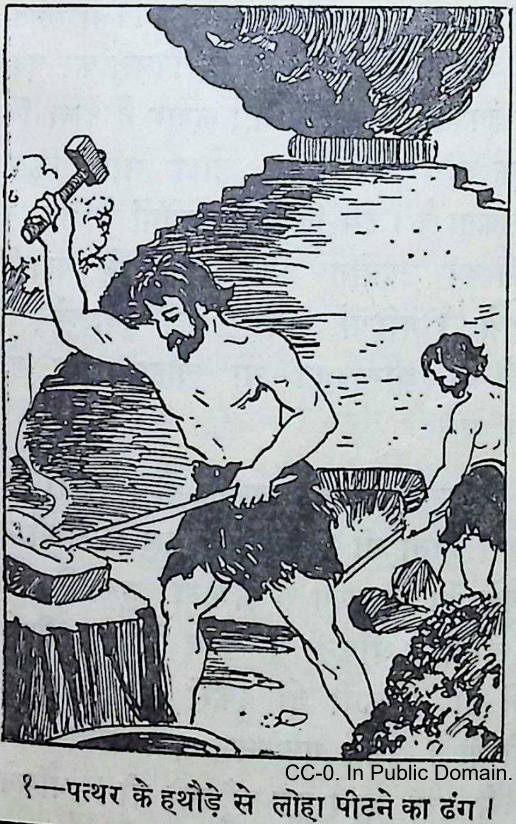

१—पत्थर के हथौड़े से लोहा पीटने का ढंग।

गरमी में घुल कर वह शीरे की तरह गाढ़ा और आग की तरह लाल हो गया। ठंडा होने पर

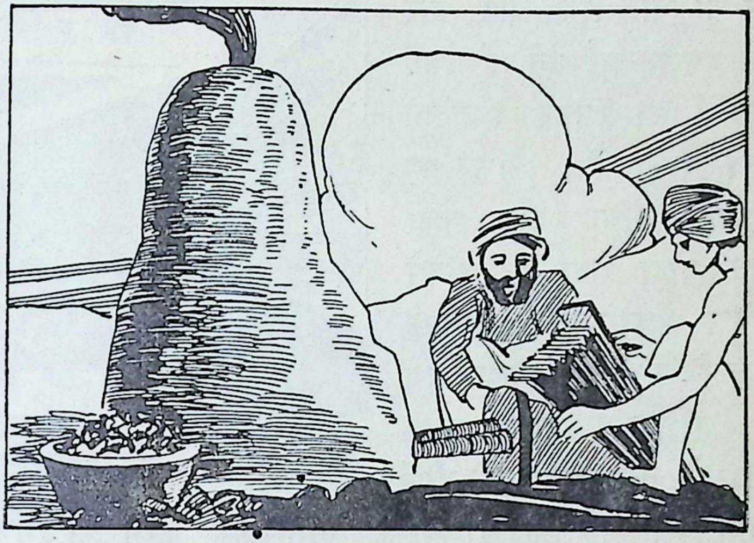

२—लोहा साफ करने की पुरानी भट्ठी।

वह फिर कड़ा हो गया। यही लोहा था। इसको फिर गरम करके इन्होंने इसे पत्थर के हथौड़ों से पीटा। उससे उन्होंने तरह तरह के हथियार बनाये। इस तरह एक नया युग शुरू हुआ।

लोहे में जल्द जङ्ग (काई) लग जाती है। इस लिये बहुत दिनों तक नहीं ठहरता है। फिर भी इजिप्ट (मिस्र) देश के एक पिरेमिड में लोहे का एक टुकड़ा मिला जो ४००० वर्ष का पुराना है। दिल्ली में पृथिवी राज के किले के पास वाला लोहे का खम्भा भी बहुत पुराना है।

एशिया के पश्चिम में भूमध्य सागर में क्रीट का टापू है। यहाँ के लोगों के बहुत पुराने समय में अजब ढंग से लोहे का पता लगा। वहाँ जङ्गल में बड़े ज़ोर की आग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह जगह पर वहाँ के लोगों को लोहे के ढेर मिले। इसी से वहाँ के लोग बड़े होशियार लुहार बन गये। सब से अच्छा लोहा आकाश से आता है। रात को जो छोटे छोटे तारे टूटते हुए दिखाई देते हैं उनमें किसी किसी में बहुत ही बढ़िया लोहा रहता है। लेकिन इस तरह का आया हुआ लोहा बहुत थोड़ा होता है। सबसे अधिक लोहा हमारी ज़मीन के भिन्न भिन्न भागों में मिलता है।

एशिया के प्राचीन लोग लोहे से तरह तरह की चीज़ें बनाते थे। पश्चिमी एशिया के एसीरियन लोग लोहे के रथ और सुन्दर गहने बनाते थे। उनके पास लोहे की तलवार और औज़ार थे। उनका आरा आजकल के आरे की तरह था। वे लोग लोहे से फौलाद बनाना जानते थे। फौलाद अधिक मज़बूत और चमकीला होता है। वह लोहे में कार्बन मिलाने से बनता, है कार्बन कोयले में मिलता है। तुम्हारी पेन्सिल में प्रायः शुद्ध कार्बन है। हीरे में सब से अधिक शुद्ध कार्बन रहता है।

पहले लोहे का पता लगाने और उसको शोधने में बहुत खर्च होता था। इस लिये आरम्भ में लोहा बहुत कीमती था। स्पार्टा (ग्रीस) के लोग लोहे के सिक्के बनाते थे। सिकन्दर हिन्दुस्तान से सोने के साथ साथ लोहे को भी लूट ले गया था। अब से छः सौ वर्ष पूर्व तक कहीं कहीं लोहे के तसले और बर्तन शाही हीरा जवाहिरात की तरह कीमती समझे जाते थे। पहले कच्चे लोहे को साफ

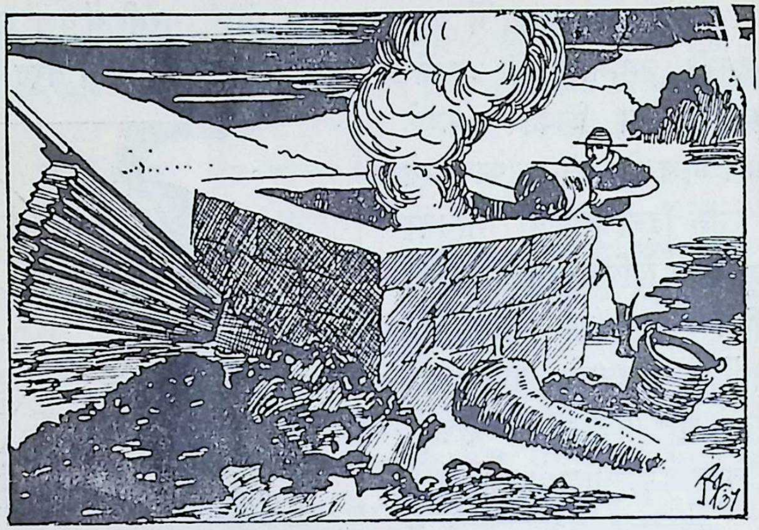

३—लोहे का साफ करना

करने का ढंग बहुत सीधी सादा था। कच्चा लोहा लकड़ी के कोयले से गरम किया जाता था। अधिक आँच में लोहा पिघल कर एक तरफ इकट्ठा हो जाता था। लुहार ने देखा कि अधिक आंच से अधिक लोहा साफ किया जा सकता है। इस लिये कुछ लोगों ने हवा के झोंकों का उपयोग करने के लिये पहाड़ी चोटियों पर भट्टियाँ बनाईं। वहाँ हवा ज़ोर से लगती थी और बहुत सा लोहा साफ हो जाता था।

लेकिन कभी हवा चलती थी। कभी वह बन्द हो जाती थी। इस लिये मिस्र के लोगों ने खोखले बेंत की नली से फूँकना शुरू किया। कुछ लोगों ने धौंकनी से काम लिया। मिस्री लोगों की धौंकनी दो बकरों की खाल से बनती थी। इनमें एक नल लगा रहता था। इसी से हवा आग तक पहुँचती थी। धौंकने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला एक पैर एक खाल पर और दूसरा पैर दूसरी खाल पर रखता था। वह रस्सी को हाथ से पकड़ कर खालों के ऊपरी भाग को उठाता था। फिर वह बारी बारी से एक पैर से एक खाल को दबाता और दूसरी को ढीला करता जाता था।

इसके बाद भट्टियाँ बनने लगीं। इनमें कोयले की तहों के बीच में लोहे की तहें भरी जाती थीं। आँच को भीतर रखने के लिये बाहर से भट्टी मिट्टी या पत्थर से बन्द कर दी जाती थी। धुआँ निकलने के लिये ऊपर छेद होता था। नीचे हवा के आने के लिये छेद होता था। इस तरह की भट्टी में एक दो सेर लोहा निकालने में कई दिन लग जाते थे।

स्पेन में केटेलोनिया के लुहारों ने कुछ अच्छी भट्टियाँ बनाईं। इनमें वे बड़ी बड़ी धौंकनियों को हाथ या पानी के ज़ोर से चला कर हवा भरते थे। लड़ाई और दूसरे कामों के लिये लोहे की मांग बढ़ती ही गई। लोहा गलाने में लकड़ी का इतना कोयला खर्च होने लगा कि कई जगह जंगल साफ होने लगे। इंगलैंड के मल्लाह डरने लगे कि कहीं जंगल बिल्कुल साफ न हो जायें और उनको नाव बनाने के लिये लकड़ी न मिले। इसलिये वहाँ एक क़ानून बना कि कोई जलाने के लिये पेड़ को न काटे। इसी समय पत्थर का कोयला मिला और नये ढंग की बड़ी बड़ी भट्टियाँ बनने लगीं।

अमरीका के रेड इंडियन लोग लोहे के कुछ ज़ेवर बनाते थे। लेकिन वे बड़ी बड़ी भट्टियों को पसन्द नहीं करते थे। जब १६२१ ई० में इंगलैंड से आये हुए लोग वर्जीनिया में बसने लगे तो उन्हें वहाँ बहुत सा लोहा मिला। लोहे को साफ करने के लिये उन्होंने वहाँ बड़ी

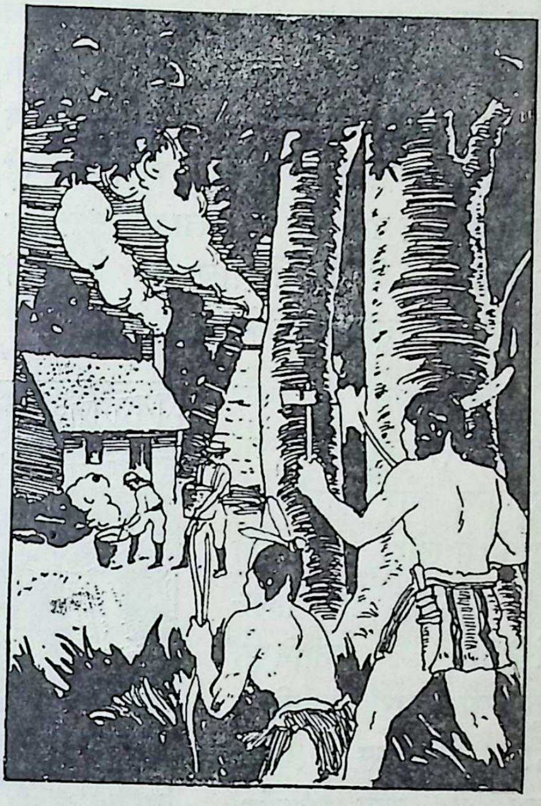

४—लोहा और फौलाद।

बड़ी भट्टियाँ बनाईं। इस पर रेड इंडियन लोगों ने उन पर हमला किया। इससे १०० वर्ष तक वहाँ किसी ने भट्टियों में लोहा गलाने का नाम नहीं लिया।

जब गोरे लोग मज़बूत हो गये तब उन्होंने लोहे से अँगीठी, बर्तन, हल और तोपें बनाईं।

जब रेल निकली तब तो और भी अधिक लोहे का सामान वहाँ बनने लगा। आजकल वहाँ कई सौ मन लोहा हर रोज़ तयार किया जाता है। लोहे के कारखाने वाले घड़ियों के [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुल, घरों के ढाँचे, रेल की पटरियाँ और बड़े बड़े इंजिन बनाते हैं।

हमारे देश के लोग बहुत पुराने समय में ही लोहे को काम में लाने लगे थे। गदर के समय तक लगभग हर गाँव के लुहार बहुत बढ़िया तलवार और बन्दूक़ बनाते थे। हल, फाउड़ा, गँड़ासी और हँसिया, खुरपा इस समय भी बहुत से स्थानों में बनाया जाता है। बड़े पैमाने पर नये ढंग का कारखाना टाटानगर या जमशेदपुर में हाल में खोला गया है। यहाँ फौलाद की बहुत सी चीज़ें बनती हैं।

हिन्दुस्तान में छोटा नागपुर (बिहार) उड़ीसा, मध्यप्रान्त और दूसरे कई स्थानों में लोहा पाया जाता है। अमरीका में पेन्सिल्वेनिया, वर्जीनिया, न्यूजेरसी और सुपीरियर झील के पड़ोस में लोहा बहुत है। मध्य इंगलैंड, उत्तरी फ्रांस, और जर्मनी में भी काफी कोयला निकलता है। स्वेडन और स्पेन का लोहा बाहर बहुत जाता है।

कुछ खानों में लोहा धरातल के पास मिलता है। कई खानों में वह अधिक गहराई पर पाया जाता है। अक्सर ड्रिलिंग मेशीन से छेद किया जाता है। बारूद से चट्टानें तोड़ी जाती हैं। फिर बिजली के ज़ोर से चलने वाले फौलादी फाउड़े इस कच्चे लोहे को नीचे से ऊपर लाते हैं। जहाँ कई फाउड़े एक साथ चलते हैं वहाँ कुछ ही मिनटों में गाड़ी के कई डब्बे एक साथ भर जाते हैं। यह गाड़ियाँ इस कच्चे लोहे को दूसरे स्थान (ब्लास्ट फर्नेस के पास) पर ले जाती हैं। वहाँ दूसरी मशीनें इन डब्बों को उलट कर खाली कर लेती हैं।

ब्लास्ट फर्नेस (झोंके वाली भट्टी) एक बड़े भट्टे की तरह लगातार आग और चिनगारियाँ उगलती रहती है। इसकी चिमनी १०० फिट या इससे भी अधिक ऊँची होती है। इसमें नाप नाप कर कच्चा लोहा, कोक (पिसा हुआ कोयला) और चूना भरते हैं। यह

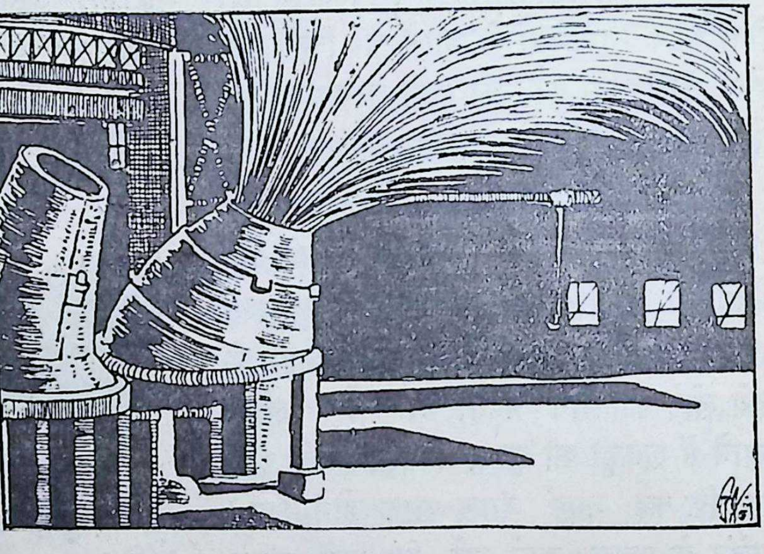

५—फौलाद।

सब चीज़ें कड़ी आँच में पिघल कर पहले आपस में मिलती हैं फिर वे अलग हो जाती हैं। चूना और कच्ची धातु का मैल स्लैग (धात-मैल) कहलाता है। २१२ अंश फारेनहाइट की आँच में पानी खौलने लगता है। लेकिन इस भट्टी में लगभग ३००० अंश फारेनहाइट की आँच रहती है। चार पाँच घंटे की लगातार आँच के बाद भट्टी की तली के दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। ऊपरी दरवाज़े से स्लैग (मैल) बहता है। निचले दरवाज़े से पिघले हुए लोहे की चकाचौंध कर देने वाली लाल लाल गरम धारा बहती है।

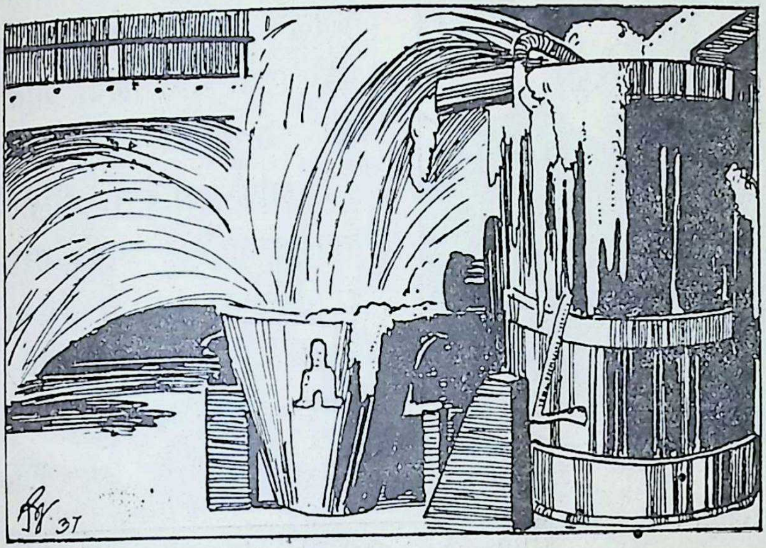

६—फौलाद।

लेडिल या बड़ी बड़ी थालियाँ इस लोहे को भर कर दूसरे स्थान पर ले जाती हैं। यहाँ इससे दो ढाई मन के टुकड़े (पिगबेट) बनते हैं। पहले पिघला हुआ लोहा बालू में ढाँचों पर बहाया जाता था। वहाँ इसकी सूरत लेटे हुए सुअर की तरह हो जाती थी। इसी से इसे पिग आयरन कहते थे। आजकल पिघले हुए लोहे को बिना ठंडा किये ही कास्ट आयरन या फौलाद बनाने के काम में लाते हैं।

कास्ट आयरन में ३.५ फी सदी कार्बन रहता है। इससे यह कम आँच में पिघल जाता है। लेकिन ठंडे होने पर इसके जल्द टूटने का डर रहता है। फिर भी अँगीठी आदि ढालने के लिये यह बहुत अच्छा रहता है।

राट आयरन में बहुत थोड़ा (०.२ फी सदी) कार्बन रहता है। इससे यह देर में गलता है। लेकिन इससे सुन्दर आकार की चीज़ें बन सकती हैं। जंज़ीर, लंगर, छड़ आदि राट आयरन से बनते हैं।

फौलाद इन दोनों से अच्छा होता है। इसमें लगभग २ फी सदी कार्बन रहता है। पहले लोग गरम लोहे को एकदम ठंडे पानी में डाल कर फौलाद बनाते थे। आजकल लग भग आध घंटे में नये ढंग से गरम लोहे को फौलाद में बदल लेते हैं। गरम लोहा एक बड़े बर्तन में किया

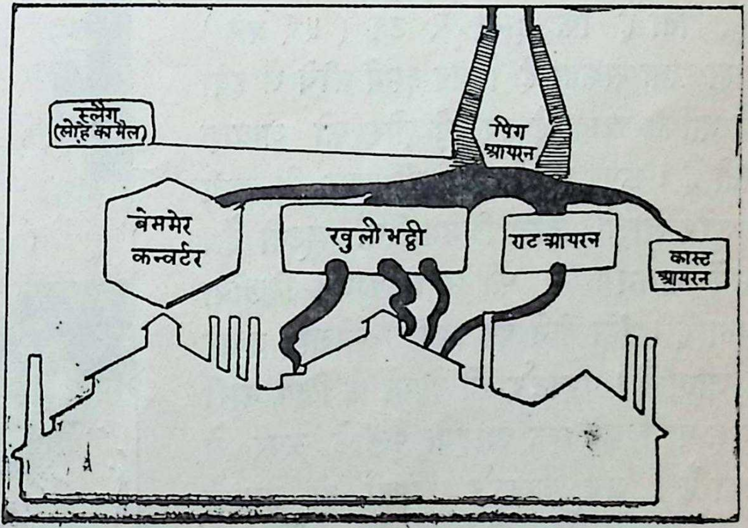

७—लोहा और फौलाद। कच्चे लोहे से फौलाद इसी प्रकार बनाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। इसको बेसमेर कन्वर्टर कहते हैं। इस ढंग की खोज हेनरी बेसमेर नामी एक अंग्रेज़ ने की थी। इसी से यह बेसमेर कन्वर्टर कहलाता है। इस बर्तन की सूरत एक अंडे की तरह होती है। यह इतना बड़ा होता है कि इसमें २ टन (५६ मन) लोहा समा सकता है। जब इसमें नीचे से हवा का झोंका आता है तब बड़े ज़ोर की आवाज़ होती है। ऊपर से पीली पीली लपट निकलती है और लाखों लाल चिनगारियाँ छूटती हैं। इसमें लगभग २ फी सदी कार्बन मिलाया जाता है। ठंडा होने पर इसी से फौलाद तयार हो जाता है। कन्वर्टर को देखने के लिये भारी ऐनक पहन कर एक आदमी पुल के ऊपर से आता है। जब कन्वर्टर खाली हो जाता है तब वह इशारा करता है और कन्वर्टर फिर पिघला हुआ लोहा भरने के लिये सीधा कर लिया जाता है।

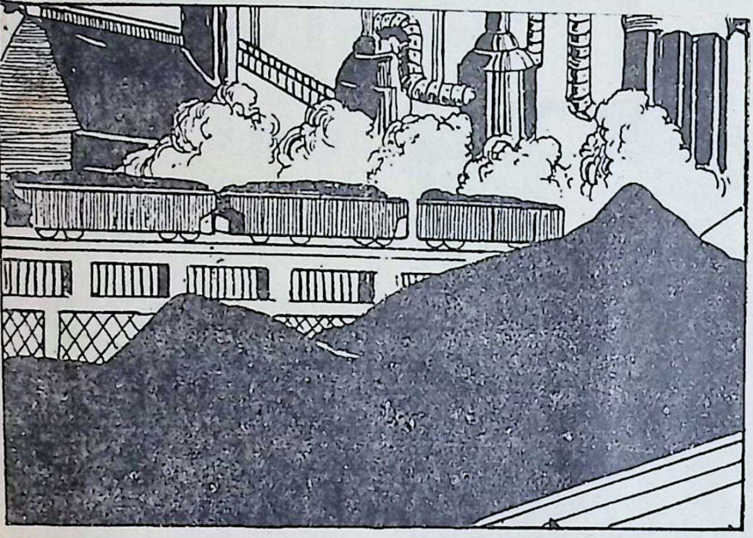

८—फौलाद का कारखाना।

रेल की पटरी, जहाज़ और मोटर की चादरें और दूसरी बड़ी चीज़ों को बनाने के लिये बेसमेर ढंग से काम लिया जाता है। कई चीज़ों के लिये ओपेन हर्थ (खुली भट्टी) से काम लिया जाता है। इस ढंग से देर लगती है। लेकिन बढ़िया फौलाद तयार होता है। काफी गरम हो जाने पर दरवाज़ा खोला जाता है। मैल (स्लैग) ऊपर तैरता है और ऊपर के ही रास्ते से एक

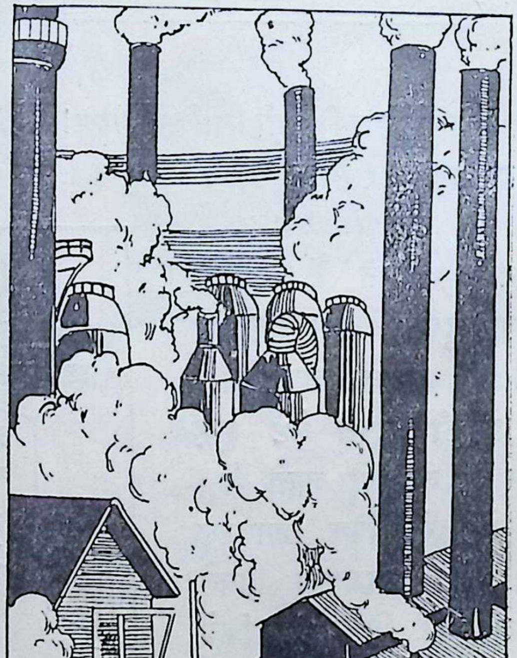

९—लोहे की खान और कारखाना।

बर्तन में गिरता है। पिघला हुआ फौलाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

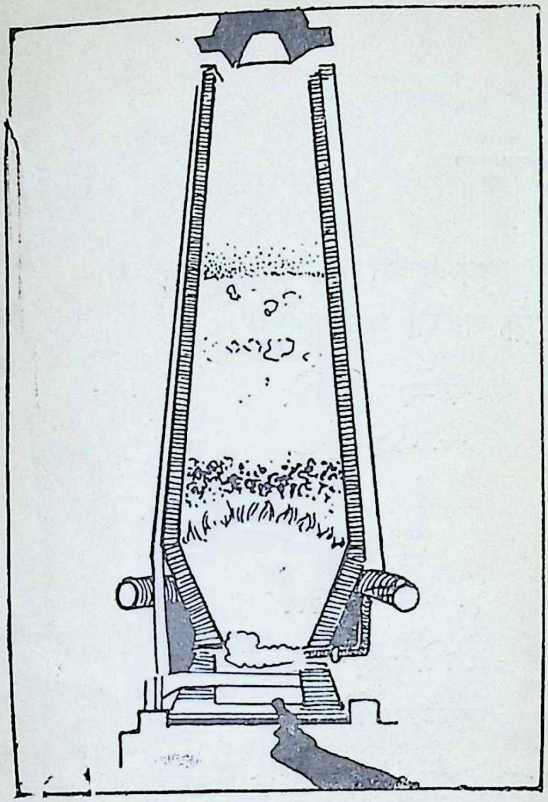

१०—लोहे और फौलाद की भट्ठी

लेडल या बड़ी बाल्टी में गिरता है। यह बाल्टियाँ मशीनों से उठाई जाती हैं।

रोलिंग मिल में फौलाद से तरह तरह की चीज़ें बनती हैं। जब गरम फौलाद की पटरियाँ या चादरें रोलरों के बीच से गुज़रती हैं तब उनसे लाल चिनगारियाँ चारों ओर को छूटती हैं। यहाँ कुछ मशीनें गरम पटरियों में सूराख करती हैं। कुछ मशीनें पटरियों और चादरों को मूली की तरह आसानी से काटती हैं। यहीं और भी कई तरह की चीज़ें बनती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" की नई योजना

देश-दर्शन

के सम्बन्ध में मध्य प्रान्त के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री और वर्तमान प्रधान मंत्री माननीय पंडित रविशंकर शुक्ल जी का शुभ सन्देश

कैम्प-पचमढ़ी.
८.६.३८

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद से
श्री पंडित रामनारायण जी मिश्र
'देशदर्शन' नामक ग्रंथमाला
प्रतिमास निकाल रहे हैं। आम
जनता में संसार के देशों का ज्ञान
फैलाना वर्तमान परिस्थिति में
विशेष महत्व की बात है। इस
का लाभ प्रत्येक स्थान व
संस्था को उठाना चाहिये।
मैं पंडित जी को कई वर्षों से
जानता हूं और मेरा विश्वास है
कि यह ग्रन्थमाला उपयोगी
होगी।

रविशंकर शुक्ल
शिक्षा मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-तत्व

प्राकृतिक भूगोल के सम्बन्ध में हिन्दी में अद्वितीय ग्रन्थ, पृष्ठ-संख्या २८६, लगभग २०० चित्र और नक़्शे, सुन्दर रङ्गीन कपड़े की जिल्द। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

भूतत्व के प्रथम भाग में पृथ्वी, सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, परिमाण, दिन-रात, अक्षांश देशान्तर, प्रामाणिक समय, तिथिरेखा मानचित्र और ऋतुपरिवर्तन का वर्णन है।

द्वितीय भाग में स्थल-मंडल के सभी अंगों (भूपंजर, आग्नेय पर्वत, रिफ़्ट घाटी, गैसर, भूकम्प, पठार मैदान, धरती, नदी, झील, समुद्र-तट आदि) का विवेचन है।

तृतीय भाग में जलमंडल-महासागर, गहराई, निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ़) प्रवालद्वीप, खारीपन, तापक्रम, ज्वार-भाटा, समज्वार-रेखाओं, धाराओं, गल्फ़ स्ट्रीम और सारगासो सागर का वर्णन है।

चतुर्थ भाग में वायुमंडल की व्याख्या है। आक्सिजन, नाइट्रोजन, भाप, त्रसरेणु, ताप, बादल, कुहरा, ओस, मेह, हिम ओला, विद्युत, मौसम, मौसमी हवाओं, ट्रेड हवाओं, पछुआ हवाओं, समभार-रेखाओं, समताप रेखाओं, चक्रवात, वर्षा, जलवायु सम्बन्धी प्रदेशों का वर्णन है।

पंचम भाग में जीवधारी मण्डल, वनस्पति, पशु, मनुष्य जाति, पेशे, खनिज और कारख़ानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अब तक ऐसा सर्वाङ्ग पूर्ण प्राकृतिक भूगोल प्रकाशित नहीं हुआ था। शीघ्र ही आर्डर भेजिये।

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-सामयिक पत्र जगत में मासिक "भूगोल" का एक मुख्य स्थान है। अपने विषय की सुन्दर सामग्री देने में वह सदैव अग्रगामी रहा है। प्रस्तुत विशेषांक में एबीसीनिया का इतिहास, भौगोलिक-चित्रण आदि सभी बातें दी गई हैं। इस एक पुस्तक के पढ़ लेने से एबीसीनिया के नर-नारी और भूमि, जंगल, नदी, पहाड़ आदि के विषय में काफी ज्ञान हो जाता है। यह अंक विद्यार्थियों के तो काम का है ही, परन्तु साधारण पाठक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इस अंक का मूल्य ।।) है। भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद से प्राप्य। "स्वराज"

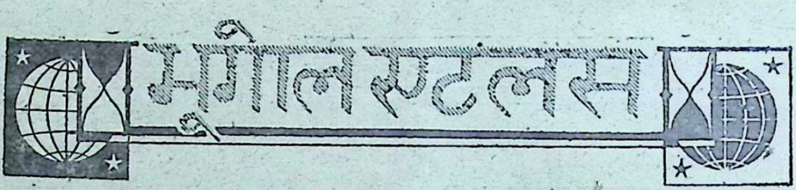

इस भूगोल-एटलस से संसार के विभिन्न देशों की राजनैतिक सीमा और विभागों के सिवा उनकी पैदावार, आयात और निर्यात, जलवायु, मिट्टी, स्थल की ऊँचाई और निचाई, वर्षा का परिमाण, जन-संख्या, वहाँ के निवासियों का भोजन और वस्त्र, व्यापार आदि सैकड़ों विषयों का ज्ञान हो जाता है। अन्त में कुछ नक्शे ऐसे भी दिये गये हैं जिन से विदित होता है कि पिछले डेढ़ हज़ार वर्षों में किस शताब्दी में संसार के कितने भूभाग का पता लोगों को था। इन तमाम दृष्टियों से यह एटलस सभी भूगोलप्रेमियों के लिये संग्रहयोग्य है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये तो यह एक अमूल्य भेंट है। इसके द्वारा भूगोल का ज्ञान ऐसी सरलता से हो जाता है कि तनिक भी परिश्रम नहीं जान पड़ता।—"चाँद"

शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत, पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य १)

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-संसार

बाल-संसार की एक प्रति देकर अपने बालकों को दूसरे देशों के बालकों का हाल बताइये और उनमें नया जीवन डालिये।

संक्षेप में बाल-संसार में १११ बालकों के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा उनके देशों के जीवन की झांकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस अंक में लगभग तीन सौ चित्र हैं। जिनसे इस अंक की रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार में पांच भाग हैं। पहले भाग में अफ्रीदी, नैपाली, सिन्धी, बर्मी सिंहाली आदि भारतवर्ष के बच्चों का वर्णन है। दूसरे भाग में चीनी, जापानी, स्यामी, अफ़गानी, ईरानी, अरबी, तुर्की, आदि एशिया के बालकों पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे भाग में अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी आदि योरुप के बालकों के रहन सहन का वर्णन है। चौथे भाग में एस्किमी, रेड इंडियन, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्रेज़ील, पीरू, अर्जेन्टाइना आदि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बालकों का वर्णन है। पांचवें भाग में अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहने वाले बालकों का वर्णन किया गया है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है।

तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है।

बड़े आकार (१० × ७½) के २१० पृष्ठ, मूल्य १।) सजिल्द १।।), प्रत्येक भाग का अलग मूल्य ।=)

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन-अंक

चीन अंक के दो भाग हैं। पहले भाग में चीन की स्थिति, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, पशु-पालन, कारबार, शिक्षा, समाचारपत्र, कहावतें। मनोरंजन, खेलकूद, हवाई डाक और हवाई सेना, मार्शल च्यांगकाई शेक, मेडम च्यांगकाई शेक, हुइशी (चीन के गान्धी), डा० सनयातसेन, धार्मिक व्यवस्था, चित्रकला, चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट, जापानी साम्राज्य, चीन में घुसने के मार्ग, मङ्गोल लोगों का देश चीनविच्छेद, नानकिंग की सरकार रूस का पूर्वी प्रदेश, चीन और जापान, मन्चूकुओ की स्थापना, आधुनिक परिस्थिति, राजनैतिक रूप रेखा, चीन का साम्यवादी दल, चीन जापान संघर्ष और जनरल चूतेह की अपील है। इसमें कई नक़शे और चित्र हैं। बड़े आकार की पृष्ठ संख्या ८८, मूल्य ।।)।

दूसरे भाग में चीन की एटलस है। प्रत्येक प्रान्त के पूरे (बड़े) पृष्ठ के २४ नक़शे। चीन देशका बड़ा नक़शा (दो पृष्ठों पर)। इसी भागमें नक़शों की व्याख्या और प्रान्तों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त १६ ऐतिहासिक नकशे, ऐतिहासिक घटनाओं की सूची, और चीनी इतिहास के चुने हुए चित्र हैं। अन्त में संसार में चीन का आर्थिक स्थान प्रदर्शित करने के लिये ८ आर्थिक नकशे और कई डायाग्राम (खाके) हैं। मूल्य ।।) दोनों भागों का एक साथ मूल्य बारह आना।

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक इतिहास एटलस

पृष्ठ संख्या १४७, नकशों की संख्या ७४। इस पुस्तकाकार एटलस में एक पृष्ठ पर नक़शा और उसके सामने वाले पृष्ठ पर उसकी व्याख्या है। वर्सेल्स (वर्साई) की सन्धि, जर्मनी की पश्चिमी सीमायें, पोलिश कारीडार, रूस के खोये हुए प्रदेश, लिटिल एण्टेण्ट, यूगोस्लैविया की जातियां, पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प संख्यक जातियां, स्पेन की गृह-कलह, भूमध्य सागर में राष्ट्रों का संघर्ष, इटली और लालसागर, इब्न सऊद की विजय, चीन विच्छेद, अफ्रीका के स्वाधीन राज्य, संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हब्शियों की समस्या, दक्षिणी अमरीका की जातियां आदि सभी प्रसंगों के व्याख्या सहित बड़े बड़े नक़शे दिये गये हैं जिनका दैनिक पत्रों में उल्लेख आता है। यह एटलस आजकल की घटनाओं से दिलचस्पी रखने वालों के बड़े काम की चीज़ है। मूल्य केवल ।।)

देश-निर्माता

इस ८२ पृष्ठ की छोटी सी पुस्तक में उन ११ नेताओं की रोमांचकारी जीवनियां हैं। जिन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर अपने अपने देश में नई जान फूंकी है। भारत के महात्मा गान्धी, चीन के च्यांग काई शेक, टर्की के मुस्तफा कमाल पाशा, ईरान के रिजाशाह, रूस के लेनिन, अरब के इब्न सऊद, इटली के मसोलिनी, जर्मनी के हिटलर, आयरलैंड के डी वेलरा, पोलैंड के पिलसुड्स्की और चेकोस्लोवेकिया के मसारिक ने किस प्रकार अपने अपने देश को बनाया उन उन घटनाओं पर इस पुस्तक में पूराप्रकाश डाला गया है। रंगीनकवर पर सभी निर्माताओं के चित्र हैं। शीर्षक पर नेता के चित्र के साथ देश का नकशा भी दिया गया है। मूल्य केवल चार आना।

हमारी दुनिया

पृष्ठ संख्या ८४ चित्र और नकशों की संख्या ८१, आर्ट पेपर का तिरंगा कवर। यह वास्तव में भूगोल की पहली सीढ़ी है। मोटे टाइप और सरल भाषा में नाप का साधारण ज्ञान, दिशा-ज्ञान, नियत पैमाने पर नक़शा बनाना, गांव और शहर के नक़शे का पढ़ना, नदी की रामकहानी, तारे, चन्द्रमा, सूर्य और गोले का दर्शन आदि ११ पाठ हैं। पुस्तक इतनी रोचक है कि बालक आरम्भ करके इसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ना चाहते हैं। इससे उन्हें भूगोल के मूलमन्त्रों का सहज ही ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों के लिये भी इसमें दो शब्द हैं। विहार, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा प्रायमरी शालाओं के लिये स्वीकृत। मूल्य चार आना।

"भूगोल" कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष

का

भूगोल

[ले० "भूगोल"—सम्पादक, पं० रामनारायण मिश्र]

यह भूगोल सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा, और लङ्का में निजी यात्रा के आधार पर बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। ४०० पृष्ठ, १०० से ऊपर चित्र और नक़्शे। विहार, संयुक्त प्रान्त, अजमेर और मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा हाई और नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिये स्वीकृत। यह पुस्तक हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रवेशिका की परीक्षा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये भी स्वीकृत है।

भारतवर्ष के ऊपर अब तक इतनी सुन्दर और प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य केवल २) रु० डा० व्यय ।≈) अलग।

—मैनेजर, "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन-अंक

'भूगोल' के समयानुकूल बड़े सुन्दर सुन्दर विशेषांक निकलते हैं। उन विशेषांङ्कों से पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे। इस बार जब स्पेन की सारे संसार में बड़ी चर्चा है, इसका स्पेन-अङ्क हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित हुआ है। इस अङ्क में स्पेन का पुराना और नया इतिहास, जलवायु, निवासी, तथा अन्य बहुत सी ज्ञातव्य बातें दी गई हैं। पाठकों को इस उपयोगी अंक से लाभ उठाना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १३६, चित्र संख्या ६९, एक बड़ा (दो पृष्ठ) का नक़शा, २९ अन्य नक़्शे मूल्य, केवल ।-)

ईरान

इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फ़ारस (ईरान) देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

भुवनकोष

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में जिन स्थानों का वर्णन है, उसके वर्तमान नाम दिये गये हैं। जो नष्ट हो गये हैं उनकी स्थिति बतलाई गई है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर कुछ रोचक लेख हैं। कई छोटे-बड़े नक़्शे हैं। मूल्य केवल १) रु०।

भूगोल कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार शासन

नया संस्करण, रायल साइज़, पृष्ठ संख्या २४०, मूल्य केवल २) रु०

इसमें संसार के प्रधान देशों की शासन पद्धति का वर्णन है। प्रत्येक देश के राजनैतिक दल, चुनाव के नियम अल्पसंख्या, धारासभाओं के अधिकार, जनता का शासन पर नियन्त्रण, भाषा का प्रश्न आदि शासन सम्बन्धी सभी बातों पर रोचक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको अपने देश और दूसरे देशों की शासन सम्बन्धी सभी समस्यायें समझ में आ जायँगी।

टर्की

पृष्ठ संख्या (रायल साइज़) ६०

इस पुस्तक में टर्की के भौगोलिक विवरण के साथ साथ विवाह और मृतक संस्कार, टर्की का ऋण, [illegible] रेलवे, मुस्तफा कमाल पाशा और नवीन टर्की, तुर्की पार्ल्यामेंट, राष्ट्रपति का आदर्श खेत, आदर्श गांव, टर्की और महायुद्ध, खिलाफत का उत्थान और पतन, तुर्की साहित्य आदि २९ लेख और आवश्यक चित्र और नकशे हैं। मूल्य केवल १) रु०

अफ़ग़ानिस्तान

पृष्ठ संख्या १३३

इसमें अफ़ग़ानिस्तान की स्थिति, प्राकृतिक विभाग, जलवायु, पशु-वनस्पति, व्यापार, सिंचाई, कारीगरी, पठान स्त्रियां, रक्त का मूल्य, धार्मिक विचार, नगर-मार्ग, भाषा, स्थानीय कहावतें, इतिहास, काफिरिस्तान आदि २१ लेख हैं। जगह जगह पर आवश्यक चित्र हैं। इसको पढ़ते ही अफ़ग़ानिस्तान का पूरा चित्र सामने खड़ा हो जाता है। मूल्य केवल १) रु०

मिडिल भूगोल

चारभागों में उपलब्ध है। पहले भाग में भारतवर्ष, दूसरे भाग में एशिया, तीसरे में योरुप और चौथे में शेष महाद्वीपों (उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, और आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड) का भूगोल मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिये लिखा गया है। प्रत्येक भाग में शिक्षा प्रद चित्रों और नक़शों की भरमार है। यात्रा के आधार पर लिखे जाने से प्रत्येक पाठ में जीवन आ गया है। पुस्तक एकदम नये रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी गई है।

मूल्य प्रत्येक भाग का आठ आने। चारों भागों का एक साथ मूल्य १।।) है।

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-दर्शन

प्रत्येक अङ्क में प्रायः निम्नलिखित विषय रहेंगे जो आवश्यकतानुसार घटाये बढ़ाये जा सकेंगे।

१—देश का आकार, विस्तार, बनावट, दृश्य। २—जलवायु और उपज। ३—पालतू और जंगली जानवर। ४—कारबार। ५—व्यापार, बाज़ार, मेला। ६—जनसंख्या और जातियां। ७—शिक्षा। ८—पुराने समय पर एक नज़र। ९—वर्तमान शासन। १०—रहन सहन। ११—भाषा, कहानी। १२—देखने योग्य शहर। १३—गांव का जीवन। १४—खेल कूद त्योहार।

प्रत्येक देश का वर्णन प्रायः निजी यात्रा के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जायगा। इस माला में निम्नलिखित देश रहेंगे।:—

भारतवर्ष—१—[illegible]का, २—बरमा, ३—आसाम, ४—बंगाल, ५—बिहार, [illegible]ड़ीसा, ७—आन्ध्र देश, ८—तामि[illegible], [illegible]—केरल, १०—ट्रावनकोर, ११—कुर्ग, १२—मैसूर, [illegible], १४—गोआ, १५—बम्बई-महा[illegible], १६—मध्यप्रान्त, १७—काठियावाड़, १८—गुजरात, [illegible]न्ध, [illegible]—बलोचिस्तान, २१—पंजाब, [illegible] पटियाला, २३—जोधपुर, २४—जैपुर, २५—बीकानेर, [illegible]—अजमेर २७—उदयपुर, २८—कोटा, २९—भरतपुर, ३०—अलवर, ३१—ग्वालियर, ३२—इन्दौर, [illegible], ३४—काश्मीर, [illegible]नैपाल, ३६—भूटान, ३७—शिकम, [illegible]—गढ़वाल, ३९—[illegible], ४[illegible]—मयुक्तप्रान्त, ४१—पांडिचेरी, ४३—अंडमान, निकोबार, [illegible] द्वीप, मालद्वीप।

एशिया—१—जापान, २—चीन, ३—कोरिया, ४—मंचूरिया, ५—मं[illegible]—चीनी तुर्किस्तान, ७—तिब्बत, [illegible] ९—रूसी तुर्किस्तान, [illegible]—जार्जिया, ११—आर्मेनिया, [illegible]—टर्की १३—सिरिया, १४—पेलेस्टाइन, १५—इराक, १६—अरब, १७—[illegible]—मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर, १९—स्याम, २०—जावा, २१—[illegible], २२—फ़िलीपाइन द्वीपसमूह, २३—अफ़ग़ानिस्तान, २४—किरगीज प्रजातन्त्र।

योरुप—१—आयरलैंड, २—ब्रिटेन, ३—फ्रा[illegible]ड, ५—बेल्जियम, ६—डेनमार्क, [illegible] ८—स्वीडन, ९—आइसलैंड, १०—फ़िनलैंड, ११—रू[illegible], १२[illegible] १३—पोलैंड, [illegible]—रूमानिया, १५—बल्गेरिया, १६—लिथुएनिया, लैटविया और एस्थोनिया [illegible]—[illegible], [illegible]ग्रीस, १९—इटली, [illegible]—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २५—स्वीज़रलैंड, [illegible]—चेकोस्लोवाकिया, [illegible]—अलसेस लारेन।

अफ़्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जंजीबार और पम्बा, ५—मेडागास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा [illegible]—पूर्वी पुर्तगाली अफ़्रीका, ९—बेल्जियन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—[illegible] अफ़्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ़्रीका, १३—१४—महाराष्ट्र, १५—मराको, १६—अल्जीरिया, [illegible]—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलैंड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ८—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज्वेला [illegible]—इक्वेडार, [illegible]—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली ८—पेरेग्वे ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़िल, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डि-गामा, ४—कुक, ५—लिविंगस्टन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०— मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहरा, १५ —यरुशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की ग्रांड केनाल।

कारबार—काग़ज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, [illegible] रोमन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

[illegible] Geographical Monthly published in India.

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest, Current History, Astronomy, Industry and [illegible], Travel and Exploration, [illegible] and [illegible] Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of [illegible] month and questions and answers are regular features. Successive numbers [illegible] serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of Bhugol any [illegible] geography [illegible] invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity [illegible] teachers and students to visit regions of [illegible] India, Burma and Ceylon. Full information [illegible] application with a stamped and addressed envelope.

Use in Schools : [illegible] of "Bhugol" in connection with [illegible] instruction in high schools, normal schools and middle schools is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**.

Rates for Advertisements : Ordinary full one page Rs. 10/-
3rd page of the cover „ 12/-
4th page of the cover „ 15/-

Write to the Manager,

"BHUGOL"

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by Sheopal at the

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6-११.३८

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

अक्तूबर १९३८

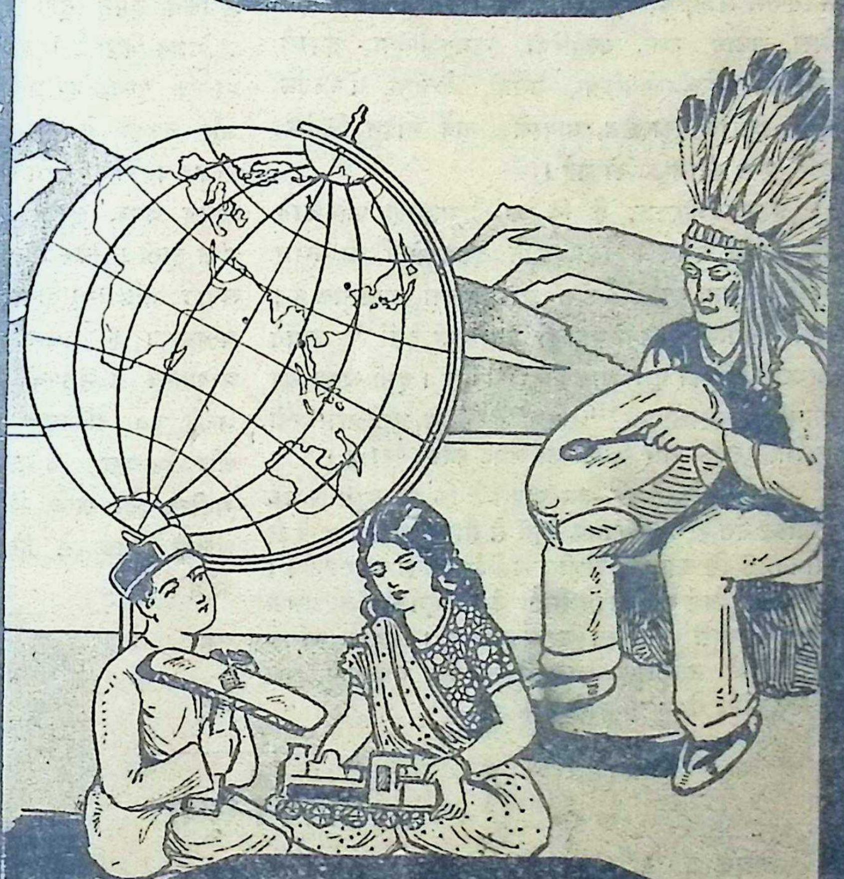

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी. ए.

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"-कार्यालय

संक्षिप्त परिचय

१९२४ के मई महीने में "भूगोल" मासिक पत्र स्थापित किया गया। गत १५ वर्षों में इस पत्र ने जो भूगोल सम्बन्धी साहित्य तयार किया है उसका पता गत १५ वर्षों की फाइलों और साथ में दिये हुए सूची-पत्र से लग सकता है। पर सच्चा भूगोल-साहित्य घर बैठे कल्पनामात्र या केवल विदेशी पुस्तकों के आधार पर नहीं लिखा जा सकता। इसके लिये भ्रमण की आवश्यकता है। इसी लिये "भूगोल" के यात्रा-विभाग की ओर से समस्त भारतवर्ष, लंका, बरमा, ईरान, इराक़, सिरिया, पेलेस्टाइन, मिस्र, सूडान, टर्की, बल्गेरिया, यूगोस्लैविया, हङ्गारी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवेकिया, जर्मनी, डेन्मार्क, बेल्जियम, फ्रांस, इंगलैंड, स्काटलैंड, आयरलैंड, नार्वे, स्वेडन, फिनलैंड और रूस की यात्रा की गई।

हमारा विश्वास है कि देश की आज़ादी प्राप्त करने और कायम रखने के लिये अपने देशवासियों को संसार के प्रत्येक भाग का ठीक ठीक ज्ञान रखना आवश्यक है। भावी स्वाधीन भारत के राजदूत जब दूसरे देशों में जायेंगे तो उन देशों का पूरा ज्ञान होना चाहिये। इसी लक्ष्य को सामने रखकर आपका "भूगोल" कार्यालय, भूगोलसम्बन्धी दुर्लभ, पुस्तकों और नक़्शों का संग्रह करता रहा है।

आपका कर्तव्य—हम चाहते हैं कि यह काम अधिक संगठित ढंग से और अधिक तेज़ी से हो। इसलिये आप से प्रार्थना है कि आप इस राष्ट्रीय काम में हमारा हाथ बटावें।

आप स्वयं और अपने मित्रों को "भूगोल" का ग्राहक बनाकर हमारी सहायता कर सकते हैं। जितने अधिक ग्राहक होंगे उतनी ही आसानी से हम यात्राक्रम और पुस्तक संग्रह को बढ़ा सकते हैं।

जिस तरह विदेशी वस्त्र को रोकने के लिये खादी का प्रचार आवश्यक है उसी तरह हर साल लाखों रुपयों की बाहर से आने वाली भौगोलिक पुस्तकों को रोकने के लिये आवश्यक है कि हिन्दी में उनकी बराबरी करने वाली और उनसे बढ़कर पुस्तकें तैयार हों। अभी तक हिन्दी में लगभग २० पुस्तकें तैयार हैं। आप उनकी बिक्री बढ़ाकर दूसरी पुस्तकों की रचना में सहायक हो सकते हैं।

भावी कार्य-क्रम—देहाती जनता और विद्यार्थियों के लिये हमने देश-दर्शन नाम की पुस्तक-माला का आयोजन किया है। इसमें २०० पुस्तकें होंगी। एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होगी। पुस्तक चित्रों और नक़्शों से खूब सुसज्जित होगी। निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जायगी। काग़ज़ कवर, छपाई सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ होगी। फिर भी डेढ़ सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) होगा। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) होगा। इस सम्बन्ध में मध्यप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री और वर्तमान प्रधान मन्त्री पं० रविशङ्कर शुक्ल जी की सम्मति पढ़िये और देश-दर्शन के ग्राहक बनकर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने में श्रेय लीजिये। आशा है आप लौटती डाक से ही अपना आर्डर भेजने की कृपा करेंगे।

निवेदक—

रामनारायण मिश्र

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—संसार की सेनायें	१
२—नई दुनिया के प्राचीन नगर	३
३—जापान की जन वृद्धि समस्या (श्री० बेशलाल चौधरी बी० ए०) ...	५
४—इतिहास का भूगोल पर प्रभाव (प्रह्लाद नरायन रायज़ादा एम० ए० विशारद) ...	७
५—आस्ट्रेलिया के मोती	१०
६—ग्रीनलैंड	११
७—सोना	१२
८—दक्षिण दिशा में (विद्या भूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.) ...	१९
९—जातियों का कोप	२७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभागों द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १६] कार्तिक सं० १९९५, अक्तूबर १९३८ [सं० ६

संसार की सेनायें

बड़ी लड़ाई के बाद कुछ समय तक शान्ति रही राष्ट्र संघ से लोगों को आशा थी कि शायद सचमुच संसार में न्याय का राज्य हो जावे और शस्त्रों के ज़ोर से प्रबल देश निर्बल देशों का चूसना बन्द करदें। लेकिन कुछ ही समय में लोगों का भ्रम दूर हो गया। सभी स्वाधीन देश अपनी अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने लगे। एबीसीनिया की लड़ाई से सिद्ध हो गया कि दुर्गम देश में बहादुर और निडर फौज भी नये ढंग से सुसज्जित फौज का सामना नहीं कर सकती। स्पेन की गृह-कहल और चीन-जापान युद्ध में कुछ देशों को अपने फौजी प्रयोगों को आज़माने का अवसर मिल गया। बड़ी लड़ाई के बाद जर्मनी की सैनिक शक्ति एक दम कम कर दी गई थी। इससे जर्मनी को नये ढंग से सैनिक संगठन करने का पूरा अवसर मिल गया। दूसरे देश अपने पुराने ढर्रे के फौजी ढंग को छोड़ने में इतने स्वतन्त्र न थे।

बड़ी लड़ाई के समय में हवाई जहाज़ों और टैंक (तोपों) को रोकने के लिए कोई उपयुक्त साधन न था। इसके बाद सैनिकों के सामने यह प्रश्न था कि क्या कोई देश हवाई शक्ति को इतना बढ़ा सकता है कि वह उन्हीं के ज़ोर से अपने शत्रु का नाश कर दे और उसे फौज की आवश्यकता ही न पड़े। दूसरा प्रश्न यह था कि क्या सशस्त्र मोटर कारों की फौज इतनी बढ़ाई जा सकती है कि वह अपने सामने के पैदल सिपाहियों को कुचलती हुई अपने सामने का रास्ता साफ करले।

बड़ी लड़ाई के समय में रेंज फाइंडिंग (दूर से आने वाले हवाई जहाज़ों की दिशा और दूरी निर्धारित करने वाले) यन्त्रों का आविष्कार नहीं हुआ था। उनको दूर से देखने के यन्त्र भी इतने अच्छे न थे। आज कल एन्टीएअर क्राफ़्ट तोपों का निशाना इतना पक्का है और वे इतनी तेज़ी से गोला छोड़ती हैं कि हवाई जहाज़ आसानी से उनका सामना नहीं कर सकते। इसी प्रकार एंटी टैंक शास्त्रों ने टैंकों का डर कम कर दिया है। पैदल सिपाही जर्मन सेना के प्रधान अंग हैं। लेकिन पैदल सेना के प्रत्येक डिवीजन (भाग) के साथ उसी अनुपात से एंटी एअर क्राफ़्ट और एंटी टैंक तोपें और दूसरे शस्त्र रहते हैं। इन शस्त्रों की इतनी अधिकता है कि एक प्रकार से जर्मन फौज हवा और जमीन पर आग के वायुमंडल से घिरी हुई आगे बढ़ती है और शत्रु से लड़ती है।

लड़ाई आरम्भ हो जाने पर हवाई जहाज़ों का प्रधान काम यह है कि वे शत्रु की सेना पर गोलाबारी करके उसे बड़ी संख्या में एकत्रित न होने दें। वे गोलाबारूद के कारखानों को नष्ट करें और रसद के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रों को उजाड़ द । वे शत्रु की फौज पर इस प्रकार अचानक छापा मारें कि उनके पैदल सिपाही आसानी से आगे बढ़ सकें। सारे राष्ट्र को डराने के लिये कभी कभी हवाई जहाज निःशस्त्र जनता पर भी गोलाबारी करते हैं। हवाई जहाज और टैंकों के अतिरिक्त फौजी मोटरकारों ने भी लड़ाई के ढंग को बदल दिया है। फौजी मोटर कार कुछ हद तक (घोड़सवारों) का काम करते हैं। वे अपनी फौजों को आड़ में रखते हैं। उनसे दुश्मन को टोलियों को भीतरी भाग का ठीक पता नहीं लगता है। तोपों को खींचने का काम भी अक्सर घोड़ों के बदले बड़े मोटरों से लिया जाने लगा है। मोटरों से सारी फौज को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाने का काम भी लिया जाने लगा है। इस प्रकार घोड़ा उन ऊँचे नीचे बिकट स्थानों के लिये उपयोगी रह गया है जहाँ पहिये वाली गाड़ियां (मोटर लारियाँ) नहीं चल सकती हैं।

रासायनिक (केमिकल) लड़ाई अभी तक विषैले गैसों का प्रयोग इतना अधिक नहीं किया गया हैं कि किसी देश की समस्त जनसंख्या को समूल नष्ट कर दिया जावे। फिर भी गैस से बचने के लिये गैस मास्क और तहखाने योरुप के प्रायः सभी बड़े शहरों में तयार होने लगे हैं

सेना की भरती—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ब्रिटिश साम्राज्य और चीन को छोड़ कर प्रायः और सभी स्वाधीन देशों में १८ वर्ष से अधिक उम्र वाले पुरुषों को अनिवार्य रूप से फौज में भरती होना पड़ता है। कितने समय तक फौजी शिक्षा प्राप्त करें इसकी अवधि अलग अलग देशों में अलग अलग है। स्विजरलैंड में पैदल सिपाहियों, इंजीनियरों और तोपखाने के सिपाहियों को ६५ दिन तक शिक्षा लेनी पड़ती है। रूस में पचास फीसदी सिपाहियों को केवल एक महीने की शिक्षा लेनी पड़ती है। वैसे औसत से अधिकतर फौज को दो वर्ष की लगातार शिक्षा अनिवार्य है। संयुक्तराष्ट्र अमरीका को छोड़ कर और प्रायः सभी प्रबल देशों में कुछ न कुछ संरक्षित (रिज़र्व) फौज रहती है। लड़ाई के समय इससे काम लिया जाता है। संयुक्त-राष्ट्र अमरीका में केवल कुछ आफ़िसर संरक्षित (रिज़र्व) सेना में है। इटली, जर्मनी और जापान में फौजी उम्र के पहले ही लड़कों को स्कूलों में कुछ न कुछ फौजी शिक्षा दी जाती है। संयुक्तराष्ट्र अमरीका के कुछ स्कूलों और कालिजों में फौजी शिक्षा का प्रबन्ध है। ब्रिटेन में फौजी अफसर तयार करने के लिये कई स्कूल हैं।

जर्मनी में साधारण फौज के अतिरिक्त कई हजार (१२,००० से ऊपर) काली कमीज (ब्लैक शर्ट), खाकी शर्ट के स्वयं सेवक और दूसरे फौजी अफसर हैं। इटली में फेसिस्ट मिलीशिया के अतिरिक्त तट, बन्दरगाह, रेलवे, बन आदि की रक्षा के लिये फौज है। फौज के अन्तर्गत रेजीमेन्ट, बटेलियन आदि में सिपाहियों और बन्दूकों की संख्या अलग अलग देशों में अलग अलग है। अधिकतर देशों के पैदल (इन्फेंट्री) डिवीज़न में १०,५०० सिपाही रहते हैं। जर्मनी में ८४०० और जापान में १५,१२८ होते हैं। हलकी भारी बन्दूकों की संख्या भी अलग अलग है रूस में भारी बन्दूकों की अधिकता है। जर्मनी में एन्टी एअर क्राफ्ट और और दूसरे यन्त्रों की अधिकता है। सीमा के पास आजकल सीमेन्ट और फौलाद की पक्की खाइयों और सुरंगों की अधिकता हो रही है। फ्रांस और जर्मनी ने एक दूसरे के आमने सामने इसी तरह की मजबूत किलाबन्दी कर ली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई दुनिया के प्राचीन नगर

चोलूला—१

मेक्सिको में पहुँचने के लिये स्पेनवासियों ने समुद्र के किनारे पर वेराक्रूज़ (सच्चा क्रूस) नाम का बन्दरगाह बसाया। समुद्र से देखने पर वेराक्रूज़ कुछ भी सुन्दर नहीं मालूम पड़ता है। रेतीले किनारे पर घरों की सुनसान क़तार दिखाई देती है। नगर के चारों ओर वीरान पहाड़ियाँ हैं। इन में हरियाली का नाम नहीं है। वैसे यहाँ पानी खूब बरसता है। बादल में से आस्मान घिरा रहता है। निचले किनारे पर अनूप वन गये हैं। पीला अज़ार (बुखार) बहुत फैलता है। इसी से वेराक्रूज़ मेक्सिको भर में सबसे अधिक अस्वास्थ्यकर गिना जाता है। वेराक्रूज़ का बन्दरगाह भी अच्छा नहीं हैं। उत्तर की ओर से अक्सर तूफानी हवायें चलती हैं। नावें अपना बादवान उतार देती हैं। जहाज़ दुहरा लंगर डालते हैं। फिर भी ठीक ठीक रक्षा केवल फोर्टसेन्ट जूलियन के पास होती है। वेराक्रूज़ के ताज़े पुते हुये घर कुछ अच्छे मालूम होते हैं। लेकिन अक्सर गलियों और घरों की छतों पर काले गिद्ध मंडराते रहते हैं। वे ऐसे पालतू हो गये हैं कि मुसाफिर को देखकर वे अपनी जगह से नहीं हिलते हैं। जब नौकर घरों का कूड़ा कचड़ा फेंकते हैं तब ये गिद्ध बड़ी तेज़ी से इस पर उड़ते हैं। मेक्सिको दरवाज़े के बाहर वेराक्रूज़ शहर का सुन्दर भाग है। शहर के दोनों ओर कोकोआ के वड़े बड़े पेड़ लगे हुए हैं। इसी ओर शाम को माझी और कुली इकट्ठा होते हैं। रात को देर तक गाना बजाना होता है। अगर हम वेराक्रूज़ से पश्चिम की ओर बढ़ें तो किनारे के गरम दलदली भाग के आगे कुछ ऊँचा शीतोष्ण प्रदेश मिलता है। यहाँ क़हवा, तम्बाकू, केला बहुत होता है। इस भाग में नारंगियों के बगीचों के बीच में घिरे हुए छोटे छोटे घर बहुत सुन्दर मालूम होते हैं। यहाँ से आगे हर मोड़ के सामने आरिज़ावा पर्वत दिखाई देता है। आरिज़ावा और पोपोकेटिपेटल मेक्सिको के सबसे ऊँचे पहाड़ हैं। इनकी सुन्दर बर्फीली चोटियाँ तो समुद्र से ही दिखाई देने लगती हैं। आरिज़ावा नगर इसी नाम के पर्वत की तलहटी में बसा हुआ है। इधर कारखाने बढ़ रहे हैं जो बिजली के ज़ोर से चलते हैं। इस ओर पठार पर पहले विकराल ज्वालामुखी पर्वत आग धुआं उगलते थे।

आरिज़ावा के आगे सड़क बहुत सपाट हो जाती है। बड़े बड़े पुलों के ऊपर से नद कन्दराओं को पार करने के बाद यात्री माल्ट्राटा नगर में पहुँचता है। यहाँ से अधिक चढ़ाई शुरू होती है। रेलगाड़ी में नये इंजिन लगते हैं। इसके आगे सुरंग और पुल बहुत जल्द जल्द रास्ते में पड़ते हैं। एस्परांज़ा के पास गाड़ी ३९०१ फुट की ऊँचाई पर चढ़ जाती है। इसके आगे ज़मीन खुश्क मिलती है। आरम्भ की हरियाली लुप्त हो जाती है। रास्ते में अक्सर धूल उड़ती हुई मिलती है। कहीं कहीं मकई और गेहूँ के छोटे छोटे खेत दिखाई देते हैं। कांटेदार राम बांस (केक्टस) अक्सर मिलता है। कहीं कहीं सफेद हेसियंडा से मालूम पड़ता है कि वह प्रदेश एक दम निर्जन नहीं है। दूर क्षितिज में स्थित ऊँचे पहाड़ और पड़ोस के रेतीले टीले मैदान (पठार) के दृश्य में कुछ विभिन्नता डाल देते हैं। अब हमारा मार्ग कुछ उत्तर पश्चिम की ओर मुड़ता है। हम ह्वामांटला से गुज़र कर मोलिंची का चक्कर लगाते हैं। लगभग २० मील की दूरी पर प्यूब्ला शहर हमारी बाईं ओर छूट जाता है। इसी के पड़ोस में एलो पौधे से शराब बनाई जाती है। इसका रंग कुछ पीला होता है। रस गाढ़ा होता है। इस में बड़ी गन्ध आती है। यहाँ से मेक्सिको के प्रायः सभी भागों को शराब के पीपे रेलगाड़ी पर लद कर जाते हैं।

स्पेन वासियों ने मेक्सिको की विजय के कुछ ही समय बाद प्यूब्ला शहर बसाया था।

मेक्सिको शहर के बाद मेक्सिको देश में दूसरे नम्बर का शहर प्यूब्ला ही है। यहाँ कैथलिक गिरजों की भरमार है।

प्यूब्ला से कुछ ही दूरी पर मेक्सिको का प्राचीन नगर चोलूला बसा हुआ है। किसी समय में चोलूला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विशाल पिरेमिड़ बहुत प्रसिद्ध था। तलेहटी में इसका घेर १६ एकड़ और चोटी पर एक एकड़ था। इसी के ऊपर मेक्सिको के अधिष्ठातृ देव केटजा-कोटल (पवन देव) का मन्दिर बनाया गया था। कहा जाता है कि टोल्टेक लोगों (उस समय के मेक्सिकोवासियों) को शान्ति की कलायें, धर्म, और राजनीति सिखाने के लिये क्वेटज़ा कोटल (पवन देव) ने मनुष्यों के बीच में रहना स्वीकार कर लिया। था। इस पवित्र देवता को ऋतु के ऋतु में होने वाले केवल फल और फूल भेंट चढ़ाये जाते थे। इसी देवता के सम्मानार्थ चोलूला का विशाल पिरेमिड बनाया गया था। वह कब बना इसका ठीक पता नहीं चलता है। जब अज़टेक लोग पठार पर आये तब यह पिरेमिड चोलूला में बना हुआ था। कुछ लोगी का कहना है कि यह विशाल पिरेमिड ओल्मेक लोगों ने बनाया। कुछ का अनुमान है कि इसे टोल्टक लोगों ने बनाया। कुछ का कहना है कि इन से पहले वाले विशालकाय लोगों ने इसे बनाया जो प्रलय से डरते थे। लेकिन बहुत ऊँचे प्राकृतिक पहाड़ों के होते हुए कृत्रिम टीलों का बनाना अनावश्यक था। इसकी ऊँचाई केवल १९९ फुट है।

अपने समय में चोलूला अत्यन्त समृद्ध शाली नगर था। जैसे हिन्दुओं का काशी, मुसलमानों का मक्का, ईसाइयों का यरूशलम केथलिक लोगों का रोम है उसी प्रकार चोलूला प्राचीन रेड इंडियन लोगों का तीर्थ स्थान था।

आनाहुआक के दूर दूर के सिरों से रेड इंडियन लोग केटज़ा कोटल के मन्दिर में भेंट चढ़ाने आते थे। यहीं केटज़ा कोटल ने निवास किया था। पूर्वी देशों की ओर चलते समय केटज़ा कोटल (पवन देव) ने अपने अनुयायियों को धर्म पर आरूढ़ रहने का आदेश दिया था और उन्हें वचन दिया था कि वह और उसकी सन्तान उसके ऊपर राज्य करने के लिये फिर वहाँ आवेंगे। स्पेन वालों के आने के समय इस भविष्य वाणी ने जादू का काम किया। इससे स्पेन वासियों को बड़ी सहायता मिली। भोले भाले रेड इंडियन लोगों ने समझा कि लम्बे क़द गोरे रंग और नीली आँखों वाले स्पेन वासी केटज़ कोटल की ही सन्तान हैं। वे बहुत दिनों से इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इस लिये स्पेनवासियों को मेक्सिको विजय में दैवी सहायता मिल गई।

जिस समय स्पेन वासियों ने मेक्सिको को जीता उस समय चोलूला बड़ा शक्ति शाली नगर था। यहाँ के पिरेमिड के ऊपर से बड़ा आलीशान दृश्य दिखाई देता था। उत्तर की ओर पोपोकेटी पेटल और इज़टाक्सी ह्वाटल दो विशाल पर्वत प्राकृतिक पहरेदारों के रूप में मेक्सिको के पठार की रक्षा करते मालूम होते थे। दक्षिण की ओर आरिज़ावा की बर्फ़ीली चोटी आस्मान से बातें करती थी। पास वाला सियराडि मेलिंची पर्वत अपने पड़ोस के मैदान पर छाया डाल रहा था। इनमें से तीन ज्वालामुखी पर्वत योरुप के ऊँचे से ऊँचे पहाड़ से भी अधिक ऊँचे हैं। उनके नीचे कड़ी बरफ जमा रहती है जो जून की तेज़ धूप में भी नहीं पिघलती है।

अपने समय में चोलूला में बहुत से विशाल मन्दिर और भवन थे। स्पेन वालों के आने के बाद जैसे जैसे रेडइंडियन लोगों का ह्रास हुआ वैसेही चोलूला शहर भी खंडहरों में बदल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान की जन-वृद्धि समस्या

(लेखक-श्री बेशलाल चौधरी, बी० ए०)

ऐसे तो सभी राष्ट्र अपनी राजनीतिक, औद्योगिक और सैनिक शक्ति बढ़ाने की चेष्टा करते हैं। सभी की महत् आकांक्षा रहती है कि अपने राज्य-सीमा को यथासाध्य विस्तृत करें। जापान भी इस से वञ्चित नहीं। अपनी सभी शक्तियों को बढ़ाने का प्रयत्न कई वर्षों से कर रहा है। आज चीन से भिड़ा हुआ है। राजनीतिक क्षेत्र में इसके कई कारण बताये जाते हैं। कितनों का ख्याल है कि विश्व-राज्य-संस्थापन के फेर में जापान पड़ा हुआ है। कोई कोई सोचते हैं कि पूर्वीय संसार में सर्वश्रेष्ठ बनना चाहता है। ऐसा भी अनुमान किया जाता है कि निकटवर्त्ती देशों को जीत कर अपने लिए औद्योगिक क्षेत्र तैयार कर रहा है। इन सब कारणों के होते हुए भी एक ऐसा जटिल प्रश्न इसके सामने आ उपस्थित हुआ है जिससे वाध्य होकर जापान अन्यान्य देशों पर अपना आधिपत्य जमाने की कोशिश कर रहा है। वह प्रश्न यहां की जन-वृद्धि का है। यहाँ की जन-संख्या इतनी शीघ्रता से बढ़ रही है कि इसके असह्य बोझ से आज जापान दबा जा रहा है। इसका प्रारम्भ सन् १८७० ई० से बताया जाता है। परन्तु गत कुछ वर्षों से इसकी संख्या इतनी बढ़ती जा रही है कि सभी जापान निवासियों के ध्यान इसी ओर आकृष्ट हैं।

दिनों दिन जन-संख्या की इतनी वृद्धि हुई कि इसका उल्लेख करना अनिवार्य्य प्रतीत होता है। अन्यान्य भागों को छोड़ कर केवल मुख्य जापान को ही लेता हूँ। सन् १९२५ में ८,७५,००० की वृद्धि हुई। १९२६ में ९,००,००० की हुई और १९२७ में १०,००,००० तक की बृद्धि हो गई। अगले चार वर्षों में वृद्धि की संख्या लगभग ९,००,००० के हुई और १९३२ में १०,००,००० की हो गई। इस प्रकार बृद्धि प्रति वर्ष प्रति शत १·२ होती रही है। इस गणना के आधार पर ऐसा अनुमान किया जाता है कि ४० वर्षों में ही यहाँ की जन-संख्या दूनी हो जायेगी। जन-संख्या की बढ़ती देख कर मृत्यु-संख्या भी कम होती जा रही है। इसका एक प्रधान कारण ग्रामीणों का नगरों में आश्रय लेना है। जापान में पहले पहल जागीरदारी प्रथा (Feudal System) थी। वे ही कृषकों को भूमि जोतने बोने के लिए दिया करते थे। उनकी प्रताड़ना सभी को मालूम है। भाग्यवश सन् १८७२ में ग़रीब किसान इनके चंगुल से बचे जब कृषि-भूमि इनके (किसानों) अधिकार में आ गई। किन्तु इधर कई वर्षों से एक नये वर्ग के अधिकार में अधिकांश भूमि आ गई है। इस वर्ग के लोग "नये धनिक" (Nouveaux riches) के नाम से विख्यात हैं। इनकी प्रताड़ना जागीरदारों (Feudal Lords) से भी बढ़ कर है। अतएव बहुत सी कृषक संतान ग्रामों को छोड़ छोड़ कर नगरों का आश्रय ले रही हैं। ग्रामों की अपेक्षा नगरों में औषधि आदि का प्रबन्ध अच्छा रहता है अतएव मृत्यु संख्या न्यूनतम होती जाती है। फलस्वरूप जन-वृद्धि का प्रश्न और भी जटिल हुआ जा रहा है।

ऐसी परिस्थियों में पड़ कर इस प्रश्न को हल करने के लिये जापान अपनी आँखें देश की प्राकृतिक बनावट की ओर फेरता है! देखता है कि क्वाटों का विस्तृत मैदान केवल १२०,०००,००० मनुष्यों को भोजन दे सकता है। नोबी की निम्नभूमि ४५,०००,००० मनुष्यों का भरण-पोषण कर सकती है। किन्की की चौरस जमीन ६०,०००,००० मनुष्यों का पालन कर सकती है। इस के अतिरिक्त पर्वत पार्श्व-स्थित संकीर्ण भूमि तथा छोटी छोटी नदियों की तराइयां नज़र आती हैं। इस पहाड़ी देश में इस प्रकार केवल एक चौथाई भूमि ऐसी है कि कृषिकार्य में लाई जा सकती है। ऐसी भूमि की गणना में केवल उर्वरा समतल भूमि नहीं वरन् पार्वतीय ढाल और कुछ ऊसर भूमि भी सम्मिलित हैं जो कठिन मानवी परिश्रम से धान के क्षेत्रों में परिवर्त्तित की जा सकती हैं। ऐसी भूमि कुल खेती की जाने वाली जमीन के $\frac{1}{3}$ हैं। यदि इन्हें जोता बोया जाय तो सम्भव है कि भोज्य पदार्थों में ३३ प्रतिशत की बृद्धि हो जो लगभग २०,००००,००० मनुष्यों के लिये पर्य्याप्त होगी। परन्तु यहाँ के इतिहास पर दृष्टि डालने से यह उतनी आशातीत नहीं दीख पड़ती है। सन् १९०५ से १९२५ तक अर्थात् २० वर्षों में कृषि-क्षेत्र की ब्रद्धि लगभग १८,७५,००० एकड़ भूमि से हुई। इस प्रकार वार्षिक बृद्धि १००,३००० एकड़ भूमि से भी कम हुई। इस हिसाब से २० वर्षों में सभी शेष भूमि खेती कार्य्य के लिए अधिकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जा सकती है। और इधर २०,००,००,००० जन-संख्या २५ वर्षों से भी कम समय में बढ़ सकती है। अतएव भूमि वृद्धि से भी जन वृद्धि का प्रश्न हल नहीं हो सकता। कितनों का अनुमान है कि अन्न की उपज की मात्रा में वृद्धि की जाये तो सम्भव है कि यह प्रश्न हल हो। परन्तु सभी बातों की सीमा होती है। सन् १८८० से आज तक ९६-९७ प्रतिशत की वृद्धि केवल चावल की उपज में हुई है तौभी यह प्रश्न ज्यों का त्यों रहा।

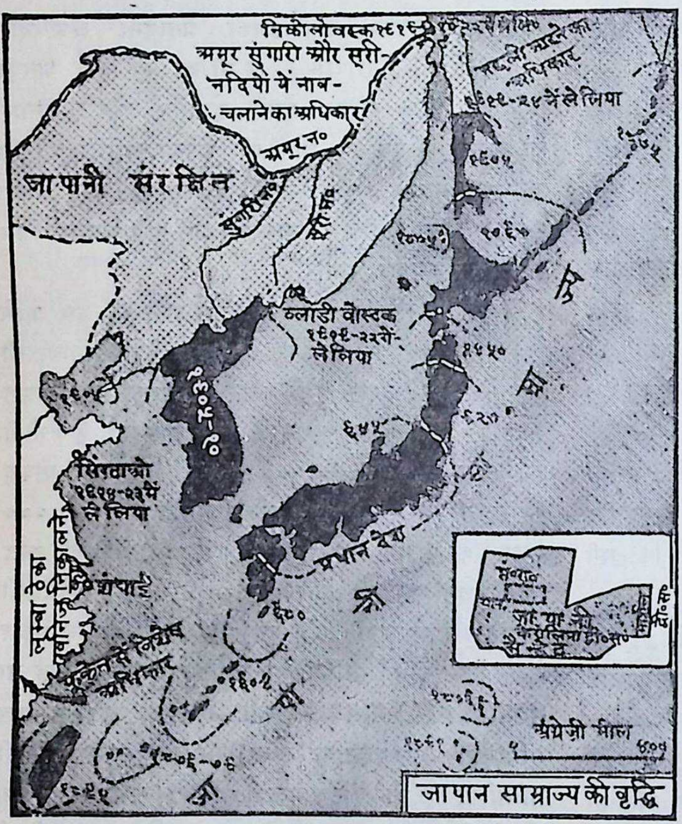

जापान साम्राज्य की वृद्धि

जापान जन-वृद्धि निवारणार्थ उद्योग धन्धों की ओर दृष्टि डाल रहा है। यद्यपि यह पूर्वीय इङ्गलैण्ड के नाम से विख्यात है तथापि इङ्गलैण्ड या अमरीका से इसकी तुलना करने पर यह व्यवसायी राष्ट्र नहीं कहा जा सकता। इसमें कोई शक नहीं कि पूर्व की अपेक्षा अब जापान व्यवसाय में बहुत कुछ उन्नति किये हुए है। सभी देशों में जापानी चीज़ें दीख पड़ती हैं। परन्तु फिर भी यह अभी भी कृषि प्रधान देश है क्यों कि अधिकांश लोगों की जीविका खेती पर ही निर्भर है। १९२९ में कारख़ानों में श्रमजीवियों की संख्या १०प्रतिशत थी। सूत और लोहे की कुछ ही चीजें बड़े बड़े कारख़ानों में तैयार की जाती हैं नहीं तो शेष चीजें छोटे छोटे कारख़ानों में तैयार की जाती हैं। ओसाका नगर में १९२४ में लगभग १९००० औद्योगिक केन्द्र थे जिन में १३००० में ५ से भी कम मनुष्य काम करते थे। रुई सम्बन्धी कारोबार सानों और आशीकागो जिले में तथा इन के निकटस्थ स्थानों में होता है। लगभग ९ कपड़े गृहस्थों के घर बनते हैं। कपड़े पूर्ण रूप से तैयार होने के पहले कई छोटे छोटे व्यवसाय-केन्द्रों से होकर गुज़रते हैं। यही प्रथा जूते, ब्रश, कैंची-छुरी, छाता, लालटेन, मिट्टी के वर्तन आदि चीजों को बनाने की भी है। इस प्रकार जापान अत्यल्प संख्या में श्रमजीवियों को औद्योगिक केन्द्रों में पाता है और इसे जन-वृद्धि समस्या को हल करने का यथेष्ट साधन नहीं समझता। यदि वह बड़े बड़े कारख़ानों के अभाव को दूर कर सकता तो सम्भव है कि कुछ हद तक समस्या हल हो जाती।

परदेश-गमन द्वारा कुछ मनुष्यों का निर्वाह हो सकता है और देश जनता के बोझ से कुछ बच सकता है। परन्तु प्रवासित जापानियों को देखने से पता चलता है कि ऐसा करने से भी वे बाज नहीं आये हैं। अन्यान्य देशों में प्रवासित जापानियों की संख्या सन् १९३१ में ६३५,००० थी। इन में मंचूरिया में १९६०००, हवाइन द्वीपों में १५०,००० ब्राजील की अधित्यका में १००,००० और संयुक्त प्रदेश (अमेरिका) के उपकूल भागों में १००,००० इस से पता चलता है कि यथा सम्भव वे अन्यान्य देशों में जाकर बस ही गये हैं। यदि उन्हें कोई रिक्त स्थान प्राप्त हों तो उनका कल्याण हो सकता है।

वे भोज पदार्थों में परिवर्त्तन लावें तो सम्भव है उनकी कठिनाई दूर हो। वे अधिकांश भोजन चावल का ही करते हैं। यदि वे चावल के बदले कुछ अधिक मात्रा में शाक, फ़ल और मूल का व्यवहार करते तो चावल की माँग कम हो सकती है। आलू प्रति एकड़ चावल से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपजता है। पहाड़ी प्रान्तों में धान के बदले चाय और फलों की पैदावार अच्छी हो सकती है। फिर भी यदि चावल के बदले गेहूँ का प्रयोग करें तो किफ़ायत पड़ेगी क्यों कि संसार में गेहूँ के क्षेत्र धान के क्षेत्रों से अधिक हैं। साथ ही साथ उनका स्वास्थ्य भी सुधरेगा। परन्तु जापानियों को चावल अत्यन्त ही प्रिय भोजन है। इसके बदले में कोई भी दूसरा अन्न भोजन करना उनके लिए अपने मान मर्यादा को कम करना है। अतएव सार्वजनिक शिक्षा द्वारा कुछ दिनों में उनका विचार पलट सकता है। ऐसा होने पर भी ऐसा अनुमान किया जाता है कि उनका संतान-वृद्धि-दुःख पूर्ण रूप से दूर नहीं हो सकता।

अब जापान के लिए केवल एक ही उपाय शेष नज़र आता है जिस से वह युद्ध के अमानुषिक कार्यों तथा नर हत्या के दोषों से मुक्त रह सकता है। साथ ही साथ अपनी वर्त्तमान सन्तान को पुष्ट बना सकता है। वह है सन्तान नियंत्रण-साधन। इसमें कठिनाइयाँ तो अवश्य हैं क्यों कि यह जापानी सिद्धान्तों के नितान्त प्रतिकूल है, फिर भी यदि सार्वजनिक शिक्षा द्वारा उनके विचारों में पूर्ण परिवर्तन लाया जाय तो सम्भव है कि इस साधन में उन्हें सफलता मिले। कुछ जापानी तो अवश्य इसके पक्ष में हैं और इस साधन का प्रयोग भी कर रहे हैं। परन्तु ऐसे महानुभावों की संख्या सोचनीय है। अतएव उन्हें यथोचित रूप में इस का आन्दोलन करना चाहिए। साथ ही साथ इसकी महता को सर्व-प्रिय बना देना चाहिये।

इतिहास का भूगोल पर प्रभाव

(ले० प्रहलाद नारायण रायज़ादा एम० ए० विशारद)

इतिहास से हमें पूर्व कालीन ज्ञान प्राप्त होता है अर्थात् इतिहास हमें मनुष्य के किये हुए कार्य बतलाता है। मनुष्य जैसा कार्य करता है वैसा ही इतिहास बन जाता है। अतः मनुष्य अपने कार्य से सदैव किसी देश का इतिहास बनाता रहता है। वह अपने परिश्रम से बड़े बड़े कार्य जो असम्भव प्रतीत होते हैं कर डालता है और प्राकृतिक वस्तुओं में भी अन्तर कर भौगोलिक दशा को बदल देता है।

प्राचीन इतिहास अध्ययन करने से हमें ज्ञात होता है कि मनुष्य ने अपने परिश्रम से पर्वत और समुद्र को भी कुछ न समझा। हम रामायण में पढ़ते हैं कि किस प्रकार नल और नील दो भाइयों ने भारतवर्ष और लंका के बीच के समुद्र के ऊपर रामचन्द्र जी की सेना के जाने के लिये मार्ग बनाया, किस प्रकार हनुमान जी सम्पूर्ण पर्वत को उठा कर रामचन्द्र जी के पास ले आये थे। महाभारत अध्यन करने से हमें ज्ञात होता है कि किस प्रकार कृष्ण जी ने अपने सहपाठी ग्वालबालों की सहायता से गोवर्धन पर्वत को उठा लिया था। इसी प्रकार की वीरता की कहानियाँ हम प्राचीन यूनान और रोम के इतिहास में पढ़ते हैं। हरकुलीस (Hercules) की कहानियाँ आज तक उसकी वीरता के हेतु बड़े मनोरञ्जन से पढ़ी जाती हैं।

प्रायः इन प्राचीन कहानियों को असम्भव बतला झूँठी समझते हैं परन्तु वर्तमान युग में हमको बहुत से उदाहरण मिलते हैं जिन्हें देख आश्चर्य होता है कि इस थोड़े से जीवन में मनुष्य ने कैसे कैसे कार्य किये हैं जिनके कारण सम्पूर्ण संसार का भूगोल बदल गया है।

मनुष्य ने वर्तमान युग में विज्ञान की सहायता से प्रकृति पर अधिकार स्थापित कर लिया है। वर्तमान वैज्ञानिक आविष्कारों ने समय और दूरी को बहुत घटा दिया है। प्रकृति द्वारा स्थापित सुदूर देशों को रेल, तार, जहाज, हवाई जहाज़ द्वारा निकट बना दिया है। प्रकृति की बनाई हुई खानों को मनुष्य ने खाली कर डाला है। इंगलैंड में स्थानाभाव के कारण टेम्स नदी के नीचे नीचे रेलें चलाई हैं। पिहाड़ काट कर देशों को मिला दिया है। (Simpllon) सिम्पलौन की सुरंग में बारह मील तक रेल सुरंग के अन्दर ही अन्दर चलती रहती है। बहुत समय तक भौगोलिक कारणों से दक्षिण भारत उत्तरी भारत से अलग रहा यहाँ तक कि दक्षिण एक बिलकुल ही दूसरा देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। कोई भी मुसलमान बादशाह उस पर पूर्णतया अपना आधिपत्य न जमा सका और मुग़ल बादशाहों की तो वह क़ब्र ही बना रहा। परन्तु ऐतिहासिक कारणों से वही दक्षिण अब उत्तरी भारत से मिला दिया गया है और ब्रिटिश सरकार ऐसी आसानी से उस पर शासन करती है जैसे उत्तरी भारत पर। भौगोलिक कारणों से सहारा का रेगिस्तान अंधेरा महाद्वीप (Dark continent) कहलाता था परन्तु ऐतिहासिक कारणों से उसका अंधकार दूर हो गया है और अब वह उजाला महाद्वीप बन रहा है।

हालैन्ड की पृथ्वी समुद्र तल से नीची है अतः समुद्र के पानी को देश में घुस आने से रोकने के लिये डच लोगों ने बड़े बड़े डाइक्स (Dykes) और ड्यून्स (Dunes) बनाये हैं। जब कभी समुद्र में तूफ़ान आने के कारण यह डाइक्स टूट जाते हैं तो देश के भीतर तक समुद्र बढ़ आता है परन्तु वहाँ के परिश्रमी मनुष्य फिर से ऐसे ही डाइक्स बना लेते हैं। यही नहीं वरन् डच लोग समुद्र से बरजोरी ज़मीन छीन लेते हैं। वह लोग समुद्र के अन्दर बड़ी बड़ी दीवार बना कर एक प्रकार का कुंड बना लेते हैं जिसका पानी इञ्जन द्वारा निकाल देते हैं और ज़मीन को सुखा लेते हैं इस प्रकार की सुखाई हुई ज़मीन को पोल्डर (Polder) कहते हैं।

ज्यूडरज़ी के स्थान पर किसी समय पृथ्वी थी परन्तु समुद्र के तूफ़ान ने डाइक्स (बांध) को तोड़ डाला और बहुत दूर तक थल के स्थान पर जल ही जल हो गया। अब फिर इसका पानी उलीचा जा रहा है और आशा हैं कि शीघ्र जल के स्थान में थल वन जायेगा।

पृथ्वी की शक्ल और संसार के मान चित्र का ज्ञान भी मनुष्य को क्रमशः बढ़ता रहा है। इतिहास द्वारा समय समय पर उसमें परिवर्तन होते रहे हैं। जब ईसा के ५०० वर्ष पूर्व ऐनिक्सीमेंडर (Anexemander) ने संसार का मानचित्र बनाया तो उसने समझा कि समस्त देश एक बृत्त (Circle) बनाते हुये हैं और यूनान उन सब के मध्य में स्थित है। उसके सौ वर्ष पश्चात् डेमोक्रटस (Democratees) ने अपने पूर्व देशों के भ्रमण के आधार पर एक ऐसा चित्र बनाया कि जिसके पूर्व से पश्चिम की दूरी उत्तर से दक्षिण की दूरी से डेढ़ गुनी थी। तत्पश्चात यूनान के विद्वानों ने पता लगाया कि पृथ्वी एक ग्लोब है। परन्तु अब भी बहुत सी त्रुटियाँ बाक़ी थी। रूम सागर बहुत लम्बाकार बनाया गया था। योरुप बहुत ही सकड़ा गया भारतवर्ष दिखलाया ही नहीं गया और लंका बहुत बड़ी बनाई गई इत्यादि। जब मार्कोपोलो सन् १२१५ ई० में चीन और जापान का भ्रमण कर के जेनोआ लौटा और वहाँ बन्दी कर लिया गया था तो बन्दी गृह में ही उसने अपने भ्रमण का वृत्तान्त लिखा। उसके लेख से संसार के भूगोल का बहुत सा ज्ञान बढ़ गया।

जब कुतुब नुमा (Mariner's compass) का आविष्कार हुआ तो बहुत से मनुष्य नये नये देश की खोज में चल पड़े और बहुत से नये देश ढूंढ़ निकाले। प्रत्येक खोज संसार के चित्र को कुछ न कुछ बढ़ा देती थी। सन् १४९२ ई० में क्रस्टफ़र कोलम्बस ने (Christpher Columbus) ने अमरीका (America) के बड़े महाद्वीप का पता लगाया। यह महाद्वीप इतना बड़ा था कि नई दुनिया (New world) के नाम से पुकारा जाने लगा। सन् १६६९ ई० में कैपटिन कुक (captain Cook) ने (Newzealand) को ढूंढ निकाला और उसके एक वर्ष बाद Australia का भी पता चलाया। ऐसे ऐसे आविष्कारों ने मनुष्य के भौगोलिक ज्ञान को ही नहीं बढ़ाया वरन् बड़ी बड़ी वस्तियाँ बसने लगीं और बहुत से व्यापारिक, राजनैतिक, और आर्थिक परिवर्तन कर डाले।

एक समय था जब भारत का व्यापार योरुप के महाद्वीप से अफ्रीका के बड़े महाद्वीप का चक्कर लगा कर होता था। परन्तु जब अरब और अफ्रीका के बीच की पतली चिट को काट कर स्वेज़ नहर (Suez canal) द्वारा लाल सागर (Red Sea) और रुमसागर (Mediterranean) मिला दिये गये तो स्वेज़ नहर (Suez canal) में होकर जहाज़ आने जाने लगे और हज़ारों मील का चक्कर कम हो गया। इसी प्रकार पनामा की नहर (Panama canal) ने अटलान्टिक महासागर और पेसेफ़िक महासागर को मिलाकर दक्षिण अमरीका का चक्कर मिटा दिया और कील Kiel) नहर ने उत्तरी सागर (North Sea और बेरिंग सागर को मिलाकर डेनमार्क का चक्कर कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया जिसके कारण व्यापार में बड़ी सुविधा हुई।

इसके अतिरिक्त इतिहास का व्यापारिक भूगोल (Commercial Geography) पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला है। पहले भारतवर्ष से योरुप थल की राह से खैबर दर्रे में होकर कुस्तुन्तुनिया (coustuntunia) होते हुए व्यापार होता था परन्तु जब सन् १४५१ तुर्कों ने कुस्तुन्तुनिया पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया तो उन्होंने अपने देश में होकर काफिलों को जाने से रोक दिया। अब तो कोई अन्य मार्ग की आवश्यकता हुई। थल की राह से कोई मार्ग नहीं था क्योंकि टर्की का विस्तृत राज्य पूर्व में सारे प्रान्त में फैला हुआ था अतएव जल मार्ग ढंढ़ने के लिये बहुत से यात्री चल पड़े और वास्कोडिगामा (Vascodegama) नामक यात्री ने अफ्रीका का चक्कर लगाते हुए अटलान्टिक महासागर में मार्ग ढूँढ़ निकाला और अब इस राह से व्यापार होने लगा।

इतिहास का राजनैतिक भूगोल (Political Geography) पर भी बहुत प्रभाव है। ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा देशों की सीमा बहुत कुछ घटती व बढ़ती रहती है। एक समय वह था जब कि रोम साम्राज्य (Roman Empire) सम्पूर्ण दक्षिण योरुप में फैला हुआ था परन्तु आज रोम नगर के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहा और वह भी इटली के आधीन एक नगर है। महान युद्ध से पहिले आस्ट्रिया पर्शिया व रूस (Austria, Purssia and Russia.) के प्रबल राज्यों ने मिलकर पोलैन्ड (Poland) के स्वतन्त्र देश को आपस में बाँट लिया और उसका अस्तित्व ही संसार के मानचित्र से मिट गया। युद्ध के पश्चात पोलैन्ड पहिले के समान फिर स्वतन्त्र देश स्थापित कर दिया गया। पोलैन्ड ही नहीं परन्तु और भी कई छोटी २ स्वतन्त्र रियासतें बनाई गई जैसे जार्जिया, ऐज़र बेजान, रीगा इत्यादि।

इस प्रकार देखा जाता है कि इतिहास का भूगोल पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है और ऐतिहासिक घटनाओं के अनुसार भौगोलिक दशा में भी परिवर्तन होता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्ट्रेलिया के मोती

उत्तरी-पश्चिमी आस्ट्रेलिया में मोती निकालने का काम फर्वरी महीने में शुरू होता है। तूफानों का आना इससे पहले ही बन्द हो जाता है। इससे छोटी छोटी नावें भी बड़ी आसानी से चल सकती हैं। आधे दिसम्बर से आधी फर्वरी तक एक तरह से आराम करने का समय होता है। नावें आकर ब्रूम शहर के पास ठहर जाती हैं। वहाँ उनकी मरम्मत या रँगाई होती है। इसी बीच में पुराने मल्लाह कोपाँग और दूसरे टापुओं को जाते हैं। यहाँ से वे दूसरे नये मल्लाह भरती कर लाते हैं। इसी समय साप को अलग करने को गोरे लोग भरती किये जाते हैं। गोरे मज़दूरों को २ पौंड (लगभग ३० रु०) हर हफ़्ते मिलता है। इसके साथ ही किसी किसी गोरे को आमदनी (जो उसके द्वारा होती है) का १५ फी सदी भाग मिलता है। मोती निकालने वाले मोती के अलावा उन सीपों से भी लाभ उठाते हैं। जिनमें मोती अक्सर छिपे रहते हैं। मोती का सीप लगभग २०० पौंड (३०००० रु०) प्रति टन के हिसाब से बिकते हैं। मोती निकालने वालों में अक्सर कुछ जापानी गोताखोर, टेंडार, कई कोपाँग द्वीप निवासी और एक गोरा रहता है। इस तरह नाव पर बड़ी भीड़ रहती है। ४० फुट लम्बी नाव पर सभी लोग बहुत साफ रहते हैं। पानी बहुत रहता है। पीले जापानी और काले द्वीप निवासी खूब नहाते और कपड़ा धोते हैं। वे शाम को कपड़ा धोकर नाव के घेरे पर सूखने के लिये लटका देते हैं। सवेरे को कपड़े सूखे मिलते हैं। नाव पर ही लोग भोजन पकाते हैं। कुछ लोग पानी से ताजी मछली पकड़ कर पका लेते हैं।

सब लोग सवेरे ही काम पर लग जाते हैं। डाइविंग ड्रेस (गोताखोरी की पोशाक) पहनने के पहले लोग फलालैन के कपड़े पहनते हैं फ़लालैन का पाजामा एड़ी के पास बंधा रहता है। गोता लगाने वाले सवेरे को गरम गरम कहवा पीते हैं। जब गोताखोर नियत समय तक अन्दर ठहर चुकते हैं तब टेंडार लोग "ऊपर आओ" की आवाज लगाते हैं और रस्सी हिलाते हैं। शीघ्र ही गोता खोरों की टोपी ऊपर दिखाई देती है। वे रस्सी के उस थैले को डेक (नाव के फर्श) पर डाल देते हैं जिसमें वे सीपें भर लाते हैं। इसके बाद गोरा अफसर छुरी लेकर सीपों को काटता है। किसी किसी सीप की चौड़ाई, दस बारह इंच होता है। इसके बाद गोता खोर फिर डुबकी लगाते हैं और सीप का थैला भर लाते हैं। इस तरह से सवेरे से शाम तक सीपें निकाली जाती हैं। शाम को छुट्टी होती है। मज़दूर लोग भोजन बनाने में लग जाते हैं। किसी किसी दिन सीप में मोती भी निकला है। एक एक मोती का दाम २५०० रु० होता है। कोई कोई मोती ३०,००० रुपये को बिकता है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीनलैंड

उत्तरी ध्रुव (आर्क्टिक) सागर में ग्रीनलैंड दुनिया का सब से बड़ा द्वीप है। इसका क्षेत्रफल ८,४०,००० वर्गमील है जो हिन्दुस्तान का लगभग आधा है। लेकिन इस बड़े द्वीप में केवल ३५,००० वर्गमील ऐसी ज़मीन है जो बरफ से नहीं ढकी है। नाम का बन्दरगाह बरफ से नहीं खाली रहता है। डेन्मार्क की सरकार ने घोषणा निकाली कि १९४१ ई० तक यह बन्दरगाह सब जहाज़ों के लिये खुला रहेगा। तब से कई मछली पकड़ने वाले जहाज़ इधर आने लगे हैं। ग्रीनलैंड के भीतरी भागों का

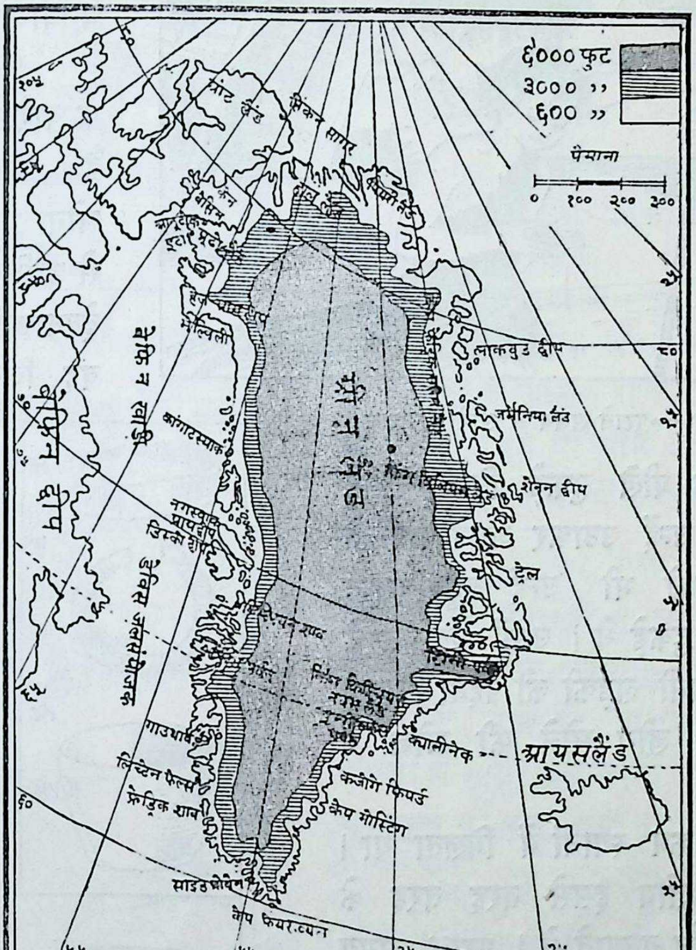

यहाँ की आबादी १६,७०० है। इसमें ४०० डेन्मार्क के डेन लोग हैं। इस द्वीप का व्यापार एकदम डेन्मार्क की सरकार के हाथ में है। १९३७ के अप्रैल महीने में डेन्मार्क वालों ने थ्यूल को भी मिला लिया। दुनिया का सब से अधिक उत्तरी आबाद स्थान थ्यूल ही है। दक्षिणी-पश्चिमी तट पर फेरिंजहेविन पता लगाने का काम भी जारी है। उत्तरी-पश्चिमी तट पर नई बस्तियाँ बसाई जा रही हैं।

अटलांटिक महासागर के आर पार उड़ने वाले हवाई जहाज़ों के लिये ग्रीनलैंड बड़े मौके पर पड़ता है। यहाँ का जलवायु सम्बन्धी खोज भी बड़े काम की होगी। इसी से ग्रीनलैंड का महत्व बढ़ रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोना

बहुत पुराने समय में जब मनुष्य खोहों में रहते थे एक लड़की को एक नदी के किनारे

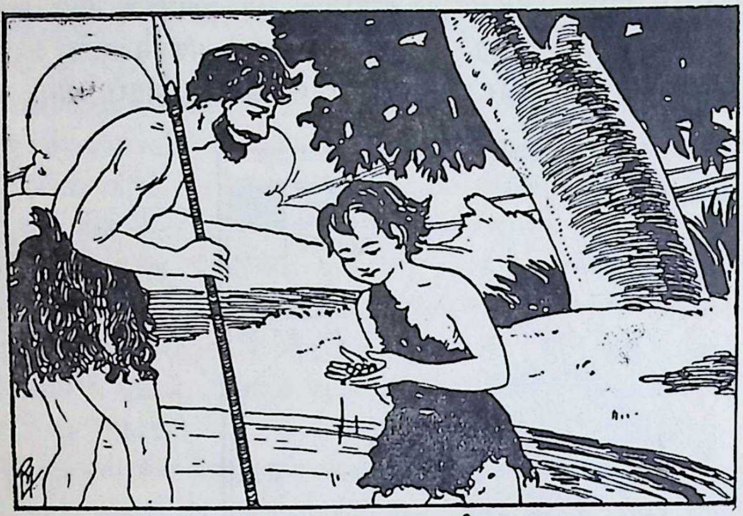

१—पुराने समय में सोने की खोज

बालू में कुछ पीले पीले टुकड़े मिले। वे बड़े सुहाने थे। उसने उन्हें उठाकर अपने बाप को दिखलाया। बाप ने भी उन्हें बहुत पसन्द किया वे सोने के टुकड़े थे। उनमें छेद करके बाप ने उन्हें अपनी लड़की को पहना दिया। तब से अब तक लोग सोने की खोज में रहे हैं।

सोना बहुत कम स्थानों में मिलता था। फिर भी राजा लोग इससे तरह तरह के आभूषण और बर्तन बनवाते थे। पुराने समय के राजाओं की क़ब्रों में तरह तरह का सामान मिला है। यह सामान बड़े बड़े अजायबघरों में रक्खा गया है। सोने का कुछ सामान पुराने मिस्री राजाओं के पिरेमिडों में मिला है इराक़ देश के प्राचीन एसीरियन लोग भी बड़े मालदार थे। उन्होंने सोने की तरह तरह की चीज़ें बनाई थीं। हिन्दुस्तान का बहुत सा सोना विदेशों में पहुँच गया है।

सुलेमान बादशाह के पास इतना सोना था कि उसने सोने का मन्दिर बनवाया :—

यूनान के राजा मिडास के बारे में एक विचित्र कहानी है। उसके पास बहुत सा सोना था। वह सोने को सब से अधिक चाहता था। उसने देवताओं से प्रार्थना की कि वह जिस चीज़ को छुए वह

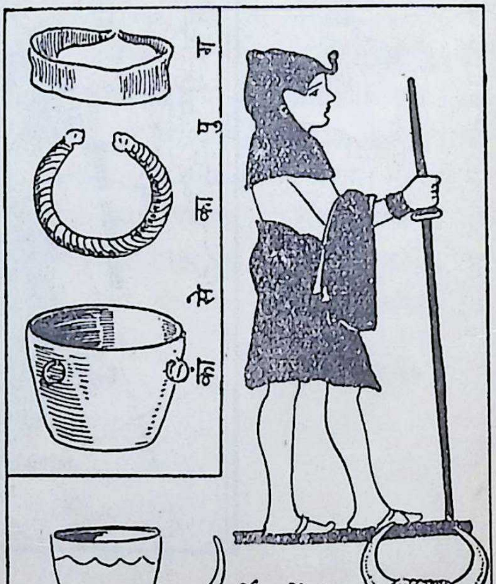

२—प्राचीन मिस्र के सोने के आभूषण

सोने की हो जावे। उसने अपना घर हथियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि बहुत सी चीज़ें छू कर सोने की बनाली। उसके नौकर कई प्रकार का

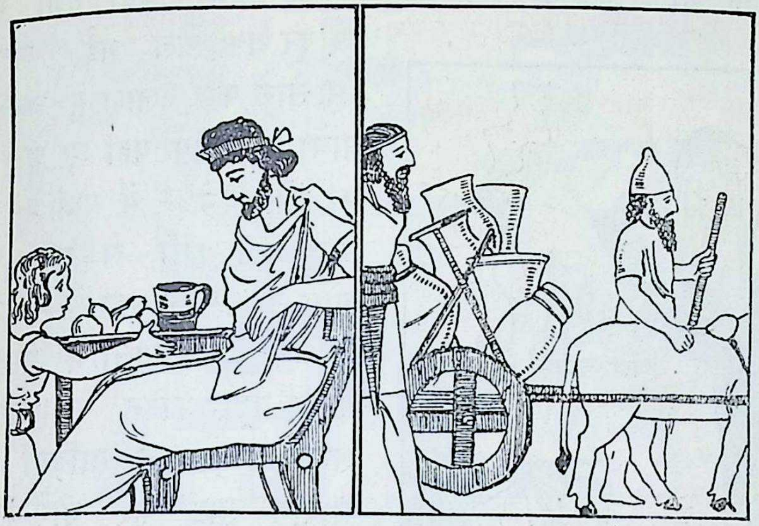

३—सोना असीरियन और यूनानी।

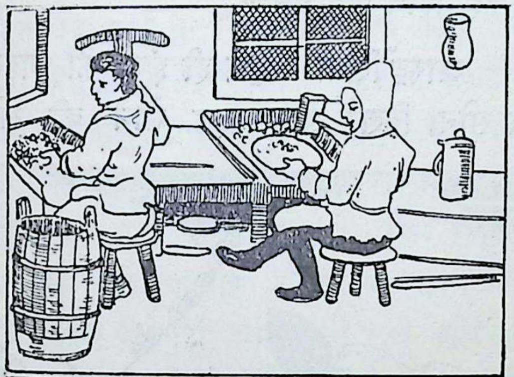

४

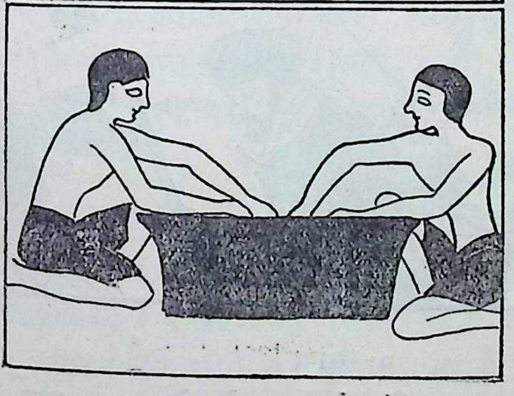

५

४—मिश्र देश का सोना। ५—सोना निकालनेका पुराना ढंग।

भोजन बना कर उसके सामने परोसते।

लेकिन जिस भोजन को राजा खाने के लिये छूता वही सोना बन जाता। राजा सोना नहीं खा सकता था। इससे राजा को कष्ट होने लगा। एक दिन इसकी प्यारी लड़की आकर उससे लिपट गई। वह बेचारी भी सोने की बन गई। तब तो मिडास ने दुःखी होकर देवताओं से प्रार्थना की कि जो वरदान उसे मिला है उसे वे वापिस ले लें।

फिर भी राजा लोग सोने को चाहते ही रहे। सोने के लालच से वे दूर के देशों में हमला करके और बहुत सा सोना रथों पर लादकर वे अपनी राजधानी में ले जाते थे।

जब सोना कम मिलने लगा तो पुराने समय के कीमियागरों ने तरह तरह की चीज़ों को मिलाकर सोना बनाने की कोशिश की। कुछ लोग सोने की तलाश में पहाड़ और जंगलों में गये। कुछ लोगों ने सोने की खोज में समुद्रों को पार किया।

स्पेन वाले सोने की खोज में मेक्सिको पहुँचे। मेक्सिको के लोग अज़टेक कहलाते थे। उनके पास बहुत सोना था। जब वहां के राजा को मालूम हुआ कि स्पेन वाले सोना चाहते हैं तब वहां के राजा ने स्पेन के सरदार कोर्टेज़ को सोने की बहुत सी चीज़ें भेंट की। लेकिन इससे स्पेन वालों का लोभ बढ़ता ही गया और उन्होंने मेक्सिको बरबाद कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन वाले सोने की तलाश में दक्षिणी अमरीका भी पहुँचे। वहां पीरू के इन्का लोग भी मालदार थे। उनको हरा कर स्पेन वालों ने वहां से बहुत सा सोना लूटा। लेकिन कभी कभी स्पेन वालों को रास्ते में इंग्लैंड और फ्रांस के लुटेरे जहाज़ मिल जाते। वे स्पेन वालों से लड़कर सोना छीन लेते थे। कभी कभी दोनों की लड़ाई में सोने से भरा हुआ जहाज़ डूब जाता था। आज कल कुछ लोग डुबकी लगाकर खोये हुए सोने को निकालने की कोशिश करते हैं।

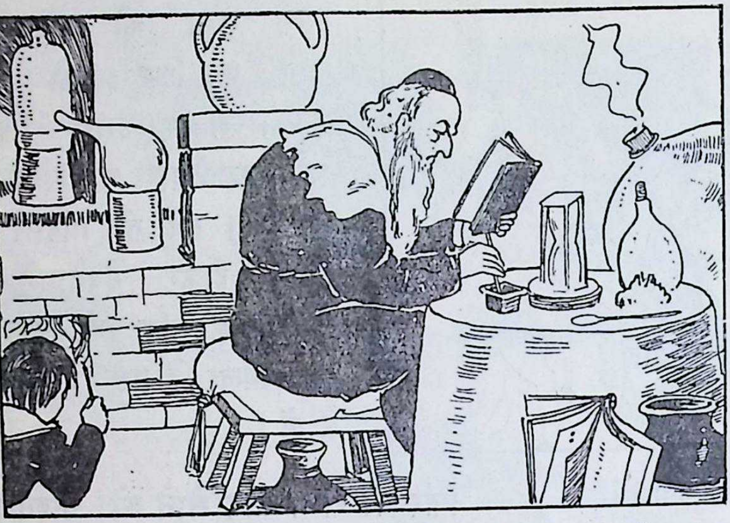

६—सोने की मिथ्यागार।

कुछ लोग घोड़े या खच्चर पर सवार हो कर सोने की खानों का पता लगाने निकलते हैं। एक बार केलिफोर्निया में जेम्स मार्शल ज़मीन खोद रहा था। उसने वहां की मिट्टी में सोने के कण देखे। यह खबर बड़ी तेज़ी से दूर दूर तक फैल गई। लोग इस सोने की तलाश में लम्बी यात्रा तय करके यहां आ बसे। यह लोग १८४९ में यहां बसने आये थे। इसी से यहाँ के लोग १८४९ के नाम से प्रसिद्ध हो गये। उन दिनों में यात्रा करना बड़ा कठिन था। लोग लम्बी बन्द बैल गाड़ियों में सामान लाद कर धीरे धीरे चलते थे। उनको यहाँ आने में कई महीने लग गये।

आस्ट्रेलिया में कुछ ही इंच की गहराई पर सोना मिलने लगा। इस सोने की खोज में भी इंगलैंड के बहुत से लोग घर बार बेच कर यहां दौड़ आये।

७—सोना।

उत्तरी अमरीका के धुर उत्तरी क्लांडायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेश में एस्किमो रहते हैं। एक बार स्कूकुम-जिम नामी रेड इंडियन शिकारी एक हिरण

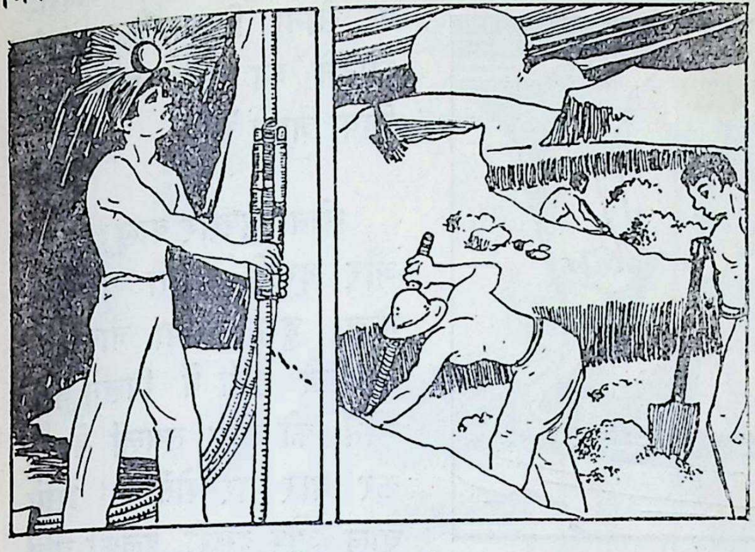

८—सोने की खुदाई।

का पीछा करता करता यहां आ पहुँचा। वह बहुत थक गया था। पानी पीने के लिये एक नदी के किनारे ठहर गया। नदी के कंकड़ों के बीच में उसने सोने के टुकड़े देखे। यह ख़बर भी दूर दूर तक पहुँची यहां साल में आठ महीने तक कड़ा जाड़ा पड़ता है। फिर भी जाड़े की कुछ भी परवाह न करके लोग सोने की तलाश में यहां आने लगे। वे ओढ़ने के लिये कम्बल, खोदने लिये फावड़े और दूसरा भारी भारी सामान अपने आप ही ढो कर लाये थे। बरफ पर चलते चलते उनके पैर सुन्न पड़ जाते थे। कभी कभी उनको भूखा रहना पड़ता था। कुछ लोग तंग आकर लौट गये। कुछ मर गये। कुछ लोगों को सोना मिला और वे मालदार हो गये।

आज कल सोने की दुनिया भर में सब से बड़ी खानें दक्षिणी-अफ्रीका में हैं। वहाँ के मज़दूर लोग काले हबसी हैं। ये बड़ी गहराई पर सोना खोदते हैं। उनके मालिक गोरे लोग हैं जो योरुप से आकर वहाँ बस गये हैं। खानों के चारों तरफ सब कहीं सफेद बालू के ढेर लगे हैं। इनको इन्हीं हब्शियों ने खोद कर इकट्ठा किया है।

कनाडा की कुछ सोने की खानें इतनी दूर उत्तर के बर्फीले प्रदेश में हैं कि वहाँ बिना पहिये की स्लेज गाड़ियों में सामान लादकर मज़दूरों के लिये पहुंचाया जाता है। कभी कभी सामान और

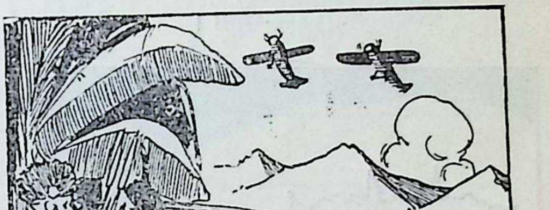

९—सोना।

मुसाफिरों को पहुँचाने का काम हवाई जहाज़ों से लिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वी द्वीप समूह के दक्षिण-पूर्व में न्यूगिनी द्वीप की सोने की खानें जंगलों से घिरी हुई

१०—सोना।

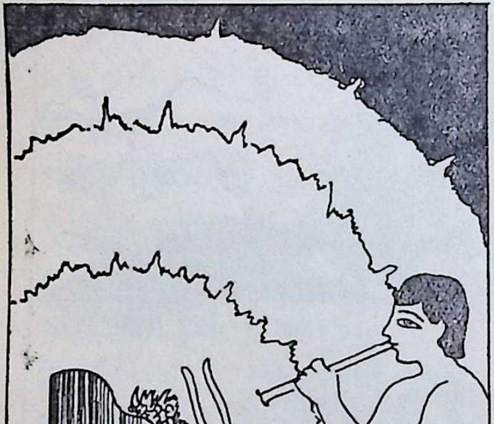

११—प्राचीन मिश्री सुनार सोने के आभूषण बना रहा है।

हैं। यहाँ ज़मीन में साँपों का डर रहता है। पेड़ों के ऊपर बन्दर उछलते कूदते रहते हैं। मैसूर राज्य की कोलार की खानों में बहुत गहराई पर सोना मिलता है। इसको खोदने का काम मशीनों से लिया जाता है।

सोना अक्सर बालू, मिट्टी और दूसरी मैली धातु से मिला हुआ पाया जाता है। नदी की तली में मिलने वाले सोने को लोग तसलों में भर कर बार बार धोते हैं। इससे बालू और दूसरी हलकी चीज़ें

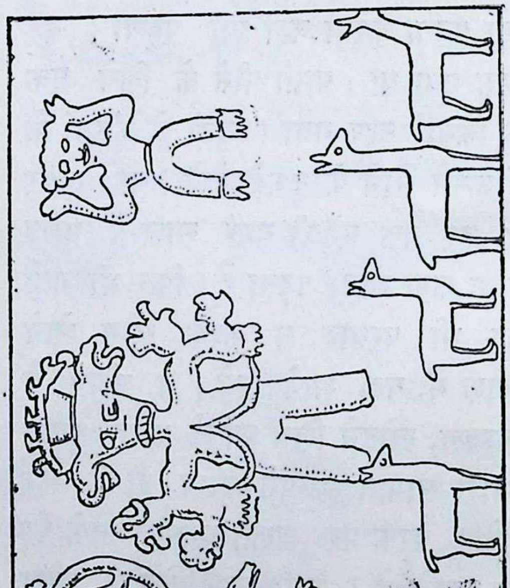

१२—सोने के आभूषण।

बह जाती हैं। भारी सोना बच जाता है। जो सोना खानों के भीतर से निकलता है। उसमें कई कड़ी चट्टानों से रंग चिपके रहते हैं। पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३—रानी शेबी सुलेमान बादशाह को सोना भेंट में दे रही है।

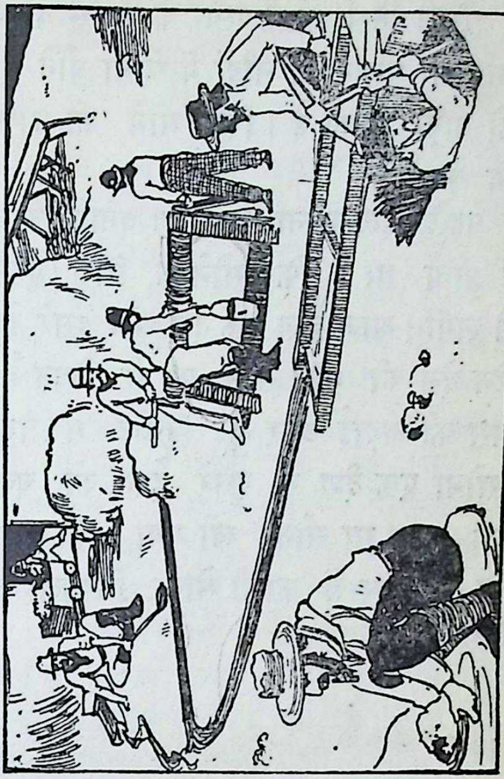

१५—सोना।

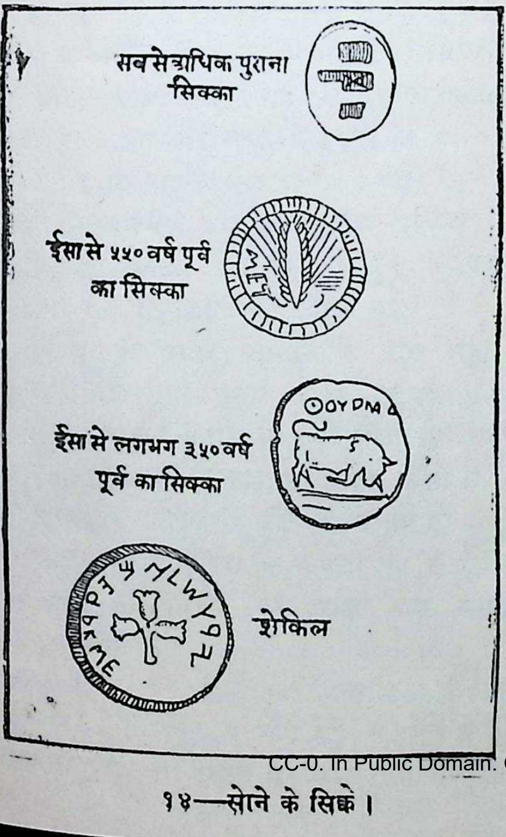

१४—सोने के सिक्के।

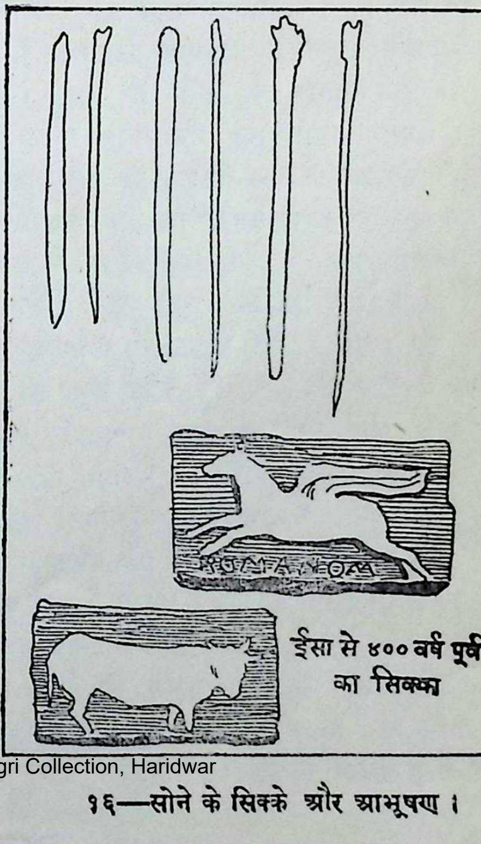

१६—सोने के सिक्के और आभूषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने मिस्री लोग पत्थर के घन से चट्टानों को तोड़कर पत्थर की नाँदों में सोना धोते थे। इनको तोड़ा जाता है। फिर सोने को धोकर अलग करते हैं।

पहले पहल सोना आभूषण बनाने के ही काम आता था। फिर सोने के सिक्के (मुहरें) बनने लगीं। आज कल एक देश और दूसरे देश के लेन देन की नींव सोने पर ही स्थित है। आपस की लड़ाई और लूट खसोट से बहुत सा सोना एक देश से दूसरे देश को चला गया। बहुत सा सोना खो गया। फिर भी ज़मीन के भीतर से काफ़ी सोना निकाला जा रहा है।

पहले सोना राजा के खज़ाने और किले में रहता था। आज कल अधिकतर सोना बड़े बड़े बैंकों के तहखानों में रक्खा है। न्यूयार्क में संयुक्तराष्ट्र अमरीका के फेडरल रिज़र्व बैंक के गहरे तहखाने में कई अरब रुपये का सोना रक्खा है। लन्दन के बैंक में भी इसी तरह कई अरब रुपये का सोना मौजूद है। फ्राँस के बैंक में सोना रखने के लिये पेरिस शहर में ठोस चट्टान को काट कर सेन नदी की तली के नीचे बड़ा तहख़ाना बनाया गया है। इसी में वहाँ का सोना रक्खा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण दिशा में

[विद्या भूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.]

(गताङ्क से आगे)

अधिक बोझ भ्रमण में रुकावट डालता है इस लिए ट्रंक और विस्तर आर्य समाज में छोड़ने का विचार कर लिया, पहने हुए कपड़े के अतिरिक्त २ चादरें १ कम्बल २ कोट २ कमीज २ धोती एक अंगौछे में बाँध लिए। झोले में लोटा गिलास रख लिए। टार्च (Torch) जेब में डाल ली। इस सूक्ष्म सामान के साथ मैंने लंका की तैयारी की। कुली ने ताला पकड़ कर ट्रंक उठाया तो कुन्दा निकल आया। मैं बड़े असमंजस में पड़ गया। यदि बाजार में ट्रंक ले जाकर कुन्दा लगवाया तो ट्रेन न पा सकूंगा और यदि बिना ताले के ट्रंक छोड़ता हूँ तो अपरिचित जगह पर सामान खोने का डर है। फिर भी मुझे आर्य पुरुषों की ईमानदरी पर अधिक विश्वास है। ट्रंक विना ताले के आर्य समाज में पड़ा रहा और जब मैं १५ दिन के बाद लौट कर आया तो सब सामान सुरक्षित मिला।

१२ जून को Egmore station (मद्रास) से २२) रु० में २० दिन का रियायती Travel as you like टिकट लिया। यह summer season टिकट बहुत सस्ता और अच्छा है इससे M. & S. M. Ry. (मद्रास सदर्न मरहठा रेल) और S. I. R. (सदर्न इंडियन रेल) के द्वारा कुल दक्षिण भारत की यात्रा हो सकती है। दिन के ११ बजकर १५ मिनट पर रेल धनुषकोटि को रवाना हुई।

१३ जून को सवेरे पामबन के पास समुद्र को पार करती हुई गाड़ी धनुष कोटि पहुँची। यह रेल का अन्तिम स्टेशन मद्रास से ४६० मील है। यहाँ से स्टीमर तलाई मनार (लंका) को जाया करते हैं। २२ मील की समुद्र यात्रा २ घंटे में समाप्त हो जाती है यहाँ आकर मालूम हुआ कि डाक्टर का सार्टीफिकट और लङ्का की पुलिस का आज्ञा पत्र मण्डपम कैंप (mandapam camp station) पर मिलता है। इन दोनों के विना लंका में उतरना असम्भव है। मण्डपम कैंप को मैं रास्ते में छोड़ आया था गाड़ी के लौटने में अभी तीन घंटे की देर थी इसलिए कपड़ों को स्टेशन पर रखकर एक नौकर के साथ समुद्र स्नान को चला। २ मील के लगभग चलने पर समुद्र का संगम आया। एक ओर शान्त महोदधि बंगाल सागर बह रहा था। और दूसरी ओर उत्ताल तरंगों वाला रत्नाकर अरबसागर अट्टहास कर रहा था, जब मैं महोदधि में स्नान कर रहा था मैंने देखा कि एक बहुत ही सुन्दर दुध शंख लुढ़कता हुआ जा रहा है। मैंने उसे झट उठा लिया, वह जिन्दा था, अन्दर से कीड़े ने पैर निकाले वह मेरी हथेली में छू गए मैंने उसे तुरन्त पानी में डाल दिया और वह लहरों के साथ बहता हुआ चला गया। मैंने अपने स्वार्थ के लिए उसकी जान लेना उचित न समझा। स्नान के पश्चात अन्य मनुष्य तो पंडों के इशारों पर नाच रहे थे मैं किनारे किनारे सीपी, रावण के नाखून और किरीट बीनता हुआ स्टेशन पहुँचा दस बजे गाड़ी में बैठ कर १२ बजकर ३० मिनट पर मण्डपम कैंप आ गया।

मैं स्टेशन से अस्पताल में गया। तीन घंटे बाद डाक्टर साहब से भेंट हुई। उन्होंने कहा ५०) रु० जमा करना होगा और कल टीका लगाया जायगा मेरे बहुत कुछ कहने सुनने पर २५) रु० की जमानत ही स्वीकार कर ली लेकिन टीका से छुट्टी न दी। मैंने यह सोचा कि कहीं टीका के बाद ज्वर आ गया तो अकेले सात दिन तक यहीं पड़ा रहना पड़ेगा टीका लगवाना स्वीकार न किया। स्टेशन पर आकर देखा कि पहले और दूसरे दर्जे के यात्रियों का सब संस्कार स्टेशन पर किया जा रहा है और ट्रेन उनके लिए रुकी रहती है। हम जैसे तीसरे दर्जे के यात्रियों का कोई मूल्य ही नहीं रक्खा। २० दिन कहीं लंका और मण्डपम कैंप के अस्पतालों में ही न बीत जाय और लंका के लालच में दक्षिण भारत भी न रह जाय "माया मिले न राम" यही समझ लौटने की ठान ली। २ घंटे की समुद्र यात्रा में कौन सी विषाक्त महामारी है जिससे गवर्नमेंट इतना भय खाती है। और बेचारे यात्रियों को परेशान करती है कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बई में हजारों मनुष्य आते जाते रहते हैं परन्तु वहाँ पर कभी टीका का प्रश्न नहीं उठता ऐसी रुकावटें व्यापार तथा समाज की दृष्टि से दोनों देशों के लिए हानि कारक हैं।

मण्डपम कैंप से मैं रामेश्वरम् को लौट पड़ा। पामवन स्टेशन से ही पंडों ने घेरना आरम्भ किया और रामेश्वरम पहुँचते ही पंडे टिड्डीदल की तरह टूट पड़े। असीमित प्रश्नों की वर्षा शुरू हो गई। मैंने कहा कि मैं दर्शन के लिए नहीं आया तो भी उन लोगों ने एक न सुनी मैं जिधर जाता वह दल मेरे पीछे हो लेता। पिण्ड छुड़ाना कठिन देखकर मैंने एक कुली किया और उसके साथ रामेश्वरम् देखने को पैदल चल दिया। निराश होकर वह एक एक खिसकने लगे। अब केवल दो रह गए। वह दोनों उन दो फरिश्तों की तरह जो कि मनुष्य के भले बुरे कामों को लिखते रहते हैं मेरे साथ साथ घूमते रहे। थक कर उनमें एक ने अपना रास्ता लिया बाजार से बिना मन्दिर देखे ही मैं स्टेशन की ओर मुड़ा। अपने सब प्रयत्नों को निष्फल देख उसने आग्रह किया कि एक समय के भोजन के लिए ही कुछ पैसे मिल जाय लेकिन मैंने उसे सबक सिखाने के लिए एक पाई भी न दी वह बड़बड़ाता हुआ अपने घर चला गया और मैं जाकर रेल में बैठ गया शाम को लगभग सात बजे त्रिचनापली को चल दिया।

५ बजे सबेरे त्रिचनापली पहुँच कर एक मास्टर के यहाँ सामान रख दिया यह शहर भी अपने अच्छे दिन देख चुका है। यहाँ पर कभी चाँदा साहब का बोल बाला था। चाँद के अस्त होने से यह अमावस्या के अँधेरे में विलीन हो गया। एक भग्न द्वार के अतिरिक्त कोई चिन्ह उन दिनों का स्मरण नहीं दिलाता। समय का फेर यही है यहाँ का Rock temple (पहाड़ी मन्दिर) दर्शनीय है। कावेरी स्नान को गया वहां सैकड़ों स्त्री पुरुष नहा रहे थे पानी बहुत गन्दा था इसलिये मेरी इच्छा उसमें नहाने की न हुई।

एक साथी लेकर श्रीरंगम् क्षेत्र देखने चला, श्री रंगम् त्रिची से तीन मील है। दो आने में मोटर वहाँ पहुँचा देती है। यह दक्षिण का एक प्रसिद्ध मंदिर है। मूर्ति तक पहुँचने के लिये कई चौक पार करने पड़ते हैं। रास्ते में एक आने के एक दर्जन केले लेकर खाने लगा केले बिलकुल फीके थे, अन्य कोई चीज खाने की पास न थी। फेंकना भी उचित न समझा। इतने में उस खान की याद आ गई जो पेड़े की जगह साबुन खरीद लाया था और बेचारा जैसे तैसे उसे खतम करने लगा, किसी ने उसे मुंह बनाते हुये देखकर पूछा 'खान क्या खाते हो ? उसने कहा 'खान खाता क्या है अपना पैसा खाता है' हंसते हंसते मैंने भी कई केले अकेले ही समाप्त कर दिये। शेष केले साथी के हाथ घर भिजवा दिये इस तरह उससे पिंड छूटा। यह नगर S. I. R. का Head quarter है उत्तर-दक्षिण का प्रसिद्ध व्यापार-केन्द्र है।

रेल में मुझे किसी ने यह बताया था कि त्रिवेन्द्रम का चिड़िया घर भारत में सबसे अच्छा है, उसमें ऐसे २ जीव जन्तु हैं जो अन्यत्र नहीं पाए जाते हैं। उनको देखने को मैं व्यग्र हो रहा था इसलिए सवा बारह बजे दिन के त्रिची से चल दिया और रात को साढ़े आठ बजे मदुरा स्टेशन पहुँचा होटल वाला मुझे शहर ले गया।=) कोठरी के।=) आना भोजन के तय हुए सबेरे ।||) मैनेजर को दिए और १५ जून को आठ बज कर तीस मिनट पर त्रिवेन्द्रम को रवाना हुआ।

दक्खिन में काली मिट्टी के अतिरिक्त लाल मिट्टी (Red laterite) भी पाई जाती है। एक सूखी छोटी नदी लाल धूल से ही ढकी हुई थी और वह बहुत अच्छी लगती थी सामने लाल लाल खेत दिखलाई देते थे दूर दूर गड्ढे लाल जल से पूरित लाल शरबत के प्याले से मालूम देते थे। लाल गुलाबी खपरेल लाल दीवालों पर दिल को लुभा रही थी। स्टेशनों की पटरियों पर भी लाल बजरी बिछी थी। जिधर देखता था लाल ही लाल दिखलाई देता था। कृषि विभाग के कर्मचारी ने बतलाया कि अगर इस लाल मिट्टी को पानी मिले तो पैदावार के लिए काली मिट्टी से अधिक अच्छी है। काली मिट्टी में पौधों की जड़ें फैलने नहीं पातीं, लाल मिट्टी चिकनी न होने से मुलायम होती है और जड़ों को फैलने का पूरा अवसर मिलता है लेकिन छिद्रमयी होने से पानी अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती है। यहाँ की दो तिहाई भूमि लाल ही लाल है।

ट्रावनकोर राज्य में प्रवेश करते ही चित्त प्रसन्न हो गया। समय बड़ा सुहावना था कभी कभी बूँदें पड़ जाती थीं, गर्मी का नाम न था पहाड़ियों पर सागोन (Teak) रोज़ वुड कन्द (Rose wood) कटहल और जंगली पेड़ हरियाली से आच्छादित थे। खाइयों में गुला लताओं में गुत्थम् गुत्था हो रही थी जंगली फूल अपनी स्वाभाविक हँसी से हँस रहे थे। बीच बीच में केले और अनन्नास भी अपनी छटा दिखा रहे थे। कहीं कहीं किसानों के लाल २ घर पृथक पृथक खड़े हुए थे और उनके पास नारियल के पेड़ झूम रहे थे। सुपारी (Areca nut) काजू (Cashewnut) और ताड़ी गोला के वृक्ष अपना निराला सौंदर्य प्रदर्शित कर रहे थे। कहीं कहीं अंधेरी सुरंगें पार करनी पड़ती थी। कहते हैं कि इस विकट वन में हाथी और शेर भी पाये जाते हैं। इस निरीक्षण में मि० चक ने मुझे बहुत सहायता दी।

५ बजे से पहले क्विलन स्टेशन पर हमारी ट्रेन आ गई। लड़कों की टोलियाँ समुद्र स्नान करने को जा रही थीं। क्विलन एक छोटा बन्दरगाह है। रेल में से शहर साफ, सुथरा तथा सुन्दर दिखलाई देता था (Back waters) में नावें चल रही थीं।

जब हम त्रिवेन्द्रम के समीप पहुँचे तो खेतों में अपरिचित पौधे दिखलाई पड़े मैंने मि० चक से पूछा तो उन्होंने बतलाया कि यह (Tapioca) है। इस नाम के सुनते ही मैं फूला न समाया। इसे देखने को मैं अत्यन्त लालायित था। ईश्वर की कृपा से खेत के खेत देखने को मिल गये। मैंने तो यही पढ़ा पढ़ाया था कि पूर्वी द्वीप समूह (East Indies) तथा अफ्रीका में पाई जाती है और वहाँ के लोगों का यह मुख्य भोजन है। पूर्वी द्वीप समूह वाले इसके विष को हटाने के लिए इसको पहले उबालते हैं और फिर खाने के काम में लाते हैं। सुखा कर इसकी रोटी बनाते हैं। (Tapioca) की जड़ सूरत में शकर कन्द की तरह होती है। डाली काटकर आसानी से लगाई जा सकती है लौटते समय (Tapioca) का नमूना लेने का निश्चयकर लिया ट्रावनकोर की (Tapioca) विषाक्त नहीं होती। रात को ७½ बजे त्रिवेन्द्रम के Grand Hotel में पहुँच गया, ॥) आना प्रति दिन एक कोठरी के और ।=) आ० खूराक के निर्णय हुए।

१६ जून को सबेरे त्रिवेन्द्रम नगर देखने निकला। पैसे की जगह यहाँ रियासत का सिक्का (चक्रम) चलता है यह सवा दो पैसे का होता है मैं दो चक्रम देकर मोटर में बैठ गया कुछ दूर जाकर उतर पड़ा। छः छः पैसे में हाथी दाँत की एक स्वस्तिका और एक हाथी खरीदे। मनुष्य बहुत मिलनसार थे और आगन्तुक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर बड़ी सभ्यता से देते थे। यहाँ दो प्रकार के लेटरबक्स लगे हुए, थे। स्थानीय तथा सरकारी राज्य के बाहर पत्र भेजने के लिए लाल रंग का सरकारी लेटरबक्स था। स्थानीय में डालने से वैरंग हो जाता है। फूलों से परिपूर्ण एक वाटिका में एक सुन्दर गुलाबी भवन खड़ा हुआ है। यही राजमहल है। संतरी बाहर पहरा दे रहा था। अन्दर बिना पास के नहीं जा सकते इस लिए मैंने दूर से ही दर्शन कर लिए। चिड़िया घर (Zoo) के फाटक से एक आदमी मेरे साथ हो लिया। हम दोनों एक दूसरे की भाषा से अनभिज्ञ थे वह समझाने का बहुत प्रयत्न कर रहा था परन्तु मेरी सकझ में कुछ न आता था। एक चक्रम में सापों का तमाशा देखा। गुलाबी पेलीकन (Pelican) और पचरंगी तोता दर्शनीय पक्षी थे मैंने कुछ चिड़ियों के पंख माँगे तो उसने 'राजा' शब्द कर दोनों कलाइयाँ मिला दीं यानी राजा हथकड़ी डलवा देगा। Zoo बहुत ही साधारण था। पास ही एक छोटा सा अजायब घर भी था जिसमें चित्रों का संग्रह अच्छा था आस्ट्रेलिया Australia के सारंगी चिड़िया (Lyre bird) की पूँछ का प्रत्यक्ष दर्शन यहीं हुआ, यह बहुत ही सुन्दर थी। बेध शाला (Observatry) देखने गया लेकिन वह बंद थी।

यहाँ पर मुझे मालूम हुआ कि कन्याकुमारी का सूर्यास्त बहुत सुन्दर होता है दार्जिलिंग में सूर्योदय देखने के लिए १२ मील पैदल गया था। कन्याकुमारी लगभग ५० मील है एक रुपये में बस (Bus) ले जायगी। १ बजकर २० मिनट पर कन्या कुमारी के लिये मोटर से चल दिया, ॥।=) ही देने पड़े। सड़क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दोनों ओर नारियल तथा अनेक प्रकार के ताड़ के जंगल खड़े हुए थे। जहाँ जहाँ मोटर खड़ा होता था खाने को केले, पीने को नारियल का पानी मिल जाता था।

नारियल को यदि कल्पवृक्ष कहा जाय तो अत्युक्ति न होगा। गरी खाने को, अन्दर का दूध पीने को, जटा की चटाइयाँ बिछाने को, लकड़ी जलाने को, पत्ते छत पाटने को, प्याले, हुक्के तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ इससे प्राप्त होती हैं। अरब के लिये ऊँट, एस्किमो के लिये रेनडियर और दक्षिण वासी को नारियल ही सर्वस्व है। मैडेगास्कर (अफ्रीका) के Trevellers tree की तरह खान पान आश्रय तीनों ही इससे मिलते हैं। नारियल की चटपटी चटनी कौन नहीं चाहता। मेरी तृषा को कई बार इसने शान्त किया। इसके तेल से नाना प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं। ऐसा लाभदायक वृक्ष संसार में शायद ही कोई होगा।

साढ़े सात बजे शाम को कन्याकुमारी पहुँच गया। (Red and Black monazite) मार्निक रेती शंखमाला, सीता के चावल, सुइयाँ, गर्भ तथा समुद्र की वस्तुएँ लेकर स्वामी विवेकानन्द हिन्दी पुस्तकालय में रख दीं और गाइड लेकर समुद्र तट को चल दिया। शीतल वायु बह रही थी। समुद्र गर्जना कर रहा था। उत्ताल तरंगें चट्टानों से टकरा कर गिर पड़ती थीं। लवण विन्दु पवन के सहारे अंग स्पर्श करते थे। यह अंतरीप भारत की सीमा का अन्त है। एक ओर अरब सागर हिलोरें ले रहा था दूसरी ओर गंगा सागर उमड़ रहा था। दो समुद्रों का संगम बहुत ही सुन्दर तथा शान्तिप्रद था। लेकिन सूर्यास्त ? कोई विशेष बात नहीं।

इतने में एक अपरिचित व्यक्ति केमरा लिये सामने आया। दोनों ने अपना अपना परिचय दिया। एकाका ने समुद्र की ओर संकेत कर कहा, टेनीसन ने ठीक कहा है, 'Water, water everywhere, not a drop to drink'. मैंने कहा यह पंक्तियाँ कालरिज के Ancient mariners से ली गई हैं, टेनीसन की नहीं हैं। उन्होंने अपनी भूल स्वीकार कर ली। दोनों किनारे किनारे बहुत देर तक टहलते रहे। उन्होंने दो एक चित्र भी लिये। सूर्य डूबने का समय आ गया किन्तु उसमें कोई अलौकिकता न दृष्टिगोचर हुई। मि० काका ने कहा, शायद जाड़ों में जब सूर्य दक्षिणायन होता है कुछ सुन्दरता दिखाई देती होगी। मैंने कहा, हाँ ऐसा हो सकता है। सूर्य के लोप होते ही अंधकार फैलने लगा। हम लोग कुमारी के मंदिर को चल दिये। मंदिर के चारों ओर किले की तरह ऊँची चहार दीवारी थी। जिसके ऊपर चौड़ी २ सफेद और लाल कमीज की तरह खड़ी धारियाँ थीं। एक अंग्रेजी पढ़ा पुजारी द्वार पर खड़ा था। उससे मालुम हुआ कि धोती के अतिरिक्त कुल कपड़े बाहर ही उतार कर रखना होगा। नहीं तो मंदिर के अन्दर नहीं जा सकते। मेरी जेब में ६०) के नोट पड़े थे इस डर से मैंने यह बात स्वीकार न की और बाहर ही रहना पसन्द किया। एकाका ने अपना मनी बेग निकाल कर मुझे दे दिया और कपड़े उतार कर अन्दर चले गये। वह पूजा पाठ तथा दर्शन के बाद बाहर चले आये उन्होंने बतलाया कि देवी के कई हीरे जड़े थे। परन्तु किसी के हाथ अपने रुपयों को छोड़ना मैंने उचित न समझा। परदेश में सहसा किसी का विश्वास करना ठीक नहीं, इसी नीति का मैंने अवलम्बन किया। एकाका कुछ हास्य प्रेमी भी थे। जब उनसे पूछा गया, क्या आप भगवान् के दर्शन को भी जाँयगे तो झट बोल उठे मैं भगवान और भगवती में समझौता करने नहीं आया। यहाँ पर एक पौराणिक कथा की ओर संकेत था। यह कन्या भगवान से शादी करना चाहती थी। लेकिन किसी कारण शादी न हो सकी तो उसनें आजन्म कुमारी व्रत धारण कर लिया। उसी कन्या कुमारी का मन्दिर समुद्र के किनारे खड़ा हुआ है मिस्टर काका ने कहा कि मैं १४) रु० का Taxi किराये पर लाया हूँ आप मेरे साथ ही त्रिवेन्द्रम चलिये मैंने यह सोचकर कि कहीं आधा मुझे न देना पड़े कहा कि मैं इतना खर्च नहीं कर सकता। उधर से मैं सिर्फ ॥।≡) आने में आ गया था। उन्होंने कहा खर्च करने की कोई आवश्यकता नहीं मैंने पूरी Taxi की है। उसमें जगह है आप बैठ चलिये। मैं सहमत हो गया अपना सामान लेने के लिये काका के साथ पुस्तकालय आया। पुस्तकाध्यक्ष ने दान का रजिस्टर उनके सामने रख दिया। उन्होंने ५) इसमें लिख दिये दस रुपये का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट निकाल कर उससे कहा कि शेष रुपया लौटा दिया जाय मैंने भी चार आने दे दिये और अपना सामान लेकर काका की मोटर को चल दिया सिढ़ियों से उतरने चढ़ने में मेरे चोट आ गई टांग में थोड़ा सा रुधिर भी निकल आया। जिससे धोती लाल हो गई मैं दर्द को सहता हुआ मोटर में आ बैठा मुझे डर था कि दौलमौला काका को मालूम हो गया तो वह तुरन्त डाक्टर के पास ले जायँगे और शहर को पहुँचने में देर हो जायगी खर्च भो न जाने कितना पड़ जाय। इसी लिये मैं चुप रहा। अभाग्यवश मोटर भी कई जगह फेल हुई और जैसे तैसे आधी रात के बाद होटल पहुँचे। खाना समाप्त हो गया था इससे निराहार ही सोना पड़ा सबेरा होते ही १७ जून को होटल से स्टेशन आ गया। लाल मिट्टी और Topica न ले सका उनके लेने की उत्सुकता बढ़ती ही जाती थी। मैंने कुली से कहा तुम दौड़ कर कुछ लाल मिट्टी ले आओ तुम्हें कुछ पैसे दिये जायँगे। वह मेरी बात न समझता था और अपनी मजदूरी माँगता था हम लोग एक द्विभाषिये के पास पहुँचे कुली ने अपनी भाषा में शिकायत की कि यह बाबू हमारी मज़दूरी नहीं देता। मैने उस बाबू को कुल हाल बतलाया तब उसने कुली को समझा दिया कि बाबू तुमको ज्यादा पैसे देगा। तुम दौड़कर थोड़ी सी लाल मिट्टी ले आओ कुली दौड़ा गया और कोई एक सेर मिट्टी भर लाया मिट्टी मेरे पसन्द न आई मैं जैसो लाल चाहता था वैसी न थी। उसमें से दो ढेली या (आध पाव) रख कर शेष फेंक दी कुली को मजदूरी और दो पैसे मिट्टी के देकर विदा किया अब मुझे Topioca की चिन्ता हुई बार २ इधर उधर लोगों से पूछता था तो उत्तर मिलता था कि बाजार यहाँ से दूर है इस समय मिलना मुश्किल है। ३ बाबू मेरे डिब्बे के दूसरे खाने में बैठे थे उनसे जाकर पूछा तो कोई आशा जनक उत्तर न मिला इतने में S. I. R. का एक कर्मचारी उधर से निकला मैंने अपनी इस प्रबल उत्कण्ठा को उसके सामने प्रगट किया उसने फ़ौरन एक लड़के को एक चक्रम का लालच देकर Topioca के लाने के लिये दौड़ाया वह गाड़ी के छूटते २ तीन जड़ें लेकर आ पहुँचा। लड़के को एक चक्रम और बाबू को धन्यवाद देकर मैं कोदई केनाल (Kodaikanal) वेध शाला देखने चल दिया:—

उन तीन बाबुओं ने दराज से झांक कर देखा एक पतले दुबले आदमी के पास बहुत सी चीज़ों का ढेर लगा हुआ है वह उठ कर खड़े हो गये और मुझसे उन चीज़ों के विषय में पूछने लगे। मैंने उनकी शंका दूर की और बात चीत करने को उन्हीं के पास बैठ गया। पारस्परिक परिचय के उपरान्त मैंने उनको बतलाया कि मैं काश्मीर से कन्या कुमारी तक यात्रा कर चुका हूँ। और स्कूल के अजायबघर के लिये यह संग्रह कर रहा हूँ। यह सुन कर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। और वे मेरे उत्साह की सराहना करने लगे। उन्होंने उत्तरी भारत के विषय में कई प्रश्न किये। मैंने उनका संतोषप्रद समाधान किया उन्होंने कहा कि हमारा देश बहुत निर्धन है। और 'कोढ़ में खाज' यह कि नारियल का भाव ६।) सै० से गिर कर १।) रुपया ही रह गया क्योंकि लंका के नारियल ने धावा बोल दिया है। मैंने प्रश्न किया कि इतने खनिज पदार्थ के होते हुये भो देश निर्धन क्यों है—नारियल से ही अनेक उद्योग चल सकते हैं।

उन्होंने लम्बी सांस लेते हुये कहा लोगों में स्वार्थ भरा हुआ है सहयोगिता का नाम नहीं। ट्रावनकोर राज्य में हिन्दी का अच्छा प्रचार है। बहुत देर तक विविध विषयों पर वार्तालाप होता रहा दो बालर्क ऐयर और पिलाई तो किलन पर उतर गये तीसरे मि० नैयर जो बैंक में नौकर हैं कई स्टेशन तक मेरे साथ रहे। रेल से शिव काशी आदि के मन्दिर देखे रात के सात बजे मदुरा पहुँच कर उसो होटल में पहुँच गया।

मदुरा का मीनाक्षी मन्दिर भारत के देवालयों में बहुत प्रसिद्ध है। मैं एक गाइड लेकर रात में ही देखने गया, जूते बाहर रख दिये उस आदमी को समझा दिया था कि मैं मूर्तिपूजक नहीं हूँ इसलिये कहीं पूजा पाठ या पैसे चढ़ाने की बात न करना। लेकिन वह अपने स्वभाव से लाचार था जिस मूर्ति के पास जाता वहाँ चिल्लाता इस पर चढ़ाने से बड़ा पुण्य होता है। यह आरती उतारो यह चरणामृत पियो मैं अन सुनी कर आगे बढ़ जाता यहाँ १५२ फुट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊँचा गोपुरम् स्वर्णाभ कमलिनी से युक्त तड़ाग तथा सहस्त्र स्तम्भी भवन उल्लेखनीय हैं मन्दिर देखने के बाद शहर का चक्कर लगाया। दक्षिण में मद्रास के बाद तंजौर या मदुरा का ही नम्बर बताया जाता है। १८ जून को पौने नौ बजे कोदई केनाल रोड को चल दिया। मदुरा मिल्स देखने को समय न मिला।

दिन के ११ बजे कोदई केनाल रोड पहुँच गया। यहाँ पर चार पैसे के ५ बालबेरी खरीदे। यह फल नासपाती की तरह होता है। खाने में अधिक स्वादिष्ट नहीं लगा। एक घंटे के बाद १॥) में नेयर मेल मोटर (Nair mail motor service) में बैठकर कोदई केनाल चल दिया रास्ते में सैकड़ों चरी, ज्वार के से बोझ पड़े हुये थे। मोटर वाले ने उनमें से कुछ मोटर में लाद लिये मैंने उससे पूछा यह क्या है। उसने कहा एलम, मैं कुछ न समझा, दूसरे पड़ाव पर महकमा जंगलात का एक कर्मचारी मोटर में बैठ गया मैंने उससे भी वही प्रश्न किया उसने कहा यह इलायची है। इलायची देख कर मुझे बड़ा हर्ष हुआ क्योंकि उसके देखने की बड़ी उत्कंठा थी मोटर वाले के एलम का अर्थ अब मेरी समझ में आया यह संस्कृत के एला (इलायची) से बना है। इलायची के लिये कुछ छाया होनी चाहिये। यह बड़े पेड़ों के नीचे लगाई जाती है। फल जड़ के पास ज़मीन के ऊपर लगते हैं।

मोटर ऊँचाई पर चढ़ रही थी दिन के साथ साथ गर्मी भी घट रही थी। आकाश मेघाछन्न था और कभी कभी बौछार आ जाती थी। रंग बिरंगे फूल चारों ओर प्रसन्नता से स्वागत कर रहे थे, पहाड़ी धारा के रजत जल से मधुर संगीत निकल रहा था। चार बजे कोदई केनाल पहुँचा और अपना सामान नायडू हिन्दू होटल में रख कर वेधशाला (Observatory) गया।

यह वेधशाला एक ऊँची चोटी पर बनी हुई है भारत में एक यही स्थान है जहाँ पर तारों का निरीक्षण किया जाता है और यही समझ कर मैं उसे देखने गया था। बाहर साइनबोर्ड पर यह पढ़ कर कि जनता शुक्रवार को ही देख सकती है। मैं बहुत उदास हो गया। कई दिन तक रुक नहीं सकता था। मैं आगे बढ़ा। जगह जगह भांति भांति के यन्त्र लगे हुये थे। एक कमरा खुला देखकर उसके अन्दर गया। वहां के बाबू कुछ काम कर रहे थे। मैंने एक के पास जाकर अपना परिचय दिया और आने का उद्देश्य बतलाया, उन्होंने कहा छुट्टी हो चुकी है दफ़र बंद हो चुका है अतः आज आप न देख सकेंगे, कल आप डाइरेक्टर से मिल लीजिये वह आप को सब चीजें देखने की आज्ञा दे देंगे। परन्तु मि० खाँ कुछ दयालु थे। उन्हों ने कहा आप बड़ी दूर से आये हैं २० मिनट ठहरिये मैं इस काम को कर लूं तो आप को कुछ यंत्र अभी दिखला दूंगा। मैं कुर्सी पर बैठ गया। मि० खाँ थोड़ी देर बाद मुझे भूकंप यंत्र (Seismograph) के पास ले गये। इससे भूडोल की दूरी, दिशा वेगादि सब बातें मालूम हो जाती हैं। फिर उन्होंने कई एक विचित्र यंत्र तथा सूर्य के चित्र दिखलाये इन चित्रों से प्रगट होता था कि सूर्य में भी गति है। तदुपरान्त वे मुझे अपने घर ले गये और अतिथि सत्कार किया।

सूर्यास्त के बाद मेरे साथ फेरो (परी) प्रपात तथा झील तक घूमने गये यहाँ इसाइयों का एक बड़ा कालेज है जहाँ २५० ईसाई पादरी का काम सीखते हैं। अंधेरे के साथ साथ सर्दी भी बढ़ती जाती थी। हवा और बूंदों ने उसे और भी मदद पहुँचा दी मेरे दाँत बजने लगे और शरीर काँपने लगा। जाड़े का कोई वस्त्र मेरे पास न था, मि० खान ने कहा कि आप को सर्दी लग रही है। मैंने उत्तर दिया कोई बात नहीं थोड़ी देर में आदी हो जाऊँगा। मुझे दृढ़ विश्वास था कि एक रात तो सिकुड़ कर ही काट सकता हूँ मुझे होटल तक पहुँचा कर वह अपने घर चले गये। उनका हिन्दी प्रेम इससे प्रगट होता है कि उन्होंने मुझसे अपनी हिन्दी पुस्तकें भेजने का बड़ा आग्रह किया।

२९ जून को बड़े सबेरे उठा और पार्क में पहुँचा इस बाटिका में विविध प्रकार के फूल खिल रहे थे कुछ विदेशी वृक्ष भी अपने देश की स्थिति बतला रहे थे।

यूकलिप्टस ने कहा मेरी जन्मभूमि आस्ट्रेलिया गर्म देश है। सूर्य से बचने के लिए मुझे अपनी पत्तियों के किनारे खड़े रखने पड़ते हैं। चीड़ ने कांपते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए कहा ओह: मेरे देश में तो इतनी सर्दी पड़ती है कि रोंगटे खड़े हो जाते हैं और जाड़ों में तो बर्फ की सफेद चादर ओढ़नी पड़ती है अगर यह सुइया (नुकीली पत्ती) न होती तो कब का मर गया होता। कटीला कीकर कहने लगा अगर मेरे यह त्रिसूल न होते तो कबका सूख कर ठठरी रह जाता। चौड़े पते वाला वृक्ष बोला मैं तो इन्द्र के मोतियों को खुले हाथों लुटाया हूँ। मुझे आठ बजे मोटर से स्टेशन लौटना था इसलिये वहाँ अधिक न रह सका। मि० खान की वातों से मालूम हो गया था कि इस वेधशाला में सूर्य का ही निरिक्षण परीक्षण होता है अन्य तारों का नहीं इसलिये मेरी पूर्व की उत्सुकता जाती रही और ९ बजे मोटर से चलकर १२ बजे स्टेशन गया। दो घंटे बाद रेल मिली और रात को ८ बजे रामेश्वरम् आ गया इस बार पंडों ने तंग नहीं किया। मैं स्टेशन के समीप सरकारी धर्मशाला में ठहर गया।

२० जून के सबेरे पाम्बन (Pamban) आया। एक गाइड को साथ लेकर क्रुसेदाई (Crusadei) द्वीप को पैदल चला। यह मूंगे का द्वीप स्टेशन से ३ मील होगा। गाइड के विना वहाँ पहुँचना कठिन है आठ आने में तय करके मैं उसके साथ साथ समुद्र के किनारे किनारे चल दिया तट पर समुद्र फेन, रावण के नाखून और किरांट, झाग, सीपी तथा अन्य छोटे जल जीव ढेर के ढेर पड़े थे। थोड़े थोड़े नमूने मैंने और नौकर ने एकत्रित किये। विचित्र प्रकार के ताड़ खड़े हुये थे। बोझ होने के डर से मैंने उनका कोई नमूना नहीं रक्खा।

झाग रुई के नमदे सा समुद्र तट पर पड़ा हुआ था। दो मील चलने के बाद मुझे मालूम हुआ कि मेरा अंगोछा गिर गया है इतने में दूसरी ओर से एक नाव दिखाई दी। नौकर को तो अंगोछा खोजने वापिस भेजा और मैं नाव में बैठ गया। नाव वाले ने पूछा क्या आप के पास pass है तब मैंने समझा कि यहाँ भी pass की आवश्यकता होती है। मैंने कहा वहाँ देखा जायगा। परन्तु यह बात नहीं थी Pass तो Director of fisheries, Madras से मँगाना पड़ता है और बिना आज्ञा के कोई मनुष्य उस द्वीप पर उतरने नहीं पाता। Assistant biologist से बातें करता करता मैं उसके दफ्तर में पहुँच गया वहाँ एक छोटा सा Biologist museum था। उसको मैंने थोड़ी देर तक निरीक्षण किया Pass न होने के कारण मैं द्वीप में घूमने न पाया और उसी नाव से वापिस लौटा दिया गया। द्वीप के तट से मैंने तीन चार प्रकार के मूंगे नमूने के लिये और एक सरसरी दृष्टि उस प्रवाल द्वीप पर डाली वहाँ नारियल ही नारियल दिखलाई देते थे। मूंगे की मिट्टी और समुद्र का खारा पानी दोनों ही उसके लिये अनुकूल हैं। मि० वरदराजन Research assistant ने नारियल का स्वादिष्ट जल पिलाया मैं धन्यवाद देकर नाव में बैठ गया और उसी जगह पर आ उतरा जहाँ से चला था। नौकर ने सूचना दी कि अंगौछा नहीं मिला। समुद्र के विचित्र भंडार से कुछ संग्रह करते हुये हम लौट रहे थे बीच बीच में खारी लहरें पैर धो जाती थीं:

मुझे यह चिन्ता थी कि मूंगे का कोई अच्छा नमूना हाथ न लगा। समुद्र छूटने ही वाला था सिर्फ चार पांच गज़ का एक कोना और पार करना था, अपनी पंक्तियों को दुहराने लगा:—

बड़ी बड़ी आशा ले आये, जाते हैं सब कुछ छोड़े।
सुना सुना कर सब कहते हैं नाम बड़े दर्शन थोड़े॥
जनक ढपोर शंख का, खारी, कौड़ी, घोंघों का घर है।
या दिवालिया सेठ पुराना, यह दरिद्र रत्नाकर है॥

पानी में पैर रखते ही एक कोने में मनुष्य के सिर से बड़ा मूंगे का एक टुकड़ा दिखलाई दिया आनन्द से उछल कर उसको उठा लिया और नौकर के हवाले किया। अंतिम पंक्तियां पढ़ने लगा।

प्रगट रंकता कर देते हैं, रत्नाकर शंबुक तेरे।
जगमें नाम धराते मुझको, इसी तरह अवगुण मेरे॥

पाम्बन १० बजे आ गया और रेल में बैठ कर रामेश्वरम् लौट आया यहां पर मैंने मूंगे के दो नमूने और खरीदे। यह सामान एक ताड़ की पिटारी में रख लिया और प्रसिद्ध रामेश्वरम् मन्दिर देखने चला। पट तो उस समय बंद थे। किले का चक्कर लगा आया, सारा दिन नारियल के पानी पर ही बोता था। होटल में भोजन को गया। दो आने का एक हनूमान का रोट जैसा पराठा मिला, वह भी ठंडा, खाया तो दाँत किरकिराने लगे, ऐसा ज्ञात होता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि आधी मिट्टी मिला दी है भूख में किवाड़ भी पापड़ हो जाते हैं। बड़ी मुश्किल से उस भीमसेनी पराठे को समाप्त किया और धर्मशाला से सामान लेकर स्टेशन को रवाना हुआ। पाम्बन पर गाड़ी बदल गई।

पामबन द्वीप एक छोटा जंकशन है, इससे ट्रेन रामेश्वरम् धनुषकोटि तथा उत्तर की ओर मदुरा आदि को जाती है इसके समीप समुद्र पर एक मील लम्बा पुल है जो जहाजों के जाते समय उठ जाया करता है उसके ऊपर जाते समय डिब्बों के दोनों ओर ताले बंद कर दिये जाते हैं ताकि कोई आदमी दरवाजा खुल जाने से समुद्र में न गिर पड़े। लहरों के शोर से और पवन के प्रचन्ड वेग से रात बहुत भयंकर लगती है लोग खिड़कियाँ बन्द कर लेते हैं परन्तु मुझे सबसे अधिक आनन्द इसी पुल पर आता था। खिड़की के उत्तर देखता था कि सप्तर्षि ध्रुव का चक्कर लगा रहे हैं दक्षिण की खिड़की से त्रिशंकु दिखलाई देते थे, उत्तर और दक्षिण ध्रुव के तारे निर्मल आकाश में जगमगा रहे थे।

ग्राहकों को सूचना

साल के आरम्भ में प्रति वर्ष भूगोल का विशेषांक निकलता है। इसका आकार बड़ा होने के कारण तीन महीने (मई, जून, जुलाई) का अङ्क एक ही निकाला जाता है। कृपया ग्राहकगण मई, जून के भूगोल की प्रतियाँ अलग मंगाने के लिये लिखने का कष्ट न करें। मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातियों का कोष

(गताङ्क से आगे)

दरद—उत्तरी पश्छिमी हिन्दुस्तान के पहाड़ी लोग जो पिशाच भाषा बोलते हैं।

द्राविड़—दक्षिण भारत के लोग। इनकी भिन्न भिन्न जातियाँ कनारी, कोटा, टोडा, टुलू, तामिल, तेलिगू, कुरुख, माल्टो और गोंडी आदि भाषायें बोलते हैं।

दिओला—गोम्बिया के मुहाने पर सूडानी बोलने वाले लोग। इनकी भाषा आधी बान्टू होती है।

दिन्का—ख़ार्टूम, गोन्डो केरो और बहरु गज़ल के प्रदेश में बसे हुये जींग या जिन्गे लोग। ये लोग बड़े लम्बे होते हैं। ढोर पालने वाले दिन्का लोग उन लोगों से बड़ी अच्छी हालत में होते हैं जो केवल मछली मारकर या दरियायी घोड़े का शिकार करके पेट भरते हैं। मछली मारने वाले लोग नरकुल के छोटे छोटे घर बनाकर रहते हैं। और ढोर पालनेवाले दिनका लोग अपने को तैन कहते हैं। और शिलूक लोगों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अगार, बोर, शीश और अलियाब भी दिन्का लोगों के फिरक़े हैं।

नगोम्बे—मध्य काँगो के बाँटू बोलने वाले लोग। नगोम्बे शब्द का अर्थ है झाड़ी में रहने वाले।

न्यीका—ताना नदी के पास रहने वाले वागीरियामा, वेडिगो आदि लोग।

नन्दी—एलगन् पर्वत के पास रहने वाले पूर्वी अफ्रीका के लोग।

नागा—ब्रह्मपुत्र के दक्षिण में पहाड़ी प्रदेश के रहने वाले लोग।

नापो—नापो नदी के पास रहने वाले लोग। इन लोगों के अलग अलग घर नहीं होते हैं। इनके यहाँ एक बड़ा लम्बा गोलाकार घर होता है। यह घर १० गज़ ऊँचे और ६० गज़ घेर में होता है। इसी में सारा कुटुम्ब रहता है।

नास्कोपी—लेब्राडोर के रेड इंडियन लोग।

नाहुआ प्रदेश—मध्य अमरीका का वह प्रदेश जिसमें अज़टेक और माया के बंशज रहते हैं।

नाचेज़—लोअर मिसिसिपी के पड़ोस में रहने वाले मस्केजियन लोग। ये लोग सूर्य की पूजा किया करते थे।

नायर—मालावार तट के फौजी लोग।

नार्डिक—उत्तरी योरप की गोरी और लम्बे सिरवाली जाति।

नार्वेजियन—नार्वे के लोग।

निओसाइबेरियन—मध्य एशिया के लोग जो साइबेरिया में बस गये हैं। ओस्टयाक, याकूट और वोगुल आदि लोग इन्हीं में शामिल हैं।

नीग्रो (हब्शो)—मध्य और पश्चिमी अफ्रीका के काले लोग।

नुआरोक—दक्षिणी अमरीका के अरावक लोग।

नूपे—मध्य नाइजर के लोग।

नूबा—कार्डो-फान के वर्ण संकर लोग।

नेदरलैंडर—हालैन्ड और बेलजियम के लोग जो फ्रिशियन, डच, फ्लेमिश और वालन भाषा बोलते हैं।

नेवार—नैपाल के लोग।

नेग्रिटो—अफ्रीका के बाहर वाले हबशी लोग।

नेग्रिलो—अफ्रीका में भूमध्य रेखा के बन में रहने वाले हबशी। इनका क़द ४ फुट ४ इंच से ४ फुट ६ इंच तक होता है।

नोसू—उत्तरी पूर्वी चीन के लोग।

(प)

पश्चा—जार्जयन लोग।

परमिअक—पर्म के निकट रहने वाले फिनिक लोग।

प्राकृत—हिन्दुस्तान की असंस्कृत भाषायें।

पहाड़ी—निचले हिमालय की भाषा।

पाडौंग—ब्रह्मा के लोग। इनकी स्त्रियाँ पीतल के बहुत से मोटे कड़े पहनती हैं।

पापुआन—न्यूगिनी के लोग।

पारसी—सूर्य के उपासक प्राचीन ईरानी लोग।

पालिनेशिया—दक्षिणी द्वीपों के वर्णसंकर हबशी लोग।

पालौंड—ब्रह्मा के वे लोग जो ऊपरी और मध्य मीकाँग की घाटी में रहते हैं। ये लोग बड़े मेहनती और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्त होते हैं। वे लोग मेड खमेर भाषा बोलते हैं।

पावनी—मैदान के इंडियन लोग। ये लोग मक्ई की खेती करते हैं।

पासुमा—कोरिंची के दक्षिण में सुमात्रा के लोग।

पिगमी—भूमध्य रेखा के बौने लोग।

पिगमी—मध्य अफ्रीका और मलय प्रदेश के बौने लोग।

पिसाच—भारत की संस्कृतेतर भाषायें।

प्रीड्रविडियन—द्राविड़ों से पहले के प्राचीन लोग।

पुर्चगीज़—पुर्चगाल के रहने वाले लोग।

पुनान—बोर्नीयो के शान्त लोग।

पेपो—फारमूसा के दक्षिणी मैदान के असभ्य लोग।

प्लेन्सइन्डियन—मिसिसिपी प्रदेश के अमरीकन इंडियन।

पेलिओसाइबेरियन—साइबेरिया के पुराने लोग जिन में चुकची, कोर्याक, कमचडल, ऐनू, गिलियाक, एस्किमो और दूसरे लोग शामिल हैं।

पैवान—फारमूसा के दक्षिणी सिरे के असभ्य लोग। ये लोग अपने कान में लकड़ी की १ इंच मोटी बाली पहनते हैं। ये लोग अपने शत्रुओं के सिरों को पत्थर के सन्दूकों में रखते हैं।

पोल—पोलैंड के स्लैव लोग।

पंजाबो—पंजाब के लोग।

(फ)

फलाशा—एबीसीनिया के अगाओ या हेमायटिक लोग ये लोग अपने को उन यहूदियों की संतान बताते हैं जो शेव एनीकेस्थ से आये थे।

फान—यू भाषा बोलने वाले डहोमा के लोग।

फान्टी—गोल्ड कोस्ट के हबशी लोग जो असान्टी लोगों के सम्बन्धी हैं। ये लोग असान्टी लोगों के समान लड़ाका नहीं होते हैं। पर ये सारे हबशियों में बुद्धिमान होते हैं। वे चतुर व्यापारी होते हैं। इनमें अधिकतर लोग पढ़े लिखे होते हैं।

फिजियन—लम्बे सिर वाले मेलेनेशिया के पूर्वी सिरे पर रहने वाले लोग।

फिन (फिनो)—उग्रियन लोग जो मध्य एशिया से चलकर योरप में आ बसे। बर्तमान फिन लोग एस्टोनियन लिबेनियन और लैप-लोगों से मिलते हैं।

फिनिक जातियाँ—फिनलैंड के लोगों के अतिरिक्त जिरियन, परमियक बोटयाक करमिस मोर्डविन, चुवास आदि लोग।

फुंज—सेनार (सूडान) के लोग।

फूला—फुल्बे नाम के फिलाने या हासा लोग।

फ्रेंच—फ्राँस निवासी।

फ़्लेमिश—जर्मन की भाषा।

फ़्लेमिङ्ग—बेल्जियम के उत्तर में बसने वाले लोग।

फंग, पंगवे, पहूइन—ओग्वे और सनागा के बीच में बाँटू भाषा बोलने वाले लोग।

(ब)

बख्तियारी—सूसियाना, खूगिस्तान (ईरान) के निवासी।

बग्गर—एक अरबी फिरका जो दार फ़ूर सूडान में रहते हैं। बग्गर शब्द का अर्थ गोपाल या ढोर रखनेवालाहै

बगेसू—पूर्वी अफ्रीका में एल्गोन पर्वत के पूर्वी ढालों पर रहने वाले बाँटू भाषा भाषी लोग। पहले वे ढोर चराते थे। आज कल वे खेती करते हैं।

बघिर्मी—चाड झील के दक्षिण पूर्व में सूडानी भाषा बोलने वाले लोग। वे घोड़े पर सवार होकर ज़हरीले भालों से घोड़े का शिकार करते हैं।

बजाऊ—बोर्नियो के पश्चिमी तट पर रहने वाले मलाया लोग।

बजावी—न्यान्जा प्रदेश के बाँटू भाषा भाषी लोग।

बटक—सुमात्राद्वीपी के बट्टा लोग।

बटवा—उरूँडी (पूर्वी अफ्रीका) के बौने लोग।

बट्टा—(१) पश्चिमी अफ्रीका में मध्य बेन्यू के पास वाले लोग।

(२) सुमात्रा के लोग जिन्हें बटक भी कहते हैं

बटूसी—पूर्वी अफ्रीका के उरूँडी लोग। जो बहुटू लोगों पर शासन करते हैं।

बटेटेला—बेल्जियम काँगो में संकुरू के पूर्व बाँटू भाषी लोग।

बदख़शी—ऊपरी आक्स के पास रहने वाले गोल सिर वाले लोग।

बदगा—नीलगिरी (दक्खिन) के किसान लोग।

बदजाकि—मध्य अफ्रीका में कसाई के पास रहने वाले बाँटू भाषी लोग। इनका कद छोटा होता है। लेकिन ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े निडर लड़ाका होते हैं। ये हाथी का शिकार और रबड़ का व्यापार करते हैं।

बन्डा—युबांगी के उत्तर में फ्राँसीसी मध्य अफ्रीका में रहने वाले लोग।

बम्बाला—क्विलू नदी के पास पच्छिमी अफ्रीका में रहने वाले बाँटू भाषा भाषी लोग। ये लोग बड़े दयालु होते हैं।

बयांश्जी—अफ्रीका के बोबाँगी और कसाई आदि लोग।

बराबा—नूबिया के लोग।

बरूँडी—पूर्वी अफ्रीका के बाँटू लोग।

बरोट्सी—विजयी बाँटू लोग।

बर्बर या लिबियन—उत्तरी अफ्रीका के बर्बर या अरबी भाषा बोलने वाले हेमायटिक लोग। बर्बर से अरबी लोग अधिक ऊँचे और लम्बे सिर वाले होते हैं। एक हज़ार वर्ष से साथ रहने पर भी अरबी और बर्बर लोग बहुत कम एक दूसरे से हिलते मिलते हैं।

बलाँगी—स्पेनिश गिनी के लोग जो काम्पो और गिरि नदियों के बीच रहते हैं।

बलाली—काँगो नदी के उत्तरी तट के लोग।

बश्कीर—रुस के मिश्रित लोग।

बसा—क्रू के पास रहने वाले बाँटू लोग।

बसूटा—आरेञ्ज नदी के पूर्व, दक्षिण पूर्व अफ्रीका के बाँटू भाषी लोग।

बसुंडी—निचली काँगो के बाँटू भाषी लोग।

बहुतू—पूर्वी अफ्रीका में उरूँडू प्रदेश के लोग। जिन पर बतूसी लोग शासन करते हैं।

बहुरुत्से—बेचवाना लैंड के बक्वेना लोग।

बाइशी—काँगों नदी के दक्षिण में कांगो और समुद्र तट के बीच में रहने वाले लोग।

बाइला—उत्तरी रोडेशिया के बांटू भाषा भाषी लोग। ये लोग ऊपर के ६ दांत निकाल डाला करते हैं।

बाकूबा—बेल्जियन काँगो के बालूबा लोग।

बाकुसू—स्टैनले प्रपात के पास याकुसू के लोग।

बाकुलिया—पूर्वी अफ्रीका के बाँटू भाषा भाषी लोग।

बाकाँगो—मध्य अफ्रीका का वेली कुटुम्ब।

बाँकुटू—बेल्जियन कांगो में ऊपरी लुकन्यी के पास रहने वाले लोग।

बाचमा—नाइजीरिया के उत्तरी प्रान्तों के पास रहने वाले लोग। ये बेन्यू-चाड समूह की भाषायें बोलते हैं।

बाँज़ीरी—युबांगी (मध्य अफ्रीका) के बांटू भाषी व्यापारी लोग। ये लोग बड़े चतुर किसान और पानी खींचने वाले होते हैं।

बाड़ा—मेडेगास्कर द्वीप के दक्षिण और मध्य में रहने वाले लोग।

बान्टू—मध्य और दक्षिणी अफ्रीका के लोग।

बान्योरो—यूगाँडा के बाँटू भाषा भाषी लोग।

बापिन्डी—क्विल कसाई के बांटू भाषा भाषी लोग। ये लोग बड़े चतुर जुलाहे होते हैं।

बापूको—स्पेनिशगिनी के बाँटू भाषी लोग।

बाबा—चीनी से उत्पन्न मलय लोग।

बाबुन्दा—मध्य अफ्रीका के कसाई व क्विलू प्रदेश के रहने वाले बान्टू भाषा भाषी लोग। ये लोग बड़े लम्बे और लड़ाका होते हैं। ये लोग रबड़ का व्यापार करते हैं। इनके घर नहीं होते हैं। ये अपने बग़ीचों के बीच में रहते हैं।

बाल्ती—बाल्तिस्तान लद्दाख के लोग।

बालुआ—बेल्जियन काँगो के दक्षिण-पूर्व में रहने वाले लड़ाका लोग।

बालुन्डा या आलुन्डा—उत्तरी रोडेशिया में बैंग-ब्यूली झील के दक्षिण पच्छिम में रहने वाले बाँटू भाषी लोग।

बास्क—स्पेन और फ्राँस की पिरेनीज़ के पास का प्रदेश।

बेटसीमिसिरका—मेडेगास्कर के पूर्वी भाग में रहने वाले मैदान के लोग इन का रंग कुछ हल्का और बाल खड़े होते हैं।

बेंगा—बनोहो, बनोको, मलिम्बा आदि स्पेनिशगिनी के लोग। ये लोग बेनिटो नदी और कोरिस्को की खाड़ी के बीच में रहते हैं।

बेचुआना—जेम्बज़ी से आरेञ्ज नदी तक फैले हुये बसूटो आदि लोग।

बेजा—पूर्वी अफ्रीका के हेमायटिक लोग। इन में हम्ब, बदेह, बिशरिन, हेडेनडोआ, हेलेंडा और बेनी अमेर भी शामिल हैं।

बेल्जियन—नेदरलैंड या बेलजियम के लोग।

बंगाली—बंगाल प्रान्त के निवासी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ

भील—ये लोग बड़े चतुर शिकारी होते हैं और जंगल, पहाड़ या मैदान में निडर घूमते हैं।

भूटिया—तिब्बत के पहाड़ी लोग। इन का सिर गोल और ५ फुट ५ इंच ऊँचा होता है। इन के गाल गुलाबी और बाल घूँघुर वाले होते हैं। लासा के पास वाले दक्षिण पूर्व के लोग सभ्य होते हैं। उत्तर-पच्छिम के लोग घुमक्कड़ होते हैं।

म

मकरका—अजान्दी लोगों से मिलने वाले सूडान के लोग।

मकासर—सेलेबीस के दक्षिणी प्रायद्वीप के लोग। कहा जाता है कि ये लोग अपने बच्चों की नाक को दबा दबा कर चपटी कर देते हैं।

मकुआ—मुज़म्बीक के बाँटू लोग।

मकूसी—केरिब भाषा बोलने वाले गायना प्रदेश के लोग।

मको लो लो—बसूटी लोगों की एक उपजाति।

मन—असभ्य मनुष्य।

मन्डन—मैदानी रेड इंडियन लोग।

मन्डय—फ़िलोपायन लोग।

मनोबो—फिलीपायन द्वीप के इन्डोनेशियन लोग। इनका माथा ऊँचा और नाक सीधी होती है।

मफूलू—न्यूगिनी के मम्बुली लोग। ये लोग अयर-सेन्ट जोजेफ़ के प्रदेश में रहते हैं।

मबुन्दू—अन्गोला की भाषा।

मयोंगवे—गाबून प्रदेश के बान्टू बोलने वाले लोग।

मराठा—(महाराष्ट्रीय) महाराष्ट्र के लोग।

मलय—मलय द्वीप के लोग।

महफल—मेडेगास्कर के दक्षिण में रहने वाले लड़ाका लोग।

मलयालम—मलाबार तट के लोग।

मवम्वा—ब्रिटिश मध्य अफ्रीका के ववण्डा लोग।

मशूकोलुम्व्वे—रोडेशिया के बाँटू भाषा भाषी लोग। ये लोग शंकु के समान अपने सिर के बाल बना लेते हैं।

मशोना—अफ्रीका के दक्षिण-पूर्व के रहने वाले शान्त लोग ये लोग चट्टानों के बीच में घर बनाते हैं।

मसाई—पूर्वी अफ्रीका के होमायाटिक लोग।

मसावा—कावीरोंडो की बान्टू भाषा।

मसीम—न्यूगिनी (ट्रोब्रियण्ड द्वीप) के लोग।

मस्कोजी—संयुक्त राष्ट्र अमरीका के दक्षिण-पूर्व में रहने वाले रेड इंडियन लोग। इनमें चोकटा क्रीक आदि लोग शामिल हैं। जो ओकला हामा को भेज दिये गये।

माओरी—न्यूज़ीलैंड के मूल निवासी।

माइक्रोनेशियन—गिल्बर्ट, मार्शल, केरोल और नाइ मेरियन द्वीप के निवासी। इनका कद छोटा लेकिन सिर बड़ा होता है।

माजिया—सूडानी बोलने वाले फ्रैंच कांगो के लोग।

माँचू—मंचूरिया के लोग

माटावेले या अमण्डेबेल—अबाकवा जुलू लोग। उन्नीसवीं सदी में वे अपनी स्वाधीनता खो बैठे।

माया—ग्वाटे माला के छोटे सिर वाले लोग। ये लोग अपनी प्राचीन सभ्यता के लिये प्रसिद्ध हैं।

मारकिसस-द्वीपीय—पालीनेशियन जाति के लोग।

माल्टी—माल्टा के लोग।

माल्टो—राजमहल के लोगों की भाषा।

मिकीर—आसाम के आलँग लोग जो खासी लोगों से कुछ बड़े होते हैं।

मिक्सी—मेक्सिको पठार पर रहने वाले लोग।

मिक्सटेक—मेक्सिको के पढ़े लिखे और उन्नति शील लोग।

मिट्टू—सूडान में रोहल और रोह नदियों के बीच में रहने वाले लोग। यह प्रदेश दिन्का लोगों के देश से मिला हुआ है।

मिन्हासा—सेलेबीस द्वीप के मेलेपालिनेशियन लोग। इन लोगों की आँखें भूरी और बाल काले होते हैं।

मिश्मी—आसाम की उत्तरी सीमा पर रहने वाले मोझू, मिथुन, ताइंग और मीजू लोग।

मिंग्रेलियन—रिओन घाटी के जार्जियन लोग। ये लोग बड़े मज़बूत और हँसमुख होते हैं। पर वे सुस्त और अज्ञान होते हैं। कुछ शहरों में कुली का काम करते हैं।

मुमूयी—उत्तरी नाइजीरिया के फुंगुम या जागुम लोग। ये लोग याम का भोजन करते हैं। और दूध बहुत पीते हैं वे लोग अपने मुर्दों को खाली कब्र में छोड़ देते हैं केवल लाश के ऊपर एक पत्थर छोड़ देते हैं।

मुण्ड्रूकू—दक्षिणी अमरीका के टेपे हाज़ लोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुन्थी—नाइजीरिया के उत्तरी प्रान्तों के तिवी लोग। ये लोग बन्यू नदी के दक्षिण में रहते हैं इनकी संख्या लगभग तीन-चार लाख है। ये लोग बड़े लड़ाका होते हैं और ढोल बजा कर खबर भेजते हैं।

मुरूत—बोर्नियो के कार्ज़ामाउण्टन लोग। ये लोग नदियों के किनारे लम्बे घर बना कर बड़े कुटुम्ब के साथ रहते हैं।

मुहमन्द—अफ़ग़ानिस्तान की एक जाति।

मेईथेई—मनीपुर राज्य के लोग। इनकी स्त्रियां खेती और व्यापार करती हैं।

मेलेनेशियन—पच्छिमी प्रशान्त महासागर के लोग।

मेनाङ्ग कवाऊ—सुमात्रा द्वीप के दक्षिणी पच्छिमी पठार पर रहने वाले असली मलय लोग।

मेंडी—सियरालिओन के पूर्व में रहने वाले लोग, जो अक्सर बोझा ढोया करते हैं।

मेंटावेई द्वीपीय—वे लोग जो मलय प्रायद्वीप के सामने वाले द्वीपों में रहते हैं।

मेक्सिकन—मेक्सिको देश के रहने वाले लोग। पुराने लाग अज़टेक और नये लोग योरुपीय हैं।

मेरोनाइयट—लेबनान के उत्तर में रहने वाले ईसाई लोग। ये लोग मुसलमानी याड्रूसली से विवाह नहीं करते हैं।

मोजो—बोलविया के इंडियन लोग। ये लोग खेती में लगे हैं।

मोङ्गो—काङ्गा नदी के बड़े मोड़ के पास रहने वाले और बाँटू बोलने वाले लोग। किसी समय ये बड़े व्यापारी और मिट्टी के काले बरतन बनाते थे जिनकी बड़ी मांग थी।

मोई—इण्डोचीन के लोग। इन का रंग कुछ लाल, कद छोटा और सिर लम्बा होता है।

मोहेगन—न्यू इंग्लैण्ड के अलगोंक्विन लोग।

मोहाक—अमरीकन इंडियन के सबसे अधिक इरोकोई लोग। दोबारा अलगोंक्विन लोगों ने लड़ाई में इन को प्रायः नष्ट कर डाला। लेकिन फिर इन्होंने डच लोगों से बन्दूकें लीं और ५० वर्ष तक इरोकोई संघ में इनका बड़ा भय रहा फिर इनकी संख्या तेज़ी से घट गई।

मोनुम्बो—पाट्सडैमहाफन (जहाँ पहले जर्मनी का अधिकार था)। केपापुअन भाषा भाषी लोग।

मोङ्खमेर—एशिया के दक्षिण-पूर्व में बोली जाने वाली भाषायें।

मोपला—पश्चिमी घाट के वर्णसंकर मुसलमान लोग जो अरबी और हिन्दुस्तानियों के मेल से बने हैं। ये लोग बड़ी तेज़ी से बढ़े हैं। एक मोपला ने सात स्त्रियों से विवाह किया। प्रत्येक स्त्री से सात सात लड़के उत्पन्न हुये। लड़कियों की संख्या अलग है। तट के पास वाले मोपला लोग व्यापार करते हैं। भीतर बसे हुये लोग किसान हैं। ये लोग बड़े कट्टर होते हैं। गत मोपला-विद्रोह में उन्होंने अपने पड़ोसी हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयत्न किया।

मोकुई या होपी—उत्तरी-पच्छिमी अमरीकन इंडियन लोग।

मोरडोफ—मोरडोविन लोगों की भाषा।

मोरडोविन लोग—वालगा वेसिन के फिनिक लोग। जो बहुत समय तक अपने पुराने धर्म पर आरूढ़ रहे। इनका सिर छोटा और बाल भूरे या काले होते हैं। ये लोग बड़े मेहनती और मितव्ययी होते हैं। पर इनके लड़के इनका कहना नहीं मानते हैं।

मोरिओरी—न्यूज़ीलैंड के पूर्व चैथम द्वीप के निवासी

मोरोस—मिंडनाओं और सुलू द्वीपसमूह के लोग। काला रंग होने से स्पेन वालों ने इनका यह नाम रक्खा। इनका असली नाम मेगिन्दानो है। इनका कद छोटा होता है। पर वे बड़े स्वामिभक्त होते हैं।

मोसो—नाइजर के बिशाल मोड़ में बसे हुये वोल्टा लोग। ये लोग मोल भाषा बोलते हैं।

मंगबेटू—ऊपरी दावावेल नदी के पास रहा करते हैं। इनका रंग जैतूनी होता है। दाढ़ी बड़ी होती है।

मंडिंगो—पच्छिमी सूडान के लोग।

मंगोल—मंगोलिया पठार के लोग। चिंगज़ेख़ाँ के समय में मंगोल लोग बहुत प्रसिद्ध हो गये। मोंग शब्द का अर्थ बीर है। इन्हीं में काल्मुक और बुर्यात भी शामिल हैं।

मंगोलाइड—तिब्बती इंडोचीनी लोग। नैपाल, ब्रह्मा आदि के लोग भी इन्हीं में शामिल हैं।

य

यज़ीदी—पश्चिमी खुर्दिस्तान के छोटे सिर वाले लोग। ये लोग शैतान की सभ्यता और प्रेत-पूजा के लिये प्रसिद्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहूदी—पेलेस्टायन के इस्रायली लोगों की संतान जो इस समय संसार के भिन्न २ भागों में फैले हुये हैं। इस समय इनका कोई देश नहीं है।

याकुई—काहिता बंश के लोग जो मेक्सिको को याकुई नदी के दोनों किनारों पर रहते हैं। ये लोग प्राचीन माया लोगों से बहुत कुछ मिलते हैं।

याकूत—पूर्वी साइबेरिया के तुर्की लोग। ये रेनडियर पर निर्वाह करते हैं। लेकिन भोजन की कमी होने पर मछली भी मार लेते हैं।

यामों—फारमूसा के दक्षिण-पूर्व में एक छोटे द्वीप के रहने वाले। इनका क़द ४ फुट २ इंच से अधिक नहीं होता है। रंग भूरा होता है।

याओ (वाओ या अजावा)—न्यासा प्रदेश के लोग जो बहुत भारी बोझा ले जाते हैं। इनकी स्त्रियाँ ऊपरी ओंठ में एक बाली पहनती हैं।

यूरल—अल्टाई भाषायें-इस समूह में मंगोल, फिनों उग्रियन, तुर्की, मान्चू और सेमे ईड भाषायें शामिल हैं।

यूराकेरी—मेक्सिको के दक्षिण में रहने वाले इंडियन लोग।

योरुबा—ये लोग समुद्र-तट और मध्य नाइजर के बीच में बसे हुये हैं। एग्बा और जीबू आदि इन्हीं की उप जातियाँ हैं। ये लम्बे पतले लोग बड़े चतुर व्यापारी होते हैं। इनकी संख्या लगभग २० लाख है। योरुबा प्रदेश में कई बड़े २ नगर हैं। इनके यहां कई गुप्त समितियां हैं।

योलोफ—(वोलोफ या जोलोफ) सेनेगाल और गाम्बिया के बीच में सूडानो बोलने वाले पश्चिमी अफ्रीका के लोग। वे बड़े लम्बे और काले होते हैं।

र

राजपूत—राजपूताना में रहने वाले क्षत्री लोग।

रूआँडा या वरूआँडा—बन्टूसी के लोग।

रूमानियन—रूमानिया के लोग।

रूसी—रूस के लोग।

रूथेनियन—यूक्रेन के स्लैव लोग।

रोमान्श्र—अपराइन और अपइन में बोली जाने वाली भाषा।

रोंगा—दक्षिणी पूर्वी अफ्रीका के रोंगा लोग।

(ल)

लटुक—निलोटिक लोग।

लहू—ब्रह्मा के लोलो लोग।

लद्दाखी—लद्दाख के लोग।

लाओ—स्याम देश के थाई लोग।

लिशा—(लिसू) ब्रह्मा के लोलो लोग।

लूर—फारस के मुसलमान लोग।

लूसाटियन—वेण्ड लोग।

लेपचा—शिकम के रोंग लोग।

लेज़ेस—काकेशस के जार्जियन या स्वान लोग।

लेंगुआ—पेरेग्वे के चाको प्रदेश में रहने वाले लोग। जो अरावक भाषा बोलते हैं।

लेंग्वेडाइल—उत्तरी फ्राँस की भाषा।

लेंग्वेडाक—दक्षिणी फ्राँस की भाषा।

लेम्बोंग—सुमात्रा के लोग।

लेगियन—दाग़िस्तान और ट्राँस काकेशिया के काकेशस लोग। प्रूसियन लोग इन को लेकी कहते हैं।

लैप—लैपलैंड के लोग। ये ४ फुट ऊँचे होते हैं।

लोलो—दक्षिणी चीन के लोग।

व

वहबी—नजद के मुसलमान लोग। ये लोग अब्दुल वहब के अनुयायी हैं। इसलिये वहबी कहलाते हैं। कुछ वहबी लोग मेसोपोटामिया, हिन्दुस्तान और अफ्रीका में भी पाये जाते हैं।

वहीमा—यूगाँडा के हब्शी लोग। इनका क़द ऊँचा और सिर लम्बा होता है। लेकिन इनके हाथ पैर छोटे होते हैं। उन्योरो में ये लोग अमीर गिने जाते हैं। यूगाँडा में ये ढोर पालते हैं।

वहेहे—पूर्वी अफ्रीका के उहेहे लोग। ये लोग बड़े लम्बे बीर और लड़ाका होते हैं। लड़ने के समय में ये लोग "हे हे हे हे" चिल्लाते हैं। शायद इसी लिये इनका नाम वहेहे पड़ गया।

वजीबा या बजीबा—विक्टोरिया न्याञ्जा के पश्चिमी तट पर रहने वाले बाँटू भाषा भाषी लोग। इन लोगों का शरीर हृष्ट पुष्ठ और जीवन सादा होता है। ये लोग रेशे के धागों की एक विचित्र पोशाक पहनते हैं। वे अपने मृत सरदारों को एक गहरे और तंग गढ़े में खड़ा गाड़ते हैं। सिर जमीन के ऊपर निकला रहता है। उसकी देख भाल के लिये दो महीने तक संतरियों का पहरा रहता है। फिर वह जमीन के नीचे दबा दिया जाता है। इन्हें गाने बजाने का बहुत प्रेम है। प्राचीन समय में इनका कोई आदमी दाढ़ी नहीं रख सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-तत्व

प्राकृतिक भूगोल के सम्बन्ध में हिन्दी में अद्वितीय ग्रन्थ, पृष्ठ-संख्या २८६, लगभग २०० चित्र और नक़्शे, सुन्दर रङ्गीन कपड़े की जिल्द। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

भूतत्व के प्रथम भाग में पृथ्वी, सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, परिमाण, दिन-रात, अक्षांश देशान्तर, प्रामाणिक समय, तिथिरेखा मानचित्र और ऋतुपरिवर्तन का वर्णन है।

द्वितीय भाग में स्थल-मंडल के सभी अंगों (भूपंजर, आग्नेय पर्वत, रिफ़्ट घाटी, गैसर, भूकम्प, पठार मैदान, धरती, नदी, झील, समुद्र-तट आदि) का विवेचन है।

तृतीय भाग में जलमंडल-महासागर, गहराई, निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ) प्रवालद्वीप, खारीपन, तापक्रम, ज्वार-भाटा, समज्वार-रेखाओं, धाराओं, गल्फ स्ट्रीम और सारगासो सागर का वर्णन है।

चतुर्थ भाग में वायुमंडल की व्याख्या है। आक्सिजन, नाइट्रोजन, भाप, त्रसरेणु, ताप, बादल, कुहरा, ओस, मेह, हिम ओला, विद्युत, मौसम, मौसमी हवाओं, ट्रेड हवाओं, पछुआ हवाओं, समभार-रेखाओं, समताप रेखाओं, चक्रवात, वर्षा, जलवायु सम्बन्धी प्रदेशों का वर्णन है।

पंचम भाग में जीवधारी मण्डल, वनस्पति, पशु, मनुष्य जाति, पेशे, खनिज और कारखानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अब तक ऐसा सर्वाङ्ग पूर्ण प्राकृतिक भूगोल प्रकाशित नहीं हुआ था। शीघ्र ही आर्डर भेजिये।

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एबिसीनिया

हिन्दी-सामयिक पत्र जगत में मासिक "भूगोल" का एक मुख्य स्थान है। अपने विषय की सुन्दर सामग्री देने में वह सदैव अग्रगामी रहा है। प्रस्तुत विशेषांक में एबीसीनिया का इतिहास, भौमिक-चित्रण आदि सभी बातें दी गई हैं। इस एक पुस्तक के पढ़ लेने से एबीसीनिया के नर-नारी और भूमि, जंगल, नदी, पहाड़ आदि के विषय में काफी ज्ञान हो जाता है। यह अंक विद्यार्थियों के तो काम का है ही, परन्तु साधारण पाठक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इस अंक का मूल्य ।।=) है। भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद से प्राप्य। "स्वराज"

भूगोल एटलस

इस भूगोल-एटलस से संसार के विभिन्न देशों की राजनैतिक सीमा और विभागों के सिवा उनकी पैदावार, आयात और निर्यात, जलवायु, मिट्टी, स्थल की ऊँचाई और निचाई, वर्षा का परिमाण, जन-संख्या, वहाँ के निवासियों का भोजन और वस्त्र, व्यापार आदि सैकड़ों विषयों का ज्ञान हो जाता है। अन्त में कुछ नक्शे ऐसे भी दिये गये हैं जिन से विदित होता है कि पिछले डेढ़ हज़ार वर्षों में किस शताब्दी में संसार के कितने भूभाग का पता लोगों को था। इन तमाम दृष्टियों से यह एटलस सभी भूगोलप्रेमियों के लिये संग्रहयोग्य है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये तो यह एक अमूल्य भेंट है। इसके द्वारा भूगोल का ज्ञान ऐसी सरलता से हो जाता है कि तनिक भी परिश्रम नहीं जान पड़ता।—"चाँद"

शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत, पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य १।)

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-संसार

बाल-संसार की एक प्रति देकर अपने बालकों को दूसरे देशों के बालकों का हाल बताइये और उनमें नया जीवन डालिये।

संक्षेप में बाल-संसार में १११ बालकों के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा उनके देशों के जीवन की झांकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस अंक में लगभग तीन सौ चित्र हैं। जिनसे इस अंक की रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार में पांच भाग हैं। पहले भाग में अफ्रीदी, नैपाली, सिन्धी, बर्मी सिंहाली आदि भारतवर्ष के बच्चों का वर्णन है। दूसरे भाग में चीनी, जापानी, स्यामी, अफ़गानी, ईरानी, अरबी, तुर्की, आदि एशिया के बालकों पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे भाग में अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी आदि योरुप के बालकों के रहन सहन का वर्णन है। चौथे भाग में एस्किमो, रेड इंडियन, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्रेज़ील, पीरू, अर्जेन्टाइना आदि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बालकों का वर्णन है। पांचवें भाग में अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहने वाले बालकों का वर्णन किया गया है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है।

तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है।

बड़े आकार (१० × ७½) के २६० पृष्ठ, मूल्य १।) सजिल्द १।।), प्रत्येक भाग का अलग मूल्य ।=)

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन-अंक

चीन अंक के दो भाग हैं । पहले भाग में चीन की स्थिति, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, पशु-पालन, कारबार, शिक्षा, समाचारपत्र, कहावतें । मनोरंजन, खेलकूद, हवाई डाक और हवाई सेना, मार्शल च्यांगकाई शेक, मेडम च्यांगकाई शेक, हुइशी (चीन के गान्धी), डा० सन्यातसेन, धार्मिक व्यवस्था, चित्रकला, चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट, जापानी साम्राज्य, चीन में घुसने के मार्ग, मङ्गोल लोगों का देश चीनविच्छेद, नानकिंग की सरकार रूस का पूर्वी प्रदेश, चीन और जापान, मन्चूकुओ की स्थापना, आधुनिक परिस्थिति, राजनैतिक रूप रेखा, चीन का साम्यवादी दल, चीन जापान संघर्ष और जनरल चूतेह की अपील है । इसमें कई नक़शे और चित्र हैं । बड़े आकार की पृष्ठ संख्या ८८, मूल्य ।।) ।

दूसरे भाग में चीन की एटलस है । प्रत्येक प्रान्त के पूरे (बड़े) पृष्ठ के २४ नक़शे । चीन देशका बड़ा नक़्शा (दो पृष्ठों पर) । इसी भागमें नक़शों की व्याख्या और प्रान्तों का वर्णन है । इसके अतिरिक्त १६ ऐतिहासिक नकशे, ऐतिहासिक घटनाओं की सूची, और चीनी इतिहास के चुने हुए चित्र हैं । अन्त में संसार में चीन का आर्थिक स्थान प्रदर्शित करने के लिये ८ आर्थिक नकशे और कई डायाग्राम (खाके) हैं । मूल्य ।।) दोनों भागों का एक साथ मूल्य बारह आना ।

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक इतिहास एटलस

पृष्ठ संख्या १४७, नकशों की संख्या ७४। इस पुस्तकाकार एटलस में एक पृष्ठ पर नक़शा और उसके सामने वाले पृष्ठ पर उसकी व्याख्या है। वर्सेल्स (वर्साई) की सन्धि, जर्मनी की पश्चिमी सीमायें, पोलिश कारीडार रूस के खोये हुए प्रदेश, लिटिल एस्टेएट, यूगोस्लैविया की जातियां, पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प संख्यक जातियां, स्पेन की गृह-कलह भूमध्य सागर में राष्ट्रों का संघर्ष, इटली और लालसागर, इब्न सऊद की विजय, चीन विच्छेद, अफ्रीका के स्वाधीन राज्य, संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हब्शियों की समस्या, दक्षिणी अमरीका की जातियां आदि सभी प्रसंगों के व्याख्या सहित बड़े बड़े नक़शे दिये गये हैं जिनका दैनिक पत्रों में उल्लेख आता है। यह एटलस आजकल की घटनाओं से दिलचस्पी रखने वालों के बड़े काम की चीज है। मूल्य केवल ।।)

देश-निर्माता

इस ७२ पृष्ठ की छोटी सी पुस्तक में उन ११ नेताओं की रोमांचकारी जीवनियां हैं। जिन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर अपने अपने देश में नई जान फूंकी है। भारत के महात्मा गान्धी, चीन के च्यांग काई शेक, टर्की के मुस्तफा कमाल पाशा, ईरान के रिजाशाह, रूस के लेनिन, अरब के इब्न सऊद, इटली के मसोलिनी, जर्मनी के हिटलर, आयरलैंड के डी वेलरा, पोलैंड के पिल्सुड्स्की और चेकोस्लोवेकिया के मसारिक ने किस प्रकार अपने अपने देश को बनाया उन उन घटनाओं पर इस पुस्तक में पूराप्रकाश डाला गया है। रंगीनकवर पर सभी निर्माताओं के चित्र हैं। शीर्षक पर नेता के चित्र के साथ देश का नकशा भी दिया गया है। मूल्य केवल चार आना।

हमारी दुनिया

पृष्ठ संख्या ८४, चित्र और नकशों की संख्या ८१, आर्ट पेपर का तिरंगा कवर। यह वास्तव में भूगोल की पहली सीढ़ी है। मोटे टाइप और सरल भाषा में नाप का साधारण ज्ञान, दिशा-ज्ञान, नियत पैमाने पर नक़शा बनाना, गांव और शहर के नक़शे का पढ़ना, नदी की रामकहानी, तारे, चन्द्रमा, सूर्य और गोले का दर्शन आदि ११ पाठ हैं। पुस्तक इतनी रोचक है कि बालक आरम्भ करके इसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ना चाहते हैं। इससे उन्हें भूगोल के मूलमन्त्रों का सहज ही ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों के लिये भी इसमें दो शब्द हैं। बिहार, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा प्रायमरी शालाओं के लिये स्वीकृत। मूल्य चार आना।

"भूगोल" कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष

का

भूगोल

[ले० "भूगोल"—सम्पादक, पं० रामनारायण मिश्र]

यह भूगोल सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा, और लङ्का में निजी यात्रा के आधार पर बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। ४०० पृष्ठ, १०० से ऊपर चित्र और नक़्शे। विहार, संयुक्त प्रान्त, अजमेर और मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा हाई और नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिये स्वीकृत। यह पुस्तक हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रवेशिका की परीक्षा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये भी स्वीकृत है।

भारतवर्ष के ऊपर अब तक इतनी सुन्दर और प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य केवल २) रु० डा० व्यय ।≡) अलग।

—मैनेजर, "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन-अंक

'भगोल' के समयानुकूल बड़े सुन्दर सुन्दर विशेषांक निकलते हैं। उन विशेषांङ्कों से पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे। इस बार जब स्पेन की सारे संसार में बड़ी चर्चा है, इसका स्पेन-अङ्क हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित हुआ है। इस अङ्क में स्पेन का पुराना और नया इतिहास, जलवायु, निवासी, तथा अन्य बहुत सी ज्ञातव्य बातें दी गई हैं। पाठकों को इस उपयोगी अंक से लाभ उठाना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १३६, चित्र संख्या ६९, एक बड़ा (दो पृष्ठ) का नक़शा, २९ अन्य नक़शे मूल्य, केवल ।=)

ईरान

इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फ़ारस (ईरान) देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

卐 भुवनकोष 卐

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में जिन स्थानों का वर्णन है, उसके वर्तमान नाम दिये गये हैं। जो नष्ट हो गये हैं उनकी स्थिति बतलाई गई है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर कुछ रोचक लेख हैं। कई छोटे-बड़े नक़शे हैं। मूल्य केवल १) रु०।

भूगोल कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार शासन

नया संस्करण, रायल साइज़, पृष्ठ संख्या २४०, मूल्य केवल २) रु०

इसमें संसार के प्रधान देशों की शासन पद्धति का वर्णन है। प्रत्येक देश के राजनैतिक दल, चुनाव के नियम अल्पसंख्या, धारासभाओं के अधिकार, जनता का शासन पर नियन्त्रण, भाषा का प्रश्न आदि शासन सम्बन्धी सभी बातों पर रोचक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको अपने देश और दूसरे देशों की शासन सम्बन्धी सभी समस्यायें समझ में आ जायँगी।

टर्की

पृष्ठ संख्या (रायल साइज़) ६०

इस पुस्तक में टर्की के भौगोलिक विवरण के साथ साथ विवाह और मृतक संस्कार, टर्की का ऋण, बग़दाद रेलवे, मुस्तफा कमाल पाशा और नवीन टर्की, तुर्की पार्ल्यामेंट, राष्ट्रपति का आदर्श खेत, आदर्श गांव, टर्की और महायुद्ध, खिलाफत का उत्थान और पतन, तुर्की साहित्य आदि २९ लेख और आवश्यक चित्र और नकशे हैं। मूल्य केवल १) रु०

अफ़ग़ानिस्तान

पृष्ठ संख्या १३३

इसमें अफ़ग़ानिस्तान की स्थिति, प्राकृतिक विभाग, जलवायु, पशु-वनस्पति, व्यापार, सिंचाई, कारीगरी, पठान स्त्रियां, रक्त का मूल्य, धार्मिक विचार, नगर-मार्ग, भाषा, स्थानीय कहावतें, इतिहास, काफिरिस्तान आदि २१ लेख हैं। जगह जगह पर आवश्यक चित्र हैं। इसको पढ़ते ही अफ़ग़ानिस्तान का पूरा चित्र सामने खड़ा हो जाता है। मूल्य केवल १)रु०

मिडिल भूगोल

चारभागों में उपलब्ध है। पहले भाग में भारतवर्ष, दूसरे भाग में एशिया, तीसरे में योरुप और चौथे में शेष महाद्वीपों (उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, और आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड) का भूगोल मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिये लिखा गया है। प्रत्येक भाग में शिक्षा प्रद चित्रों और नक्शों की भरमार है। यात्रा के आधार पर लिखे जाने से प्रत्येक पाठ में जीवन आ गया है। पुस्तक एकदम नये रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी गई है।

मूल्य प्रत्येक भाग का आठ आने। चारों भागों का एक साथ मूल्य १॥) है।

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-दर्शन

प्रत्येक अङ्क में प्रायः निम्नलिखित विषय रहेंगे जो आवश्यकतानुसार घटाये बढ़ाये जा सकेंगे।

१—देश का आकार, विस्तार, बनावट, दृश्य। २—जलवायु और उपज। ३—पालतू और जंगली जानवर। ४—कारबार। ५—व्यापार, बाज़ार, मेला। ६—जनसंख्या और जातियां। ७—शिक्षा। ८—पुराने समय पर एक नज़र। ९—वर्तमान शासन। १०—रहन सहन। ११—भाषा, कहानी। १२—देखने योग्य शहर। १३—गांव का जीवन। १४—खेल कूद- त्योहार।

प्रत्येक देश का वर्णन प्रायः निजी यात्रा के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जायगा।

इस माला में निम्नलिखित देश रहेंगे।:—

भारतवर्ष—१—लंका, २—बरमा, ३—आसाम, ४—बंगाल, ५—बिहार, ६—उड़ीसा, ७—आन्ध्र देश, ८—तामिल, ९—केरल, १०—ट्रावनकोर, ११—कुर्ग, १२—मैसूर, १३—हैदराबाद, १४— गोआ, १५—बम्बई-महाराष्ट्र, १६—मध्यप्रान्त, १७—काठियावाड़, १८—गुजरात, १९—सिन्ध, २०—बलोचिस्तान, २१—पंजाब, २२— पटियाला, २३—जोधपुर, २४—जैपुर, २५—बीकानेर, २६—अजमेर २७—उदयपुर, २८—कोटा, २९—भरतपुर, ३०—अलवर, ३१—ग्वालियर, ३२—इन्दौर, ३३—रीवाँ, ३४—काश्मीर, ३५—नैपाल, ३६—भूटान, ३७—शिकम, ३८—गढ़वाल, ३९—अवध, ४०—संयुक्तप्रान्त, ४१—पांडिचेरी, ४२—अंडमान, निकोबार, लका द्वीप, मालद्वीप।

एशिया—१—जापान, २—चीन, ३—कोरिया, ४—मंचूरिया, ५—मंगोलिया, ६—चीनी तुर्किस्तान, ७—तिब्बत, ८—साइबेरिया, ९—रूसी तुर्किस्तान, १०—जार्जिया, ११—आर्मेनिया, १२—टर्की १३—सिरिया, १४—पेलेस्टाइन, १५—इराक, १६—अरब, १७—ईरान, १८—मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर, १९—स्याम, २०—जावा, २१—बोर्नियो, २२—फिलीपाइन द्वीपसमूह, २३—अफ़गानिस्तान, २४—किरगीज प्रजातन्त्र।

योरुप—१—आयरलैंड, २—ब्रिटेन, ३—फ्रांस, ४—हालैंड, ५—बेल्जियम, ६—डेनमार्क, ७—नार्वे ८—स्वीडन, ९—आइसलैंड, १०—फिनलैंड, ११—रूस, १२—यूक्रेन, १३—पोलैंड, १४—रूमानिया, १५—बल्गेरिया, १६—लिथुएनिया, लैटविया और एस्थोनिया १७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्पा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा —पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—१४—महाराष्ट्र, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलैंड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ८—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया,। २—गायना, ३—वेनिज्वेला १—इक्वेडार, १—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली ८—पेरेग्वे ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़िल, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डि-गामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०— मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहरा, १५ —यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की ग्रांड केनाल।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरिया, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का २०)रु०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of Bhugol any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances , cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol".**

Rates for Advertisements : Ordinary full one page Rs. 10/-

3rd page of the cover „ 12/-

4th page of the cover „ 15/-

Write to the Manager,

"BHUGOL",

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 90, Jumna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

नवम्बर १९३८

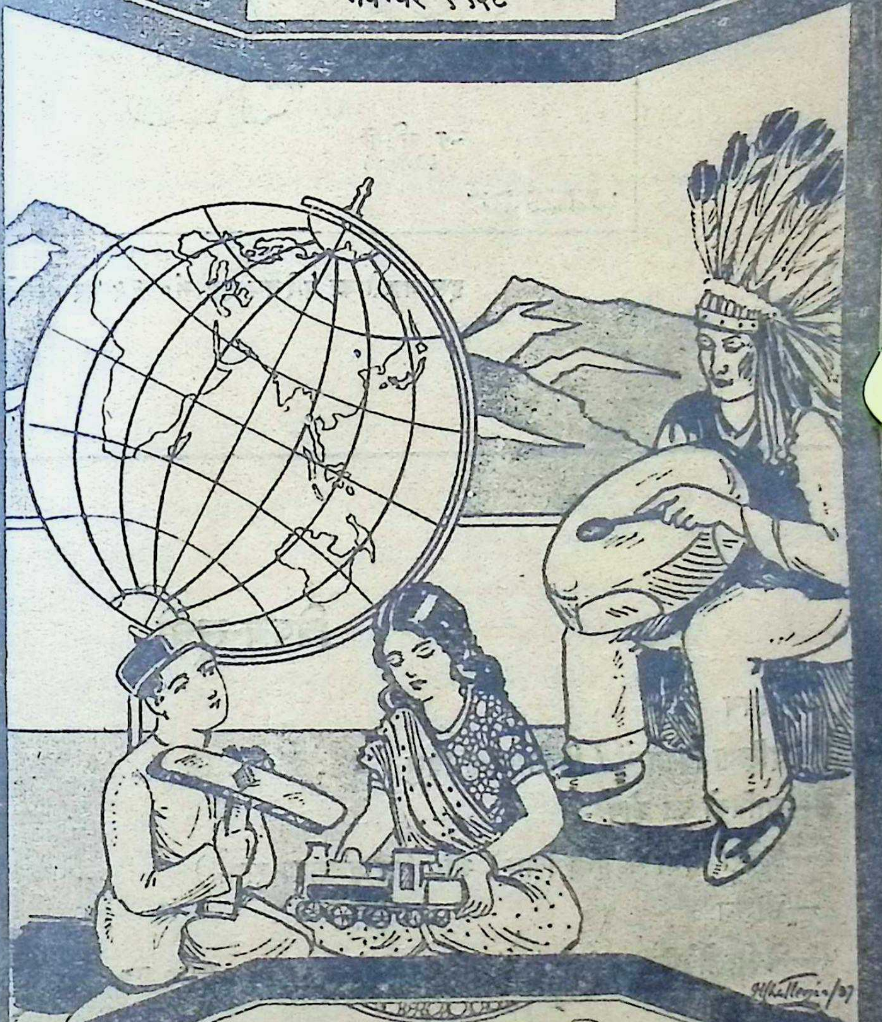

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

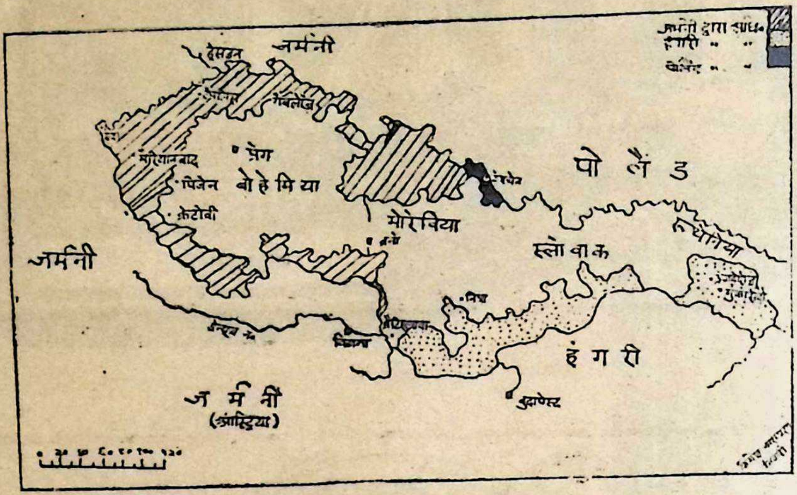

इस नक़शे का परिचय पृष्ठ नं० २५ पर देखिये

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—दक्षिण दिशा में (विद्याभूषण विभु B. A. F. R. G. S., M. N. G. S.) ...	१
२—जातियों का कोष	७
३—विदेश यात्रा के कुछ चित्र (श्री० निरंजनलाल शर्मा)	१०
४—भोजन	१८
५—चेकोस्लोवेकिया की हत्या (श्री० शान्तिस्वरूप गुप्ता, एम० ए०) ...	२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १५] मार्गशीर्ष सं० १९९५, नवम्बर १९३८ [सं० ७

दक्षिण दिशा में

(विद्याभूषण विभु, बी० ए०, एफ़० आर० जी० एस०, एम० एन० जी० एस०)

[गताङ्क से आगे]

भारतवर्ष में उटकमंड बहुत ही उत्तम पहाड़ी स्थान गिना जाता है। इसी विचार से २१ जून को आठ बजे सवेरे मदुरा से ऊटी देखने चला। डिण्डीगल, पोतनूर कोइम्वतूर में गाड़ी बदलते बदलते तंग आ गया। शाम को मेटरपेलम पहुँचा। स्टेशन पर होटल में मदरासी भोजन किया। ठहरने का कोई प्रबन्ध होटल में न था। कुली ने चार आने में चौकीदार से पहले दरजे का वेटिंग रूम दिला दिया। रात आराम से कटी मानों चार आने में चार फल प्राप्त हो गये। २२ जून को सवेरे संकलित सामान होटल में छोड़ कर ७-५ मिनट पर नीलगिरि रेल (Blue Mountain Light Railway) से रवाना हुआ। ऊटी का टिकट १।) को मिला। मैं आगे के डब्बे में था। गाड़ी सर्पाकार मार्ग का अनुसरण कर रही थी। पीछे को दृष्टि डाली तो एक विचित्र बात देखी। इंजन पीछे से धक्का दे रहा था। आगे कोई इंजन न था। यह प्रबन्ध इसलिए था कि चढ़ाई पर डिब्बे पृथक होकर पीछे खिसकने न पावें। और स्थान स्थान पर खतरे की चेतावनी के सिगनल लगे हुए थे। गाड़ी धीरे धीरे चलने लगी। पटरी के दोनों ओर वृक्ष टीलों और खाइयों से इस तरह झांक रहे थे जैसे जनता किसी बड़े आदमी के दर्शनों को जमा हो जाती है। कहीं कहीं पेड़ों से पुष्प वर्षा भी हो जाती थी। नीलगिरि में प्यास बुझाने के लिए झरनों की पौसाल बिठा दी थी। ट्रेन कभी कभी सुरंगों में छिप जाती थी। स्टेशन बहुत छोटे छोटे थे और उनपर दोहरी लाइन के स्थान पर इधर उधर शाखा निकली हुई थीं। दूसरी ओर से यदि कोई गाड़ी आती थी तो हमारी रेल उन शाखाओं पर खड़ी हो जाती थी और गाड़ी के निकल जाने पर फिर लाइन पर आ जाती थी। कोनूर ही एक बड़ा जंकशन मिला। दस बजे से पहले ऊटी पहुँच कर होटल में ठहर गये। होटल वाले ने ।।) एक खुराक का चार्ज किया।

कोइम्वतूर के साथी कोमल प्रकृति के धनी व्यक्ति प्रतीत होते थे। पैदल चलकर सब जगह घूमना उनके लिए कुल असम्भव मालूम होता था। और फिर उसी दिन लौटना भी चाहते थे। इसलिये उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टैक्सी का प्रस्ताव किया। मुझे भी उसी दिन वापस आना था। इससे मैं तो सहमत हो गया। परन्तु तीसरा साथी रुपये की कमी के कारण हिचकिचाता था। ६) में मोटर मिल गई। ढाई ढाई रुपये हम दोनों ने दिये और एक रुपया उस तीसरे आदमी ने दिया। टैक्सी में सैर का वास्तविक आनन्द न मिला दो घंटे में कुल मुख्य मुख्य स्थान देख लिये।

हरियाली को चीरती हुई सी मोटर चलने लगी। पहले लाट साहब की कोठी रेस कोर्स एक टीले से खड़े होकर देखे। इस बार नीलगिरि की

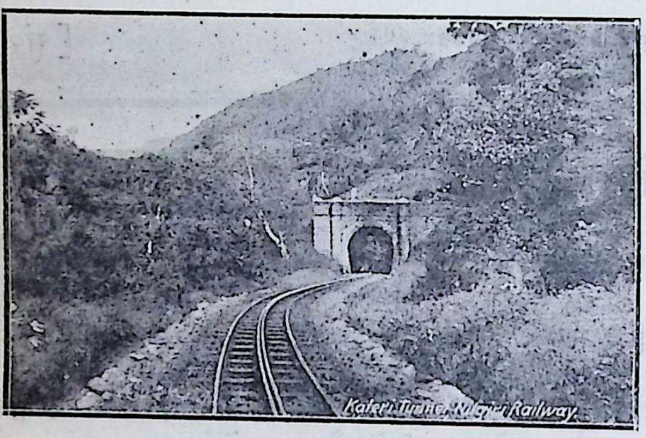

नीलगिरि-रेलवे की एक सुरंग

सबसे ऊँची चोटी दूधावाती (Dodabeti) पर पहुँचे। यह समुद्र से ८००० फीट से अधिक ऊँची है। वहाँ से टोडा (Toda) की झोपड़ी पर पहुँचे। इस घर में बैठ कर या घुटनों के बल ही अन्दर जा सकते थे। मैंने घुस कर देखा तो एक ओर रसोई का चूल्हा और दूसरी ओर सोने के लिए एक ऊँचा चबूतरा बना हुआ था। चार औरतें बाहर बैठी हुई थीं। उनमें से दो कुछ बुन रही थीं। मेरे साथी ने उनको एक इकन्नी दिखलाई। वे चारों एक पंक्ति में बैठ गईं और कनपटी पर हाथ रखकर ऐं ऐं कर गाने लगीं। मैं कुछ नहीं समझा। टोडे यहाँ के पुराने निवासी हैं। जङ्गली जीवन व्यतीत करते हैं। सरकार से उनको रहने के लिए स्थान और जलाने के लिए लकड़ी मुफ़्त मिलती है।

ऊटी का बोटेनीकल गार्डन दार्जिलिंग के बाग से छोटा मालूम देता था। प्रकृति ने हरी मखमल का फर्श उसमें बिछा रक्खा है। कहीं कहीं फूलों के बेल-बूटे भी हैं। झीलों का निर्मल जल गोटा या पन्नी चुन्नी का काम देता था। बड़े बड़े वृक्ष अपने पत्तों से पंखा झल रहे थे। नील कमल जल में अपना मुख देखकर हर्ष से फूले नहीं समाते थे। आस्ट्रेलिया के नुकीली पत्ती वाले तरु का कुछ गोंद मैंने नमूने के लिए ले लिया। हैदराबाद के निजाम की कोठी हरियाली से अच्छादित थी। परन्तु मैसूर का झाड़ियों पर बहुत ही सुन्दर आकृतियाँ कटी हुई थीं। ऊटी से मैंने दस आने का यूकेलिप्टस तैल और चित्र खरीदे। मोटर ने बस के अड्डे पर उतार दिया। आठ आने देकर बस में कोनूर के लिए चल दिया।

शिमले के लिए सोलन और दार्जिलिंग के लिए खुर्सांग जो काम करते हैं वही काम कोनूर ऊटी के लिए करता है। जो मनुष्य ऊटी के खर्च से डरता है, परन्तु पहाड़ी जलवायु में रहना चाहता है, उसके लिए कोनूर उत्तम स्थान है। यहाँ से दूसरी बस ने बारह आने में मेटरपेलम पहुँचा दिया और रात के साढ़े आठ बजे अपना सामान लेकर सेलम को चल दिया।

रात के दो बजे सेलम पहुँचा। मेटूरडैम की गाड़ी खड़ी थी। कुली ने उसमें बिठा दिया। साढ़े छः बजे ट्रेन वहाँ से चली और दस बजे आ पहुँची। अपना संग्रह स्टेशन पर ही छोड़ दिया और कावेरी बांध देखने चला। यह बाँध ५३०० फीट लम्बा और २२० फ़ीट ऊँचा है। पर्वतों के मध्य कावेरी को बाँधने से १६ वर्गमील की एक झील बन गई है। उसमें १३ फाटक हैं। जिनसे पानी आवश्यकतानुसार छोड़ सकते हैं। दूसरी ओर कावेरी स्नान किया और फिर बाँध के नीचे उतरा। कुछ फाटकों से पानी प्रबल वेग से बह रहा था। एक छोटी सी वाटिका भी लगा रक्खी है। उनमें कई फव्वारे छूटते रहते हैं। एक फव्वारे के नीचे चार बतख़ तैरती हुई दिखाई दीं। पास जाकर देखा तो वह पत्थर की निकलीं। स्थान अत्यन्त रमणीक था। यहीं पर पानी से बिजली बनाने का कारखाना भी है। कावेरी के जल से पहिये घूमते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे डाइनेमो (Dynamo) चक्कर करता है और बिजली उत्पन्न होती है। स्टेशन के होटल में चावल खाये और चार बजे सेलम लौट आया। यहाँ मैंने डाक रेलवे के कर्मचारी की कृपा से मेग्नेसाइट का नमूना लिया और ५ बज कर ४५ मिनट पर वहाँ से चल दिया। दक्षिण में लगा हुआ पान विकते मैंने नहीं देखा। स्टेशन पर पान बेचने वाले को एक पैसा दीजिये तो वह आप को कुछ पान चूना और मसाले की एक पुड़िया देगा। आप स्वयं लगाते और खाते जाइये।

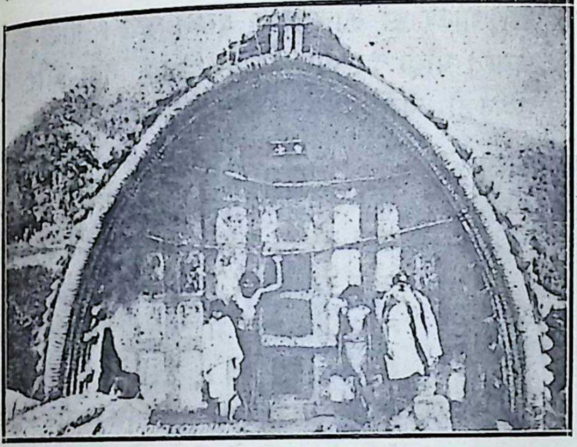

टोडा लोगों का झोंपड़ा

महारानी तम्बाकू का साम्राज्य विस्तार में मलिका विक्टोरिया के राज्य से भी अधिक बढ़ गया है। संसार का कोई कोना न मिलेगा जहाँ इसका आतंक किसी न किसी रूप में न पाया जाता हो। भारत में तो इसका रंक, राजा सभी पर आधिपत्य है। आठों पहर धुआँधार होती रहती है। इसके कारण उत्तर-भारत अग्निहोत्री बन गया है। गृह अग्नि कभी बुझने नहीं पाती। जिस डिब्बे में देखिये बोसियों उप-इंजन धुआँ उड़ाते दिखलाई पड़ेंगे। मध्यभारत रसिक विहारी हो गया है। यहाँ पर बारह मास होली ही होती रहती है। जिधर देखिये उधर ही रंगीन पिचकारियाँ चल रही हैं। दक्षिण भारत में पूरक प्राणायाम सिद्ध कर लिया है। जिधर कान लगाइये सू-सू की सरसरा-हट सुनाई पड़ेगी। बतलाइये ऐसे सिद्धों को भी मोक्ष न मिलेगी तो किसे मिलेगी।

वर्तमान संसार में, हुई मुक्ति आसान।
घर घर प्रचलित वर्ग-त्रय, चाय, तमाकू, पान॥

इस त्रिगुणात्मकशालिनी को धन्य है। लोग इसके अवगुणों पर ध्यान न देकर गुणों का ही ग्रहण करते हैं। यही सज्जनता है। इसी सज्जनता के वशीभूत होकर यह सन्मुख बैठे हुए व्यक्ति न जाने कितने मन सुँघनी सूंघ चुके हैं। यह दूसरे महाशय न जाने कितनी थूक चुके। दिल जला फेफड़ा गला। लेकिन इन तीसरे महोदय का इसी धुआँधार में है भला। यही अनन्य भक्ति है।

रात को २ बजे ट्रेन जालेरपेट आ पहुँची। त्रिचनापोली जंकशन के बाद मुझे यही सुन्दर और विशाल स्टेशन मिला। गाड़ी बदली गई। सबेरे ५ बजे बोरिंगपेट आकर कोलार गोल्ड फील्ड के लिये ट्रेन बदली।

२४ जून को सबेरे ६ बज कर १५ मिनट पर ऊरे गाँव पहुँचा।

कोलार गोल्ड फील्ड कोई एक स्थान नहीं है। कोलार (मैसूर) ज़िले में कई जगह सोना निकाला जाता है और उनके स्टेशन भी भिन्न २ हैं। लेकिन मुझे यह पता न था जिससे मैं पूछता कि मैं कोलार गोल्ड फील्ड देखना चाहता हूँ। वह मुझसे प्रश्न करने लगता कौन कौन सी जगह। तब मैं निरुत्तर हो जाता। एक सज्जन ने बतलाया कि यहाँ तीन स्टेशन हैं। किसी एक पर आप उतर जाइये। इसलिये मैं ऊरे गाँव पर उतर पड़ा। स्टेशन बहुत छोटा था। होटल एक मील दूर था। इस लिये वहाँ न जाकर स्टेशन पर ही जो कुछ मिला पेट में डाल लिया। दस बजे गोल्ड फील्ड के दफ़्तर में पहुँचा। एक रुपये का पास लेकर खान देखने चला। यह खान दो हजार फीट नीचे है, जहाँ पर कई हजार आदमी दिन रात काम करते हैं। सब काम मशीन से होते हैं। बड़े बड़े लिफ्ट के द्वारा चट्टानों के बड़े बड़े टुकड़े ऊपर आते हैं और उनको मशीनों द्वारा तोड़ कर पीसा जाता है। फिर पानी के साथ कारपेट पर बहाया जाता है। सोना उन कारपेट से चिपट जाता है। और रेत पानी के साथ बह जाता है। इसी रीति से सब सोना निकाल लेते हैं। पास लेकर दरबान पहले अपने आफिसर को दिखला कर उसके हस्ताक्षर कराता है। तब अन्दर जाने पाते हैं। प्रत्येक विभाग में यही नियम काम में लाया गया। दरबान सिपाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाबी थे। कहीं कहीं उत्तरदायित्व के स्थान पर गोरे दिखाई देते थे। किसी किसी कमरे में मशीनों का इतना शोर होता था कि गूंगे की तरह संकेत से ही बातचीत हो पाती थी। एक टेस्टिंग (परीक्षण) विभाग भी था जिसका काम यह था कि वह जाँच करे कि किन चट्टानों में सोना है और किस अनुपात से। यह लोग टुकड़े को पीस कर पारा आदि के साथ बंद भट्टियों में गलाते हैं। इस प्रकार सोना तथा दूसरे धातु पृथक हो जाते हैं। मुझे एक टुकड़ा ऐसा दिखलाया गया जिसमें सोना खूब चमकता था। यह रिच (धनी) चट्टान कहलाते हैं। ये सब बातें मैंने जमीन के ऊपर देखी थीं। खान के नीचे जाने के लिये तीन रुपये का पास लेना पड़ता था। उसका लेना हमने उचित न समझा क्योंकि गाइड उस दिन छुट्टी पर गया था।

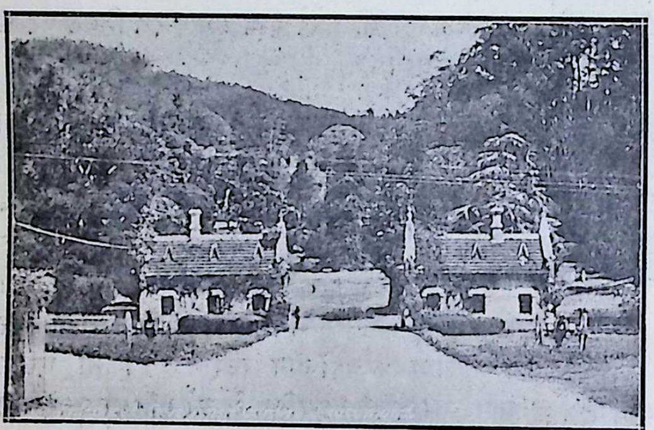

उटकमंड के सरकारी बग़ीचे का दरवाज़ा

उर गाँव से ढाई बजे चलकर शाम को बंगलौर आ गया। पानी बरस रहा था। टांगे वाले को पाँच आने देकर होटल में आ गया। आठ आने प्रति दिन एक कमरे के और ।≈) प्रति खुराक निश्चित हुए। २५ जून को सवेरे शहर देखने निकला। घूमते घूमते पहुँचा। इस क्यूबर पार्क में एक आलीशान होटल में रेडिओ बज रहा था। एक पुस्तकालय भी था। मुझे यह बतलाया गया कि इस पार्क में मैसूर राज्य के दीवान साहब भी रहते हैं और वह प्रत्येक से बड़ी प्रसन्नता से मिलते हैं। अवकाश न होने के कारण मैं उनसे न मिल सका। यह उद्यान फूलों से सुशोभित एक रम्य स्थान है। परन्तु सबसे सुन्दर यहाँ पर एक फव्वारा है जिसके चारों ओर विविध रंग की बिजलियाँ रात को जलती हैं। उस समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानों नभो मंडल से इन्द्रधनुष उतर कर इसकी परिक्रमा कर रहे हैं या सप्तवर्णी रश्मियाँ जल विहार कर रही हैं। फव्वारे के रंजित जल की नृत्य कला अनिर्वचनीय है। यहाँ से मैंने मार्टिनेट बे अखरोट की एक फली लेकर अजायबघर देखने चला गया। यहाँ पर चिड़ियों की प्रायः सब ही चीजें देखने को मिलीं। मृत चिड़िया, अंडे, चोंचें, घोंसले, सभी क्रमानुसार रक्खे हुए थे। श्रीरंगापट्टम का माडल अत्यन्त मनोहर था।

मोटर से लाल बाग देखने गया। पानी बरसने लगा। थोड़ी देर बाद मोटर बिगड़ गया और मुझे पैदल ही चलना पड़ा। यह बाग बड़ा है। कुछ दिन पहले यहाँ चिड़ियाघर था। अब यहाँ के सब पशु-पक्षी मैसूर पहुँच गये हैं और यह बाग उजाड़ पड़ा है। यहाँ मैंने पीले बाँस और रेन ट्री (वर्षा-वृक्ष) देखे। तदनन्तर मैं बाजार में आया। वस्तुयें सस्ती मालूम होती थीं। यहाँ से मैं लाल मिट्टी के दो लड्डू, कहवा के बीज और Ragi के दाने नमूने के लिये लेकर स्टेशन चल दिया। शहर स्वच्छ और सुन्दर था। जलवायु स्वास्थ्यवर्धक मालूम देता था। पूना की तरह बंगलोर भी मुझे अधिक प्रिय लगा। साढ़े नौ बजे रात को मद्रास के लिये रवाना हुआ।

२७ जून को साढ़े छः बजे सवेरे मद्रास पहुँचा। शहर का चक्कर लगाया। मैकमिलन और लांगमैन्स प्रकाशकों के यहाँ कुछ पुस्तकों का अवलोकन किया। २७ जून को अमावस्या थी। मैं छः बजे समुद्र स्नान को चल दिया। आज के दिन प्रायः बहुत से हिन्दू नहाने जाते हैं। इससे भीड़ काफी थी। चारों ओर एक विचित्र दृश्य था। कहीं बच्चे डर के मारे चिल्ला रहे थे लेकिन उनके माता पिता मल मल कर स्नान करा रहे थे। बुढ़िया औरतें डरती डरती पानी में घुसती थीं। लोग उनके ऊपर जल उलीच देते थे। भीरु प्रकृति दूसरे साथी का हाथ पकड़े रहते थे। पानी में बड़ पेटू की तोंद तो बिलकुल कछुये की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समानता करती थी। लड़के अपनी किलोलें अलग कर रहे थे। लहरों की अठखेलियाँ भी अद्भुत थीं। जब वे टकराती थीं तो घोर गर्जना होती थी। घुड़दौड़ की सी करतल ध्वनि और हर्ष ध्वनि सुनाई देती थी। लहरें एक के ऊपर एक बेतहाशा गिरती थीं जो श्वेत प्रवाल के समान बहुत सुन्दर लगती थीं। एक लहर कुछ आगे बढ़ आई और किनारे के कपड़ों को भिगो दिया। जहाँ दृष्टि जाती है पानी ही पानी दिखाई देता है। जब मैं इसकी असीमता को देखता हूँ और अपनी अल्प शक्ति पर विचार करता हूँ तो मुझे बड़ा दुख होता है कि ईश्वर ने मनुष्य को इतना दुर्बल क्यों बनाया।

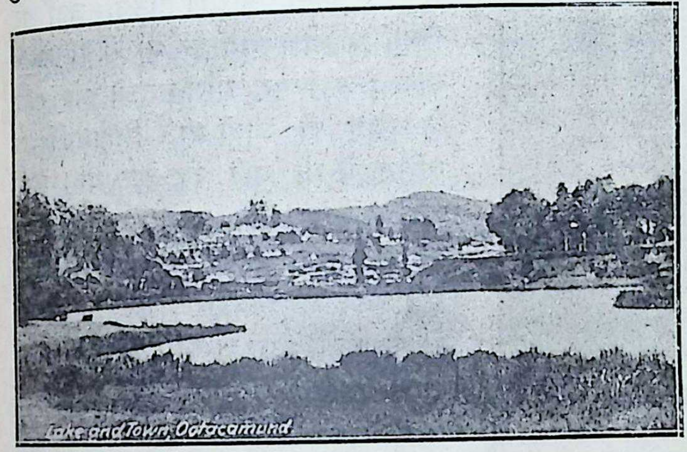

ऊटकमंड नगर और झील का एक दृश्य

आज मैं आनन्द से नहा न सका, क्योंकि समीप ही एक विचित्र वेषधारी भैरव भगवान अपने वाहन श्वान सहित विराजमान थे। मेरी जेब में रुपये थे। कोट उतार कर छोड़ना रुपयों का खोना था। मैं बहुत देर तक इधर उधर के तमाशे देखता रहा। कुछ मल्लाह भी बालू पर घूर घूर कर देखते हुए चक्कर काट रहे थे। उनसे भी पूरा डर था। कुछ देर बाद भैरव वहाँ से चल दिये। मैं कपड़े उतार कर पानी में पहुँचा। मुड़ कर देखता हूँ कि फिर वही आदमी अपना कुत्ता लेकर वहीं आ गया। मैं वहीं बैठ गया और वस्त्रों की ओर ताकता रहा। थोड़ा सा स्नान कर शीघ्र निकल आया और कपड़े पहन कर चल दिया।

२८ जून को झोला में शीशी रखकर फिर समुद्र के किनारे गया। वस्त्र उतार कर समुद्र में घुसा और शीशी साफ़ करने लगा। अचानक एक बड़ी लहर से टकरा कर मैं तो एक तरफ गिर गया। शीशी हाथ से छूट कर लहर के साथ बह गई। थोड़ी दूर पर उस की गरदन दिखलाई दी। फिर वह सदा के लिये अनन्त में विलीन हो गई। शायद जलजीव उसको भी जलचर जानकर छेड़छाड़ करते होंगे। लोग कहते हैं कि समुद्र चीज़ों को वापिस कर देता है, परन्तु मेरी शीशी तो मालूम देता था पचा गया। क्योंकि मैंने फिर उसको किनारे फेंकते हुए नहीं देखा। शीशी खोने का तो मुझे कुछ दुःख नहीं था क्योंकि समुद्र जल स्कूल में रक्खा है। लेकिन मेरी यह इच्छा अवश्य हुई कि उस में तारीख, स्थानादि लिखकर रख देता जिससे पाने वाले को शायद समुद्र की कुछ विशेष बातें मालूम हो जातीं।

झोले में समुद्र की बालू भर कर मैं शहर लौट आया। आज शहर में रिक्शा वालों ने हड़ताल कर दी है और मैं आज ही मद्रास से वाल्टेयर जाना चाहता हूँ। सवारी के लिये बाज़ार में आकर खोज करने लगा। यहाँ के तांगों में बैठने में बड़ी तकलीफ़ होती है। रिक्शा का मिलना असम्भव था। बाज़ार में २००० रिक्शा वालों की भीड़ थी। जो कोई रिक्शा वाला उनके विरुद्ध चलता था उसको वह तंग करते थे। एक रिक्शा वाले ने उसकी शिकायत पुलिस में की। सब भीड़ नाके पर इकट्ठा हो गई। रास्ता बन्द हो गया। ट्राम मोटर आदि सब रुक गये। इस प्रकार सब व्यापार बन्द देख कर एक गोरे पुलिस कर्मचारी ने भीड़ में डंडे मारना शुरू किया। भीड़ काई की तरह फट गई। लोग जान ले लेकर भागने लगे। मैं भी जल्दी से दूसरी ओर मुड़ गया। कुछ देर बाद छः आने में एक रिक्शा मिल गई जिसमें बैठ कर सेन्ट्रल स्टेशन आया और रात के सवा आठ बजे की मेल से चल दिया।

२९ जून को ढाई बजे दिन के वाल्टेयर पहुँचे। यह मद्रास से ५३० मील है। मार्ग के खेतों में धान लहलहा रहे थे। गोदावरी अपने गंदे जल से उमड़ रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। जिस गड्ढे के पास जैसी मिट्टी थी उस में वैसा ही जल दिखलाई देता था। कहीं श्वेत सागर, कहीं लाल सागर, कहीं काला सागर का दृश्य सामने आ जाता था। वाल्टेयर में अनभलाई यूनिवर्सिटी है। स्वास्थ्यवर्धक स्थान माना जाता है। यहाँ से पाँच मील पर विज़गापट्टम का बन्दरगाह है; जहाँ से मध्य भारत का माल बाहर भेजा जाता है। धूप कड़ी थी और स्टेशन का थर्मामीटर ९५° का तापक्रम बतला रहा था। मद्रास सदर्न मराठा रेलवे का यह अन्तिम रेलवे स्टेशन होने के कारण हमारा रिआयती टिकट

ऊटकमंड के टोडा लोगों की एक मण्डली

यहाँ पर समाप्त हो जाता है। सवा छः बजे बी० एन० रेलवे से रायपुर व बिलासपुर से कटनी आया। और जी० आई० पी० से प्रयाग आ पहुँचा। १४ रु० के लगभग वाल्टेयर से प्रयाग तक का रेल का किराया लगा।

दक्षिण-भारत उत्तर-भारत से भाषा, भोजन और भूषा में बिल्कुल भिन्न है। लीडर, हिन्दुस्तान टाइम्स की जगह लोगों के हाथों में हिन्दू, मद्रास मेल तथा इण्डियन एक्सप्रेस दिखलाई पड़ते थे। मद्रास के आसपास आधे दक्षिण पूर्व की भाषा तामिल है। दक्षिण-पश्चिम के केरल प्रान्त में मलायलम का प्रचार है। दोनों के उत्तर में पूर्व की ओर तैलगू और पश्चिम की ओर कनाडी भाषायें फैली हुई हैं। तामिल के भजन समझ में न आने पर भी कर्ण-प्रिय थे। अंग्रेज़ी जानने वालों की संख्या भी अधिक थी। पशु बहुत कम और दुर्बल दिखलाई देते थे। दूध के दर्शन दुर्लभ हो जाते थे। मद्रास में दो आने का एक प्याला दूध मिलता था। होटलों में चावल के साथ मद्रासी चुल्लू से मट्ठा (छाँछ) पीते थे। वह भी दो तीन चुल्लू ही मुझे तो बिना प्याला भरे संतोष न होता था। यहाँ पर होटल दो प्रकार के थे। १. हिन्दू ब्राह्मण होटल, जहाँ पर निरामिष भोजन मिलता था। २. फौजी होटल; जहां पर मांस-मछली भी खाने के साथ दी जाती थी। भिखमङ्गों का दक्षिण में भी वही रङ्ग-ढङ्ग था। कुली और मजदूर इसी प्रकार झगड़ालू थे। लेकिन शिक्षित मनुष्य शिष्ट तथा सदय थे। उनके सद्व्यवहार और सहानुभूति से मैं अपने मार्ग के कष्टों को भूल जाता था। किसी किसी स्त्री के कानों में इतना भारी गहना था कि ललरी काँधे से छू रही थी। साउथ इण्डियन रेलवे का पहनावा मुझे अधिक पसन्द आया। गोटेदार हरी पगड़ी उनके हँसमुख चेहरे पर बहुत खिलती थी। वह यात्रियों के प्रश्नों का उत्तर बड़ी नर्मी से देते थे।

नये देश और नये दृश्य तो देखे ही, मनोविनोद भी पर्याप्त हुआ। मनोरंजन वह मिश्री है जो कष्ट के पश्चात् ही अधिक स्वादिष्ट लगती है। भ्रमणों ने मुझे कष्ट-सहिष्णु बना दिया। दक्षिण की कई हज़ार मील की यात्रा से मेरी ज्ञान-राशि तथा अनुभव में विशेष अभिवृद्धि हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातियों का कोष

(गताङ्क से आगे)

वज़ीर या वज़ीरी—अफ़ग़ानिस्तान के सरहद के लोग। ये लोग जङ्गली और दुर्गम प्रदेश में रहते हैं। ये लोग जानवर बहुत पालते हैं, लेकिन खेती कम करते हैं। पहाड़ी धाराओं के पास कहीं कहीं खेती होती है।

व्यान्डाट—उत्तरी अमरीका के हूरन या इरोक़ाई लोग।

वातूता—अंगोनी (न्यासा झील) के पश्चिम में रहने वाले ज़ुलू लोग।

वापोकोनो—ब्रटिश ईस्ट अफ्रीका के उत्तर-पूर्व में ताना घाटी के बाँटू भाषी लोग। ये लोग खेत बोने जोतने के अतिरिक्त मछली मारने और शिकार करने का काम भी करते हैं। ये लोग वर्णसंकर हैं। इनमें एक ही घर में (काले से लेकर लाल तक) कई रंग के लोग मिलते हैं।

वारीमुङ्गा—मध्य आस्ट्रेलिया के वे लोग जो मर्कीसन रेंज में रहते हैं। आरूँटा लोगों से ये लोग अधिक लम्बे होते हैं। ये लोग अपने माथे और ऊपरी ओंठ के बाल उखाड़ लेते हैं।

वाराऊ या वार्रा—गायना के तट पर रहने वाले लोग। ये लोग छोटे और मोटे होते हैं। इनके यहाँ एक स्त्री के कई पति और एक पुरुष के कई स्त्रियाँ होती हैं। ये लोग नाव बनाने में बड़े चतुर हैं।

वान्याम्वेज़ी—यूगांडा के वे लोग जिनको लिविंग्स्टन की यात्राओं ने प्रसिद्ध बना दिया। वान्याम्बेज़ी का अर्थ है "चन्द्रवंशी" या चन्द्रमा के बच्चे।

वापीसियाना—गायना के सवन्ना प्रदेश में रहने वाले लोग, जो अरावक भाषा बोलते हैं। इनके अंग सुन्दर होते हैं और क़द लम्बा होता है। ये लोग बड़े व्यापारी होते हैं। वे अपनी नावों को एक विचित्र गोल पेंडिल से चलाते हैं।

वाङ्कोण्डे—या नकोण्डे—न्यासा झील के उत्तरी सिरे पर रहने वाले बाण्टू भाषा-भाषी लोग। "वाङ्कोण्डे" शब्द का अर्थ है मैदान के लोग। इन्हीं में अबाकूक्वे अबावीवा और दूसरे लोग शामिल हैं। तट के पास रहने वाले वामाराबा लोग इनके सम्बन्धी हैं। इनका रंग काला और टांगें टेढ़ी होती हैं। ये लोग आरामतलब और हंसमुख होते हैं। इनकी स्त्रियाँ सुन्दरी होती हैं।

वाण्डोरोबो या आण्डोरोबो—मसाई देश के बद्दू लोग। मसाई शब्द का अर्थ "ग़रीब" है। वे अपने को आसा कहते हैं। वे बुशमैन लोगों से मिलते जुलते हैं।

वाम्बट्टी—बेल्जियन कांगो के इटूरी बन के बौने लोग।

वालून—फ्रांसीसी भाषा के उत्तर में बोली जाने वाली उप-भाषायें। इस भाषा के बोलने वाले लोगों को भी बालून कहते हैं। आर्डेन पठार, हालैंड, बेल्जियम और केण्ट में वालून अंश की प्रधानता है।

वाडिगो—न्यीका लोग जो मोम्बासा के पृष्ठ प्रदेश में रहते हैं और बांटू भाषा बोलते हैं। ये लोग वागीरियामा लोगों के सम्बन्धी हैं। इनका क़द बौने के समान ४ फुट २ इंच होता है।

वागण्डा या बागण्डा—यूगांडा के निवासी। इनमें कई भेद हैं। कुछ हब्शी हैं कुछ रोमन लोगों से मिलते हैं। कुछ लोग ६ फुट और कुछ ५ फुट ऊँचे होते हैं। ये लोग न अपने दाँत तोड़ते हैं न शरीर को बिगाड़ते हैं जैसा कि विषुवत् रेखा के समीप के रहने वाले किया करते हैं। वे अपने कान भी नहीं छेदते हैं। यूगांडा वाले लोग ऊँची छत के मकान बनाते हैं और ढांचा ताड़ की लकड़ियों का बना होता है। सामने और पीछे की तरफ़ दरवाज़े के लिये खुला होता है।

वायावू—ब्रह्मा के लोग जो मोंखमेर भाषा बोलते हैं। वे लोग छोटे लेकिन चौड़े होते हैं। वे अपने गाँव के चारों ओर दो तीन गज़ ऊँची दीवार बना लेते हैं। यह दीवार एक खाईं से घिरी होती है। सुरंग के द्वारा द्वार बना लिया जाता है। ये लोग बड़े वीर और मेहनती होते हैं और खेती किया करते हैं।

वावानाकी—अल्गान्क्विन के लोग जो उत्तर-पूर्व की ओर रहते हैं। इन्हीं में पासामीक्वोडी, पेनोब्स्काट, अबेनाकी, मिकमैक और डेलावेर या लेनेय शामिल हैं।

विसायन—फिलीपायन द्वीप के लोग। ये लोग अपने शरीर को रँगते हैं। इसलिये स्पेन वालों ने इनका नाम पिन्टाडो रक्खा।

वेद्दा—लंका के मूल निवासी। इनका क़द छोटा (५ फुट), सिर तंग और लम्बा होता है। ये लोग बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्न रहते हैं। ये शिकार करते हैं और शहद इकट्ठा करते हैं। अपने मुर्दों को वे खोहों में छोड़ देते हैं।

वेयाओ या याओ—रोडेशिया और बृटिश सेन्ट्रल अफ्रीका के बाँटू भाषा-भाषी गठीले लोग। इनका प्रथम निवास उनाङ्गो पर्वतों में था।

वेण्ड—जर्मनी में लूसिट्ज प्रदेश के लोग। इन्हें पोलाब भी कहते हैं।

वेल्श—वेल्स देश के रहने वाले। इन लोगों का क़द नाटा और शरीर गठीला होता है। इनका सिर और चेहरा चौड़ा होता है। वेल्श भाषा दो ढाई वर्ष से ज़्यादा पुरानी नहीं है।

वोप्सियन—ओनेगा झील के ओलीनेट्स आदि ज़िलों में बोली जाने वाली भाषा। इनको रूसी लोग चड कहते हैं। अधिक दक्षिण में वे चुहार कहलाते हैं। ये लोग खेतों का काम बच्चों और औरतों के ऊपर छोड़ देते हैं। वे स्वयं मछली मारते हैं और राजा का काम अधिक पसन्द करते हैं। "चड" शब्द का अर्थ लम्बा है। ये लोग क़द में बड़े लम्बे होते हैं।

वोर्गेया—आस्ट्रेलिया के वे लोग जो वारामुण्गा के पूर्व में रहते हैं।

वोट्याक—पूर्वी फिनिक लोग जो अब से १२०० वर्ष पूर्व यूरल पर्वत को छोड़ कर कामा और वियाट्का नदियों के बीच में बस गये। ये लोग इनमार की पूजा करते हैं। इनका क़द छोटा और शरीर कमज़ोर होता है। इनकी आँखें भूरी या नीली होती हैं।

वोनूम—मध्य फारमूसा के पहाड़ों में रहने वाले असभ्य लोग। ये लोग काफी ऊँचाई पर रहते हैं। इनकी औरतें बोझे को पीठ पर रख कर एक पट्टी से सिर पर लटका लेती हैं। शायद यही लोग प्राचीन इन्डो नेशियन लोग हैं। इनमें मंगोल रुधिर का प्रभाव है।

वोल्टा भाषायें—उत्तरी गोलडकोष्ट फ्रांसीसी, नाइजर प्रदेश (जिसमें मोसी, गुन्शी और डागोम्बा प्रदेश शामिल हैं) में बोली जाने वाली अर्द्ध बांटू भाषायें।

वोगुल—मञ्सी लोगों का ओस्टयाक नाम है। ये लोग यूग्रियन हैं। और ओस्टयाक लोगों से मिलते-जुलते हैं। इनका क़द छोटा सिर लम्बा और चेहरा गोल होता है। इनकी आँखें भूरी या नीली होती हैं। ये लोग शिकार करते हैं और गम्भीर रहते हैं।

वौंगा—मध्य अफ्रीका की वैंग ब्यूलो झील के दक्षिण-पश्चिम में स्थित दलदलों में रहने वाले हब्शी लोग।

श

शान—ब्रह्मा के चीन आदि दक्षिणी मंगोल लोग। इनका दूसरा नाम थाई है, जिसका अर्थ "स्वाधीन" है। ये लोग थाई या स्यामी, चीनी भाषा बोलते हैं। पहाड़ी शान रियासतों में इन्हीं लोगों का निवास है। ये लोग अक्सर अपने अंगों को नीला गुदवाते हैं।

शानी—ओहाइओ प्रदेश के अल्गोंक्वियन लोग।

शाविया—आर्स पठार के बर्बर लोग।

शिह—मरक्को के बर्बर लोग। जिनमें रिफ लोग भी शामिल हैं।

शिलूक—बड़े सिर वाले लम्बे हब्शी लोग। ये लोग नील के दक्षिणी किनारे पर रहते हैं और उत्तर में काका से लेकर नो झील तक फैले हुए हैं। कुछ लोग पूर्वी किनारे और सोबान नदी के पास भी रहते हैं। इन लोगों में हेमायटिक ख़ून बहुत मिला है। ये लोग ढोर चराते हैं और दुर्रा उगाते हैं। वे बड़े खुले दिल होते हैं। शिलूक भाषा की अभाषाओं में अनीवक, जुरे बेरी, गंग, अचोली, निकवा लागो, अलूर और चोपी भाषायें शामिल हैं।

शूवा—चाड झील के दक्षिण में रहने वाले लोग। ये लोग ढोर चराने का काम करते हैं। इनकी उत्पत्ति अरबी लोगों से हुई है। एबीसीनियन भाषा में शा या शोआ शब्द का अर्थ ही चरवाहा है। ये लोग क़द में छोटे होते हैं। लेकिन वे लड़ाका होते हैं और आज़ादी पसन्द करते हैं।

शोशोन—अमरीकन पठार के रेड इण्डियन लोग जो कोमाँची लोगों से मिलते हैं। पहले वे लोग व्योमिंग में रहते थे। ये लोग मछली, फल, मूल आदि का भोजन करते हैं।

स

स्याक—सुमात्रा द्वीप के मलय लोग।

स्यामी—इण्डोचीन के थाई लोग। कम्बोडिया के खेमर लोगों के द्वारा भारतवर्ष की सभ्यता स्यामी लोगों के यहाँ पहुंची। ये लोग बड़े उदार और हँसमुख होते हैं। लड़ने झगड़ने और चिल्लाने से उन्हें बड़ी घृणा है।

सकाई या सेनोई—मलय प्रायद्वीप के बनों में रहने वाले लोग। ये लोग बदसूरत होते हैं। कुछ जंगली जानवरों से बचने के लिये पेड़ों पर झोंपड़ा बनाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकालव—पश्चिमी मेडागास्कर के लोग।

सालिश—बृटिश कोलम्बिया में पठार पर रहने वाले रेड इण्डियन लोग।

सारसी—एथेबास्कन जाति के अमरीकन इण्डियन।

स्काट या स्कच—स्काटलैंड के लोग।

साइबेरियन तारतार—तूरानी तुर्की लोग जो तूब और डरियाँ खाई कहलाते हैं। रूसी लोग उन्हें चर्न (काले जंगली लोग) कहते हैं।

साइबेरियन तुर्क—पूर्व के याकूत लोग और सायन पर्वत के उत्तर में साइबेरियन तारतार लोग।

सिहानक—मेडेगास्कर के पश्चिम में रहने वाले लोग। ये लोग दलदल के प्रदेश में रहते हैं और मछली मार कर अपना पेट पालते हैं।

सिक्ख—पंजाब के बीर जाट लोग जो गुरु नानक और गुरू गोबिन्द सिंह के चलाये हुए मत को मानते हैं। अधिकतर बातों में वे हिन्दू ही हैं।

सिन्धी—सिन्ध प्रांत के लोग।

सिंहाली—लंका के सभ्य लोग।

सिवाश—वेंकूवर द्वीप के रेड इण्डियन लोग।

स्लोवेक—पश्चिमी स्लैव लोग। ये लोग चेकोस्लेवोकिया में रहते हैं।

स्लोवीन—क्रेरट के उत्तर में कार्निओला के यूगोस्लैव लोग। स्लोवो शब्द का अर्थ है वे लोग जो एक दूसरे को समझते हैं।

सोबो—ईडो लोगों की एक उप-जाति। जो बेनिन की प्रजा हैं। ये लोग नाइज़र डेल्टा की धाराओं में रहते हैं। लेकिन शेकी या जेकी लोग पानी के बिलकुल पास रहते हैं।

सुमाली—अफ्रीका के पूर्वी तट पर रहने वाले हेमायटिक लोग।

सोर्ब—वेण्ड।

सोयात—सायन-अल्टाई की सीमा पर रहने वाले तुर्की तारतारी लोग। जो शायद डरियाँखाई लोग हैं।

स्पेनियार्ड—गेलेग्गे का प्रयोग करने वाले स्पेनवासी लोग।

स्टोनी इण्डियन—एसिनी बोइन।

ह

हनाक—बोहेमिया, मोरेविया और उत्तरी हंगारी में बसने वाले चेक लोग।

हक्का—क्वांटङ्ग की पहाड़ियों पर बसने वाले चीनी लोग।

हज़ारा—अफ़ग़ानिस्तान के तुर्की लोग। ये लोग मंगोल तारतार होते हैं।

हाटनटाट—दक्षिणी अफ्रीका के नावायोखोई खोइन लोग हैं। ये लोग बुशमैन से अधिक बड़े होते हैं।

हिदाता या मोनारी—उत्तरी अमरीका के सिओअन लोग जो सूर्य नृत्य बड़ी धूमधाम करते हैं।

हिमिया राइवट—दक्षिण अरब के लोग।

हिन्दू—हिन्दुस्तान के हिन्दू धर्म के मानने वाले लोग।

हुई चोल—कोरा के पूर्व में रहने वाले मेक्सिको के लोग। इनका रंग हलका भूरा होता है।

हूरन—इरोकोई लोग जो प्रायः नष्ट हो चुके हैं।

हेमायट—उत्तरी पूर्वी अफ्रीका के इथिओपियन लोग जो हब्शी नहीं हैं। गाला, सुमाली, मसाई; (पूर्वी), बर्बर, तौरेग भी इन्हीं में शामिल हैं।

हैडा—बृटिश कोलम्बिया के तट पर रहने वाले लोग बड़े चतुर नक्क़ाशी करने वाले होते हैं।

होकलो—चीन के दक्षिणी पूर्वी तट पर रहने वाले लोग।

होपा या मोकोई—शोशोनियन बोलने वाले रेड इण्डियन लोग। इन का प्रधान पेशा खेती है। वैसे ये लोग बुनना और रंगना भी जानते हैं।

होराक—वे लोग जो बोहोमिया, मोरेविया और उत्तरी हंगारी में रहते हैं।

होवा—मेडेगास्कर में सब से ऊँची जाति के लोग।

हङ्गारियन या मेगायर (माजार)—हङ्गारी के लोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेश यात्रा के कुछ चित्र

आजकल भारतीय विद्यार्थी और अध्यापक विदेश यात्रा के लिये उतने ही उत्सुक रहते हैं जितने सनातन धर्मी हिन्दू भाई चारों धाम की यात्रा के लिये और मुसलमान भाई मक्का और मदीना की यात्रा के लिये। अन्तर केवल इतना ही है कि प्रथम समुदाय के यात्री यात्रा के फल-स्वरुप इसी जीवन में अच्छी पदवी पाने की इच्छा करते हैं, और द्वितीय समुदाय के यात्री मरने के बाद स्वर्ग में स्थान पाने की। यद्यपि मेरी अभिलाषा कभी विदेश जाने की न थी परन्तु ईश्वर की कृपा से सन् १९३६ में मैं भी अकस्मात् इस यात्रा पर चल पड़ा और मुझे भी एक वर्ष अपने देश से बाहर रहना पड़ा। मेरा अधिक समय इङ्गलैंण्ड में ही बीता परन्तु योरुप के अन्य देशों में भी होकर मुझे गुजरने का अवकाश मिल गया था। इस लेख में उन्हीं देशों के कुछ चित्र दिये जाते हैं।

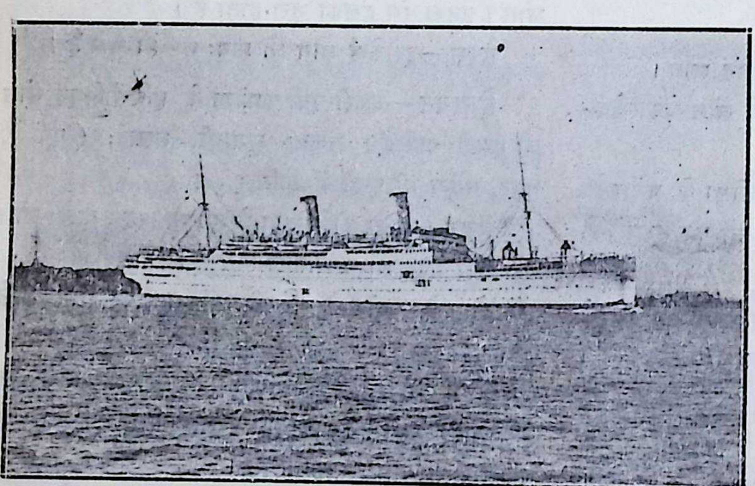

चित्र नं० १*

१—इटली की कम्पनी—"लाइड ट्रस्टीनो"—का "कान्टी वर्डी" नामक जहाज। वैसे तो योरुप की यात्रा के लिये अंग्रेजी कम्पनी के बम्बई से जाने वाले साप्ताहिक जहाजों के अतिरिक्त मद्रास और कोलम्बो से फ्रेंच और जापानी जहाज़ भी जाते हैं परन्तु इटली की कम्पनी के बम्बई से जाने वाले जहाज़ हिन्दुस्तानियों को अधिक पसन्द हैं कारण कि एक तो इन जहाजों से दो दिन पहले योरुप पहुँच जाते हैं और दूसरे मुझ जैसे शाकाहारी यात्रियों के लिये इस कम्पनी के जहाज में भारतीय भोजन का अच्छा इन्तज़ाम रहता है। जहाज़ वाले कर्मचारी भोजन की दृष्टि से भारतीयों को सन्तुष्ट करने का काफी ख्याल रखते हैं। परन्तु खेद है फिर भी कभी कभी भोजन के ऊपर कुछ भारतीय यात्री उनसे बड़ा अशिष्ट व्यवहार कर बैठते हैं। अपने घर की जैसी पूड़ी तरकारी या दाल चावल जहाज़ में पाने की आशा रखना निरा भ्रम है। मैंने तो दोनों तरफ से इसी कम्पनी के जहाज़ से यात्रा की थी। इस कम्पनी का परिचय कराने के लिये मैं 'भूगोल' के पं० रामनारायण मिश्र जी का कृतज्ञ हूँ।

२—अदन की एक घाटी पार करने की सड़क का दृश्य। अप्रैल सन् १९३८ से अदन देश भारत से पृथक कर दिया गया है। भारत के हित में यह अच्छा हुआ या बुरा यह तो राजनीतिज्ञ जानें परन्तु लालसागर में प्रवेश करने के लिये इस बन्दरगाह का स्थान है बड़े मार्के का। पीने के जल की इस देश में बड़ी कमी है। वर्षा न होने के कारण पहाड़ियों पर वृक्षों या घास का अभाव है। यहाँ के काले काले पहाड़ कदाचित ज्वालामुखीय शिलाओं के बने हैं।

३—लाल सागर का जल अपने नाम के विपरीत स्वच्छ नीले रंग का है। सितम्बर के मास में केबिन में बिजली के पंखों के होते हुये भी बड़ी गर्मी मालूम पड़ती है क्योंकि इस सागर के दोनों किनारे रेगिस्तानी देश हैं। इस समय यात्रियों को सबसे अच्छा स्थान जहाज़ के अगले हिस्से के ऊपर का पसन्द आता है जहाँ पर दोपहर को शामियाना लग जाता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

* चित्रों में जो संख्या पड़ी है उसी संख्या वाले पैराग्राफ़ में उनका वर्णन दिया गया है। —सम्पादक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्री डेक पर कुर्सी या रस्सों के ढेर पर बैठकर खूब हवा लेते हैं। रात के बारह बजे तक भी केबिन में जाने का जी नहीं चाहता।

४—अफ्रीका के इटेलियन पोर्ट "मसावा" में इटली के बैङ्क की इमारत। एबीसोनिया की लड़ाई में इटली

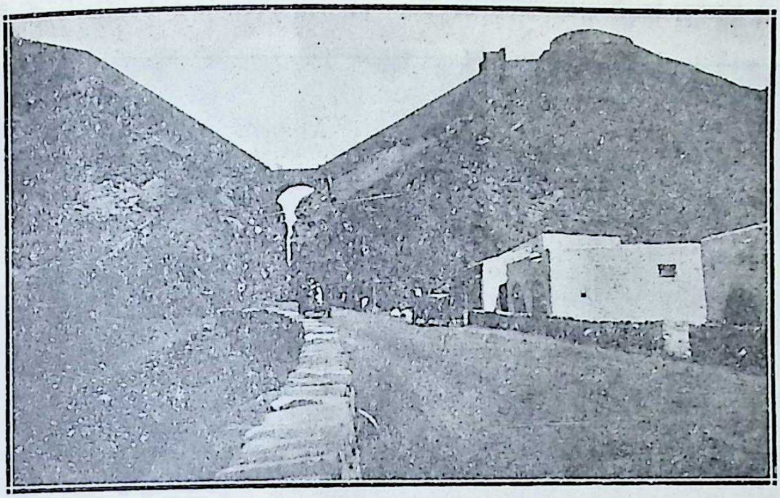

चित्र नं० २

चित्र नं० ३

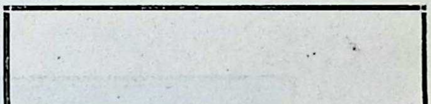

चित्र नं० ४

की फौजों का यह खास केन्द्र था। खुश्की के कारण यहाँ पर हरियाली बिल्कुल नहीं है। एक दो बम्बई और सिन्ध प्रान्त के रहने वाले सौदागरों की दुकानें भी हैं परन्तु उनकी दुकान पर कपड़ा अधिकतः इटली देश का था न कि बम्बई का यद्यपि बम्बई वहाँ से अधिक नजदीक शहर है। सभी देश अपने माल की खपत चाहते हैं। जब बम्बई शहर में ही स्वयं भारत के माल के मुकाबिले विदेशीय माल अधिक मिलता है तो बाहर तो वहाँ का माल मिलने ही क्यों लगा। इटली के देशों में से भारतीय व्यापारी अधिक कमा कर यहाँ ला भी नहीं सकते। वहाँ का वहाँ ही खर्च कर देना होता है या देश छोड़ने पर बहुत सा भाग सरकार द्वारा जब्त कर लिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—मिश्र देश के "पोर्ट सईद" शहर की मशहूर अंग्रेजी दुकान जहां से यात्री चीज़ें खरीदते हैं। पोर्ट सईद में पूर्व और पश्चिम की रीति रिवाजों का मिश्रण खूब देखने में आता है। यहाँ की स्त्रियों का बुर्का पूर्वीय रिवाज का द्योतक है और सड़क पर बेचने वालों का मोल भाव में झगड़ा करने से हिन्दोस्तान के

६—इटली के 'वेनिस' शहर में सड़कों के स्थान पर नहरें हैं जिनमें नाव (गोन्डोला) से सफ़र किया जाता है। नहरों पर जगह जगह पुल बने हुए हैं। वेनिस की कई गलियां भारत के छोटे कस्बों की तरह ईंट से बनी हैं और कई तो काफी तंग भी हैं और काशी की गलियों की याद दिलाती हैं। वेनिस के इधर उधर कई द्वीप

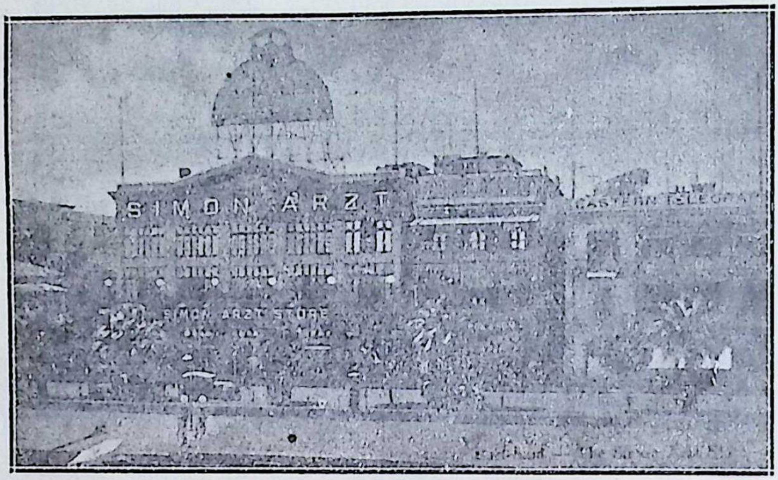

चित्र नं० ५

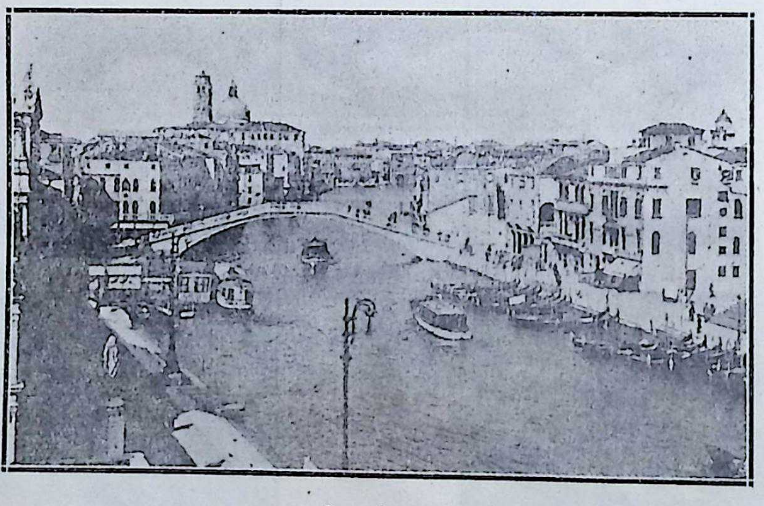

चित्र नं० ६

बाज़ार का दृश्य याद आता है। स्त्रियों के नग्न चित्र बेचने वाले परदेशियों को सड़क पर काफी परेशान करते हैं। एबीसीनिया की लड़ाई में मिस्र देश ने मौका पाकर स्वराज्य ले ही लिया। विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने के लिये यहाँ की सरकार अब काफी विद्यार्थी भेज रही है।

हैं जिन में तरह तरह के कारखाने हैं। एक द्वीप में लड़कियों को कपड़े पर काढ़ना सिखाने का मशहूर स्कूल है। वेनिस में कांच के कारखाने मशहूर हैं जिन में अनेक तरह की खूबसूरत चीज़ें बनती हैं। चाय के सेट (कांच के) दो सौ रुपये के मिलते हैं। प्रायः दुकानदार समझते हैं कि भारत से आने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब यात्री धनवान राजा महाराजा ही होते हैं इसलिये ऐसी चीजें खरीद लेने का बड़ा अनुरोध करते हैं। भारत की तरह सिगरेट इटली में सस्ती नहीं है (लेखक सिगरेट न पीने वाला होकर ठीक तो जानता नहीं) कारण कि कस्टम वाले प्रायः यही सवाल करते हैं कि साथ में तम्बाकू तो नहीं है और वेनिस में यह में अद्वितीय देश है। परन्तु जिन्होंने कश्मीर को देखा है वे कहते हैं कि कश्मीर में भी अनेक स्थान योरुप के इस देश से टक्कर सुन्दरता में ले सकते हैं परन्तु कश्मीर गवर्नमेंट न तो उनको देखने के लिये यात्रियों को आकर्षित करने का प्रचार करती हैं और न वहां पर यात्रियों को ठहरने इत्यादि का इतना सुभीता

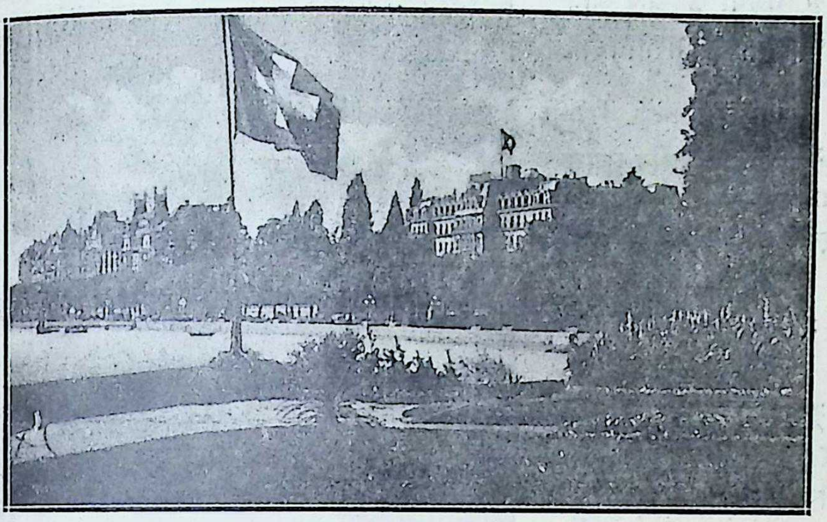

चित्र नं० ७

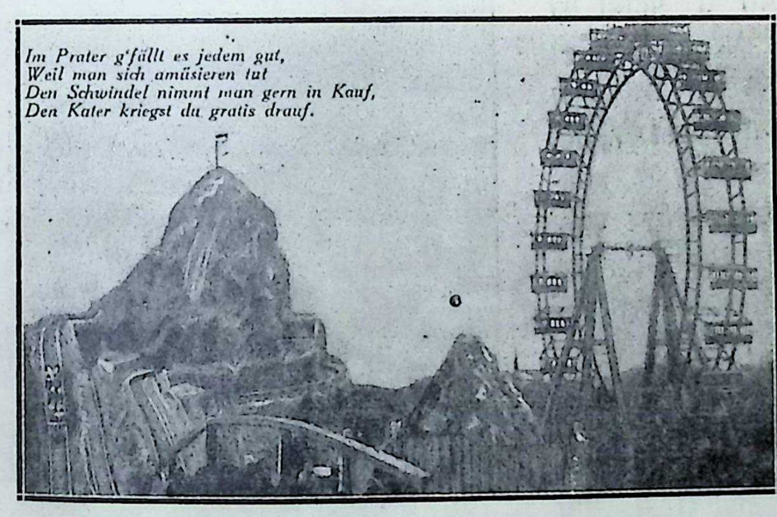

चित्र नं० ८

देखने में आया कि यात्री जो गोन्डोला में से सिगरेट का बचा हुआ छोटा टुकड़ा नहर के तट पर फेंक देते थे तो छोटे छोटे ग़रीब लड़के उन टुकड़ों को उठाकर पीने लगते थे।

७—जनेवा में राष्ट्रसंघ (League of Nations) की नई इमारत, स्विटज़रलैंड सचमुच सुन्दरता प्राप्त होता है। स्विटज़रलैंड में भिन्न भिन्न धर्मावलम्बी और भिन्न भिन्न भाषा के बोलने वाले होते हुए भी देश में पूर्ण एकता है। इस देश में ७२ फीसदी मनुष्य जर्मन भाषा, २१ फी सदी फ्रेन्च, ६ फीसदी इटेलियन और शेष २ फीसदी अन्य भाषाएँ बोलते हैं। एक फ्रेन्च लेखक ने लिखा था "The swiss milk

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

their cows and live peaceably" अर्थात् स्विटज़रलैंड के लोग प्रायः देहातों में रहने वाले और मक्खन दूध पैदा करके यात्रियों के लिये होटल चलाकर निर्वाह करने वाले हैं। परन्तु यह बात ग़लत है। अंकों से पता चलता है कि यह देश मशीनों के उपयोग में किसी से पीछे नहीं है। यहां पर अनेक घड़ियों के और कृषि और विजली इत्यादि की मशीनों के विशाल कारखाने हैं।

८—वियना शहर के तफरीह स्थान (Amusement Park) का एक भाग। यहां पर एक विशाल चरख है जो करीब २०० फीट ऊँचा होगा। इस पर चढ़कर वियना शहर का सारा दृश्य दिखाई देता है। पास में बनावटी पहाड़ी पर छोटी छोटी ट्रालियां हैं जो विजली से चलती हैं और पहाड़ी के चारों तरफ बनावटी छोटी सी नदी है जिसमें छोटी छोटी नावें जल के साथ वहती हैं। ट्रालियां जब वड़े वेग से पहाड़ी की घाटियों और ढालों पर दौड़ती हैं तो उनपर बैठे हुए बच्चे और स्त्रियों की घिग्घी बंध जाती हैं और दर्शकों को चीखें सुनाई देती हैं। इन सवारियों के अतिरिक्त यात्रियों को तफरीह के लिये अनेक प्रकार की सवारी और सामान इस पार्क में रहता है। शाम के समय यहां बड़ी भीड़ एकत्रित रहती है।

९—चेकोस्लोवेकिया देश के 'प्राग' नगर में योरुप में सबसे पुरानी घंटा वड़ी। यह घड़ी सोलहवीं शताब्दी में बनी थी। घंटा बजने के साथ साथ इसमें तस्वीरें भी इधर से उधर चलती हैं और प्रत्येक तस्वीर जनता को एक खास उपदेश देने के लिये रक्खी गई है। चेकोस्लोवेकिया की दुकानों पर बहुत सी चीजों पर 'Made in England' लिखा देखा जिस से पता चलता है कि इङ्गलैंड के माल को खरीदने के लिये यह अच्छा क्षेत्र है और इस देश की इङ्गलैंड से बहुत मित्रता है। खेद है कि उसी मित्र ने आज मुसीबत के वक्त इस देश को लड़ाई से बचाने के बहाने उस को छिन्न भिन्न करा दिया।

१०—म्यूनिक का म्यूज़ियम—विज्ञान की शिक्षा

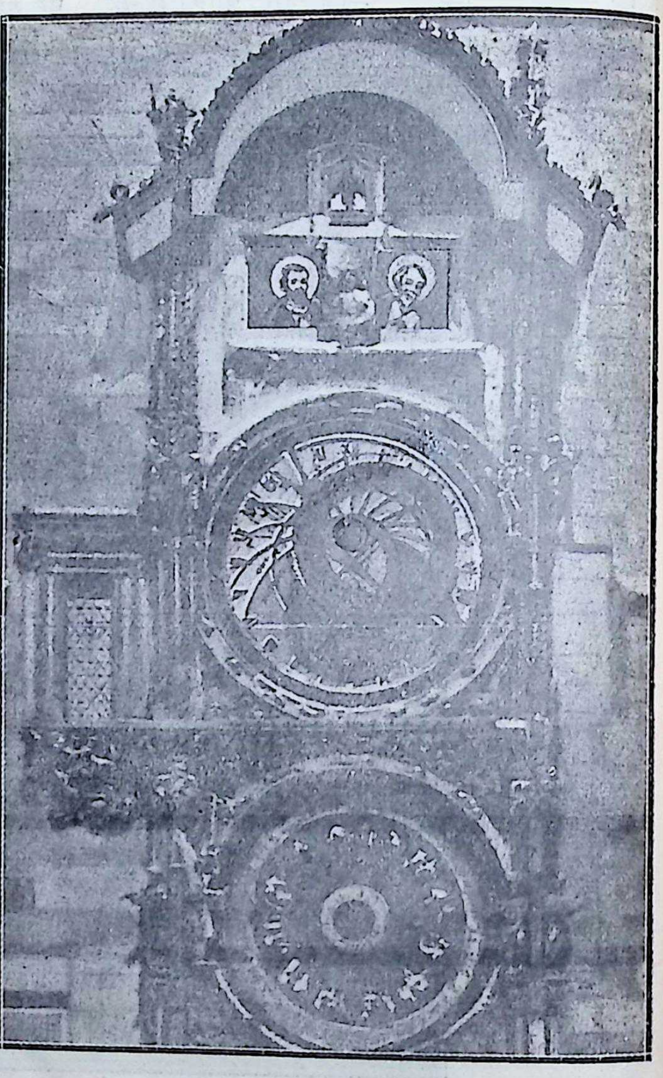

चित्र नं० ६

का जनता में प्रचार करने के लिये संसार में इस म्यूज़ियम का पहला स्थान है। इसमें क़रीब ४०० कमरे हैं। म्यूजियम के नीचे बनावटी खानें बनी हैं जहां पर यह दिखाया गया है कि कोयला इत्यादि खनिजें कैसे निकाली जाती हैं। यदि भिन्न भिन्न प्रकार के रेलवे पुलों की बनावट दिखानी है तो वैसे पुल कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की छत के पास एक दीवार से दूसरी दीवार तक सचमुच के बना दिये हैं। हवाई जहाज़ों के कमरों में चिड़ियों के उड़ने के सिद्धान्त समझाने से आरम्भ किया है और अधुनिक ज़ैप्लन तक दिखाये गये हैं। अनेक मशीनों को दर्शकगण स्विच को दबाकर जितनी बार चाहें चलाकर देख सकते हैं, कोई रोक टोक नहीं। जर्मन गवर्नमेंट जनता में वैज्ञानिक ज्ञान के प्रचार के लिये कितनी उत्सुक है इसका पता इस बात से चलता है कि इस म्यूजियम की प्रवेश फीस एक दिन की करीब १) और एक महीने की करीब २) है जिससे प्रत्येक दर्शक को म्यूजियम को कई बार देखने की इच्छा होती है।

११—बर्लिन का पार्लेमेन्ट घर—नाज़ी गवर्नमेन्ट ने जर्मनी की काया पलट कर उस देश को संसार में एक अति उच्च स्थान प्राप्त करा दिया है। सरहद पर रेलगाड़ियां एक घंटे के करीब खड़ी रहती है तब सब यात्रियों के बटुए देखे जाते हैं और उनके पास जितना रुपया होता है उसकी रसीद उनको दे दी जाती है। जब ये यात्री देश से बाहर निकलते हैं तो फिर दूसरी सरहद पर उनके पास की रकम देखी

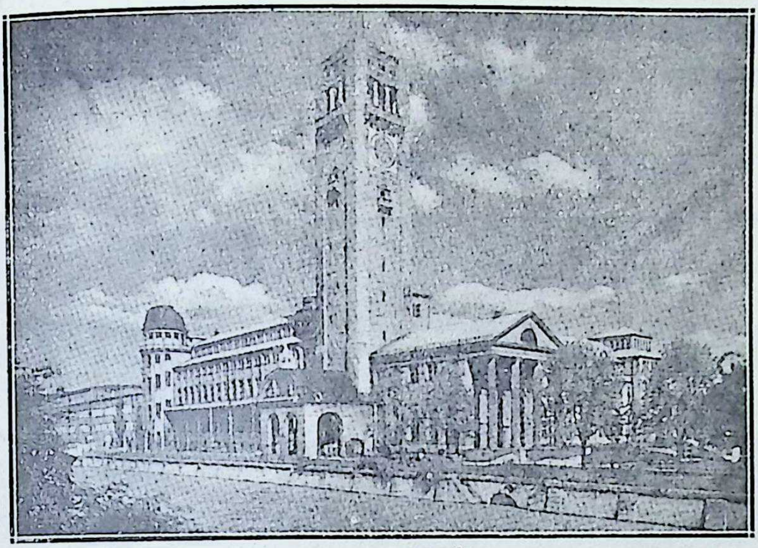

चित्र नं० १०

चित्र नं० ११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है और पहली रसीद से मिलाई जाती है जिससे पता चल जाता है यात्री देश का पैसा तो बाहर नहीं ले जा रहा है। हमारे देश की तरह यह आजादी नहीं है कि बम्बई के बन्दरगाह से जो कोई चाहे जितना धन बांधकर ले जा सकता है। जर्मन लोगों को स्वयं भी देश से बाहर सैर को एक खास रकम ही ले जाने को इजाजत है उसके व्यय हो जाने पर या तो सैर करने वाले देश में वापिस आ जावें या फिर अपना निर्वाह विदेश में स्वयं पैसा कमाकर करें। यहां के राजे महाराजों की तरह जर्मनी से बाहर विदेशों में अपरिमित धन को व्यय करने कोई नागरिक नहीं जा सकता।

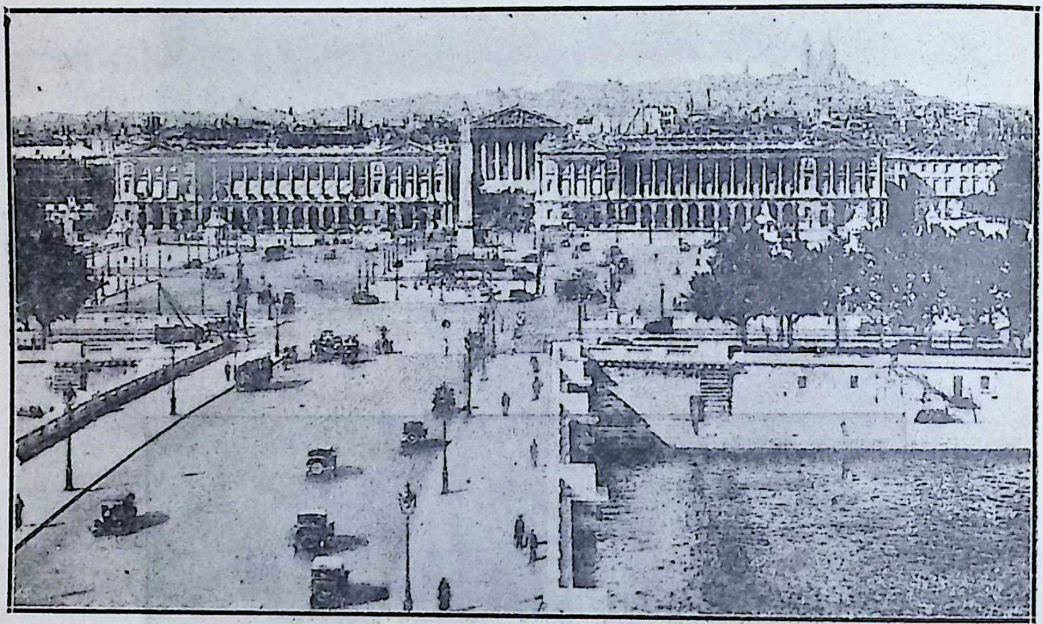

चित्र नं० १२

१२—पेरिस शहर का प्रसिद्ध चौक (Place de la Corcorde)—यहां पर छः सड़कें आकर मिली हैं। रात को यहां पर बड़ी रौनक रहती है। कहते हैं पेरिस शहर की सी रौनक संसार में कहीं पर नहीं। विदेशियों से रात को यह रौनक दिखाने के लिये यहां की कम्पनियां खूब रुपया ठगती हैं। जिन नाचघरों को देखने की फीस साधारणतः २) है उनके लिये ये कम्पनियां १०) तक ले लेती है। राजा महाराजा से तो लेने की रकम का कहना ही क्या। उनकी खातिर करने के लिये तो कई एजेन्ट ने हिन्दुस्तानी भाषा खूब सीख ली है। वैश्या घरों में जाना सोसाइटी की नजर में बुरा नहीं गिना जाता और इन घरों में कई जगह नग्न स्त्रियों के दर्शन करने के लिये हमारे सैकड़ों धनी भारतीय भाई पेरिस की यात्रा करते हैं। पेरिस का (Art Museum) संसार में अद्वितीय गिना जाता है परन्तु इस म्यूजियम में भी कुछ दर्शकों को स्त्रियों के चित्रों में न्यूनाधिक नग्नता का प्रदर्शन करना अखरता है। जर्मनी और इङ्गलैंड के वासियों के मुकाबिले में इस देश के चेहरे पर उतनी रौनक नहीं है और वे उनसे साधारणतः कमजोर दिखाई देते हैं। कोई कोई कहते हैं कि यह देश कृषि प्रधान देश है इसलिये यहां के वासी अधिक गरीब हैं। जहां पर आलीशान महल खड़े हैं वहीं एक ओर महागरीबी का दृश्य मुझे भी दिखाई पड़ ही गया। वह यह था कि सड़क पर मूंगफली के छिलकों में से एक लड़का साबित मूंगफली तलाश कर रहा था और एक मूंगफली मिल जाने पर बड़ी खुशी से उसे खा गया। कदाचित भारत ऐसे ग़रीब देश का भी भिखारी एक मूंगफली के लिये इतना कष्ट न उठायेगा। यहां तो मांगने पर उसे अनायास ही कोई दो एक मूंगफली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे देगा। कहते हैं फ्रान्स स्वाधीनता, समानता और सवान्धवता (Liberty Equality and Fratci-nity) का देश है और वहाँ पर ऊँच-नीच, देशी-विदेशी में भेद-भाव दृष्टिगोचर नहीं होता। परन्तु जिन जिन मित्रों ने मुझसे इस बात की बड़ाई की उनसे मैंने पूछा : कि क्या फ्रांसीसी हिन्दुस्तान (French India) की दशा बृटिश भारत से अच्छी है? तब वे चुप हो गये। यह सब सिद्धान्त इन देशों के घर पर भले ही लागू हों उपनिवेशों में कदापि नहीं वरते जाते।

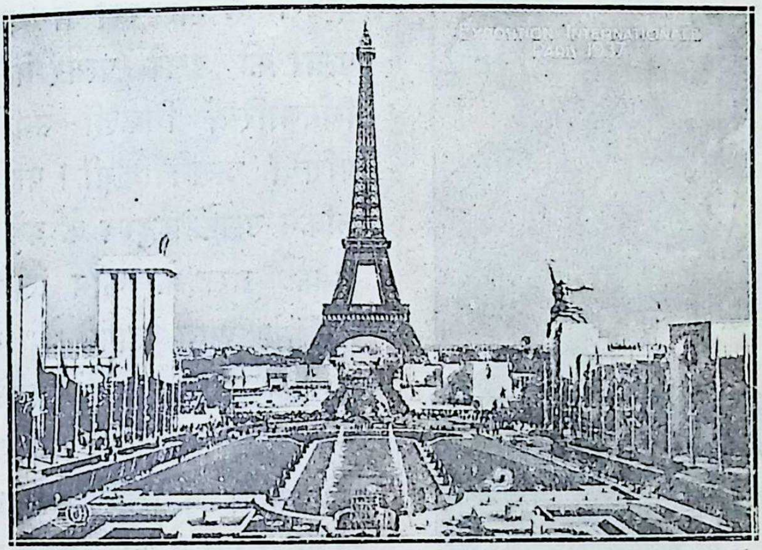

चित्र नं० १३

१३—पेरिस की सन् १९३६ की अन्तराष्ट्रीय नुमाइश में जर्मनी और रूस के भावों का दृश्य बड़े मार्के का था। बीच में ९०० फीट से अधिक ऊँचा ईफल टावर (Eiffel Tower) है जिसका स्थान उँचाई में संसार में दूसरा है। इस नुमाइश में संसार के प्रत्येक देश ने लाखों रुपये लगाकर अपना अपना भवन (pavellion) बनाया था जिसमें अपनी उन्नति का दिग्दर्शन चीजों और मोडिल्स के संग्रह से तथा नक्शे और इश्तहारों के द्वारा कराया था। बेचारे भारत को इस नुमाइश में भी स्थान न मिला। सुना जाता है कि पेरिस में रहने वाले कई गुजराती व्यापारी अपने खर्चे से एक भवन बनाकर भारतीय चीजों का प्रदर्शन करना चाहते थे परन्तु चूंकि वे उस भवन को बृटिश भवन से अलग रखना चाहते थे इस कारण उनको अपना भवन बनाने की आज्ञा न दी गई। बृटिश भवन भी बड़ा रद्दी था उसमें केवल मेज कुर्सी और खेल और शिकार के सामान का प्रदर्शन किया था। इङ्गलैंड के दर्शकों ने भी स्वयं बृटिश भवन की बुराई अंग्रेजी पत्रों में प्रकाशित कराई थी। यह नुमाइश करीब ६ महीने रही थी और प्रत्येक देश ने अपनी उन्नति का प्रचार संसार के यात्रियों में खूब किया और उनको अपने यहां आने को उत्साहित करने के लिये इश्तहार इत्यादि मुफ़ उनमें बांटे। भारत इससे भी वंचित रहा इसका दुख है।

—निरंजनलाल शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन

बहुत पुराने समय के लोगों को रोटी

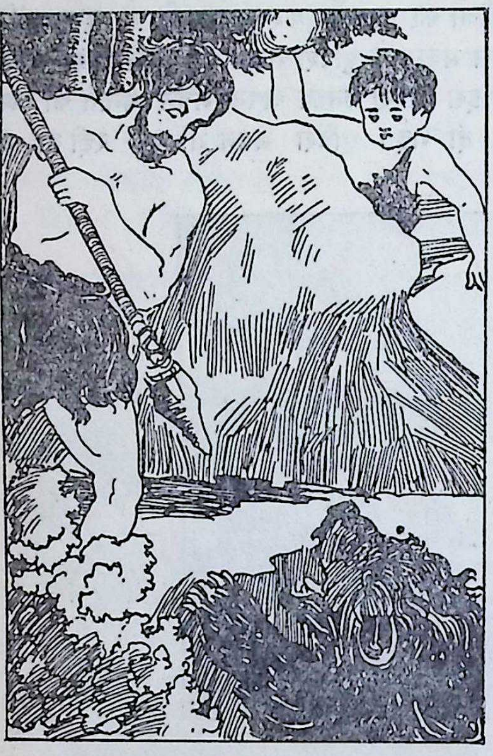

१—भोजन तयार है

खाने को नहीं मिलती थी। उस समय के लोग खेती करना नहीं जानते थे। उस समय के लड़के लड़कियों को जब भूख लगती तब वे जंगली बेर इकट्ठे कर के खाते थे। कुछ लड़के पेड़ों के ऊपर चढ़ कर जगली फल तोड़ लेते थे। उनके मां बाप तेज पत्थर को लकड़ी में बांध कर भाला बनाते और जंगली जानवरों का शिकार करने जाते। कभी कभी वे नदियों और झीलों से मछलियाँ पकड़ लाते। लेकि[न] उस समय के लोगों को आग का पता न था। वे मांस या मछली को तेज पत्थर से काट क[र] कच्चा ही खा जाते थे। फिर किसी ने आ[ग] का पता लगाया। शायद कोई लड़का दो पत्थरों से खेल रहा था। उसने कई बार ए[क] पत्थर को दूसरे पत्थर में मारा। इससे जो चिनगारियाँ निकलीं उनसे पास की सूखी पत्तियाँ जलने लगीं। पहले वह बहुत डरा लेकिन उसके कुटुम्ब के बड़े बूढ़े लोगों ने आग से कई तरह के काम लिये। वे ठंड से बचने के लिये आग तापते थे। वे कच्चे माँस को आग में भून कर और स्वादिष्ट बना कर खाने लगे। कुछ लोगों ने मछलियों और चिड़ियों को पकड़ने के लिये जाल तयार किये। कुछ लोगों ने हिरण और दूसरे जानवरों को मारने के लिये धनुष वाण बनाये।

मांस से ऊब कर कुछ लोग किसी दूसरे

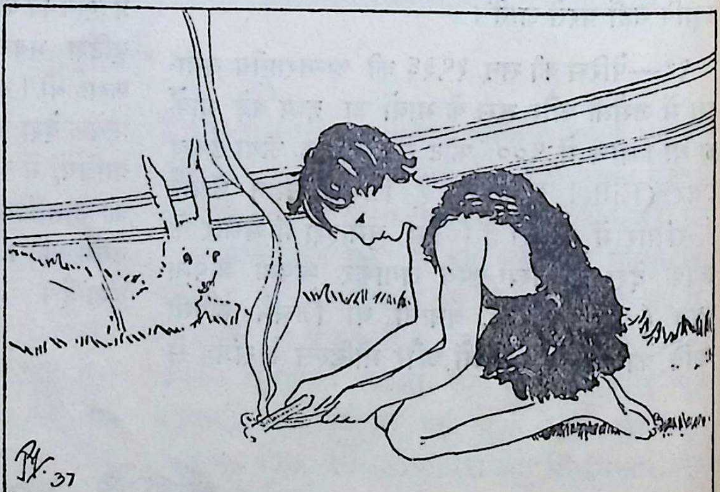

२—पुराने समय में आग बनाने का ढंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

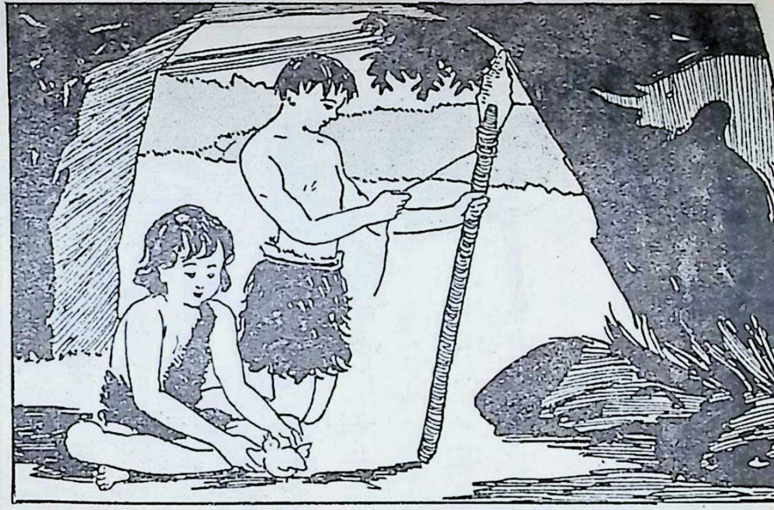

३—प्राचीन समय के जानवरों के शिकार करने का ढंग

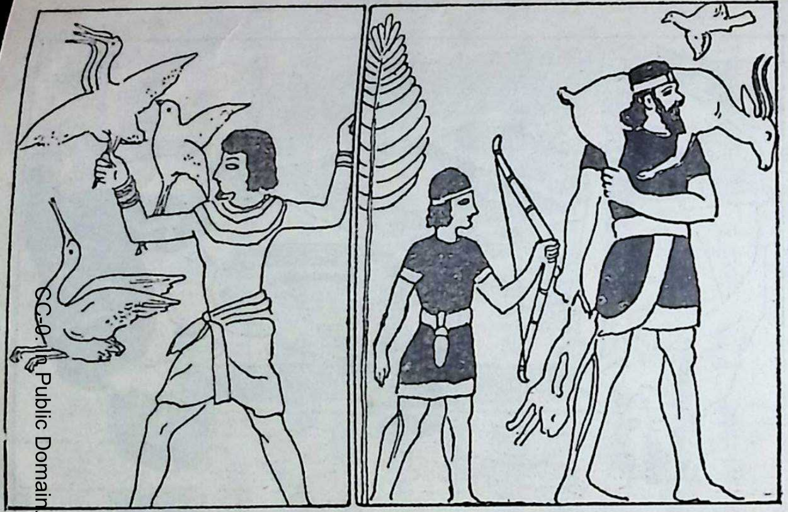

४—प्राचीन मिस्री और एसीरियन लोगों का भोजन

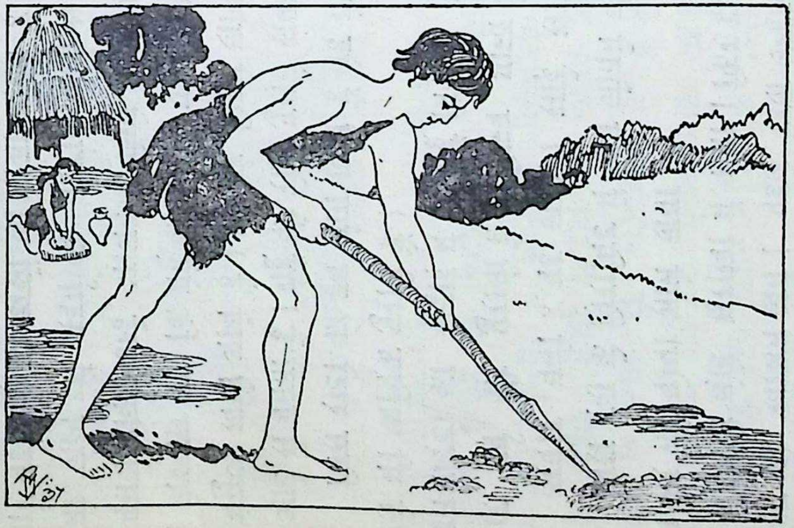

५—पुराने समय में खेतों की जुताई

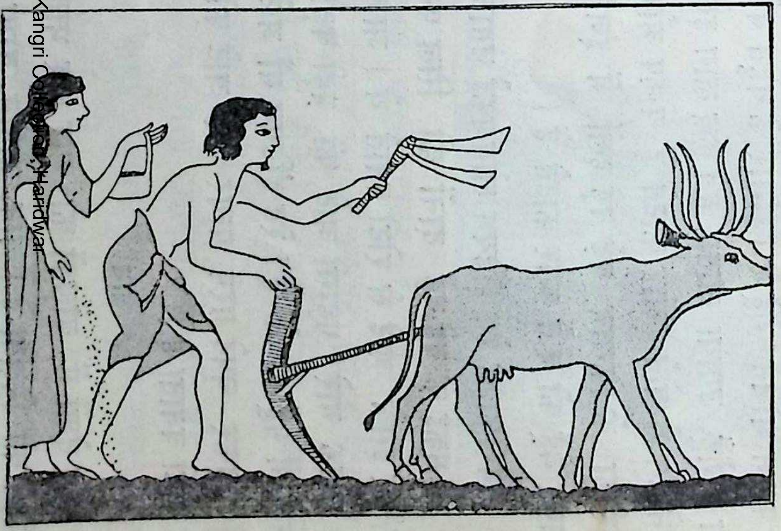

६—प्राचीन मिस्रियों का हल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन को खोजने लगे। पहले पहल उन्होंने गेहूँ को छोटे छोटे सूराखों में बोया। फिर हल जोत कर गेहूँ बोया जाने लगा।

मिस्र देश के पिरामिड में हल जोतने की जो तस्वीर बनी है वह लगभग साढ़े सात हजार वर्ष की पुरानी है। सिन्ध प्रान्त के मोहनजोदड़ो की खुदाई में जो गेहूँ मिले हैं वे इससे भी अधिक पुराने हैं।

जिस रोटी को हम लोग खाते हैं वह गेहूँ के आटे से बनती है। गेहूँ की रोटी पुराने समय से मनुष्य खाते आये हैं। प्राचीन मिस्री लोगों का विश्वास था कि गेहूँ को उनके एक देवता ने प्रसन्न होकर उन्हें भोजन के लिये दिया था चीनी लोग इसे स्वर्ग का वरदान कहते थे। हमारे यहाँ गेहूँ को अन्नों का राजा मानते हैं।

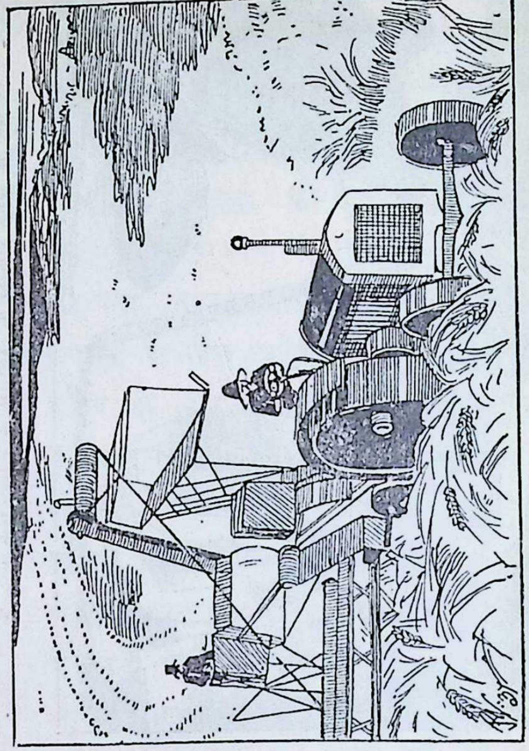

७—गेहूँ की कटाई

आज कल संसार के अधिकतर मनुष्यों का प्रधान भोजन गेहूँ है। संसार के बहुत बड़े भाग में गेहूँ उगाया जाता है। कुछ लोग इसे पुराने ढंग से बोते और काटते हैं योरुप और अमरीका के किसान बड़े बड़े हलों में इंजन लगाकर गेहूँ को बोते और काटते हैं।

अमरीका के रेड इंडियन लोग मकई उगाते थे। वे मकई के बड़े बड़े दानों को सिल पर पीस कर इसके आटे से रोटी बनाते थे। आज कल उनके गोरे पड़ोसी आटे की बड़ी बड़ी चक्कियों में गेहूँ पीसते हैं। रेड इंडियन माँ आटे को माड़कर चपटे गरम पत्थर पर आटे की मोटी रोटी बनाती है।

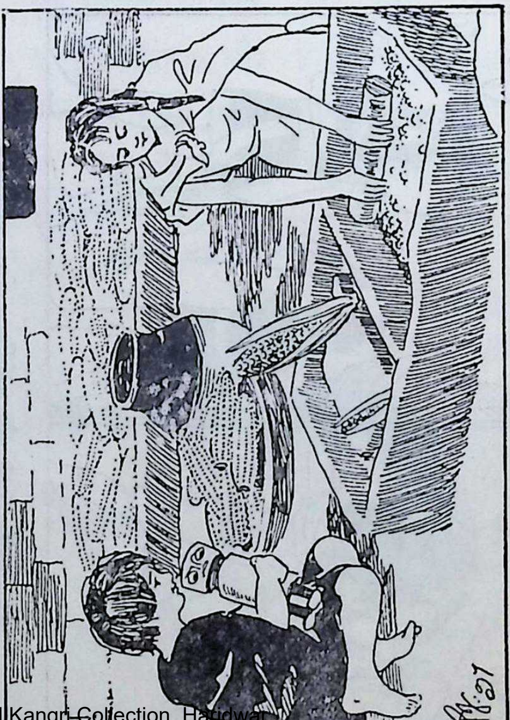

८—मकई का भोजन

धान

कुछ देशों में बालकों को बार बार भात ही खाने को मिलता है। चीन, जापान, बरमा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्याम और हमारे देश के बहुत से भागों में लोग चावल ही खाते हैं। इन भागों में धान का उगाना आसान है। यहाँ धान सस्ता बिकता है। इस लिये ग़रीब लोग अधिकतर भात ही खाते हैं।

धान कुछ पानी भरे हुए कीचड़ वाले खेतों में उगता है। धान बोने के पहले किसान खेत को खूब जोतता है। जोतने के लिये वह हल में बैल, भैंसा, घोड़ा, या टट्टू जोतता है। औरतें घुटने तक भरे हुए खेतों में धान लगाती है। किसान को इस बात का बड़ा डर रहता है कि कहीं चिड़ियां उसके बीजों या छोटे अंकुरों को खा न जावें। अक्सर वह उनको डराने के लिये खेत में इधर उधर झंडे लगा देता है। कभी वह घड़े को रंगकर उल्टा लटका देता है। कभी वह टाट या दूसरे पुराने कपड़ों का आदमी बनाकर खड़ा कर देता था।

बहुत से गरीब ज्वार और बाजरा की रोटी खाते हैं। यह वर्षा होते ही बो दिया जाता है। इसको बहुत पानी की जरूरत नहीं होती है। इससे जानवरों के लिये बहुत सा चारा मिल जाता है। यह अनाज सस्ता बिकता है। इस लिये बहुत से गरीब लोग ज्वार बाजरा की रोटी खाते हैं। ज्वार का दाना सफेद और चौड़ा होता है। बाजरा का दाना छोटा और कुछ काला होता है। ज्वार की रोटी सफेद और बाजरा की रोटी काली होती है। इसका आटा कुछ खुरदरा होता है। माँ को रोटी पोने में बड़ी होशियारी करनी पड़ती है। जब पोते पोते रोटी का कुछ भाग टूट पड़ता है तो उसे फिर से रोटी पोनी पड़ती है।

मछली मारने का काम बहुत पुराने समय से होता आया है। आज कल भी बहुत से देशों के लोग मछली मार कर अपनी गुज़र करते हैं। वे तरह तरह की नाव ले जाकर समुद्र झील या नदी से मछली पकड़ते हैं। कुछ मछलियाँ बड़ी होती हैं। वे फँस जाने पर छुड़ाने की कोशिश करती हैं। इससे अक्सर नाव उलट जाती है। हवा और तूफ़ान में भी

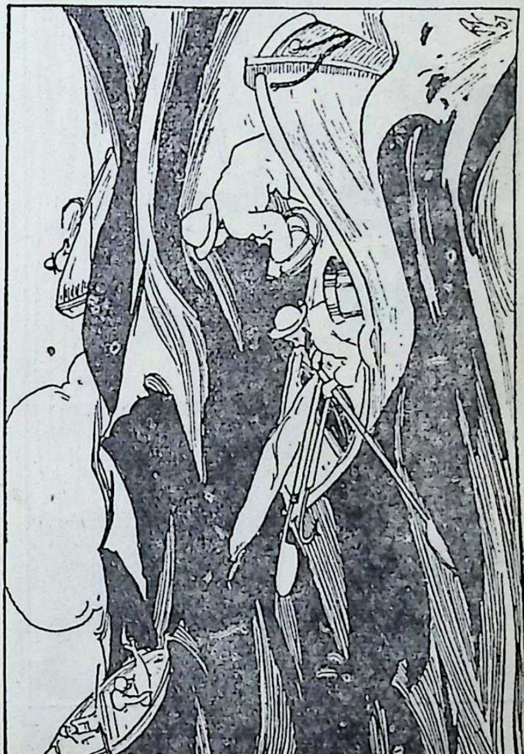

९—भोजन के लिये मछली मारना

मछली मारने वाला बड़े संकट में पड़ जाता है। जब वह मछली भर कर लौटता है तो सब लोग खुश होते हैं। कभी कभी उसे खाली ही लौटना पड़ता है।

जब नाव मछलियों से भरी हुई आती है तब लड़के लड़कियाँ मछलियाँ उतरवाने में मदद देती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शकर सब को अच्छी लगती है। बहुत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों तक लोगों को शक्कर का पता न चला। पहले जब लोगों को मीठी चीज़ खाने की इच्छा होती थी तो वे शहद खाया करते थे। शहद की मक्खियाँ इस शहद को इकट्ठा करती हैं। फिर एक ऐसे पौधे का पता लगा जिसके रस में मिठास था। यह गाँठदार गोल पौदा

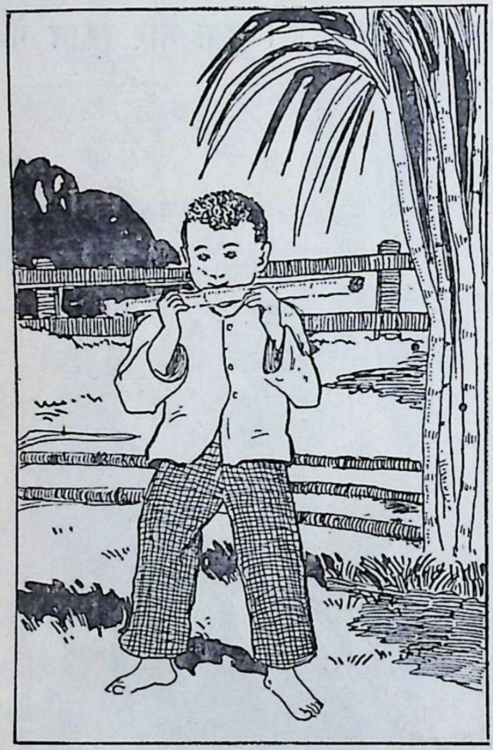

१०—गन्ना

काफी ऊँचा होता है। इसके सिरे पर लम्बी लम्बी पत्तियां होती हैं। जड़ के पास वाला भाग अधिक मीठा होता है। ऊपरी सिरा कम मीठा होता है। आज कल भी बहुत से लोग गन्ने को चूसते हैं। पत्तों को अलग करने के बाद इन गन्नों को कोल्हू में पेरते हैं। फिर इनके रस को औंट कर गुड़, राब और शक्कर बनाते हैं।

अमरीका के लोग शक्कर बनाने के लिये मेपिल नाम के बड़े पेड़ का रस निकालते हैं। बसन्त ऋतु में लोग मेपिल के बागों में जाकर हर एक पेड़ में छेद कर देते हैं। छेद के नीचे बाल्टी रख देते हैं। फिर इसी रस को इकट्ठा करके औंट लेते हैं। इसकी शक्कर भी गन्नों की

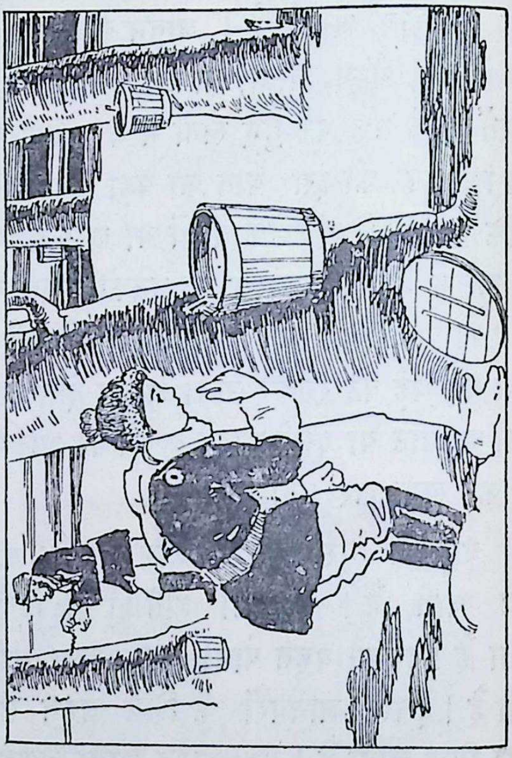

शक्कर की तरह होती है। योरुप के लोग चुकन्दर की जड़ों को पेर कर रस निकालते हैं और इस रस से शक्कर तयार करते हैं।

भोजन के लिये चिकनाई भी आवश्यक है। ठंडे प्रदेश में रहने वाले एस्किमो लोग ह्वेल और दूसरी मछलियों की चरबी खाते हैं। कुछ लोग तिल, सरसों, महुआ, बिनौले, पोस्त, जैतून, नारियल और मूँगफली आदि को पेर कर तेल निकालते हैं। इस तेल को वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

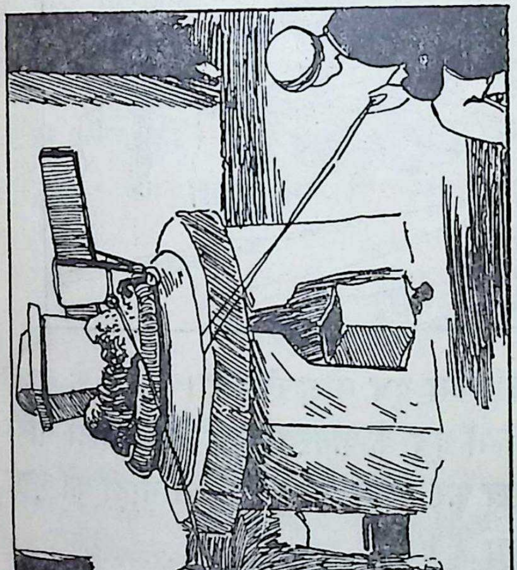

१२—चीनी

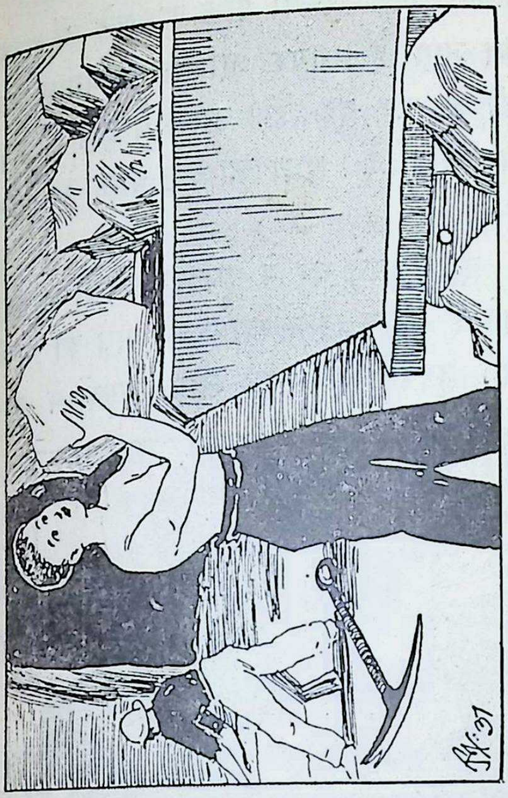

१३—नमक

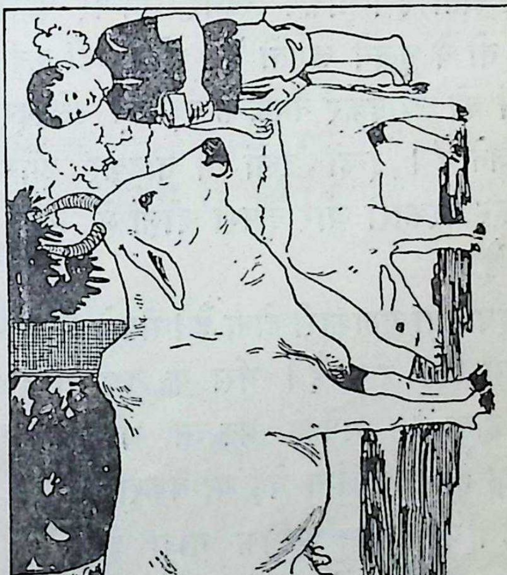

१४—दूध देने वाली गाय

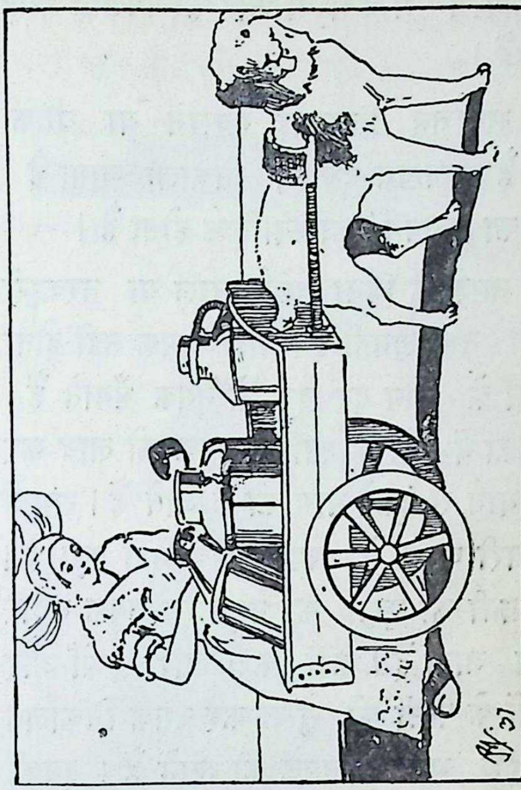

१५—बेल्जियम में दूध बेचने का ढंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने भोजन में ठंडा या औट कर मिलाते और खाते हैं।

सर्वोत्तम चिकनाई मक्खन या घी की होती है। मक्खन दूध से निकाला जाता है। गाय का मक्खन बड़ा स्वादिष्ट होता है।

नमक के बिना कोई दाल या तरकारी अच्छी नहीं लगती है। जहाँ नमक नहीं होता है वहाँ के लोग दूर दूर से नमक मँगाते हैं। अफ्रीका में ऊँटों के काफिले नमक को लाद कर एक भाग से दूसरे भाग को ले जाते हैं। समुद्रों के खारी पानी में अपार नमक भरा पड़ा है। इस पानी को सुखा कर बहुत सा नमक तयार किया जाता है। कहीं कहीं खारी कुओं और झीलों के पानी को सुखा कर नमक निकालते हैं। कुछ भागों में नमक की खानें हैं। इनकी चट्टानें ऊपर से देखने से पत्थर की तरह कड़ी मालूम होती हैं। लेकिन अगर उन पर पानी डालो तो वे घुलने लगती हैं। लोग इन्हीं कड़ी चट्टानों को खोदकर नमक के बड़े बड़े डले दूर दूर भेजते हैं। इन्हीं डलों को तोड़कर और पीस कर तरकारी और दूसरी चीज़ों में नमक डालते है।

दूध बड़ा गुणकारी होता है। सबसे अच्छा दूध गाय का होता है। भैंस का दूध अधिक गाढ़ा होता है उसमें से मक्खन भी अधिक निकलता है। कुछ लोग भेड़ या बकरी का दूध पीते है। यह बहुत अधिक गाढ़ा होता है। इसके सेर भर दूध में लगभग आध सेर या ढाई पाव चरबी निकलती है। रेगिस्तान के लोग ऊंटनी का दूध पीते हैं। ऊंटनी बहुत ऊंची होती है। उसको खड़े खड़े दुहना पड़ता है। दूध का बर्तन रस्सी बाँध कर गले में लटका लिया जाता है। मगर एशिया के मंगोल लोग घोड़ी का दूध दुहते हैं। उससे वे दही की तरह कूमिस बनाते हैं। गधी का दूध बहुत कम लोग पीते हैं।

कुछ अपने घर में दूध देने वाला जानवर पालते हैं। कुछ लोग ग्वाले की गाय को अपने सामने दुहवाते हैं। कुछ लोग बोतलों में बन्द

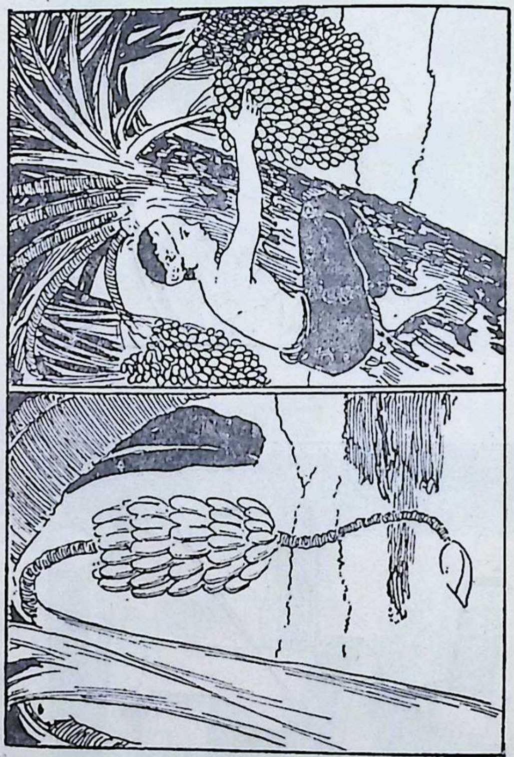
३६—केला और छुहारा

किया हुआ दूध मोल लेते हैं। हालैंड के लड़के लड़कियाँ दूध के कनस्तरों को एक छोटी गाड़ी पर रख कर बेचने जाते हैं। इस गाड़ी को कुत्ता खींचता है।

फल कई तरह के होते हैं। कुछ फल लताओं में कुछ पेड़ों में और कुछ झाड़ियों में लगते हैं। पहले इतने बड़े और अच्छे फल न थे। मनुष्यों ने इन्हें अच्छी ज़मीन में बोकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और समय से खाद और पानी देकर धीरे धीरे बड़ा किया है। आम हमारे बागों में लगता है। केला घर, कुएँ और खेत के पास लगाया जा सकता है। पपीता पानी बहने वाली नाली के पास या घर और बगीचे में अच्छा लगता है। नीबू और नारंगी के पेड़ बड़े हो जाने पर फल देने लगते हैं। बादाम, अखरोट, सेब, अंगूर, छुहारा आदि बहुत से फल बाहर से आते हैं। छुहारा रेगिस्तान की खुश्क जलवायु में पानी मिलने पर अच्छा लगता है। खरबूजा और तरबूज़ नदी के पड़ोस की तर ज़मीन में गरमी की ऋतु में उगाये जाते हैं।

तरह तरह के शाक और तरकारी गुणकारी होते हैं। यह दूसरे भोजन को शीघ्र पचाते हैं और पेट साफ रखते हैं। हमारे पड़ोस में बहुत से लोग मूली, आलू, भिंडी, गोभी, सेम, सोआ, मेथी, लौकी आदि कई तरह की तरकारी उगाते हैं। इनमें से कुछ चीज़ें हम लोग अपने घर या बगीचे की छोटी छोटी क्यारियों में भी उगा सकते हैं। ताज़ी तरकारी बड़ी अच्छी होती है। कुछ लोग साग को सुखा कर दूसरी ऋतु के लिये रख लेते हैं। दूर देशों में

१७—आलू

भेजने के लिये तरकारी बरफ में दबा कर भेजी जाती है। इससे वह रास्ते में नहीं बिगड़ती है।

चेकोस्लोवेकिया की हत्या

(शान्ति स्वरूप गुप्ता, एम० ए०)

चेक राष्ट्र का जन्म

चेकोस्लोवेकिया (Czechoslovakia) के स्वतंत्र राष्ट्र का जन्म देशभक्त मसारिक(Masaryk) बेनिस (Benes) और स्टीफानिक (Stephanik) के असीम साहस और अथक परिश्रम के द्वारा १९१९ के महायुद्ध के पश्चात हुआ। राष्ट्रपति विलसन (President Wilson) प्रजातन्त्रवाद और राष्ट्रवाद के भक्तों में थे। अतः उन्होंने इस नये राष्ट्र के बनने में सहायता दी। मि० लायड जार्ज (Mr. Lloyd George) और म० क्लामांसो (M. Clemenceau) ने इसकी सहायता राजनीतिक दृष्टि से की। वे बोहीमिया (Bohemia) को आस्ट्रिया (Austria) से अलग करना चाहते थे क्योंकि यहाँ पर उसके मुख्य औद्योगिक सामग्रियों के केन्द्र स्थित थे। इस प्रकार वोहीमिया (Bohemia) मोरेविया (Moravia) स्लोवेकिया (Slovakia) और रूथेनिया (Ruthenia) को मिला कर चेकोस्लोवकिया के नये राष्ट्र को रचना की गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ से ही यह एक कृत्रिम राष्ट्र था। महाशक्तियां राष्ट्रवाद के सिद्धान्त को भूल गईं। अतएव चेकोस्लोवेकिया एक राष्ट्र न हो सका। इसकी जनसंख्या में ७० प्रतिशत चेक २० प्रतिशत जर्मन और १० प्रतिशत रूथेनियन थे। इसकी स्थिति भी भय से रहित न थी। शक्तिशाली राष्ट्र इसे चारों ओर से घेरे हुए थे। उत्तर-पश्चिम में जर्मनी, पश्चिम में आस्ट्रिया (जो अब जर्मनी से संयुक्त हो चुका है) पूर्व में पोलैंड (Poland) और दक्षिण में हंगारी (Hungary) ये राष्ट्र सदैव इस पर अपनी लोभ की दृष्टि जमाए रहे हैं। यहाँ का शासन-विधान उदार और प्रजातांत्रिक है। किन्तु इस राष्ट्र में कितनी ऐसी कमजोरियाँ हैं जो इसके पड़ोसियों को हस्तक्षेप करने का अवसर देती रही है।

अल्पसंख्यकों का प्रश्न

चेकोस्लोवेकिया की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि वहाँ पर जर्मन स्लोवैक, पोल (Poles) मेगायर (Magyar) और रूथेनियन इत्यादि जातियों के अल्पसंख्यकों की प्रथक प्रथक बस्तियाँ हैं। वे चेक राष्ट्र में अपनी सत्ता को मिलाना नहीं चाहते। अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी शासन-प्रणाली पर वे पूर्ण स्वायत्त अधिकार चाहते हैं। इतना ही नहीं इस अधिकार को प्राप्त करने के लिये वे जर्मनी, पोलैंड और हंगारी से सहायता पाने के लिये चेकोस्लोवेकिया के विरुद्ध खड़यन्त्र रचते रहते हैं। सूडेटन जर्मनों ने हर हेनलाइन (Herr Henlein) के नेतृत्व में नाज़ी (Nazi) दल बनाया और जर्मनी के तानाशाह हिटलर से सहायता के लिये प्रार्थना की। स्लोवैक लोगों ने भी देखा कि अवसर अच्छा है। फादर श्री लिंका (Father Hlinka) ने सूडेटनों से मिलकर अपना उद्देश्य सिद्ध करना चाहा। पोल और मेगायरों ने पोलैंड और हंगारी से सहायता की याचना की। इस प्रकार इन अल्पसंख्यकों ने १९३८ में चेकोस्लोवेकिया के अंग-भंग करने की सम्पूर्ण सामग्री प्रस्तुत कर दी।

चेक-जर्मन कलह का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व

चेकोस्लोवेकिया का प्रश्न केवल अल्प-संख्यकों और बहुसंख्यकों का ही नहीं है। योरोप के अन्य राष्ट्र भी उसमें आवश्यकता से अधिक दिलचस्पी ले रहे हैं। इनमें मुख्य पोलैंड, हंगारी और जर्मनी है। ये राष्ट्र प्राहा (Hlinka) की आन्तारिक कठिनाइयों से लाभ उठाकर अपने अपने राज्यों की सीमा बढ़ाना चाहते हैं।

पोलैंड और चेकोस्लोवोकिया में टेश्चेन (Teschen) प्रान्त के लिये पुराना झगड़ा चला आता है। यहाँ पोल अल्पसंख्यक रहते हैं और पोलैंड उन्हें चेक राष्ट्र से पृथक हो जाने और अपने में मिल जाने के लिये प्रोत्साहन देता रहा है। इसी प्रकार हंगारी की आंखें हंगेरिया इरेडेंटा (Hungaria Irredenta) पर गड़ी हुई हैं। हंगारी की स्थिति आज अत्यन्त ही कठिन हो गई है। हिटलर की शक्ति बढ़ती जा रही है। उसकी नजर रूमानिया के तेल के सोतों पर हैं। वहाँ पहुँचने के लिये हंगारी बीच में पड़ता है। अतएव अभी से हंगारी हिटलर को मित्रता के लिए व्याकुल है। हंगारी के रीजेंट ऐडमिरल हौर्थी (Admiral Horthy) का बर्लिन जाना और हिटलर से मिलना इस बात का निश्चित प्रमाण है। यही कारण है कि हिटलर के चेक राष्ट्र से सूडेटनलैंड मांगने में भी हंगारी ने जर्मनी का ही साथ दिया।

जर्मनी सूडेटनलैंड (Sudetenland) पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिये उत्सुक था। वास्तव में हिटलर ही चेकोस्लोवेकिया का हत्यारा है क्योंकि अकेले पोलैंड और हंगारी चेक राष्ट्र का कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे। न उनमें इतनी शक्ति थी और न इतना साहस कि ब्रिटेन, फ्रांस और रूस के समान शक्तिशाली योरुपीय राष्ट्रों की कुछ भी परवाह न कर निरपराध चेक राष्ट्र को युद्ध की धमकी देते।

जर्मनी को इतनी हिम्मत कैसे हुई ?

अत्याचार को सहने की भी एक सीमा है। १९१८ में विजयी राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ भयंकर अन्याय किया। वरसायी (Versailles) के संधिपत्र ने जर्मनी को नितान्त निःसहाय और पंगु बना दिया। १९३२ तक जर्मनी महाशक्तियों के अत्याचार को चुपचाप सहता रहा। किन्तु एक मनुष्य के हृदय में बदला लेने की आंधी उड़ रही थी। वह था एडोल्फ हिटलर (Adolf Hitler) उसने नाज़ी दल का संगठन किया और १९३३ में जर्मनी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांसीलर (Chancellor) बन बैठा। संयुक्त और संगठित जर्मनी की सम्पूर्ण लौह-शक्ति से उसने वरसायी के टुकड़े टुकड़े कर डाले। जर्मन राष्ट्र फिर ५ वर्ष के अन्दर ही सशस्त्र और शक्तिशाली बन गया। अब हिटलर को जर्मनी की सीमावृद्धि करने की धुन सवार हुई। गूच(Goohc) के कथनानुसार हिटलर का राष्ट्रवाद में कट्टर विश्वास है। वह यूरोप के बिखरे हुए सम्पूर्ण जर्मनों को एक अखिल जर्मन साम्राज्य में मिलाना चाहता है। सबसे पहले उसने आस्ट्रिया की ओर दृष्टि फेरी।

डा० शुसनिग (Schusnigg) और डा० बेनिस (Benes) जानते थे कि यदि आस्ट्रिया और चेकोस्लोवेकिया में से किसी पर भी जर्मनी का अधिकार स्थापित हो गया तो दूसरा सुरक्षित न रह सकेगा। अतएव डा० होड्ज़ा (Hodza) ने डैन्यूब नदी के निकटवर्त्ती राज्यों का एक डैन्यूबियन संघ बनाने के लिये अपना होड्ज़ा प्लैन (Hodza Plan) बनाया। किन्तु ऐसा होने से पहले ही हिटलर ने आस्ट्रिया को जर्मनी में मिला लिया और डा० बेनिस और डा० होड्ज़ा दांत पीस कर रह गये। अब चेकोस्लोवेकिया की मुख्य रेलें शत्रु देश में होकर जाती है और इस प्रकार उसका आर्थिक अधिकार हिटलर के हाथ में आ गया है।

सूडेटन आन्दोलन

आस्ट्रिया पर अपना अधिकार स्थापित कर लेने के बाद हिटलर ने सूडेटनलैंड को लेने का संकल्प किया। हर हेनलाइन के नाज़ी दल को अब हिटलर का प्रोत्साहन मिलना आरम्भ हो गया और उसने सूडेटनलैंड की स्वाधीनता के लिए चेक राष्ट्र के विरुद्ध आन्दोलन करना आरम्भ कर दिया। हेनलाइन हिटलर का प्रतिनिधि है और उसकी मांगें हिटलर की मांगें थीं। चेक सूडेटनों का अलग होना नहीं चाहते थे। क्योंकि ऐसा होने से उनकी जनसंख्या और देश का एक बड़ा भाग जर्मनी के हाथों में चला जायगा। उनके मुख्य ओद्योगिक प्रदेश और उनकी सशस्त्र सीमा पर जर्मनी का अधिकार हो जायगा और इस प्रकार वे जर्मनी के सामने पूर्णतया निःशक्त और असहाय बन जायंगे जर्मनी अत्यन्त ही शक्तिशाली बन बैठेगा। अब तो योरुप के अन्य राष्ट्रों को भी शंका हुई। बोहीमिया की स्थिति सैनिक और राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। यदि वह जर्मनी के हाथ में चला जाय तो हिटलर के लिए दक्षिण-पूर्व की ओर काले सागर का माग खुल जायगा। मेडिटरेनियन सागर का पश्चिमी छोर भी जर्मनों से सुरक्षित न रह सकेगा। पूर्व का प्रश्न

मध्य योरुप में चेकोस्लोवेकिया का स्थान

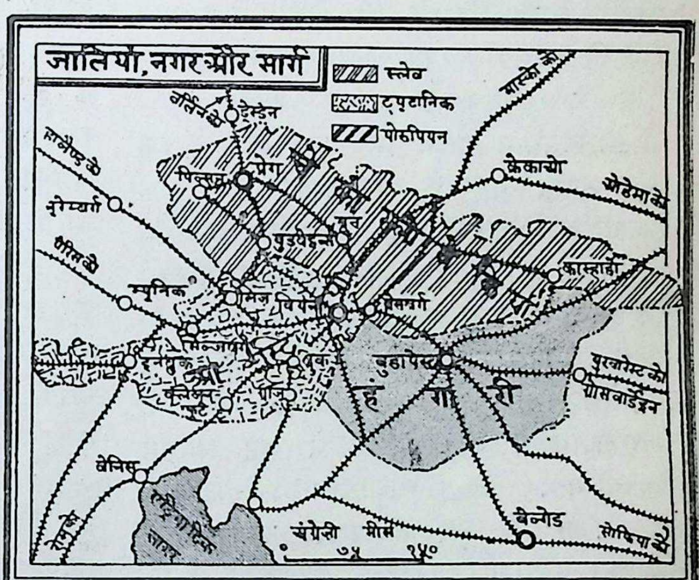

(Eastern Question) भी फिर जीवित हो उठेगा। फ्रांस, ब्रिटेन और रूस ने अपनी अपनी फ़ौजें तय्यार करनी शुरू कर दीं। चेकोस्लोवेकिया की रक्षा के लिये सब ने बचन दे दिया।

जर्मनी की युद्ध के लिए तैयारी

हिटलर भी चुप न था। हेनलाइन ने कार्लबा (Carlsbad) में अपनी मांगें चेक राष्ट्र के सामने रक्खीं। उनमें मुख्य यह थीं—

१ सूडेटनलैंड का चेकोस्लोवेकिया से अलग होना।

२ जर्मन प्रदेश में जर्मन अफ़सर।

३ सूडटनों की सामाजिक, धार्मिक और वैधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निक स्वतंत्रता और उनको स्वायत्त शासन का अधिकार।

अब ब्रिटेन ने लार्ड रन्सीमैन (Lord Runciman) को चेक और सूडेटनों के झगड़े का निपटारा करने के लिए मध्यस्थ बनाकर भेजा। उनकी चेष्टाएँ विफल हुईं। अब ब्रिटेन और फ्रांस ने हिटलर के सामने अपने एंग्लों-फ्रेंच्च प्रस्ताव (Anglo-French Proposals) रक्खे। हिटलर ने उनको मानने से साफ़ इन्कार कर दिया और चेक राष्ट्र को युद्ध की धमकी दे दी। जर्मनी की फ़ौजें सुसज्जित होने लगीं। ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चेकोस्लोवेकिया ने भी जर्मनी का मुक़ाबिला करने के लिए सेनाओं को एकत्रित करना आरम्भ कर दिया। ऐसा ज्ञात होता था कि भयंकर महायुद्ध का होना अनिवार्य है।

मि० चेम्बरलेन का समझौते के लिए प्रयत्न

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री मि० चेम्बरलेन ने इस समय सराहनीय साहस से काम लिया। संसार को दूसरे महायुद्ध की भयंकरता से बचाने और चेक प्रश्न को शान्ति पूर्वक तै करने के लिए वे वायुयान में स्वयं उड़कर जर्मनी गए और बर्ख़टेसगाडन में (Berchtesgaden) हिटलर से मिले। दो तीन दिन बाद वे फिर गोडेसबर्ग (Godesberg) में जर्मनी के चांसलर से मिले। वहाँ हिटलर ने उन्हें अन्तिम बार अपनी मांगें (Memorandum) दे दिया। यह एक प्रकार की युद्ध की धमकी थी। संसार में भय और निराशा के बादल फिर छाने लगे। ब्रिटेन के नौ-सेना अध्यक्ष श्री० डफ़-कूपर (Duff Cooper) ने अंग्रेज़ी जंगी बेड़े को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा दे दी। मि० चेम्बरलेन ने शान्ति-रक्षा के लिए अब अपना अन्तिम प्रयत्न किया और समझौता कराने के लिए इटली के तानाशाह और हिटलर के परम मित्र सिगनर मुसोलिनी (Signer Mussolini) से अपील की। अब हिटलर भी कुछ सशंकित हुआ और उसने म्यूनिक (Munich) में मुसोलिनी, मि० चेम्बरलेन और फ्रांस के प्रधान मंत्री म० दलादियेर (M. Daladier) को आमंत्रित किया।

म्यूनिक का समझौता

म्यूनिक में फ्रांस और ब्रिटेन ने हिटलर की सब शर्तें स्वीकार कर लीं। सूडेटनलैंड जर्मनी को मिल गया। पोलैंड और हंगारी भी जिन जिन प्रदेशों को पाना चाहते थे उनके लिए चेक राष्ट्र की सम्मति पा चुके हैं। इस प्रकार निरीह हिटलर ने म्यूनिक में यूरोप के शक्तिशाली राष्ट्रों से मिल कर असहाय और निर्दोष चेकोस्लोवेकिया की निर्मम हत्या कर डाली।

चेक राष्ट्र के साथ विश्वासघात

मि० चेम्बरलेन ने निःसन्देह संसार को महायुद्ध के गर्त्त में गिरने से बचा लिया किन्तु योरुप के राष्ट्रों ने चेक राष्ट्र के साथ जो कलंकित विश्वास घात किया है उसके लिए चेकोस्लोवाकिया सदैव उनका कृतज्ञ रहेगा। उसकी आर्थिक स्वतंत्रता का गला घुट चुका है। उसकी राजनीतिक स्वतंत्रता के दिन भी इने गिने हैं। उसकी स्वतंत्रता की रक्षा का उत्तरदायी ब्रिटेन था। लार्ड रन्सीमैन को समझौते के लिए भेज कर, बहुत से अल्प-संख्यकों का मिलाकर चेकोस्लोवेकिया को जन्म देकर, एंग्लो-फ्रेञ्च प्रोपोज़ल्स (प्रस्ताव) उससे ज़बरदस्ती स्वीकृत कराकर और अंतर्राष्ट्रीय सङ्घ का सदस्य हो कर, ब्रिटेन ने उसकी रक्षा का उत्तरदायित्व ले लिया था। किन्तु उसकी रक्षा करना तो दूर, उसे म्यूनिक में बुलाया तक नहीं गया। उसके साथ युद्ध में पराजित शत्रु की अपेक्षा से भी अधिक कठोर व्यवहार किया गया। यह विश्वासघात ब्रिटेन की कीर्ति को संसार में सदैव अमर रक्खेगा।

भविष्य

संसार से आज युद्ध के काले बादल हट गए हैं। २० वीं शताब्दी की सभ्यता और संस्कृत को नया जीवन मिल गया है। किन्तु जर्मनी के हृदय में अभी तक है वही अशान्ति और साम्राज्य- विस्तार की विकट कामना। संसार का प्रत्येक राष्ट्र अस्त्रीकरण की दौड़ में सब से बाजी लेने की चेष्टा कर रहा है। साम्राज्यवाद का भूत सभी राष्ट्रों के सिर पर सवार है। पारस्परिक विश्वास के स्थान पर है पारस्परिक अविश्वास। आर्थिक और सांस्कृत प्रतियोगिता की आंधी में प्रत्येक राष्ट्र उड़ जाना चाहता है। इन सब का परिणाम क्या होगा? इस प्रश्न का उत्तर जितना ही सरल है, उतना ही भयंकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-तत्व

प्राकृतिक भूगोल के सम्बन्ध में हिन्दी में अद्वितीय ग्रन्थ, पृष्ठ-संख्या २८६, लगभग २०० चित्र और नक़्शे, सुन्दर रङ्गीन कपड़े की जिल्द। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

भूतत्व के प्रथम भाग में पृथ्वी, सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, परिमाण, दिन-रात, अक्षांश देशान्तर, प्रामाणिक समय, तिथिरेखा मानचित्र और ऋतुपरिवर्तन का वर्णन है।

द्वितीय भाग में स्थल-मंडल के सभी अंगों (भूपंजर, आग्नेय पर्वत, रिफ़्ट घाटी, गैसर, भूकम्प, पठार मैदान, धरती, नदी, झील, समुद्र-तट आदि) का विवेचन है।

तृतीय भाग में जलमंडल-महासागर, गहराई, निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ) प्रवालद्वीप, खारीपन, तापक्रम, ज्वार-भाटा, समज्वार-रेखाओं, धाराओं, गल्फ स्ट्रीम और सारगासो सागर का वर्णन है।

चतुर्थ भाग में वायुमंडल की व्याख्या है। आक्सिजन, नाइट्रोजन, भाप, त्रसरेणु, ताप, बादल, कुहरा, ओस, मेंह, हिम ओला, विद्युत, मौसम, मौसमी हवाओं, ट्रेड हवाओं, पछुआ हवाओं, समभार-रेखाओं, समताप रेखाओं, चक्रवात, वर्षा, जलवायु सम्बन्धी प्रदेशों का वर्णन है।

पंचम भाग में जीवधारी मण्डल, वनस्पति, पशु, मनुष्य जाति, पेशे, खनिज और कारख़ानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अब तक ऐसा सर्वाङ्ग पूर्ण प्राकृतिक भूगोल प्रकाशित नहीं हुआ था। शीघ्र ही आर्डर भेजिये।

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

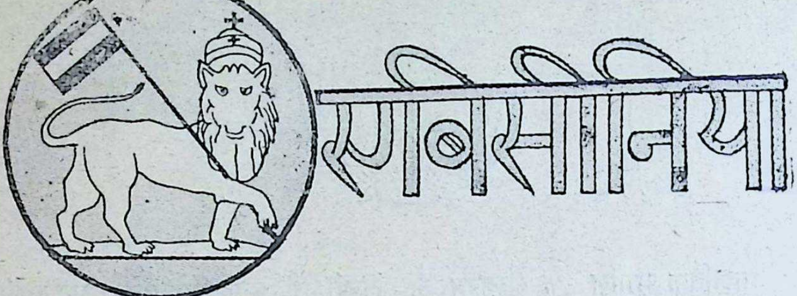

हिन्दी-सामयिक पत्र जगत में मासिक "भूगोल" का एक मुख्य स्थान है। अपने विषय की सुन्दर सामग्री देने में वह सदैव अग्रगामी रहा है। प्रस्तुत विशेषांक में एबीसीनिया का इतिहास, भौमिक-चित्रण आदि सभी बातें दी गई हैं। इस एक पुस्तक के पढ़ लेने से एबीसीनिया के नर-नारी और भूमि, जंगल, नदी, पहाड़ आदि के विषय में काफी ज्ञान हो जाता है। यह अंक विद्यार्थियों के तो काम का है ही, परन्तु साधारण पाठक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इस अंक का मूल्य ।।) है। भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद से प्राप्य। "स्वराज"

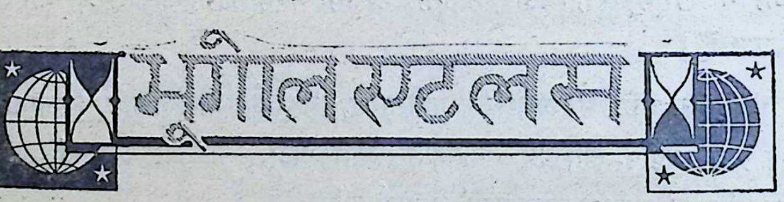

इस भूगोल-एटलस से संसार के विभिन्न देशों की राजनैतिक सीमा और विभागों के सिवा उनकी पैदावार, आयात और निर्यात, जलवायु, मिट्टी, स्थल की ऊँचाई और निचाई, वर्षा का परिमाण, जन-संख्या, वहाँ के निवासियों का भोजन और वस्त्र, व्यापार आदि सैकड़ों विषयों का ज्ञान हो जाता है। अन्त में कुछ नक्शे ऐसे भी दिये गये हैं जिन से विदित होता है कि पिछले डेढ़ हज़ार वर्षों में किस शताब्दी में संसार के कितने भूभाग का पता लोगों को था। इन तमाम दृष्टियों से यह एटलस सभी भूगोलप्रेमियों के लिये संग्रहयोग्य है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये तो यह एक अमूल्य भेंट है। इसके द्वारा भूगोल का ज्ञान ऐसी सरलता से हो जाता है कि तनिक भी परिश्रम नहीं जान पड़ता।—"चाँद"

शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत, पृष्ठ संख्या ११९ मूल्य १)

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-संसार

बाल-संसार की एक प्रति देकर अपने बालकों को दूसरे देशों के बालकों का हाल बताइये और उनमें नया जीवन डालिये।

संक्षेप में बाल-संसार में १११ बालकों के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा उनके देशों के जीवन की झांकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस अंक में लगभग तीन सौ चित्र हैं। जिनसे इस अंक की रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार में पांच भाग हैं। पहले भाग में अफ्रीदी, नैपाली, सिन्धी, वर्मी सिंहाली आदि भारतवर्ष के बच्चों का वर्णन है। दूसरे भाग में चीनी, जापानी, स्यामी, अफ़गानी, ईरानी, अरबी, तुर्की, आदि एशिया के बालकों पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे भाग में अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी आदि योरुप के बालकों के रहन सहन का वर्णन है। चौथे भाग में एस्किमो, रेड इंडियन, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्रेज़ील, पीरू, अर्जेन्टाइना आदि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बालकों का वर्णन है। पांचवें भाग में अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहने वाले बालकों का वर्णन किया गया है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है।

तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है।

बड़े आकार (१० X ७½) के २६० पृष्ठ, मूल्य १॥) सजिल्द १॥।), प्रत्येक भाग का अलग मूल्य ।=)

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन-अंक

चीन अंक के दो भाग हैं। पहले भाग में चीन की स्थिति, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, पशु-पालन, कारबार, शिक्षा, समाचारपत्र, कहावतें। मनोरंजन, खेलकूद, हवाई डाक और हवाई सेना, मार्शल च्यांगकाई शेक, मेडम च्यांगकाई शेक, हुइशी (चीन के गान्धी), डा० सन्यातसेन, धार्मिक व्यवस्था, चित्रकला, चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट, जापानी साम्राज्य, चीन में घुसने के मार्ग, मङ्गोल लोगों का देश चीनविच्छेद, नानकिंग की सरकार रूस का पूर्वी प्रदेश, चीन और जापान, मन्चूकुओ की स्थापना, आधुनिक परिस्थिति, राजनैतिक रूप रेखा, चीन का साम्यवादी दल, चीन जापान संघर्ष और जनरल चूतेह की अपील है। इसमें कई नक़शे और चित्र हैं। बड़े आकार की पृष्ठ संख्या ८८, मूल्य ॥)।

दूसरे भाग में चीन की एटलस है। प्रत्येक प्रान्त के पूरे (बड़े) पृष्ठ के २४ नक़शे। चीन देशका बड़ा नक़शा (दो पृष्ठों पर)। इसी भागमें नक़शों की व्याख्या और प्रान्तों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त १६ ऐतिहासिक नकशे, ऐतिहासिक घटनाओं की सूची, और चीनी इतिहास के चुने हुए चित्र हैं। अन्त में संसार में चीन का आर्थिक स्थान प्रदर्शित करने के लिये ८ आर्थिक नकशे और कई डायाग्राम (खाके) हैं। मूल्य ॥) दोनों भागों का एक साथ मूल्य बारह आना।

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक इतिहास एटलस

पृष्ठ संख्या १४७, नकशों की संख्या ७४। इस पुस्तकाकार एटलस में एक पृष्ठ पर नक़शा और उसके सामने वाले पृष्ठ पर उसकी व्याख्या है। वर्सेल्स (वर्साई) की सन्धि, जर्मनी की पश्चिमी सीमायें, पोलिश कारीडार, रूस के खोये हुए प्रदेश, लिटिल एण्टेण्ट, यूगोस्लैविया की जातियां, पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प संख्यक जातियां, स्पेन की गृह-कलह भूमध्य सागर में राष्ट्रों का संघर्ष, इटली और लालसागर, इब्न सऊद की विजय, चीन विच्छेद, अफ्रीका के स्वाधीन राज्य, संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हब्शियों की समस्या, दक्षिणी अमरीका की जातियां आदि सभी प्रसंगों के व्याख्या सहित बड़े बड़े नक़शे दिये गये हैं जिनका दैनिक पत्रों में उल्लेख आता है। यह एटलस आजकल की घटनाओं से दिलचस्पी रखने वालों के बड़े काम की चीज़ है। मूल्य केवल ॥)

देश-निर्माता

इस ७२ पृष्ठ की छोटी सी पुस्तक में उन ११ नेताओं की रोमांचकारी जीवनियां हैं। जिन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर अपने अपने देश में नई जान फूंकी है। भारत के महात्मा गान्धी, चीन के च्यांग काई शेक, टर्की के मुस्तफा कमाल पाशा, ईरान के रिजाशाह, रूस के लेनिन, अरब के इब्न सऊद, इटली के मसोलिनी, जर्मनी के हिटलर, आयरलैंड के डी वेलरा, पोलैंड के पिल्सुड्स्की और चेकोस्लोवेकिया के मसारिक ने किस प्रकार अपने अपने देश को बनाया उन उन घटनाओं पर इस पुस्तक में पूराप्रकाश डाला गया है। रंगीनकवर पर सभी निर्माताओं के चित्र हैं। शीर्षक पर नेता के चित्र के साथ देश का नकशा भी दिया गया है। मूल्य केवल चार आना।

हमारी दुनिया

पृष्ठ संख्या ८४, चित्र और नकशों की संख्या ८१, आर्ट पेपर का तिरंगा कवर। यह वास्तव में भूगोल की पहली सीढ़ी है। मोटे टाइप और सरल भाषा में नाप का साधारण ज्ञान, दिशा-ज्ञान, नियत पैमाने पर नक़शा बनाना, गांव और शहर के नक़शे का पढ़ना, नदी की रामकहानी, तारे, चन्द्रमा, सूर्य और गोले का दर्शन आदि ११ पाठ हैं। पुस्तक इतनी रोचक है कि बालक आरम्भ करके इसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ना चाहते हैं। इससे उन्हें भूगोल के मूलमन्त्रों का सहज ही ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों के लिये भी इसमें दो शब्द हैं। बिहार, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा प्रायमरी शालाओं के लिये स्वीकृत। मूल्य चार आना।

"भूगोल" कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष

का

भूगोल

[ले० "भूगोल"—सम्पादक, पं० रामनारायण मिश्र]

यह भूगोल सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा, और लङ्का में निजी यात्रा के आधार पर बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। ४०० पृष्ठ, १०० से ऊपर चित्र और नक़्शे। बिहार, संयुक्त प्रान्त, अजमेर और मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा हाई और नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिये स्वीकृत। यह पुस्तक हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रवेशिका की परीक्षा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये भी स्वीकृत है।

भारतवर्ष के ऊपर अब तक इतनी सुन्दर और प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य केवल २) रु० डा० व्यय ।=) अलग।

—मैनेजर, "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन-अंक

'भूगोल' के समयानुकूल बड़े सुन्दर सुन्दर विशेषांक निकलते हैं। उन विशेषांकों से पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे। इस बार जब स्पेन की सारे संसार में बड़ी चर्चा है, इसका स्पेन-अङ्क हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित हुआ है। इस अङ्क में स्पेन का पुराना और नया इतिहास, जलवायु, निवासी, तथा अन्य बहुत सी ज्ञातव्य बातें दी गई हैं। पाठकों को इस उपयोगी अंक से लाभ उठाना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १३६, चित्र संख्या ६९, एक बड़ा (दो पृष्ठ) का नक़शा, २९ अन्य नक़शे मूल्य, केवल ।-)

ईरान

इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फ़ारस (ईरान) देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

卐 भुवनकोष 卐

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में जिन स्थानों का वर्णन है, उसके वर्तमान नाम दिये गये हैं। जो नष्ट हो गये हैं उनकी स्थिति बतलाई गई है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर कुछ रोचक लेख हैं। कई छोटे-बड़े नक़शे हैं। मूल्य केवल १) रु०।

भूगोल कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार शासन

नया संस्करण, रायल साइज़, पृष्ठ संख्या २४०, मूल्य केवल २) रु०

इसमें संसार के प्रधान देशों की शासन पद्धति का वर्णन है। प्रत्येक देश के राजनैतिक दल, चुनाव के नियम अल्पसंख्या, धारासभाओं के अधिकार, जनता का शासन पर नियन्त्रण, भाषा का प्रश्न आदि शासन सम्बन्धी सभी बातों पर रोचक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको अपने देश और दूसरे देशों की शासन सम्बन्धी सभी समस्यायें समझ में आ जायँगी।

टर्की

पृष्ठ संख्या (रायल साइज़) ६०

इस पुस्तक में टर्की के भौगोलिक विवरण के साथ साथ विवाह और मृतक संस्कार, टर्की का ऋण, बग़दाद रेलवे, मुस्तफा कमाल पाशा और नवीन टर्की, तुर्की पार्ल्यामेंट, राष्ट्रपति का आदर्श खेत, आदर्श गांव, टर्की और महायुद्ध, खिलाफत का उत्थान और पतन, तुर्की साहित्य आदि २९ लेख और आवश्यक चित्र और नकशे हैं। मूल्य केवल १) रु०

अफ़ग़ानिस्तान

पृष्ठ संख्या १३३

इसमें अफ़ग़ानिस्तान की स्थिति, प्राकृतिक विभाग, जलवायु, पशु-वनस्पति, व्यापार, सिंचाई, कारीगरी, पठान स्त्रियां, रक्त का मूल्य, धार्मिक विचार, नगर-मार्ग, भाषा, स्थानीय कहावतें, इतिहास, काफिरिस्तान आदि २१ लेख हैं। जगह जगह पर आवश्यक चित्र हैं। इसको पढ़ते ही अफ़ग़ानिस्तान का पूरा चित्र सामने खड़ा हो जाता है। मूल्य केवल १) रु०

मिडिल भूगोल

चारभागों में उपलब्ध है। पहले भाग में भारतवर्ष, दूसरे भाग में एशिया, तीसरे में योरुप और चौथे में शेष महाद्वीपों (उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, और आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड) का भूगोल मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिये लिखा गया है। प्रत्येक भाग में शिक्षा प्रद चित्रों और नक़्शों की भरमार है। यात्रा के आधार पर लिखे जाने से प्रत्येक पाठ में जीवन आ गया है। पुस्तक एकदम नये रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी गई है।

मूल्य प्रत्येक भाग का आठ आने। चारों भागों का एक साथ मूल्य १॥) है।

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक अङ्क में प्रायः निम्नलिखित विषय रहेंगे जो आवश्यकतानुसार घटाये बढ़ाये जा सकेंगे :—
१—देश का आकार, विस्तार, बनावट, दृश्य। २—जलवायु और उपज। ३—पालतू और जंगली जानवर। ४—कारबार। ५—व्यापार, बाज़ार, मेला। ६—जनसंख्या और जातियां। ७—शिक्षा। ८—पुराने समय पर एक नज़र। ९—वर्तमान शासन। १०—रहन सहन। ११—भाषा, कहानी। १२—देखने योग्य शहर। १३—गांव का जीवन। १४—खेल कूद, त्योहार।

प्रत्येक देश का वर्णन प्रायः निजी यात्रा के आधार पर भारतीय दृष्टिकोण से लिखा जायगा।

इस माला में निम्नलिखित देश रहेंगे :—

भारतवर्ष—१—लंका, २—बरमा, ३—आसाम, ४—बंगाल, ५—बिहार, ६—उड़ीसा, ७—आन्ध्र देश, ८—तामिल, ९—केरल, १०—ट्रावनकोर, ११—कुर्ग, १२—मैसूर, १३—हैदराबाद, १४—गोआ, १५—बम्बई-महाराष्ट्र, १६—मध्यप्रान्त, १७—काठियावाड़, १८—गुजरात, १९—सिन्ध, २०—बलोचिस्तान, २१—पंजाब, २२—पटियाला, ३२—जोधपुर, २४—जैपुर, २५—बीकानेर, २६—अजमेर २७—उदयपुर, २८—कोटा, २९—भरतपुर, ३०—अलवर, ३१—ग्वालियर, ३२—इन्दौर, ३३—रीवां, ३४—काश्मीर, ३५—नैपाल, ३६—भूटान, ३७—शिकम, ३८—गढ़वाल, ३९—अवध, ४०—संयुक्तप्रान्त, ४१—पांडिचेरी, ४२—अंडमान, निकोबार, लका द्वीप, मालद्वीप।

एशिया—१—जापान, २—चीन, ३—कोरिया, ४—मंचूरिया, ५—मंगोलिया, ६—चीनी तुर्किस्तान, ७—तिब्बत, ८—साइबेरिया, ९—रूसी तुर्किस्तान, १०—जार्जिया, ११—आर्मेनिया, १२—टर्की १३—सिरिया, १४—पेलेस्टाइन, १५—इराक, १६—अरब, १७—ईरान, १८—मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर, १९—स्याम, २०—जावा, २१—बोर्नियो, २२—फिलीपाइन द्वीपसमूह, २३—अफ़गानिस्तान, २४—किरगीज प्रजातन्त्र।

योरुप—१—आयरलैंड, २—ब्रिटेन, ३—फ्रांस, ४—हालैंड, ५—बेल्जियम, ६—डेनमार्क, ७—नार्वे ८—स्वीडन, ९—आइसलैंड, १०—फिनलैंड, ११—रूस, १२—यूक्रेन, १३—पोलंड, १४—रूमानिया, १५—बल्गेरिया, १६—लिथुएनिया, लैटविया और एस्थोनिया १७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

अफ्रीका—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—१४—महाराष्ट्र, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

उत्तरी अमरीका—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलैंड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

दक्षिण अमरीका—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज्वेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़िल, अर्जेन्टाइना।

आस्ट्रेलिया—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

अन्वेषक—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डि-गामा, ४—कुक, ५—लिविंगस्टन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

नगर—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०— मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग।

नदी—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फरात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

पर्वत—हिमालय, अल्प्स, एँडीज़, राकी।

नहर—स्वेज़, पनामा, चीन की ग्रांड केनाल।

कारबार—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज़, रेल, हवाई जहाज़।

सभ्यता—वैदिक, एसीरियन, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का २०)रु०।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of Bhugol any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**.

Rates for Advertisements : Ordinary full one page Rs. 10/-
3rd page of the cover „ 12/-
4th page of the cover „ 15/-

Write to the Manager,

"BHUGOL",

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press; 306, Jumuna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

दिसम्बर १९३८

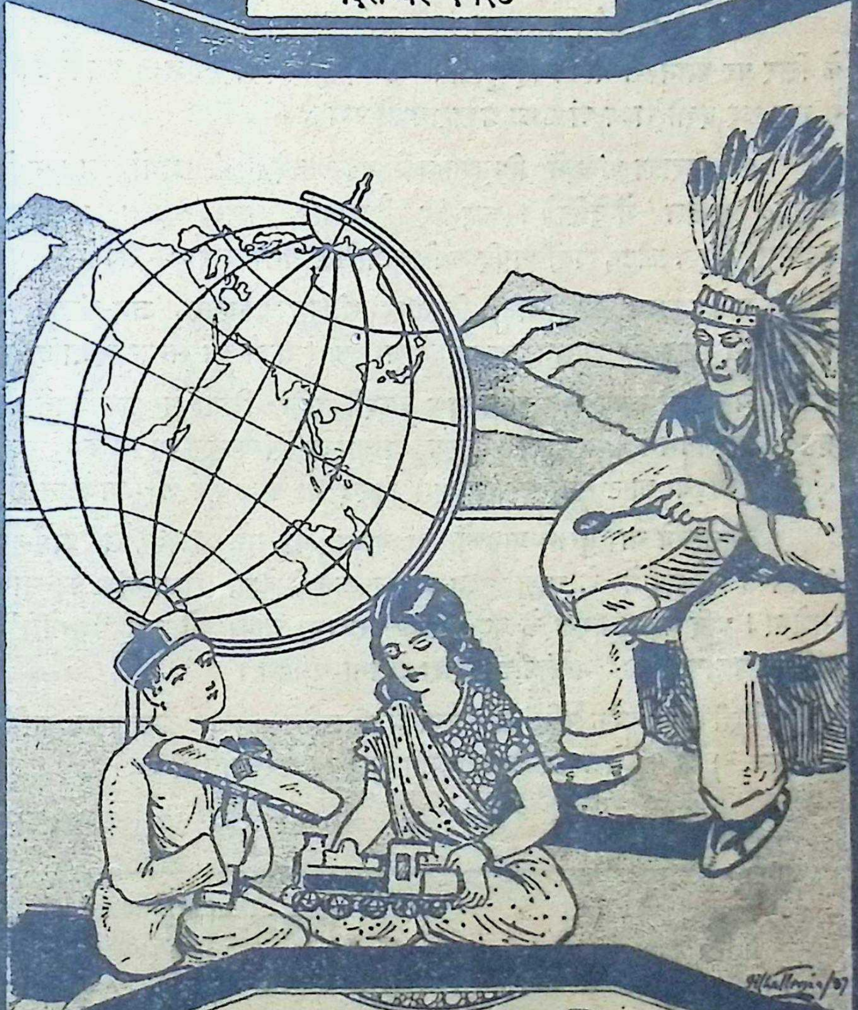

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल" के सोलहवें वर्ष के उपलक्ष में

"भूगोल"

का

देशी राज्य-अङ्क

पृष्ठ-संख्या लगभग २००, चित्र-संख्या लगभग १००, नक़्शों की संख्या लगभग २०, मूल्य साधारण संस्करण २) रु०, राज-संस्करण ५) रु० ।

आगामी जुलाई (१९३९) में "भूगोल" का देशी राज्य-अङ्क प्रकाशित होगा। फेडरेशन योजना के सिर पर आने से प्रत्येक हिन्दुस्तानी को देशी राज्यों का ज्ञान आवश्यक है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रख कर देशी राज्य-अंक का प्रकाशन हो रहा है।

इस विशाल अंक में हिन्दुस्तान के छोटे बड़े सभी राज्यों का समावेश रहेगा। सम्पूर्ण सूची अगले मास के "भूगोल" में देखिये। काश्मीर, हैदराबाद, मैसूर, बड़ौदा, ग्वालियर, इन्दौर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, जैपुर, कोटा, रीवाँ आदि अधिक प्रसिद्ध लगभग १०० राज्यों का पूरा परिचय रहेगा।

प्रत्येक राज्य की स्थिति, विस्तार, संक्षिप्त इतिहास, जन-संख्या, कारबार, आर्थिक महत्व, भारत सरकार से सम्बन्ध, शासन-प्रणाली, राजा और प्रजा का सम्बन्ध आदि सभी जानने योग्य विषय रहेंगे।

यह देशी राज्य-अंक आवश्यक नक़्शों और चित्रों से सुसज्जित रहेगा। "भूगोल" के आकार की पृष्ठ-संख्या लगभग २०० होगी। मूल्य साधारण संस्करण का २) रु०, राज-संस्करण का ५) रु०। राज-संस्करण बढ़िया आर्ट पेपर पर छपेगा। जिल्द भी आकर्षक और मज़बूत रहेगी।

जिन नये या पुराने ग्राहकों का चन्दा मई सन् १९३९ से अप्रैल सन् १९४० तक आगया है या १९३९ के मई महीने के पहले आ जायगा उनको देशी राज्य-अंक का साधारण संस्करण उनके चन्दे में ही मिलेगा। यदि वे साधारण के बदले राज-संस्करण चाहेंगे तो उन्हें "भूगोल" के वार्षिक मूल्य के साथ ३) रु० अधिक अर्थात् ६) रु० मनीआर्डर द्वारा भेजना चाहिये।

देशी राज्य-अंक परिमित संख्या में ही छपेगा। अतः यथा शीघ्र वार्षिक मूल्य ३) अथवा इस विशेषांक का मूल्य २) या ५) भेज कर अपनी प्रति सुरक्षित कर लीजिये।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, प्रयाग।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—मक्का की तीर्थ-यात्रा	१
२—साँपों की दुनिया	३
३—मेरी नासिक यात्रा (ले० जगत सिंह 'विद्यार्थी')	६
४—भीनमाल-भूगोल (ले० मनफूल त्यागी 'प्रभाकर')	७
५—जालोर का क़िला (ले० भूपसिंह चूड़ामणि 'विशारद')	१७
६—दक्षिणी अमरीका में फ़ैसिस्ट राष्ट्रों की गुप्त तैयारियाँ	१९
७—वाहन या बारबरदारी	२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भूगोल"

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १५] पौष सं० १९९५, दिसम्बर १९३८ [सं० ८

मक्का की तीर्थ-यात्रा

मक्का मुहम्मद साहब का जन्म स्थान होने से इस्लाम धर्म का प्रधान तीर्थ स्थान है। मक्का नगर एक उजाड़ घाटी में बसा है। यह नगर लालसागर के जद्दा बन्दरगाह से ६० मील पूर्व की ओर स्थित है। मक्का के चारों ओर सब कहीं खुश्क रेगिस्तान और नंगी पहाड़ियाँ हैं। यहां किसी प्रकार का कारबार नहीं है। फिर भी यह छोटा नगर जिसकी आबादी ७०,००० से भी कम है दुनिया के प्रसिद्ध नगरों में गिना जाता है।

दिन भर में पांच बार दीनदार मुसलमान मक्का (काबा) की ओर मुंह करके प्रार्थना (नमाज़ पढ़ते हैं) करते हैं। सभी धार्मिक मुसलमानों की सबसे बड़ी इच्छा यह रहती है कि वे अपने जीवन में एक बार मक्का का दर्शन (हज) कर सकें। इसी से हर साल दूर दूर से मुसलमानों की भीड़ यहां हज करने आती है। इस भीड़ में स्त्री, पुरुष, बुड्ढे, बच्चे सभी रहते हैं। कुछ पैदल आते हैं। कुछ ऊंट पर सवार होते हैं। कुछ मोटर पर चढ़कर आते हैं। जद्दा बन्दरगाह तक कुछ छोटी नावों (धौ) और कुछ बड़े जहाज़ों पर चढ़कर आते हैं। रोज़ा (उपवास), नमाज़ (प्रार्थना), खैरात (दान) और हज (मक्का तीर्थ-यात्रा) चार ऐसे कर्त्तव्य हैं जिनका पालन करना हर एक मुसलमान के लिये आवश्यक है। जिनके पास पैसा है और जो तन्दुरुस्त हैं उन मुसलमानों को ज़िन्दगी में कम से कम एक बार मक्का का हज (तीर्थ यात्रा) करना अनिवार्य है। जो हज करके लौटते हैं वे हाजी कहलाते हैं। मुसलमानों में उनका बड़ा मान होता है। मक्का में हिन्दुस्तानी नवाब नाइजीरिया के हबशी, अरब के बद्दू आदि सभी देशों के मुसलमान दिखाई देते हैं।

हज की यात्रा जुलहिज्जा नाम के मुसलमानी महीने में होती है। लेकिन मुसलमानी वर्ष चन्द्र-मासों से गिना जाता है। इसी से मुसलमानी वर्ष में केवल ३५४ दिन होते हैं। इसी से हज का महीना हर साल लगभग ११ दिन पहले पड़ता है। १९३८ में जुलहिज्जा का पहला दिन ७ जनवरी को पड़ा। लेकिन यात्रा की सबसे अधिक भीड़ ८, ९ और १० तारीख को हुई।

दीनदार मुसलमान हफ्तों तक मक्का शहर और उसके पड़ोस में इकट्ठे होते हैं। इस प्रदेश में प्रवेश करते ही प्रत्येक हाजी (यात्री) अहराम की पोशाक (लिबास) अख़्तियार करता है। इसे वह आजन्म निभाने की कोशिश करता है। अन्त में वह उसके कफ़न का काम देता है। इसमें दो बगैर बाँह के (बिना सिले हुए) मलमल या ऊन के टुकड़े होते हैं। एक टुकड़ा कमर में लपेटा जाता है, दूसरा कन्धे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाला जाता है। हज (यात्रा के समय सिर खुला रहना चाहिये। कुछ लोग तेज धूप से बचने के लिये छाया कर लेते हैं।

जुलाई के महीने की अष्टिमी (आठवें दिन) शहर में प्रवेश करने के बाद यात्री सबसे पहले मस्जिद अलहाम (पवित्र मस्जिद) में जाते हैं। इसका आंगन बहुत बड़ा है। इसी के अन्दर पवित्र काबा और बैत-अल्लाह या ईश्वर का घर स्थित है। यह एक बहुत पुराना चौकोर पत्थर है। कहा जाता है कि इसको इब्राहीम ने बनाया था। मुसलमान लोग उसकी बड़ी इज्जत करते हैं। दक्षिण-पूर्व कोने पर चांदी से जड़ा हुआ जमीन से चालीस इंच की ऊँचाई पर यहाँ का प्रसिद्ध काला पत्थर रक्खा है। यह उल्का पात (मेट्योराइट) का काला पत्थर है। पर यहाँ के लोगों का विश्वास है कि प्रथम काबा बनाने के लिये गेब्रियल नामी फरिश्ते ने स्वर्ग से इस पत्थर को लाकर इब्राहीम को भेंट दिया था। पास ही ज़म ज़म नाम का प्रसिद्ध कुआ है। कहा जाता है कि इसी कुएँ के पानी से अरबों के पितामह हाजो और इस्माइल ने अपनो प्यास बुझाई थी। इसका पानी पाक माना जाता है और दूर दूर के मुसलमान इस पानी से भरी बोतलें मँगाते हैं।

बड़े आंगन में दीनदार मुसलमान सात बार परिक्रमा करते हैं और काले पत्थर को चूमते हैं। फिर वे ज़म ज़म (कुए) का पानी पीते हैं। शाम होने पर हाजी लोग कतार बनाकर मुना की घाटी की ओर धीरे धीरे चलते हैं। वहाँ पहुँचने पर वे रात बिताते हैं। दूसरे दिन सवेरा होते ही वे पास वाले पहाड़ पर जाते हैं। यहाँ आने में तीन दिन लगते हैं। यहाँ वे पूरा दिन प्रार्थना करने में लगाते हैं। कहा जाता है कि इसी पहाड़ी पर कुरान का इलहाम हुआ था। ऊँच-नीच का भेद भाव छोड़कर सभी मुसलमान एक तरह की लिबास (पोशाक) में प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनको और इस्लामी राज्यों को ठीक रास्ते पर चलावे।

शाम के समय वे धार्मिक आनन्द में डूब जाते हैं। फिर वे पहाड़ को छोड़कर पास वाले स्थान में सारी रात नमाज़ पढ़ने और कुरान पढ़ने में बिताते हैं। जुलहिजा के दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही वे मुना की वादी में प्रवेश करते हैं। यहाँ हर एक यात्री किसी न किसी पशु का बलिदान करता है। अपनी औकात के मुआफिक कोई बकरी, कोई गाय और कोई ऊंटनी की बलि चढ़ाता है। यह बलि पुरानी बलि की यादगार में की जाती है जो इब्राहीम ने ईश्वर की आज्ञा के अनुसार अपने बेटे इस्माइल के बदले में चढ़ाई थी। बलि के पशु इसी जगह पर मोल लिये जा सकते हैं। इससे पड़ोस के बद्दू अरबों को काफी आमदनी हो जाती है। बलि के पशु का कुछ माँस पकाकर खाया जाता है। शेष भाग गरीबों को बाँट दिया जाता है। ये लोग बहुत सा मांस धूप में सुखा कर भविष्य के लिये रख लेते हैं। इसके बाद हर एक हाजी के सिर का मुंडन होता है। उसके नाखून काटे जाते हैं। कटे हुए नाखून और बाल वहीं गाड़ दिये जाते हैं। इसके बाद काबा का अन्तिम दर्शन किया जाता है। इस प्रकार हज की क्रिया समाप्त हो जाती है।

आज कल हजाज का शासन कट्टर अरबी लोगों के हाथ में है। यहाँ फोटो उतारने की उन्होंने सख्त मनाई कर रक्खी है। एक बार एक अंग्रेज़ ने छिपकर यहाँ के चित्र (फिल्म) लिये। जब मिस्र में इनका प्रदर्शन किया गया तब बहवी लोगों को बहुत बुरा लगा। दूसरे वर्ष बादशाह इब्न सऊद ने आज्ञा निकाली कि सारे केमरे ज़ब्त कर लिये जावें। इन सब असुविधाओं के होते हुये भी हज के यात्रियों की संख्या हर साल बढ़ती जा रही है। मिस्र देश का राजा अपने खर्चे से वहाँ के रास्ते में पेड़ लगाने और पानी का नल लगाने का विचार कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांपों की दुनिया

सांपों को हम अपना दुश्मन समझ कर उन से बचने की कोशिश करते हैं और जहां कहीं उनको देखते हैं उनको मार डालना ही अपना धर्म समझते हैं परन्तु बहुत से लोग यह नहीं जानते कि उनमें से कितने ही बिना जहर के होते हैं और उनसे हमको हानि का जगह लाभ होता है। कुछ सांप हरे, लाल, पीले, बैजनी रंग में बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं परन्तु दुःख है कि लोग उनको भी ज़हरीला समझ कर मार डालते हैं। वे जहरीले नहीं होते और उन्हीं जीवों को खाते हैं जो मनुष्य जाति को हानि पहुँचाते हैं।

प्रत्येक जीव को अपना जीवन कायम रखने के लिये खाना, दुश्मनों से अपने को बचाना और अपने आस पास की जगह को अपने रहने के लायक बनाना आवश्यक है। यदि हम सांपों के जीवन के इतिहास का चित्र खींचें तो पता चलता है कि शुरु में सांप आजकल के सांपों जैसे नहीं थे। ये गिरगिट के समान थे क्योंकि इनके पैर थे। यदि हम आजकल एक गिरगिट के चारों पैर काट दें तो वह कुछ कुछ सांप सा दिखाई देने लगता है। उन पैर वाले सांपों के पैर धीरे धीरे नष्ट हो गए। इसका कारण शायद यह है कि वे जमीन के अन्दर सूराखों में रहने लगे (आजकल भी सांप ज़मीन के अन्दर सूराखों में रहते हैं जिन्हें बांबी कहते हैं) सूराखों में घुसते समय उनके आगे के पैर रुकावट डालते थे इस लिये धीरे धीरे कई हजार वर्ष के बाद इन लोगों के अगले पैरों की जरूरत न होने की वजह से वे नष्ट हो गये। और धीरे धीरे पिछले पैरों की जगह छोटे छोटे पंजे रह गए। वे भी कुछ समय में गायब हो गए और कमर की हड्डियां सीधी हो कर सांप के लम्बे सीधे बदन से मिल गईं। इस प्रकार के सांप आजकल भी बहुत सी जगहों में पाए जाते हैं।

अब धीरे धीरे सांपों में और भी परिवर्तन होने लगे। अधिकतर परिवर्तन उन को अपना खाना आसानी से पाने के लिये हुए। अक्सर वे किसी भी जानवर को बिना उसके छोटे बड़े का विचार किये ही अपना शिकार बनाते और पकड़ने के बाद दोनों में खूब खींचातानी भी होती और अक्सर शिकार छूट कर निकल भागता। इस लिये सांप के तालू में तेज नोकीले दांत जमने शुरू हुए यहां तक कि धीरे धीरे इतने दांत जम गए कि तालू का कोई भी हड्डी का हिस्सा दांत से खाली नहीं। ये दांत बहुत तेज और पीछे की ओर झुके होते हैं। इससे शिकार एक बार पकड़ जाने पर आसानी से छूट कर जा नहीं सकता।

परन्तु इससे ही अभी खाने की समस्या हल नहीं हुई। शिकार सांप के मुह में मजबूती से पकड़े जाने पर भी यदि ताकतवर हुआ (क्योंकि सांप शिकार करते समय छोटे बड़े पर विचार नहीं करता) तो वह सांप को घसीट कर मार डालेगा। इसलिये अब यह जरूरी हो गया कि मजबूती से पकड़ने के साथ शिकार चाहे वह जितना बड़ा हो उसे कमजोर भी बना देना चाहिये। इस लिये प्रकृति ने सांप के थूक को धीरे धीरे जहरीला बनाया। यह थूक तालू के किनारे किनारे नालियों द्वारा बह कर शिकार के खून में जख्म द्वारा मिल जाता है और शिकार चाहे जितना बड़ा और ताकतवर हो शिथिल हो जाता है फिर सांप उसे आराम के साथ खा सकता है। धीरे धीरे वे नालियां जिनसे जहरीला थूक आता था एक बन्द नली के समान हो गई। और फिर बाद में तालू के बीच में मिलकर एक थैले के रूप में बन गई। यही बाद में जहरीली थैली बन गई। इसी थैली के बीच में एक बहुत मजबूत तेज दांत भी बन गया जिसके ज़रिये से जहर खून में मिल जाता है। (यह बात याद रखना चाहिये कि सांप का जहर जब तक खून में नहीं मिलता तब तक वह अपना असर कभी नहीं दिखा-एगा। अगर मुँह में कोई जख्म न हो तो सांप का जहर बिना किसी खतरे के पी लिया जा सकता है। बहुत से बाजीगर साँप का मुह खाकर लोगों को दिखाते हैं। यह कोई कठिन बात नहीं है। सांप का मुँह खाने वाला इस बात का ध्यान रखता है कि खाने के पूर्व और खाते समय तक उसके मुँह में कोई जख्म नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन जैसा कि पहिले बताया जा चुका है सभी सांप ज़हरीले नहीं होते फिर वे किस तरह अपने शिकार को बश में लाएँ ? प्रकृति ने उनको भी धीरे धीरे वे साधन दिये हैं। उन में जहर की थैलियों का न होने का शायद यह कारण हो सकता है कि वे बड़े बड़े जीवों को अपना शिकार नहीं बनाते थे एक बार पकड़ने पर फिर उनको खींचा तानी नहीं करना पड़ता था। इसी लिये उनको शिकार को कमजोर बनाने के लिये जहर की जरूरत नहीं पड़ी।

उन्होंने अपने शरीर के रंग को बदलने की ताकत पैदा की यदि वे किसी ऐसे जानवर को शिकार बनाना चाहते हैं जो हरी घास में बैठा हो तो वे अपने बदन का रंग हरा बना लेते हैं जिससे शिकार को हरी घास और हरे सांप में फर्क न मालूम हो। बस सांप आसानी से उसे पकड़ कर खा जाता है। यह रंग बदलने की आदत से सांप स्वयं अपने को भी अपने दुश्मनों से बचा सकता है। कुछ सांपों में अपने शिकार को बेहोश (Hypnotyse) करने की ताकत होती है। शिकार सांप को देख कर भागना भूल जाता है। सांप उसको और आसानी से पकड़ कर खा जाता है।

लोगों का ख्याल होगा कि सांप जितना बड़ा होगा उतना ही वह अपने पूर्वजों से दूर होगा। परन्तु यह बात गलत है। वे बड़े सांप जिनको लोग अजगर सांप कहते हैं उनकी लम्बाई ३० या ३२ फुट तक होती है। अपने उन पूर्वजों से बहुत दूर नहीं जिनके पैर होते थे। क्योंकि इन्होंने अभी तक ज़हर की थैली नहीं पैदा की कमर की हड्डी अब भी इनमें पाई जाती है और आगे के पैरों के गायब होने के निशान अब भी बाकी हैं और पिछले पैर अभी तक बिलकुल गायब नहीं हुए बल्कि उनकी जगह छोटे छोटे पंजे मौजूद हैं।

यद्यपि इन सांपों के अपने शिकार को कमजोर बनाने के लिये ज़हर नहीं है परन्तु प्रकृति ने इनके शरीर को बहुत मजबूत बनाया है और वे बड़े बड़े सांप अपने शिकार को रस्सी की तरह जकड़ कर बाँध लेते हैं और उसे बेकार कर देते हैं। इनका भीतरी भाग इतना लचकदार होता है कि बड़े बड़े जानवरों को निगल जाते हैं।

जंगली बोआ और अजगर (pythons) नाम के सांप बहुत बड़े नहीं होते। ये बहुत सुन्दर होते हैं इनमें जहर नहीं होता। ये हमारे यहां और अफ्रीका में पाए जाते हैं।

अफ्रीका में इन सांपों को और सांपों की अपेक्षा बहुत अधिक तादाद में मारा जाता है और इनके खूबसूरत चमड़ों का व्योपार होता है। इन सांपों के कई हज़ार चमड़े हर माह इङ्गलैंड में भेजे जाते हैं। इन सांपों की संख्या बहुत कम होती जा रही है। यह बात बहुत देर में मालूम हुई कि इन सांपों ने पूर्व काल में चूहों की बढ़ती को रोक रक्खा था इस प्रकार ये मनुष्य जाति के बहुत फायदे के थे।

पकड़ने वाला अजगर (Boa Constrictor) अमरीका के गरम भागों में पाया जाता है यह बहुत सुन्दर होता है। और मनुष्य जाति से इसे कोई हानि नहीं होती यह बारह फुट तक लम्बा होता है। बहुत से खेतों में और पुराने घरों में चूहों को रोकने के लिये यह सांप पाले भी जाते हैं।

सांपों में पेड़ पर रहने वाल अजगर होते हैं। इनके चमड़े का रंग बहुत सुन्दर होता है। ये दक्षिणी अमरीका उत्तरी-पश्चिमी भाग में पाए जाते हैं इसके बदन का रंग गहरा हरा होता है और उस पर सफेद धारियाँ होती हैं यह खूबसूरत सांप पाला नहीं जा सकता क्योंकि फौरन मर जाता है।

अंडा खाने वाला सांप

यह सांप दक्षिणी अफ्रीका में पाया जाता है इसको भीतरी बनावट दूसरे सब जानवरों से बिलकुल भिन्न होती है। यह दो या तीन फुट से ज्यादा लम्बा नहीं होता। इस के गर्दन के भीतर चारो ओर तेज छोटे छोटे कांटे होते हैं जो पीछे की ओर झुके होते हैं। जब सांप अण्डे को निगल जाता है तो गर्दन के भीतरी भाग में एक अजीब सा घुमाव फिराव होता है और दांतों की चोट से अण्डा फूट जाता है। उसका सब रस पेट में चला जाता है। अन्डे का कड़ा हिस्सा बाद में हजम हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सांप बहुत से अजायबघरों में पाया जाता है। लेकिन इसके खाने का समय रात में होता है। इसलिये इसके खाने का तरीका बहुत कम लोग देख पाते हैं।

सांपों की सेना

ये सांप बहुत से अण्डे एक साथ देते हैं। लगभग चालीस अण्डे एक बार में देते हैं। बहुत से सांप तो अपने अंडों को सूराखों में जमा करने के बाद फिर कभी उनकी परवाह नहीं करते और न उनमें कोई दिलचस्पी ही लेते हैं। लेकिन अजगर (pythons) सांप बहुत उत्साह के साथ अपने अंडों को सेते हैं। मादा सब अंडों को इकट्ठा करके अपने घेरे के अन्दर कर लेती है। इन दिनों मादा के बदन का तापक्रम कुछ बढ़ जाता है जिसकी वजह से अंडों के सेने में मदद मिलती है। इससे ज्यादा मदद सांपों को अंडे के निकलने के बाद मिलती है क्योंकि मादा की देख रेख में होने के कारण दूसरे सांप उनको खा नहीं सकते।

ज़हरीले सांप

जो सांप जितना जहरीला होगा वह उतना ही अपने पूर्वजों से समय द्वारा ज्यादा दूर होगा। समय के बीतने के साथ साथ अपनी जरूरतों को पूरी करने के लिये (खास तौर पर खाने की और दुश्मनों से बचने की जरूरत) उनमें जहर की थैली पूर्णरूप से विकसित हो चुकी है। नाप में भी ये सांप दूसरे बिना जहर वाले सांपों से छोटे होते हैं।

सब से ज्यादा खतरनाक जहरीला सांप काला नाग (King Cobra) होता है। सब से बड़ी पहिचान इनके जहरीले दाँत हैं। ये सांप योरप को छोड़ कर सब मुल्कों में पाये जाते हैं और वहां के मनुष्यों को इन से बड़ी हानि पहुँचती है। हमारे देश में सांप काटने के कारण मरे हुये लोगों की संख्या बहुत ज्यादा है। मामूली तौर पर पता लगाया गया है कि साल में करीब २९००० मौतें सांपों द्वारा होती हैं और इनमें से अधिकतर कोबरा द्वारा होती हैं।

काला सांप (King Cobra) सांपों में सब से ज्यादा जहरीला और जहर वाले सांपों में सब से बड़ा होता है। आमतौर से इसकी लम्बाई चौदह फुट होती है। कुछ साल पहिले King Cobra पकड़ कर London Zoo में रक्खा गया था। यह सोलह फुट तीन इंच था। इससे बड़ा काला सांप (King Cobra) दूसरा अभी तक नहीं मिला।

समुद्री सांप जो गरम समुद्रों (Tropical Seas) में पाए जाते हैं असल में समुद्री कोबरा हैं। इनकी दुम कुछ चपटी सी होती है ताकि मछली की तरह तैर सके। इनसे मछलियों को ज्यादा नुकसान पहुँचता है।

कोबरा सांप कई रंग का होता है। कोई भूरा कोई पीला और ज्यादातर काले होते हैं। ये सांप देखने में सुन्दर नहीं होते। ये बहुत ज़हरीले होते हैं। फिर भी बहुत खतरनाक नहीं होते और बहुत से लोग अपने घरों में इनके पीने के लिये दूध रख देते हैं ताकि ये आएँ और चूहों को साफ करें।

जब कोबरा गुस्से में होता है तो ज़मीन से करीब एक फुट तक सिर को उठा लेता है और फन को फैला कर हमले के लिये तैयार रहता है।

कोबरे के फन में जो चश्मे की तरह की तस्वीर है उसकी एक कहानी प्रचलित है। कहा जाता है कि एक सोए हुए देवता के ऊपर एक कोबरा ने अपना फन फैला दिया ताकि उसके सूर्य की किरणों का असर न पहुँचे। जब देवता जागे तो उन्होंने प्रेम के साथ कोबरे के फन में हाथ फेरा। हाथ फेरते समय उसमें उङ्गलियों के निशान बन गए। वे ही अब चश्मे की तरह दिखाई देते हैं। आज कल भी लोगों का विश्वास है कि कोबरा सांप जिस के ऊपर साया करता है वह राजा होता है इसके बारे में बहुत सी कहानियाँ प्रचिलित हैं। कुछ लोगों का कहना है कि बीरबल एक गरीब आदमी का लड़का था उसके ऊपर एक सांप ने साया किया था जबकि उसकी मां उसे खेत में लिटा कर घास छीलते छीलते दूर जा निकली थी। इसी से बीरबल को अकबर के दरबार में ऊँचा ओहदा मिला था।

कोबरा सांप दूसरे सांपों को खा जाता है। कभी कभी यह चिड़ियों के अण्डे और दूसरे छोटे छोटे जानवरों को भी खा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांपों (विशेषकर कोबरा सांपों) को गाने से बहुत प्रेम होता है। सांप नचाने वाले अपने बाजे को एक खास तरह से बजाते हैं जिससे कि कोबरा सांप मस्त होकर झूमने लगता है।

कोबरा सांपों और उसकी दूसरी जातियों में कायाकल्प करने की शक्ति होती है जब उनकी खाल बहुत पुरानी हो जाती है तो वे उसे उतार फेंकते हैं जिसे केंचुल छोड़ना कहते हैं जिसके बाद वे बहुत चमकदार दिखाई देते हैं।

मेरी नासिक यात्रा

गोदावरी के उद्गम से अठारह मील नीचे नासिक नगर पहाड़ों के मध्य बसा हुआ है। चारों ओर क्षितिज में पहाड़ियाँ आकाश से मिली हुई हैं। वे इस नगर की सुन्दरता को और भी बढ़ा देती हैं। समुद्र की सतह से यह जगह लगभग १८०० फुट की उँचाई पर स्थित है। इस कारण से यहाँ की जलवायु में भी थोड़ा सा अन्तर पड़ जाता है। वर्षा यहां लगभग पचीस-तीस इंच होती है। स्थिति के विचार से यह स्थान स्वास्थ्यकर है। प्रकृति विचरण करने की यह अच्छी जगह है। पुराने समय में तो यहां पर वन ही वन थे। परन्तु अब यह जगह आबाद है। नासिक नगर में ही करीब चालीस हजार मनुष्य रहते हैं। इस नगर के चारों ओर खेती होती है। गेहूँ, ज्वार, दालें, रुई, चावल यहां की मुख्य पैदावार हैं।

इस नगर का नाम उतना ही विचित्र है जितना बड़ा यह तीर्थ स्थान है। नासिक शब्द संस्कृत शब्द नासिका से बिगड़ कर बना है। नासिका नाक को कहते हैं। यह वह स्थान है जहाँ श्रीरामचन्द्रजी सीताजी तथा लक्ष्मण सहित बनबास की अवधि में पंचवटी बनाकर रहते थे। यहीं पर सूर्पणखा श्रीरामजी पर आसक्त हुई थी। और यहीं पर उसकी नाक लक्ष्मण द्वारा काटी गई थी। तभी से इस स्थान का नाम नासिका (नासिक) पड़ा है। श्रीरामचन्द्र जी की चरण-रज से यह स्थान पवित्र हो जाने के कारण आज भारत-वर्ष का एक बहुत बड़ा तीर्थ स्थान बन गया है। पंचवटी का स्थान तथा रामकुंड आज भी यहां पर हैं। राम-कुंड कोई कुंड अलग से नहीं है परन्तु गोदावरी ही एक विशेष स्थान पर रामकुंड के नाम से बोधित की जाती है। यहां पर भी आज आबादी है।

यह स्थान इतना उत्तम, सुन्दर तथा आकर्षक है कि अब तक यह बड़े महात्माओं की तपश्चर्या का स्थान होता चला आया है। यहाँ पर गौतमबुद्ध और गुरु मछन्दरनाथ (गोरखनाथ) ने अपने जीवन का काफी भाग व्यतीत किया है। मन्दिरों की तो यहाँ पर बहुत ही भरमार है। विष्णु दिगम्बर (जो गायन विद्या में बहुत प्रवीण थे) का आश्रम भी पंचवटी ही पर है। उनका प्यारा पद

रघुपति राघव राजा राम
पतित पावन सीता राम

एक न एक मनुष्य गाता ही रहता है। जब यह आश्रम बना था उस समय भी प्रत्येक ईंट रक्खे जाने से पहिले यह पद गाया जाता था। यही इस आश्रम की विशेषता है।

पंचवटी से थोड़ी ही दूर पर गंगा (गोदावरी) का झरना है। यह स्थान अत्यन्त ही रमणीक तथा सुन्दर है। काली काली कटी हुई चट्टानें अत्यन्त ही चित्ताकर्षक हैं। यह झरना बहुत ऊँचा नहीं है। परन्तु इतने पर भी एक देखने योग्य वस्तु है।

इसके अतिरिक्त नासिक में सिक्यिोरिटी प्रिंटिङ्ग प्रेस (Security Printing Press) भी है जहाँ पर नोट, स्टाम्प लगे हुये कागज, टिकट, लिफ़ाफे और पोस्टकार्ड बनते हैं।

नासिक से १८ मील की दूरी पर त्र्यम्बक है। पांडवों के समय का एक मठ है। जिसके दर्शन केवल सोमवार को ही कराये जाते हैं। इस मठ के बारे में लोगों की भिन्न भिन्न रायें हैं। परन्तु यह पुरातत्व विभाग (Archeologicol Department) के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीन है। यहीं पर ब्रह्मगिरी से गोदावरी निकलती है। इस स्थान पर पौने सात सौ पैढ़ियां चढ़कर जाना पड़ता है। यहां पर एक मूर्ति के मुख से एक पतली धारा जो बहुत ही धीमी है एक कुंड में गिरती है। यही गोदावरी का उद्गम है। पानी अत्यन्त ही ठंडा तथा स्वादिष्ट है। यहीं पर गौतमबुद्ध की गुफा तथा बाबा मुछन्दरनाथ की गुफायें हैं। यहाँ से पुरी पहाड़ी का दृश्य अत्यन्त ही मनोहर प्रतीत पड़ता है।

त्र्यम्बक में विशेषकर ब्राह्मण रहते हैं। यहाँ के लोग गरीब हैं और उनकी दशा बड़ी शोचनीय है। इसी कारण यहाँ पर भिक्षुकों की संख्या बहुत है। जब कोई यात्री वहाँ पहुँचता है तो उसके पीछे स्त्रियों तथा बच्चों का तांता लग जाता है। एक को कुछ दिया नहीं बस पच्चीसों ने आ घेरा। उन लोगों की दीनता देखकर अपनी दीनता का विचार मन में उद्वेलित हो उठता है। इसका इलाज हम किस भांति कर सकते हैं ?

—जगत सिंह 'विद्यार्थी'

'भीनमाल-भूगोल'

(ले० मनफूल त्यागी, 'प्रभाकर' माध्यमिक पाठशाला, भीनमाल, मारवाड़)

आज, जब कि संसार में विशेषतः भारत में, अहमन्यता, अकर्मण्यता, स्वार्थ और सार-हीन समालोचना का सर्वत्र साम्राज्य है, अपने अतीत की ओर ध्यान आकर्षित कराना तो एक ओर रहा कुछ बोलना, कहना और आंख उठाकर देखना भी लोहे के चने चबाने और जलती आग में कूदने से कुछ कम नहीं! कैसा परिवर्तन है !! कितना कठोर व्यापार !!! कहीं ठिकाना है।

यों तो समस्त भारत ही अपने जीवन, बल, जागृति और आत्मोत्सर्ग के जीते जागते और समुज्वल उदाहरण समय समय पर देता आया है; परन्तु इस विषय में जो विशद-यश, विमल-ख्याति और अद्वितीय-अनुपम प्रसिद्धि प्रातः स्मरणीया, वीर प्रसूता, प्रताप-दुर्गा-जननि, वीर भोग्या बसुन्धरा राजस्थान ने प्राप्त की थी, सम्भव है वह संसार के किसी भी उन्नति देश को स्वप्न में भी प्राप्त न हो। समय था, जब इसकी बात बात में बात थी ! चला चली में भी प्रत्येक कला बला थी ! बला की शान थी; तो बला की आन !! अब वह आन-बान-शान कहाँ ? बस थोथी चाल, थोथा हाल इसकी विभूति वा स्मृद्धि है ! कितना उलट फेर है !! सच है, 'सब दिन जात न एक समान'।

मुझे स्वतन्त्र रूप से कहने दीजिये कि न केवल चित्तौर, उदयपुर और जोधपुर आदि ही अपने साथ अपना चमकता और दमदमाता इतिहास रखते हैं, अपितु नगर-नगर, गांव-गांव, और पहाड़ी-पहाड़ी उच्च मस्तक किये उसी स्वाभिमान, आत्म सम्मान और गौरव के साथ जेम्स टॉड को कहने के लिये विवश करती है :—

"राजस्थान में कोई छोटा-सा राज्य भी ऐसा नहीं है, जिसमें थर्मापली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले, जहां लियोनीडास जैसा वीर पुरुष उत्पन्न न हुआ हो।" वन्दे राजस्थान ! बन्दे।

एक बार नहीं सैकड़ों बार युद्ध के धौंसे बाजे, आपत्तियों के बादल गरजे, अन्याय की बिजली कौंधी, लोहू के सागर उमड़े, घोर परिवर्तन हुए, परन्तु तेरी वह पैंतरे बाजी चंचलता, जिससे तूने अपने आत्म सम्मान की रक्षा की न केवल कौतूहलोत्पादक ही है वरन् स्मरणीय और अनुकरणीय भी। वाह री वीरता ! हाय रे काल !!

इसी राजस्थान के अन्तर्गत आज न जाने कितने वैभवशाली, धन-धान्य-पूर्ण नगर और गांव अपने भग्नावशेषों पर भी भी आंसू बहा अनाथों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखियों की भांति भीषण-चीत्कार में पुकार कर ये हृदय दहला देने वाला करुणा-रोदन कर रहे हैं :—

"आज यहाँ आके मेरा हाल तो पूछे कोई,
हैं कहाँ अब वो मेरे नाज़ उठाने वाले !"

हा ! इसी कराल काल के गाल से अलबेला भीनमाल भी न बच सका। सच है, समय बड़ा प्रबल है। इसके सम्मुख धनी की बनी, न बली की चली बड़े बड़े आये और चलते बने। चार दिन तलवारें चमकीं और बस। 'न गोरे सिकन्दर न कब्रे दारा, मिटे नामियों के निशां कैसे कैसे।' परिवर्तन तेरा पेट बड़ा है। वह भी समय था जब भीनमाल का बोल वाला था। लाठियों में लपटें थीं। मान था, सम्मान था। स्वाभिमान-धन-धान्य-विद्वत्ता की अकड़ थी। परन्तु आज अपनी जर्जरित दशा और टूटे-फूटे हाल को देख इसकी दीवार और बावड़ी दहाड़ दहाड़ कर कह रही हैं :—

"कभी हम भी नशेमन वाले थे
ये गुलशन था आबाद कभी।
हर शख़्स खून का प्यासा है
गुलचीं है कभी सैयाद कभी॥"

और कुएं और तालाब भी तनके इस करुणा-क्रन्दन को अत्यन्त भयंकर बनाने में संलग्न हैं। क्यों न हों, 'अच्छाई और धन-वैभव पर जमाना मरता है।'

भीनमाल-अति अतीत में

प्रत्येक नगर की भौगोलिक स्थिति के ज्ञान प्राप्त करने के पूर्व उसके इतिहास पर भी एक दृष्टि डाल लेना परमावश्यक है। क्योंकि भूगोल-इतिहास-घनिष्ट-सम्बन्ध जगत्-प्रसिद्ध है।

यों तो नगर के इतिहास सम्बन्धी कई ग्रन्थ प्राप्य हैं; परन्तु बड़ी बड़ी पुस्तकें, जिनसे कि इस नगर के इतिहास-विकास में पर्याप्त सहायता मिल सकती है, अधोलिखित हैं :—

१—श्रीमाल पुराण वा श्रीमाल महात्म्य, २—प्रबन्ध चिन्तामणि, ३—विमल प्रबन्ध, ४—ओसवंश मुक्तावली, ५—कालीदास और भोज, ६—भोज-प्रबन्ध, ७—उपदेश कल्पवल्ली, ८—ब्राह्मण-मार्तण्ड, ९—यतीन्द्र-विहार-दिग्दर्शन और मारवाड़ का इतिहास।

श्रीमाल पुराण के लेखानुसार यह नगर समयानुसार निम्नांकित नामों से प्रसिद्ध हुआ :—

सत्ययुग	त्रेतायुग	द्वापरयुग	कलियुग
श्रीमाल	रत्नमाल	पुष्पमाल	भिन्नमाल

लावण्य-समय रचित विमल-प्रबन्ध के अनुसार इसके ये नाम थे :—

सत्ययुग	त्रेतायुग	द्वापरयुग	कलियुग
पुष्पमाल	रत्नमाल	श्रीमाल	भिल्लमाल.

अतिरिक्त इन लेखों के 'उपदेश कल्प वल्ली' के ये पद भी इन नामों की पुष्टि करते हैं :—

"श्रीमालमिति यन्नाम, रत्नमालमिति स्फुटम्
पुष्पमालं पुनर्भिन्नमालं युगचतुष्टये ॥१॥
चत्वारि यस्य नामानि,वितन्वन्ति प्रतिष्ठतम्।
अहो नगर सौन्दर्यमाहार्य त्रिजगत्यपि ॥२॥"

उपर्युक्त-विवरण-चक्र से यह तो निर्विवाद ही सिद्ध है कि समय समय पर ऊर्ध्व वर्णित नाम अवश्य इस नगर के रह चुके हैं परन्तु इनके नामकरण का समय निर्देश करना वास्तव में बड़ी टेढ़ी खीर है। यद्यपि नामकरण की दन्त कथायें, इतिहास प्रदर्शक-ग्रन्थों 'प्रबन्ध-चिन्तामणि' और 'श्रीमाल पुराण' आदि में लिखी हैं, परन्तु मत-भेद किसी वास्तविक-निर्णय पर जाने से रोकता है अर्थात् वास्तविक निर्णय पर पहुँचना महान् दुस्तर है। कथाओं का यहां उद्धृत करना केवल पृष्ठ-पेषण करना ही होगा।

'मारवाड़-भूगोल' के रचयिता श्री जगदीश सिंह जी गहलौत का कहना है, कि भीनमाल नगर छठी से नवीं शताब्दी तक गुजरात के गूजरों की राजधानी रहा है। ७ वीं शताब्दि में भी यह इसी भीनमाल (भिल्लमाल) नाम से प्रसिद्ध था। सम्वत् १९४० वि० में यह प्राचीन नगर इस परगने का मुख्य और रमणीय स्थान था। तत्पश्चात् जसवन्तपुरा इसके स्थान पर परगने का मुख्य नगर बना। किसी समय में यह बड़ा भारी नगर था। इसके विशाल खंडहर इस सत्यता के साक्षी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी की प्राचीनता के प्रमाण-स्वरूप प्रसिद्ध इतिहास साहित्याचार्य्य श्री विश्वेश्वरनाथ जी रेउ लिखते हैं, "कि मारवाड़ में राठोड़वंश संस्थापक राव सीहाजी जिस समय अपने २०० साथियों के साथ द्वारका को जा रहे थे उन्हें कारणवश पुष्कर ठहरना पड़ा, तब वहीं पर इनकी भेंट, तीर्थ-यात्रार्थ आये हुए भीनमाल ब्राह्मणों से हो गई। उन दिनों मुल्तान की तरफ से मुसलमान बहुधा भीनमाल पर लूट-मार और आक्रमण किया करते थे। सीहाजी को दल-बल सहित देखकर ब्राह्मणों ने सहायता की प्रार्थना की। अभ्यर्थना सहर्ष स्वीकार हुई। भीनमाल के भाग जगे। आक्रमणकारी पराजय को प्राप्त हो सदा के लिये धराशायी हो गये।

इस विषय का यह दोहा अब तक मारवाड़ में प्रसिद्ध है:—

भीनमाल लीधो भड़ै, सीहै सेल बजाय।
दत दीन्हौ सत संग्रह्यो, ओ जस कदे न जाय॥

अर्थात् तलवार के ज़ोर से बीर सीहा जी ने भीनमाल पर अधिकार कर लिया और इसके पश्चात् उन्हें (ब्राह्मणों को) दान देकर पुण्य का संचय किया। इनका यह यश सदैव ही अमर रहेगा।

अब देखना यह है कि राव सीहा जी ने मारवाड़ में किस समय पदार्पण किया था? कर्नल टॉड और जनरल कनिङ्गहम के मतानुसार यह समय क्रमानुसार वि० सम्वत् १२६८ और १२८३ के पास है। इससे पता चलता है कि यह नगर १२ वीं १३ वीं शताब्दी से बहुत समय पूर्व उन्नति दशा को प्राप्त हो गया होगा। तभी तो इसके धन वैभव को देखकर यवनों और अन्य आक्रमणकारियों के मुँह में पानी भर-भर आता था। कुछ भी हो, नगर की प्राचीनता प्रत्येक रूप में सिद्ध है। गत वर्ष की ही बात है कि एक जैन-मूर्त्ति पृथ्वी से आविर्भूत हुई है। उस पर उसके निर्माण-काल की तिथि इत्यादि सब लिखी है। उसका निर्माण-काल १२९० वि० सम्बत् वा १२९५ के आस-पास है।

नगर की प्रस्तुत भौगोलिक स्थिति को समझाने के लिये यदि उसके प्राचीनतम गौरव और विस्तार का भी वर्णन कर दिया जाये तो अनुचित न होगा। प्राचीन ग्रन्थावलोकन से पता चलता है कि नगर अधोलिखित दशा में था:—

प्राचीन स्थिति

नगर के चारों ओर ५ योजन (२० कोस) की खाई थी, जो जल से परिपूर्ण थी। कोट (शहर पनाह) के चौरासी द्वार थे। और उनमें चौरासी दरी खाने थे। १००० गणपति, ४००० क्षेत्रपाल, ८४ चंडिका, ११००० महादेव के लिङ्ग और १८००० दुर्गा देवी आदि के देवल थे। इसके अतिरिक्त ४००० वेदशाला, १००० ब्रह्मशाला, ४००० मठ, १८००० व्यापार शाला, दो लाख दुकानें और एक लाख साठ हज़ार चौंसठ सतखण्डे महल थे।

जन-संख्या

कुल ४५००० ब्राह्मण थे। ७०० ऋगवेदी, १२००० यजुर्वेदी, २२००० सामवेदी, ४००० अथर्व वेदी। और ९०००० श्रीमाल वंशी-महाजन, तथा पोरवाड़ और आठ हज़ार चौंसठ धनोत्कट (सुनार), २००० कंसारे, ९००० नगर नायिका, ३६००० क्षत्रिय, ५००० रंगारे, ५००० सोमया, ५००० कुम्भकार, ३००० नट, १००० नाई, १००० धोबी, ४००० माली और अन्य जातियाँ, ५००० वैश्य तथा २५०० शूद्र इस नगर में निवास करते थे। सभी धन-धान्य और समृद्धि सम्पन्न थे।

समय ने करवट बदली। उल्टी हवा बही और बना बनाया खेल घंटों में बिसन गया। भीम-काय गगन-चुम्बी प्रासाद क्षीणकाय झोपड़ों में बदले। वह ऐश्वर्य्य और वैभव जिसका पृथ्वी पर डंका और आकाश में आतंक था रेत खेत हो पृथ्वी पर लुढ़कने लगा। शिरोमणि-मुकुट पैरों पर लोटने लगा। बस दिनोंदिन अवनति होती गई। भगवान तेरी लीला।

सन् १८९१ ई० में निम्न-लिखित चोला बदला! हाय, रे काल!

महाजन जैन ३७५, श्रीमाल ब्राह्मण २००, सेवक, भोजक ७५, सुनार ३०, बन्धारा ३५, कंसारा ४, घांची ३०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुम्भकार १२, मुसलमान कुम्भकार ४, रबारी ७०, भिक्षुक साधु १०, सामी अतीक १०, पिजारा मुसलमान १५, लुहार ३, गोला १२, जाट २, देशन्त्री १, आचारो १, कोली १३, वैश्या ३०, मेमन २, मालो २५, कठियारा ११, भाट १२०, बिसाती मुसलमान १, सिलावट १, चूड़ीगर मुसलमान २, चमार तृतिया १७, सरगरा १, नीरगर ५, दर्जी १२, नाई ७, सोलंकी जागीरदार १५, बांभी २, वणकर (वांभिया) ४०, वाधरी १, ढोली मुसलमान ८, भङ्गी १, रङ्गरेज २, मोची ३०, खटीक १, भील १२०।

उपर्युक्त संख्या गृहानुसार दी गई है। यदि ध्यान से देखा जाये तो भूत-वर्तमान में पृथ्वी-आकाश का अन्तर है! कहाँ वह जन संख्या कहाँ यह गृह-संख्या-तालिका !! १७ वीं शताब्दी में भी नगर का विस्तार-पर्याप्त था। सन् १६११ ईस्वी की बात है, कि एक निकोलस उफ्लेट नामक व्यापारी मारवाड़ में आया। प्रसिद्ध स्थानों का भ्रमण करते हुए उसने भीनमाल का भी निरीक्षण किया। लिखता है, "भीनमाल ३६ मील अर्थात् १८ कोस के घेरे वाला एक सुन्दर विशाल और रमणीय नगर है। अनेकों बावली तालाव और कुयें लुप्तप्राय हैं। अनेकों पतितावशेष खँडहर हैं। अतीत की स्मृति में विह्वल और कातर और इन खंडहरों पर पीलू वृक्ष सान्त्वना रूप में अपना छाया-छत्र छितरा कर छोटे लम्बे हाथों से प्राचीनतम सभ्यता, सजीवता और मनमोहकता के आलिंगनार्थ अपने जीवन के दिन काट रहे हैं। किसी भूत-पूत की प्रतीक्षा में स्वयं भूत बने हैं।" सच है, अपनों की दया आये, आये—फिर आये। आगे लिखा है—दक्षिण उत्तर और पश्चिम की ओर सपाट खुला मैदान है, जो पश्चिम में वेलुमय भूमि से मिल जाता है। मैदान सपाटी पर पांच सौ और ८ सौ फुट ऊँची छोटी छोटी पहाड़ियाँ (टेकरियां) हैं। नगर से बाहर पांच छः मील की दूरी पर उत्तर में जालौर द्वार, पश्चिम में सांचौर द्वार! ईसान में सूर्य्य द्वार, अग्निकोण में लक्ष्मी द्वार थे जिनके खंडहर अब तक विद्यमान हैं। पीनकाय भूमिशायी गृहों, देवालयों और तालावों के विशाल खंडहरों से प्रतीत होता है कि किसी समय में यह नगर जन-धन-समृद्धि से परिपूर्ण रहा होगा।"

जहाँ तक उपर्युक्त कथन का सत्यता से सम्बन्ध है वहां तक दृढ़तापूर्वक कहा जा सकता है। कि भीनमाल के भूतपूर्व-अपूर्व-वैभव, अद्वितीय-निर्माण, विशद्-विस्तार और विस्तरित व्यापार में सन्देह को स्थान नहीं। जैसा कि प्रस्तुत पतितावस्था भी इसकी साक्षी है।

ये तो हुआ इसका प्राचीन इतिहास मिश्रित भूगोल। अब रहो वर्तमान भौगोलिक स्थिति। आइये इस पर भी विचार कर लें। और भूत-वर्तमान का साम्मुख्य करके इसके उत्कर्ष-अपकर्ष का पता लगायें जो कि अपना मुख्य उद्देश्य और ध्येय है।

नवीन स्थिति

मारवाड़-भूगोल-अवलोकन से पता चलता है कि यह देश तीन प्राकृतिक भागों में विभाजित किया जा सकता है:—

१—पहाड़ी भाग—दक्षिणी और पूर्वी प्रदेश।
२—मटियाला भाग—मध्यस्थ प्रदेश।
३—रेतीला भाग—उत्तरी व पश्चिमी प्रदेश।

भीनमाल मारवाड़ अन्तर्गत जसवन्तपुरे परगने में जोधपुर से ९६ मील के अन्तर पर पहाड़ी भाग अर्थात् दक्षिणी-वीं प्रदेश में स्थित है। लगभग २० से ३० फ़ोट ऊँची और उत्तर-दक्षिण पौन मील लम्बी विस्तरित टेकरी (पहाड़ी जमीन) पर बसा हुआ है। यह २४°-४२° उत्तर अक्षांश और ७२°-४०° पूर्वी देशान्तर के मध्य में है।

सीमा

उत्तर में—सुकड़ी[1] (सुकी) नदी।
दक्षिण में—सांचौर प्रदेश।
पूर्व में—आबू की पर्वतमाला।
पश्चिम में—लूणी नदी।

विस्तार का क्षेत्रफल

नगर का क्षेत्रफल ७६००० बीघा है। जिसमें खालसा और जागीर दोनों सम्मिलित हैं।

१—यह सिरोही और मारवाड़ की सीमा के पहाड़ों से निकली है और जालौर होकर लूनी नदी में मिल गई है। यह १२० मील लम्बी है, परन्तु सदैव जल नहीं रहता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलवायु

यहां का जलवायु शुष्क और उष्ण है। परन्तु एक विचित्र और उल्लेखनीय बात यह है कि यदि बाहर खुले मैदान में दिन की उष्णता और विशेषतः लू की झुलसाने वाली लपटें असहनीय हैं; तो संध्या-काल में वही लपटें सुगन्धित शीतल रूप धारण कर परिश्रान्त सन्तप्त और म्लानमुख आत्माओं को अपने ठंडे ठंडे झोंकों से थपकियां, लोरियां दे दे निद्रा के वशीभूत कराती हुई दृष्टि गोचर होती हैं। जलानेवाली वस्तु भी आह्लादकारी और आनन्ददायक बन जाती है। विष अमृत में बदल जाता है।

वैसाख (मई) और जेठ (जून) में बड़ी गर्मी पड़ती है और धीरे धीरे 'लू' रूप धारण कर लेती है। आषाढ़ (जुलाई) श्रावण (अगस्त) और भादों (सितम्बर) में वर्षा होती है और इन्हीं दिनों में जुड़ी-ताप, नारू वा बाला रोग अपना उग्र रूप धारण करता है। कार्तिक (नवम्बर) मगसर (दिसम्बर) और पौष में कड़ाके का शीत पड़ता है।

मौसमी हवायें

जल से परिपूर्ण हवायें वर्ष में नियत समय पर चला करती हैं। इनमें से मुख्य दक्षिणी-पश्चिमी मौसमी हवायें हैं; जो दक्षिण-पश्चिम की ओर से जून, जुलाई, अगस्त और सितम्बर के महीनों में चलती हैं। परन्तु भूमि की तर हवा और उच्च श्रेणियों के अभाव से नगर की अतृप्त तृषित आँखें वर्षा की वाट जोहते जोहते 'कसर रह गई' 'कसर रह गई' की भीषण पुकार के साथ मन मार बैठ रहती हैं। करें भी क्या ? कुछ हाथ का वश नहीं। वर्षा की बड़ी बड़ी काली घटायें भीनमाल को पांच छः वर्ष से क्या कुछ देकर जाती हैं उसका निष्कर्ष यह है :—

जलवृष्टि

गत ६ वर्ष की वृष्टि-तालिका:—

सन् १९२६ ई०	सन् १९२७ ई०	सन् १९२८ ई०
५४ इञ्च १९ सेंट	२८ इञ्च २३ सेंट	१६ इञ्च २ सेंट
सन् १९२९ ई०	सन् १९३० ई०	सन् १९३१ ई०
२७ इं० ९५ सेन्ट	१२ इंच १६ सेंट	१५ इंच २० सेंट

कभी कभी उत्तरी-पूर्वी मौसिमी हवा के (Cyclonic) तूफ़ान आ जाने पर तीन चार वा अधिक दिन लगातार वर्षा होती रहती है। इसी वर्ष लगभग २०दिन सूर्य्य के दिव्य-दर्शन तक न हुए थे।

तापक्रम

माध्यम वार्षिक तापक्रम ७५°F के लगभग है। यदि ऋतु ठीक है तो जाड़ा कष्ट-प्रद नहीं होता और खुले-मैदान दिवस व्यतीत करना बड़ा आनन्द-प्रद और सुख दायक होता है; परन्तु कभी कभी तो जाड़ा ऐसा उग्र और भयंकर रूप धारण करता है कि दांत कट कटाते, हाथ थरथराते और जीभ सी सा करते ही अपना एक एक दिन व्यतीत करते हैं। गर्मी भी नर्मी का नाम नहीं जानती। उत्कर्ष-अपकर्ष के रंग बदल-बदल रुलाती और हंसाती रहती है।

जन-संख्या

मोटे रूप से देखने पर यहाँ साढ़े पांच हज़ार की जन् संख्या और पन्द्रह सौ पचास घर की बस्ती है। अधिक जन संख्या ओसवाल, भील और ब्राह्मणों की है। ओसवालों के घर ४७५, ब्राह्मणों के २०० और भीलों के ३०० के लगभग हैं। कई और जातियां भी निवास करती हैं उनमें से मुख्य मुख्य निम्नांकित हैं :—

सुनार, मोची, जटिये (जूतिये), बांबी, राजपूत, बन्धारे अग्रवाल, भाट, मुसलमान माली, बढ़ई, रङ्ग-रेज़, जाट, लखारे, कुम्भकार, देशन्त्री, आचार्य्य, दर्ज़ी और नगर नायिका। इनके अतिरिक्त धोबी इत्यादि कई अन्य छोटी छोटी जातियां भी निवास करती हैं।

गमनागमन

यात्रा के सम्बन्ध से रेल के पूर्व भीनमाल 'काले-पानी' के नाम से पुकारा जाता था। राज-कर्मचारी तो अपना परिवर्तन भीनमाल के लिये सुनकर ऐसे कांप उठते थे जैसे किसी आपदा से साम्मुख्य की तैयारी पर डरपोक सिपाही। रेल से पूर्व भीनमाल-यात्रा वास्तव में थी भी कष्ट-प्रद। अभिमत स्थान पर पहुँचने के लिये सुमेरपुर, रामसीन इत्यादि नगरों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्कर लगा ऊँटों की टक्कर खा तीन-चार और पाँच दिन के पश्चात् कहीं विश्राम मिलता था। नाकों दम था, पैरों जान थी। राम रे राम! कहीं ठिकाना है इस ऊँट-यात्रा का!! ईश्वर बचाये ऐसी यात्रा से!!!

रेलगाड़ी ने भीनमाल यात्रियों के लिये पर्याप्त सुविधायें उपस्थित कर दी हैं। अब यात्रा का एक मात्र आश्रय ऊँट ही नहीं रहे, अपितु रेल भी। आशा की जाती है कि समदड़ी-भीनमाल लाइन के कच्छ पहुँच जाने पर भीनमाल अपनी पूर्व सी भव्य रमणीयता मनोहरता और विशालता का भागी बनेगा और मारवाड़ के किसी उन्नति नगर से पीछे हटने के लिये बाध्य न हो सकेगा। ईश्वर करे, यह आशा पुष्पित और फलित हो।

वनस्पति

मारवाड़-अन्तर्गत अन्य प्रान्तों वा नगरों पर दृष्टि-पात करते हुए कहना पड़ेगा कि वनस्पति-सुम्बन्ध से भीनमाल एक धनी-मानी नगर है। इस कथन से मेरा उद्देश्य वनस्पति-प्रचुर्य्य दर्शाने का कदापि नहीं, वरन् अन्य नगरों की वनस्पति-सम्पत्ति की अपेक्षा भीनमाल-तृणाच्छादित-भूमि की अधिकता है। यों तो अधिकतर, सिंचाई के अतिरिक्त, सारा नगर ही ऐसी दशा में है जो कि न तो बहुत उन्नति ही है न अवनति ही। ग्रीष्म झंझावात के प्रचन्ड थपेड़े मध्यम हरियाली को भी रेत खेत करके दम लेते हैं सच है, "दुष्ट हृदय कभी दूसरे का मान-सम्मान नहीं सहन कर सकता"।

पहाड़ियाँ वृक्ष-विहीन हैं। माली लोग सिंचाई द्वारा निम्नांकित शाक भाजी उत्पन्न करते हैं:—

बरसात में—कंकोड़ा, करेला, तोरियाँ, चन्दलाई, बथुआ, भिंडी, कोला, कालिङ्गा इत्यादि।

जाड़ों में—शकरकन्द, मूली, गाजर, प्याज, सिंवाड़ा, लौकी, मेथी, पालक, चक्की, धनिया, मिरच, बैंगुन इत्यादि।

ग्रीष्म में—ककड़ो, बैंगुन इत्यादि।

प्राकृतिक उपज में जंगलों में अधोलिखित छोटे छोटे पेड़ देखने में आते हैं:—

आँवल, गूलर, कैर, धामन, शमी, झड़बेरी, कूभट पीलू, गूँदा, बबूल, नीम, बट, इमली, करौंदा, पीपल, सन्देला, खजूर, नींबू, दाड़िम और मीठा नीम इत्यादि।

सुगन्धित फूलों में गुलाब, अब्बास, चमेली इत्यादि पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त हज़ारा (गेंदा) कनेर, सदा सुहागिन, कोइली और आक इत्यादि के फूल भी देखने में आते हैं।

आम-जामुन इत्यादि पेड़ यहाँ बिल्कुल नहीं होते परन्तु तम्बाकू इत्यादि पर्याप्त रूप में प्राप्त होते हैं। और कई प्रकार की घास भी जो जड़ो-बूटियों के काम आती है, यहाँ उत्पन्न होती है।

उपज

मुख्य रूप में यहाँ दो फ़सिल अर्थात् सावनू (ख़रीफ़) और उनालू (रबी) ही होती हैं। सावनू फ़सिल वर्षा से होती है। यथा समय जलवृष्टि होती रहती है तो फ़सिल बहुत अच्छी होती है। इसमें बजरी, ज्वार, मूंग, मौठ, मक्की, ग्वार, तिल और कपास आदि उत्पन्न होते हैं। उनालू (रबी) की फ़सिल सिंचाई द्वारा होती है, जो कुओं वा बन्धों के पानी से की जाती है। इसमें गेहूँ, चना, जौ, सरसों, मिर्च और धनिया आदि उत्पन्न होते हैं। यहाँ की मंग और स्थानों से मोटी और अच्छी होती है।

खाद्य पदार्थ

यों तो ज्वार, बाजरा, गेहूँ, चना, जौ, तिल, कपास और मकई सभी प्रयोग में लाये जाते हैं परन्तु सब से अधिक महत्व और श्रेय बाजरे और ज्वार को ही है। क्योंकि सर्वसाधारण का तो मुख्य भोजन यही है और यही पदार्थ सब से अधिक उत्पन्न भी होते हैं। यदि 'बाजरा-ज्वार-नगर, कह दिया जाये तो अत्युक्ति न होगी। नित्य का साधारण भोजन बाजरे का, छाछ घोला बाजरे का आटा (राबड़ी), बाजरे की खिचड़ी, दलिया घाँट अथवा ज्वार, पीलू कीकड़ इत्यादि की उबाली हुई फलियों का शाक है! झड़-बेरी के बेर भी बड़े सुरक्षित रूप में रक्खे जाते हैं और समय समय पर बड़े चाव से खाये जाते हैं। इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि सब के भोज्य पदार्थ यही हैं जो कि वर्णन किये गये हैं। उन्नति जातियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गृहस्थों में अच्छे पकवान और खाद्य-सामग्री भी बनती है। जैसे दाल-बाटी, माल-पूआ, शीरा और अनेक मिठाइयां। गोष्ठी के समय इन समस्त खाद्य-पदार्थों का ठाट-बाट दर्शनीय और अनुकरणीय है। परन्तु साधारण जनता की ओर देखकर विवश हो कहना पड़ता है कि दिल्ली सम्राट् की मानसिंह के प्रति यह उक्ति ठीक ही है। जो कि कुछ रूप में भीनमाल के ऊपर भी घटित हो रही है :—

"बाजरी का सोगरा मोठन की दाल।
आँकड़े की झोंपड़ी फोगन की बाड़।
देखी राजा मानसिंह थारो मारवाड़॥"

खनिज पदार्थ

मारवाड़ का एक आध स्थान ही ऐसा होगा जहाँ पर कोई खनिज-पदार्थ प्राप्त न होता हो या उसके चिन्ह दृष्टिगोचर न होते हों। परन्तु लागत की अधिकता उन पदार्थों को उनके स्थान पर ही ढका-ढंपा पड़ा रहने के लिये ही विवश करती है। भीनमाल में भी कई स्थानों पर ऐसे चिन्ह पाये जाते हैं जिनसे कि नमक की विद्यमानता दिन-दहाड़े प्रतीत होती है। सुना जाता है—कि उत्तर में नाले पर और पूर्व में भी कोइटा और भीनमाल के मध्यस्थ नमक के चिन्ह दृष्टि गोचर होते हैं। सब से प्रसिद्ध खनिज-पदार्थ सम्बन्धी वस्तु जो यहां पर है उसका नाम है 'लोह कांटी'। इसके विषय में प्रसिद्ध है, कि इस से पेट-तिल्ली-दर्द और अन्य रोग बात करते करते काफूर हो जाते हैं। इसका रंग काला होता है। बोझ में भारी होती है। एक प्रकार के पत्थर के रूप में निकलती है फिर कूट कर गौमूत्र इत्यादि में तैयार करके डेढ़ रुपया सेर के भाव बेची जाती है। यह भी सुना जाता है, कि यह भारत भर में अप्राप्य-अलभ्य और अनुपम वस्तु है। दूर दूर के वैद्य हकीम और जाननेवाले बड़े प्रयत्न और मूल्य में प्राप्त करते हैं। भगवान की लीला अपरम्पार है। कहीं विष है; तो कहीं अमृत।

पशुधन

पशुधन की अधिकता में भीनमाल भले ही बढ़ा-चढ़ा हो; परन्तु सुघराई, अच्छाई, और नस्ल के सम्बन्ध में वह दीन और नितान्त दीन है। गायों की संख्या एक एक भाट के पास सौ सौ होगी परन्तु उन के खान-पान, रहन-सहन और अच्छी नस्ल उत्पन्न करने की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जाता और यही कारण है कि प्रातःकाल सैकड़ों गौवें इधर उधर विचरती और विष्ठा भक्षण करती दिखाई देती हैं। इससे आपको पता चल सकता है कि नगर का कितना धार्मिक-पतन और ह्रास हो चुका है। धर्म-ठेकेदार, ढोंगधारी, लकीर के फ़कीर और मोटे-पग्गड़ इधर ध्यान दें। भगवान् सुमति दे और हमारे सिर से इस प्रत्यक्ष-पाप की भाप बना बना कर उड़ा देने में हमारी सहायता करे जिस से हम वास्तविक-धर्म समझने में समर्थ हो सकें।

गायों के अतिरिक्त दूध देने वाले जानवरों में भैंस, बकरी और भेड़ हैं परन्तु उनकी दशा भी बड़ी दयनीय है। महा-मास की अंधेरी रात है, कड़ाके का शीत है, पक्षी तक चुप हैं। स्वामी गृहों में बड़ी रक्षा से अपना प्रत्येक अंग ढांप कर वायु के जहरीले-विषैले डंक से भयभीत हो छुप छुप कर जीवन का आनन्द लूटते हैं। और यह बे बोलती-आत्मायें खुले-मैदान सारी रात अपने ऊपर उदार स्वामियों के व्यवहार की कड़ी आलोचना करते हुए, उनकी जानों को कोसती इस दुर्व्यवहार पर कुढ़ती हुई अपनी मूक-वेदना प्रकट करती हैं। मानव-हृदय तू कितना कठोर और निष्ठुर है! क्या स्वार्थ के आगे तुझे कुछ भी कर्तव्याकर्तव्य का ध्यान रहता है!! दयालु देव! आप ही इस मूक-वेदना परपसीजो और स्वाहा कर दो उस संसार को जिसे अपने अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं!!

इनके अतिरिक्त यहाँ सवारी के पशु ऊँट, घोड़े और गदहे भी पाये जाते हैं। घोड़ों पर जीगारदार, धनवान इत्यादि, गदहों पर कुम्भकार और भंगी इत्यादि और ऊँटों पर सर्वसाधारण सवारी गांठते हैं। वास्तव में ऊँट ही यहां के अधिक कार्य्य संचालित करता है। यही यहाँ का पोत है, यही सर्वस्व। इसकी उपयोगिता पर किसी ने क्या अच्छा कहा है :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ऊँट सवारी देय, ऊँट पानी भर लावै।
लकड़ी ढोवै ऊँट, ऊँट गाड़ी ले धावै॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेत जोते ऊँट, ऊँट पत्थर भी ढोवें।
जो न हो इक ऊँट, लोग कर्मों को रोवें॥

बैल हल जोतने और गाड़ियाँ खींचने के काम आते हैं। कुओं से पानी भी इन्हीं के द्वारा खींचा जाता है। जंगली पशुओं में बाघ, रीछ, हिरन, भेड़िया लोमड़ी, शशक, सूअर और स्यार आदि पाये जाते हैं।

व्यवसाय

छोटे-मोटे तो कई प्रकार के धन्धे और व्यवसाय इस नगर में पाये जाते हैं; परन्तु बड़े बड़े व्यवसाय ये हैं।

कृषि, चमड़े का काम, पृथ्वी से ईंट खोदना, रंगाई करना, व्यापार करना, काँसी के बर्तन बनाना राजपूतों, मालियों और कुछ अन्य जातियों का कार्य्य कृषी करना और अन्न उपजाना है। जटियों का कार्य्य चमड़ा साफ़ करना और रंगना है। मोची जूतियां बनाने में मस्त हैं अपनी इस कला में जगत-प्रसिद्ध हैं। भील लोग नगर के बाहर पृथ्वी को खोद खोद कर पुराने मकानों की ईंट निकाल कर बेचते हैं और अपना पेट पालते हैं। रंगरेज वा बन्धरे बड़ी अच्छी रंगाई करते हैं। व्यापार महाजनों और बनियों के हाथ में है। कंसारे कांसा के बर्तन बनाने और अपनी कला-कौशल का बड़ा अच्छा जीता जागता उदाहरण देते हैं। गिरी दशा में भी अपने हस्त कौशल द्वारा भीनमाल का मुख उज्जवल कर रहे हैं। सर्व श्रेष्ठ माननीय भूदेव अन्ध-विश्वास, मुहूर्त, शकुन-अपशकुन और दृष्टि-दोष आदि के मिथ्या चक्कर में पड़ निर्धनता, दीनता और भिक्षा वृति से टक्कर ले रहे हैं! समय तेरी बलिहारी! तू जो खेल खिलादे वही थोड़ा!!

व्यापार

व्यापार की दृष्टि से नगर अधिक उन्नति नहीं। अब रेल के आने से तो व्यापार में अनेकों सुविधायें उपस्थित हो गई हैं; परन्तु रेल के पूर्व तो व्यापार बड़ी गिरी दशा में था। सैकड़ों मील की यात्रा थल मार्ग से होती थी जिसके कारण विक्रय मूल्य बहुत बढ़ा चढ़ा रहता था। यद्यपि स्वच्छ और मनोवांछित सामान अब भी प्राप्त नहीं होता फिर भी पूर्व और वर्तमान भाव में थोड़ा बहुत अन्तर अवश्य है और आशा की जाती है—जो दशा आज है वह कल न रहेगी बदलते बदलते बदल जायेगी। नगर में तो बहुत कम महाजन और बनिये दुकान खोलते हैं। अधिकतर लोग बम्बई जाते हैं और वहीं कोई न कोई धंधा आरम्भ कर देते हैं। तीन लाख से अधिक सम्पत्ति वाला कोई व्यापारी प्रतीत नहीं होता। गृहस्थों में गृहणों को अन्य धन्धों से ही अवकाश नहीं मिलता इस कारण कर-कौशल-सम्बन्धी व्यापार नितान्त चौपट है। हाथ से सूत कातना अपमान समझा जाता है। अधिकतर व्यापार दलाली और सट्टे पर आश्रित है जो कि व्यापार के नाम को न केवल कलंकित हो करता है वरन् अपदस्थ और लांछित भी। बड़े से बड़ा व्यापारी भी सत्यता और ईमानदारी को पास नहीं फटकने देता। ये है नैतिक पतन! ये है कोरा अनीश्वर वाद!! भगवन् रक्षा।

निसार (बाहर जाने वाली वस्तुएं)

ऊन, आंवल की छाल, कांसी के बर्तन, जूते और चमड़ा, घी, ऊँट, बैल, नर-पशु इत्यादि।

पेसार (बाहर से आने वाली वस्तुएं)

ऊनी-सूती कपड़ा, शस्त्र, मेवा, हाथी दांत, किराना यंत्र, और औषधियां, चीनी और काँच के बर्तन, मिट्टी का तेल, सोना, चाँदी, शक्कर, गुड़, लकड़ी और कोयला आदि आवश्यक वस्तुएं बाहर से आती हैं।

प्रसिद्ध वस्तुएं

काँसी के थाल और छोटी कटोरियाँ, चमड़े के जूते और लोह कांटी अधिक प्रसिद्ध हैं। नगर में तो इन वस्तुओं की बिक्री होती ही है परन्तु बाहर के लिये भी इनका निकास पर्याप्त रूप में होता है।

शिक्षा

शौर्य्य की आँखों-देखी कड़क-कविता में बढ़ बढ़ कर हाथ मारने वाले, नवीन पैंतरे बदलने वाले, राजा भोज को अपने पांडित्य से चकित करने वाले विद्वानों की शिक्षा को और से संग मनंग होकर बैठ रहना विद्वता का घोर पतन, सभ्यता का नग्न-ताण्डव और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाखंड की भारी डींग नहीं तो क्या है ? गंभीर-साहित्य धौंसे की धमक, रम्य शब्दावली-कड़खे की ताल पर रणरंग की होली खेलने वाले वीर पंडित यदि अविद्या पाखंड और याचना का दूषित रंग बरसाते मिलें तो किस हृदय को ठसक न पहुँचेगी ! कौन हृत्तन्त्री न बज उठेगी !! कौन सहृदय न रो उठेगा !!!

संस्कृत-ज्ञान की तो कौन कहे भाषा की जान के भी लाले हैं। सम्भव है प्रतिशत एक भी मनुष्य ऐसा न हो जो शुद्ध भाषा लिखना पढ़ना जानता हो। यह अविद्या साम्राज्य और विद्या संहार नहीं तो क्या है ? राज्य की ओर से शिक्षा का पर्याप्त प्रबन्ध है। नगर में दो पाठशाला हैं। एक भीतर तो दूसरी बाहर। दस अध्यापक सदैव जनता की सेवा शुश्रूषा करने के लिये तैयार रहते हैं परन्तु उन्हें यह भी स्वीकार नहीं। बालकों का समय व्यर्थ के वातावरण में विचरने से भले ही नष्ट हो, तीनों प्रकार की शक्तियां नहस-तहस क्यों न हो जायें, शुद्ध कोमल चरित्र नीच दुश्चरित्र में क्यों न बदल जाये परन्तु उनको पाठशाला भेजना स्वीकार नहीं। कैसा दुस्साहस है ! कितनो हठ !! ऐसी परिस्थिति में भी पाठशाला-नियंत्रण के अतिरिक्त नगर निवासियों को समझा बुझा कर शिक्षा-प्रचार करना एक मात्र अध्यापकगण के अदम्य उत्साह, तत्परता, सहिष्णुता और कर्तव्य परायणता पर निर्भर है। पत्थर पर जोंक लगाना संभव है आसान हो परन्तु अशिक्षित जनता को समझाना आसान नहीं। कांटों में धसना है, अंगारों पर चलना है। कक्का-केवली जानने वाले 'गुरांशा' की पौशाल (काल कोठरी) में ठूँस कर भले ही अपुष्पित नन्हीं नन्हीं कलियों के हृदय छेद दिये जायें परन्तु राज्य की छत्र-छाया में बैठाना अंगीकार नहीं। क्या यह हठ धर्म्मी और धांधली नहीं ?

भाषा

कोई भाषा नियत नहीं। न हिन्दी ही है, न मारवाड़ी और न गुजराती। इस भाषा का नाम यदि 'खिचड़ी भाषा रख दिया जाये तो बड़ा उपयुक्त हो। अनेकों गुजराती शब्दों जैसे चोपड़ी, महता इत्यादि का प्रयोग होता है। फ़ारसी शब्दों से भी छुटकारा नहीं। फणस (फ़ानूस) मुजरा आदि का प्रयोग सर्व साधारण में पाया जाता है। मारवाड़ी भी निराली है। समझे का 'हमजे' 'हजमे' आदि प्रयोग पाये जाते हैं। आदमी को 'आमदी' भी बोला जाता है। 'स' के स्थान पर 'ह' और 'च' के स्थान पर 'स' का प्रयोग बहुत पाया जाता है। जैसे, समझे को हमजियो, हमजियों और चाकू को साकू आदि। सच की सत्यता पर विश्वास न कर के उसे 'च' का रूप देना इनके बायें हाथ का खेल है। जिसने अपना सर्वस्व नष्ट कर दिया हो दूसरों के बिगाड़ने में उसे कैसा संकोच ? इन पंक्तियों के लेखक को 'डिंगल' के पढ़ने का चाव लगा। कुछ हस्थ लिखित ग्रन्थों का पता लगा। रास्ते छान मारे परन्तु पुस्तक स्वामियों के हृदय न पसीजे ! अन्त में मन मार कर बैठ रहना पड़ा। प्राचीन ग्रन्थों को दूसरों को दिखाना बुरा और हेय समझा जाता जाता है। आशा है भीनमाल-नवयुवक मंडल इस निस्सारता की जड़ खोद कवि के इन शब्दों का निरीक्षण करेगा। और दुखिया मातृ-भूमि के इस प्रश्न का उचित और त्याग रूप उत्तर देगा—

> "मेरे गौरव के बादल का गया सरल रंग लाल।
> फैला मेरे वक्षःस्थल पर, काला रजनी-काल ??
> अपने यश से ही आलोकित, झुकता मेरा भाल।
> मेरी फिर से लाज रखेंगे, कब ये मेरे बाल ?"

सब एक से नहीं होते। कुछ विद्वान और शिक्षा प्रेमी ऐसे भी हैं कि उनकी जितनो भा प्रशंसा की जाये वह सब थोड़ी है।

कला-कौशल

जब शिक्षा नहीं ता कला-कौशल कहां ? जितना उन्नत और सभ्य देश होगा उतनो ही उन्नत उसकी कला होगी। यही कारण है कि इस विषय में नगर नितान्त चौपट है। कंसारों और मोचियों के कर-कौशल को छोड़ कर और कोई कला उल्लेखनीय नहीं।

रहन-सहन

शिक्षा और कला-कौशल का ही प्रतिबिम्ब रहन-सहन पर पड़ता है। जितनी उच्च शिक्षा और कला-कौशल होगी उतनाही उच्च रहन-सहन भी। परन्तु यह इन दोनों बातों में शून्य है इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां का रहन सहन भी ऐसा ही है। न स्वास्थ्य-रक्षा के नियमों का पालन होता है न शिष्टता का व्यवहार। नगर मार्ग घूर और अस्वच्छता के घर बने हैं। भोजन आच्छादन में भी पर्याप्त शुद्धि को स्थान नहीं। परन्तु श्रीमाली जाति की इस विषय में मुक्त-कंठ से प्रशंसा और सराहना करनी पड़ेगी। गृहों के भीतर वातायन, गवाक्ष और खुले मैदान का विशेष ध्यान नहीं रक्खा जाता। बाहर पुरुषों के बैठने को कोई बैठक नहीं। प्राचीन रीतियों और बनावटी पर्दे का प्राबल्य है। स्त्रियों को गहने और चूड़े* इत्यादि से ढुबका छिपका कर रक्खा जाता है और वह भी इसे बड़ा पसन्द करती हैं।

दर्शनीय स्थान

निम्नांकित स्थान यहाँ पर देखने योग्य हैं :—

माता जी की भाखरी—यहाँ पर माता जी का एक मन्दिर बना है। वर्ष में दो बार इस मन्दिर में एक भैंसे और बकरे की बलि चढ़ाई जाती है। मानव-हृदय के इस नृशंस व्यापार से 'मातेश्वरी' प्रसन्न हो या न हो, परन्तु उसे निर्दोष निष्पाप मूक हृदय के रक्त में हाथ रंगने से ही सन्तोष मिलता है? हाय री सभ्यता! वाह रे धार्मिक ढोंग!!

चण्डीनाथ का मन्दिर—यहां पर एक विद्वान वयोवृद्ध श्रीमाली सन्यासी रहते हैं जो संस्कृत के पूर्ण ज्ञाता हैं। इसी मन्दिर में एक बावली है जिसके विषय में सुना जाता है कि इसके जल-प्रयोग से कैसी ही खुजली हो मिट जाती है।

बड़ी पाठशाला, चिकित्सालय, पुलिस कार्यालय, पार्श्वनाथ जी का जैन मन्दिर, वाराह जी का मन्दिर और जैनियों के कुछ अन्य मन्दिर देखने योग्य हैं। पाठशाला का भवन एक विस्तृत खुले मैदान में है और पर्याप्त विशाल है। रेलवे स्टेशन भी ठीक है। न बहुत बड़ा है न बहुत छोटा। वर्षा ऋतु में बड़े तालाब की शोभा निराली और मन-हरण होती है। वायव्य दिशा में नील कंठ मन्दिर भी देखने योग्य है।

धार्मिक मेले और विचार

निवासी प्राचीन रूढियों के प्रेमी और भक्त हैं, धर्म-भीरु और डरपोक हैं। जिससे ज्ञात होता है कि वह प्राचीन उष्ण रक्त जिसमें अपने मान सम्मान के लिए मिनटों में उफान और उबाल आता था अब जम कर ठंडा हो चुका है। नस, वह फड़कने वाली नस नहीं! अन्याय पर पाद-प्रहार नहीं! ऊँचा उठने वाला सर नहीं! समस्त अंग शिथिल और निर्जीव हैं, बेजान हैं। विधवा विवाह पाप—महा पाप समझा जाता है। बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह की कमी नहीं। भर पेट धन लेकर दुधमुहीं बालिकाओं को आंख मीच कर ढकेल दिया जाता है जिसका न कोई प्रतिशोध है, न प्रायश्चित!

वर्ष में दो बार जैनियों के दो बड़े मेले एक भाद्रपद और दूसरा पौष मास में बड़े समारोह से मनाये जाते हैं। प्रथम में पार्श्वनाथ जी की रिवाड़ी निकाली जाती है और दूसरे में सब लोग गोड़ी जी के मन्दिर में, जो गांव से बाहर वायव्य दिशा में है, दर्शन करने जाते हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष में तीज से अष्टमी तक गोर का मेला होता है जिसमें ऊँट और घोड़ों की भाग्य भी होती है। चैत्र वदी सप्तमी को शीतला देवी का मेला चंडीनाथ में होता है। श्रावण सुदी १४ को 'माता जी' का और भाद्रपद सुदी एकादशी को 'देव झूलनी' का मेला बड़े चाव और श्रद्धा से परिपूर्ण किया जाता है। दशहरा का मेला भी नियम पालन के लिये ज्यों त्यों कर के समाप्त कर दिया जाता है। इन सब मेलों में पर्व की वास्तविकता पर ध्यान न देकर असत्यता, ढोंग और निस्सारता का ही साम्राज्य दिखाई देता है। अत्याचार होते हैं, धर्म के नाम पर कदाचार होते हैं, धर्म के नाम पर बेटियां बिकती हैं धर्म के नाम पर और न जाने कैसे कैसे गुरुडम रचे जाते हैं धर्म के नाम पर ऋषियों की पवित्र आत्माओं! माघवंशजों! सभ्य साहूकार और सेठों! बलि चढ़ा दो इन कदाचारों को, आग में झोंक दो उन पापों को जो आप की शारीरिक नैतिक और सामाजिक शक्तियों के

* यह एक गालाकार कुंडल के रूप में होता है। इसको सधवा स्त्रियें अपनी भुजाओं अर्थात कोहनी के ऊपर पहनती हैं। कहा जाता है कि यह हाथी दांत का होता है परन्तु इसमें सन्देह है। छोटे रूप में चूड़ियों के स्थान पर भी यही पहिना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाधक हैं। धर्म सार्थक धर्म हो। कर्म में धर्म का मर्म हो और हमारी यह आशा पूर्ण हो :—

जीवन-पथ पर बढ़ चलें, हो सब सत्यारूढ़।
भीनमाल के मध्य में, मिले न कोई मूढ़॥

नोट—इस लेख में निम्नांकित पुस्तकों से सहायता ली गई है जिनका लेखक बड़ा आभारी है :—

१—श्रीमाल पुराण व श्रीमाल महात्म्य २—प्रबन्ध चिन्तामणि ३—विमल प्रबन्ध ४—ओसवंश मुक्तावली। ५—कालीदास और भोज ६—भोज प्रबन्ध ७—उपदेश कल्पवल्ली ८—ब्राह्मण मार्तण्ड ९—यतीन्द्र-विहार दिग्दर्शन १०—मारवाड़ का इतिहास ११—चांद का मारवाड़ी अंक १२—चांद का राजपूताना अंक १३—टाड राजस्थान १४—मारवाड़ का भूगोल और मारवाड़ का नवीन भूगोल।

जालोर का क़िला

'अरावली' राजस्थान का शिरोभूषण है। इसके पवित्र और सुदृढ़ आश्रय में असंख्य महीपतियों ने अपने जीवन की आनन्द-दायिनी घड़ियों का रसास्वादन किया है। न मालूम कितने इसकी अनुकम्पा से अपने वैभव को लात मार कर अकाल में ही काल कवलित हुए हैं। वास्तव में यह वीरों की खान है। इसी पर्वतमाला में ऐसी ऐसी विचित्र वस्तुयें निर्मित हुई हैं जिनकी उपमा संसार के अन्य भागों में मिलना असम्भव नहीं तो जटिल अवश्य है। पुरातत्ववेत्ताओं को जितनी प्रचुर सामग्री यहां मिलती है, उतनी दूसरी जगह नहीं।

रणथम्भोर और चित्तौड़ जैसे शत्रु-मान-मर्दक दुर्ग भी, अपना उन्मत्त-मस्तक उठाये इसी की प्रोज्वल गाथा का कथन कर रहे हैं। यह तो रही अति प्रसिद्धि-प्राप्त दुर्गों की बात, बहुत से सुविख्यात ऐतिहासिक होते हुये भी जन साधारण की दृष्टि से परे हैं—जैसे मसधरा का जालोर कोर। हमें शिक्षक सम्मेलन जालोर की दया से ही इस सुअवसर का लाभ उठाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

हम अध्यापकगण के निश्चित कार्य-क्रम में स्थानीय इस क़िले को देखने का भी उल्लेख था। सच पूछिये तो बहुत से तो इसी अवसर की खोज में भी थे।

नियत दिन कार्य-क्रमानुसार, अध्यापक-वर्ग को एकत्रित करने के हेतु घंटिका टनटनाई गई। भला, मनवांछित को विलम्ब कैसा। पलक मारते ही दर्शनार्थी एकत्रित हो गये और आगामी की प्रतीक्षा करने लगे।

शिक्षित-समुदाय का उस प्रकार जाना भी बड़ा ही अवलोकनीय दृश्य था। सर्वप्रथम सी० टी० स्कूल जोधपुर के प्रिन्सिपल महोदय श्री आर० पी० श्रीवास्तव मय अपने विद्यार्थियों के जा रहे थे और उनके पीछे हम लगभग प्रतिष्ठित नागरिक भी साथ थे।

नगर की टेढ़ी मेढ़ी बीथिकाओं की बहार देखते हुए हम सब उस गगन-चुम्बी किले के चरणों में जा उपस्थित हुये। सब को एक आश्चर्य था। सब विचार मग्न थे कि क्या वास्तव में वहां भी कोई क़िला हो सकता है? शंका का केवल यही कारण था कि यह दुर्ग "छप्पन" की पर्वत श्रेणियों से इतना परिवेष्टित था कि सिवाय कहीं कहीं की चहार-दीवारी के और कुछ भी दृष्टि गोचर नहीं होता था।

क़िले के ऊपर चढ़ने को शिलायें ही सोपानों में परिणत की गई हैं। उन्हीं द्वारा टेढ़े मेढ़े पथ के पथिक बन हम सब चले जाते थे। न यह मालूम पड़ता था कितने चले आये और कितना और चलना शेष है। ठीक ठीक मील के रास्ते को पार कर यह बिल्कुल ऊँचा दुर्गम पथ है। दुर्ग के प्रमुख फाटक पर आ पहुँचे। यहाँ प्रवेश-पथ दिखाया गया और पीछे इसमें प्रवेश पाया।

भीतर पहुँचते ही हमारे आश्चर्य की सीमा न रही। परोक्ष की निराशा प्रत्यक्ष ही में आशा परिवर्तित देख सब दंग रह गये। क़िला क्या था, एक छोटा मोटा गाँव था। अन्तर केवल यही था कि वह जन-धन-पूर्ण और समृद्धि से युक्त होता है और यह ठीक इसके विपरीत था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस १२०० फुट ऊंची पहाड़ी पर ऐसे किले के बनाने में मनुष्य के इस साहस की भूरि भूरि प्रशंसा करनी पड़ती है। कहीं पर सुन्दर भवन शोभा दे रहे थे तो कहीं प्रकृति का तांडवनृत्य सा ही प्रतीत होता था।

सरकारी महलादि को छोड़ कर, यहां ३ जैन मंदिर ३ वैष्णव मन्दिर और एक मसजिद भी प्राचीन काल की स्मृतियों को सजग कर रही थी सम्भव है समय समय पर जैन, वैष्णव और मुसलमानों ने इसका आश्रय ग्रहण किया हो।

पुराने महलों की कारीगरी देखते ही बनती थी। कोठारों की विचित्रता भी बड़ी आश्चर्यजनक थी। यहाँ पुराना घी, मोटी मोटी रोटियां, तेल और अन्न आदि मनुष्योपयोगी वस्तुयें चिर-संगृहीत थीं। कहते हैं कि युद्ध-मग्न योद्धाओं के लिये ही उन चीज़ों को तैयार किया गया था। अब तो इन सब के पास ठहरना भी अखरता है और इन सब ने विष का रूप ग्रहण कर लिया है।

बहुत सी प्राचीन तोपें अपने मुँह में शीशा भरे हुये पड़ी थीं। क्योंकि अब वे विशेष प्रयोजनीय नहीं रहीं। ठीक यही हाल पुरानी बन्दूकों और भांति भांति के अस्त्र-शस्त्रों का भी था सब व्यवस्थित रूप में रखे हुए थे।

मन्दिरों की कारीगरी भी बहुत ही आकर्षणीय थी। भारत का पुराना-काल एक दम आंखों तक छा जाता था। उपरोक्त मन्दिर अब भी नियमानुसार श्रीमान् महाराजाधिराज जोधपुर की कृपा से फलीभूत हैं। और समय समय पर यात्रीगण आकर स्वच्छन्दता पूर्वक पूजा पाठ करते हैं। वार्षिक मेला भी आयोजित होता है।

युद्धकाल में जालोर नगर के सभी नगर-निवासी ऊपर चढ़ कर शत्रु से त्राण पाते थे। क़िले का विस्तार भी इतना है कि वहां कृषि करके वे लोग अपना शान्ति पूर्वक भरण-पोषण करते रहते थे। उन्हें युद्ध आदि का कोई खटका ही नहीं रहता था।

इस क़िले के विषय में बहुत से ऐतिहासिक घटनायें भी घटित हुई हैं—जिनमें से कुछ का उल्लेख करना विषयान्तर उपस्थित न करेगा।

(१) वर्णित वस्तुओं से २ मील के फासले पर प्रातःस्मरणीय वीरमदेव जी सोनगिरि की चौकी है और पास ही उनकी इष्ट—भगवती का भी मन्दिर शोभित है। कहते हैं अलाउद्दीन की सदोदरा श्री वीरमदेव जी सोनगिरि पर मोहित हो गई थीं और प्राण रहते उन्हीं को वरने की दृढ़-प्रतिज्ञा भी कर ली थी। तदर्थ वीरम देव जी ने बादशाह से द्रव्य लिया और जगत विख्यात इस किले का निर्माण किया। पीछे से वीरमदेव जी युद्ध में काम आये और बादशाह की बहिन यवन होते हुये भी सती हो गई—किंवदन्ती है कि वह इनकी पूर्व दो जन्म में भी धर्मपत्नी रह चुकी थी।

(२) यहां के महाराज मानसिंह जी ने भी बगावतकाल में जोधपुर से हट कर यहाँ आश्रय लिया था और पीछे से वह जोधपुर चले गये। अति सूक्ष्मरूपेण इसके ऐतिहासिक तथ्यों की विवेचना की गई है। वैसे यदि वास्तव में इसके ऊपर क़लम उठाई जाय तो एक विस्तृत पोथा बन जाय। मेरे जैसे अल्प बुद्धि वाले के लिये इसका शतांश भी लिखना टेढ़ी खीर है।

समय काफी हो चुका था। दिनकर की अंतिम सांध्य-किरणों ने अपने वैभव की अवनति के साथ, क़िले की विक्षिप्तावस्था का एक अच्छा दिग्दर्शन कराया। उधर नीचे के नगर-दीपक भी सब को लौट आने की मूक सूचना दे रहे थे। अतः सब एक नवीन भावना के नीचे उतरे और पहुँचते ही जो सबसे अत्यावश्यक कार्य किया वह—चारपाइयों का सँभालना था।

भूपसिंह चूड़ामणि "विशारद"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणी अमरीका में फेसिस्ट राष्ट्रों की गुप्त तैयारियां

एक समय था जब संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने अमरीका मॉनरो नीति की घोषणा की थी। इसका फल यह हुआ कि जहाँ योरुप के राष्ट्रों ने अफ्रीका में मनमाना बटवारा कर लिया वहीं दक्षिणी अमरीका के तीन छोटे टुकड़ों (ब्रिटिश, डच और फ्रेंच गायना) को छोड़ कर वे इस नये महाद्वीप पर अपना अधिकार न जमा सके। यदि वे वहां सशस्त्र चढ़ाई करते तो पहले उन्हें संयुक्त राष्ट्र अमरीका से लड़ाई लड़नी पड़ती। इसके लिये वे तैयार न थे। पर अब हालत बदल गई है। ब्रेज़ील, युरुग्वे और अर्जेन्टायन्त्र न्यूयार्क की अपेक्षा लिस्बन (योरुप) से ६०० मील अधिक पास हैं। अतः लिस्बन से वहां पहुँचने में कम समय लगती है। कई वर्षों से फ्रांस और जर्मनी देश के हवाई जहाज़ अपनी लम्बी यात्रा को दो दिन में पूरा करके नियम पूर्वक दक्षिणी अमरीका को जाने लगे हैं।

औसत से इन देशों का एक जहाज़ प्रति दिन वहां के लिये छूटता है। एअर फ्रांस नामक कम्पनी ने पेरिस और ब्यूनाज़ायर्स के बीच में मुसाफिर और सामान लाने और ले जाने के लिये ५४ घंटे की यात्रा नियत कर ली है। जर्मनी और फ्रांस के अतिरिक्त इटली देश भी अपने हवाई जहाज़ भेज रहा है। इटली और जर्मनी के जो समुद्री जहाज़ ब्रेज़िल और अर्जेण्टायना को जाते हैं वे इङ्गलैंड, फ्रांस या संयुक्त राष्ट्र अमरीका के हवाई जहाज़ों से कहीं अधिक तेज़, सस्ते और आराम देने वाले हैं।

ब्रेज़ील देश और भी कई बातों में योरुप की ओर झुकने लगा है। यह माना कि ब्रेज़ील को सब से अधिक आमदनी क़हवा से होती है और क़हवा का सब से बड़ा खरीदार संयुक्त राष्ट्र (अमरीका) है। लेकिन आजकल ब्रेज़ील में कपास की उपज बहुत अधिक बढ़ गई है। रुई की लगभग २७ लाख गांठें वहाँ हरसाल बाहर भेजने के लिये तैयार होती हैं। इङ्गलैंड ने अपनी मांग ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत देशों में मिलने वाले सामान से पूरा करने का निश्चय किया है। इस लिये ब्रेज़ील ने अपनी रुई को बेचने के लिये जर्मनी, इटली और जापान में बाजार तैयार कर लिया है। ब्रेज़ील से केला और दूसरे फल भी योरुप को सब से अधिक मात्रा में जाने लगे हैं। ब्रेज़ील से कुछ जस्ता भी जर्मनी को जाता है। फेसिस्ट राष्ट्र साधारण व्यापार के अतिरिक्त अपने राजनैतिक विचारों का भी वहां प्रचार करते रहते हैं।

अभी हाल में जर्मनी ने अपनी पूंजी भी ब्रेज़ील देश में लगानी आरम्भ कर दी है कहा जाता है कि लोहे (जो खानों में है और निकाला नहीं गया है) की मात्रा में ब्रेज़ील का संसार भर में चौथा स्थान है। ब्रेज़ील के इटाब्रिया (Itabria) प्रदेश में संसार को सब से अधिक समृद्ध लोहे की खान है। इस से लाभ उठाने के लिये जर्मनी की प्रसिद्ध थीसेन एण्ड क्रुप (Thyssen and krupp) नामी कम्पनी ने ठेका ले लिया है। कारेगो डी मोओ की खानों पर एक दूसरी जर्मन (Luxem burgische and hutten Akien gesellschaft) कम्पनी का अधिकार है। दूसरी जर्मनी कम्पनियां पारहिबा (Parahyba) की ताम्बे की खानों से तांबा और गोयाज़ की खानों से जस्ता निकाल रही हैं। माटो ग्रासो के जिस भाग में मिट्टी का तेल है वहां की साढ़े बारह लाख एकड़ ज़मीन कम्पनियों के हाथ में हैं ब्रेज़ील की जितनी खनिज सम्पत्ति पर जर्मनी का अधिकार है उसका यह केवल एक प्रारम्भिक अंश है। लुफ्ट हान्सा नाम की प्रसिद्ध जर्मन हवाई कम्पनी ने दक्षिणी अमरीका में अपनी हवाई लाइनों का जाल सा बिछा दिया है। सिंडीकेटो कोंडोर नाम की इसकी सहायक जर्मन कम्पनी ब्रेज़ील के अधिक धनी भागों में ५००० मील तक अपने हवाई जहाज़ उड़ाया करती है। नैटाल में इस लाइन का ट्रान्स अटलांटिक लाइन से मेल होता है। वहाँ (नैटाल) से इस के हवाई जहाज रिओ डि जेनरो पोर्टो एलीगर, मांटी-विडिओ और ब्यूना ज़ायर्स को जाया करते हैं। इसके कुछ हवाई जहाज ब्रेज़ील को पार करके भीतर पश्चिम की ओर बोलिविया और एण्डीज़ की दूसरी ओर चिली और पीरू को जाते हैं। आगे चल कर हवाई लाइन इक्वेडार और कोलम्बिया को पार करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काड्टा और लुफ्टहान्सा को हवाई लाइनों से मिल जायगी। इनका उद्देश्य कहां तक राजनैतिक है इसका पता अर्जेण्टाइना के एक पत्र-सम्पादक के इस कथन से चल सकता है कि दक्षिणी अमरीका में स्वस्तिक चिन्ह वाले जर्मन हवाई जहाज़ इतने अधिक हैं कि केवल व्यापार के काम के लिये इनकी आवश्यकता अगले सौ वर्ष तक न होगी।

अनुमान लगाया गया है कि ब्रेज़ील में पुराने जर्मनों के वंशज और नये आए हुए जर्मनों को मिला कर लगभग १० लाख होंगे। ये जर्मन बड़ी तेज़ी से यहां जर्मनी के व्यापार को बढ़ा रहे हैं। जर्मन क़हवे के बग़ीचों और कपास के बड़े बड़े खेतों में जर्मनी की ही बनी हुई खेती की मशीनें बिजली के मोटर काम में लाते हैं। जर्मन-पुतलीघरों में जर्मनी की बनी हुई बुनने वाली मशीनें हैं। सरकारी रेलों के लिये भी अधिकतर सामान जर्मनी से ही आने लगा है। जर्मनी का बना हुआ सामान संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बने हुए सामान से तीस चालीस फीसदी सस्ता बिकता है। १९३६—३७ में जर्मनी ने और देशों की अपेक्षा सब से अधिक सामान ब्रेज़ील को भेजा। संयुक्त राष्ट्र का नम्बर दूसरा हो गया। इङ्गलैंड का नम्बर यहां गिरते गिरते अर्जेण्टाइना के भी नीचे हो गया।

जर्मनी का व्यापार और राजनैतिक प्रभाव बढ़ाने के लिये वर्लिन में एक प्रचार विभाग खुला हुआ है। इस काम में गेस्टापो नाम की जर्मनी की जगत प्रसिद्ध गुप्तचर संस्था से भी सहायता ली जा रही है। दक्षिणी अमरीका में फैली हुई दूसरी और संस्थायें भी सहायता देती हैं।

दक्षिणी अमरीका में बिखरे हुये जर्मन लोग बंड, टर्नवेरेन, और जुगेंड क्लबों के सदस्य बनाये जा रहे हैं। वे स्वस्तिक झंडा-अभिवादन की सभायें करते हैं। निपुण जर्मन सैनिक उनको सैनिक शिक्षा देते हैं। इस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिये जर्मन व्याख्यान-दाता, स्कूल साहित्य, फिल्म, रेडियो आदि सभी लगे हुये हैं। जर्मन यहूदियों को छोड़कर जर्मनी ने अपने देश वासियों को पक्के ढंग से संगठित कर लिया है। जिन जर्मनों ने इस संगठन का विरोध किया उनका वहिष्कार किया गया, उनकी जायदाद को नुकसान पहुँचाया गया। उनके जर्मन नागरिकता के अधिकार छीन लिये गये और उन पर आक्रमण भी किये गये। हिटलर के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले अखबारों के दफ्तरों को जलाने की कोशिश की गई। इस सम्बन्ध में चार नाजी जर्मन एजेंटों पर मुक़द्दमा चला। जर्मन यहूदियों का जर्मनी से व्यापार सम्बन्ध तोड़ दिया गया। जर्मन सौदागरों ने जर्मन यहूदियों का यहां भी वहिष्कार किया। ब्रेज़ील की जिन दुकानों का कारबार जर्मनी पर निर्भर है उन्होंने भी यहूदियों का वहिष्कार किया। हरी कमीज़ वाले स्वयं सेवक सभी प्रकार से नाजी दल का समर्थन करते हैं।

स्थानीय जर्मनों को संगठित करने के बाद नाज़ी प्रचारकों ने ब्रेज़ील के मूल निवासियों में नाज़ी सिद्धान्तों को फैलाने का प्रयत्न किया है। ब्रेज़ील की शिक्षा-संस्थाओं में जर्मन प्रोफेसरों का जाल बिछा हुआ है। उनको जर्मनी से वेतन मिलता है। ब्रेज़ील के विद्यार्थियों, सैनिकों और जहाज़ी शिक्षा पाने वालों की टोलियों को बारी बारी से जर्मनी में भेजा जाता है इन से किसी तरह का किराया या खर्च नहीं लिया जाता है। जर्मनी में इनकी राष्ट्रीय साम्यवाद या नाज़ी सिद्धान्तों की शिक्षा दी जाती है। ब्रेज़ील की रेडियो स्टेशनों को जर्मनी ने मुफ्त या नाम मात्र को मूल्य लेकर फोनोग्राफ़ रिकार्ड और रेडियो सेट दिये हैं। शार्टवेव फील्ड (लघु लहर के क्षेत्र) में वे जर्मनी का ही प्रोग्राम दुहराते हैं। ब्रेज़ील के अखबारों में लम्बे लम्बे विज्ञापन छपवा कर और कभी कभी सीधी आर्थिक सहायता देकर जर्मनी ने उनका मुंह बन्द कर दिया है। अब इन अखबारों में जर्मन सरकार (रैश) की नुक्ताचीनी नहीं होती है। ब्रेज़ील में पन्द्रह नाज़ी अखबार छपते हैं। वर्गास की घोषणा से ब्रेज़ील के गांवों में विदेशी भाषा के पत्रों का जाना रोक दिया है। इससे इन नाज़ी पत्रों का कुछ प्रभाव घट गया है। फिर भी ट्रान्स ओशन नामी जर्मन न्यूज (संवाद) एजेन्सी रेडियो द्वारा प्रति दिन १६ घंटे प्रायः मुफ्त खबर देती रहती है। खबर बांटने वाली एजेन्सियों को जर्मन से बड़ी आसान किश्तों पर आटोमैटिक रेडिओ टाइप रिकार्डिंग मशीन (रेडियो का स्वयं लेखक यन्त्र) दिया जाता है। इस नाज़ी प्रचार में इस बात पर जोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया जाता है कि जर्मनी एक अत्यन्त खुश हाल देश है जहां बेकारी का नाम नहीं है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका हड़तालों, लुटेरों, लालचियों और बोल्शेविक लोगों का देश है। रिओ के जर्मन दूतावास के साथ एक संस्कृति सहायक है। हर हान्स होनिंग वान कासल (जो इस समय यह काम करता है) पहले साओ पालो में सीने की मशीनें बेचता था। ब्यूनाज़ायर्स के क्लेरिडाड नाम के समाचार पत्र का कहना है कि इस संस्कृति सहायक ने इन्टे ग्रेलिस्टा नामक जर्मन संस्था के लिये बहुत कुछ किया और उसे हथियार दिलवाये। उनके हरी कमोज वाले स्वयं सेवकों ने विरोधियों को दबाने में पुलिस की बड़ी मदद की। गत वर्ष के नवम्बर मास में वर्गास ने स्वयं अपनी सरकार को छिन्न भिन्न करने और प्रजा सत्ता का आखिरी चिन्ह मिटाने में इन हरी कमोज वाले स्वयं सेवकों से पूरी मदद ली। वर्गास की नई सरकार ने इनको सेना के साथ महल के सामने जलूस में शामिल किया और उनके नेताओं को सरकारी नौकरियाँ दीं। एक प्रकार से वर्गास ने समस्त नाज़ी कार्यक्रम को मान लिया। इससे बर्लिन-रोम-टोकियो धुरी और अधिक मज़बूत हो गई। आगे चल कर जब इन्होंने इटेलियन और जर्मन गुप्तचरों से मिलकर वर्गास की सरकार को उलटने की कोशिश की तब उनके हथियार छीन लिये गये। कासेल को देश छोड़ना पड़ा। जर्मन स्कूलों (जो एक प्रान्त में ही २००० से अधिक थे) को पुर्तगाली भाषा पढ़ाने के लिये बाध्य होना पड़ा। इन स्कूलों में स्वस्तिक झंडे के बदले राष्ट्र का झंडा लगाया गया। आगे यह भी नियम कर दिया गया कि इन स्कूलों में ब्रेज़ील नागरिक के अतिरिक्त और कोई दूसरा अध्यापक न हो सके। ब्रेज़ील में नाज़ी प्रभाव रोकने के लिए अमरीका ने अभी हाल में पूरी कोशिश की। अमरीका ने ब्रेज़ील को ६ करोड़ डालर का सोना दिया। इससे अमरीका की साख्त बढ़ गई और जर्मनी को यहां से कपास मोल लेने में कठिनाई पड़ने लगी। इस पर जर्मनी ने ब्रेज़ील को रूई न खरीदने की धमकी दी। और रुई का बड़ा आर्डर कोलम्बिया, पनामा और मध्य अमरीका को दिया। मई से अमरीका का व्यापार यहाँ बढ़ने लगा। इटली की बहुत समय से यह आशा रही कि ब्रेज़ील में इटली के इशारे पर चलने वाली सरकार स्थापित हो। पिछले ७५ वर्षों में इटली से लगभग १० लाख मनुष्यों से कुछ अधिक आ गये हैं। कहवा के बड़े बड़े बगीचे और कपास के बहुत से खेत इटेलियन लोगों के हाथ में हैं। बहुत सी मिलें और कारखाने भी इटलीवासियों के हाथ में हैं। कुछ इटेलियन लोग लकड़ी काटने का काम करते हैं। बाङ्का कमर्शियेल इटेलियाना नाम का धनी इटेलियन व्यापारी बैंक और बाङ्को इटालो ब्रेजीलीरो ब्रेज़ील की आर्थिक स्थिति का नियन्त्रण करते हैं। जर्मनी के छः या सात फुर्तीले जहाज़ों को छोड़ कर इटेलियन कम्पनियाँ सबसे सुन्दर और तेज़ जहाज़ दक्षिणी अमरीका के समुद्रों में यहां चलाती हैं। वे बहुत कम किराया लेती हैं। इटली के हवाई जहाज़ रियो और ब्यूनाज़ायर्स के बीच में पहले ही से चलते थे। अभी हाल में वे ट्रान्स अटलांटिक हवाई जहाज़ भी उड़ाने लगे हैं। इटली ने फौजी और प्रचार कार्य के लिये यहां सबसे अधिक हवाई जहाज़ भेजे हैं। १९३४ में इटली से २१ सैनिक हवाई जहाज़ यहां उड़कर आये। वे सब के सब यहां बेच दिये गये अभी हाल में बड़े गाजे बाजे के साथ इटली ने ३ हवाई जहाज ब्रेजील की सरकार को भेंट कर दिये। इटली यहां लड़ाई का सामान और लड़ाका जहाज़ बेचने की पूरी कोशिश कर रहा है। गत फरवरी में इटली की बनी हुई तीन पनडुब्बी नावें (सबमेरीन) यहाँ बेची गई।

मसोलिनी की इच्छा है कि अमरीका में बसने वाले इटेलियन लोग सच्चे फेसिस्ट बनें। ब्रेज़ील में इटली वालों की जो बड़ी बड़ी दुकानें हैं। वे उन लोगों का बहिष्कार करती हैं जो फेसिस्ट नहीं हैं। वे अपने नौकरों को इन्टेग्रेलिस्टा का सदस्य बनने के लिये बाध्य करती हैं। ब्रेज़ील में इटेलिन भाषा के कई अखबार छपते हैं। इटली वाले विज्ञापन छपवा कर और पैसे देकर फेसिस्ट कार्यक्रम को बढ़ावा दिलाते हैं। रोम प्रचार आफिस की ओर से अखबारों को मुफ्त खबर भेजी जाती है। यह संवाद देने वाली कम्पनी प्रजासत्ता और संयुक्त राष्ट्र की निन्दा करती रहती है। रोम से शार्ट वेव ब्राडकास्ट प्रति दिन तीन बड़े स्टेशनों का भेजे जाते हैं। अर्जेण्टाइना और ब्रेज़ील की ब्राडकास्ट कम्पनियों से प्रार्थना की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है कि वे फेसिस्ट प्रोग्राम (कार्य-क्रम) को उपयोग में लावें। इन्सटीट्यूटो यूनिवर्सिटारियो इटेलियानो संस्कृति सम्बन्धी सम्बन्ध बढ़ाने का प्रयत्न करती है। बहुत से इटेलियन प्रोफेसर (जिनको फेसिस्ट सरकार से वेतन मिलता है) यहां पढ़ाने के लिये भेजे जाते हैं। साओ पालो के सम्पत्ति-शास्त्र-विभाग के समस्त प्रोफेसर इटेलियन लोगों की ओर से दिये गये हैं। इटली में शिक्षा प्राप्त करने के लिये ब्रेजील के बहुत से विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ मिलती हैं। जो लोग फेसिस्ट सिद्धान्त से सहानुभूति रखते हैं उनको इटली की सैर करने के लिये सब खर्च मिलता है। उनको स्वयं मसोलिनो से मिलने की सुविधा दी जाती है। इटली की ओर से इस तरह का प्रचार कार्य दक्षिणी अमरीका के दूसरे देशों में भी हो रहा है।

ब्रेज़ील में जापान का भी काफ़ी प्रभाव है। २ लाख जापानी जापान से आकर यहां बस गये हैं। जर्मन राजदूत की तरह जापानी राजदूत भी संस्कृति-सम्बन्ध बढ़ाने के लिये एक सहायक रखता है। बहुत से जापानी प्रोफेसर ब्रेज़ील की शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाते हैं। एक जापानी प्रोफेसर तो यहां अमरीकन इतिहास पढ़ाता है। पहले जापानियों के आने की रुकावट थी। लेकिन १९३८ के मई महीने से यह रुकावट दूर कर दी गई। यहां मज़दूरों की कमी है। अकेले साओपाला के खेतों में २ लाख मजदूरों की कमी है। जापानी मज़दूर बहुत ही योग्य सिद्ध होते हैं। ब्रेज़ील में खेतों की जो उपज होती है उसका २९ फी सदी जापान मोल ले लेता है। ज़ापानियों के हाथ में रबर के बड़े बड़े बगीचे हैं। पारा नगर के पास वाला रबर का जापानी क्षेत्र १० लाख एकड़ से भी बड़ा है और फार्ड के बगीचे से टक्कर लेता है। जापानियों के हाथ में ढोर चराने, धान, शक्कर, कहवा और केला की भी बड़ी बड़ी जागीरें हैं। ब्रेज़ील में कपास उगाने का कारबार नया है। इसका एक तिहाई काम जापानियों के हाथ में है। जापानियों ने यहां रेशम, चाय और धान का काम भी शुरु कर दिया है। यह चीजें दूसरे देशों में बेची जायँगी। याको-हामा स्पेसी बैंक और बैंक आफ तैवान (ये दोनों जापानी बैंक है) की ब्रेज़ील देश में कई शाखायें हैं।

बहुत से जापानी लोग छोटी दुकानें रक्खे हुए हैं। वे इस प्रकार अपने देश के माल की बिक्री बढ़ाते हैं। एसोसिसाओ-सेन्ट्रल निप्पन बेज़ीलेरा नाम की जापानी संस्था संस्कृति सम्बन्ध बढ़ाती है। रुयुज़ो असामा जापानी कारबार बढ़ाने में निपुण है। जापान ने दक्षिणी अमरीका में अपना व्यापार बढ़ाने के लिये दस वर्ष की योजना तयार कर ली है। बहुत से जापानी सौदागर इस योजना को सफल बनाने के लिये समस्त दक्षिणी अमरीका और मध्य अमरीका में सफर करते हैं। जापानी सेन्ट्रल और साउथ अमरीकन इक्सपोर्ट (निर्यात) एसोसियेशन दक्षिणी अमरीका के प्रमुख व्यापारियों को अपने खर्च से जापान की सैर करने का निमन्त्रण देती है।

अर्जेन्टाइना में संयुक्तराष्ट्र अमरीका का माल ग्रेटब्रिटेन के माल से कहीं अधिक बिकता है। वैसे अर्जेन्टाइना और युरुग्वे दोनों ही में ब्रिटेन और इटली का प्रभाव है। गत शताब्दी में लगभग २० लाख इटेलियन अर्जेन्टाइना में जाकर बस गये हैं। इस समय अर्जेन्टाइना की समस्त जनसंख्या में एक तिहाई इटेलियन हैं। अर्जेन्टाइना के कुछ प्रमुख कुटुम्बों के नाम इटेलियन हैं। बहुत समय से इटे-लियन लोगों ने यहां की राजनीति और कारबार में प्रमुख भाग लिया है। फेसिस्टवाद से वहां के इटेलि-यन लोगों में आक्रमणकारी एकता आ गई है। ब्यूनाज़ायर्स में कई बड़े बड़े दैनिक समाचार पत्र भी इटेलियन हैं। एक स्पेनिश भाषा का पत्र भी उनके हाथ में है। लैटिन संस्कृति की समानता ने इटेलियन प्रचार को बढ़ा दिया है। जर्मनी में गिरजाघरों पर जो अत्याचार हुये उस से अर्जेन्टाइना के लोगों में नाज़ी आन्दोलन के प्रति सन्देह होने लगा। लेकिन इटली के फेसिस्टवाद को वे धर्म का समर्थक मानते हैं! क्या इटली ने ईसाई फ्रांको को स्पेन में सहायता नहीं पहुँचाई है। इटली ने एबीसीनिया में मिशनरी भेजे हैं और इटली के गिरजा घरों को काफ़ी दान दिया है। धनी इटेलियन और १९३१ की सरकार की सहायता से अर्जेन्टाइना में लिजन सिविका (नागरिक सेना) में १५०००० सदस्यभरती किये गये। गार्डिया अर्जेन्टाइना की रक्षक सेना में छोटी छोटी सात फेसिस्ट संस्थायें सम्मिलित हो गईं। प्रेज़ीडेन्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(राष्ट्रपति) जस्टो ने चुने हुए गवर्नरों के स्थान में फेसिस्टों से सहानुभूति रखने वाले गवर्नर नियत किये। अर्जेन्टाइना में फेसिस्टों को पूरी आज़ादी है। प्रजातन्त्र वालों को बहुत कम अधिकार हैं। यहां के शासक लोग हिटलर और मसोलिनी को योरुप का बचाने वाला समझते हैं।

अर्जेन्टाइना में लगभग १ लाख जर्मन रहते हैं। यह लोग ढोर पालने, इञ्जीनियरिंग, बैंक, डाक्टरी (दांत) और पढ़ाने के काम में लगे हुये हैं। कुछ वर्ष हुए, ह्यूगो हिटन्स नामी एक जर्मन ने न्यूक्वेन प्रदेश में तेल के चश्मे वाले भाग मोल ले लिये थे। तेल का प्रदेश पम्पाज़ पेटेगोनिया होता हुआ टेराडेल फ्यूगो तक चला गया है। यह तेल जर्मन हवाई जहाजों के काम आता है। पहले रेल सम्बन्धी सब सामान अर्जेन्टाइना में ब्रिटेन से आता था। अब इस सामान का व्यापार जर्मनी के हाथ में चला जा रहा है। हाल में जर्मनी से ४० रेलवे इञ्जिन और पांच हवाई जहाज यहां आये। अर्जेन्टाइना हवाई सेना के अध्यक्ष को जर्मनी ने अपने खर्च से जर्मनी बुलाया और स्वयं हिटलर ने उसे जर्मन ईगिल का सम्मानित पद प्रदान किया।

जापानी लोगों ने अर्जेन्टाइना में मांस, नमदा (फर), क्वेब्राचो और कपास के कारबार में अपना रुपया लगाया है। अर्जेन्टाइना के उच्च सरकारी अफसरों ने जापानियों से अनुरोध किया है कि वे इन कामों में और अधिक रुपया लगावें। लेकिन कुछ मूलनिवासियों और यहूदियों ने इन नये फेसिस्टों का विरोध करना आरम्भ कर दिया है।

चिली देश में गत शताब्दी से जर्मन लोगों का प्रभाव बढ़ने लगा। कुछ जर्मन लोग आकर वालिडविया में बस गये। चिली के दक्षिणी भाग में इन्हें जमीन और दूसरी सुविधायें मिलीं। इससे वहां बहुत से जर्मन कुटुम्ब आ गये। हाल में यहां नाजी प्रभाव ज़ोर पकड़ने लगा। गत सितम्बर के नाजी विद्रोह में २०० मनुष्य मारे गये। चिली के व्यापार को हथियाने के लिये जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में घोर संघर्ष हो रहा है। ब्रिटेन इस व्यापारिक दौड़ में बहुत पिछड़ गया है। उसका तीसरा स्थान हो गया है। क्लबों और दूसरी संस्थाओं ने यहां बसे हुये जर्मनों को बहुत संगठित कर दिया है। उन्होंने अपनी भाषा को सुरक्षित रक्खा है। उनके स्कूल अलग हैं। पीरू की प्रसिद्ध 'गिल्डर मिस्टर' नामी जर्मन कम्पनी ने शक्कर का कारबार पीरू से बढ़ा कर चिली तक कर लिया है। बड़ी लड़ाई के कुछ ही समय बाद क्रुप्स कारखाने के मालिकों ने चिली के लानक्वह्यू प्रान्त में ज़मीन मोल लेकर फौलाद और बारूद बनाने का कारखाना स्थापित कर दिया। पास ही जर्मन लोग बस गये। हाल में शोरे के कारबार में भी जर्मन लोगों ने अपना पैसा लगाया है। जर्मन लोगों ने काग़ज़ का एक बड़ा कारख़ाना खोला है। यहां उनके चमड़े के कई कारखाने हैं। ब्रिटेन की अपेक्षा जर्मनी के बहुत से मोटर यहां बिकते हैं। पर मोटर बेचने में जर्मनी का प्रथम स्थान है। रेलवे विभाग में भी जर्मनी की अधिकता है। हाल में जर्मनी के बने हुए सरकारी हवाई जहाज भी हो गये हैं। यहां के राष्ट्रपति ने जर्मनी और इटली से लड़ाई का सामान मोल लेने के लिये १० करोड़ पेसास (pesos) खर्च किये। सेन्टियागो से मेगेलेन्स तक पानी पर उतरने वाली हवाई नावों को मोल लेने के लिये जर्मनी में फिर १ करोड़ ६० लाख पेसास (pesos) खर्च किये गये। कुछ इटली के भी जहाज खरीदे गये। हवाई सेना के संचालक जनरल लोगों ने बहुत से इटेलियन को हवाई शिक्षा प्रदान करने के लिये बुलाया है। इटली के इशारे से यहाँ के राजनैतिक क्षेत्र में भी बहुत से काम चुपचाप हो जाते हैं।

पीरू देश में जर्मनी की अपेक्षा इटली और जापान का प्रभाव प्रधान है। योरुपवासियों में सब से अधिक संख्या पीरू में इटालियन लोगों की है। फेसिस्ट संगठन से अग्रसर हो कर इटलीवासी सैनिक राजनैतिक क्षेत्रों में भी बढ़ने में लगे हैं। सरकारी सहायता से फूल कर बांको इटेलियानों डी लीमा (लीमा का इटेलियन बैंक) पीरू देश में एक प्रधान बैंक बन गया है। इस बैंक के हाथ में पीरू देश का आर्थिक भाग्य इस हद तक पहुँच गया है कि इस बैंक का संचालक पीरू का वायसराय कहलाता है। लीमा, केलाओ और दूसरे शहरों की रोशनी, बिजली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ट्रैमवे का काम भी इटेलियन लोगों के हाथ में है। इटालो पेरू श्रानो कम्पनी बिजली के सभी यन्त्र बेचती है। पीरू में रेडियो, शराब, शक्कर, कपास और लकड़ी का कारबार भी इटेलियन लोगों के हाथ में है। लीमा के चार दैनिक समाचार पत्रों को इटली का बहुत सा विज्ञापन मिलता है। धनी, जागीरदारों और पादरियों का एल कमर्शिश्रो नामो मुख पत्र फेसिस्टवाद का खुलमखुल्ला समर्थन करता है। बहुत से प्राइवेट स्कूल (जिन्हें सरकारी सहायता मिलती है) इटली वाले चलाते हैं। नेशनल कैथलिक यूनिवर्सिटी भी फेसिस्टों की तारीफ में अक्सर व्याख्यान दिलवाती हैं। पीरू का फेसिस्ट प्रचार विभाग रोम की ही शाखा है। इस का संचालन इटेलियन करते हैं। वे अपना प्रचार इक्वेडार, कोलम्बिया और चिलो में भी बढ़ा रहे हैं। विद्यार्थी, सैनिक और पदाधिकारी इटेलियन या पीरू सरकार के खर्च से अक्सर इटली में शिक्षा और अनुभव प्राप्त करने के लिये जाते हैं। इटली से बहुत सा सामान भी खरीदा जाता है। कई बार इटली के सैनिक हवाई जहाज़ यहाँ उड़ कर आये। लीमा के पास पल्मास में इटेलियन लोग पीरू सरकार के लिये हवाई जहाज़ बनाने का बड़ा कारखाना खोल रहे हैं। इटेलियन (फौजी) स्वयं सेवकों की संख्या प्रायः सेना के सिपाहियों के बराबर हैं। इटली की बनी हुई तोपें और मशीनगनें देश के सभी भागों (खास कर इक्वेडार की सीमा के पास) पहुँचा दी गई हैं। पीरू में देस को बहुत कम स्वाधीनता है। जेल और फारेस्ट कन्सेन्ट्रेशन कैम्प कैदियों से भरे हुये हैं।

इटली के बाद पीरू में जापानियों का दूसरा स्थान है। पीरू देश में २२३०० जापानी हैं। योरुपीय लोगों की तरह यहां जापानियों को नाम लिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इस लिये कुछ लोगों का अनुमान है कि यहां लगभग १ लाख जापानी हैं। बड़े बड़े बगीचों में काम करने के लिये क़ानून को तोड़ कर भी उच्च पदाधिकारी जापानियों को बुला लेते हैं। लीमा प्रान्त में रोटी और नाई की दुकानें दो तिहाई से अधिक जापानी लोगों के हाथ में हैं छोटी छोटी जितनी दुकानें जापानियों के हाथ में हैं उतनी किसी योरुपीय जाति की नहीं हैं। लारियों का ढांचा (बाडी) रबर, लोहे, और बिजली का सामान इन्हीं जापानियों के हाथ में हैं। चान्के प्रान्त में चिम्बोटी बन्दरगाह के सामने (जो पीरू में बहुत अच्छा बन्दरगाह है) कुल ३०,००० एकड़ ज़मीन खेती के योग्य है। इसमें १८००० एकड़ ज़मीन पर जापानियों का अधिकार है। मूल निवासियों में जापानियों ने इस प्रकार प्रचार फैला रक्खा है कि सदियों पहले पीरू देश में जापान के ही लोग आकर बस गये थे। अतः दोनों (जापानी और पीरू वासी) सगे भाई हैं। पीरू के सौदागरों को जापानी खर्चे से जापान की सैर कराई जाती है। जापान यहां से बहुत सी कपास आधी खाद और मिट्टी का तेल खरीदता है। लेटिका विद्रोह के समय जापान ने पीरू में लड़ाई का बहुत सा सामान बेचा। मशीनरी, बिजली का सामान, जवाहिरात, रंग और रसायन सम्बन्धी सामान बेचने में जर्मन लोग यहां आगे बढ़े हुये हैं। एरीक्विप (जो पीरू में तीसरे नम्बर का शहर है) में ६० फीसदी कारबार जर्मनों के हाथ में है। गिल्डर मिस्टर्स (जर्मन कम्पनी) के अधिकार में १ लाख एकड़ ज़मीन है। गन्ना उगाने और शक्कर तय्यार करने की दक्षिणी अमरीका में यह सब से बड़ी कम्पनी है। पीरू देश से जितनी शक्कर बाहर भेजी जाती है उसका ४३ फीसदी शक्कर यह अकेली कम्पनी भेजती है। जर्मन के अधिकार में यहां की जबरदस्त रेडिश्रो स्टेशन है। सुसज्जित हथियारबन्द जर्मन इस की रक्षा करते हैं। जर्मनों को यहां एक निजी बन्दरगाह (प्राइवेट पोर्ट) भी मिला हुआ है। पहले से जर्मन व्यापार यहां चौगुना बढ़ गया है। इस समय पीरू देश में जर्मन व्यापार ब्रिटिश व्यापार से कहीं अधिक बढ़ गया है।

इस प्रकार दक्षिणी अमरीका में कोई योरुपीय शक्ति सशस्त्र हमला करने की तो नहीं सोच रही है लेकिन किसी आगामी बड़ी लड़ाई के अवसर पर योरुप की शक्तियां दक्षिणी अमरीका से पूरा लाभ उठाने की कोशिश कर रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाहन या बारबरदारी

एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने की इच्छा मनुष्यों में सदा से रही है। पहले जब वे जाना चाहते थे तो वे पैदल जाते थे। उनके छोटे बच्चे जब चलते चलते थक जाते थे तो बाप उन्हें अपने कंधे पर बिठा लेता था। अक्सर उन्हें जंगल में होकर चलना पड़ता था। आरम्भ में कोई सड़क न थी। जब रास्ते में कोई नदी आपड़ती तो बाप लकड़ी के लट्ठे पर सब को बिठा कर लकड़ी से खेता हुआ पार लगा देता था। जब हिरण या और कोई दूसरा जानवर मिल जाता तो बाप उसे मार कर अपनी स्त्री और बच्चों को भोजन लेकर आता। उस समय के प्राचीन लोग बहुत समय तक अपना बोझा अपने आप अपने सिर या पीठ पर ढोते रहे। पहाड़ी कठिन रास्ते में वे इस समय भी इसी तरह से बोझा ढोते हैं। पुर्तगाली लड़की बाज़ार ले जाने के लिये बर्तनों को इस प्रकार बांधती है कि उनके गिरने का डर नहीं रहता है। उसके हाथ खाली रहते हैं फिर भी वह अपने बोझे को बड़ी होशियारी से साधे रहती है।

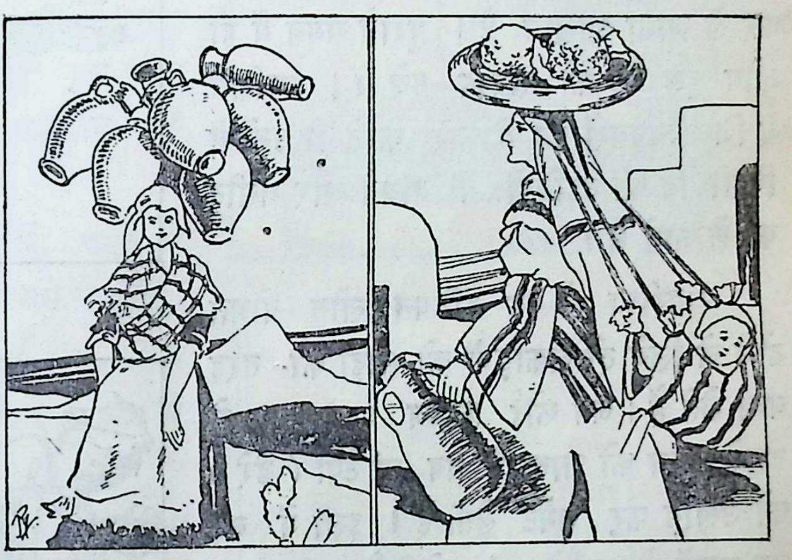

१—स्पेन, पुर्तगाल और पेलेस्टायन में बारबरदारी

पेलेस्टाइन में इस समय भी लोग अपना बोझ अपने आप ढोते हैं। इस स्त्री को देखो। यह अपने सिर पर भरी हुई टोकरी रक्खे है। मत्थे में झोली की रस्सी अटका कर अपने छोटे बच्चे को ले जा रही है। उसके एक हाथ में सुराही और दूसरे में दूध का बर्तन है। उस को ऐसा अभ्यास हो गया है कि सुराही से चलते समय एक भी बूंद नहीं छलकता है।

दुनिया के बहुत से भागों में मनुष्य बोझा ढोने का काम जानवरों से लेते हैं। यह जानवर इतना भारी भारी बोझा ढोते हैं जितना कोई मनुष्य नहीं ले जा सकता। भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न जानवर बोझा ढोने का काम करते हैं। रेगिस्तान की बलुई ज़मीन में ऊँट बोझा ढोते हैं। किसी किसी काफिले में कई सौ ऊँट होते हैं। बोझा ढोने में गधा बड़ा पक्का होता है। कभी कभी वह अपने मालिक को भी अपनी पीठ पर बिठा लेता है। ऊँट बोझा लादते समय बहुत बलबलाता है। लेकिन वह रेगिस्तान में बड़े काम का होता है। उसका गद्दीदार पैर बालू में नहीं धंसता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बहुत देर तक बिना पानी के रह सकता है। वह इतना ऊँचा होता है कि खड़े खड़े उसपर बोझा नहीं लादा जा सकता। इसलिये वह बैठ जाता है। अगर उसके ऊपर इतना बोझा लादा जाता है जिसे लेकर वह नहीं चल सकता तो वह नहीं उठता है। जब कुछ बोझा उतार लिया जाता है तब वह उठकर चल देता है।

अगर कोई भारी चीज़ उठाकर ले जाई जावे तो बहुत जोर पड़ता है। उसको घसीट कर ले जाना आसान है। पुराने समय में ही लोग इस भेद को समझ गये थे। इसलिये वे जिन जानवरों का शिकार करते थे उन्हें वे किसी पेड़ की टहनियों में बांधते और घसीट कर ले जाते थे।

अमरीका के रेड इंडियन लोग बोझा ढोने के लिये दो लकड़ियों को सीढ़ी की तरह बना लेते हैं। जब कोई कुटुम्ब एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है तब मां टेपी (डेरे) को उखाड़ कर समेट लेती है। इसी में वह घर वालों के कपड़े बांध लेती है। फिर वह इसको अपने कुत्ते की पीठ से बांध देती है। दोनों लकड़ियां इतने पास बंधी होती हैं कि वे जङ्गल की पग डंडी पर आसानी से घसीटी जा सकती हैं।

गोरे लोगों के आने पर यहां घोड़े भी आ गये। इस चित्र में रेड इंडियन घोड़े पर सवार है। घोड़ा बोझा भी खींच रहा है। बोझे के ऊपर छोटा लड़का बैठा है। बोझा ऊपर नीचे उछलता है। इससे ऊपर बैठे हुए लड़के को बहुत धक्के लगते हैं। लेकिन लड़के

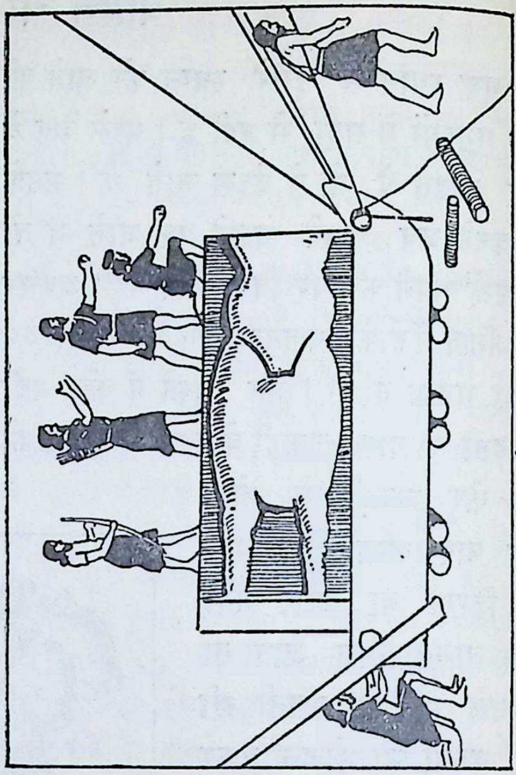
२—पहिये का विकास—बारबरदारी

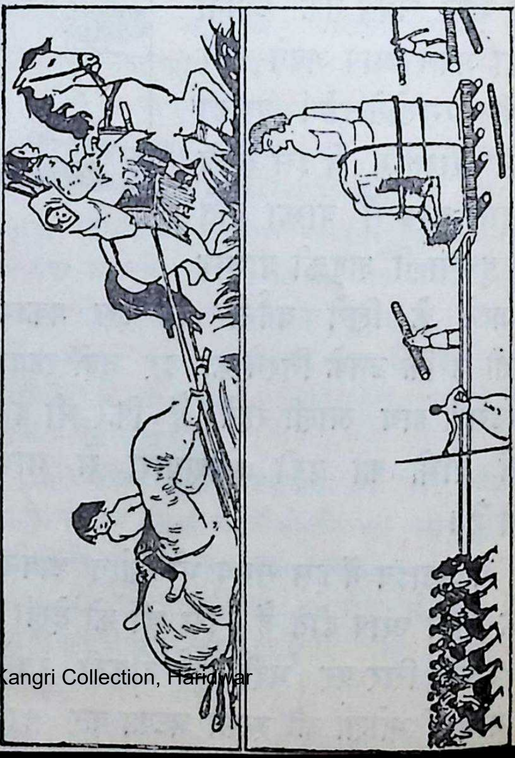
३—पुराने समय की बारबरदारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को इसमें आनन्द आता है। मां ने अपनी छोटी लड़की को अपनी पीठ से बाँध कर पीछे बिठा लिया है। अधिक उत्तर में बर्फीले प्रदेश के रहने वाले एस्किमो लोगों ने कुछ सुधार कर लिया। उन्होंने बोझा ढोने के लिये बिना पहिये की स्लेज गाड़ी बनाई। वे इस में कुत्ते जोतते हैं। सबसे अधिक बहादुर और होशियार कुत्ता नेता चुना जाता है। जिधर मालिक इशारा करता है उधर ही वह जाता है। स्लेज गाड़ी में कई कुत्ते जुतते हैं। वे बहुत तेज जाते हैं। उनके बाल बहुत बड़े होते हैं। जहां दूसरा पालतू जानवर न जा सके वहां यह कुत्ते पहुंच सकते हैं। आजकल कुछ कुत्ते बोझा ढोने और डाक ले जाने का काम करते हैं।

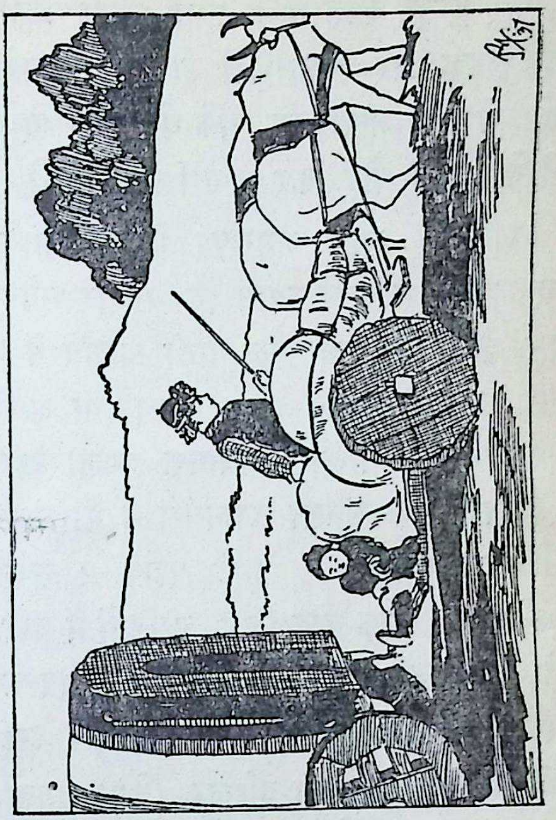

४—बारबरदारी

मिस्र देश में भारी बोझे को बहुत से आदमी खींचते थे। उसके गुटके लगे रहते थे।

मध्य एशिया के मंगोल लोग ठोस पहियों की गाड़ी में अपना सामान ढोते हैं। इनमें वे बैल जोतते हैं।

पुराने समय के आर्य, इरानी और ग्रीक लोग रथ पर चढ़ते थे। उनके रथ में बहुत बढ़िया और मज़बूत घोड़े जुतते थे। रथ बहुत क़ीमती होते थे। राजा और बड़े लोग ही उन्हें रख सकते थे। साधारण लोग दो पहिये या चार पहिये की बड़ी गाड़ी रखते थे। इसमें वे अपना सामान लाद कर घोड़े या बैल जोतते थे। घोड़े तेज़ चलते थे। बैल अधिक भारी बोझा ढो सकते थे। योरुप में मुसाफिरों के ले जाने के लिये खुली खिड़की वाली बड़ी घोड़ागाड़ी किराये पर चलने लगी। सामान गाड़ी की छत पर लादा जाता था।

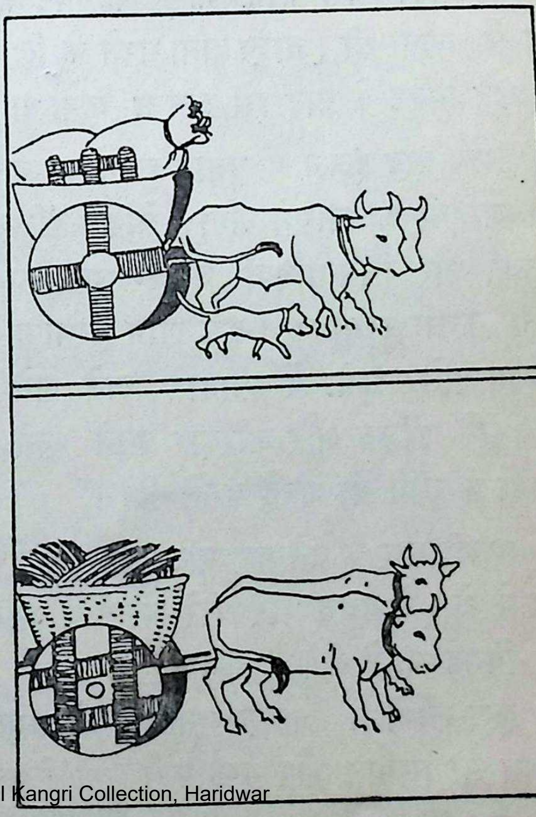

५—बारबरदारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसाफिर अन्दर बैठते थे। इसमें ऊँची नीची कच्ची सड़क पर मुसाफिरों को बहुत धक्के लगते थे। मंजिलों पर थके घोड़े छोड़ दिये जाते थे। ताज़े घोड़े फिर जोत लिये जाते थे।

जो गोरे लोग अमरीका में बसने आये वे एक स्थान से दूसरे स्थान को घरबार समेत सफर करने में बन्द बैल गाड़ी चलाते थे। इससे उनका सामान ठीक रहता था और उनपर रेड इंडियन लोग अचानक हमला नहीं कर सकते थे। जंगली जानवरों से भी रक्षा होती थी। इंगलैंड में पहले पहल कोयला बहुत मिला। इसके बाद जिन गाड़ियों में वहां घोड़े या गधे जुतते थे उनमें कोयले और भाप के ज़ोर से चलने वाला इंजिन लगने लगा। इस गाड़ी में सामने तांबे का बाइलर (डेग) लगता था। यह गाड़ी सिर्फ तीन मील फी घंटे की चाल से चलती थी। ताज़ा पानी भरने के लिये हर पन्द्रह मिनट के बाद इसे ठहरना पड़ता था।

इसके बाद इंजन में सुधार हुआ वह कई खुली गाड़ियों को खींचने लगा। लेकिन इंजिन का धुआं और चिनगारियां बराबर मुसाफिरों को तंग करती रहती थीं। कुछ लोग मुसाफिरों के आगे वाले डब्बे में सामान रखने लगे। धीरे धीरे इंजिन और जोरदार बनने लगे। गाड़ियों के डब्बे भी अच्छे बनने लगे।

पहली बार के बने हुए मोटर कार अजीब सूरत के थे। वे बहुत धीरे धीरे चलते थे और जल्द बिगड़ जाते थे।

कुछ लोगों ने जहाज़ बनाये। वे समुद्र में बहुत सा सामान और मुसाफिरों को लेकर चलते हैं।

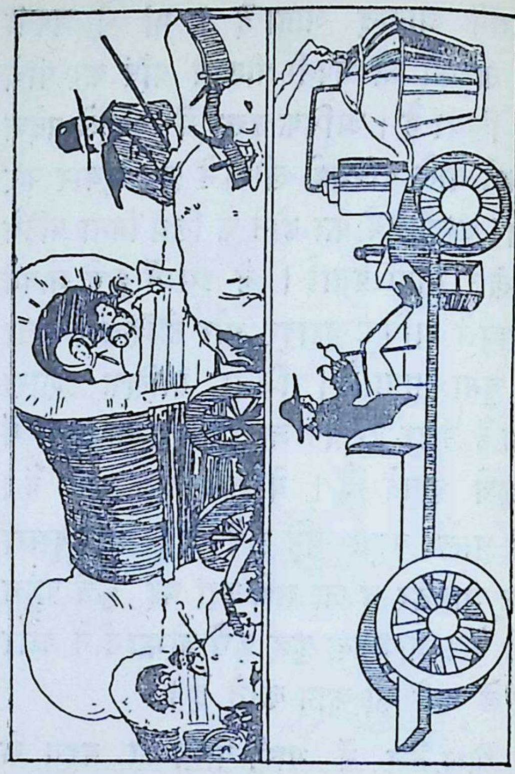
६—बारबरदारी

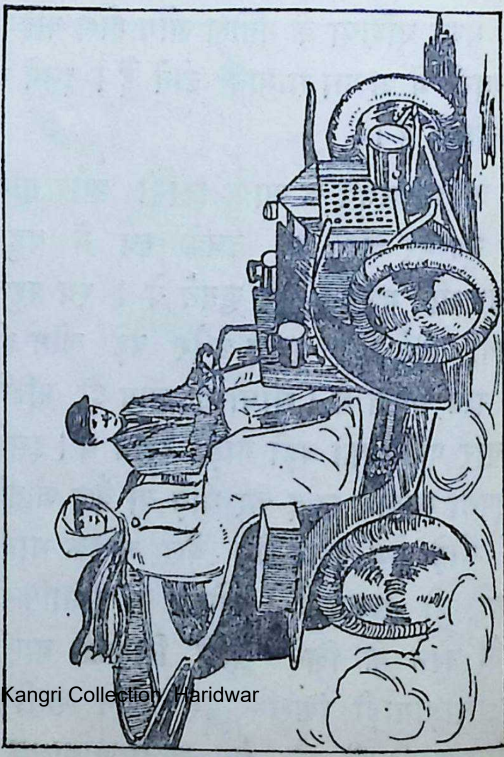
७—पुराना (या पहला मोटर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भू-तत्व

प्राकृतिक भूगोल के सम्बन्ध में हिन्दी में अद्वितीय ग्रन्थ, पृष्ठ-संख्या २८६, लगभग २०० चित्र और नक़्शे, सुन्दर रङ्गीन कपड़े की जिल्द। मूल्य केवल १।) सवा रुपया।

भूतत्व के प्रथम भाग में पृथ्वी, सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, परिमाण, दिन-रात, अक्षांश देशान्तर, प्रामाणिक समय, तिथिरेखा मानचित्र और ऋतुपरिवर्तन का वर्णन है।

द्वितीय भाग में स्थल-मंडल के सभी अंगों (भूपंजर, आग्नेय पर्वत, रिफ़्ट घाटी, गैसर, भूकम्प, पठार मैदान, धरती, नदी, झील, समुद्र-तट आदि) का विवेचन है।

तृतीय भाग में जलमंडल-महासागर, गहराई, निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ) प्रवालद्वीप, खारीपन, तापक्रम, ज्वार-भाटा, समज्वार-रेखाओं, धाराओं, गल्फ स्ट्रीम और सारगासो सागर का वर्णन है।

चतुर्थ भाग में वायुमंडल की व्याख्या है। आक्सिजन, नाइट्रोजन, भाप, त्रसरेणु, ताप, बादल, कुहरा, ओस, मेह, हिम ओला, विद्युत, मौसम, मौसमी हवाओं, ट्रेड हवाओं, पछुआ हवाओं, समभार-रेखाओं, समताप रेखाओं, चक्रवात, वर्षा, जलवायु सम्बन्धी प्रदेशों का वर्णन है।

पंचम भाग में जीवधारी मण्डल, वनस्पति, पशु, मनुष्य जाति, पेशे, खनिज और कारख़ानों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी में अब तक ऐसा सर्वाङ्ग पूर्ण प्राकृतिक भूगोल प्रकाशित नहीं हुआ था। शीघ्र ही आर्डर भेजिये।

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एबीसीनिया

हिन्दी-सामयिक पत्र जगत में मासिक "भूगोल" का एक मुख्य स्थान है। अपने विषय की सुन्दर सामग्री देने में वह सदैव अग्रगामी रहा है। प्रस्तुत विशेषांक में एबीसीनिया का इतिहास, भौमिक-चित्रण आदि सभो बातें दी गई हैं। इस एक पुस्तक के पढ़ लेने से एबीसीनिया के नर-नारी और भूमि, जंगल, नदी, पहाड़ आदि के विषय में काफ़ी ज्ञान हो जाता है। यह अंक विद्यार्थियों के तो काम का है ही, परन्तु साधारण पाठक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इस अंक का मूल्य ॥) है। भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद से प्राप्य। "स्वराज"

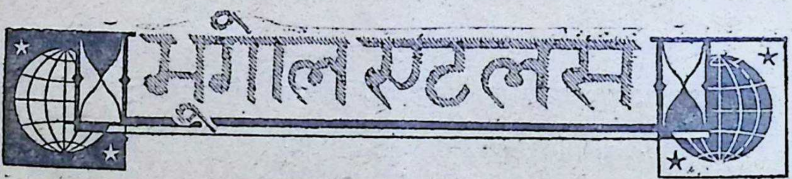

इस भूगोल-एटलस से संसार के विभिन्न देशों की राजनैतिक सीमा और विभागों के सिवा उनकी पैदावार, आयात और निर्यात, जलवायु, मिट्टी, स्थल की ऊँचाई और निचाई, वर्षा का परिमाण, जन-संख्या, वहाँ के निवासियों का भोजन और वस्त्र, व्यापार आदि सैकड़ों विषयों का ज्ञान हो जाता है। अन्त में कुछ नक्शे ऐसे भी दिये गये हैं जिन से विदित होता है कि पिछले डेढ़ हज़ार वर्षों में किस शताब्दी में संसार के कितने भूभाग का पता लोगों को था। इन तमाम दृष्टियों से यह एटलस सभी भूगोलप्रेमियों के लिये संग्रहयोग्य है। स्कूल के विद्यार्थियों के लिये तो यह एक अमूल्य भेंट है। इसके द्वारा भूगोल का ज्ञान ऐसी सरलता से हो जाता है कि तनिक भी परिश्रम नहीं जान पड़ता।—"चाँद"

शिक्षा विभाग द्वारा स्कूलों के लिये स्वीकृत, पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य १)

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-संसार

बाल-संसार की एक प्रति देकर अपने बालकों को दूसरे देशों के बालकों का हाल बताइये और उनमें नया जीवन डालिये।

संक्षेप में बाल-संसार में १११ बालकों के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा उनके देशों के जीवन की झांकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिलकुल अलग कर दिया गया है। इस अंक में लगभग तीन सौ चित्र हैं। जिनसे इस अंक की रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार में पांच भाग हैं। पहले भाग में अफ्रीदी, नैपाली, सिन्धी, बर्मी सिंहाली आदि भारतवर्ष के बच्चों का वर्णन है। दूसरे भाग में चीनी, जापानी, स्यामी, अफ़गानी, ईरानी, अरबी, तुर्की, आदि एशिया के बालकों पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे भाग में अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी आदि योरुप के बालकों के रहन सहन का वर्णन है। चौथे भाग में एस्किमो, रेड इंडियन, कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्रेज़ील, पीरू, अर्जेन्टाइना आदि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के बालकों का वर्णन है। पांचवें भाग में अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और प्रशान्त महासागर के कुछ द्वीपों में रहने वाले बालकों का वर्णन किया गया है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है।

तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है।

बड़े आकार (१०×७½) के २६० पृष्ठ, मूल्य १॥) सजिल्द १॥।), प्रत्येक भाग का अलग मूल्य ।=)

मैनेजर, "भूगोल" इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन-अंक

चीन अंक के दो भाग हैं। पहले भाग में चीन की स्थिति, भूरचना, जलवायु, वनस्पति, पशु-पालन, कारबार, शिक्षा, समाचारपत्र, कहावतें। मनोरंजन, खेलकूद, हवाई डाक और हवाई सेना, मार्शल च्यांगकाई शेक, मेडम च्यांगकाई शेक, हुइशी (चीन के गान्धी), डा० सन्यातसेन, धार्मिक व्यवस्था, चित्रकला, चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमवट, जापानी साम्राज्य, चीन में घुसने के मार्ग, मङ्गोल लोगों का देश चीनविच्छेद, नानकिंग की सरकार रूस का पूर्वी प्रदेश, चीन और जापान, मन्चूकुओ की स्थापना, आधुनिक परिस्थिति, राजनैतिक रूप रेखा, चीन का साम्यवादी दल, चीन जापान संघर्ष और जनरल चूतेह की अपील है। इसमें कई नक़शे और चित्र हैं। बड़े आकार की पृष्ठ संख्या ८८, मूल्य ॥)।

दूसरे भाग में चीन की एटलस है। प्रत्येक प्रान्त के पूरे (बड़े) पृष्ठ के २४ नक़शे। चीन देशका बड़ा नक़शा (दो पृष्ठों पर)। इसी भागमें नक़शों की व्याख्या और प्रान्तों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त १६ ऐतिहासिक-नकशे, ऐतिहासिक घटनाओं की सूची, और चीनी इतिहास के चुने हुए चित्र हैं। अन्त में संसार में चीन का आर्थिक स्थान प्रदर्शित करने के लिये ८ आर्थिक नकशे और कई डायाग्राम (खाके) हैं। मूल्य ॥) दोनों भागों का एक साथ मूल्य बारह आना।

"भूगोल" कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक इतिहास एटलस

पृष्ठ संख्या १४७, नकशों की संख्या ७४। इस पुस्तकाकार एटलस में एक पृष्ठ पर नक़शा और उसके सामने वाले पृष्ठ पर उसकी व्याख्या है। वर्सेल्स (वर्साई) की सन्धि, जर्मनी की पश्चिमी सीमायें, पोलिश कारीडार रूस के खोये हुए प्रदेश, लिटिल एण्टेण्ट, यूगोस्लैविया की जातियां, पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प संख्यक जातियां, स्पेन की गृह-कलह भूमध्य सागर में राष्ट्रों का संघर्ष, इटली और लालसागर, इब्न सऊद की विजय, चीन विच्छेद, अफ्रीका के स्वाधीन राज्य, संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हब्शियों की समस्या, दक्षिणी अमरीका की जातियां आदि सभी प्रसंगों के व्याख्या सहित बड़े बड़े नक़शे दिये गये हैं जिनका दैनिक पत्रों में उल्लेख आता है। यह एटलस आजकल की घटनाओं से दिलचस्पी रखने वालों के बड़े काम की चीज़ है। मूल्य केवल ॥)

देश-निर्माता

इस ७२ पृष्ठ की छोटी सी पुस्तक में उन ११ नेताओं की रोमांचकारी जीवनियां हैं। जिन्होंने अपनी जान की बाजी लगाकर अपने अपने देश में नई जान फूंकी है। भारत के महात्मा गान्धी, चीन के च्यांग काई शेक, टर्की के मुस्तफा कमाल पाशा, ईरान के रिजाशाह, रूस के लेनिन, अरब के इब्न सऊद, इटली के मसोलिनी, जर्मनी के हिटलर, आयरलैंड के डी वेलरा, पोलैंड के पिल्सुड्स्की और चेकोस्लोवेकिया के मसारिक ने किस प्रकार अपने अपने देश को बनाया उन उन घटनाओं पर इस पुस्तक में पूराप्रकाश डाला गया है। रंगीनकवर पर सभी निर्माताओं के चित्र हैं। शीर्षक पर नेता के चित्र के साथ देश का नकशा भी दिया गया है। मूल्य केवल चार आना।

हमारी दुनिया

पृष्ठ संख्या ८४, चित्र और नकशों की संख्या ८१, आर्ट पेपर का तिरंगा कवर। यह वास्तव में भूगोल की पहली सीढ़ी है। मोटे टाइप और सरल भाषा में नाप का साधारण ज्ञान, दिशा-ज्ञान, नियत पैमाने पर नक़शा बनाना, गांव और शहर के नक़शे का पढ़ना, नदी की रामकहानी, तारे, चन्द्रमा, सूर्य और गोले का दर्शन आदि ११ पाठ हैं। पुस्तक इतनी रोचक है कि बालक आरम्भ करके इसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ना चाहते हैं। इससे उन्हें भूगोल के मूलमन्त्रों का सहज ही ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों के लिये भी इसमें दो शब्द हैं। विहार, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा प्रायमरी शालाओं के लिये स्वीकृत। मूल्य चार आना।

"भूगोल" कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष

का

भूगोल

[ले० "भूगोल"—सम्पादक, पं० रामनारायण मिश्र]

यह भूगोल सारे भारतवर्ष, ब्रह्मा, और लङ्का में निजी यात्रा के आधार पर बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। ४०० पृष्ठ, १०० से ऊपर चित्र और नक़्शे। बिहार, संयुक्त प्रान्त, अजमेर और मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा हाई और नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिये स्वीकृत। यह पुस्तक हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रवेशिका की परीक्षा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये भी स्वीकृत है।

भारतवर्ष के ऊपर अब तक इतनी सुन्दर और प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई थी। मूल्य केवल २) रु० डा० व्यय।≡) अलग।

—मैनेजर, "भूगोल"

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन-अंक

'भगोल' के समयानुकूल बड़े सुन्दर सुन्दर विशेषांक निकलते हैं। उन विशेषांकों से पाठक अच्छी तरह परिचित होंगे। इस बार जब स्पेन की सारे संसार में बड़ी चर्चा है, इसका स्पेन-अङ्क हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित हुआ है। इस अङ्क में स्पेन का पुराना और नया इतिहास, जलवायु, निवासी, तथा अन्य बहुत सी ज्ञातव्य बातें दी गई हैं। पाठकों को इस उपयोगी अंक से लाभ उठाना चाहिये।

पृष्ठ संख्या १३६, चित्र संख्या ६९, एक बड़ा (दो पृष्ठ) का नक़शा, २९ अन्य नक़शे मूल्य, केवल ॥-)

ईरान

इस अंक में ईरान देश की स्थिति, भू-रचना, जलवायु, उपज, व्यापार, मार्ग, निवासी इतिहास, साहित्य, वर्तमान परिस्थिति आदि फ़ारस (ईरान) देश के सभी अंगों पर पूरा पूरा प्रकाश डाला गया है। यह अंक सुन्दर चित्रों और बड़े नक़शों से सुसज्जित है। मूल्य केवल १) रु०।

भुवनकोष

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों में जिन स्थानों का वर्णन है, उसके वर्तमान नाम दिये गये हैं। जो नष्ट हो गये हैं उनकी स्थिति बतलाई गई है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर कुछ रोचक लेख हैं। कई छोटे-बड़े नक़शे हैं। मूल्य केवल १) रु०।

भूगोल कार्यालय, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार शासन

नया संस्करण, रायल साइज़, पृष्ठ संख्या २४०, मूल्य केवल २) रु०

इसमें संसार के प्रधान देशों की शासन पद्धति का वर्णन है। प्रत्येक देश के राजनैतिक दल, चुनाव के नियम अल्पसंख्या, धारासभाओं के अधिकार, जनता का शासन पर नियन्त्रण, भाषा का प्रश्न आदि शासन सम्बन्धी सभी बातों पर रोचक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के पढ़ने से आपको अपने देश और दूसरे देशों की शासन सम्बन्धी सभी समस्यायें समझ में आ जायँगी।

टर्की

पृष्ठ संख्या (रायल साइज़) ६०

इस पुस्तक में टर्की के भौगोलिक विवरण के साथ साथ विवाह और मृतक संस्कार, टर्की का ऋण, बगदाद रेलवे, मुस्तफा कमाल पाशा और नवीन टर्की, तुर्की पार्ल्यामेंट, राष्ट्रपति का आदर्श खेत, आदर्श गांव, टर्की और महायुद्ध, खिलाफत का उत्थान और पतन, तुर्की साहित्य आदि २९ लेख और आवश्यक चित्र और नकशे हैं। मूल्य केवल १) रु०

अफ़ग़ानिस्तान

पृष्ठ संख्या १३३

इसमें अफ़गानिस्तान की स्थिति, प्राकृतिक विभाग, जलवायु, पशु-वनस्पति, व्यापार, सिंचाई, कारीगरी, पठान स्त्रियां, रक्त का मूल्य, धार्मिक विचार, नगर-मार्ग, भाषा, स्थानीय कहावतें, इतिहास, काफिरिस्तान आदि २१ लेख हैं। जगह जगह पर आवश्यक चित्र हैं। इसको पढ़ते ही अफ़ग़ानिस्तान का पूरा चित्र सामने खड़ा हो जाता है। मूल्य केवल १) रु०

मिडिल भूगोल

चारभागों में उपलब्ध है। पहले भाग में भारतवर्ष, दूसरे भाग में एशिया, तीसरे में योरुप और चौथे में शेष महाद्वीपों (उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, और आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड) का भूगोल मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिये लिखा गया है। प्रत्येक भाग में शिक्षा प्रद चित्रों और नक़्शों की भरमार है। यात्रा के आधार पर लिखे जाने से प्रत्येक पाठ में जीवन आ गया है। पुस्तक एकदम नये रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी गई है।

मूल्य प्रत्येक भाग का आठ आने। चारों भागों का एक साथ मूल्य १॥) है।

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई जहाज़ बहुत तेज़ चलते हैं। हवाई जहाज़ की मदद से मनुष्य उन दुर्गम भागों में

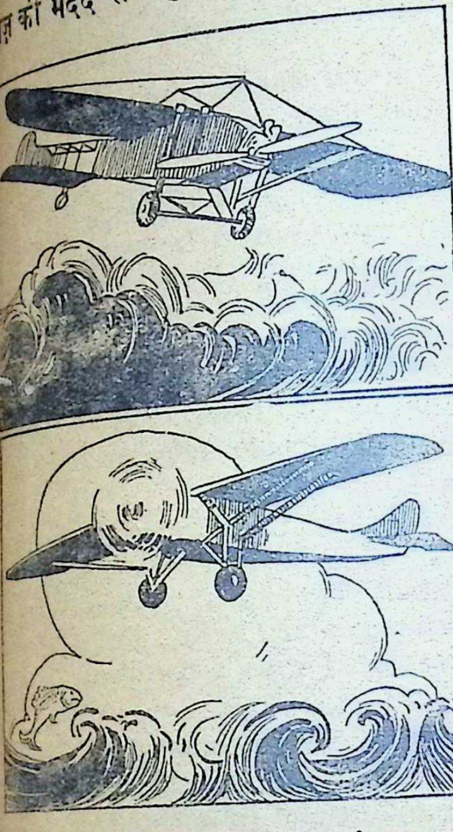

८—एक पंख वाला फ्रांसीसी हवाई जहाज़

पहुँचने लगे हैं जहां अबतक कोई मनुष्य नहीं पहुँचा था।

"भूगोल"-कार्यालय

संक्षिप्त परिचय

१९२४ के मई महीने में "भूगोल" मासिक पत्र स्थापित किया गया। गत १५ वर्षों में इस पत्र ने जो भूगोल सम्बन्धी साहित्य तयार किया है उसका पता गत १५ वर्षों की फाइलों और साथ में दिये हुए सूची-पत्र से लग सकता है। पर सच्चा भूगोल-साहित्य घर बैठे कल्पनामात्र या केवल विदेशी पुस्तकों के आधार पर नहीं लिखा जा सकता। इसके लिये भ्रमण की आवश्यकता है। इसी लिये "भूगोल" के यात्रा-विभाग की ओर से समस्त भारतवर्ष, लंका, बरमा, ईरान, इराक, सिरिया, पेलेस्टाइन, मिस्र, सूडान, टर्की, बलगेरिया, यूगोस्लेविया, हङ्गारी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवेकिया, जर्मनी डेन्मार्क, बेल्जियम, फ्रांस, इंगलैंड, स्काटलैंड, आयरलैंड, नार्वे, स्वेडन, फिनलैंड और रूस की यात्रा की गई।

हमारा विश्वास है कि देश की आज़ादी प्राप्त करने और कायम रखने के लिये अपने देशवासियों को संसार के प्रत्येक भाग का ठीक ठीक ज्ञान रखना आवश्यक है। भावी स्वाधीन भारत के राजदूत जब दूसरे देशों में जायेंगे तो उन देशों का पूरा ज्ञान होना चाहिये। इसी लक्ष्य को सामने रखकर आपका "भूगोल" कार्यालय, भूगोलसम्बन्धी दुर्लभ, पुस्तकों और नक़शों का संग्रह करता रहा है।

आपका कर्तव्य—हम चाहते हैं कि यह काम अधिक संगठित ढंग से और अधिक तेज़ी से हो। इसलिये आप से प्रार्थना है कि आप इस राष्ट्रीय काम में हमारा हाथ बटावें।

आप स्वयं और अपने मित्रों को "भूगोल" का ग्राहक बनाकर हमारी सहायता कर सकते हैं। जितने अधिक ग्राहक होंगे उतनी ही आसानी से हम यात्राक्रम और पुस्तक संग्रह को बढ़ा सकते हैं।

जिस तरह विदेशी वस्त्र को रोकने के लिये खादी का प्रचार आवश्यक है उसी तरह हर साल लाखों रुपयों की बाहर से आने वाली भौगोलिक पुस्तकों को रोकने के लिये आवश्यक है कि हिन्दी में उनकी बराबरी करने वाली और उनसे बढ़कर पुस्तकें तैयार हों। अभी तक हिन्दी में लगभग २० पुस्तकें तैयार हैं। आप उनकी बिक्री बढ़ाकर दूसरी पुस्तकों की रचना में सहायक हो सकते हैं।

भावी कार्य-क्रम—देहाती जनता और विद्यार्थियों के लिये हमने देश-दर्शन नाम की पुस्तक-माला का आयोजन किया है। इसमें २०० पुस्तकें होंगी। एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होगी। पुस्तक चित्रों और नक़शों से खूब सुसज्जित होगी। निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जायगी। काग़ज़ कवर, छपाई सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ होगी। फिर भी डेढ़ सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) होगा। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ४०) होगा। इस सम्बन्ध में मध्यप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री और वर्तमान प्रधान मन्त्री पं० रविशङ्कर शुक्ल जी की सम्मति पढ़िये और देश-दर्शन के ग्राहक बनकर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने में श्रेय लीजिये। आशा है आप लौटती डाक से ही अपना आर्डर भेजने की कृपा करेंगे।

निवेदक—रामनारायण मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, Berar, the Central Provinces, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances , cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol".**

Rates for Advertisements : Ordinary full one page Rs. 10/-
3rd page of the cover „ 12/-
4th page of the cover „ 15/-

Write to the Manager,

"BHUGOL",

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press; 306, Jumuna Road, Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

अगस्त १९४१

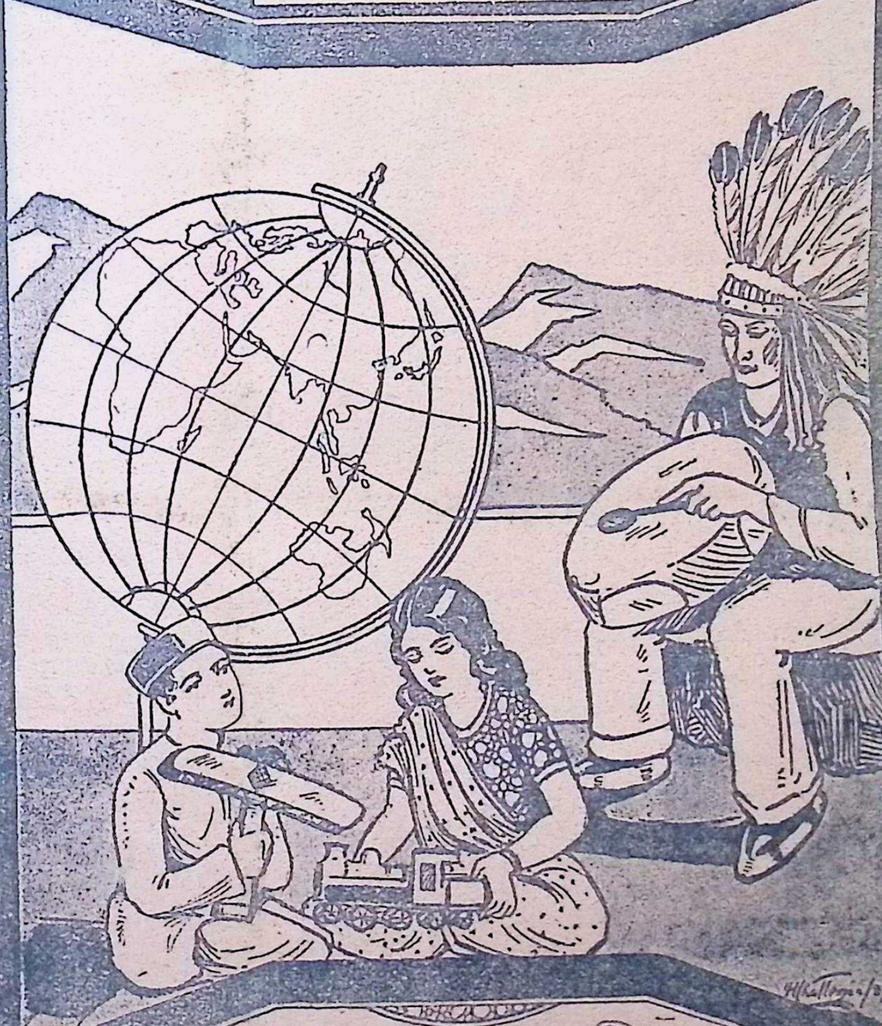

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

सम्पादकः—रामनारायण मिश्र बी० ए०

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

अभी हाल ही में हमारे यहां से 'अनोखी दुनियाँ' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें मिट्टी का तेल, जहाज़, रेलगाड़ी, भोजन, लोहा और फौलाद, हवाई जहाज़, सोना, वाहन या बारबरदारी, घर और पहिये वाली गाड़ी की दस कहानियां दी गई हैं। प्रत्येक कहानियों के साथ एक तिरंगा तस्वीर है और प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस से बालकों को शिक्षा असानी से मिल जाती है। इस पुस्तक का लागत मूल्य ||≈) रक्खा गया है। डाक व्यय सहित ||) का टिकट भेज कर पुस्तक मँगा लें।

सीधी पढ़ाई प्रथम व द्वितीय भाग का दूसरा संस्करण छप गया है। प्रत्येक भाग का मूल्य -)||

भौगोलिक कहानियां—मूल्य चार आना। डाक व्यय अलग। यह बालकों के लिये उपयोगी पुस्तक है।

तीनों पुस्तकों के मँगाने के लिये १|) भेजिये।

मैनेजर, 'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—सोवियट रूस की सैनिक शक्ति	१
२—झांसी का धरातल	५
३—योरुप में भोजन सामग्री और राजनैतिक नियंत्रण	९
४—अल्बेनिया	१५
५—नाजी लोगों की कारबारी शक्ति	२०
६—टैंक	२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] भाद्रपद, सं० १९९८, अगस्त, १९४१ ई [अङ्क ४

सोवियट रूस की सैनिक शक्ति

गत छः सप्ताह से जर्मनी और रूस के बीच में ऐसा भयानक युद्ध हो रहा है जैसा संसार में पहले कभी नहीं हुआ था। इस युद्ध में रूसी सेना ऐसी वीरता से लड़ी कि उसके मित्र और शत्रु दोनों ही ने उसकी प्रशंसा की है। लाल (रूसी) सेना ने जो वीरता का संग्राम किया है उसका इतिहास मानव जाति की स्वतंत्रता तथा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करने के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जायगा। सैनिक लोग अचम्भे के साथ प्रश्न करते हैं कि ऐसी कौन सी वस्तु है जो लाल सेना को शक्ति प्रदान करती है? क्या विश्वविख्यात अक्तूबर मास की क्रान्ति ने इस क्षेत्र की रचना की है?

लाल सेना को सब से बड़ी विशेषता यह है कि समस्त रूसी समाज ने इसे बनाया है। प्राचीन रूसी सेना किसी एक व्यक्ति से सम्बन्ध रखती थी और विशेष लोग ही उसके मालिक तथा जन्म दाता होते थे। लाल सेना मजदूरों और किसानों की सेना है जिसके संगठन कर्ता तथा अफसर उन्हीं के भाई बन्धु हैं। वह जानती है कि राजनीति के क्षेत्र में उसे क्या करना है। वास्तव में रूसी क्रान्ति ने वहाँ रूसी अफसरों और साधारण मनुष्यों को अपूर्व शिक्षा दी थी।

रूसी वायु-सेना

वर्तमान युद्ध में वायुयान रूसी सब से अधिक आवश्यक शस्त्र है। विमानों द्वारा शत्रु के देश में और रण-स्थल के पिछले भाग में आक्रमण किया जाता है। टैंक तथा और दूसरी स्थलीय सेना के साथ साथ विमानों की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है। योरुप में रूसी वायु सेना सब से अधिक बड़ी है। रूस में यदि जितने विमान वाहक रण स्थल में हैं उनसे पांचगुने अपनी हवाई शिक्षा समाप्त कर चुके हैं और लड़ने के लिये तयार हैं। १९३६ ई० में १,५०,००० विमान वाहकों को शिक्षा प्रदान की गई थी। सोवियट हवाई सेना में ऐसे ऐसे व्यक्ति हैं जो ६ लाख मील आकाश में उड़ चुके हैं। वहां के विमान तथा उड़ाके दोनों अपने कार्य में बड़े कुशल हैं। लाल सेना के विमानों की ठीक संख्या का निर्णय करना कठिन है। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषज्ञों का अनुमान है कि वहाँ प्रायः ३० हजार वायुयान हैं।

रूस में भांति भांति के वायुयान हैं। कुछ विमान बहुत भारी कुछ मध्यम श्रेणी के कुछ हलके बम्ब वर्षक हैं। इनके अतिरिक्त बहुत से लड़ाका तेज विमान हैं। मध्यम श्रेणी और हलके बम्ब वर्षकों विमान डुबकी मारने वाले नीचे उड़कर बम्ब गिराने वाले) बम्ब वर्षकों का काम देते हैं यदि सोवियट रूस के पास डुबकी मार कर या नीचे उड़कर बम्ब गिराने के लिये विशेष ढङ्ग के विमान हैं। सोवियट रूस अपने भारी बम्ब वर्षक वायुयानों के लिये संसार भर में प्रसिद्ध है। १९३७ ई० में वहां पर एक ६ इञ्जिन का भारी बम्ब वर्षक वायुयान था। १९४१ में रूस में ८ इञ्जिन वाले बम्ब वर्षक विमान बनाए गये हैं जो १० टन (२८० मन के बम्ब के गोले भर कर २५०० मील तक उड़ सकते हैं। रूस में देश की रक्षा करने वाले जो विमान हैं उनमें आगे और पीछे दोनों ओर मशीनगन लगी रहती है। यह विमान शत्रु के देश के भीतर दूर तक लड़ाका विमानों की सहायता के बिना ही जा सकता है। यह ३०० मील तक पूरा बम्बों का बोझ लेकर उड़ सकता है और विमान संहारिणी तोपों से बच कर वापस आ सकता है। दूसरे भांति के (SKB-17) बम्ब वर्षक विशेष रूप से विख्यात है। यह संसार में केवल एक बम्ब वर्षक है जो अपने पंखों में मशीन गन ले जाता है और अपनी नाक से एक इञ्च की तोप से गोले चलाता है।

सोवियट विमान चाल और सजावट में योरुपीय विमानों की दशा विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। १९३६ ई० में भी रूस में बहुत बड़ी संख्या में तेज चलाने वाले विमान थे। जेड के वी-१९ (ZKB-19) नामक विमान २४८०० फुट की ऊँचाई पर ३०० मील प्रति घंटा की चाल से उड़ता है। यह एक अद्भुत बात है क्योंकि आज भी जर्मनी और इङ्गलैंड के ३५० मील प्रति घंटा चलने वाले विमान काम में नहीं लाए गये हैं १९४० ई० में सोवियट वायु सेना में और अधिक वृद्धि हुई और एल ६१ और एल ५१ नामक विमान सेना में आये यह विमान २४,००० फुट की ऊँचाई पर भी ४५० मील प्रति घंटा की चाल से यात्रा करते हैं। इन विमानों में कितनी सामग्री रहती है इसका पता नहीं है वरन् यह अनुमान किया जाता है कि इसमें ८ मशीनगनें आगे और दो पीछे लगी रहती हैं।

सोवियट राष्ट्र ने ही सर्व प्रथम वायु-युद्ध में क्रान्ति उपत्न की थी। जर्मन लोगों से बहुत पहले सोवियट रूस ने पाराट्रूप्स (पेराचूट की सहायता से विमान से उतरने वाला सेना) का प्रयोग किया था। लाल वायुसेना में ५००० सेना ढोने वाले विमान हैं। यह विमान सुसज्जित सैनिकों की पूर्ण सेना को शत्रु सेना के ठीक पीछे उतार देते हैं। कहा जाता है कि सोवियट विमान १५ सैनिक डिवीजन या दस्ते एक ही बार में ले जा सकते हैं। सोवियट रूस में लगभग १० लाख स्थाई हवाई सैनिक और लगभग १० लाख पैराचूट सैनिक हैं। गतवर्ष यूक्रेन में जो सैनिक प्रदर्शन हुआ था उससे ५ लाख गुब्बारे वाले सैनिक उतारे गये थे। बेसारेबिया प्रान्त पर जब रूस ने अधिकार किया था तो सोवियट विमान छोटे टैंकों को लाद कर वहां ले गये थे।

रूसी पैदल सेना

१९३५ ई० में रूस में १५ लाख पैदल सेना का संगठन किया गया था। सेना में मोटरों और टैंकों का संगठन भी अच्छा किया गया है। १९३६ ई० में ९ लाख टैंक तथा मोटर चलाने वाले ड्राइवरों को शिक्षा दी गई थी जिससे वह मशीन वाली सेना में काम कर सकें सोवियट कृषि में मशीनों का प्रयोग भी बहुत होता है। रूस में ट्रैक्टर ड्राइवर लाखों की संख्या में है। वह लोग संकट काल में सेना में काम करने के लिये बुला लिये जाते हैं। रूस में अफसरों की टोली भी बहुत बड़ी है। १९४० ई० सोवियट सैनिक कालेजों में ३०,००० विद्यार्थियों को शिक्षा मिली थी। इस प्रकार उच्च स्थान का नैत्रित्व करने के लिये प्रतिवर्ष ७००० कुशल सैनिक तयार हो जाते हैं। अधिकांश रूसी सैनिक २५ से ४० वर्ष की अवस्था वाले हैं। सोवियट सेना में योरुप के सभी राष्ट्रों से अधिक नवयुवक सैनिक अफसर हैं सेना में युवा तथा शारीरिक स्फूर्ति से अफसरों की ही आवश्यकता रहती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जाता है कि एक वर्ष की शिक्षा पा कर रूसी सैनिक किसी भी युद्ध स्थल में संचालन कार्य कर सकता है। रूस के पास एक करोड़ पचास लाख कुशल शिक्षित सैनिक हैं और ५० लाख ऐसे सैनिक हैं जिनका कुछ थोड़ी शिक्षा मिली है।

वर्तमान युद्ध-कौशल में सेना में मोटरों का होना बड़ा आवश्यक है। ½ अश्व शक्ति वाला मोटर एक ट्रेडिल मशीन चला लेता है। आटा पीसने की चक्की में पांच हार्स पावर (अश्व शक्ति) का मोटर लगता है। रूस में युद्ध सम्बन्धी मोटर से चलने वाली इतनी मशीनों का प्रयाग होता है कि रूसी सेना के प्रत्येक सैनिक के साथ औसत से २० अश्व शक्ति का मोटर लगी है। जर्मनी के प्रत्येक सैनिक के पीछे केवल २५ अश्व शक्ति (हार्स पावर) शक्ति है। एक मोटर वाली सेना में ढाई से तीन हजार तक सभी भांति के मोटर गाड़ियाँ रहती हैं। सोवियट कारखानों में इतनी बड़ी मशीनें हैं कि वे बड़ी से बड़ी मशीन वाली सेना की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं।

टैंक सेना

लाल सेना में १५ हजार से २० हजार तक भिन्न भिन्न भांति के टैङ्क (मशीनगन वाली मोटर लारियां) हैं। लाल सेना के नेताओं ने टैङ्कों की आवश्यकता बहुत पहले ही अनुभव की थी। इसी कारण प्रत्येक ६ महीने के पश्चात् रूस में नये टैंक बनाये गये हैं। सोवियट रूस में भारी, मध्यम श्रेणी, हलके और जल-स्थल पर टैंक हैं। पीछा करने अथवा पकड़ने के लिये तेज फुर्तीले टैङ्क होते हैं। इसी प्रकार के २२४० मन के टैंक से जर्मनी ने फ्रान्स में प्रवेश किया था। सोवियट किलेबन्द लाइनों को तोड़ने के लिये रूस के पास १०० टन वाले टैङ्क बहुत अधिक संख्या में हैं। इन्हीं टैङ्कों की सहायता से मैनरहाम लाइन को तोड़ा गया था। प्रथम कुछ दिनों तक जर्मन सेना के विरुद्ध ५२ टन के टैंक बड़ी कुशलता से लड़े थे।

सोवियट टैंकों का प्रयोग विमानों के साथ बड़ी कुशलता से होता है। सोवियट टैङ्कों के वाहकों (चलाने वालों) को बेतार के तार की उत्तम शिक्षा प्रदान की जाती है। कुछ वाहकों को १० हजार मील तक की देख भाल करनी पड़ी है। हासान झील और चांगकूफेङ्ग की लड़ाइयों में सोवियट टैङ्कों ने बड़ी कुशलता से जापानियों का सामना किया था इसी से जापानी संधि करने पर विवश हुये थे। उन्हीं लड़ाइयों में ज्वाला (लपट) फेंकने वाले टैङ्कों का प्रयोग सर्व प्रथम किया गया था। जिसमें बड़ी सफलता प्राप्त हुई थी। सोवियट २८०० मन के टैंक टीजी-५-टी का चाल २५ मील प्रति घंटा है। उसमें १० सैनिक रहते हैं उसमें १०.५ सेण्टी मीटर की, ६ इंच की हाउइटजअर (एक प्रकार की तोप) दो ३३ मिली मीटर तोपें, दो भारी मशीन गनें तथा दो जुड़वाँ विमान संहारिणी तोपें रहती हैं। इसका एक ही टैंक इतनी गोलीयाँ छोड़ता है जितनी एक मशीन से चलने वाली बैट्री छोड़ सकती है। सोवियट रूस के पास ५० टैङ्क सैन्यदल (ब्रिगेड) हैं। जापानी समाचार के अनुसार रूस के पास ३५ भारी टैङ्कों वाले और १००० छोटे टैङ्कों वाले सैनिक दस्ते या डिवीजन हैं।

लाल सेना में ऐसे भी टैङ्क हैं जो ६०० मील तक पानी में यात्रा कर चुके हैं। रूसी जल स्थल पर टैङ्क ज्वार भाटा के पानी में चलने के लिये विख्यात हैं। रूस के पास टैंकों की सेना बहुत बड़ी है। परन्तु टैंकों का आक्रमण तभी सफल हो सकता है जब रसायनिक सेना और इंजीनियरों से संगठित सहायता मिलती रहे।

रसायनिक युद्ध

रसायनिक अस्त्रों की ओर भी रूस में ध्यान दिया गया है। जब सोवियट तोपों ने किलों को छिन्न-भिन्न कर दिया था तभी मैनरहीम लाइन का तोड़ना सम्भव हुआ था। १९४० ई० में सोवियट रूस के पास १०० भारी तोपों का और २५० हलकी तोपों का सैन्यदल (रेजीमेण्ट) था। १०० मिली-मीटर वाली स्थली तोपें १८ मील तक गोले फेंक सकती हैं। इसके सिवा ७८ मिली मीटर वाली लाल टैंक संहारिणी भयानक तोपें हैं जो तीन इंच मोटे कवच को बेध सकती हैं। रूसी विमान संहारिणी तोपें १०५ मिलीमीटर की हैं। यह योरुप की सभी विमान संहारिणी तोपों से अधिक दूरी तक गोले फेंकती हैं। यह तोपें लगभग १२ मील दूर लम्बाई में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

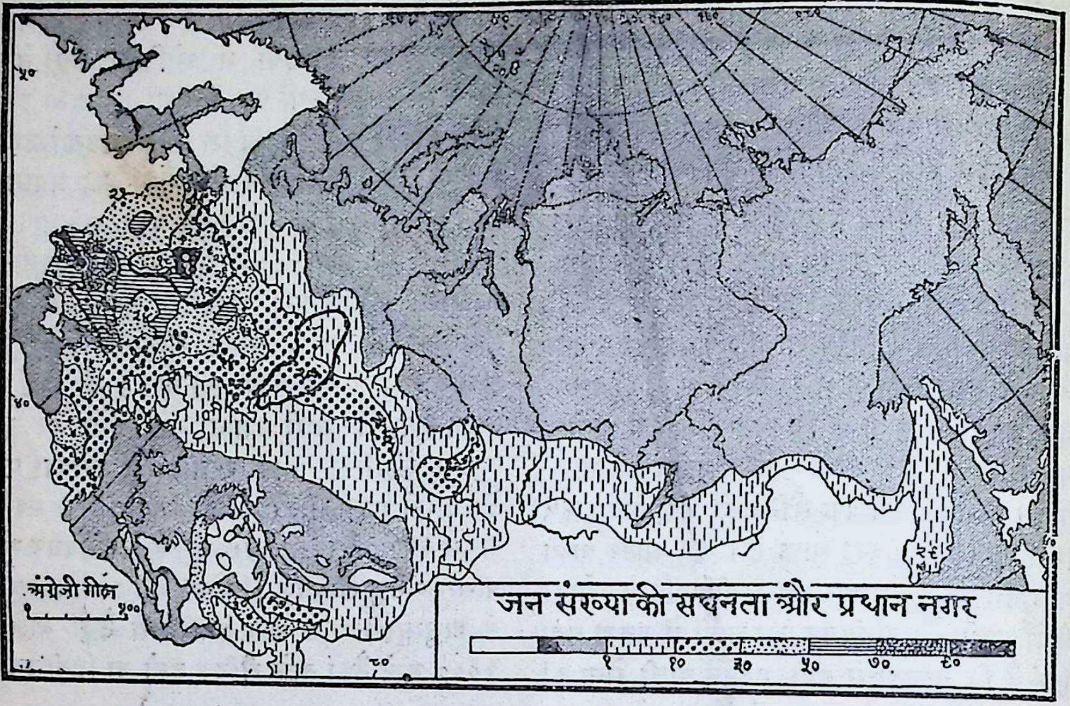

और ९ मील ऊपर उंचाई में गोले फेंक सकती हैं। तोपों की मुहरा बड़ी तीव्रता से काम करता है।

रूसियों ने रसायनिक अस्त्रों की भी अच्छी उन्नति कर लो है सोवियट रसायनिक सैन्यदल का अलग ही जत्था चलता है। उसमें रसायनिक विद्वान रहते हैं जो सेना को गैस युक्त भूमि की चेतावनी देते रहते हैं। लाल रसायनिक सेना सभी प्रकार की गैसों तथा विषैले धुओं और अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करने में निपुण हैं। वह विमानों, तोपों टैंकों आदि से फेंकी जानी वालो प्रत्येक भांति की गैस का भली भांति सामना कर सकते हैं।

सोवियट सेना प्रत्येक भांति से आक्रमण करने के लिये सुयोग्य है परन्तु आक्रमण भी केवल कुछ ही अवसरों स्थानों पर हो सकता है। रूसी जर्मन रण-स्थल सीमा पर लाल सेना प्रत्याक्रमण करके जर्मन सेना को पीछे हटाने में दो रण-क्षेत्रों में सफल हुई है।

नाजी सेना का सामना करने के लिये ६० लाख रूसी सेना रण-स्थल सीमा पर बुलाई गई है। मास्को की ओर जो नाजी सेना बढ़ रही थी वह भी रोक दी गई है। कीव की ओर नाजी सेना का रूख हो रहा है। लेनिनग्राड पर भी अधिकार जमाने में नाजी सेना असफल हुई है। घोर संग्राम हो रहा है। लगभग ३० लाख सैनिक दोनों ओर से हताहत हो चुके हैं। सोवियट सेना ने जिस वीरता से नाजी सेना का सामना किया है उसका उदाहरण शायद ही इतिहास में दूसरा मिल सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झाँसी का धरातल

(श्री आर० एन० सक्सेना)

झांसी संयुक्त प्रान्त के पश्चिमी चरण पर स्थित है। आर्थिक दृष्टि से झांसी यहां का कोई प्रमुख स्थान नहीं परन्तु भौगोलिक दृष्टि से झांसी एक विचारपूर्ण अध्ययन का स्थान है, विशेष कर धरातल सम्बन्धी प्रश्नों की दृष्टि से भूगर्भ विद्या (Geology) के वर्गीकरण के अनुसार यहां के धरातल की चट्टानें संसार की प्राचीनतम चट्टानें हैं तथा सामान्यतः ग्रेनाइट (दानेदार बलुआ पत्थर) की बनी है परन्तु फिर भी कुछ ही मील के अन्दर अन्दर लाल पीली तथा काली मिट्टी का पाया जाना दूर से एक अचम्भे की बात है। मिट्टी ही नहीं वरन् यदि यहां पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े इकट्ठे किये जायँ तो थोड़ी दूर में ही अनेकों प्रकार के पत्थर मिलेंगे।

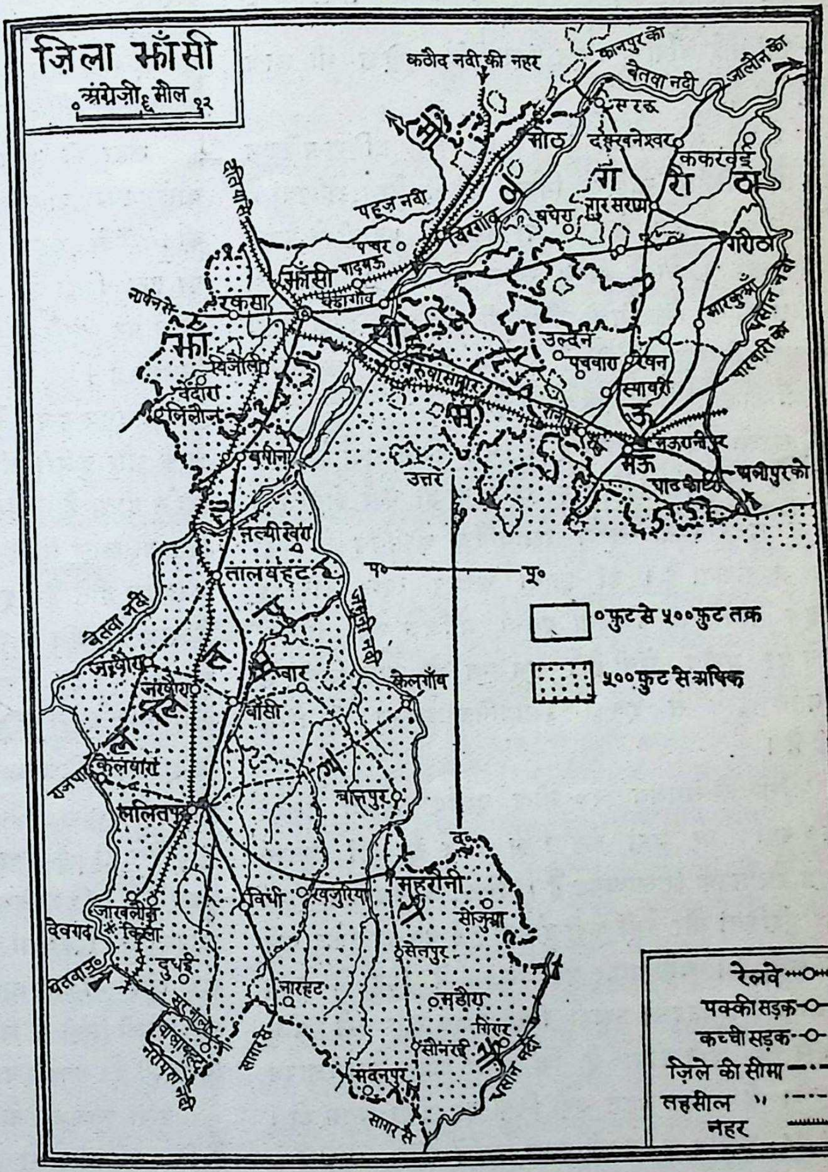

लहर की पहाड़ी पर जो झांसी स्टेशन से एक मील उत्तर दिल्ली लाइन के किनारे स्थित है, भ्रमण करते समय कई एक पत्थरों के ऐसे छोटे छोटे टुकड़े मिलते हैं जिनके किसी किसी तरफ लगभग २ सूत के बहुपार्श्विक रवे जड़े होते हैं। बहुधा यह रंग रहित, पारदर्शी होते हैं। कुछ कुछ एक रवों में हलकी बैंजनी या कुछ एक में कत्थई रंग की झलक भी मिलती है। रवे एक ही नाप के नहीं होते। अणुवीक्षणीय परिमाण से, बड़े से बड़े २॥ सूत के रवे होते हैं। कहीं कहीं पर विस्तृत शिलाखण्ड के कुछ एक पार्श्वों की सतह पर भी मिल जाते हैं परन्तु बहुत खोज से।

इसी पहाड़ी के ऊपर तमाम श्वेत अपारदर्शी पत्थर भी मिलते हैं जिन्हें यहां के निवासी दुद्धी कहते हैं। रवे जिन पत्थरों पर पाये जाते हैं उनका रवों के नीचे का प्रदेश दुद्धी का ही होता है। पहाड़ी के शिलाखण्ड अधिकांश ऐसे अपारदर्शी पत्थर के हैं। जिनका रंग मटियाला गुलाबी कहा जा सकता है। जिसमें किसी प्रकार की परतें नहीं होतीं। कहीं कहीं अबरख की तरह की झिलमिली होती है। बहुधा इधर से उधर सफेद दुद्धी की सुरियाँ (Veins) भी दौड़ी होती हैं। लहर की पहाड़ी का अधिकांश शरीर लाल मिट्टी का है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां से कुछ ही दूर पहाड़ो के स्वरूप में छितरे हुये शिला खण्ड हैं जिनके पत्थर लहर की पहाड़ी के पत्थरों से बिल्कुल भिन्न हैं। आकाशीय नीली झलक लिये हुये अपार दर्शी पत्थर जिनमें कहीं कहीं अबरख की सी झिल-मिली भी होती है पाये जाते हैं। गौर से देखने पर इन में छोटी छोटी काली चित्तियां दीखती हैं। इन शिला समुदाय पहाड़ियों के शरीर भी लाल मिट्टी के ही हैं। आगे बढ़ने पर प्रदेश के धरातल पर इधर उधर दौड़ती हुई अनेकों समतल चट्टाने हैं जिनके अपारदर्शी श्वेत पत्थरों में काली चित्तियां पाई जाती हैं। इन चट्टानों के चतुर्दिश भी लाल मिट्टी ही है।

झांसी से लगभग ६ मील दूर कुछ दक्षिण-पश्चिम की ओर खैलार गांव के निकट अनेकों ऐसी श्रेणियां हैं जिनका पत्थर ऊपर से देखने पर लहर की पहाड़ी के पत्थर से मिलता जुलता है किन्तु सूक्ष्म अध्ययन से कहीं कहीं अबरख की सी झिलमिली और कहीं कहीं छोटी छोटी काली चित्तियां दिखाई पड़ती हैं। इन पहाड़ियों के शरीर पर भी लाल ही मिट्टी पाई जाती है।

सहसा विस्मय होता है कि भिन्न भिन्न वर्ण के पत्थर होते हुये भी इनका अंतिम स्वरूप लाल ही कैसे होता है। इसका उत्तर बिना सूक्ष्म रसायनिक अध्ययन के नहीं दिया जा सकता है। हां इतना अवश्य स्पष्ट होता है कि इन पत्थरों की भिन्नता इतनी मौलिक नहीं जितनी देखने पर प्रतीत होती है। इन सब के लाल मिट्टी में परिवर्तन होने से इनकी रसायनिक एकता ही सिद्ध होती है।

झांसी से लगभग २० मील दक्षिण सुकवां ढुकवां नामक स्थान पर जहां बेतवा का बांध है वहां अनेकों विस्तृत श्यामवर्ण शिलाखण्ड हैं। निकट अध्ययन से इनमें सफेद बुंदकियां और कहीं कहीं दौड़ती हुई पतली सफेद नसें भी दीखती हैं। यही पत्थर यहां सड़क में गिट्टी के काम भी आता है। अक्सर पुरानी गिट्टी देखने और उसे प्रयोग करने से यह ज्ञात होता है कि पत्थर अपना पथरीलापन खो चुका है। एक बहुत कड़ी मिट्टी का ढेला मात्र हो। पत्थर पर चलाने से इससे लाल लकीरें खींच जाती हैं। और इसका स्वरूप कुछ कुछ गेरू से मिलता हुआ हो जाता है।

इस पत्थर को जिसे एक दशा में पत्थर से लाल मिट्टी के रूप में परिवर्तन होता हुआ देखा जाता है सुकवां ढुकवाँ के बांध के नीचे ही अगर काली चट्टान के उस विस्तार का अध्ययन करें जहां वर्षा में वेतवां में प्रलयनाद युक्त भीषण धारा गरजती और तरजती है परन्तु ग्रीष्म में जहां बिलकुल जल नहीं होता वहां भी पत्थर पथरीलेपन से रहित मिलता है और जहाँ शिला खण्ड टूटे होते हैं वहाँ पीतवर्ण लिये हुये पत्थर मिलता है और आगे बढ़कर अस्थियों के सामान बिना आकृति वाले ऐसे पीले कंकड़ मिलते हैं जैसे दोआब मे कहीं कहीं ऊसर भूमि पर पाये जाते हैं। इस एक ही पत्थर से भिन्न भिन्न परिस्थितियों में ललाई और पीलाई की ओर परिवर्तन से लाल और पीली मट्टियों की मौलिक एकता कुछ कुछ समझ में आती है।

लहर की पहाड़ी के पास आकाशीय नील की झलक वाले पत्थर और खैलार के पास वाली पहाड़ियों के पत्थरों की गिट्टी में बहुत अधिक उपयोग होता है। जिस सड़क पर इस गिट्टी का प्रयोग हुआ हो उसे एक दो वर्ष बाद देखने पर इसी गिट्टी का पीले कंकड़ों में परिवर्तन हुआ मिलता है।

अतएव हमने देखा कि काला पत्थर एक परिस्थिति में लाल और दूसरी परिस्थिति में पीली मिट्टी की ओर परि-वर्तन होता है और खैलार वाली पहाड़ी के पत्थर भी एक ओर तो लाल मिट्टी में और दूसरी ओर पीली मिट्टी में परिवर्तन होते हैं। इतना ही नहीं वरन् खैलार की पहाड़ी के पत्थर व बांध के नीचे के काले पत्थर दोनों का परिवर्तन स्वरूप एक ही होता है। इन प्रमाणों से न केवल लाल और पीली मिट्टी में एक प्रकार की एकता भासित होती है। वरन् भिन्न भिन्न पत्थरों में भी गहरी एकता समझ में आती है।

ऐसे ही कुछ अन्य प्रमाण भी इनकी एकता प्रदर्शित करते हैं। (१) चित्रकूट के निकट मानिकपूर जबलपुर लाइन पर टिकरिया नामक स्थान के बहुत पास पास लाल गेरू और पीली रामरज की खदानों का होना इन लाल और पीली मिट्टी के सहोदर होने का साक्षी है। (२) पीली मिट्टी की ईंट पकाने पर लाल हो जाती है।

इसी अध्ययन के प्रसंग में एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि इतने छोटे से भूभाग में कैसे पत्थरों की बनावट में इतनी भिन्नता हो गई। जहां तक मैं समझ पाया हूँ इस विशेषता का श्री गणेश इन पत्थरों के जन्म काल में ही हुआ है। जिस समय सम्पूर्ण पृथ्वीतल द्रव था अनेकों यौगिक उस तरल में समजातीय द्रव पदार्थ के रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यमान थे। किन्तु जैसे जैसे तापक्रम कम होता गया, द्रव स्थिर और गाढ़ा होता गया। जिस घोर मथन के कारण मिश्र पदार्थ समजातीय था उसके अंत होने पर भिन्न भिन्न यौगिक पृथक होने लगे। भारी पदार्थ नीचे बैठने और हलका पदार्थ ऊपर आने लगा। संभवतः जिस पदार्थ को दुद्धी कहा गया है वह ही सबसे हलका पदार्थ था और इस कारण शुद्ध रूप में यह केवल उन पहाड़ियों पर जाता है जो सबसे ऊँची हैं। काला पदार्थ संभवतः सब से भारी है और जहां धरातल नीचा है वहां पाया जाता है। इन दोनों के बीच में सफेद पत्थर पर यत्र तत्र काले पदार्थ होना तथा काली चट्टानों में सफेद पदार्थों का होना सरलता से समझ में आ जाता है।

सफेद पदार्थ ही कोई ऐसा यौगिक है जो बड़े रवे की आकृति में पारदर्शी अनुवीक्षणीय रवों के संघ हमें अपार दर्शी दुद्धी के रूप में है। आग्नेय चट्टानों में अक्सर चिकनापन मिलता है। या तो यह चिकना पदार्थ रवों की चिकनी सतहों के कारण हुआ करता है अथवा अग्नि से पक कर पदार्थ के कण अपने को इस प्रकार स्थित कर लेते हैं कि सतह चिकनी हो जाय। पत्थरों में पाई जाने वाली अबरख की सी झिलमिली इन्हीं दो में से एक कारण है। रवों में बैजनी झलक संभवतः मैंगनीज़ और खाकी झलक लोहे की वजह से हो सकती है।

सारांश यह है कि यहां का तमाम भिन्न भिन्न पत्थर एक मूल मिश्र द्रव के आकर्षण युक्त बैठने से बने हुये समझ में आते हैं यहां की पर्वत श्रेणियों को यदि ऊँचे से देखा जाये तो इन्हें बहुत दूर तक विस्तृत देखा जा सकता है। जैसा सागर की लहर पंक्तियों का आकार होता है वैसा ही इनका आकार भी। संभव है कि पृथ्वी तल के मूल द्रव की लहरें जो किसी कारण से गाढ़े द्रव में पैदा हुई हों जम कर रह गई हों। इन श्रेणियों के शिखर चपटे हैं। परन्तु इसका स्पष्ट कारण इनके सिरों का कालान्तर में हवा पानी आदि से घिस जाना ही है।

डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर (District Gazzetteer) में जिन्हें कार्टज वेन्स (Quartz Veins) कहा गया है संभवतः वह दुद्धी वाली सुरियां ही हैं। परन्तु मेरी समझ में दुद्धी (Quartz) नहीं वरन् केल्सियम (Calcium) का कोई यौगिक है क्योंकि इनके प्रकृति परिवर्तित स्वरूप में चूना मिलता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि चित्रकूट की पहाड़ियां (स्फटिक पत्थरादि) मदियर आदि रियासतों की अत्यन्त चुने से भरी हुई जमीन यहां तक की जबलपूर की संगमरमर की चट्टानें इसी मध्य भारतीय प्रदेश के ऊपर से बहकर आये हुये स्वेत पदार्थ से बनी हैं।

झांसी की पहाड़ियों के अन्दर बहुधा गुफायें पाई जाती हैं। जिनके साथ बहुत से ऐतिहासिक और काल्पनिक गाथायें लगी हैं। खास लहर की पहाड़ी की गुफा में कई मूर्तियां हैं। इन गुफाओं के बन जाने का कारण मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि जिस समय पृथ्वी तल का द्रव पदार्थ ठंडा होने लगा ऊपर की सतह सब से पहिले ठंडी हो गई और अन्दर द्रव शेष रहा। ठंडे होने पर बहुधा पदार्थ सिकुड़ते हैं। ज्यों २ अन्दर का भाग ठंडा होता गया सिकुड़ता गया। इस प्रकार बीच का हिस्सा खोखला हो गया। पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े भी ऐसे मिलते हैं जो बीच में खोखले और रवेदार होते हैं। मैंने कुछ एक ऐसे टुकड़े गवर्नमेण्ट ट्रेनिंग कालेज (Govt. Training College) को दिये भी हैं। वे सब उपर्युक्त सिद्धान्त का ही पोषण करते हैं।

अब यहां की पहाड़ियों की एक विशेषता पर थोड़ा सा प्रकाश डाल कर लेख समाप्त करता हूँ। बहुत सी पहाड़ियाँ केवल बड़े बड़े गोल पत्थरों के शिलाखंडों के संग्रह मात्र हैं। ऐसा मालूम पड़ता है मानों किसी ने उन्हें एक दूसरे के ऊपर रख दिया हो। कोई निकटवर्ती पहाड़ियां ऐसी नहीं जिनसे ये लुढ़क आये हों। पूरी पहाड़ियां ही इन्हीं का समुदाय मात्र हैं।

इनको इस व्यवस्था का विवेचन करने से पहिले एक उदाहरण को सम्मुख कर लें। यदि हम किसी रवेदार पदार्थ को लें और उसे गरम करें तो प्रत्येक रवा प्रसार के सम्बन्ध में एक स्वतंत्र व्यक्ति होकर व्यवहृत होगा। अर्थात् सम्पूर्ण पदार्थ के प्रसार में एकता न होकर भिन्न भिन्न रवे फैलेंगे। ऐसा कई बार होने पर रवे ढीले पड़ कर विच्छिन्न हो जायेंगे अथवा यदि किसी रवेदार पदार्थ को हम ठोकें तो वह छोटे छोटे रवों में ही टूटता है। अब यदि हम यह कल्पना करें कि पहाड़ी का एक बृहत् शिलाखण्ड छोटे खण्डों का एक वैसा ही समुदाय है जैसा ऊपर कथित पदार्थ रवों का था तो नित्य प्रति के तापक्रम परिवर्तन, अथवा समय समय पर आये हुये भूचालों द्वारा इनका छोटे छोटे खण्डों में भग्न हो जाना सरलता से समझ में आ जाता है। परन्तु ये विभक्त खण्ड प्रारम्भ में गोल न रहे होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु हवा, वायु ताप आदि प्रकृति के ध्वंसकारी अस्त्रों से इन पत्थरों के किनारों को घिस घिस कर गोल कर दिया होगा।

प्रकृति के अनेक क्षेत्रों में कई एक नियम पाये जाते हैं जैसे (Dynamics में principle of least action, optics में principle cf least time and Distance) एक गोल सतह स्वाभावत: एक ऐसी सतह है जिस पर ध्वंस होने की क्रिया हवा, वायु और ताप इत्यादि से सब से कम होगी। अतएव इन सब के काम का परिणाम पत्थरों को गोल करके छोड़ना ही स्पष्ट समझ में आता है। (A spherical surface is naturally most uninure to denudation)।

झांसी के धरातल का अध्ययन अत्यन्त रोचक है। किस प्रकार एक साथ जन्मी हुई पहाड़ियाँ आज भिन्न भिन्न अवस्थाओं में हैं, (अपने ध्वंस की दृष्टि से) इसकी विवेचना भी रोचक है। यहां इतना कहना ही अधिक होगा कि भूगोल की पुस्तकों में कथित विध्वंसकारी अस्त्रों के अतिरिक्त हमें यह भी विचार करने की आवश्यकता है (१) कि पर्वत श्रेणियां पूर्व से पश्चिम को जाती हैं अथवा उत्तर से दक्षिण की ओर क्योंकि इनकी इस भिन्नता से सूर्य का प्रभाव भिन्न होगा। (२) कि वे रवेदार हैं (३) कि वे कितनी ऊँची विस्तृत तथा किस प्रकार है। कन्वेक्स धरातल से (Convex Surface) कनकेव (Concave) की अपेक्षा ध्वंस की दृष्टि से अधिक सुरक्षित है।

इस सम्पूर्ण लेख में काली मिट्टी के बारे में कुछ नहीं कहा गया। यहां थोड़ा लिखना ही पर्याप्त होगा। मेरी समझ में यह काली मिट्टी लाल और पीली मिट्टी का ही बनस्पतिक प्रक्षेप से रूपान्तर है। अक्सर देखा गया है कि काली मिट्टी के क्षेत्र को खोदने पर पहिले पीली फिर लाल मिट्टी पाई जाती है।

यहाँ पर यदा कदा एक प्रकार का गहरा कत्थई पत्थर बहुत छोटे छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है जिसको यहां के निवासी चलि बहा कहते हैं। ऐसा ही पत्थर मिर्जापुर के टाँड़ा फाल्स के निकट बहुतायत से पाया जाता है। वहाँ लाल मिट्टी भी पाई जाती है संभवत: यह यहाँ के काले ग्रेनाइट (Granite) के नीचे परत (Strata) का है।

देश-दर्शन

अब तक इस पुस्तक-माला में लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिश्र भाग १, मिश्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैंड, रूस, थाई देश (स्याम), बल्गेरिया, अल्सेस-लारेन, काश्मीर और जापान आदि अंक निकल चुके हैं। आगे भी एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होती रहेगी। पुस्तक चित्रों और नकशों से खूब सुसज्जित रहती है और निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जाती है। काग़ज, कवर छपाई-सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ है। फिर भी लगभग सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) है। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) है। इस पुस्तक-माला (देश-दर्शन) के ग्राहक बन कर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने का श्रेय लीजिये। आशा है लौटती डाक से ही अपना आर्डर भजने की कृपा करेंगे।

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरुप में भोजन सामग्री और राजनैतिक नियंत्रण

भोजन मनुष्य की मुख्य तथा आवश्यक मांग की पूर्ति करता है। इसलिये उसकी गणना नागरिक अर्थशास्त्र में है।

आजकल भोजन सामग्री का महत्व भी अधिक हो गया है। भोजन नागरिक लोगों की बृद्धि और नाश का कारण बन रहा है। बर्तमान अत्याचारी शासक का भोजन प्रधान साधन बन रहा है। भोजन सामग्री को युद्ध के कारण लोग भूमि के अन्दर गाड़ कर रखते हैं। भोजन बर्तमान समय में सैनिक भेद रहस्य बन गया है। कितनी भोजन सामग्री उत्पन्न हुई, कितनी खर्च हुई और कितनी निर्यात की गई इसका बहुत ठीक हिसाब रखना पड़ता है। बम्ब बर्षक विमानों से रक्षा करने के लिये भोजन सामग्री का बहुत उचित प्रबन्ध करना पड़ता है। इसी कारण योरुप के भोजन सामग्री का ठीक तौर पर अन्दाज़ लगाना भी कठिन हो रहा है।

बर्तमान सामूहिक युद्ध में पिट्रौल, लोहे, कोयले, धातु और खनिज सम्पत्ति की भांति ही अन्न भी आवश्यक वस्तु सिद्ध हो रहा है। भोजन सामग्री को लोगों ने भूमि के भीतर गाड़ रक्खा है जिससे उसकी बचत हो जावे। आजकल अन्न की उत्पत्ति, निर्यात, आयात और व्यय आदि सभी सैनिक भेद की बातें हो रही हैं और उसकी रक्षा भली भांति की जा रही है। इसी कारण योरुप को भोजन सामग्री का ठीक ठीक ब्योरा तयार करना कठिन है।

बर्तमान युद्ध में तेल, कोयला, विद्युत शक्ति, रेशे, धातु और खनिज सम्पत्ति की भांति भोजन सामग्री भी युद्ध-विजय के लिये परम आवश्यक है। सभी राष्ट्र जानते हैं कि भोजन सामग्री के सम्बन्ध में कृपणता करनी आवश्यक है।

जर्मनी के अन्दर जब से नाज़ी दल ने शक्ति ग्रहण की है तब से उसने रूस की भांति भोजन सामग्री को एक राजनैतिक अस्त्र बना लिया है। उसने भोजन सामग्री के द्वारा ही कृषकों तथा मजदूरों की सहानुभूति प्राप्त की और जर्मनी के कारखाने वाली नीति का पुनः संगठन किया जर्मन लोगों को आज्ञा दी गई कि वह भोजन सामग्री को अपने पास एकत्रित न करें नहीं तो उन्हें सजा दी जावेगी। भोजन सामग्री पर अधिकार प्राप्त करने के ही कारण नाज़ी संस्था ने प्रत्येक जर्मन व्यक्ति के मुँह पर लगाम लगा दी है।

जर्मन राइक ने ६ वर्ष के शान्तिमय तथा २० मास के युद्ध समय में कितनी ही घोषणाएं तथा कानून जारी किये और भोजन सामग्री को राजनैतिक शस्त्र होने का महत्व दिया है।

आज यह बात निसंदेह ही सत्य है कि कुछ वस्तुओं को छोड़ कर शेष सभी भोजन सामग्री जर्मन लोगों को प्राप्त है और जब तक योरुप पर उसका अधिकार रहेगा तब तक उसे भोजन सामग्री जर्मन लोगों को प्राप्त है और जब तक योरुप पर उसका अधिकार रहेगा तब तक उसे भोजन सामग्री भली भांति प्राप्त होती रहेगी।

१९३४ ई० में नाज़ी दल ने मुसोलनी की भांति जर्मनी में भोजन सामग्री उत्पन्न करने का आन्दोलन आरम्भ किया था। विदेश से भोजन सामग्री की आयात कम की गई और खेत के उत्पन्न हुये सामान का मूल्य बढ़ाया गया। जर्मनी का प्रत्येक व्यक्ति, किसान, मजदूर, अनाज के व्यापारी आदि सभी राइक के भोजन सामग्री वाले राज्य के सैनिक हो गये और उन पर फौजी कानून लगा दिया गया यदि उन्होंने सैनिक नियम को पालन करने से असमर्थता प्रकट की तो उन्हें अपने सिर की भेंट चढ़ानी पड़ी।

इतनी कठोर नीति का पालन केवल इस कारण किया गया कि लोग युद्ध के समय की कठिनाइयों का सामना कर सकें। जर्मनी के नेतागण जानते थे कि युद्ध के समय भोजन की कठिनाई होगी इसलिये उन्होंने पहले से ही लोगों को प्रकृतिक रूप से भोजन सामग्री को उचित ढंग से प्रयोग करने तथा अन्न के स्थान पर दूसरी वस्तु प्रयोग कर के भूक मिटाने की सलाह दी। जर्मनी में भोजन सम्बन्धी नियम बनाया गया और जब प्रथम सितम्बर १९३९ ई० को पोलैंड का युद्ध छिड़ता जर्मन प्रजा को भोजन सम्बन्धी कार्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांटा गया। कपड़े आदि के सम्बन्ध में रैनर्निंग (खूराक सम्बन्धी) प्रबन्ध पहले ही हो चुका था। पशुओं के खूराक के सम्बन्ध में भी यह प्रबन्ध पहले ही किया जा चुका था। जर्मनी के अन्दर खूराक आदि नियत करने की यदि नीति ग्रहण की जाती है तो उसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि वह उस वस्तु की कमी है बरन् यहां की वह इँजीनियरिंग अथवा राजनैतिक विज्ञान है।

१० दिसम्बर १९४० ई० को हिटलर ने मजदूरों के मध्य भाषण देते हुये कहा कि हम इस बात को नहीं करना चाहते कि एक मनुष्य को भोजन अधिक मिले और दूसरे को कम मिले हम चाहते हैं कि सभी लोगों को भोजन मिले परन्तु हम पहले लड़ने वाले सैनिकों को फिर चतुर काम करने वाले और मजदूरों को उसके बाद बेकार लोगों और बूढ़े तथा बीमारों को और सब से अंत में कारागार वासी कनसनट्रेशन कैम्प वालों को और यहूदियों को भोजन देना चाहते हैं। भोजन वाले कार्डों पर प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति की उपयोगिता का वर्णन किया रहता है।

अच्छी खूराक के कार्ड काम के अनुसार लोगों को दिये जाते हैं। यदि साधारण मजदूर अपने कार्य में कौशलता प्राप्त कर लेता है तो उसे और अच्छी खूराक का कार्ड मिल जाता है। इसी प्रकार उन्नति होती जाती है। खूराक कार्ड का तात्पर्य यह होता है कि जो व्यक्ति जिस प्रकार का कार्य करता है उसको वैसा ही अच्छा भोजन स्वस्थ रखने के लिये दिया जाता है।

भोजन सामग्री कभी कमी और कभी अधिकता भी कर दी जाती है। कभी कभी जब स्टाक में काफी भोजन रहता है तो भी कम खूराक दी जाती है और कभी स्टाक में कमी होने पर भी अधिक अच्छा भोजन दिया जाता है। लोगों को भोग विलासता की भोजन सामिग्री नहीं दी जाती उन्हें साधारण भोजन खाने की आदत डाली जाती है जिससे संकट काल में उन्हें अधिक कष्ट न हो। फ्रांस के पतन के पश्चात् जर्मनी में मामूली आराम की वस्तुएं तथा भोजन सामग्री लोगों को बाँटी गई थी जिससे प्रजा को खुशी तथा उत्साह की वृद्धि होवे।

गेस्टापो (गुप्त पुलिस) जर्मनी का प्रचार मन्त्री मंडल है। यह मंत्री मंडल जब कभी मौका देखता है तो साधारण जनता का पूंजीपतिवर्ग के विरुद्ध कोप दिखाने के लिये एक समय के भोजन का प्रचार आरम्भ कर देता है या प्रजा सम्बन्धी भोजनालय की योजना का प्रचार करता है। वहां भोजन का एकत्रित करना पाप है यदि इस सम्बन्ध में सख्ती से काम लिया गया तो प्राण दण्ड मिलता है और अगर सख्ती न की गई और छोटा मामला हुआ तो कनसनट्रेशन कैम्प या कारागार में बन्द कर दिया जाता है।

तटस्थ राष्ट्रों के अन्दर राजनैतिक विरोधियों को भोजन सामग्री के अपने अधिकार में करने के ही कारण नाज़ी जर्मनी ने नीचा दिखाया है। भोजन सामग्री पर अधिकार करने के कारण ही नाज़ीवाद ने अपने देश भक्तों का सामना किया है। अन्न, चीनी, अँडा, दूध, मांस, फल और साग आदि सभी वस्तुओं पर नाज़ी दल ने अपना अधिकार जमा रक्खा है।

नाज़ी दल कृषक देशों पर पहले अपना आर्थिक प्रभुत्व जमाता है उसके बाद उसके ऊपर सैनिक तथा राजनैतिक प्रभुत्व डालता है। नाज़ी दल का भोजन सामग्री पर अधिकार जमाने का एक मुख्य नियम यह है कि जो कुछ विदेश से ८ करोड़ जर्मन निवासियों के लिये भोजन सामग्री मंगाई जाती है वह केवल एक व्यक्ति के अधिकार में कर दी जाती है। वह अकेला मनुष्य भोजन सामग्री के लिये अच्छे मूल्य देने के लिये तयार हो जाता है और पत्रों तथा रैडियो द्वारा प्रचार कर दिया जाता है। उसके दूत कार्य करते रहते हैं। जब किसान देखते हैं कि उन्हें राजनैतिक सुविधाएँ भी प्राप्त हैं और साथ ही साथ उनके सामान का अच्छा दाम भी मिल रहा है तो वह उसे बेचने के लिये बाध्य हो जाते हैं। जहाँ एक बार कोई राष्ट्र इस प्रकार जर्मनी के अधिकार में आ गया बस फिर क्या उसका सर्व नाश हो गया।

जर्मन चतुर विशारद व्यापारी लोग जिस देश के भोजन सामग्री पर दाँत लगाते हैं। वह पहले उनके भीतरी बाहरी सभी बातों का पता लगाते हैं और फिर उनके सामान का अधिक से अधिक दाम लगाते हैं तथा उन्हें पेशगी और कम व्याज पर रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी देते हैं। उनके साथ संधियाँ और इकरारनमे लिखते हैं और अन्त में उन पर कूटनीति और सेना का प्रभाव डालते हैं। फिर वे अपना प्रभाव जमाही लेते हैं।

१९३३ और १९३९ ई० के मध्य जर्मनी ने इसी प्रकार बल्गेरिया, यूनान, यूगोस्लाविया, रूमानिया हँगरी और टर्की का समान अपने हाथ में कर लिये। इन देशों को अधिकतर निर्यात जर्मनी के साथ होता है।

जब से युद्ध आरम्भ हुआ है तब से तटस्थ तथा जीते हुये राष्ट्रों के अन्दर जर्मनी ने अपनी भांति भांति की योजनाओं से काम लिया है। उसकी चाल यह है कि वह अपने मार्क (जर्मन सिक्का) और दूसरे देश के मुद्र में मूल्य सम्बन्धी सम्बन्ध पैदा कर के मूल्य नियत कर देता है और उसके बाद भोजन सामग्री का मूल्य लगाता है। हंगरी, बल्गेरिया आदि तटस्थ राष्ट्र जिनके यहां खर्च से अधिक भोजन सामग्री होती है उन्होंने अपने यहां भोजन सम्बन्धी नीति जारी कर दी है जिससे वह अधिक से अधिक बची हुई भोजन सामग्री जर्मनी को भेज सकें। इस प्रकार योरुप के चाहे जिस कृषक देश में हम जावें परन्तु हमें शायद ही मनमानी भोजन मिले। यदि भोजन सामग्री पर जर्मनी से रोक लग जाती है तो नगर निवासी ही नहीं वरन् देहात के किसानों को भी भोजन की कमी पड़ जाती है।

सभी बालकन राष्ट्र जर्मन प्रभुत्व में हैं वहां की बढ़ी हुई भोजन सामग्री जर्मनी को भेजी जाती है। स्वीडन और स्विटज़रलैंड दोनों देशों की स्थति सैनिक दृष्टि से बड़े मार्के की है यद्यपि सैनिक दृष्टि से दोनों ही जर्मनी की दाम पर निर्भर करते हैं। दोनों देशों में भोजन की कमी है। स्विटज़रलैंड यदि चाहे तो अपने यहाँ भोजन सामग्री उत्पन्न करने का प्रबन्ध कर सकता है। स्वीडन में कारखानों के सिवा कच्चा सामान बहुत है। वह जर्मनी के कारखानों का तयार सामान खरीदता है। इसी कारण से नार्वे से वहां कुछ भोजन सामग्री जाती है। स्विटज़रलैंड और स्वीडन तटस्थ होने के कारण अँग्रेजों से भी सामान खरीदते हैं जर्मनी उन्हें आयात की आज्ञा प्रदान करता है।

यदि जर्मनी अपनी भोजन सामग्री नीति का अनुसरण दक्षिणी अमरीका के राष्ट्रों में कमी करे तो उसे अधिकांश बातों में सफलता प्राप्त होने की सम्भावना है। वह इस नीति को कनैडा, आस्ट्रेलिया के विरुद्ध भी चला सकता है यदि हिटलर का ब्रिटिश द्वीप समूह पर अधिकार हो जावे तो उसे योरुप की साधारण खरीद (लगभग ६ अरब रुपये) पर भी अधिकार हो जावेगा। उसके बाद जर्मनी सभी राष्ट्रों पर प्रभुत्व जमा लेगा और संयुक्त राष्ट्र अमरीका का शत्रु बन बैठेगा। जर्मनी को यह सभी कार्य करने में कोई लड़ाई नहीं लड़नी पड़ेगी।

विजय किये हुये देशों में भोजन युद्ध कौशल पूर्ण रूप से लागू किया जा रहा है। युद्ध के पहले मध्यवर्ती पोलैंड का खपत से बचा हुआ भोजन का सामान बाहर जाता था। वहाँ पर उपज बहुत अच्छी होती है। आज वहाँ की दशा बड़ी शोचनीय है। जर्मन लोग पोलिश लोगों के साथ जो द्वेश भाव रखते हैं उसका बुरी तरह से प्रयोग वहाँ पर हो रहा है। वह पोलैण्ड को राष्ट्रीयता का सम्पूर्ण रूप से अंत कर देना चाहते हैं। मध्यवर्ती पोलैंड में जर्मनी में मिलाये हुये पश्चिमी पोलैण्ड से अधिक निर्दयता का व्यवहार हो रहा है। वहाँ पर भोजन समस्या बड़ी टेढ़ी हो रही है। वहां पर आलू की अधिक उपज होने तथा अमरीकन सहायता के कारण लोगों का किसी न किसी भांति निर्वाह हो रहा है।

चेकोस्लोवेकिया में भोजन सामग्री की वही दशा है जो राइक तथा आस्ट्रिया के अन्दर है। नार्वे के लिये यह बड़ा ही संकट का समय है क्योंकि ब्लाकेड (घेरे) के कारण वहाँ पर नाज साग चीनी, चर्बी, और फल आदि वस्तुएं बहुत कम पहुँच पाती हैं। साधारणता शान्ति समय में नार्वे से २ लाख टन (लगभग ५६ लाख मन) चर्बी, ८५ प्रतिशत वहाँ की मछली और ६५ प्रतिशत वहाँ का आलू निर्यात किया गया था अब भी वहाँ इतनी मछली पकड़ी जाती हैं कि रोजाना भरी गाड़ियाँ जर्मनी जाया करती हैं।

अधिकार किये हुये राष्ट्रों में डेनमार्क की दशा सब से अच्छी है। डेन लोग अब भी अपनी सीमा पर सख्ती के साथ कर लगाये हुये हैं परन्तु सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहारिक कार्यों के लिये डेनमार्क राइक के अधिकार में है। वहाँ पर मनुष्य तथा जानवरों की खुराक का नियँत्रण है। १९४० ई० में मुर्गियों और सुवरों के बच्चों की संख्या आधी कर दी गई थी। गायों को छोड़ कर और दूसरे पशुओं की संख्या भी कम कर दी गई थी। डेनमार्क का सभी मक्खन, पनीर, सुअर का मांस अँडे और जानवर जो कुछ भी बचे रहते हैं सभी जर्मनी भेज दिये जाते हैं। जर्मनी ने डेनमार्क पर साक्षात रूप में प्रभाव नहीं डाला है वरन् उसने भोजन सामग्री का मूल्य इतना बढ़ा रक्खा है कि वहां का सभी सामान सीधे जर्मनी चला जाता है। डेनमार्क को अपने यहां के निर्यात में काफी लाभ हो रहा है।

डेन लोगों की भांति डच लोगों की दशा भी अच्छी है। यद्यपि डेन लोगों की भांति डच लोगों का व्यापार भी अँग्रेजों के साथ बन्द हो गया है। हालैंड का साग-पात, मक्खन, पनीर सभी जर्मनी चला जाता है। डेनमार्क की भांति ही हालैंड में भी जर्मन लोग वस्तुओं का मूल्य बढ़ाने की नीति का अनुसरण कर रहे हैं।

बेल्जियम देश योरुप में सब से अधिक घना बसा है। स्विटजरलैंड के सिवा यह देश योरुप में सब से अधिक रोजगारी है। अधिकार किये हुये देशों में इसकी दशा भी बड़ी शोचनीय है। फिर भी बेल्जियम निवासियों और पोल लोगों के जर्मन व्यवहार में बड़ा अन्तर है। बेल्जियम पर अधिकार प्राप्त करने के पश्चात् शीघ्र ही जर्मन अफसरों ने बेल्जियम अफसरों के साथ उत्पत्ति खपत और सामान भेजने तथा मंगाने आदि के कार्यों में मिल कर कार्य आरम्भ कर दिया है। बेल्जियम में चर्बी, द्रव।दूध, नाज और आलू की कमी है। परन्तु वहां पर चीनी कुछ दूध और साग तरकारी आवश्य है।

नार्वे डेनमार्क और हालैण्ड में रोटी के सम्बन्ध में नियंत्रण है और प्रति व्यक्ति प्रति सप्ताह साधारण रूप से ९०७८० और ८९ औंस रोटी दी जाती है। बेल्जियम में प्रति सप्ताह केवल ५६ औंस रोटी दी जाती है। कारखाने में काम करने वालों को ११२ औंस भोजन प्रति सप्ताह दिया जाता है। कुछ भोजन सामग्री बेल्जियम को ब्रिटिश ब्लॉकेड होकर पहुँचा परन्तु अधिकांश भाग का प्रबन्ध स्वयम् जर्मन को करना पड़ता है।

अधिकार किये हुये फ्रान्स में भोजन सामग्री के ऊपर जर्मनी का अधिकार है परन्तु वहां की दशा बेल्जियम से अच्छी है परन्तु वहाँ की रोटी प्रति सप्ताह का नियन्त्रण है। अधिकार किये फ्रान्स में गेहूँ, शीरा और दूध ब्रिटिश वायुयानों की बम वर्षा होती रहती है और यहीं पर इंगलैण्ड की वर्तमान लड़ाई हो रही है।

बेल्जियम हालैण्ड और अधिकार किये हुये फ्रान्स में बेकारी फैली हुई है। जर्मन कारखाने जोरों के साथ चल रहे हैं और जर्मन सैनिक समस्त योरुप में फैले हुये हैं। वहां पर चतुर कारखाने में काम करने वालों की आवश्यकता है इसलिये दूसरे देशों से काम करने वाले बुलाये जा रहे हैं यह काम करने वाले लोग हालैंड, बेल्जियम, फ्रांस और स्कैंडीनेविया के देशों से चतुर मजदूर जर्मनी के कारखानों में काम करने के लिये ले जाये जाते हैं। देशों के मज़दूर बड़े परिश्रमी होते हैं। इन मजदूरों को भोजन की लालच दी जाती है। जर्मन एजेन्सियां डच बेल्जियम और फ्रान्स के काम करने वालों को काम देते हैं यदि मजदूर लोग काम करने से इन्कार करते हैं तो उनका नियंत्रण कार्ड रद्द कर दिया जाता है कभी कभी नियंत्रण कार्ड छीन भी लिया जाता है और उसके बाद उन्हें पता दिया जाता है कि अमुक जर्मन कारखाने में काफी भोजन प्राप्त है।

फ्राँस के जिस भाग पर जर्मन अधिकार नहीं है। वहाँ की दशा भी बहुत खराब है। वहाँ पर भागे हुये लोगों ने बहुत बड़ी संख्या में जाकर शरण ली है। वहाँ भी खाने की बहुत कमी है। वहां पर भोजन नियंत्रण नीति भली भाँति चालू नहीं है फिर भी ७४ औंस प्रति सप्ताह रोटी दिये का नियंत्रण कार्य हो रहा है।

विची सरकार के आधीन जो प्रान्त है वहाँ शीत काल में साग, तरकारी, फल उत्पन्न किये जाते हैं और मदिरा बनाई जाती है। वहाँ पर नाज और चर्बी की कमी है। वहां गेहूँ उत्तरी फ्राँस से आता था और देशों से ५ या ६ लाख टन सालाना चर्बी आयात की जाती थी। अब यह सामान अप्राप्त हैं। पेताँ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्क ४]

को बाजी चल रही है।

हिटलर के मध्य शतरंज जर्मन लोग अधिकार न किये हुये फ्रांस की भोजन स्थिति सुधारने के लिये तयार नहीं हैं। फ्रांसीसी लोगों को सूचना दी गई है कि जर्मनी ने उन्हें २८ लाख मन आलू जर्मनी से भेजने का बचन दिया है।

समस्त अधिकार किये प्रांतों को जर्मनी की सहायता करनी पड़ती है। जर्मनी को युद्ध कैदियों तथा विदेशी मजदूरों को भोजन देना पड़ता है। जर्मन सैनिकों को खूब भोजन मिलता है, मजदूरों को बहुत कम भोजन प्राप्त है। जर्मन सैनिक नियंत्रण किये हुये भोजन को खरीद कर अपने घर भेजा करते हैं जिससे भोजन की और भी अधिक कमी हो जाती है।

इटली में नियंत्रण नियम लागू नहीं है। जर्मनी को अपने यहाँ निमन्त्रण नीति चलाने में ६ साल लगे थे। वह इस नीति को समस्त अधिकार किये देशों में चलाना चाहता है। परन्तु उसमें बड़ी गड़बड़ी पड़ रही है इसी कारण व्यापार में बहुत खराबी पड़ गई है। सामान भेजने और लगाने में भी बड़ी गड़बड़ी रहा करती है इसी कारण जितनी भोजन सामग्री योरुप में प्राप्त है उसका भली भांति बँटवारा समस्त योरुप में नहीं हो रहा है।

जितने ही समय तक नाजी अफसर अधिकार किये हुए योरुप में शासन करें उतना ही अधिक वह शान्ति स्थापित करने में सफल होंगे। क्योंकि जर्मन अफसर योरुपीय प्रजा को कम भोजन देने और बिल्कुल भूखे मार डालने की धमकी देते हैं। अनाज के बड़े बड़े गोदामों की कुंजी जर्मन कमांडरों (सेनापतियों) के हाथ में है। यह कमांडर युद्ध कला कौशल के अनुसार भोजन सामग्री चालू अथवा बन्द करते हैं।

बलकान और डैनूब के बेसिन में अधिक उपज अबकी साल भी नहीं हुई है। हंगरी में अवश्य ही तेलहन की उपज अच्छी हुई है। जर्मनी के अन्दर आधुनिक ढंग की नई कलों से काम होने से खेती के अन्दर अच्छी ऊपज हुई है। उत्तरी, मध्यवर्ती और दक्षिणी योरुप में भोजन सामग्री की उपज अच्छी हुई है। वहाँ ईख, आलू आदि की उपज बढ़ा दी गई है।

कारखाना के बन्द हो जाने और सेना के अशस्त्र हो जाने से खेती करने के लिये काफी संख्या में मजदूर प्राप्त हैं। सेना के घोड़ों से हल जोतने का काम लिया जाता है। जहां घोड़े नहीं हैं वहां बैल से हल जोता जाता है। खेतों में उपज के लिये जिस भांति की खाद की जरूरत पड़ती है वह भी जर्मनी के पास काफी मात्रा में है इसलिये योरुप में भोजन की उपज अवश्य ही बढ़ गई होगी।

नार्वे को छोड़ कर समस्त जर्मन अधिकार किये हुए देशों में खेती बढ़ाई गई है। बेल्जियम भी अपनी भोजन सामग्री की मांग स्वयं पूर्ण करने की आशा रखता है। बेल्जियम में गेहूँ की खेती की भूमि एक लाख ६० हजार हेक्टर से बढ़ा कर २ लाख ६० हजार और आलू की खेती की भूमि एक लाख ४७ हजार हेक्टर से बढ़ा कर २ लाख ७७ हजार कर दी गई है। एक हेक्टर भूमि लगभग २०० एकड़ भूमि के बराबर होती है।

योरुपीय नगरों के समीपवर्ती वाटिकाओं में काफी फल और तरकारी की उपज होती है। हालैण्ड, बेल्जियम, नार्वे और डेन्मार्क आदि देशों के पशुओं को अधिकांश संख्या में मार कर मांस भक्षण कर डाला गया है। परन्तु यह आशा की जाती है कि जैसे ही पशुओं का चारा अधिक मात्रा में तयार हो जावेगा सुअर तथा मुर्गी आदि की संख्या में शीघ्र ही बृद्धि हो जावेगी।

योरुप में आगे चल कर भोजन सामग्री की और अधिक कमी होने की सम्भावना कम है। योरुप से दूसरे महाद्वीपों से अन्न बहुत अधिक मात्रा में आयात नहीं किया जाता था। अन्न की उतनी कमी नहीं हुई है जितनी कमी चरबी की हुई है। योरुप में लगभग २ करोड़ ८० लाख मन चर्बी की कमी हो गई है। जर्मनी के पास वर्तमान समय में १८ करोड़ २० लाख मन नाज स्थायी है। यह नाज संकट के समय किसी भी देश को भूखों मरने से बचा सकता है। चर्बी की कमी रही चली आवेगी परन्तु गाय, सुअर, भेड़ आदि को यदि भोजन प्राप्त हो गया तो चर्बी की भी कमी किसी हद तक पूरी हो जावेगी। योरुप में लगभग १० करोड़ सुअर हैं। वह जिस भोजन को खाते हैं वह भोजन मनुष्य के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाने के काम में प्रयोग किया जा सकता है। जब योरुप के अन्दर लोगों के सामने भूकों मरने का प्रश्न आवेगा तो मरने के पहले अपने यहाँ के समस्त पशुओं को मार कर खा डालेंगे। बर्तमान स्थिति में मालूम होता है कि सबसे अधिक इङ्गलैण्ड को भोजन सामग्री की कमी उठानी पड़ेगी क्योंकि समुद्र में उसके बहुत अधिक जहाज डूब रहे।

नाजी लोग अपने को योरुप के भोजन सामग्री का मालिक समझते हैं। ३० सितम्बर १९४० ई० को जर्मनी के कृषक यंत्र वाल्टर डारे ने कहा था कि योरुप के अधिकार किये प्रान्तों में भोजन की कमी न होगी। विदेशी लोग यह गलत अन्दाज लगा रहे हैं कि योरुप में भोजन की कमी हैं। ७ जनवरी सन् १९४१ ई० को डाक्टर एबेर हार्ड वान स्टोहरर जर्मनी राजदूत ने मैड्रिड में जोर देकर कहा था कि स्पेन को संयुक्तराष्ट्र अमरीका से ३५ करोड़ रुपया कर्ज लेने की आवश्यकता है उसे जर्नी पूरा कर सकता है।

फरवरी में रूस ने नार्वे को वहाँ की अलमुनियम के बदले में २ करोड़ ८० लाख मन रूसी अनाज देने का बचन दिया इस पर जर्मनी ने वाधा उत्पन्न करके कहा कि यदि कोई सहायता रूप में योरुप की सहायता करना चाहता है जो जर्मनी को रुकावट डालने की जरूरत नहीं है वरन् वह सहायता साधारण होनी चाहिये राजनैतिक नहीं। जर्मनी योरुपीय मामलों को (भोजन सहित) अपना कार्य समझता है जर्मन नवयुग का यह मुख्य उद्देश्य है कि जर्मनी अपने अधिकार वाले राष्ट्रों की देख भाल तथा सहायता प्रत्येक भाँति करे।

गत महायुद्ध के विजय करने में भोजन सामग्री ने अवश्य ही एक बड़ा भाग लिया था परन्तु भोजन सामग्री का प्रश्न ही केवल न था उसके साथ साथ और दूसरे कारण भी थे। ब्रिटिश ब्लाकेड (घेरे) के कारण जर्मनी को मशीन तथा भोजन की कमी नहीं हो सकती। यह वस्तुयें उसे योरुप में काफी प्राप्त हैं। नाजी संस्था को पराजय देने के लिये उससे अधिक अच्छे अस्त्र शस्त्र; वीरता, शक्ति और उससे अच्छी कूटनीति की आवश्यकता है।

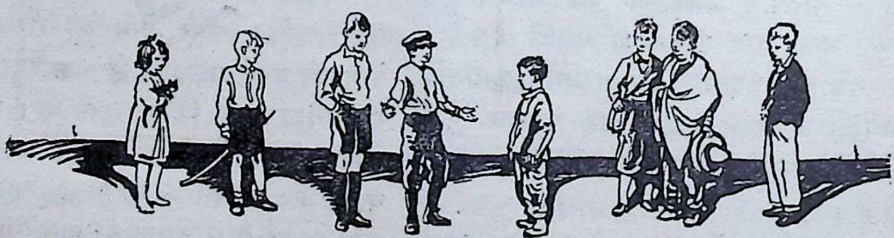

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्बेनिया

अल्बानी लोग इलीरियन और एपीरोट्स जातियों की संतान हैं। पूर्व ऐतिहासिक काल में इलीरियन और एपीरोट्स जातियाँ बालकन प्रायद्वीप के पश्चिमी और ट्रीस्टे से अर्ता तक की खाड़ी तक बसी हुई थीं। अब उन जातियों को घेग्स और तोस्कन्स कहते हैं।

वर्तमान अल्बेनिया में प्राचीन अल्बेनिया का बहुत कम भाग सम्मिलित है। अल्बेनिया के पड़ोसी राष्ट्रों ने उसकी भूमि १९१२-१३ और १९१४-१८ ई० के युद्ध में छीन लिया। यूनान और सर्विया में उसके अधिकांश प्रान्त मिला दिये गये।

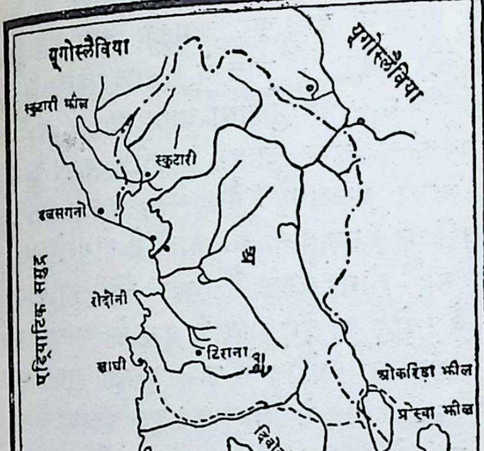

अल्बेनिया एक स्वतंत्र राज्य है। यह राज्य उत्तर की ओर स्कुतारी से दक्षिण की ओर बुटिरिंटो तक फैला हुआ है। इसके अन्दर अधिकांश पर्वतीय प्रदेश स्थित है। नदियां पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हैं। तटीय मैदान समतल तथा उपजाऊ हैं। कछारी भूमि नदियों की लाई हुई मिट्टी से बनी है। नदियां जाड़े के दिनों की बरफ के पिघलने के कारण पानी से उबल पड़ती हैं और गरमी के दिनों में सूख जाती हैं। जब अल्बेनिया तुर्की शासन में था तो नदियों के अन्दर बीच बीच में मिट्टी पड़ जाती थी जिससे जहाजों का चलना दुस्तर हो जाता था। घाट बहुत उथले हो जाते थे। इटली ने दुराज़ो तथा बलोना के बन्दरगाहों पर बम्ब वर्षा किया है। उन्हें बन्दरगाह के बनाने में बड़ा परिश्रम करना पड़ा होगा। नदी के मुहाने पर कीचड़ जम जाने के कारण समीपवर्ती

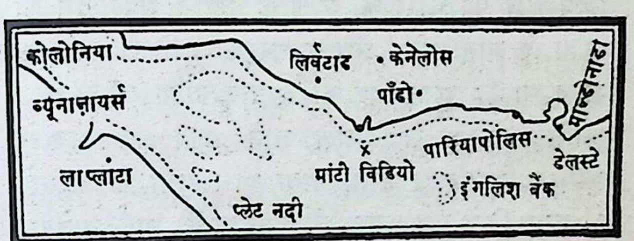

जर्मन जहाज़ (ग्राफस्पी) की जल समाधि

जलवायु खराब हो जाती है और गरमी के दिनों में मलेरिया ज्वर आता है जिससे वहां रहना कठिन हो जाता है। जाड़े के दिनों में वहां अच्छे खेत तथा घास के मैदान हो जाते हैं।

पहाड़ों पर रहने वाली जातियों के पास जाड़े की भूमि तथा मैदान होते हैं। पतझड़ और बसन्त ऋतु में और जार्जेज साधु के दिन हज़ारों पुरुष, स्त्रियां और बच्चे अपने पशुओं के झुण्ड लेकर पहाड़ों पर निवास करने के लिये जाते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक जाति के पास भूमि का एक टुकड़ा होता था जिसकी सीमा भली भांति नियत रहती थी। तुर्क लोगों के शासन काल में इन जातियों को प्रान्तीय स्वतंत्रता प्राप्त थी। प्रत्येक जाति का शासन वहाँ के बूढ़े सभासदों की सभा के हाथ में था जिसे पेलाकी कहते थे। घर का मालिक घर का बूढ़ा होता था। वही समस्त कुटुम्ब का मालिक माना जाता था। कुटुम्ब के सभी लोग एक घर में अथवा घरों के एक समूह में रहा करते थे। बूढ़ों की सभा बिना लिखे हुये क़ानून द्वारा शासन करती थी। चोरी के लिये चोर को चोरी के माल के दुगुने माल देने की सज़ा दी जाती थी। गिरजा घर की भूमि से चोरी के माल का १० गुना चोर को वापस करना पड़ता था। जाति के अन्दर से निकाले जाने वाली सज़ा सब से अधिक कड़ा दण्ड माना जाता था। हत्या के मामले में हत्या किये गये मनुष्य के समीपवर्ती मर्द नातेदार को उसका बदला चुकाने की आज्ञा थी। बूढ़ों को घास के मैदान, बन और पानी के प्रबन्ध करने का भी अधिकार प्राप्त था। यह सभी वस्तुएं प्रत्येक घर में अलग अलग बटी थीं और प्रत्येक घर को केवल अपनी वस्तु के प्रबन्ध करने तथा प्रयोग करने का अधिकार प्राप्त था।

यह पहाड़ी जातियाँ पहाड़ों पर वृक्षों के तनों की बन नालियों द्वारा बड़ी चतुरता से पानी एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाती थीं। इसी प्रकार एक घाटी को पार करके दूसरी घाटी को पानी ले जाया जाता था। इन्हीं नालियों से छोटी नालियां बनाकर छोटे खेतों की सिंचाई होती थी जहां पर मक्का, प्याज तथा करमकल्ला आदि की उपज की जाती थी। वृक्षों के तनों वाली नालियों से पर्वतों के ऊपर से नीचे पानी गिराकर पनचक्कियाँ चलाई जाती थीं। निजी पनचक्की का मालिक आटा पीसने के बदले में कुछ आटा ले लिया करता था। किसी समय में यह पनचक्कियाँ लगभग समस्त योरुप में प्रचलित थीं।

लोग उस समय अपने घर स्थानीय पत्थर के बनाते थे। अल्बेनिया के उत्तरी पर्वतों का अधिकांश भाग चूने के पत्थर का है। धनी लोगों के घरों की दीवारें बड़ी मोटी बनाई जाती थीं और कभी कभी छत भी शिलाओं से पाट दी जाती थी। छत के नीचे सामान रखने का कमरा, स्तबल, हल आदि सामान रक्खा जाता था। ऊपर कुटुम्ब के लोग रहा करते थे। वह कभी कभी एक बड़े कमरे में और कभी कभी दो तीन कमरों में रहते थे। भोजन बनाने के लिये खुली भट्टी बनाई जाती थी। धुआं दीवार के एक छिद्र द्वारा बाहर जाता था। लकड़ी जलाने के बाद आग वहीं ढक दी जाती थी और थोड़ी सी सूखी पत्ती डाल कर अग्नि पुनः प्रज्वलित कर ली जाती थी। राख को कपड़ा साफ करने के लिये बड़े यत्न के साथ इकट्ठा कर लेते थे। राख के अन्दर कपड़े पानी में डाल कर उबालने तथा पछाड़ने से कपड़े खूब साफ हो जाते थे। साफ करने के बाद कपड़ों को घास पर सुखाया जाता था।

पर्वतों के ऊपर जीवन व्यतीत करने के लिये मुख्य उद्यम गल्लाबानी है। भेड़, बकरी और छोटे जानवरों को गल्लाबानी की जाती है। गल्लेबानी का काम मर्द लोग करते हैं वही खेती का काम भी करते हैं। भेड़ का दूध गाय के दूध से अधिक पसन्द किया जाता था। पहाड़ के ऊपर दूध ही मुख्य भोजन होता था। कड़ाहे में डाल कर दूध पकाया जाता था और उसी से निकाल कर वह पान किया जाता था। कच्चा दूध बहुत कम प्रयोग में लाया जाता था। दही और मट्ठा को लोग बहुत पसन्द करते थे। दही के साथ मकई की रोटी मिला कर बड़े चाव के साथ लोग भोजन करते थे। त्योहारों के दिन मांस का प्रयोग किया जाता था प्रति दिन मांस के प्रयोग करने में बड़ा व्यय लगता था। स्कुतारी में साप्ताहिक बाज़ार लगता था जहां लोग दो तीन दिन की यात्रा करके अपनी भेड़ बकरी ले कर जाते थे और उन्हें बदल कर सामान ले आते थे या बेच कर नक़द रुपया लाते थे। पर्वतों पर आवश्यकतानुसार मक्का की उपज नहीं होती थी इसलिये मक्का को खरीदना पड़ता था। पहाड़ों से नगरों को लकड़ी तथा चारकोल प्राप्त होता था।

स्त्रियों का काम बहुत भारी था उन्हें गरम स्थान में गरम पत्थर के ऊपर रोटी बनानी पड़ती थी। स्त्रियां चार बजे प्रातःकाल रोटी बनाना आरम्भ करती थीं। स्त्रियों को लकड़ी और पानी बन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाना पड़ता था, पालतू पक्षियों की देख भाल करनी पड़ती थी, भेड़ बकरियों को दुहना पड़ता था, मट्ठा तथा पनीर बनाना पड़ता था और मर्द तथा स्त्रियों के लिये ऊन कातना तथा कपड़े तयार करना पड़ता था। जो स्त्री दूध दुहने या रोटी बनाने का काम नहीं करती थी उसे लगातार ऊन कातने का काम करना पड़ता था। करघा तथा ताना बाना लकड़ी के बनाये जाते थे। वह किसी स्थान पर भी लगाये जा सकते थे। बुनाई होने के बाद कपड़ा नदी में ला कर भिगोया जाता था और मुंगरी या हथौड़े से पीट कर पछारा जाता था। स्त्रियाँ मर्दों के कार्य में भी हाथ बटाती थीं।

नगर के समीप वाले मैदान बड़े उपजाऊ हैं। वहां पर भांति भांति की तरकारी उगाई जाती है। आलू, टमाटर, सेम, प्याज, करमकल्ला आदि तरकारियां उगाई जाती हैं। यह सभी तरकारियाँ बाजार में बिकने जाती हैं। निचले ढालों पर कुछ फल होते हैं। अल्बेनिया में १९१२ ई० के पहले बहुत से सुन्दर जैतून की वाटिकाएं थीं परन्तु १९१२ के बलकान युद्ध में उन्हें लोगों ने नष्ट कर डाला। अल्बेनिया में अंजीर और चेरी बहुत अच्छे होते हैं। वहां अँगूर भी अच्छे होते हैं जिससे वहां की स्थानीय मदिरा तयार की जाती है।

तटीय मैदानों की समस्त भूमि बड़ी उपजाऊ है परन्तु उन मैदानों की अधिकांश भूमि धनी लोगों के पास है जो उसमें खेती करने की परवाह नहीं करते हैं। अल्बेनिया के भूमिपतियों का काम तुर्की ढङ्ग पर चलता है। भूमिपति को मजदूर के लिये खेती के सभी औजार तथा रहने के लिये घर का प्रबन्ध करना पड़ता है और मजदूर को खेती का समस्त काम करना पड़ता है। उसे किसी प्रकार का वेतन नहीं दिया जाता है। उसे उपज का केवल कुछ भाग दिया जाता है। बहुत से भूमिपति तो इतने धनी हो गये हैं कि उन्होंने अपनी समस्त भूमि में खेती करना उचित नहीं समझा। इस प्रकार अधिक अच्छी भूमि बेकार जाती थी। अल्बेनिया के किसान छोटे छोटे जमीन के टुकड़ों की मांग कर रहे थे।

पहले अल्बेनिया में बहुत रेशम होता था और इटली से लोग स्कुतारी रेशम खरीदने के लिये आते थे। उन्नीसवीं सदी में दक्षिणी योरुप में कीड़ों की बीमारी पैदा हुई जिससे रेशम के कीड़ों का सत्यानाश हो गया और उन्हीं के साथ साथ रेशम का रोजगार भी जाता रहा। अब वहां पर घरेलू काम के लिये रेशम पैदा होता है। रेशमी कपड़ों पर सुनहरे तार के बेल बूटे बनाये जाते थे जिसे स्त्रियां बड़े चाव से प्रयोग करती थीं। चांदी का काम भी वहां बहुत अच्छा बनाया जाता था बन्दूक तथा पिस्तौल की नली चांदी की बनाई जाती थी। अब मशीन के बने हुये सस्ते सामान के आगे हाथ के बने हुये सामान को लोग कम पसन्द करते हैं। इसलिये अल्बेनिया का दस्तकारी को भारी धक्का पहुँच रहा है।

अल्बेनिया के नगरों के अधिकांश घर पत्थर के बनाये जाते थे। वह दोतल्ले से अधिक ऊँचे नहीं बनाये जाते थे। उनकी छत लाल खपड़ों की बनाई जाती थी। घर भीतर की ओर बहुत स्वच्छ रहते थे। हाथ की बनी दरियां दीवारों आदि पर लटकती दिखाई पड़ती हैं। वर्षा काल में गलियों में बड़ी कीचड़ रहती है इसलिये लोग अपने जूते द्वार पर उतार कर भीतर प्रवेश करते हैं। घरों के अन्दर सोने के लिये अलग कमरे नहीं होते हैं। जब सोने का समय आता है तो चटाइयां निकाल कर फर्श पर बिछा दी जाती हैं। दरियों के ऊपर रुई का बना कम्बल बिछाया जाता है।

नगरों के अन्दर पहले भांति भांति की भोजन-सामग्री पाई जाती थी। स्वादिष्ट भोजन तयार किया जाता था। बतख, खरगोश, बनैले मुर्गी आदि चिड़ियाँ बाजारों में बिकने आती थीं और किसान उन्हें बड़े प्रेम के साथ खरीदते थे। पहाड़ों पर बनों में लकड़ी बहुत पाई जाती थी। इन बनों का अधिकांश भाग अजनबी जातियों ने नष्ट कर डाला है क्योंकि वह घास के मैदानों की लालच से बनों को काट डालते थे और वृक्षों के कट जाने से मिट्टी वृक्षों की जड़ों के साथ ही साथ पानी के बेग से बह गई और नङ्गी चट्टानें शेष रह गई हैं। जंगलों के उजड़ने का दूसरा कारण यह हुआ कि छोटे पौदों को भेड़ तथा बकरियों ने चर डाला फिर भी यदि शेष बन की रक्षा की जावे तो अवश्य उससे सदैव लाभ उठाया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ वर्षों पहले अल्बेनिया में सड़कें न थीं और छोटे घोड़े तथा खच्चर बार बरदारी का काम करते थे। छोटे छोटे बोझों को ढोने का काम स्त्रियाँ करती थीं। नदियों को लोग छोटी नावों पर बैठ कर पार किया करते थे।

अल्बेनिया में अच्छी तम्बाकू की उपज की जाती है। अधिकांश तम्बाकू इटली भेजी जाती थी। तम्बाकू के ऊपर किसी प्रकार का कर नहीं था इसलिये लोग अच्छा लाभ उठाते थे। सीमाक़ बृक्ष की जड़ चमड़ा रंगने तथा तयार करने के लिये प्रयोग किया जाता था। चमड़ा सीफक की जड़ और जैतून का तेल बाहर भेजा था। अलबेनिया में मुसलमान तथा ईसाई दोनों जातियां हैं।

उत्तर के ईसाई रोमन कैथलिक हैं अलबेनिया की कुछ जातियां मिश्रित हैं और उसमें ईसाई तथा मुसलमान दोनों जातियां पाई जाती है। अल्बेनिया निवासी राष्ट्रीयता को प्रथम स्थान तथा चर्च को द्वितीय स्थान देते हैं। उत्तरी निवासी आरम्भ-काल में ही ईसाई हुये और वह पैट्रिआर्क के शासन में हो गये। दक्षिण की ओर के इसाई पूर्वी सनातनी चर्च के मानने वाले हैं। भूमि के स्वतन्त्र हो जाने से वह लोग स्वतंत्र हो गये और उन्होंने यूनान के सनसनी चर्च से अलग होकर अपना अलग सनातनी गिरजाघर बनवाया और इस प्रकार अपने को यूनानी गिरजाघर के प्रभाव से बचाया।

जब अलबेनिया को स्वतंत्रता मिली तो वहां और अधिक सुधार होने लगे परन्तु इटली के प्रभाव में आजाने के कारण अब वहां का ठीक समाचार प्राप्त नहीं होता है। इटली ने अपनी सेना के लिये बहुत सी भूमि पर अधिकार कर लिया है और किले बन्दी कर रहा है। सैनिक तथा दूसरी सड़कों के कारण अल्बेनिया की भूमि कई भागों में बंट गई है। अलबानी लोग बड़े चतुर तथा समझदार होते और जो कुछ शिक्षा उन्हें दी जाती है वह उसे शीघ्र ही प्राप्त कर लेते हैं। तुर्क शासन में उनकी उन्नति में बड़ी बाधा पड़ी क्योंकि अलबानी भाषा के सिखाने तथा छपाने पर सरकारी रोक लगी थी।

जार्ज कीरियस एक बड़ा योग्य तथा चतुर अलबानी था। वह ब्रिटिश तथा विदेशी बाइबिल सोसायटी का नौकर था। उसने अलबेनी भाषा में एक बाइबिल तयार किया और उसे छपाया। सोसायटी को तुर्क सरकार की ओर से तुर्की राज्य के अन्दर बेंचने की आज्ञा मिल गई थी। इस राष्ट्रीय अन्दोलन का मतलब अल्बेनिया को स्वतंत्र बनाना था। जार्ज कीरियस की भगनी कोरीजा में रहती थी। वह बड़ी वीर तथा चतुर स्त्री थी। वह लड़कियों के पाठशाला की प्रधान अध्यापिका थी। वह स्कूल अमरीकन प्रचार संघ के अन्तर्गत था। वह स्त्री अमरीकन पुस्तकों का प्रयोग करती थी परन्तु शिक्षा अल्बेनी भाषा में देती थी और शिक्षा के बाद सभी अल्बेनी लेख नष्ट कर दिये जाते थे। तुर्क लोगों ने गैर क़ानूनी भाषा के पता लगाने का बेकार प्रयत्न किया। ईसाई तथा मुसलमान लड़कियाँ स्कूल के अन्दर अधिक से अधिक संख्या में इकट्ठा होती थीं और शिक्षा प्राप्त करके अपने भाइयों को शिक्षा देती थीं। दक्षिण की ओर कोरीजा नगर अल्बेनी आन्दोलन का केन्द्र था। यूनानी स्कूल तथा यूनानी गिरजा के प्रतिकूल स्कूल का प्रचार होता था। तुर्क लोगों ने यूनानी चर्च तथा स्कूलों को काम करने के लिये आज्ञा प्रदान कर रक्खी थी जिससे अल्बेनी राष्ट्रीयता का ज़ोर न बढ़े। मिस कीरियस के स्कूल को लोग "बीकन लाइट" (आकाश दिया) कहते थे।

अल्बेनी भाषा में बाइबिल का जो अनुवाद किया गया था उसके प्रचार करने में प्रचारकों को बड़ा कष्ट झेलना पड़ा। जिन प्रान्तों में अल्बेनी गवर्नर थे वहाँ पर उनका स्वागत होता था परन्तु जहाँ पर तुर्क गवर्नर होते थे वहाँ पर सभी पुस्तकें छीन ली जाती थीं। स्वतंत्र होने पर अल्बेनिया का चर्च भी सर्व बल्गर और रूमानी गिरजाघरों की भांति स्वतन्त्र हो गया। मुसलमान तथा ईसाई अल्बानी लोग बड़ी खुशी के साथ अल्बेनी बाइबिल खरीदने के लिये प्रचारकों के घर लेते हैं।

स्कुतारी नगर में आस्ट्रिया और इटली ने अपनी संरक्षता में स्कूल स्थापित किये थे और वहां अल्बेन लोगों को शिक्षा प्रदान करके अपने अधिकार में करना चाहते थे। स्कुतारी में बालकों, बालिकाओं और पहाड़ पर रहने वाले बच्चों के लिये स्कूल खुले हुए थे। शिक्षा के लिये लोगों में बड़ा उत्साह फैला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। जब १९१२ ई० के बालकन युद्ध के बाद अल्बेनिया स्वतन्त्र हुआ तो पहले पहल उसने शिक्षा के लिये स्कूल खोले। पाठशालों के खोलने में अमर का ने अल्बेनिया की बड़ी सहायता की थी।

थोड़े समय के बाद ही गत महायुद्ध आरम्भ हो गया जिससे सर्ब, मोंटेनेगरिन, फ्रांसीसी, इटैलियन, आस्ट्रियन और ब्रिटिश सेनाएँ देश के अन्दर इधर उधर दौड़ती रही जिससे भूमि नष्ट हो गई। सर्ब और यूनानी लोगों ने अल्बेनिया को आपस में बांटना चाहा था। परन्तु योरुपीय राष्ट्रों ने रोका और अल्बेनिया को फिर स्वतन्त्र किया। फैनोली नामक अल्बेनी गिरजे घर का वीर पादरी था वह प्रचार समिति का प्रधान था। उसका नाम अल्बेनिया के सभापति के लिये दिया गया था। फैननोली चाहता कि अल्बेनिया धीरे धीरे उन्नति करे। वह अल्बेनिया की भूमि किसानों को देकर खेती का रोज़गार कराना चाहता था।

कहा जाता था कि अल्बेनिया में मिट्टी का तेल बहुत है। इसलिये राष्ट्र अपने तेल निकालने तथा व्यापार की स्वीकृति चाहते थे। अहमद बेज़ोगू फैननोली के विपरीत सभापति के लिये खड़ा था। वह शीघ्र ही धनी होना चाहता था इसलिये उसने स्वीकृति दे दिया। ऐंग्लो-पर्शियन आयल कम्पनी ने अपना कार्य आरम्भ किया परन्तु उसे सफलता नहीं मिली।

उस समय एलिज़बेथ कारनारवा नामक स्त्री ने अल्बेनिया के लिये बड़ा सराहनीय कार्य किये। वह अपने पुत्र कर्नल आब्रे हर्बर्ट की स्मृति में सराहनीय कार्य कर रही थी। उस स्त्री ने बनोला नगर में एक अस्पताल स्थापित किया, बालचर आन्दोलन की स्थापना किया। मलेरिया को नाश करने के लिये काम आरम्भ किया और एक लाइब्रेरी बनवाकर उसे सजा दिया।

इटली के लोगों को जिस स्थान पर स्वीकृति मिली थी वहां पर उन्हें अच्छा तेल मिला। ब्रिटिश अल्बेनिया में अपना हित न देख वहां से हट गये। इटली की धाक वहाँ जमी। पहले बालचर आन्दोलन दबाया गया और फिर ब्रिटिश अफसरों को निकाला गया इटली ने अपने पञ्जे के अन्दर अल्बेनिया को मज़बूती से जकड़ लिये। युवकों को दबाया गया और सजायें दी गईं आखिर गुडफ्राईडे के दिन इटली की मशीनों की सेना आगे बढ़ी और उसने अल्बेनिया की स्वतंत्रता का अपहरण कर लिया।

बर्तमान महायुद्ध में भी अलबेनिया यूनानी तथा इटैलियन सेनाओं का युद्ध क्षेत्र बना रहा। उसे युद्ध में भीषण हानि उठानी पड़ी है। आशा है कि युद्ध के समाप्त होने पर अलबेनिया का ध्यान रक्खा जावेगा और उसे स्वतंत्र राष्ट्र बना कर उसकी भूमि उसे वापस दे दी जावेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाजी लोगों की कारबारी शक्ति

गत महायुद्ध से संसार के राष्ट्रों के आर्थिक संम्बन्ध साधारण नहीं रहे हैं। जब से जर्मनी ने युद्ध की तयारी की है तब से यह सम्बन्ध और अधिक खराब हो गये हैं। हिटलर के कार्यक्रम का एक प्रधान अंग यह है कि जहां तक सम्भव हो वहां तक विदेशी सामान (खासकर योरुप) के बाहर का) न मंगाये बरन् उसे जर्मनी में ही तयार करके अपनी आवश्यकता की पूर्ति करे। जर्मनी ने अपने यहाँ खेती को उन्नति प्रदान करके प्रत्येक भांति की अधिक से अधिक उपज करने का कार्यक्रम बनाया है। वह अपने कारखानों में भी अधिक से अधिक सामान तयार कर रहा है। योरुपीय देशों तथा संयुक्त-राष्ट्र अमरीका के व्यापारिक परिवर्तन के झगड़े से बचने के लिये जर्मनी दक्षिणी अमरीका के साथ व्यापार करने की ओर अधिक खिच गया था। वह वहीं से कच्चा सामान भी लेता था। उसी बीच जर्मनी दक्षिण योरुप से भी अपना व्यापार बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा था। यद्यपि दक्षिणी योरुप जर्मनी के मांग का केवल एक छोटे भाग की पूर्ति कर सकता है।

जर्मनी विदेशी सामान पर ही अधिकतर निर्भर है। १९३९ ई० के प्रथम ६ महीनों में २,७४०,०००,००० मार्क (एक जर्मन मार्क प्राय: एक रुपये के बराबर होता है) का सामान विदेश से जर्मनी को आया था। इसमें से १,०४,६०,००,००० मार्क की केवल भोजन सामग्री थी। शेष का कारखानों के लिये कच्चा सामान अधबना सामान आदि आया था।

जर्मनी मे तीन प्रकार का सामान बाहर से आता है। १—जर्मन प्रजा की आवश्यकता का सामान जिसे नाज़ी जर्मनी अधिक महत्व नहीं देता। २—दूसरा वह सामान है जो फौजी काम के लिये बाहर से आता है। ३—तीसरे प्रकार का वह कच्चा माल है जिसे नाजी जर्मनी अपने कारखाने में तयार करके बाहर भेजता है।

जर्मनी को रुई की बड़ी आवश्यकता है। जिन देशों से जर्मनी को रुई आती थी वहां पर अब जर्मनी को घुसने का स्थान नहीं है। उन स्थानों से रुई जर्मनी को जानी बन्द हो गई है। जर्मनी ने रुई के स्थान पर कपड़ा बनाने के लिये एक प्रकार का रेशा बना लिया है। यह रेशा जर्मनी अथवा योरुपीय कच्चे सामान से तयार होता है। युद्ध के पहले जर्मनी को अपने कारखानों के लिये बहुत सा कच्चा समान विदेशों से मंगाना पड़ता था जिसमें रुई, ऊन, सन, कपड़ा, हड्डी, रबड़, पेट्रोल (मोटर का तेल) और पेट्रोल बनाने का सामान, तांबा, तांबे के डले, कांसा, सीसा, टीन, गोंद, अभ्र, सुरमा, आदि सामान थे। इनमें से बहुत से सामान जर्मनी को दूसरे योरुपीय देशों द्वारा जाते थे।

जर्मनी ने अपनी विजय के कारण अपने सामान प्राप्त होने वाले उपायों को बढ़ाया है। योरुप के जिन देशों को जर्मनी ने विजय किया है वहाँ पर कच्चे सामान की उत्पत्ति अधिक नहीं है। उनमें से कुछ देश तो बिलकुल कारखाने वाले देश हैं। उन्हें भी जर्मनी से सहायता मिली है। वह कारखानों के अन्दर लड़ाई का सामान तयार करते हैं और भोजन सामग्री के साथ उसका परिवर्तन करते हैं। कुछ कम उन्नतिशील योरुपीय राष्ट्र अपने यहाँ के भोजन सामग्री तथा कच्चे सामान का परिवर्तन जर्मनी के कारखानों के तयार सामान से करते हैं।

हमें इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिये कि जर्मनी का प्रभुत्व केवल उन्हीं योरुपीय राष्ट्रों पर नहीं है जोकि उसके हैं सैनिक अधिकार में हैं वरन् उन पर भी है जिन पर वह अपना राजनैतिक अथवा आर्थिक प्रभाव डाल सकता है। ऐसे राष्ट्रों के कारखानों का सम्बन्ध जर्मनी के कारखानों से पिछले कई वर्षों से रहा है इसलिये वह राष्ट्र जर्मनी के साथ आर्थिक सम्बन्ध रखने की ओर झुके हुये हैं।

अब हम प्रत्येक योरुपीय (जर्मन प्रभुत्व वाले) राष्ट्र को अलग अलग लेकर वहां की उपज और कारखानों का अन्दाज करेंगे।

आस्ट्रिया

आस्ट्रिया ने जर्मन राइक को कच्चा लोहा, लकड़ी और मैग्नीशिया देता है। एर्ज़बर्ग की खान से लगभग दो लाख टन (१ टन लगभग २८ मन का) सालाना कच्चा लोहा निकलता था। अब जर्मन लोगों का कहना है कि उन्होंने लोहे की उत्पत्ति को और बढ़ा लिया है। एर्ज़बर्ग की खान में ब्रन्सविक की खान से अच्छा लोहा निकाला जाता है। ब्रन्सविक की खान का लोहा हरमन गोरिंग के कारखाने में जाता है अब जर्मनी के हाथ में लारेन प्रान्त का लोहा आ गया है और स्वीडन के लोहे के प्राप्त होने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी निश्चय हो गया है। स्वीडन का लोहा बहुत अच्छा होता है। जब आस्ट्रिया जर्मन राइक में मिलाया गया तो वहां लोहा और फौलाद बनाने के साधन कम थे। अब गोरिंग कारखाने के कारण बहुत लोहा तथा फौलाद तयार होता है। हरमन गोरिंग का कारखाना लिञ्ज में है।

आस्ट्रिया की लकड़ी की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है क्योंकि जर्मन सूती कारखानों में लकड़ी के गूदे की मांग बढ़ गई है। अनुमान लगाया गया है कि आस्ट्रिया के लगभग

आस्ट्रिया की मैग्नीशिया समस्त संसार में विख्यात है। आस्ट्रिया की मैग्नीशिया जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका खरीदते थे। आस्ट्रिया के मिलाये जाने से संयुक्त-राष्ट्र को धक्का पहुँचा है।

आस्ट्रिया के कारखानों में दैनिक प्रयोग की वस्तुएँ, फैशन के सामान छोटी छोटी धातु की वस्तुएँ तथा सूती कपड़ा और चमड़े का सामान तयार होता था। इन कारखानों के लिये कच्चा सामान विदेश से आता था और

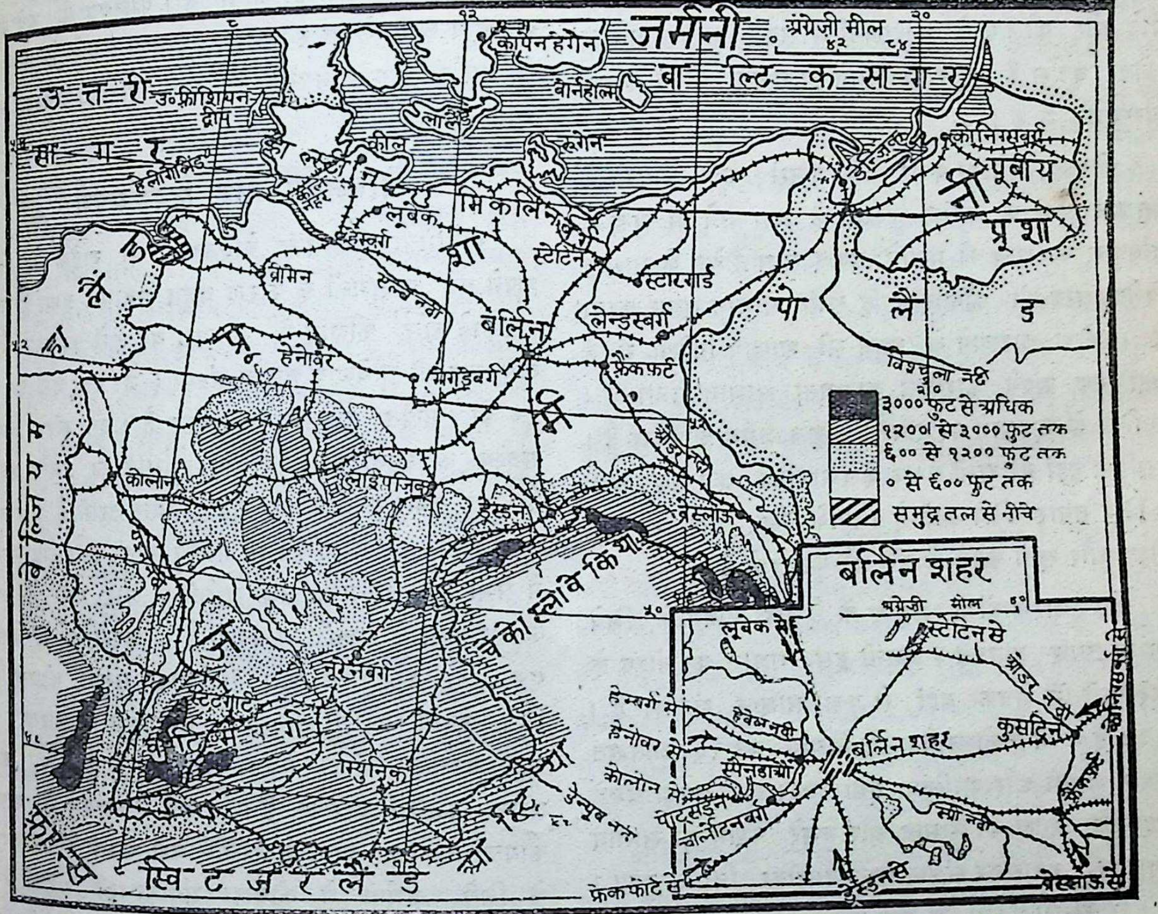

२८ प्रतिशत भाग में बन है। जर्मन राइक में प्रवेश होने के पूर्व आस्ट्रिया अपनी लकड़ी जर्मनी भेजता था। हाल ही समाचार से पता चला है कि जर्मनी आस्ट्रिया के स्वेडिस वुड पल्प (लकड़ी की लुग्दी) के तयार लकड़ी के गूदे का प्रयोग योरुप के अन्दर नहीं कर सकता इस कारण वहां कम गुदा तयार ही नहीं किया जा रहा है वरन् उसे एकत्रित किया जाता है इसलिये आस्ट्रिया की लकड़ी का गूदा अब अधिक उपयोगी नहीं रह गया है।

खरीदने वाले भी अधिकांश विदेशी यात्री ही हुआ करते थे। अब कच्चा सामान बाहर से आना स्थगित है और विदेशी यात्री भी यात्रा स्थगित किये हैं। लोहे और फौलाद के कारखानों में संतोषजनक कार्य नहीं होता था क्योंकि उनके तयार करने में बहुत व्यय होता था। हमें यह बात भी ध्यान में रखना चाहिये कि आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य के खास बोहेमिया और मोराविया (आस्ट्रिया नहीं) कारखाने वाले केन्द्र थे गत तथा बर्तमान महायुद्ध के बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आस्ट्रिया की जैसी आर्थिक स्थिति थी उस दशा में वह अपने कारखानों की उन्नति नहीं कर सका है।

जर्मनी ने जितने देशों पर अधिकार जमाया है उनमें सूडेटनलैण्ड, बोहेमिया और मोरविया के प्रान्त ही ऐसे हैं जो जर्मनी को सबसे अधिक युद्ध सामग्री दे सकते हैं। इन प्रदेश के कारखानों में लोहे और फौलाद के कारखाने अधिक प्रसिद्ध हैं इनके अलावा इनके दूसरे कारखाने बिदेशी कच्चे सामानपर ही निर्भर थे। आसिज का वैज्ञानिक कारखाना भी सैनिक दृष्टि से बड़ा आवश्यक है। लोहे और फौलाद के कारखानों में सबसे अधिक प्रसिद्ध स्कोडा वर्क्स है। इस कारखाने की गणना योरुप के बड़े कारखानों में है।

कोयला, चूने का पत्थर और दूसरी कच्ची धातुओं के बर्तमान होने के कारण स्कोडा के कारखाने में युद्ध के हथियार, कारखाने की मशीने, हवाई सामान रेल के सामान विशेष तरह का फौलाद आदि सभी सामान तयार करता है। स्कोडा कारखाने के बहुत सी शाखायें विदेशों में हैं जहां वह अपने कारखाने का बना सामान भेजता है। आलिज के कारखाने पर अब बिलकुल जर्मन अधिकार है। इसलिये वहां पर सभी प्रकार के रसायनिक द्रव युद्ध कार्य के लिये तयार किये जाते हैं। इनके सिवा और भी धातु शीशा और सूती कपड़े के बड़े बड़े कारखाने हैं।

चेक कारखानों में मनुष्य के दैनिक जीवन के लिये सामान तयार होता है। जर्मनी इस सामान को योरुप के दूसरे देशों में भेजकर वहां से कच्चा सामान मंगाता है। १९३७ ई० में चेकोस्लोवैक के निर्यात का २३ प्रतिशत सामान जर्मनी और आस्ट्रिया गया था। सूती कपड़ा चमड़े के दस्ताने, शीशे का सामान और दूसरे फैशन का सामान समुद्र पार रतासकर संयुक्त राष्ट्र अमरीका निर्यात हुआ। था। चेकोस्लोवेकिया के कुछ कारखानों को कच्चा सामान न मिलने के कारण अवश्य ही अपने सामान तयार करने की शक्ति को कम करनी पड़ी होगी परन्तु जिन कारखानों के के लिये कच्चा सामान योरुपीय देशों में प्राप्त हो सका है उनकी अच्छी उन्नति हुई है।

पोलैंड

पोलैण्ड के पश्चिमी भाग में खनिज सम्पत्ति बहुत है जिसमें प्रधान कोयला है। साइलेशिया का धातु सम्बन्धी रोजगार भी प्रसिद्ध है। बर्तमान समय में कोयला बहुत आवश्यक वस्तु है। युद्ध के पहले पोलैंड ने अपने कोयले की निर्यात इटली और स्कैण्डीनैविया देशों के साथ खूब बढ़ा भी और उसी के कारण उन देशों तथा जर्मनी के मध्य राजनैतिक सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं। पोलैण्ड से लकड़ी भी बहुत मात्रा में दूसरे योरुपीय राष्ट्रों को भेजी जाती है। सुवर का माँस भी पोलैण्ड से बहुत अधिक निर्यात किया जाता है। पहले सुवर का मास संयुक्त राष्ट्र अमरीका को बहुत जाता था परन्तु अब वह समस्त मांस जर्मनी में ही समाप्त हो जाता है। पोलैण्ड के बड़े सूती कारखाने अब केवल स्थानीय प्रधानता रखते हैं जब तक कि जर्मनी उसके निर्यात का कोई उचित प्रबन्ध नहीं करता है।

बेल्जियम और लक्सेमबर्ग

बोहेमिया की भांति बेल्जियम भी राइक के लिये अपने बड़े कारखानों के कारण बहुत सहायक हुआ है वहां पर लोहे और फौलाद के मुख्यतः बड़े बड़े कारखाने हैं। बेल्जियम की सीबेलाक नामक संस्था (जो २४ जून १९४० ई० को स्थापित हुई) बहुत प्रसिद्ध है। यह संस्था अपने सदस्य कारखानों के लिये कच्चे सामान का प्रबन्ध करती है। यह तयार सामान का मूल्य नियत करती है और उसे दूसरे स्थानों पर भेजने का भी प्रबन्ध करती है। यह संस्था ये सभी कार्य बेल्जियम तथा जर्मनी के लोहे और फौलाद के कारखानों के सम्पत्ति से करती है। लक्सेम्बर्ग में केवल एक बड़ा कारखाना है। सीबेलाक संस्था कोयले के लिये जर्मनी पर निर्भर है। बेल्जियम के कारखाने में लारेन का कच्चा लोहा प्रयोग किया जाता है। जो अब जर्मनी के अधिकार में है। यद्यपि बेल्जियम में काफ़ी कोयला निकाला जाता है तो भी उसे अपनी खपत करने के लिये जर्मनी से कोयला मंगाना ही पड़ता है। १९३९ ई० में ३,०००,००० टन कोयले का डल निकला था और लगभग उतना ही फौलाद तयार किया गया था। लक्सेम्बर्ग में लगभग उतना ही फौलाद तयार किया गया था। लक्सेम्बर्ग में लगभग २,४००,०० टन सालाना कोयला निकाला जाता है। दोनों देशों में लगभग समस्त तयार लोहे और फौलाद का अधिकांश भाग निर्यात हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लक्सेम्बर्ग के लोहे और फौलाद के कारखाने भी जर्मन आयरन-स्टील कारखानों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध करके

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल गये हैं। लक्सेम्बर्ग के समस्त लोहे और फौलाद के कारखानों के समूह का नाम आर्बेद हादिर और रोडिञ्जेन है। यह कारखाने जर्मन स्टालवर्क्स वर्बएड के साथ मिल काम करेंगे बेल्जियम का लोहे और फौलाद का सबसे प्रसिद्ध कारखाना आउग्रो मरीहमें है। इस कारखाने में लक्सेम्बर्ग का रोडिञ्जेन और लांगवे बेलिन (फ्रान्स) का कारखाना भी शामिल है। इस कारखाने ने अभी हाल ही में जर्मन कारखाने ओटो उलरू के साथ मिलाया है और दोनों का संयुक्त नाम रसेनौस्फुह ओटो औग्री रक्खा गया है इस बड़ी संस्था के केन्द्र कलोने और ब्रूसेल्स में है।

बेल्जियम में रसायनिक वस्तुओं को तयार करने के लिये भी बड़े बड़े कारखाने हैं जो संसार के दूसरे रसायन कारखानों से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं और जहां पर रेलवे और दूसरे कारखानों के लिये मुख्य मुख्य सामान तयार किये जाते ,हैं। यह कारखाने अब जर्मनी के हेतु काम कर रहे हैं। इन कारखानों का बना हुआ लोहे तथा फौलाद का सामान उन देशों को जाता है जहां से जर्मनी को कच्चा सामान और भोजन प्राप्त होता है। बेल्जियम में शीशे और सूती कपड़े के कारखाने भी हैं जो जर्मनी के लिये उपयोगी नहीं हैं। इसी कारण वह कम चालू हैं। बेल्जियम में पिछले कुछ सालों से बहुत ज्यादा सीमेन्ट तयार करके बाहर भेजी जाती है। जर्मनी में सीमेन्ट की बहुत अधिक खपत है। जर्मनी में भी एक बहुत बड़ा सीमेन्ट तयार करने का कारखाना है। परन्तु मकान बनाने का कार्य कम हो जाने के कारण अब जर्मनी को बेल्जियम के सीमेंट की आवश्यकता नहीं है।

हालैंड

हालैंड जर्मनी के लिये भोजन सामग्री के लिये बड़ा ही उपयोगी है। वहां पर साग, तरकारी और डेयरी का सामान बहुत होता है हालैंड में टीन बनाने, सूती कपड़ा तयार करने के कारखाने हैं जो इस समय कम चल रहे हैं क्योंकि इन कारखानों के लिये कच्चा सामान हालैंड के उपनिवेशों से आता था और सामान तयार होने के पश्चात् उन्हीं स्थानों को भेजा जाता था। हालैंड के ए० के० यू० नामक कारखाने में जर्मन धन लगा है उस पर पूर्ण जर्मन अधिकार है। फिलिप नामक हालैंड में प्रसिद्ध रेडियो और वल्ब तथा बिजली के तयार करने का कारखाना है। उस कारखाने से समस्त संसार को सामान जाता था। हालैंड में विमान तयार करने के लिये भी बड़ी सुविधाएं हैं परन्तु इस सम्बन्ध में बहुत सी बातें गुप्त रक्खी गई हैं।

फ्रान्स

फ्रांस के कारखाने वाले प्रदेश पर अधिकार प्राप्त करने के कारण जर्मनी के हाथ में लारेन, ब्री और लाँगवेबेसिन का लोहा आ गया है। संसार में इस प्रदेश की गणना लोहे के प्रधान प्रदेशों में है। १९३७ ई० में फ्रान्स में ३८,०००,००० टन कच्चा लोहा निकाला गया था जिसका आधा निर्यात हुआ था। यद्यपि फ्रान्स में आवश्यकता से अधिक लोहा था फिर भी वह जर्मनी और बेल्जियम के बुझे हुये पत्थर के कोयले को मुहताज था जिससे लोहा और फौलाद तयार किया जाता है। इसी कारण फ्राँस जर्मनी के साथ लोहे को कोयला से बदलता था। यह उसके व्यापार का एक प्रधान अंग था। फ्रान्स के लोहे की खानों में अधिक तर इटली और पोलंड के मजदूर काम करते थे। फ्रान्स के अधिक लोहे के कारण हरमनगेरिंग के कारखाने में सुधार करना आवश्यक होगा क्योंकि फ्रान्स की विजय के पहले यह कारखाना ब्रांस्विक के कम अच्छे कच्चे लोहे पर ही निर्भर करता था।

जर्मन अधिकृत (अधिकार किये हुये) फ्रान्स में लोहे और फौलाद के कारखानों के सिवा वहां पर प्रसिद्ध श्नीडेर-क्रूसोट का शास्त्र बनाने का कारखाना है। जहां पर युद्ध, रेलवे और कृषि संबन्धी सभी शस्त्र तथा औज़ार तयार किये जाते हैं। मशीन तयार करने के लिये भी बड़े बड़े कारखाने हैं। जर्मन लोगों का कथन है कि फ्रान्स के धातु सम्बन्धी रोज़गार को धक्का नहीं पहुँचा है।

आलमोनियम तयार करने के लिये भी फ्रान्स में एक बहुत बड़ा कारखाना है जिसके लिये वहां पर कच्चा सामान भी पाया जाता है और बिजली की शक्ति भी बर्तमान है। यद्यपि यह रोजगार जर्मनी और अमरीका के अलमोनियम के रोज़गारों से छोटा है तो भी यह जर्मनी के लिये बड़ा जरूरी है क्योंकि युद्ध में अलमोनियम की बड़ी खपत है। यही दशा फ्रान्स के रसायनिक कारखानों की है। फ्रान्स में सज्जी बहुत पाई जाती है परन्तु जर्मनी संयुक्त राष्ट्र अमरीका, स्पेन, पैलेस्टाइन के सज्जी के सामने उसकी माँग नहीं है।

फ्रान्स में मिचिलिन रबर टायर बर्कस का बड़ा कार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना है जहां से समस्त संसार सामान जाता है। वहां पर जितना प्राकृतिक रबर एकत्रित था उसे जर्मनी ने क्षणिक संधि के समय ले लिया है। फ्रान्स के ऊनी कारखानों की भी यही दशा हुई है और जर्मनी ने वहां के समस्त ऊन तथा ऊन के सामान पर अधिकार कर लिया है।

फ्रान्स के सूती कारखाने शान्ति के समय बड़े उपयोगी थे। वहां पर अत्यन्त सुन्दर सूती वस्त्र फैसन वाले तयार किये जाते थे। अब कच्चा सामान न आने के कारण सामान कम तयार होता है और तयार सामान भी बाहर कम भेजा जाता है। जर्मनी स्वयम् लकड़ी के रेशे से बने हुये वस्त्रों का प्रयोग करता है हां जिन देशों पर जर्मनी ने अधिकार कर रक्खा है शायद वहां फ्रान्स के बने कपड़े की खपत होती है।

दक्षिणी-पूर्वी योरुप

हंग्री, रूमानिया और बल्गेरिया आदि देश पोलैंड और बेल्जियम की भाँति जीते हुये प्रदेश नहीं हैं। अब वहां पर जर्मन सैनिक अधिकार है। वह जर्मनी के प्रभुत्व में आ गये हैं इसलिये उनके आर्थिक साधन भी जर्मन प्रभुत्व में हैं। युद्ध के पहले ही जर्मनी ने दक्षिणी पूर्वी योरुप के साथ अपना व्यापार बढ़ा रक्खा था। आज कल जर्मनी का हंग्री, रूमानिया बल्गेरिया और यूगास्लैविया के व्यापार पर पूर्ण अधिकार है। यह राष्ट्र भोजन सामग्री विशेष कर उत्पन्न करते हैं। रूमानिया में पिट्रौल, हंग्री और यूगोस्लाविया में बाक्साइट यूगोस्लाविया में तांबा रंग सम्बन्धी खनिज सम्पत्ति और दूसरी धतुऐं भी पाई जाती हैं। यूगोस्लाविया के तांबे, सीसे, जस्ते के रोजगार में ब्रिटिश तथा फ्रान्सीसी धन लगा हुआ था उस पर अब जर्मन अधिकार हो गया है। १९४१ ई० में रूमानिया और जर्मनी के मध्य जो समझौता हुआ है उसके अनुसार रूमानिया ने तीस लाख टन पिट्रौल जर्मनी को देने का बचन दिया है। १९३९ ई० में यूगोस्लाविया ने ५६,०००,००० रु० की धातु का सामान निर्यात किया जिससे कच्चे तांबे का दाम लगभग ३५,०००,००० रु० था शेष मूल्य कच्चे लोहे, जस्ते रंग आदि दूसरी धातुओं का था। १९३९ ई० में रूमानिया ने २० लाख टन से अधिक पिट्रौल निर्यात किया था।

स्वीडन और स्विटज़रलैंड

यह दोनों देश जर्मन अधिकार में नहीं है परन्तु संसार से यह लगभग बिलकुल अलग कर दिये गये हैं इस कारण उन्होंने धुरी राष्ट्रों के संग ही अपने आर्थिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये हैं। इन दोनों देशों के कारखाने अधिक उन्नतशील हैं। स्वीडन अपने यहां का लोहा जर्मनी को पिछले कई वर्षों से देता रहा है। स्वीडन की लकड़ी से बहुत अधिक लकड़ी का गदा तयार किया जाता है। स्वीडन में बहुत अच्छा फौलाद तथा लाहे की सामग्री प्रत्येक भांति की मशीने शस्त्र और धड़ाके वाले सामान तयार किये जाते हैं। बोफोर्स के कारखाने में वायुयान संहारिणी तोपें बहुत अच्छी तयार की जाती है। स्विटजरलैंड भी अपने कारखानों के लिये प्रसिद्ध है। वहां पर हर एक भांति के कल पुर्जे तयार किये जाते हैं। स्विजरलैंड में आलमोनियन भी बहुत अधिक निकाली जाती है। १९३९ ई० में ३० हजार टन अलमोनियम निर्यात की गई थी। तारकोल का रोजगार भी वहां पर प्रसिद्ध था।

इटली

इटली स्वयम् कोयले और लोहे तथा फौलाद के भरी सामानों के लिये जर्मनी पर निर्भर रहता है। इटली में फल और साग बहुत होता है जो जर्मनी जाना है और वहां भोजन का काम देता है। इटली में पारा संसार भर में सब से अधिक होता है। जर्मनी को इटली से पारा मिलता है। इटली में अलमानियम भी पाई जाती है परन्तु निर्यात के लिये वह विशेष नहीं रहती है इटली के रसायनिक कारखाने जर्मनी के बड़े काम के हैं।

जर्मनी को युद्ध आरम्भ होने के पश्चात् से आज तक क्या व्यवसायी लाभ हुआ है। इसका संक्षिप्त वर्णन यहां दिया जाता है। जर्मनी के कारखाने को जो हानि ब्रिटिश वायुयानों के आक्रमण से हुई है उसका उल्लेख यहां नहीं किया जा रहा है।

जर्मनी को सब से अधिक लाभ योरुपीय देशों के विजय करने से यह हुआ है कि उसके पास लोहे की अधिकांश खाने आ गई हैं। लोहे और फौलाद के बड़े बड़े कारखाने भी उसके अधिकार में आ गये हैं जिससे उसकी लोहे तथा फौलाद तयार करने की शक्ति बढ़ गई है। आस्ट्रिया, पर साइलीशिया, बोहेमिया, मोराविया लक्सेमबर्ग और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लारेन आदि प्रदेशों पर अधिकार होने के कारण जर्मनी की लोहे की शक्ति तीन करोड़ ५० लाख टन से बढ़कर ३ करोड़ ७० लाख हो गई है। बल्जियम और फ्रान्स के दूसरे कारखानों को मिला कर ६० लाख टन की और अधिक वृद्धि हो गई है। इस प्रकार जर्मनी लोहे की शक्ति में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का आधा हो जाता है और संसार में उसका लोहे में दूसरा स्थान हो जाता है। अभी हाल में क्रोवोइरोग नामी रूसी लोहे के केन्द्र पर भी जर्मनी का अधिकार हो गया है।

जहां तक शस्त्रों के बनाने का सम्बध है वहां तक जर्मनी का संसार में प्रथम स्थान हो गया है। वह भारी से भारी और छोटे से छोटे अस्त्र-शस्त्र तयार कर सकता है। प्रत्येक भांति की मशीने, कलें और पूर्जे वहां तयार किये जा सकते हैं।

जर्मनी ने कोयला उत्पन्न करने वाले प्रदेशों पर जो अधिकार प्राप्त किया है उससे उसकी शक्ति और भी अधिक बढ़ गई। जर्मनी अब कोयला बिना चुंगी के ही दूसरी वस्तुओं के साथ परिवर्तन कर सकता है। कोयले के कारण ही स्वीडन स्विज़रलैंड जर्मन प्रभुतत्व में हैं। इटली भी जर्मनी पर ही कोयले के लिये निर्भर रहता है। पोलैंड में साल भर में ४ करोड़ टन कोयला निकाला जाता है जर्मनी योरुप के लगभग सभी राष्ट्रों का कोयले की मांग की पूर्ति कर रहा है। प्रत्येक देश से संधि की बात चीत करते समय जर्मनी कोयले की सहायता की बात चलाता है।

यद्यपि जर्मनी अपने को संसार में सब से अधिक अलमुनियम उत्पन्न करने वाला देश समझता है तो भी फ्रान्स, नार्वे और स्वीडन को अलमुनियम उसके बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। १६३६ ई० में जर्मनी के अन्दर २००,००० मीटर सम्बन्धी टन अलमुनियम की उत्पत्ति हुई थी उसी साल नार्वे और स्वीज़रलैंड में मिला कर ५६,००० (मीटर वाले) टन अलमुनियम की उत्पत्ति हुई थी। अलमुनियम का काम वायुयानों में बहुत पड़ता है और साथ ही साथ वह तांबा आदि दूसरी धातों के बदले प्रयोग की जाती है फ्रान्स की बाक्साइट भी जर्मनी के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है।

पोलैंड का ज़स्ता भी जर्मनी के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है। यूगोस्लैविया का ताँता और दूसरी धातुएँ भी जर्मनी के लिये बड़े काम की हैं। रूमानिया के पेट्रोल का महत्व जर्मनी के सरकारी लोग समझते हैं परन्तु यह बात मालूम करनी कठिन है कि जर्मनी को रूमानिया से कितना पिट्रौल प्राप्त होता है।

अपनी आवश्यकता की स्वयम् पूर्ति करने के लिये जर्मनी और इटली ने रूई के स्थान पर लकड़ी के गूदे से अल्प काम लेना आरम्भ किया है। स्कैंडीनैविया देशों का लकड़ी का समस्त गूदा जर्मनी के हाथ में है। युद्ध के पहले स्कैंडीनैविया का लकड़ी का गूदा इँगलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका को अधिकतर जाता था। चूंकि जर्मनों के हाथ में समस्त योरुप की अप्राकृतिक रेशेदार सम्पत्ति है इसलिये वह उसे उन योरुपीय राष्ट्रों को देता है जो अब दूसरे विदेशों से रूई आदि नहीं मंगा सकते हैं।

मकान बनाने और खान खोदने में जितनी लकड़ो तथा लकड़ो के तख्तों की आवश्यकता होती है वह सब जर्मनी को स्कैंडीनैविया के देशों से मिलते हैं।

योरुप के भिन्न भिन्न देशों से जो दैनिक प्रयोग की वस्तुएँ प्राप्त होती हैं उसे जर्मनी विदेशों को भेजकर वहाँ युद्ध से सम्बन्धी सामग्री मंगाता है और उन सामानों को वह जर्मन मज़दूरों को प्रयोग करने के लिये पहुँचाता है इस प्रकार जर्मन मज़दूर उन दैनिक प्रयोग वाली वस्तुओं के बनाने में अपना समय व्यर्थ न करके लड़ाई का सामान तयार करते हैं।

जर्मनी के पास इस समय ३३ लाख से ऊपर व्यक्ति लड़ाई के कैदी हैं उनसे जर्मनी खेती तथा और दूसरे रोज़गार सम्बन्धी काम लेता है। उनमें जो चतुर कारखाने में काम करने वाले हैं उन्हें वह कारखानों में काम में लगाता है और उन्हें नाम मात्र का वेतन देता है। इसके अतिरिक्त जर्मनी ने जिन देशों का अपने अधिकार में किया है वहां के बेकार लोगों को वह अपने कारखानों में काम देता है।

इस प्रकार जर्मनी के पास अब पहले से बहुत अधिक ऐसी सम्पत्ति हो गई है जो उसे युद्ध में काम दे रही है। फिर बहुत सी धातुयें ऐसी हैं जो कुछ समय में ही समाप्त हो जावेंगी और फिर जर्मनी को उन्हें समुद्र पार दूसरे देशों से मंगाना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टैंक

पुराने समय के सिपाही लड़ते समय अपनी रक्षा के लिये कवच पहनते थे। लोहे के बने हुये कवच भारी होते थे। उनको सिपाही कुछ ही देर पहन सकते थे। अक्सर कवचधारी सिपाही घोड़े पर चढ़ कर लड़ते थे। आधुनिक युद्ध में विज्ञान ने कवच और घोड़ा एक साथ मिला दिया है। यही टैंक है।

टैंक अँग्रेजी का शब्द है। इसका साधारण अर्थ है तालाब या पानी की टङ्की। फिर यह नाम इन भीषण दानवों के समान गाड़ियों को क्यों दिया गया। इस की एक मनोरंजक कहानी है। पिछली १९१४ की लड़ाई में जर्मन फौजें बड़ी तेज़ी के साथ बढ़ रही थीं। उनका सामना करने के लिये एक अँग्रेज़ ने ऐसी मोटर गाड़ी बनाने की योजना की जो एक चलते हुये किले के समान थी। इसके पहिये इस प्रकार बनाये गये थे कि वे ऊँची नीची ज़मीन पर भी चल सकते थे। इसकी चद्दरें इतनी मोटी थीं कि उन पर साधारण गोलियों का असर नहीं हो सकता था आरम्भ में उनकी चाल बड़ी धीमी थी। एक घण्टे में वे केवल ४ मील चल सकती थीं। फिर भी इन भीषण काय दानव समान गाड़ियों ने जर्मन फौजों में हाहाकार मचा दिया। एक बार तो एक टैंक को देख कर ३०० जर्मनी सिपाहियों ने हथियार डाल दिये।

आरम्भ में इनके बनाने और प्रयोग करने का काम बड़ा रहस्यमय रक्खा गया। जब कोई इन नई तोपगाड़ियों के बारे में पूछता तो कहा जाता कि अफ्रीका के हबशियों को पानी पहुँचाने की समस्या को हल करने के लिये नये ढंग के टैंक बनाये जा रहे हैं। बाद में लोगों को मालूम हुआ कि पानी पहुँचाने के बदले ये आग और गोले उगलते हैं। फिर भी इनका नाम टैंक ही चल निकला।

प्रथम ब्रिटिश टैंक १९१६ के सितम्बर मास में तयार हुआ। यह २८ टन (एक टन प्रायः २८ मन के बराबर होता है) भारी था। यह तोपें गोले की वर्षा करता हुआ रास्ते के कांटेदार तारों को कुचलता हुआ जर्मन सेना की ओर बढ़ा। इससे जर्मन

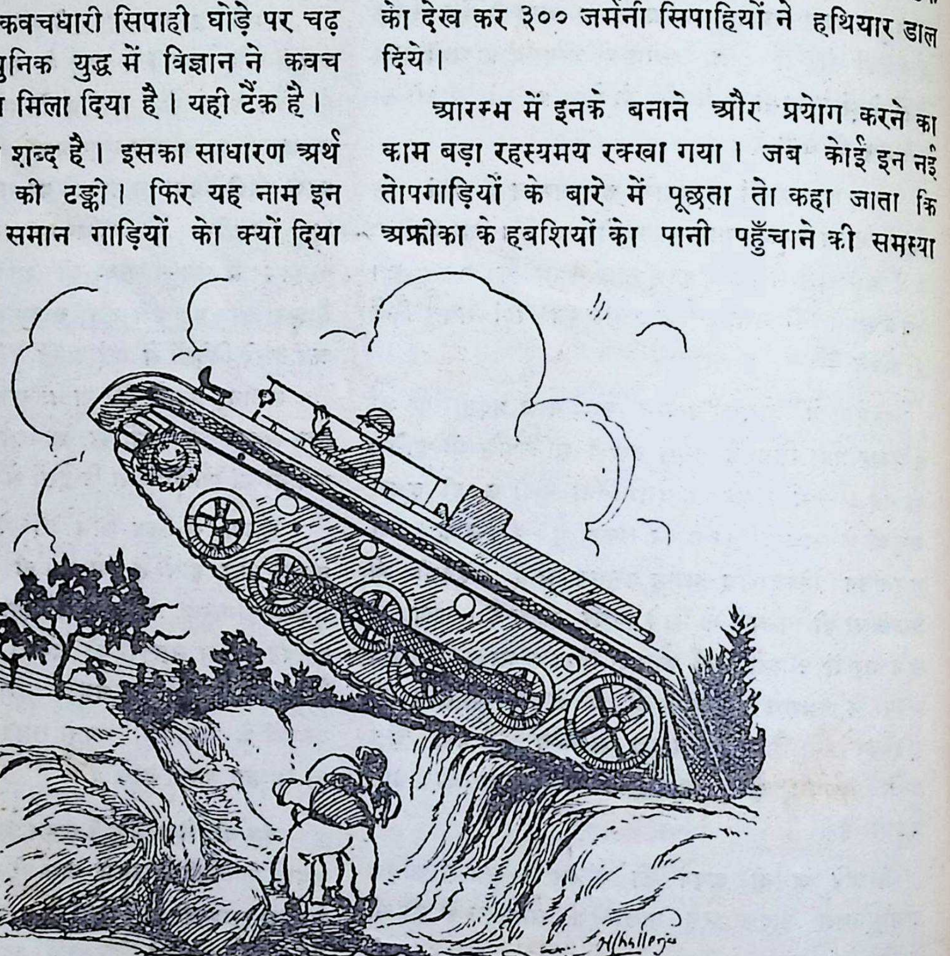

जर्मनी का आधुनिक कूदने वाला टैंक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिपाही दंग रह गये। पहले के टैंक धीमी चाल से चलते थे और मार्ग की खाइयों को पार नहीं कर सकते थे। इनको मोड़ने में भी कठिनाई पड़ती थी। इसलिये जर्मन सैनिकों ने इनसे बचने के लिये दूर दूर गहरी खाइयाँ बनाई वर्षा हो जाने से टैंकों के पहिये भी गीली ज़मीन में धँस जाते थे। फिर भी ३७८ टैंकों की सहायता से ब्रिटिश फौजों ने पिछली लड़ाई में १२ घंटे में इतनी ज़मीन छीन ली

बड़ी विलक्षण बात लिखी थी। जर्मनी को छोड़कर (क्योंकि संधि के अनुसार जर्मनी को टैंक बनाने की आज्ञा नहीं मिली है) योरुप के सभी राष्ट्र टैंक को युद्ध शस्त्र अधिकाधिक मात्रा में प्रयोग कर रहे हैं। अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान समय में जर्मनी के पंजेर डिवीजनों में ५५,००० टैंक हैं। इनमें कुछ टैंक ७० टन भारी हैं।

टैंक का बनाना सुगम नहीं है। एक साधारण

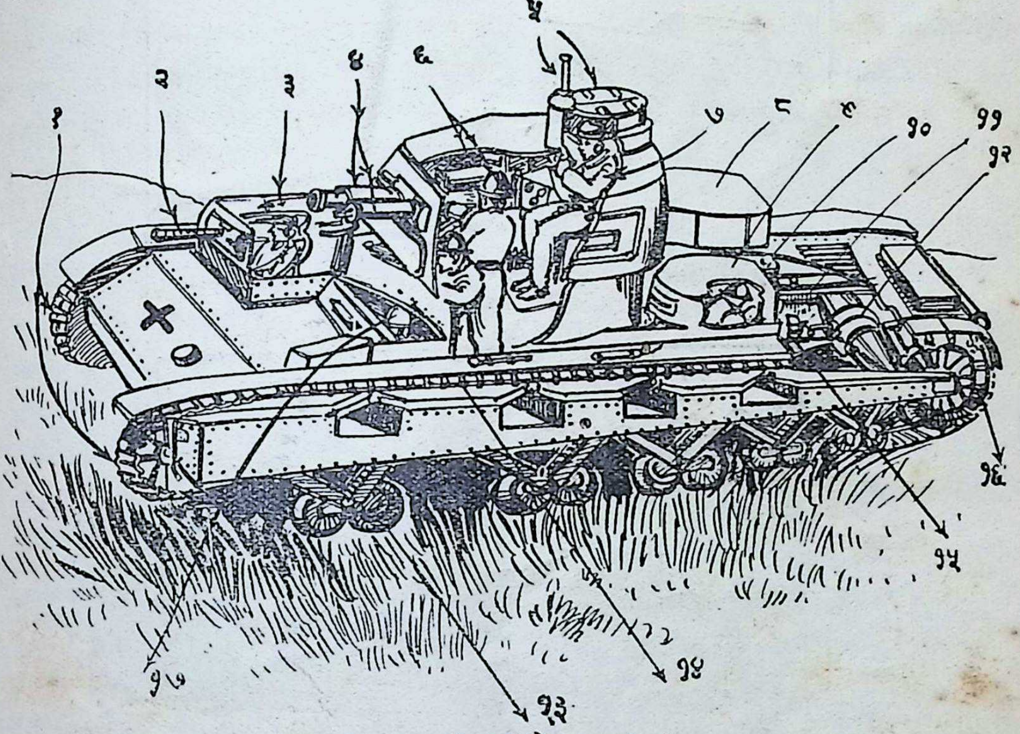

कुछ भारी मध्यम श्रेणी के टैंक का भीतरी भाग।

१—इडलेर स्प्राकेट (सुस्त पहये का घेरा) २—मशीन गन ३—फोट टरेट आगे वाली बुर्ज़ी) ४—भारी मशीन गन ५—पेरिस्कोप ६—गनर लोडर (बन्दूक भरने वाले) ७—सेना पति ८—रियर टरेट (पीछे वाली बुर्ज़ी) ९—प स्ट टरेट या घुर्ज़ी १०—मोटर ११—गन (तोप) १२—बैक एक्सेल (पिछला धुरा) १३—गाड़ी के पहिये १४—टैंक के ऊपर का मार्ग १५—क्लच और गियर बक्स १६—चलाने वाला स्प्राकेट (घेरा) १७—चलाने वाला।

थी जितनी वे तीन महीनों में न ले सके थे। फ्रांसीसियों ने अपने लिये हलके टैंक बनाये। इनसे भी बड़ी सहायता मिली।

पिछली लड़ाई के हार से जर्मनों ने बड़ी शिक्षा ली। इस बार वर्तमान युद्ध में जर्मनों ने टैंकों का अद्भुत प्रयोग किया है। वास्तव में टैंकों की सहायता से जर्मन सेनाओं को योरुप [illegible] मिली है। १९२९ की इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका ने एक

टैंक बनाने के लिये १७००० पुर्जे बनाये जाते हैं। कुछ पुर्जे ऐसे जटिल होते हैं कि इनको ढालने के लिये पहले २८०० खाके (ब्लूप्रिन्ट) तयार किये जाते हैं।

टैंक को चलाने का काम भी बड़ा कठिन है। उसे हर समय हाथ से क्लच गियर, और शिफ्ट दबानी पड़ती है। पैरों से दबाने के लिये पेडल होते हैं। टैंक में आगे बढ़ने के लिये पाँच स्पीड चाल होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। एक स्पीड पीछे लौटने के लिये होती है। दोजाय [?]स्टिक टेलीफोन का संदेश भेजने के लिये होती हैं। टेलीफोन द्वारा एक टैंक से दूसरे टैंक को संदेश भेजा जा सकता है। एक पैर से टेलीग्राम भेजने का बोर्ड बन्धा रहता है। इनके साथ ही वह एक ही साथ दो लगा रहता है। उसे हर समय अपने अफसर का आदेश मानना पड़ता है। उसका अफसर ऊपर वाले स्थान पर बैठता है और उसके सिर या पीठ पर लात मार मार कर संकेतों द्वारा उसे आदेश देता है।

एक ब्रिटिश गश्ती टैंक (तोपगाड़ी) बालू के बोरों के ऊपर पूरे वेग से चल रही है

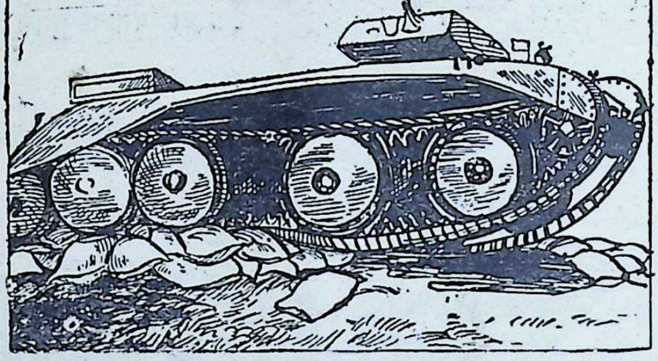

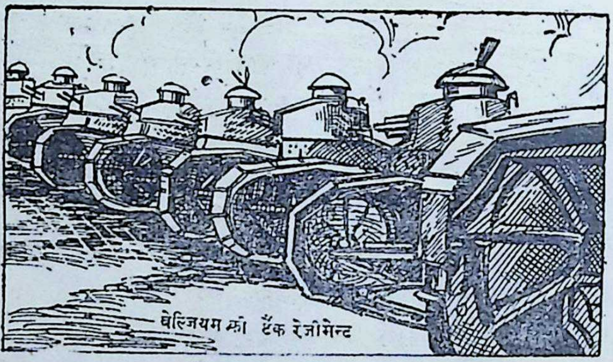

बेल्जियम की टैंक रेजीमेन्ट

मशीन गने भी चलाता रहता है इन सब बातों के साथ उसे यह भी देखना पड़ता है कि उसका टैंक दिशा में जा रहा है। देखने के लिये उसके सिरके सामने एक इंच चौड़ा और चार इंच लम्बा शीशा

आधुनिक फौजी अफसरों को इस जटिल यंत्र से भी पूरा संतोष नहीं हैं। इसी से टैंक के निर्माण और संचालन में नई नई बातों का आविष्कार हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक शिक्षा के लिये उपयोगी निम्न पुस्तकें पढ़िये

बाल-संसार—बाल-संसार में १११ देशों के बालकों का रोचक वर्णन है। प्रत्येक देश के प्रचलित नामों में से ही बालक का नाम है। यात्रा के आधार पर बालक के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा प्रत्येक देश के जीवन की झाँकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिलकुल अलग कर दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग तीन सौ चित्र हैं, जिनसे इसकी रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है। तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है। शिक्षा-विभाग द्वारा बेसिक स्कूलों के लिये स्वीकृत है। बड़े आकार (१०×७॥) के २६० पृष्ठ, मूल्य केवल १॥)

★ ★ ★ ★ ★

अनोखी दुनिया—इस पुस्तक में दस कहानियाँ हैं। १—मिट्टी का तेल, २—जहाज, ३—रेलगाड़ी, ४—भोजन, ५—लोहा और फौलाद, ६—हवाई जहाज, ७—सोना, ८—वाहन या बारबरदारी, ९—घर, १०—पहिये वाली गाड़ी। प्रत्येक कहानी में एक तिरंगा चित्र दिया गया है। कहानी में इतने चित्र हैं कि केवल चित्र ही देख कर बच्चे उस कहानी को सहज ही में समझ लेते हैं। भाषा भी बहुत साधारण है और मोटा टाइप होने से छोटे बच्चे भी बड़ी आसानी से पढ़ लेते हैं। प्रत्येक कहानी में यह बतलाया गया है कि उस चीज़ का आविष्कार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी उन्नति हुई। एकरंगे चित्र १२६, पृष्ठ-संख्या १६७, तिरंगे चित्र १०। फिर भी मूल्य केवल १० आने।

★ ★ ★ ★ ★

सचित्र भौगोलिक कहानियाँ—छोटे बालकों को कहानियों में स्वाभाविक आनन्द आता है। इसी से इस छोटी सी पुस्तक में कुछ कहानियों का संग्रह किया गया है। इन कहानियों में प्रायः भौगोलिक रूप मिलेगा। उनकी भाषा सरल है। अधिक शिक्षाप्रद और रोचक बनाने के लिये आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। बच्चों की अवस्था को ध्यान में रख कर कहानियाँ बहुत छोटी रक्खी गई हैं। इन कहानियों से बच्चों में भूगोल-विषय के प्रति अवश्य रुचि बढ़ेगी। इस पुस्तक में लगभग ५८ चित्र और ६६ पृष्ठ हैं। मूल्य केवल चार आने।

★ ★ ★ ★ ★

प्राचीन जीवन—इस पुस्तक में प्राचीन जातियों के जीवन पर बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है जिससे बच्चों को समझने में कुछ भी कठिनाई न हो। आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। इसमें संसार का एक बड़ा नक़्शा दिया गया है जिसमें उन जातियों का निवास-स्थान दिखाया गया है। इसमें प्राचीन आर्य, प्राचीन मिस्री, चीनी, सुमेरियन, बेबिलोनियन और असीरियन, फोनिशियन, ईरानी, यूनानी, रोमन, नई दुनिया की पुरानी इन्का जाति आदि जातियों का वर्णन है। मोटे टाइप में होने से बच्चे आसानी से पढ़ लेते हैं। चित्र-संख्या ११६, तिरंगे कवर की ८० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ॥) है।

पुस्तक मिलने का पता—"भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jumna Road, Allahabad.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

सितम्बर १९४१

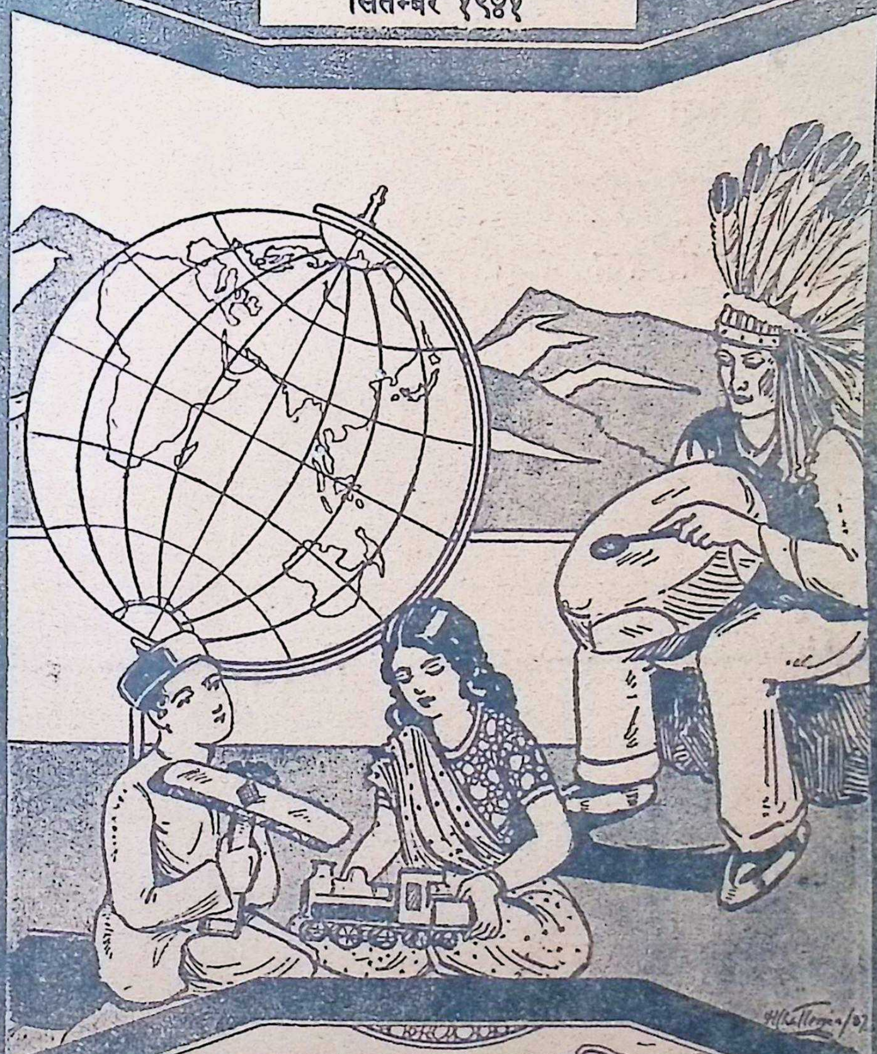

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

अभी हाल ही में हमारे यहां से 'अनोखी दुनियाँ' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें मिट्टी का तेल, जहाज़, रेलगाड़ी, भोजन, लोहा और फौलाद, हवाई जहाज़, सोना, वाहन या बारबरदारी, घर और पहिये वाली गाड़ी की दस कहानियां दी गई हैं। प्रत्येक कहानियों के साथ एक तिरंगी तस्वीर है और प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस से बालकों को शिक्षा आसानी से मिल जाती है। इस पुस्तक का लागत मूल्य ||=) रक्खा गया है। डाक व्यय सहित |||) का टिकट भेज कर पुस्तक मँगा लें।

सीधी पढ़ाई प्रथम व द्वितीय भाग का दूसरा संस्करण छप गया है। प्रत्येक भाग का मूल्य -)||

भौगोलिक कहानियां—मूल्य चार आना। डाक व्यय अलग। यह बालकों के लिये उपयोगी पुस्तक है।

तीनों पुस्तकों के मँगाने के लिये १|) भेजिये।

मैनेजर, 'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—अटलांटिक का युद्ध	१
२—ईजियन सागर से काला सागर का जल मार्ग	४
३—जावद की झलक	७
४—युद्ध काल में जहाजों का उपयोग	१२
५—रूसी परराष्ट्र दफ्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल	१६
६—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, विहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] आश्विन. सं० १९९८, सितम्बर, १९४१ ई० [अङ्क ५

अटलांटिक का युद्ध

प्राचीन समय में युद्ध के अवसर पर शत्रु सेना प्रधान नगरों और क़िलों को घेर लेती थी और उनके भीतर बाहर से लड़ाई का सामान और भोजन नहीं पहुँचने पाता था। घिरे हुये लोग अक्सर भाग भी नहीं सकते थे। भोजन न मिलने और हथियारों की कमी होने के कारण घिरे हुये लोग शत्रु से संधि कर लेते थे और अक्सर शत्रु बिना लड़े हुये ही विजय पा जाता था।

कुछ कुछ यही ढंग समुद्री घेरे का है। इस घेरे का विस्तार कुछ मीलों के बदले सैकड़ों मील है। अटलांटिक सागर के बड़े भाग में ब्रिटिश बेड़े ने बर्तमान युद्ध के आरम्भ में ऐसा पहरा दिया कि जर्मनी के भीतर अटलांटिक मार्ग से कोई सामान न पहुँच सके। अगर कोई जहाज समुद्री घेरे से बच कर भागने की कोशिश करता तो वह पकड़ लिया जाता था और छीन लिया जाता था। पिछली लड़ाई में कुछ बन्दरगाह नियत कर लिये गये थे जहां उदासीन राज्यों के जहाजों की तलाशी ली जाती थी। पिछली लड़ाई में पनडुब्बे जहाज (सबमेरीन) बड़े थे। बर्तमान समय की छोटी छोटी पनडुब्बी नावों का आविष्कार नहीं हुआ था। उस समय हमला करने का साधारण ढंग यह था कि पनडुब्बा जहाज समुद्रतल पर उछल कर बन्दूक छोड़ता था और उसके कर्मचारी व्यापारी जहाज पर चढ़कर मल्लाहों और दूसरे लोगों को नावों द्वारा बचा लेते थे। फिर वे जहाज के निचले भाग में बम्ब रख कर उसे डुबा देते थे। आगे चल कर जब सभी जहाज सशस्त्र कर दिये गये तो उनको डुबाने के लिये टारपीडो और माइन (बम्ब वाली सुरंगें) का प्रयोग होने लगा।

संसार के सभी भागों से लन्दन और लिवरपूल के लिये जहाज आया करते थे। जर्मन पनडुब्बे जहाज इन्हीं संकोचित भागों में छिप कर जहाज डुबाते थे। पहले जहाजों को सुरक्षित रखने के लिये समुद्री गश्त में लड़ाका जहाज अपने नियत स्थानों पर चक्कर लगाया करते थे। व्यापारी जहाज स्वतंत्र रूप से एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह को जाया करते थे। लेकिन गश्त से जहाजों का डुबाना बन्द न हुआ तब १९१७ ई० से कन्वाय (पहरे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रथा चली। इस प्रथा के अनुसार लड़ाका जहाज व्यापारी जहाजों को इस प्रकार घेर कर चलते थे कि सबमेरीन उन पर आक्रमण न कर सके। ३० जहाजों का बेड़ा काफी बड़ा समझा जाता था। लेकिन इस ढंग से चलने में जहाजों को बहुत देरी लगती है। इसी से आरम्भ में कुछ लोग इसके विरुद्ध थे। पिछली लड़ाई में अँग्रेजी जहाज आयरलैण्ड और फ्रांस के तट पर स्थित बन्दरगाहों का

संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने ब्रिटेन को सैनिक सामान बढ़ती हुई मात्रा में देना आरम्भ किया वैसे वैसे हेलीफैक्स बन्दरगाह पर कनवाय के जहाजों की भीड़ बढ़ती गई। इस कनवाय में कुछ सामान वाले जहाज बहुत धीमी चाल से चलते थे। इसलिये तेज जहाजों को भी धीमी चाल से चलना पड़ता है।

शत्रु के भूले भटके जहाजों के आक्रमण से बचने के लिये ब्रिटिश बेड़े को गश्त लगाने का कार्य

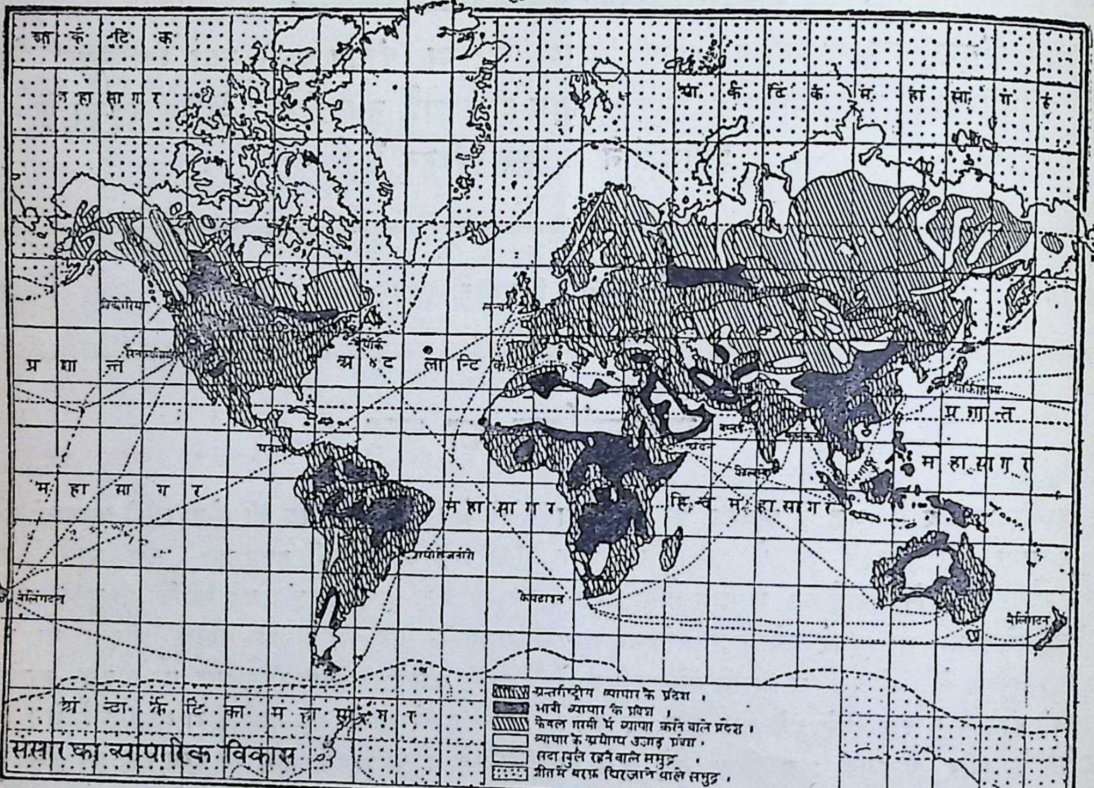

संसार का व्यापारिक विकास

प्रयोग कर सकते थे। इसलिये उस समय समुद्री रक्षा का अधिक सरल था। वर्तमान युद्ध में पनडुब्बी नावों के आक्रमण के साथ साथ हवाई जहाज भी समुद्री जहाजों पर आक्रमण करते हैं।

वर्तमान युद्ध के छिड़ते ही ब्रिटेन ने अपने जहाजों को शत्रु के आक्रमण से बचाने के लिये कनवाय प्रथा का अनुसरण किया। लेकिन संयुक्त राष्ट्र अमरीका तटस्थ है। इसलिये अमरीकन तट पर केवल नोवा स्कोशिया के बड़े बन्दरगाह हेलीफैक्स से ही ब्रिटिश कनवाय प्रस्थान कर सकता था। जैसे जैसे

फिर भी जारी रखना पड़ा। मारटी विडिया के पास जर्मन जेबी जहाज ग्राफस्पी के नष्ट हो जाने से दूर के भागों में शत्रु के आक्रमण का भय जाता रहा।

इस बार बाल्टिक सागर में जर्मनी के जहाजी बेड़े का भय न था। इसी से बहुत से ब्रिटिश लड़ाका जहाज उधर से मुक्त होकर पहरे के काम में लग गये ब्रिटेन के पास आरम्भ में छोटे छोटे लड़ाका जहाजों की कमी थी। इसलिये जब तक फ्रान्स स्वाधीन रहा तब तक समुद्री मार्ग की रक्षा के लिये फ्रान्स से बड़ी सहायता मिली। वर्तमान समुद्री लड़ाई ठीक उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान से आरम्भ हुई जहां पहली लड़ाई समाप्त हुई थी। जर्मन जहाज़ों ने उत्तरी (नार्थ) सागर में ब्रिटेन के पड़ोस में पनडुब्बी नावों से आक्रमण आरम्भ किये। पहली लड़ाई और बर्तमान लड़ाई के बीच में टारपीडो के वेग और निशाने पर गोली छोड़ने में बड़ी उन्नति हुई। उनके वजन में कोई विशेष अन्तर न पड़ा। दोनों ओर शब्द सुनने वाले मन्त्रों में बड़ी उन्नति हुई। पिछली लड़ाई में जर्मन पनडुब्बा जहाज प्रायः लड़ाका जहाजों पर आक्रमण करते थे। इस बार वे व्यापारी जहाज़ों पर विशेष रूप से आक्रमण करने लगे। नार्वे पर अधिकार जमाने के पहले जर्मन हवाई जहाज़ों के अड्डे बहुत दूर पड़ते थे। वहां से वे अपनी अपनी पनडुब्बी नावों को कोई बड़ी सहायता हवाई जहाज़ों द्वारा नहीं पहुँचा सकते थे। जब जर्मनी ने फ्रान्स, बेल्जियम और हालैण्ड के तट पर अधिकार कर लिया। तब से जर्मन हवाई जहाज़ अपने भीषण आक्रमणों से पनडुब्बी नावों को बड़ी सहायता पहुँचाने लगे।

ब्रिटेन डोवर प्रणाली (स्ट्रेट) के द्वार को इस बार भी जर्मन हवाई जहाज़ों के लिये बन्द कर दिया। स्काटलैण्ड और इंगलैण्ड के समस्त पूर्वी तट पर जहाज़ों ने सुरंगें बिछा दीं। अपने और मित्रों के जहाज़ों को आने जाने के लिये यह द्वार छोड़ दिये। खुले हुये द्वार पर मेंग्नेटिक (चुम्बकीय) सुरंगों को छोड़ने वाले हवाई जहाज़ों को पकड़ने के लिये इंगलैण्ड वालों ने हवाई जाल फैला दिये। इँगलैण्ड ने इस प्रकार अपने तट की ऐसी रक्षा की कि जर्मनी की पनडुब्बी नावों को भारी हानि उठानी पड़ी।

फ्रांस के हार जाने से ब्रिटेन को फ्रांसीसी बेड़े की सहायता न मिल सकी। उधर इटली का जहाजी बेड़ा जर्मनी के हाथ में आ गया। जब से फ्रांस के समुद्री अड्डे जर्मनी के हाथ में आ गये तब से जर्मनी सीधे अटलांटिक तट से ब्रिटेन पर आक्रमण करता है। नाज़ी लोगों ने बड़े पैमाने पर (प्रति मास २५) सबमेरीन या पनडुब्बी नावों का बनाना आरम्भ कर दिया है। ब्रिटिश हवाई हमलों से इसमें कुछ बाधा अवश्य पड़ रही है। फिर भी जर्मन पनडुब्बी जहाजों ने हमला करने के ढंग में उन्नति कर लिया है। पहले एक एक पनडुब्बा जहाज़ अलग अलग हमला करता था। आजकल पनडुब्बे जहाज़ झुंड बना कर एक साथ हमला करते हैं। एक बड़ा जहाज़ उनका (सरदार) नेता होता है। वे रेडिओ द्वारा एक दूसरे से बातें कर लेते हैं। ऊपर हवाई जहाज़ भी रेडियो द्वारा उन्हें आदेश देता रहता है। इससे आजकल हवाई जहाज़ों को अपना पेरस्कोप (जिसके द्वारा वे पहले अपने पड़ोस में शत्रु के जहाज़ का पता लगाते थे) काम में लाना नहीं पड़ता है। वे शत्रु के कनवाय (जहाज़ों के समूह) की ताक में नीचे छिपे रहते हैं। संकेत पाते ही वे कनवाय पर हमला करते हैं। ऐसी दशा में सबमेरीन को समूल नष्ट करना कठिन हो जाता है। लड़ाका जहाज़ों की संख्या बढ़ने से ही उनका नियन्त्रण हो सकता है। आजकल ब्रिटिश जहाज़ों के लिये सब से अधिक भयानक क्षेत्र आयरलैंड के पश्चिम में ३०० मील से ७०० मील तक फैला हुआ है। उत्तर में यह आयरलैंड से इंगलिश चैनल तक चला गया है। जब अमरीका की ओर से आने वाले ब्रिटिश कनवाय के जहाज़ इस युद्ध क्षेत्र में प्रवेश करते हैं तब उन पर हवाई जहाज़ बम्ब वर्षा करते हैं। जैसे जैसे जहाज़ ब्रिटिश तट के पास पहुँचते हैं वैसे वैसे बम्ब-वर्षा का वेग बढ़ता जाता है। फ्रांसीसी तट पर अधिकार हो जाने के कारण केपटाउन और भूमध्य सागर की ओर से आने वाले जहाज़ों पर भी नाज़ी आक्रमण होते हैं। कुछ नाज़ी पनडुब्बे दूर जाकर हमला करते हैं और फिर अपने नियत स्थान पर लौट आते हैं। कुछ जर्मन व्यापारी जहाज़ भी ऐसे लुटेरे बन गये हैं कि वे दूर के समुद्रों में पहुँच कर लूट मार करते हैं। ब्रिटेन को सदा जर्मन आक्रमण का भय लगा रहता है। इससे छोटे छोटे जहाज़ों को सदा तट के पास रखना पड़ता है। इसी से जर्मन हवाई जहाज़ों की और भी अधिक हिम्मत बढ़ गई। वे दिन रात ब्रिटिश जहाज़ों पर आक्रमण करते हैं।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका और दक्षिणी अमरीका के कुछ स्वतन्त्र राष्ट्रों ने अमरीका के पास वाले समुद्र को लगभग १००० मील तक उदासीन घोषित किया है। इसके अनुसार वे युद्ध में सम्मिलित राज्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(जर्मनी और इंगलैंड) को लड़ने से तो नहीं रोक सके हैं लेकिन वे इन राज्यों के जहाज़ों को इस ओर देख कर तुरन्त लड़ने वाले घोषित कर देते हैं। इससे प्रायः जर्मनी को हानि होती है क्योंकि जर्मन जहाज़ की सूचना पाते ही ब्रिटिश बेड़े के जहाज उसका पीछा करने को चल देते हैं। जर्मन जहाज को यह लाभ होता है कि वह अपने को बचाने के लिये सतर्क हो जाता है और स्थान बदल देता है।

ईजियन सागर से कालासागर का जलमार्ग

भूमध्य सागर डार्डनेलस, मारमोरा और वास्फोरस जलसंयोजकों द्वारा कालासागर से मिले हुये हैं। इस समुद्री मार्ग में कुस्तुन्तुनिया (स्तम्बूल) का प्रसिद्ध हार्बर गोल्डन हार्न है। पनामा और स्वेज़ नहर के बाद युद्ध सम्बन्धी दृष्टि से इसी की गणना है। व्यापारिक दृष्टि से यह उतना प्रसिद्ध नहीं है तो भी यह काला सागर की कुँजी का काम करता है।

कुछ समय तक ये जलसंयोजक योरुपीय राजनीति में कांटे का कार्य करते रहे। अँग्रेज़ जाति इन सब को डार्डेनलस के नाम से पुकारतां है, यद्यपि डार्डेनल इस लम्बे जलमार्ग का केवल एक भाग है। १९१४ की बड़ी लड़ाई में यहां बहुत आदमी मारे गये।

मारे जाने वाले अँग्रेज़ सैनिकों की कब्रें गेल्ली पोली स्थान पर बनी हुई हैं। अँग्रेज सैनिक इन जल संयोजकों को रूसी जहाज़ों के लिये खोलना चाहते थे। स्कुतारी स्तम्बूल के दूसरी ओर स्थित है। वहां पर उन अँग्रेज़ सैनिकों की कब्रें हैं जो रूसी जहाजों को इस जल मार्ग से निकालने में मारे गये थे।

ये जलसंयोजक टर्की का है। रूम सागर में बलगेरिया, रूमानिया और रूस के जहाज़ इसी मार्ग हो कर जा सकते हैं। १९३६ ई० में इनके मोरचा बन्दी करने के लिये इस से सम्बन्ध रखने वाले राज्यों की आपस में सभा हुई थी। काला सागर के तट उपजाऊ हैं और समीप ही संसार प्रसिद्ध मिट्टी के तेल के कुएँ हैं। वर्तमान युद्ध में जर्मनी ने इस ओर अपना प्रभुत्व बढ़ा लिया है।

मिट्टी के तेल और अनाज का व्यापार काला सागर होकर काफी मात्रा में होता है। इसके वृद्धि होने की भी बहुत सम्भावना है, किन्तु यह काला सगर के चारों ओर के राजनैतिक तथा आर्थिक नीति पर निर्भर है। टर्की स्वयं कोई बड़ा जहाज़ी देश नहीं है। १९३५ ई० में टर्की के जहाज़ों की संख्या १८२ थी, जिसमें बहुत से प्राचीन ढङ्ग के जहाज भी थे।

ईजियन सागर होकर डार्डेनलस में आते हैं। इसकी लम्बाई ४७ मील और चौड़ाई ३ से ४ मील

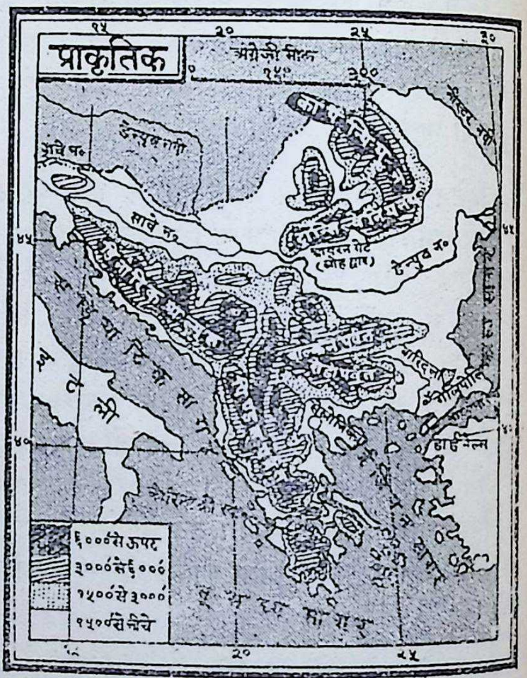

तक है। इनमें होकर मारमोरा सागर को मार्ग जाता है जिसकी लम्बाई १७५ मील और चौड़ाई लगभग ५० मील है।

उत्तर की ओर मारमोरा संकरा हो गया है और बासफोरस के नाम से प्रसिद्ध है। इसके योरुपीय तट पर स्तम्बूल और गोल्डन हार्न तथा एशियाई तट पर स्कुतारी स्थत हैं। बास फोरस की लम्बाई लगभग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८ मील है। यह अधिक से अधिक तीन मील और कम से कम ½ मील चौड़ा है।

स्तम्बूल अब टर्की की राजधानी नहीं है। टर्की की बर्तमान राजधानी अंकारा या अँगोरा है। स्तम्बूल की जनसंख्या ७४०००० और अंगोरा की १२३००० है। कुछ सालों पहले स्तम्बूल की जनसंख्या १० लाख से अधिक थी। यहां का मुख्य व्यापार यूनानी, यहूदी और आर्मिनियन लोगों के हाथों में है।

लन्दन से स्तम्बूल समुद्री मार्ग से ३१०७ मील की दूरी पर है। बासफोरस तट के निवासी स्तम्बूल नावों पर आया जाया करते हैं। गोल्डन हार्न बासफोरस की एक भुजा है और चार या पांच मील लम्बा है। इसमें एक मीठे पानी की नदी आकर गिरती है।

स्तम्बूल गोल्डन हार्न के दक्षिण की ओर स्थित है। यह नगर तुर्की है। हार्बर के उत्तर की ओर गलाटा और पेरा की बस्तियां हैं। गलाटा में में व्यापारी लोग और पेरा में विदेशी लोग रहते हैं। हार्बर में दो नावों के पुल बने हुये हैं। यह हार्बर तीन भागों में बँटा है (१) बाहरी पोर्ट (२) गलाटा पोर्ट और तीसरा भीतरी पोर्ट है। बाहरी बन्दरगाह सेरागलियो के आगे स्थित है।

गलाटा बन्दरगाह के घाटों की लम्बाई २४८० फुट है। इस बांध के दूसरी ओर स्तम्बूल का बांध है जिसकी लम्बाई १२४० फुट है। बास फोरस के एशियाई तट पर हैदर पाशा स्टेशन है। यहां पर समुद्री घाट है। इन घाटों पर सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाएं प्राप्त हैं। इन घाटों पर तैरती हुई क्रेन भी हैं जो ५० टन (१४० मन) तक सामान उठा सकत हैं।

यहां पर तीन जहाज बनाने वाले घाट हैं जिनमें सबसे बड़े घाट की लम्बाई ५१० फुट है। जहाज उतारने वाले घाट चार हैं और सब से बड़ा घाट १७६ फुट लम्बा है। योरुप और एशिया के बीच सारा व्यापार वासफोरस होकर होता है। स्तम्बूल और कान्सटान्टा के बीच सवारी वाले स्टीमर आया जाया करते हैं। कान्सटान्टा काला सागर पर रोमानिया का एक बन्दरगाह है।

यद्यपि स्तम्बूल में बड़े बड़े जहाज कभी कभी आते हैं तो भी यहां पर हैम्बर्ग, गोथेनबर्ग, राटर्डम, माल्मोरोएन और ऐन्टवर्प आदि बन्दरगाहों से जहाज आया जाया करते हैं। कभी कभी स्वेज नहर होकर चीन जापान से भी जहाज आते हैं।

भूमध्य सागर और काला सागर के जहाजों की मात्रा अधिक रहती है। ये जहाज जनेवा, वेनिस, ट्रीस्टे, सिकन्दरिया, साइप्रेस, ब्रेला, कान्सटैन्टा, गलाटी, वनी, ओडेसा और बातूम बन्दरगाहों से आते जाते हैं। इनके सिवा छोटे छोटे बोट तथा सवारी जहाज भी चला करते हैं।

काला सागर का क्षेत्रफल १६४,००० वर्गमील है। काला सागर में ४८० फुट की गहराई से कम वाले भाग में जहाज नहीं रुकते क्योंकि वहां पानी में गन्धक की मात्रा अधिक है। काला सागर का पानी खारा और रूमसागर का पानी नमकीन है, इसका मुख्य कारण यह है कि काला सागर में डैयून्ब, नीपर, डनीस्टर, बग और कूबान आदि नदियां आकर गिरा करती हैं।

काला सागर में ज्वार-भाटा नहीं आता, किन्तु यहाँ तेज धाराएं बहा करती हैं। इस सागर की अधिक से अधिक गहराई ७२०० फुट है। जाड़े की ऋतु में कालासागर में भयानक सर्दी पड़ती है और पानी की ऊपरी तह जम जाती है। क्रीमिया का प्रायद्वीप गर्मी की ऋतु में बड़ा सुहावना रहता है किन्तु जाड़े की ऋतु में यहां कड़ी सरदी पड़ती है। क्रीमिया के उत्तर-पूर्व में ऐजब सागर है, जिसमें केर्च का बन्दरगाह है।

बलगेरिया के मुख्य बन्दरगाह वरगस और वरना, रूमानियो के कान्सटेन्टा, सूकिना, गलाटी और ब्रेला, रूस के ओडेस्सा, पोती और बातम टर्की के टेबी जोन्द और बासफोरस के तटीय छोटे छोटे बन्दरगाह हैं।

टर्की के बन्दरगाहों में किसी प्रकार की वृद्धि होने की सम्भावना नहीं दिखाई पड़ती, किन्तु ओडेस्सा और बातूम के बन्दरगाह किसी समय पिट्रौल और अनाज के बड़े केन्द्र बन जावेंगे।

बासफोरस की जल डमरू मध्य काफी गहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कालासागर से यहां को आने वाली समुद्री धारा बड़ी तीव्र होती हैं। इसीलिये प्राचीन काल में यहां पर बहुत से जहाज डूबा करते थे।

बासफोरस का द्वार प्राचीन काल में तटीय तीव्र वायु के कारण इतना खतरनाक था कि लोग कहा कहते थे कि दोनों तटों की चटानें लड़ती हुई जहाज तोड़ने के लिये आया करती हैं। इसके द्वार के रशियाई तट पर अनाटोली कावक और योरुपीय तट पर रोवमेली कावक के किले स्थित हैं। यही दोनों किले बासफोरस के प्राचीन द्वार हैं।

थेरापिया बासफोरस के योरुपीय तट पर स्थित है और राजनीतिज्ञों के हवा खाने का प्रमुख स्थान है। गर्मी के दिनों में उत्तर से शीत हवाएँ आकर सर्द बना देती हैं। बासफोरस की खाड़ियों की रक्षा अनाटोली हिसार और रोवमेली हिसार के किलों द्वारा होती है। बासफोरस के दोनों गहरे तटों पर मकानात इतने समीप के हैं कि बहुधा कुहरे की ऋतु में धुंधलेपन के कारण जहाज मकानों में टक्कर खा गये हैं।

बासफोरस की खाड़ी घुमावदार होने और प्रचंड वायु के चलने के कारण जहाजों को खेने में अधिक कठिनाई हो जाती है।

बास फोरस की भाँति डारडेनल्स जल संयोजक भी प्रसिद्ध हैं। गाल्लिपोली का प्रायद्वीप योरुपीय तट पर है यह ५२ मील लम्बा है। प्राचीन समय में इसके दोनों (योरुपीय तथा एशियाई) तटों पर किले थे और उसी के कारण इसका नाम डारडेनल्स पड़ा।

१९१५ ई० में गाल्लिपोली प्रायद्वीप में अधिक युद्ध हुआ। प्राचीन समय में एशियाई तट पर ट्राम इन जल संयोजकों की कुन्जी माना जाता था। जब युनानी लोगों ने ट्राम जीता तो उन्होंने कालासागर पर व्यापार करना तथा नई बस्तियाँ बसाना आरम्भ किया। डारडेनल्स के खाड़ी की चौड़ाई १३०० गज है। यहां पर धार बड़ी तेज है। चारडक के आगे चलने पर कारा की अंतरीप है और उसके आगे मारमारा का टापू और सागर है।

प्राचीन समय में ६६० वर्ष ईसा के पूर्व बैजनटाइन नगर कुस्तुनतुनिया के स्थान पर बसा था। रोमन बादशाह कान्स्टैन्टाइन ने इस नगर के स्थान को देख कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने फिर से नगर बनाने और रोमन राज्य की उसे राजधानी बनाने का संकल्प किया। कुस्तुन्तुनिया नगर ३०३ ई० में बना। और पूर्वी रोमन राज्य की राजधानी बनाया गया। यह पूर्वी क्रिस्चियंडम और प्राचीन यूनानी चर्च का भी केन्द्र बन गया। यूनानी प्रभाव से प्रभावित होकर यह नगर दुनिया के बड़े नगरों में हो गया और यह एक बड़ा व्यापार, शिक्षा तथा सभ्यता का केन्द्र बन गया।

युद्ध काल में समुद्री मार्ग सब बन्द कर दिया जाता था। गोल्डन हार्न बन्दरगाह के आरपार एक बड़ी लोहे की जंजीर डाल दी जाती थी नगर के चारों ओर बड़ी पुख्ता दीवार बना दी गई थी।

डैन्यूब नदी द्वारा योरुप का सामान रूमसागर द्वारा मिश्र का साम कुस्तुन्तुनिया आता था। धीरे धीरे यह दुनिया में सबसे बड़ा व्यापारिक नगर हो गया। १२०२ ई० में बालडविन की अध्यक्षता में क्रूसेडर्स ने नगर पर धावा मारा और अपने अधिकार में कर लिया। इसके बाद ५७ साल तक कुस्तुन्तुनिया में इटली का राज्य रहा।

इटली के पश्चात् तुर्क लोगों ने ३०० जहाजों के साथ नगर पर धावा मारा। तुर्क लोगों ने १४५३ ई० में कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार जमाया। तुर्क लोगों के आक्रमण का प्रभाव दो विस्तृत रूप में दुनिया पर पड़ा। पहला यह कि विद्वान लोग कुस्तुन्तुनिया छोड़ कर इटली चले गये और वहां उन्होंने रिनायसा (नवीन शिक्षा) पर जोर दिया, जिसके कारण लोगों के मस्तिष्क प्रकाशित हो गये। दूसरे इस्लाम ने पूर्व जाने का प्राचीन मार्ग रोक दिया, जिससे स्पेन और पूर्तगाल निवासियों ने भारत जाने का नया मार्ग अफ्रीका के दक्षिण होकर निकाला और अमरीका का पता लगाया।

उस काल में रूमसागर एक मुसलमानी सागर हो गया था। मुसलमान समुद्री डाकू बन गये थे। उनमें कुछ बहुत प्रसिद्ध थे। प्रसिद्ध समुद्री डाकुओं में बरोस्सा (लाल डाढ़ी वाले) प्रधान थे। खैर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्दीन बारबरोसा ने अलजीयर्स को स्पेन वालों से छीन लिया था।

यद्यपि अलजीयर्स और टर्की के बीच बहुत कम सम्बन्ध था, तो भी उन्नीसवीं शताब्दी तक अलजीरिया के समुद्री डाकुओं ने जहाज़ी व्यापार नहीं होने दिया। मिश्र देश भी टर्की के आधीन हो गया था और लगभग सारा रूमसागर का तट तुर्कों के अधिकार में था।

अर्थोडाक्स ईसाइयों का सेन्ट सोफिया का बड़ा चर्च मसजिद बना दिया गया और कुस्तुन्तुनिया के केन्द्रीय भाग तुर्की स्तम्बूल बनाया गया। गलाता और पेरा में दूसरे धर्म के व्यापारियों ने भाग कर अपने अड्डे बनाए। यूनानी, आर्मेनियन और यहूदी लोग जो ईसाइयों द्वारा स्पेन से भगा दिये गये थे, उन्होंने गोल्डन हार्न के उत्तरी किनारे पर आकर अपने निवास स्थान बनाए। मुसलमानों ने ईसाइयों को अपना गुलाम बनाया और ईसाई बच्चों को जबरदस्ती मुसलमान बनाया।

यदि तुर्क लोग अच्छे मल्लाह होते तो अवश्य ही वे कुस्तुन्तुनिया के मालिक होते हुए संसार में एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करते, किन्तु वे न तो अच्छे मल्लाह ही थे और न व्यापारी ही थे, वे केवल सैनिक थे। बहुत समय तक कुस्तुन्तुनिया तो उनके अधिकार में केवल योरुपीय राज्यों में आपस की फूट के कारण रहा।

रूसी व्यापार की उन्नति के कारण १९१४ की लड़ाई के पहले यह एजियन से काला सागर तक का समुद्री मार्ग बहुत उन्नति कर गया था, किन्तु लड़ाई काल में और उसके पश्चात् व्यापार बहुत कम हो गया था। अब फिर से व्यापारिक उन्नति होने लगी हैं और आशा है कि शीघ्र ही यह जलमार्ग अपने प्राचीन प्रधानता को प्राप्त कर लेगा।

जावद की झलक

(ले०—गोविंदराव शङ्करराव नाड़कर्णी 'विशारद')

प्रत्येक स्थान में एक न एक ऐतिहासिक घटना छिपी रहती है। कोई विशेष महत्व की होती है और कोई कम। बहुत से ऐतिहासिक स्थानों को महत्ता भूगर्भ स्थित हो जाने से वह संसार में विशेष गण्य-मान्य नहीं हो सकती। परन्तु शोध करने पर प्रतीत हो जाता है कि प्रत्येक स्थान में एक न एक महत्व-पूर्ण घटना छिपी हुई है। यही हालत 'जावद' की है।

जावद की गणना बड़े शहरों में तो नहीं हो सकती क्योंकि यहाँ न तो विशाल भवन हैं और न प्रेक्षणीय कलात्मक बाजार हैं। परन्तु यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि 'जावद' किसी समय में मेवाड़ के इतिहास में अग्रगण्य शहर बना हुआ था। कारण यह कि इसके चारों ओर सुन्दर कँगूरेदार परकोटा बना हुआ है। इसी परकोटे के अन्दर की तरफ एक चबूतरा सा चारों ओर बना हुआ है और जगह-जगह चढ़ने-उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस परकोटे में स्थान स्थान पर सूराख भी हैं। इससे सिद्ध होता है कि यह गाँव किसी समय किलेबन्दी का काम करता था।

मेवाड़ का इतिहास विशेष कर वीर राजपूतों के शौर्यमय रक्त से रंगा हुआ है। इसके अनुसार हम कह सकते हैं कि मेवाड़ के सब स्थान ऐतिहासिक महत्व रखते हैं। प्राचीन राजाओं को यवन सेनाओं से घोर युद्ध एक बार नहीं बल्कि हजारों बार करने पड़े थे। अनेक बार वीर राजपूत अपनी मातृभूमि की रक्षा के हित केसरिया बाना पहिन कर प्राण झोंक दिये थे। उन वीर सैनिकों की वीर माताओं ने अपने हाथ से अपने पुत्रों तथा पतियों को केसरिया बाना पहिना कर रणाग्नि में प्रवेश करने को उद्यत किया था तथा अपनी मान-रक्षा के लिये स्वतः अग्नि-कुण्ड में कूद कर जौहर कर बैठी (जल गई) थीं। इसका परिणाम ही यही कि आज संसार का प्रत्येक व्यक्ति मेवाड़ के इतिहास का एक एक पृष्ठ सगौरव पढ़ता है। इन राजपूतों को एक क्षण के लिये भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली के बादशाहों ने आराम से नहीं बैठने दिया था। तभी तो उन्हें नगर अथवा गाँवों की रचना सुरक्षित ढंग से करनी पड़ी थी। आज मेवाड़ में हम घूमें तो छोटे से छोटा गाँव भी परकोटे से घिरा हुआ है। इस चिन्ह को लेकर यदि जावद के क्षेत्र-फल पर विचार कियां जाय तो कहना होगा कि 'जावद' उस काल में एक उन्नतिशील नगर था।

'जावद' नगर को स्थिति बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे की केसरपुरा स्टेशन से ठीक पूर्व की ओर ७ मील दूर है। उक्त स्टेशन से एक पक्की सड़क जावद तक गई है। तथा उसी कम्पनी के विख्यात नीमच स्टेशन से यह शहर १२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां से भी एक पक्की सड़क जावद तक गई है। इस शहर के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में चार दरवाजे तो हैं ही परन्तु दक्षिण-पूर्व में भी एक दरवाजा और है जिसे रामपुरा दरवाजा कहते हैं। अन्य दरवाजों को क्रमानुसार नावल, खोर, अठाना और नीमच दरवाजा कहते हैं। ये नाम उसी दिशा में बसे हुये मुख्य नगरों द्वारा पड़े हुये हैं।

बावल एक टांका है जो पहाड़ की तरेटी में बसा हुआ है। यहां के महाराज रियासत ग्वालियर में आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। तथा यहाँ के प्रमुख कार्य-कर्ताओं में से हैं। यहां के महाराज राजपूत जाति के हैं जो चितौड़ के राणाओं से सम्बन्ध रखने वालों में से हैं। यहां एक विशाल राजभवन बना हुआ है तथा इसके पूर्व में एक पहाड़ी तंग घाटियों को लिये हुये खड़ी है। यह जावद से तीन मील दूर है। यहां तक कोई सड़क नहीं गई है। अब एक नई योजना के अनुसार जावद से मोरवन तक सड़क निकाली जा रही है जो घाटे पर (मेवाड़ के मध्य में) जाने वाली सड़क से सम्बन्ध रक्खेगी। बावल इसी सड़क के किनारे पर रहेगा।

इधर के करीब करीब सब गांवों की रचना नदी या नालों के किनारे ही पर हुई है। अर्थात् चाणक्य नीति का पालन हुआ है। इसी के अनुसार बावल भी एक नदी के किनारे बसा हुआ है जिसे 'गम्भीरी नदी' कहते हैं। इसी नदी के किनारे 'अठाना' नामक राजपूत सरदार का टांका बसा हुआ है। यह भी चित्तौड़ के राणाओं के सम्बन्धियों में से हैं। यहां के महल व बाग बगीचे विशेष प्रेक्षणीय हैं और नदी तट पर होने के कारण इनकी शोभा में विशेष सौंदर्य मिल गया है। यहां के भवन की बनावट में सुन्दरता व कला का प्रदर्शन कारीगर ने बड़ी चतुराई से किया है प्रमाणतः एक कहावत बन गई है 'अठाना' के महल, विनोता की बावड़ी यहां के निवासी जब जब किसी सुन्दर महल का वर्णन करते हैं तो उसकी सुन्दरता को इन्हीं महलों की सुन्दरता से तोलते हैं।

वह टांका (जागीर) जावद से तीन मील उत्तर में स्थित है। अभी दो तीन साल हुये अठाने के महाराज ने करीब दो मील तक एक जावद की ओर सड़क बना दी है। शेष हिस्से में, जो स्टेट ग्वालियर में है कच्चा मार्ग बना हुआ है परन्तु इस हिस्से में भी सड़क बनाई जाने की योजना हो रही है। इस जागीर के उत्तर में उन्हीं पहाड़ों के सिलसिले आ गये हैं जो कि बावल में हैं। ये अरवली पर्वत की प्रशाखाएँ हैं। इन पर्वतों में प्रकृति-सौंदर्य युक्त स्थानों पर शिवालय बने हुये हैं। ये तीर्थ स्थान से बन गये हैं। यहां साल भर में एक बार बैशाखी पूर्णिमा पर मेले लगा करते हैं। इनके नाम 'सुखानन्द' 'सांडेश्वर' 'बहावाडेश्वर' आदि हैं। यहाँ हर साल दूर दूर के लोग आते हैं। इनके नाम पर एक दंत कथा भी बन गई है। यहाँ के हरे जंगलों तथा अनेक स्थानों में प्रकृति अठखेलियां करके सबं प्राणियों को आकर्षित किया करती है। इन स्थानों पर पहुँचने के बाद मानव के हृदय में संसार से अरुचि उत्पन्न हो ईश्वर से लगन लग जाती है तथा उसकी अनुपम रचना पर सब के नेत्र तथा हृदय जिधर जाते हैं वे वहीं ठिठक जाते हैं।

यदि हम अठाने दरवाजे या बावल दरवाजे जाकर खड़े हो जांय तो प्रातःकाल से शाम तक भील तथा अन्य पहाड़ी जातियां अपने सिरों, गधों, पाड़ों अथवा ऊँटों की पीठ पर लकड़ी के गट्ठर या घास लादे जावद की ओर आते हुये दीख पड़ते हैं। साथ ही साथ शहद, गोंद, कोयला, टीबरू के पत्ते, करौंदे आदि भी इन पहाड़ों से यहां लाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि यहां के निवासियों का जीवन इन्हीं पर्वतीय पैदावारों पर निर्भर है। अब ऐसे ही हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य तीन दरवाजों पर जाकर देखेंगे तो गेहूँ, जौ, ज्वार आदि नाज को बैलगाड़ी में लादे कृषक इधर की ओर आते हुये दीख पड़ेंगे अर्थात् जावद के उत्तर-पूर्व में पर्वत हैं तथा अन्य दिशाओं में कृषि योग्य मैदान हैं।

जावद के आसपास उपजाऊ जमीन होने से चारों ओर खेत ही खेत दिखाई देते हैं। परिणामतः यहाँ विशेष चरागाहें नहीं हैं। इसलिये जावद के मानानुसार यहाँ चौपाये (गाय-भैंस) कम ही पाले जाते हैं। तभी तो शाम सुबह इन दरवाजों की ओर से बड़े बड़े दूध के मटके लिये पहाड़ निवासी यहाँ बेचने आते हैं। दिन को चमड़ा भी यहां बिकने को आता है और इसके बदले में अन्न, कपड़ा, तेल, दवाइयाँ, काँच, गुड़, शक्कर, नमक, गरम मसाला, करलरी सामान आदि खरीद कर ले जाते हैं।

गंभीरी नदी के किनारे बसे हुये उम्मेदपुरा (तारापुरा) में जो जावद के उत्तर-पूर्व में बसा हुआ है रंगाई तथा धुलाई का काम बहुतायत से होता है। इसलिये रंगे हुये थान के थान भी अठाने से जावद में आते हैं। यह काम हिन्दू छिप (जाति) करते हैं। इसलिये ये लोग उम्मेदपुर में बहुत रहते हैं। यहाँ का रंगा हुआ कपड़ा इंदौर, उज्जैन, रतलाम, मन्दसौर, अजमेर, उदयपुर आदि शहरों के बाजारों में बिकता है। ये लोग इस कार्य में पूर्ण दक्ष हो गये हैं। उम्मेदपुर में जगह जगह नदी किनारे रंग के कुण्ड बने हुये हैं। तथा अठाने में चरखा सिस्टम द्वारा मज़बूत कपड़ा बुना जाता है। जो जावद में तो बहुत ही बिकता है। तिस पर भी आजकल लड़ाई की वजह से इस कपड़े की कदर इतनी बढ़ गई है कि घर घर में 'अठाने की पछेवड़ी' बिराजी हुई है।

जावद के दक्षिण में खोर दरवाजा है। इधर से एक पक्की सड़क गई है जो 'खोर' होती हुई केसरपुरा स्टेशन को गई है तथा 'बाम्बे-आगरा रोड' की एक शाखा 'महू-नसीराबाद रोड' को जोड़ती है। इस दरवाजे पर हमें दस-बारह तांगे राह देखते हुये मिलेंगे जो यात्रियों को खोर और कसरपुरा ले जाते हैं।

खोर का महत्व अभी तक घटा हुआ था परन्तु अब से आर्के ऑलॉजीकल डिपार्टमेन्ट ने यहां खुदवाई की है तब से यह स्थान उल्लेखनीय बन गया है। यहाँ के खँडहरों को देखते हुये चित्तौड़ की प्राचीन इमारतों का स्मरण हो आता है। यहां से एक मार्ग भूगर्भ से होकर २६ मील के फासले पर चित्तौड़ के किले में जा निकला है। इस मार्ग का दरवाजा एक विशाल चबूतरे पर बना हुआ है। इस चबूतरे की बनावट तथा आस पास के पत्थरों की कारीगरी देखते हुये हमें महल का ज्ञान हो आता है। जगह जगह दरवाजों के स्तंभ स्मारक-स्वरूप खड़े हुये हैं। आज कल यह 'खोर-चित्तौड़' मार्ग चोरों एवं ठगों को विशेष सहायक बन जाने के कारण, बन्द कर दिया गया है परन्तु अन्दर उतर कर देखने से पता चलता है कि यह मार्ग पक्का पत्थर का बना हुआ है। बीचोबीच पत्थर के सुन्दर खम्बे भी लगे हुये हैं। इस गांव के आस पास और भी मन्दिर बने हुये हैं जिन्हें 'नौतोरण' कहते हैं। मेवाड़ में 'तोरण' शादी के वक्त लकड़ी के अर्धचंद्राकार वस्तु को कहते हैं जिसे दूल्हा अपनी तलवार से खंडित कर 'भांवर' में बैठता है। वास्तव में इन तोरणों के दरवाजों की बनावट भी 'तोरण' जैसी ही है। इसी कारण से यहां के लोगों ने यह मत कायम कर लिया है कि ये श्री रामचन्द्र जी की शादी के समय बने थे। यद्यपि यह मत अक्षरशः असत्य हो सकता है परन्तु इतना जरूर कह सकते हैं कि ये १३वीं या १४वीं सदी के बने हुये होंगे। इनकी दशा दिन प्रति दिन बिगड़ती जा रही थी परन्तु दो साल से सरकार की इधर दृष्टि गई। इससे इनका उचित सुधार हो गया है। इनमें से एक 'तोरण' में जो बिलकुल सड़क के किनारे है सूकरावतार-स्मारक विशाल सूकर मूर्ति पत्थर की बनी हुई है। क्षत्रियों के शिव उपासक होने से यहां शिव मूर्ति भी है। वैसे तो हर एक गांव में जगह २ शिवलिंग तथा नंदी की मूर्तियां स्थापित हैं। आशा है इनकी खोज पुरातत्ववेत्ता पूर्ण रूप से करके इनकी महत्ता पुनः इतिहास में चमका देंगे।

इसके आगे नयागांव जाते हैं जिसे एक दूसरे छोटे से गाँव केसरपुरा के नाम से केसरपुरा स्टेशन भी कहते हैं। 'यहां 'बारह पत्थर' नाम से गांव और रेलवे लाइन के बीच में एक चौरस मैदान है। इस स्थान का उल्लेख 'मेवाड़ गौरव' नामक पुस्तक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी तरह से हो चुका है। यह चौरस मैदान फ़ौजों के ठहरने का काम देता था। केसरपुर स्टेशन का महत्व 'जावद' नगर पर ही है। यहां का माल गोदाम जावद की पैदावार तथा जावद को मांग की बदौलत ही चमक रहा है अन्यथा यहां कुछ भी नहीं मिल सकता।

जावद के वे व्यापारी जो मेवाड़ से व्यापार करते हैं। यहीं होकर आते जाते हैं और मालवे से व्यापार करने वाले व्यापारी 'नीमच-स्टेशन' द्वारा आते जाते हैं। इससे हम कह सकते हैं कि नीमच दरवाजे पर भी तांगे राह देखते हुये मिलेंगे। नीमच के माल गोदाम पर मालवे का वह माल जो जावद, बघाना, नीमच खास व नीमच केंट, मनासा, सिंगोली आदि को जाने वाला है और उक्त स्थानों से आने वाला माल पाया जाता है। जैसे जौ, ज्वार, मक्का, उरद, गेहूँ, दालें, तिलहन, लकड़ी, पत्थर, गोंद, गन्ना, कपास आदि यहाँ की पैदावार हैं। बाहर से आने वाला तम्बाकू, शक्कर, कपड़ा, गरम मसाले, नमक की बोरियाँ, लोहे, काँच का सामान, रबर का सामान, दवाइयाँ आदि हैं।

नीमच केन्ट में अँग्रेजों की छावनी होने से बड़ी बड़ी इमारतें फौज के लिये बनी हुई हैं। ये दो साल पूर्व जन-शून्य थीं परन्तु आजकल लड़ाई के कारण यहां पंजाबी सैनिकों की भीड़ सी लगी हुइ है। इस कारण से नीमच कैंट का बाजार भी उन्नति पर है। सड़कों का प्रबन्ध भी ठीक है। इन सैनिकों की वजह से पाश्चात्य खेल जैसे हाकी, फुटबाल आदि के टूर्नामेन्ट्स हुआ ही करते हैं। जावद का दूध, घी, भी रोज साइकिल द्वारा यहां पहुँचाया जाता है। जिससे जावद में दूध घी आदि वस्तुएँ महँगी हैं।

अब रामपुरा दरवाजा और रह गया है। इस दरवाजे से भी सड़क गई है जो थोड़ी दूर जाकर नीमच रोड से मिल जाती है। इस सड़क के किनारे दो कपास के जोन तथा एक तेल का कारखाना बने हुये हैं जो आज कल तो बन्द हैं परन्तु सरदी तथा बसंत ऋतु में कार्य करने लग जाते हैं तथा प्रति दिन पांच बजे रात को प्रातःकाल इनका भोंपा जावद वासियों को जगा दिया करता है। इन दिनों में आस पास के देहातों की तिलहन, कपास आदि वस्तुएँ गाड़ी में खिंचे चले जाते हैं। म्युनिसिपल्टी के कर्मचारी जगह जगह एक एक पेटी लेकर घूमते हुये दिखाई देते हैं और आमदनी बढ़ाते हैं। जीनों का काम आरम्भ होते ही ऊँटों के झुंड के झुन्ड लकड़ी लदे हुये जीनों की ओर चले आते हैं।

हां! तो रामपुरा दरवाजे से निकलने वाली सड़क आगे मनासा होकर रामपुरा को जाती है जो इन्दौर स्टेट का बड़ा शहर है। रामपुरा यहां से सीधे मार्ग द्वारा ४० मील से भी अधिक दूर है परन्तु यह सिद्ध होता है कि जब यह दरवाजा बना था तब उन्नतिशील नगर इस दिशा में रामपुरा ही था। तथा यहां के लोग इन (रामपुरा) शहर तक आया जाया करते थे। यही कारण है कि इस दरवाजे का नाम रामपुरा दरवाजा रक्खा गया परन्तु आज कल इस दरवाजे से जी० एन० आई० टी० कम्पनी की मोटर रोज प्रातः काल नीमच जाकर दोपहर को आती है तथा एक घंटे के बाद पुनः नीमच जाकर रात को आठ बजे वहां आकर विश्राम करती है। इस मोटर के चालू होने से मालवे से जावद आने वाले व्यापारियों को बड़ी सुविधा हो गई है।

आस पास का वर्णन करने के पश्चात् अब मुझे जावद खास का वर्णन भी शुरू कर देना चाहिये। हां? तो जावद एक व्यापारिक मंडी है। आस पास के देहातों में होने वाला माल जैसे ज्वार, मक्का, गेहूँ, जौ, चना, मूँग, उड़द, चावल, अरहर, तिल्ली अलसी, कपास, सनादि यहां के बाजार में मौसमानुसार बिकने को आते हैं। यहां हाल ही में एक गुड़ का कारखाना खोला गया है। इसलिये सर्दी के मौसम में असंख्य गाड़ियाँ आस पास के गाँवों से गन्ना ले लेकर आती हैं। शेष गन्ना केसरपुरा स्टेशन कुछ से कुछ मेवाड़ में करेड़ा स्टेशन पर तथा कुछ मालवे में 'जावरा' बिकने को जाता है। कारण कि यहां शक्कर के कारखाने बन गये हैं। नाज सारा "धान मंडी" बाजार में जो गांव के पूर्व दिशा में तथा लक्ष्मी नाथ के चौक के सामने जाने से मिल सकता है। इकट्ठा होता है। सर्दी के मौसम में तथा बसंत ऋतु में यहां की धान मन्डी गरम रहती है। फसलें रबी और खरीफ की होने से साल में उक्त वर्णित दो ही बार खास कर बिकने को आती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि हर फसल के वक्त राज्य निर्मित भूमि कर वसूली का अड्डा रहने से तथा साहूकारों का लेनदेन होने से दीन कृषक अपना अपना माल घर में आते ही यहां बेचने को चले आते हैं। इनके चेहरों पर इन दिनों चमक तथा प्रसन्नता छाई रहती है। परन्तु यहां के व्यापारियों की वाक्चातुरी के जाल में फँस कर जब सस्ते दामों पर माल बेच चुकते हैं और सब कर चुका कर कंगाल बन जाते हैं तब फिर मुर्दाई छा जाती है। इन दिनों व्यापारी लोग अपना गल्ला भर लेते हैं। फिर महँगे दामों विदेशों को भेजकर माला-माल हो जाते हैं। इस प्रकार इसे केन्द्रस्थ-मंडी कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। दीन कृषक इसके बदले में बिनोले, तेल, कपड़ा, लोहा, चूड़ियां लकड़ी के पाट तथा नमक खरीद कर ले जाते हैं। इस गाँव के चारों ओर कच्चे मार्ग इन देहातों तक गये हुये हैं।

यह गाँव एक टेकरी (पहाड़ी) पर बसा हुआ है। और इसके दो ओर एक नाला, जो रामपुरा दरवाजा तथा खोर दरवाजों की सड़क पर बनी हुई पुलियाओं के नीचे होकर बहता है और आगे जाकर गम्भीरी नदी में मिल जाता है। यहां की बस्ती अधिकतर कृषि-प्रधान है। शिक्षित लोग अँगुलियों पर गिने जा सकते हैं परन्तु धाकड़, वैश्य, ब्राह्मण, सिलावट, सुनार, मोची, छिपे, बोहरे, गाड़री (ग्वाले), तेली आदि अधिक हैं। किसानी बस्ती होने से यहां की दुकानों में सादा माल ही बिकता है। जैसे मोटा कपड़ा, किसानी जूते, साधारण रंग, कटलरी का सामान तथा लोहे का सामान, तम्बाकू, नमक आदि। परन्तु दिन ब दिन शहर वासियों का रहन-सहन फैशन की ओर झुकने से हर बात में नवीनता आती जा रही है। फिर भी धर्मावलंबी विशेष होने से तथा पुराने विचार होने से मकानों की बनावट वायु रहित है तथा मोरियों के बनिस्बत पालों तथा कुंडों में सड़ा जल, पेशाब आदि इकट्ठा करके सड़कों पर फेंकने का आम रिवाज सा बन गया है। इसी कारण यहां की गलियां खरंजेदार होने पर भी पेशाब तथा टट्टी से गन्दी ही रहती हैं। परन्तु कहीं कहीं वैज्ञानिक ढंग के वायुदार मकानात बन रहे हैं। वह भी इसलिये कि यहां तहसीलदार, न्यायाधीश आदि जैसे शिक्षित पुरुष रहने लगे हैं। यहाँ पर सर्वोत्तम एवं पुरानी इमारत, 'आबाजी की हवेली' तथा "सिपाणी की हवेली" है। ये कला की दृष्टि से तो इस शहर भर में अपना मस्तक सब से ऊँचा रखती है। पहिली इमारत तो भग्नावस्था में है परन्तु दूसरी इमारत अब भी तल घर लिये ज्यों की त्यों खडी है। तीसरी 'श्रीराम बलदेव जी की हवेली' भी प्रेक्षणीय है।

यहां पर दो मन्दिर मुख्य हैं। पहिला गांव के दक्षिण की ओर लक्ष्मीनाथ मन्दिर के नाम से विख्यात है तथा दूसरा खोर दरवाजे से उत्तर पश्चिम की ओर है जिसे 'भूतेश्वर महादेव का मन्दिर' कहते हैं। पहिले मन्दिर के नाम से लक्ष्मीनाथ का चौक भी यहां विख्यात है। नीमच दरवाजे से अठाने दरवाजे तक एक लंबा बाजार दक्षिण से उत्तर को लगा हुआ है।

यहां सरकारी अस्पताल, पाठशाला पुलिस स्टेशन, तहसील, पोस्टआफिस, डाक बँगला आदि का प्रबन्ध है। एक बात और है वह है यहाँ की छपाई जो चारों ओर प्रख्यात है। चूड़ियों का काम भी यहाँ विशेष होता है। परन्तु यह काम मुसलमानों के हाथ में है। ये लोग अठाने दरवाजे की ओर रहते हैं। इसलिये चूड़ियों तथा छपाई का काम भी उधर ही होता है।

यहाँ के लोगों की भाषा 'मेवाड़ी-मालवी' मिश्रित है। उदाहरणार्थ नीचे कुछ वाक्य लिखे जाते हैं:—

वह न मालूम कहाँ 'गया' इसके बदले में बूनी मालम कठेग्यो। इसी को मेवाड़ी में 'वू मालम जी खाणा खड़े ही ग्यो, इन तीन वाक्यों में एक दूसरे का एक न एक शब्द अपभ्रंश रूप में आ गया है।

इस प्रकार 'जावद' की भूगोल है। परन्तु इतिहास में इसके कितने पृष्ठ रंगे जावेंगे यह कार्य तो पुरातत्व वेत्ताओं के हाथ में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध काल में जहाज़ों का उपयोग

अपने मार्ग में शान्ति के समय में जहाज़ों को कोई विशेष बाधा नहीं पड़ती है। युद्ध काल में शत्रु के हवाई जहाज और पनडुब्बे जहाज़ लगातार व्यापारी जहाज़ों को डुबाते रहते हैं। आज कल अटलाँटिक महासागर में जहाज़ों के डूबने का यह फल होता है कि बटेविया जैसे दूरस्थित बन्दरगाह की गोदामों में भी सामान की निकासी न होने से भीड़ लग जाती है।

जर्मन लोगों का कथन है कि अप्रैल १९४१ तक उन्होंने ब्रिटेन के एक करोड़ टन से ऊपर जहाज़ डुबा दिया है। अँग्रेज़ों का कथन है कि अप्रैल सन् १९४१ तक उनके केवल ६ लाख टन के जहाज डुबाये गये हैं। युद्ध आरम्भ होने के प्रथम ६ मासों में एक लाख नब्बे हजार टन के जहाज़ प्रति मास डुबाये गये थे। स्कैण्डीनैविया के युद्ध काल में जहाजों का डुबाया जाना कुछ कम हुआ था परन्तु मई मास में फिर एकाएक वृद्धि हो गई थी। जुलाई से १९४० ई० के अंत तक जर्मन सबमरीन योरुप के पश्चिमी तट के जहाजी अड्डों से आक्रमण करते रहे। और अप्रैल से प्रतिमास तीन लाख ६० हजार टन के जहाज डूबते रहे। जहाजों के डूबने के कारण संसार के जहाजों में कमी हो गई है।

१९३९ ई० में जब युद्ध आरम्भ हुआ तो संसार में १०० टन से ऊपर वाले व्यापारिक जहाजों की मात्रा ६ करोड़ ६५ लाख टन (अमरीका की बड़ी झीलों के जहाजों को छोड़ कर) थी। २० मास के पश्चात् धुरी राष्ट्रों के प्रभुत्व वाले देशों को छोड़ कर संसार में व्यापार के लिये केवल ५ करोड़ २० लाख टन के जहाज शेष रह गये थे। युद्ध तथा ब्लाकेड (घेरे) के कारण व्यापारिक कार्य कुछ रुक गये थे। परन्तु ग्रेट ब्रिटेन के युद्ध की तयारी के कारण फिर भी जहाजों की बड़ी आवश्यकता थी। इसलिये जहाजों की कमी प्रतीत हुई।

जब से युद्ध आरम्भ हुआ है तब से ब्रिटिश अधिकार वाले स्थानों में जहाजों की संख्या अधिक हो गई है। जून १९३९ ई० में संयुक्त राष्ट्र इंगलैण्ड में २ करोड़ ६० लाख टन के जहाज और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में लगभग २ करोड़ २८ लाख टन के जहाज ठहरे थे। अँग्रेज़ों ने जर्मनी तथा इटली के ४ लाख टन के जहाज पकड़े हैं। योरुप के देशों को अधिकार में करने से जर्मनी को ७० लाख टन के जहाज मिले हैं। ८ लाख टन से अधिक जहाज संयुक्त राष्ट्र अमरीका से योरुप आये। युद्ध के प्रथम २० मासों में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर लगभग १६ लाख टन के जहाज तयार किये गये। कुछ तटस्थ राष्ट्रों के जहाज भी ब्रिटिश की सहायता के लिये काम कर रहे थे। यदि डूबे हुये जहाजों की संख्या कम कर दी जावे तो गत अप्रैल मास में ब्रिटेन के पास २ करोड़ ६० लाख टन के जहाज शेष रह गये थे जो युद्ध आरम्भ होने के पहिले की मात्रा से अधिक हैं।

इस संख्या के सभी जहाज व्यापार में काम नहीं कर रहे हैं। इनमें से कुछ तो टूटे फूटे हैं और कुछ इतने टूटे हैं। जो समुद्र पार नहीं जा सकते हैं। कुछ सवारी ले जाने वाले जहाज भी हैं। डाकों पर मरम्मत के लिये इंगलैण्ड के १५ लाख टन के जहाज पड़े हैं।

रायल नैवी ने काफी व्यापारिक जहाज युद्ध में प्रयोग करने के लिये ले लिये हैं। १९४० ई० तक इँगलैण्ड में ४५ लाख टन के व्यापारिक जहाज सेना ने अपने हाथ में ले लिये थे। अफ्रीका तथा पूर्व की ओर लड़ाई बढ़ने के कारण और अधिक व्यापारिक जहाज सेना में लिये गये और इस प्रकार सेना में लिये जाने वाले जहाजों की मात्रा ७० लाख टन हो गई है।

इँगलैण्ड के पास व्यापार के लिये एक करोड़ ६० लाख या एक करोड़ ८० लाख पौंड के जहाज हैं। संयुक्त राष्ट्र के सिवा संसार के दूसरे भागों में इँगलैण्ड के २० टन के व्यापारिक जहाज व्यापार में लगे हैं। अब यह संख्या घट कर बहुत कम हो गई है। क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने अपने व्यापारिक जहाज़ वापस बुला लिये हैं। फिर भी चीन, पूर्वी द्वीप समूह और अफ्रीका तथा दक्षिणी अमरीका में अँगरेज़ी जहाज़ हैं। ब्रटेन का सामान पहुँचाने में लगभग एक करोड़ ५० लाख टन के जहाज़ लगे हैं। आज युद्ध काल में सामान का पहुँचना बड़ा कठिन हो रहा है। पथरथाक सेना के कारण जहाज़ों को अपनी चाल कम करनी पड़ती है। वह ६ नाट प्रति घन्टे की चाल से ही चल सकते हैं। फिर जब वे इँगलैण्ड के बन्दरगाहों पर पहुँचते हैं तो बम वर्षा तथा रात को अँधेरा रहने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण वह अपने सामान भी नहीं उतार सकते हैं। उन्हें ऐसे बन्दरगाहों पर शरण लेनी पड़ती है जहां बम्ब गिराये जाने की सम्भावना न हो। सामान उतारने में भी काफी समय लग जाता है क्योंकि केवल दिन में ही सामान उतारा जाता है।

जिस मात्रा में इस समय जहाज़ डुबाए जा रहे हैं उस मात्रा में अँग्रेज़ लोग जहाज नहीं तयार कर सकते हैं। २७ मई १९४१ ई० को प्रेसीडेण्ट रूज़वेल्ट ने घोषणा करते हुये कहा था कि वर्तमान समय में नाज़ी लोग जितने जहाज डुबा रहे हैं। उसका ½ भाग भी बृटेन के अन्दर तयार नहीं हो सकता। इंगलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका मिल कर डुबाये जाने वाले जहाज़ों की मात्रा के आधे से भी कम जहाज़ तयार कर सकते हैं। इँगलैंड में प्रति साल लगभग दस लाख टन के जहाज़ तयार किये जाते हैं। बम्ब वर्षा तथा रात को अँधेरा रहने के कारण जहाज़ बनाने का काम पूर्ण रूप से नहीं हो सकता है अब की साल १५ लाख टन के जहाज़ इंगलेंड में तयार करके समुद्र में उतारे गये हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे भागों में बहुत कम जहाज़ तयार किये जाते हैं। १९३८ ई० में ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे देशों में २८,००० टन के जहाज बने और समुद्र में उतारे गये। कनाडा हांग कांग में जहाज बनाने के लिये इंगलैण्ड ने मांग पेश की है। आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड और दक्षिणी अफ्रीका में जहाज़ बनाने के लिये डाक बनाये जा रहे हैं फिर भी ब्रिटिश साम्राज्य में अधिक से अधिक इस वर्ष एक लाख टन के जहाज़ तयार हो सकेंगे। इंगलैंड के अन्दर अधिक से अधिक डुबाये जाने वाले जहाज़ों का केवल १ भाग तयार किया जा सकता है। पूर्व की ओर जर्मन पराजय होने पर शायद कुछ जहाज़ खाली हो सकें। परन्तु अफ्रीका और हिन्दमहासागर की रक्षा करने के लिये वहां जहाजों का रखना बृटेन के लिये आवश्यक होगा।

जर्मनी, इटली और उनके अधिकार में हो गये देशों के जो जहाज पश्चिमी गोलार्द्ध के तट पर हैं उनका प्रयोग किया जा सकता है परन्तु वह सब मिलकर लगभग १० लाख टन के ही होगें।

जापानी जहाजी बेड़े का ७५ प्रतिशत भाग जो विदेशी व्यापार में लगा था वह अब एशिया के समुद्र में काम कर रहा है बहुत थोड़े जापानी जहाज़ विदेशों में शेष रह गये हैं और जो हैं भी वह जापान के लिये आयात का सामान ले जाने में लगे हैं। जापान के व्यापार में नार्वे और हालैंड के जहाज़ लगे हैं। यदि उन्हें वापस बुलाया जाता है तो जापान के रुष्ट हो जाने की सम्भावना है। राजनैतिक कारणों के कारण इंगलैंड और अमरीका जापान को अधिक रुष्ट करना नहीं चाहते हैं।

जब १९३९ ई० में संयुक्त राष्ट्र ने तटस्थता का नियम बनाया तो उसने ९ लाख टन के जहाज़ चलने से रोक दिये थे अब वह दूसरे मार्गों में लगे हैं।

१९३९ में अमरीका के जहाज़ी कमीशन ने ८ लाख टन के जहाज़ कनाडा और इङ्गलैंड के हाथ बेचने की आज्ञा निकाली थी। उनसे इङ्गलैंड को कुछ सहायता मिली थी साथ ही अमरीका के साढ़े चार लाख टन के जहाज़ जो दक्षिणी अमरीका तथा योरुप में थे उनसे भी सहायता प्रथम डेढ़ साल के युद्ध में मिली थी।

फरवरी सन् १९४१ ई० में अमरीका के जहाजी कमीशन के अफ़सरों ने कहा, "अमरीका के जहाज दूसरे देशों को अब भेजना सम्भव नहीं है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र में जहाज़ों की बहुत कमी हो रही है।"

१९३६ ई० से संयुक्त राष्ट्र ने जहाज बनाने वाली योजना के अनुसार नये जहाज बनाने आरम्भ किये हैं। बृटेन ने ६० सामान ले जाने वाले जहाजों (प्रत्येक जहाज एक हजार टन का) के बनाने की मांग अमरीका के सामने रक्खी है। इस प्रकार अधिक शीघ्रता करने पर १९४१ में १० लाख टन से अधिक के जहाज और १९४० में २३ लाख टन के जहाज़ संयुक्त राष्ट्र में तयार हो सकेंगे।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रेसीडेण्ट ने अप्रैल मास में घोषणा की है कि वह ५६ नये प्रकार के जहाज़ और २१२ और दूसरे जहाज़ इंगलैंड के लिये तयार कर रहे हैं परन्तु यह जहाज़ १९४२ ई० के पहले नहीं तयार किये जा सकते। इनमें से अधिकांश जहाज़ १९४३ ई० में तयार हो सकेंगे। अमरीका को जहाज़ों के तयार करने में बड़ा परिश्रम उठाना पड़ेगा।

नाज़ी सबमेरीन (पनडुब्बे जहाज) इतने अधिक जहाज़ डुबा रहे हैं कि उनका सामना करने के लिये अमरीका और इङ्गलैंड को या तो और अधिक संख्या में जहाज़ तयार करने पड़ेंगे या डुबाये जाने वाले जहाज़ों की संख्या किसी प्रकार कम करनी होगी।

डूबते हुये जहाज़ों की समस्या की शीघ्रता शीघ्र तय करने की आवश्यकता है नहीं तो फिर और अधिक कठिनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा संकट पड़ने की सम्भावना है। जहाज़ों की कमी हो जाने के कारण संयुक्त राष्ट्र को दक्षिण अफ्रीका से सन, पाट, चमड़ा, शाक के तेल और दूसरे कच्चे सामानों के मँगाने में बड़ी रुकावट पड़ रही है। युद्ध के लिये जो सामग्री इकट्ठी करनी आवश्यक है उसमें भी बाधा पड़ रही है। यदि यही दशा चलती रही तो भविष्य में युद्ध-सामग्री की बहुत कमी हो जावेगी। जहाज़ों के किराये बढ़ जाने से घरेलू प्रयोग की वस्तुओं का मूल्य संयुक्त राष्ट्र में बढ़ गया है जिससे संयुक्त राष्ट्र की रक्षक नीति के भंडाफोड़ हो जाने की संभावना प्रतीत हो रही है।

इस बात को संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सभापति महोदय भली भांति समझ रहे हैं इसी कारण उन्होंने १० फरवरी १९४१ ई० को संयुक्त राष्ट्र के व्यापारिक विभाग के सभापति ऐडमिरललैंड को पत्र लिख कर बतलाया था कि संयुक्त राष्ट्र की रक्षा के लिये जहाज़ों की कितनी अधिक आवश्यकता है और उनसे सलाह मांगी थी कि अधिक से अधिक कितने व्यापारिक जहाज़ों का प्रयोग रक्षक नीति से किया जा सकता है व्यापारिक कमीशन के सभापति ने शीघ्र ही कुछ जहाज़ रवाना किये थे परन्तु फिर भी आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाई थी। इसी कारण पूर्वी द्वीप समूह तथा फिलीपाइन द्वीप को सेना ले जाने वाले जहाज़ों के लिये लौटते समय युद्ध सामग्री संयुक्त राष्ट्र अमरीका को लानी पड़ी थी। मई १९४१ ई० तक संयुक्त राष्ट्र अमरीका के ४ लाख टन के सवारी ढोने वाले जहाज़ और कुछ व्यापारिक जहाज़ (जिनकी संख्या अप्राप्त है) सेना द्वारा ले लिये गये हैं। जिस भाव से व्यापारिक जहाज़ संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सेना विभाग द्वारा जल सेना में मिलाये जा रहे हैं उससे व्यापारिक जहाज़ों के मध्य जटिल समस्या के उत्पन्न हो जाने की पूर्ण सम्भावना प्रतीत हो रही है।

३० अप्रैल १९४१ ई० को प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के मैरीटाइम कमीशन को लिखा कि २० लाख टन के जो व्यापारिक जहाज़ मौजूद हैं उनसे प्रजातंत्रिक राष्ट्रों की सहायता सम्भवतः अधिक से अधिक पहुंचाई जावे। शीघ्र ही २५ टैंकर और भेजे गये। यह टैंकर दक्षिणी अमरीका से तेल संयुक्त राष्ट्र के पूर्वी तट को बन्दरगाहों पर ले आते हैं और वहां से वह तेल इङ्गलैंड को ब्रिटिश जहाज़ों द्वारा भेजा जाता है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपने यहां के धुरी राष्ट्रों के जहाज़ों के प्रयोग करने की बात भी सोच रहा है। वह दक्षिणी अमरीका के बन्दरगाहों पर बेकार पड़े जहाजों को खरीदने की योजना भी कर रहा है। युद्ध आरम्भ होने से १९४० ई० तक में संयुक्त राष्ट्र ने अपने तटीय व्यापारिक जहाज़ों में से ४ लाख टन के जहाज़ बाहर किये और उन्हें इङ्गलैण्ड को सामान पहुँचाने के कार्य में लगाया। जहाज़ों की कमी होने के कारण ही संयुक्त राष्ट्र के सभापति ने कांग्रेस से अपील की थी कि वह टेक्स तेल की खानों से मध्यवर्ती अटलांटिक के तेल साफ करने वाले कारखानों तक लोहे की नालियाँ लगवाने का बिल स्वीकार कर दे जिससे कुछ और जहाज खाली हो जावें।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के तटीय व्यापारिक जहाज़ों तथा बड़ी झीलों के जहाज़ों और भीतर की ओर चलने वाले व्यापारिक जहाज़ों में कमी करने से संयुक्त राष्ट्र को और अधिक रेलवे लाइनें तथा सड़कें बनवानी पड़ेंगी। इसलिये संयुक्त राष्ट्र को और अधिक फौलाद तयार करना होगा। किराये में भी अधिकता हो जावेगी साथ ही घरेलू सामान का मूल्य भी बढ़ जावेगा।

संयुक्त राष्ट्र के अन्दर अब और अधिक व्यापारिक जहाज़ खाली नहीं किये जा सकते जिनसे इङ्गलैन्ड आदि देशों की सहायता की जाय यदि और जहाज़ विदेशी मार्गों से हटाये जाते हैं तो दूसरी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसलिये संयुक्त राष्ट्र ने तय किया है कि जो सामान उसे खरीदना है वह निकटतम स्थानों से मंगावेगा। इसी कारण (किराया बढ़ जाने के कारण भी) से फिलीपाइन से संयुक्त राष्ट्र को चीनी जानी बन्द हो गई है। संयुक्त राष्ट्र ने यह बात भी सोची है कि एशिया से सामान खरीद कर वह अपने पश्चिमी तट पर उतारेगा और वहाँ से फिर रेलों द्वारा वह सामान पूर्व की ओर पहुँचाया जावेगा। इस प्रकार व्यापारिक जहाज़ों का काम घट जावेगा।

संयुक्त राष्ट्र को रबर, सन, पाट, मैंगनीज़, केला, काफी, चाय और मसाला आदि सामान विदेश से मंगाना पड़ता है। इन सामानों के लाने वाले जहाज़ों को छोड़ कर शेष बचे हुये व्यापारिक जहाज़ों का प्रयोग जिस प्रकार सोचा जाय किया जा सकता है।

संयुक्त राष्ट्र की जहाज़ी नीति उसकी रक्षक नीति पर ही नहीं निर्भर है। यद्यपि रक्षक नीति, जहाजी नीति का एक भारी अंग है। जहाज़ी नीति के आदर्श को पाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये संयुक्त राष्ट्र को राजनैतिक समस्याओं की ओर भी ध्यान देना होगा उसे समीपवर्ती राष्ट्रों के साथ मैत्री रखनी होगी, चीन की सहायता करनी होगी, संसार के दूसरे देशों की भोजन सामग्री पहुंचानी होगी और जहाज़ों पर पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त करना होगा जिससे व्यापारिक तथा आर्थिक युद्ध में सहायता मिल सके।

यदि संयुक्त राष्ट्र इङ्गलैण्ड की सहायता करना चाहता है और युद्ध में भी नहीं आता तो भी तटस्थता नियम के अनुसार अपने जहाज ब्रिटिश अथवा अन्य दूसरे देशों में लिखा पढ़ी करके भेज सकता है। वह इङ्गलैण्ड को ही चार्टर द्वारा जहाज़ दे सकता है जिससे कि वह युद्धक्षेत्र के बाहर इङ्गलैण्ड का काम कर सकें।

कुछ समय व्यतीत हुए सर आर्थर सल्टर ने कहा था कि "मुझे पूर्ण आशा है कि अभी अमरीका में इतने जहाज़ बाकी हैं कि उनसे अमरीका तथा इङ्गलैण्ड के मध्य जहाज़ों का पुल बनाया जा सकता है और जब तक इनमें और अधिक कमी होगी तब तक इङ्गलैण्ड तथा अमरीका मिल-कर जहाज़ बनाने लगेंगे।" हम नहीं कह सकते कि यह बात कहाँ तक सम्भव तथा सत्य है फिर भी जहाँ तक इंगलैण्ड तथा अमरीका के मिल कर जहाज बनाने की योजना है वहाँ तक तो यह बात अवश्य ही कथन योग्य है कि यदि इस कार्य में अमरीका के पूँजीपतियों की सहायता ली जाती है तो वह अवश्य ही अपनी सहायता के लिये कुछ न कुछ विशेषाधिकार मांगेंगे जिसकी स्वीकृति स्वतंत्र नीति में असम्भव है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के मर्चेण्ट मरीन एक्ट की ९०२ धारा के अनुसार मैरीटाइम कमीशन अथवा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सभापति को अधिकार दिया गया है कि वह आवश्यक समय पर राष्ट्र की रक्षा के लिये जहाज़ों की मांग कर सकते हैं। यदि अमरीका के सभी व्यापारिक जहाज़ों की मांग की जावे तो फिर उसके मार्गों, सामान और चलने का निश्चय सरकार को करना होगा। जहाज़ों के मालिकों को केवल हर्जाने की रकम दी जावेगी जिसका निश्चय पहले ही कर लिया जावेगा। जहाज़ों के किराया का निश्चय भी सरकार ही करेगी।

अमरीका के जहाज़ों की मांग पर बहुत से प्रश्न उठ खड़े होते हैं। १—जहाज़ों के मालिकों को किस भाव से चुकता किया जावेगा? भिन्न भिन्न सरकारी विभागों की जहाज़ी मांग किस प्रकार पूरी की जावेगी? रक्षक आवश्यकता के समय कूटनीति का क्या प्रभाव होगा? क्या जहाज़ों के मालिकों को जहाज़ों में नौकरी दी जा सकेगी? जहाज़ी मज़दूरों को जहाज़ में कितना स्थान दिया जावेगा? यह सभी प्रश्न बड़े कठिन हैं परन्तु फिर भी जहाज़ों की मांग वाली नीति बड़ी कुशल है क्योंकि इसके अनुसार सभी जहाज़ सरकार के अधिकार में होंगे और फिर अमरीका की सरकार अपने आयात निर्यात और राजनैतिक परिस्थिति के अनुसार जहाज़ों को नियत संख्या में कार्य में लगा सकेगी।

अमरीका और इङ्गलैण्ड के व्यापारिक जहाज़ी विभागों के मध्य सहयोग होना बड़ा आवश्यक है। वर्तमान समय में अमरीका अपने जहाज़ों को अपने काम से छुट्टी देकर ब्रिटेन के कार्य में लगा रहा है। परन्तु इससे अच्छी नीति समस्त अमरीकन जहाज़ों की संगठित मांग की है। ब्रिटिश अमरीकन जहाज़ी सहयोग की नीति से अन्तर्राष्ट्रीय जहाज़ी सहयोग के बीज पड़ जावेंगे और फिर संसार के सभी जहाज़ों को एक नीति पर सम्भव हो सकेगा क्योंकि युद्ध के पश्चात भी बहुत सी कठिन समस्यायें उत्पन्न होंगी।

आधुनिक युग में जहाजों की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। संसार का काम बिना जहाजों के प्रयोग के चलना असम्भव है। इसी कारण जर्मनी इङ्गलैण्ड के अधिक से अधिक जहाजों को डुबाने का प्रयत्न कर रहा है। सामुद्रिक जहाज कई प्रकार के होते हैं। सामान ले जाने वाले जहाज़ लड़ाका जहाज़ों से भिन्न होते हैं। साधारण रूप से सामुद्रिक जहाज़ों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक तो वह जहाज़ है जो सामान और सवारी ढोने वाले हैं दूसरे लड़ाका जहाज़ हैं। लड़ाका जहाज़ भी कई प्रकार के होते हैं। यह जहाज़ युद्ध-अस्त्र-शस्त्रों से परिपूर्ण रहते हैं। इनमें तोपें आदि लगी रहती हैं। स्थली युद्ध की भांति सामुद्रिक युद्ध भी होता है। सामुद्रिक युद्ध में स्थली युद्ध से अधिक हानि होती है। युद्ध काल में व्यापारिक तथा सवारी जहाज़ सभी खतरे में रहते हैं। सभी जहाज़ों को यात्रा करने में अचानक संकट पड़ने की सम्भावना रहती है इसीलिये युद्ध काल में अधिक उपयोगी लादने वाले जहाज़ के साथ पथ-रक्षक सेना चलती है जो आक्रमण के समय सहायक होती है। आज यदि इङ्गलैण्ड के पास जहाज़ी शक्ति न होती तो शायद उसे जर्मन सत्ता के सामने अपना सिर झुका देना पड़ता परन्तु जहाज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति होने के कारण ही वह जर्मनी का शिकार नहीं हो सका और उसके छक्के छुड़ाया है। सामुद्रिक जहाज़ों द्वारा ही युद्ध काल में संसार के एक भाग से दूसरे भाग को युद्ध के लिये सामग्री तथा|रसद पहुँचाना सम्भव हो रहा है। गत महायुद्ध में इङ्गलैण्ड को सामुद्रिक शक्ति होने के कारण विजय प्राप्त हुई थी। आज भी उसे उसी शक्ति के कारण विजय प्राप्त होने की आशा है। यदि इङ्गलैंड के पास सामुद्रिक शक्ति न होती तो वह भूखों मर जाता लड़ाई का कहना ही क्या है।

जब तक किसी दूसरी ओर विशेष उन्नति नहीं होती तब तक संसार में उसी जाति का पताका फहराता रहेगा जिसके पास अधिक से अधिक समुद्री जहाज़ होंगे।

रूसी परराष्ट्र दफ़्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल

रूस के विदेशी दफ़्तर को नार्कोमिण्डेल और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल को कमिंटर्न कहते हैं। संयुक्त राष्ट्र सोवियट रूस के साम्यवादी दल का ध्येय क्रान्ति द्वारा संसार का सोवियट सामाजिक प्रजातांत्रिक संघ शासन की स्थापना करना है। ऐतिहासिक रूप से उनके कार्य हम तीन कालों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम काल १९०३ से १९१७ के मार्च क्रान्ति तक का है जिससे उसने जार शाही का अंत किया। दूसरा समय मार्च से नवम्बर १९१७ तक का है इस काल में साम्यवादी दल ने रूस से साम्राज्यवादी दल का अंत किया और साम्राज्यवादी युद्ध से रूस को अलग किया। नवम्बर १९१७ इ० की क्रान्ति के बाद से उसका तीसरा काल आरम्भ होता है जब कि उसने रूस में एकाधिपत की स्थापना की और उसे संसार के दूसरे देशों से साम्राज्यवाद का निकालने में प्रयोग किया। दूसरे देशों के साम्राज्य के अंत करने में रूस के साम्यवादी दल ने परराष्ट्र के किसानों तथा कारखानों के मज़दूरों की शरण ली। उसे साम्राज्यवाद के अधिकार देशों और कालोनियों (बस्तियों) से भी सहायता मिली।

रूस के साम्यवादी दल पर व्यवहारिक राजनीति का प्रभुत्व है। वह अपनी संसार क्रान्ति वाली नीति को समय समय पर बदलना भली भांति जानता है जिससे उसकी नीति रूस की भीतरी स्थिति तथा दूसरे शक्ति शाली राज्यों की बदलती दशा के साथ समान रूप से चलती रहे। पर राष्ट्र सम्बन्धी कार्य चलाने के लिये रूसी साम्यवादी दल के दो खास अंग हैं। १—नार्कोमिण्डेल (पर राष्ट्र दफ़्तर) यह संसार के दूसरे देशों से साधारण संबन्ध रखता है और इसने रूस में समाजवाद की स्थापना के समय क्रान्ति का प्रचार किया। २—कमिंटर्न (अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्था) इस ने रूस के बाहर सब कहीं बर्ग-युद्ध फैलाया, साम्राज्यशाही युद्ध को गृह-युद्ध में बदला और संसार क्रान्ति के अभिप्राय को उन्नतिशील बनाया।

रूसी परराष्ट्र दफ़्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल के झगड़े को समझने के लिये हमें उनकी साधारण योजना की कूटनीति और कलाओं की घटनाओं के उपायों का अध्ययन करना पड़ेगा। यद्यपि उनके उपायों में भिन्नता है फिर भी उनका ध्येय एक ही है। बोल्शेविक दल ने अपने विदेशी दफ़्तर की सहायता से दूसरे देशों की सरकारों को संतुष्ट रखा और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्था द्वारा उन्हीं सरकारों के उलट देने का प्रयत्न किया। इस प्रकार बोल्शेविकों ने संसार-राजनीति में अपने लिये विशेष अधिकार के स्थान बना लिये। बोल्शेविकों को संसार के सभी क्रान्तिकारी तथा उदार आदर्शवादी दलों की सहायता मिल गई।

रूस ने परराष्ट्रों में अपनी नीति का प्रचार चार उपायों से किया।

१९१७-१९२१ ई० तक की सांसारिक क्रान्ति की कला

जब ८ नवम्बर १९२१ ई० को बोल्शेविक दल ने अपनी शान्ति-घोषणा किया तो उन्हों ने रूस में किसी दूसरे राष्ट्र को नहीं मिलाया और न किसी से किसी प्रकार का हर्जाना लिया। वह स्वयम् अपना निर्माण करने में लगे रहे। उनको आशा थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्राज्यवादी युद्ध गृह-युद्ध में परिवर्तित हो जावेगा जिससे संसार-क्रान्ति स्वयम् उत्पन्न हो जावेगी। इसी लिये ३ मार्च १९१८ ई० को जब रूस ने ब्रेस्ट-लिटोवस्क की सन्धि जर्मनी के साथ किया तो लेनिन ने कहा था कि क्रान्तिकारी नीति का मुख्य साधन रूसी वैदेशिक दफ्तर था। जुलाई १९१८ ई० को रूसी वैदेशी कमिश्नर ने कहा था कि क्रान्तिकारी नीति का मुख्य कार्य निर्धन तथा मजदूर वर्ग की सहायता करना है। उसी नीति के अनुसार यूक्रेन के जर्मन सैनिकों के मध्य लाखों की संख्या में नोटिसें बांटी गईं।

मार्च १९१९ ई० में लेनिन ने कमिंटर्न नामक संस्था स्थापित किया और उसने रूसी वैदेशिक दफ्तर के प्रचार कार्य को अपने हाथ लेलिया। कमिंटर्न संस्था में व्यवसायी क्रान्तिकारी लोग हैं। उसमें एक शासक कार्यकारिणी समिति है जो कमिंटर्न कांग्रेस के प्रस्ताव तथा लेख बनाती है। यह समिति रूस की साम्यवादी दल के अधिकार में है। रूसी साम्यवादी दल कार्यक्रम तयार करता है। वह कार्यकारिणी समिति के सामने आता है और फिर वहां से संसार के सभी साम्यवादी दलों को भेजा जाता है। समाजवादी दल की आशाओं तथा व्यवसायी क्रान्तिकारी लोगों की हिंसात्मक युद्धकारी भावों की सहायता लेकर क्रान्ति को अन्तर्राष्ट्रीय रूप देना था। इसका कार्यक्रम का एक अंग यह भी था कि समस्त समाजवादी संसार का नैतृत्व रूस के हाथ में आ जाय। इसी कारण संयुक्त मोर्चे की ओर ध्यान दिया गया और दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय सभा करने की व्यवस्था की गई।

१९१७-२१ ई० तक क्रान्ति की लहर बराबर चलती रही। उस समय रूसी वैदेशिक दफ्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल में किसी प्रकार का मतभेद न था। रूसी वैदेशिक नीति के अनुसार बाल्टिक राज्यों और पोलैंड के साथ १९२० ई० में संधि की गई परन्तु रूमानिया की बेसार्बिया प्रान्त की मांग को रूस ने ठुकरा दिया। सुदूर पूर्व की ओर जापान और रूस के मध्य एक छोटा राज्य बनाया गया जिसकी राजधानी चीता बनाई गई। १९२१ ई० के अंतिम काल तक रूस की क्रान्तिकारी लहर में क्षीणता आ गई। रूस में विदेशी मध्यवर्तन का अंत हो गया। रूस खास में गृह-युद्ध छिड़ गया साथ साथ वहां काल पड़ गया और महामारी आदि की बीमारियाँ फैल गईं। युद्ध समय के साम्यवादी मत ने रूस के आर्थिक जीवन को एकाएक रोक दिया इस प्रकार रूस की नीति में परिवर्तन हो गया।

पूंजीवाद राष्ट्रों के साथ थोड़े दिनों की संधि १९२१-२७

संसार में साम्यवाद के प्रचार तथा प्रसार के लिये आवश्यक था कि रूस को शक्तिशाली बनाया जावे। क्रान्ति की सफलता के पश्चात् ही रूस के साम्यवादियों को सोवियट रूस की नई व्यवस्था की रक्षा की चिंता उत्पन्न हो गई इसलिये उन्होंने अपने देश की आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति के लिये योजनाएँ बनाईं। सब से पहले रूस में साम्यवाद को व्यवहारिक स्वरूप देने की व्यवस्था की गई। औद्योगिक तथा आर्थिक विकास के लिये उसे दूसरे देशों की सहायता तथा सहयोग की आवश्यकता पड़ी। इस प्रकार पूंजीवादी देशों के साथ उसे अपना सम्बन्ध स्थापित करना पड़ा।

लेनिन ने अपनी नवीन आर्थिक नीति के कार्यक्रम को १९२१ ई० में आरम्भ किया। वह निजी उद्योग तथा वैदेशिक धन से अपने देश का आर्थिक सुधार करना चाहता था। रूसी वैदेशिक विभाग को आज्ञा दी गई कि वह पूंजीवाद देशों के साथ मित्रता का व्यवहार रखे और कुछ अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का भी पालन करें। १९२३ में सोवियट संघ का निर्माण हुआ। उसी साल संयुक्त राष्ट्र अमरीका को छोड़ कर शेष संसार के सभी शक्तिशाली देशों ने सोवियट रूस के राज्य को स्वीकार कर लिया।

सोवियट रूस के सम्बन्ध वाइमर जर्मनी के साथ बड़े अच्छे रहे। १९२२ ई० में रपालो की संधि हुई जिससे दोनों राष्ट्र एक मार्ग पर चलने लगे। ११२५ ई० में जर्मन रूसी व्यापारिक सन्धि हुई। इस सन्धि से पूंजी वादियों और समाज वादियों के मध्य सम्बन्ध स्थापित हो गये। १९२६ ई० में जर्मनी ने रूस के साथ सन्धि किया और रूस को विश्वास दिलाया कि राष्ट्र-सन्घ की सेना जर्मनी होकर रूस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्रवेश नहीं करेगी। सेवरेस तथा लासेने की संधि में रूस ने टर्की का समर्थन किया। उसके बाद रूस ने अपने पड़ोसी राज्यों के साथ आक्रमणिक सन्धियाँ किया। जर्मनी ने रूस का खूब साथ दिया और उसे फ्रान्स तथा इंगलैंड का सामना करने का अस्त्र बनाया।

जब कि रूसी वैदेशिक नीति इस प्रकार परिवर्तित हो रही थी तो साम्यवादी क्रान्तिकारी दल पहले की भांति ही अपनी नीति पर चल रहा था। १९२२ ई० में लेनिन बहुत बीमार हो गया। वह बीमारी की दशा में भी साम्यवादी क्रान्तिकारी दल और रूसी वैदेशिक विभाग के मध्य मध्यस्त का काम करता रहा।

२१ जनवरी १९२४ ई० को लेनिन की मृत्यु हो जाने पर ट्राटस्की और स्टैलिन में रूस के नेतृत्व के लिये झगड़ा छिड़ा। १ अक्तूबर १९२४ ई० को स्टैलिन ने सर्वप्रथम घोषणा किया कि "मजदूर क्रान्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं और शान्तिप्रिय तथा प्रजातन्त्रवादी दोनों साधारण जनता को धोका दे रहे हैं। समाजवादी प्रजातंत्रवाद फैसिज्म का नर्म पक्ष है। फैसिस्ट लोग सो नहीं रहे हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम पहले ही उनपर अक्षेप करें जिससे समस्त मजदूर दल साम्यवाद की ओर मिल जावें। हमें जहां तक समाचार मिला है हम कह सकते हैं कि जर्मनी में फैसिस्ट मत निर्बल अवस्था में है। मेरा अपना मत है कि हमें जर्मनी की ओर से शान्त रहना चाहिये और उसे जगाना न चाहिये।"

साम्यवादी क्रान्तिकारी दल ने १९२३ ई० में पहले जर्मनी में क्रान्ति करने की आज्ञा दी थी और फिर उसे रोक दिया था। साम्यवादी क्रान्तिकारी दल तथा स्टैलिन जर्मनी में समाजवादी प्रजातन्त्रवाद का नाश करना चाहते थे और नाजी लोगों को शक्तिशाली बनाना चाहते थे क्योंकि उन्हें आशा थी कि वह साम्यवाद को शीघ्र ही जर्मनी में सफलता प्राप्त हो जावेगी। उस समय ग्रेटब्रिटेन रूस का मुख्य वैरी माना जाता था।

१९२५ ई० में स्टैलिन ने कहा कि पूंजीवाद की प्रगति शिथिल हो गई है और क्रान्तिकारी लहर उठ रही है। इस पर साम्यवादी क्रान्तिकारी दल ने चीन में बड़े बेग के साथ अपना कार्य आरम्भ किया। १९२४-२७ ई० तक कैण्टन-मास्को सन्धि रही। उसके अनुसार बोल्शेविक सलाहकार निकाल दिये गये और बहुत बड़ी संख्या में चीनी साम्यवादी क्रान्तिकारी फांसी पर लटका दिये गये। उसी पर रूस के साम्यवादी क्रान्तिकारी दल ने रूसी वैदेशिक नीति के कार्य में दखल दिया जिससे १९२७ ई० में रूस ने इंगलैंड और चीन से अपने सम्बन्ध तोड़ दिये।

नवम्बर १९२७ ई० तक ट्राटस्की और स्टैलिन का झगड़ा बहुत बढ़ गया था। उस पर ट्राटस्की रूस से निकाल दिया गया। बोल्शेविकों ने अनुभव किया कि क्रान्तिकारी लहर के कम होने और पूंजीवाद के जड़ के पकड़ने से रूस की आर्थिक दशा सुधर गई है इसलिये सोवियट नीति को समाजवादी नीति की ओर बढ़ाना आवश्यक है। कुछ वर्षों से तेजी के साथ कारखानों के बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा था। इस लिये रूस को अपनी नीति में भारी परिवर्तन करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

पूंजीवाद राष्ट्रों के साथ रूस के समान सम्बन्ध १९२८-३४

१९२८ ई० में रूस ने अपनी नीति को बदल दिया। रूस की देशी नीति समाजवादी हो गई। रूस अपने देश में समाजवादी नीति का अनुसरण करना चाहता था और विदेशों में साम्यवादी क्रान्तिकारी नीति चलना चाहता था। समाजवाद को संगठन करने तथा रूस ऐसे बड़े राज्य के कारखानों को उन्नति प्रदान करने के लिये आवश्यक था कि देश में शान्ति रखी जावे। इस लिये रूसी वैदेशिक नीति को आज्ञा दी गई कि वह पूंजीवाद राज्यों के साथ मित्रता का व्योहार रखे। रूस ने प्रथम पञ्चवर्षीय योजना आरम्भ किया और विदेशी धन तथा कलाकारों को अपने देश में स्थान दिया। इस प्रकार प्रथम पञ्चवर्षीय योजना के समाप्त होने पर रूस के कारखानों ने काफी उन्नति कर ली। रूस ने अपने सैनिक अड्डे बना लिये और वह विदेशी व्यापार स्वतंत्र राष्ट्र बन गया।

समाजवादी व्यवस्था के सफल होने पर रूस के विदेशी सचिव लिटविनाव ने फिर कई राष्ट्रों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ आक्रमणिक सन्धि किया और जेनेवा की राष्ट्रसंघ की बैठक में उसने पूर्ण-निःशस्त्रीकरण की मांग की। १९३३ ई० में लन्दन की आर्थिक सभा में रूस ने भाग लिया। उसके बाद संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने भी सोवियट राज्य का स्वीकार कर लिया।

इस काल में साम्यवादी क्रान्तिकारी दल बिल्कुल चुप रहा। सब कहीं मजदूर वर्ग ने समाजवादी मातृभूमि की रक्षा की आवाज उठाई। जर्मनी में साम्यवादी लोग नाजी लोगों की भांति ही कार्य करते रहे।

जर्मनी के साथ काम करने में रूसी विदेशी विभाग तथा रूसी साम्यवादी दल में संघर्ष चलता रहा। विदेशी विभाग जर्मनी के समाजवादी राष्ट्र के साथ रहकर काम कर रहा था।

बोल्शेविक लोगों को नाजी लोगों को युद्ध की तयारी की सूचना भली भांति प्रकट थी। जब जनवरी १९३४ में साम्यवादी दल की १७वीं कांग्रेस हुई तब उसके समक्ष दल की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये स्टेलिन ने कहा था "युद्ध अवश्य ही क्रान्ति की पट्टी खोल देगा और कुछ राज्यों के पूँजीवाद की जड़ को उखाड़ने की चुनौती देगा"। स्टैलिन ने यह भी कहा था "हम विदेशी भूमि का एक टुकड़ा भी नहीं चाहते हैं परन्तु साथ ही हम अपनी भूमि का एक इंच भाग भी दूसरों को नहीं लेने देंगे।"

जब हिटलर शक्तिशाली हुआ तो उसने साम्यवादियों और यहूदियों के साथ अत्याचार किया और उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया। वह दिन प्रति दिन यूराल तथा यूक्रेन पर धावा मारने के लिये अपना मत प्रकट करने लगा तो बोल्शेविकों को अपनी नीति बदलने की फिर आवश्यकता प्रतीत हुई। कारखानों तथा रक्षक अड्डों के बना लेने के कारण उस समय रूस की गणना पश्चिम के बड़े राष्ट्रों में होने लगी थी।

फैसिज़्म के विरुद्ध संगठित निश्चिंतता १९३४-३८

संगठित निर्भयता की नीति के अनुसार रूसी वैदेशिक विभाग को आज्ञा दी गई कि वह राष्ट्र संघ में रूस के सम्मिलित होने की बातचीत करे। १९३५ ई० में रूस ने फ्रांस और चेकोस्लोवेकिया के साथ मित्रता की संधियां किया। लिटविनाव ने इटली के विरुद्ध रोक लगाने की नीति का जोरों से समर्थन किया और टर्की जलसंयोजक को सैनिक बनाने वाली नीति का भी उसने समर्थन किया। उसने लीग की सभा में बड़े प्रभावशाली भाषण दिये परन्तु म्यूनिक की संधि के समय उसकी नीति के असफल होने का प्रमाण मिला और म्यूनिक सम्मेलन तथा परामर्श में रूस को सम्मिलित नहीं किया गया।

१९३५ ई० की काँग्रेस में साम्यवादी दल ने सभी स्थानों के राष्ट्रीय साम्यवादियों को आज्ञा दिया कि वह फैसिज़्म और युद्ध का विरोध करें। इसी नीति के कारण फ्रांस में ब्लम सरकार स्थापित हुई और स्पेन में गृह युद्ध छिड़ा। फ्रांस में पूँजीवाद और मज़दूर वर्ग के झगड़े के कारण फ्रान्सीसी प्रजातंत्र राज्य का अंत हो गया। प्रत्येक स्थान के साम्यवादी क्रान्तिकारी लोग "समाजवादी मातृभूमि की नीति का प्रचार करने लगे और फैसिस्ट नीति का विरोध करने लगे। साम्यवादी दल की रिपोर्ट में उस समय निकला कि ५ सालों के बीच में साम्यवादियों की संख्या ८ लाख ६० हजार से बढ़ कर १२ लाख हो गई है और साम्यवादी दल से मिली हुई संस्थाओं के सदस्यों की संख्या एक लाख दस हज़ार से बढ़ कर सात लाख छियालिस हज़ार हो गई है। स्टैलिन जैसे जैसे शक्तिशाली होता गया वैसे वैसे पुराने साम्यवादी दल के नेताओं का बलिदान चढ़ता गया और आखिरकार स्टैलिन रूस का एकाधिपत बन गया परन्तु रूस की संगठित निर्भयता वाली नीति असफल हो गई। उसके शत्रु राष्ट्रों (जर्मनी तथा जापान) ने चारों ओर से उसका घेरा डाल दिया। इसलिये रूस को फिर अपनी नीति बदलने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

घेरा तोड़ने के लिये तटस्थता की नीति १९३९-४१

म्यूनिक सम्मेलन और उसके कुछ समय बाद तक रूस ने किसी प्रकार की भी आवाज नहीं उठाई। म्यूनिक सम्मेलन के बाद राजनीतिज्ञों का ख्याल था कि जर्मनी रूस पर आक्रमण करेगा। स्वयम् रूस को भय था कि उस पर पूर्व की ओर से जापान और पश्चिम की ओर से जर्मनी आक्रमण करेगा।

जनवरी १९३९ ई० में म्यूनिक सम्मेलन के बाद सर्व प्रथम स्टेलिन ने आवाज उठाई और जर्मन द्वारा सुडेटन प्रान्त छीन जाने की स्वीकृति की। १५ मार्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९३९ ई० को जर्मनी ने प्रयाग छीना। इससे समस्त योरुप की शक्तियों में खलबली पड़ गई। इतना होने पर भी मित्र-राष्ट्रों ने पोलैंड की रक्षा का भार उठाया और लिटविनोव (रूस का भूतपूर्व वैदेशिक मन्त्री) के त्याग पत्र पर भी उन्होंने रूस से सुलह की बात चीत चलाई। पोलैण्ड ने पोलैंड की रक्षा के लिये रूसी सेना को पोलैंड में होकर जाने से इन्कार कर दिया। रूस चाहता था कि मित्र-राष्ट्र बाल्टिक राज्यों की रक्षा का भी भार उठावें परन्तु मित्रराष्ट्रों ने इस जिम्मेदारी को नहीं उठाया इस पर रूस के साथ मित्रता नहीं हो सकी।

तटस्थ रहने के कारण जर्मनी ने पोलैण्ड में रूस को भाग देना स्वीकार किया और २३ अगस्त १९३९ ई० को रूस तथा जर्मनी के बीच संधि हुई। लिटविनाव के स्थान पर मोल्टाव रूस का वैदेशिक मन्त्री बनाया गया वह साम्यवादी दल के राजनैतिक विभाग का सदस्य था इस कारण साम्यवादी दल तथा रूसी वैदेशिक विभाग की नीति फिर समान हो गई।

साम्यवादी दल के नेता मैनविल्स्की ने घोषणा किया कि इंगलैंड क्रान्ति का मुख्य बैरी है वह छोटे राज्यों का बलिदान करके जर्मनी से रूस पर आक्रमण कराना चाहता है और चीन का बंटवारा करना चाहता है इस प्रकार वह सुदूर पूर्व में दूसरा म्यूनिक सम्मेलन कराने का इच्छुक है। अतः रूस ने पुनः अपनी साम्यवादी क्रान्तिकारी नीति का अनुसरण किया और समीपवर्ती राज्यों से बातचीत आरम्भ की। फिनलैण्ड ने रूस की शर्तें नहीं स्वीकार कीं इसी कारण फिनलैंड और रूस में युद्ध हुआ। जुलाई १९४० ई० तक एस्टोनिया लैटविया, लिथुवानिया, बेसार्बिया और उत्तरी बुकोवीना आदि राज्य रूस में मिला लिये गये। इस प्रकार साम्यवादी नीति ने रूसी समाजवादी-मात्र भूमि की शक्ति को बढ़ाया।

जब से रूस ने पोलैंड के बँटवारे में भाग लिया तब से संसार के सभी साम्यवादी तथा क्रान्तिकारी संस्थाएँ तथा पत्र फैसिज्म के विरुद्ध आवाजें उठानी बन्द कर दीं और तटस्थता के मार्ग पर चलने लगे। फ्रांस के साम्यवादी लोग डालडियर और रीनाड की सरकार को नष्ट करने में लगे थे जब कि वह युद्ध में फंसा था।

पश्चिम की भांति रूस पूर्व की ओर भी संधि करके अपना लाभ उठाने का इच्छुक था इस लिये ३ अप्रैल १९४१ ई० को उसने जापान के साथ तटस्थता की संधि किया। जर्मनी ने इस संधि कराने में अच्छा भाग लिया वह चाहता था कि जापान को पश्चिमी खतरे से छुटकारा मिल जाय जिससे प्रशांत महासागर में वह संयुक्त राष्ट्र अमरीका का ध्यान बंटा दे ताकि संयुक्त राष्ट्र इंगलैण्ड की भली भांति सहायता न कर सके।

रूसो-जापानी संधि से रूस अथवा जापान को कोई खास लाभ नहीं हुआ। रूस जानता था कि यदि युद्ध अधिक समय तक चलता रहा तो जर्मनी को तेल चर्बी आदि की आवश्यकता बहुत होगी और उसे वह रूस की मर्जी से या अप्रसन्नता से भी लेने की कोशिश करेगा। इसलिये उसका यूक्रेन, लोवर वाल्गा और बाकू तथा क्रोज्नी के तेल के कुवों पर अधिकार होना अनिवार्य है। साथ ही साथ रूस को यह भी आशा थी कि अधिक समय तक युद्ध चलने से इंगलैण्ड तथा जर्मनी दोनों शक्ति हीन हो जावेंगे और तब फिर संसार-क्रान्ति की सम्भावना सरल हो जावेगी।

रूसो-जापानी संधि का अर्थ सभी लोग भिन्न-भिन्न लगाते हैं। साराँश रूप में यह बात सभी मानते हैं कि इस संधि से इटली, जर्मनी, रूस और जापान एक नीति के मानने वाले हो गये। उन्होंने नव-युग की स्थापना करने का मार्ग निकाल लिया। इस संधि से ब्रिटिश साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करने के लिये उत्तरी सागर से पैसिफिक सागर तक एक यूरेशियन ब्लाक बन गया था। इसी बीच चीन में क्योमिंटग और साम्यवादियों में झगड़ा हो गया। इस झगड़े से चीन की स्थिति और अधिक जटिल हो गई यदि यह झगड़ा और अधिक बढ़ जाता है तो फिर चीन जापान का सामना न कर सकेगा वरन् स्वयम् उसके तीन भाग हो जाने की सम्भावना है। (१) उत्तरी चीन से दक्षिण की ओर याँग्जे तक जिसमें समुद्री बन्दरगाह भी शामिल है जापान के अधिकार में हो जावेगा। (२) उत्तरी-पश्चिमी चीन जिस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस का प्रभुत्व होगा। (३) पश्चिमी और दक्षिणी-पश्चिमी चीन जिस पर क्योमिंटग का अधिकार होगा और उसे ब्रिटेन और अमरीका की सहायता प्राप्त रहेगी।

युद्ध की भीषणता होने से जापान को अवसर मिला और उसने इण्डोचीन पर अधिकार कर लिया है। वह पूर्वी द्वीप समूह में अपना प्रभुत्व भली भांति जमा लेना चाहता है। आज योरुप और एशिया में क्रांति के बादल घुमड़ रहे हैं और इस क्रान्ति को रोकने के लिये किसी बड़ी असाधारण घटना की आवश्यकता है।

हम जानते हैं कि रूस के साम्यवादी दल का कभी भी खात्मा नहीं हुआ है। रूसी साम्यवादी दल के ध्येय संसार-क्रान्ति तथा संसार सोवियट समाजवादी प्रजातंत्र संघ है। सोवियट की वैदेशिक नीति में जो परिवर्तन हुये हैं वह केवल उसकी भीतरी देशी संगठन के कारण हुये हैं।

६ मई १९४१ ई० को स्टेलिन रूस की पीपुलस कमीशर की सभा का सभापति बना है। इसी स्थान पर पहले लेनिन था। उस समय रूस के समाजवादी दल तथा विदेशी विभाग की नीति एक थी और संसार क्रान्ति का प्रचार हो रहा था। आज भी वही स्थिति है। एक बार रूस का वैदेशिक विभाग तथा साम्यवादी दल मिल कर काम कर रहा है और क्रांति की लहरें चल रही हैं। रूस की वैदेशिक नीति संसार-क्रान्ति की है।

जब रूस ने फिनलैण्ड पर आक्रमण किया था तो उसकी नीति का विरोध समस्त संसार में हुआ था। भारत के विश्वविख्यात समाजवादी पंडित जवाहरलाल नेहरू ने फिन रूस के फिनिश आक्रमण की बड़े तीव्र शब्दों में निन्दा की थी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि भारत को रूस के समाजवाद से सहानिभूति है परन्तु फिनलैंड के युद्ध में हमारी सहानुभूति फिनलैंड के साथ है। रूस के इस आक्रमण ने उसके गौरव को बड़ा धक्का पहुँचाया है। यदि वह इसी मार्ग पर रहा तो इसका परिणाम उसके और संसार के लिये बड़ा खतरनाक होगा।

बाल्कन प्रान्तों पर जर्मन आक्रमण के समय रूस ने जिस नीति पर अनुसरण किया था वह भी बड़ी सोचनीय थी। ईश्वर जाने क्यों रूस जर्मनी के आक्रमणों की तरफदारी करता रहा और चुपचाप बैठा तमाशा देखता रहा।

पूर्व की ओर युद्ध बढ़ने पर यह भली भांति प्रकट हो चुका था कि यदि जर्मनी ने एशिया को रण-क्षेत्र बनाया तो अवश्य ही रूस, जर्मनी और जापान में संहर्ष होगा। आखिर वही बात हुई भी जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया और ऐसा भीषण धावा मारा जिसका संसार में कोई भी उपमा नहीं है। यह आक्रमण १५ सौ मील लम्बी सीमा पर हुआ है। 'तटस्थ रहने और सरकारी होने पर भी रूस को आखिर जर्मनी का शिकार बनना पड़ा। आक्रमण होने के कारण रूस को अपनी नीति पुनः बदलनी पड़ी है। उसने इंगलैंड और अमरीका आदि देशों की सहायता लेनी स्वीकार की है। मास्को में इंगलैण्ड, अमरीका और रूस के राजनैतिक दूतों का सम्मेलन भी हो चुका है। इंगलैंड और रूस ने मिल कर ईरान पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार भी जमा लिया है।

ब्रिटिश तथा अमरीकन सहायता मिलने पर भी जर्मनी रूस के अन्दर बढ़ता जा रहा है। यद्यपि जर्मनी को रूसी आक्रमण में बड़ी हानि उठानी पड़ी है तो भी वह अब तक सफल रहा है। यदि रूस पहले से अपनी नीति को बदले रहता तो शायद आज उसे यह दिन न देखने पड़ते। फिर भी सोवियट नीति इतनी रहस्यमय है। इसमें शक नहीं कि वह नाज़ीवाद, साम्राज्य वाद और फैसिज्म तीनों के विरुद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ मई सन् १९४१—इटैलियन सेना ने कैपहाज़ो-निया, जन्ते और ल्यूकस द्वीपों पर अधिकार कर लिया और यूनानी द्वीप समूह में अपने हवाई अड्डे बनाने आरम्भ किये।

इटली की सेना ने तोब्रक पर धावा मारा और नगर की बाहरी रक्षक रेखा को तोड़ दिया। बसरा में ब्रिटिश सेना उतरी।

२ मई—माल्टा पर हवाई आक्रमण हुआ। लन्दन में मर्सी साइड पर शत्रु वायुयानों ने आक्रमण किया।

एम्डेन, हैम्बर्ग, कील और बर्लिन पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा और बम्ब वर्षा किया।

३ मई—इराक में ब्रिटिश सेनाएँ आगे बढ़ीं। यूगो-स्लाविया के उत्तरी-पश्चिमी भाग पर इटली ने अधिकार जमा लिया। तोब्रक में इटली के सेना तथा ब्रिटिश सेना के मध्य युद्ध हुआ। हैम्बर्ग पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया। यूनान से ब्रिटिश सेना हटाई गई।

४ मई—इराक की सेना ने मोसल के तेल के मैदान में पानी भर दिया। किर्कुक, हनीकिम और गौरा के तेल के कुओं पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया।

ब्रिटिश हवाई स्थली और जल सेना ने बसरा से इराकी सेना को भगा दिया और इराक़ की हवाई शक्ति का लगभग आधा भाग नष्ट कर दिया। इराकी सेना ने हब्बानियाह हवाई अड्डे पर गोलेबारी किया। माल्टा तथा लन्दन पर शत्रु के हवाई आक्रमण हुये।

५ मई—इराकी सेना बसरा से बाहर भगा दी गई और ब्रिटिश सेना ने बसरा पर अधिकार कर लिया। २५ इराकी विमान नष्ट किये गये।

६ मई—टर्की ने इराक में मध्यस्थ बनने के लिये कहा। इराक की हवाई शक्ति का सत्यानाश हो गया। ब्रिटिश सरकार ने संधि करने से इनकार किया।

बेलफास्ट पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

७ मई—इराक के अधिकांश पम्प लाइनों पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया। हब्बानियाह की स्थिति में कुछ सुधार हुआ। कुछ इराकी सेना ने अपने हथियार डाल दिये। लन्दन पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

८ मई—कामन्स सभा में प्रधान मन्त्री चर्चिल ने तोब्रक और क्रीट की रक्षा भली भांति करने का विश्वास दिलाया। इराक में रुतबाह पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया। इंगलैंड के कई स्थानों पर जर्मन विमानों का हवाई आक्रमण हुआ मोरक्को और सीरिया में जर्मन हवाई अड्डे स्थापित हुये।

९ मई—रशीद अली बगदाद छोड़ कर भाग गया। ब्रिटिश सेना ने ४०० इराकी सैनिकों को गिरफ्तार किया। अबीसीनिया में ब्रिटिश सेना को सफलता प्राप्त हुई। इंगलैंड के उत्तरी और पश्चिमी भाग पर शत्रु वायुयानों ने हवाई आक्रमण किया जिससे बहुत हानि हुई और बहुत से लोग मारे गये। २४ शत्रु विमान गिराये और १४ विमान नष्ट किये गये।

१० मई—पश्चिमी रूम सागर में ब्रिटिश सेना ने आक्रमण किया। हब्बा निपाह से इराकी सेना को हटने पर बाध्य होना पड़ा।

११ मई—स्वेज़ प्रान्त और इंगलैण्ड पर शत्रु बाम्ब वर्षक विमानों ने हवाई आक्रमण किया जिसके फल स्वरूप ५ अस्पताल एक सिनेमा घर, कुछ गिरजा घर और बहुत से मकान नष्ट हुये। शत्रु बम्ब वर्षक विमान गिराये गये।

१२ मई—शत्रु हवाई आक्रमण के कारण पार्लियामेन्ट के भवन नष्ट हो गये। वेस्टमिनिस्टर अबे में आग लगा दी गई। ब्रिटिश म्यूजियम पर आग वाले बमों की झड़ी की गई। ७ आक्रमणकारी विमान गिराये गये। तोब्रक और सोलम प्रान्त में शत्रु की सेना बहुत बड़ी संख्या में मारी गई। त्रिपोली और देना पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया।

१३ मई—रूडोल्फ हेस, जर्मनी के डिप्टी फ़्यूहरर का विमान ग्लासगो के समीप फट गया। वह घायल दशा से ग्लासगो के अस्पताल में रक्खा गया है। जर्मनी से वह अचानक भाग निकला और अपने पीछे एक पत्र छोड़ गया। बङ्गाजी पर गोलेबारी हुई और जर्मन विमानों में आग लगा दी गई। अबीसीनिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी।

१४ मई—चीनी और जापानी सेना में भीषण युद्ध हुआ। जापानियों ने तंगफेंग किले पर अधिकार कर लिया बेंगाजी पर बम्ब वर्षा की गई। मेन्दीप, आस्टेयड और डर्केक पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब वर्षा किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ मई—रुडोल्फ हेस लन्दन के समीप एक अस्पताल में रक्खा गया। उसने होमल्टन के ड्यूक से भेंट किया। वान पेपन जर्मन राजदूत ने टर्की के प्रेसीडेन्ट से भेंट की विची सरकार ने हिटलर की शर्तें स्वीकार कर लीं। सोलम प्रान्त से शत्रु सेना हटाई गई। हेलीगोलैंड पर ब्रिटिश विमानों ने बम वर्षा किया। इँगलैण्ड पर जर्मन वायुयानों ने धावा मारा।

१६ मई—शत्रु विमानों के आक्रमण से लन्दन के लैम्बेथ महल (कंटरबरी के आर्क बिशप का घर) क्वींस हाल सेंट जेम्स महल, ओल्डबैली (न्यायालय) और साल्वेश आर्मी हेड क्वार्टर्स आदि ऐतिहासिक भवन नष्ट हो गये।

सीरिया और इराक में जर्मन विमान पहुँचे। फिरोशियन द्वीप में शत्रु पथरक्षक सेना पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। माल्टा पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

१७ मई—ब्रिटिश विमानों ने सीरिया के जर्मन हवाई अड्डों पर धावा मारा इराक में और अधिक ब्रिटिश सेना पहुँची। सोलम को ब्रिटिश सेना ने फिर ले लिया। हनोवर पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण हुआ चंगफिंग पर जापानियों ने बम वर्षा किया।

१८ मई—अबीसीनिया के युद्ध में १५००० सेना के अबोस्ता के ड्यूक ने हथियार डाल देने की शर्तें मांगीं। सोलम प्रान्त में शत्रु सेना को कुछ विजय प्राप्त हुई। इराक में हवाई युद्ध हुआ। मसूल में जर्मन विमानों पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। बेंगाजी पर हवाई आक्रमण हुआ।

१९ मई—ब्रिटेन में हवाई युद्ध हुआ। कील और एम्डेन पर ब्रिटिश विमानों ने हमला किया। अम्बा अलागी ने ब्रिटिश सेना को आत्मसमर्पण किया और ब्रिटिश शर्तें स्वीकार की।

२० मई—सोलम प्रान्त में जर्मन सेना को परास्त हुई। शत्रु टैंकों को ब्रिटिश विमानों ने पीछे हटा दिया। इराक को जर्मनी ने युद्ध सामग्री रवाना किया। क्रीट द्वीप पर जर्मन विमानों ने हमला किया और १५० सैनिक पैराश्यूट से उतार दिये। फौलजाद नगर पर ब्रिटिश अधिकार हुआ।

२१ मई—७००० जर्मन सेना क्रीट में उतर गई। क्रीट पर हवाई तथा समुद्री आक्रमण जर्मन सेना ने किया। वहां पर भीषण हवाई तथा समुद्री युद्ध हुआ। अबोस्ता के इटैलियन ड्यूक ने हथियार डाल दिये। स्वतंत्र फ्रांसीसी सेना ने सीरिया में प्रवेश किया।

२२ मई—क्रीट से ब्रिटिश विमानों की सेना हटा ले गई। हलीमी हवाई अड्डे पर जर्मन सेना का अधिकार हो गया। क्रीट के युद्ध में दो शत्रु विध्वंसकारी जहाज डुबाये गये। छोटी नावों तथा विमानों द्वारा जर्मन सेना ने क्रीट पर धावा किया।

ब्रिटेन ने विची सरकार को चेतावनी की। अटलांटिक सागर में फ्रांसीसी टैंकर जहाज को रोका।

२३ मई—ब्रिटिश सेना ने क्रीट में शत्रु के प्रतिकूल आक्रमण किया। और समुद्र द्वारा जर्मन सेना का उतारना रोक दिया। क्रीट के रेटीमो और हेराक लिओन स्थान पर जर्मन अधिकार हो गया।

२४ मई—मलीमी में भीषण स्थित हो गई। क्रीट में और अधिक जर्मन सेना पहुँची और ब्रिटिश तथा जर्मन सेना में भीषण युद्ध हुआ। एच० एम० एस० नामक ब्रिटिश जहाज ग्रीनलैण्ड के समीप डुबा दिया गया जिसमें १३०० आदमी थे। वह सबसे बड़ा क्रूशियर जहाज था जिसमें १५ इंच वाली आठ तोपें लगी थीं। सोलम प्रान्त के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने ८ जर्मन टैंक नष्ट किये।

२५ मई—स्वेज नहर पर हवाई आक्रमण हुआ। अटलांटिक सागर में नाजी जहाजों का पीछा किया गया और एक जहाज डुबाया गया और कोलम्बस पकड़ा गया।

२६ मई—क्रीट के मलीमी प्रान्त में सैनिकों में हाथों हाथ युद्ध हुआ। नाजी विमानों ने बम वर्षा करके क्रीट के नगरों को सत्यानाश किया। इराक की सरकार मसूल नगर को भाग गई।

२७ मई—डेनमार्क के तट के समीप ब्रिटिश तथा जर्मन समुद्री जहाजों में भीषण युद्ध हुआ। विस्मार्क नामक नाजी जहाज का पीछा किया गया और टारपीडो बम्बों ने उस पर हमला भी किया। क्रीट के युद्ध में जर्मन विमानों की हानि हुई परन्तु जर्मन सेना को सफलता हुई। ब्रिटिश स्थानों पर जर्मन सेना घुस गई।

३० मई—इँगलैंड के दक्षिणी तट पर जर्मन विमानों ने बम गिराये क्रीट में भीषण युद्ध हुआ। अबीसीनिया में गोंदर स्थान पर युद्ध हुआ। इटली की सेना पीछे हटी। रूमसागर में कोरे रासो नामक इटली का जहाज टारपीडो द्वारा डुबाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१ मई—रशीद अली इराक भाग गया। ब्रिटिश सेना बगदाद के समीप पहुँची। अमीर अब्दुल्ला ने इराक की सरकार बनाई।

क्रीट की भीषण स्थिति हो गई। वहां भीषण युद्ध हुआ। क्रीट में इटैलियन सेना भी पहुँच गई।

१ जून—ईराक में क्षणिक संधि हुई। डबलिन पर हवाई आक्रमण हुआ जिसमें २३ आदमी मरे। क्रीट की शोचनीय स्थिति हो गई। मित्र सेना समस्त शक्ति के साथ लड़ी।

२ जून—क्रीट से १५ हज़ार ब्रिटिश सेना हटा कर मिश्र पहुँचाई गई। इराक के युद्ध का अंत हुआ।

३ जून—सीरा में २०० जर्मन विमान पहुँचे। केरो से सीरिया का मार्ग काट दिया गया। मानचिस्टर नगर पर जर्मन विमानों ने बम वर्षा करके बड़ी हानि की। ब्रेनर घाट (दर्रे) पर हिटलर मुसोलनी सम्मेलन हुआ और नये साम्राज्य के स्थापना की बातचीत हुई।

४ जून—डाकर, अल्जियर्स और बीरट के विची बन्दरगाह जर्मनी को दिये गये। बर्लिन पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। एक नाज़ी जहाज डुबाया गया। सीरिया की जटिल समस्या उत्पन्न हो गई। पैलेस्टाइन सीमा पर ब्रिटिश सेना एकत्रित की गई।

५ जून—विची सरकार ने सीरिया की रक्षा की तयारी किया और जनरल वेगांड को सेनापति बनाया गया। मसूल पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया। जर्मनी के भूतपूर्व साम्राट की मृत्यु हुई।

६ जून—अमरीका ने विची सरकार को जर्मनी को सैनिक सहायता प्रदान करने के लिये चेतावनी दी। सिकन्दरिया पर भीषण हवाई आक्रमण हुआ जिससे एक सौ से अधिक आदमी मरे। ब्रिटिश विमानों ने बेङ्गाजी पर आक्रमण किया। दो शत्रु जहाज डुबाये गये।

७ जून—दमिश्क के हवाई बन्दरगाह पर जर्मन अधिकार हो गया और समस्त सीरिया पर जर्मन प्रभुत्व हो गया। फ्रान्स के तटीय बन्दरगाहों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। डोवर तट पर दोनों ओर से गोलाबारी हुई। विदेशी जहाज़ों को छीनने के लिये प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट ने आज्ञा दिया। स्वतंत्र फ्रान्सीसी सेना ने सीरिया पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटिश सेना ने सहायता किया। जनरल कैट्राक्स ने सीरिया और लेबानोन को स्वतंत्रता का वचन दिया। हालैंड तट के समीप समुद्री युद्ध हुआ। दो शत्रु जहाज ब्रिटिश विमानों द्वारा जला दिये गये।

८ जून—सीरिया पर तीन ओर से आक्रमण किया गया। मित्र सेना बेरूत, अलप्पो और दमिश्क की ओर बढ़ने लगी। ब्रिटिश लड़ाका जहाजों ने बेरूत के समीप सेना उतारी। सिकन्दरिया पर समस्त रात नाजी विमानों का हमला हुआ। ५४७ आदमी मरे और बहुत से घायल हुये।

९ जून—मित्र सेना सीरिया में ४० मील भीतर घुसी। टाएर और डेरा नामक स्थानों पर मित्र सेना ने अधिकार किया। विची सरकार ने ब्रिटिश तथा अमरीकन सरकार को सीरिया पर आक्रमण होने के लिये विरोधी पत्र लिखा।

१० जून—जर्मन पनडुब्बे जहाज ने अमरीकन जहाज डुबाया। क्रीट से सेना हटाते हुये तीन ब्रिटिश जहाज डूबे। ब्रिटिश सेना दमिश्क से १० मील दूरी पर पहुँच गई। अलप्पो की ओर मित्र सेना बढ़ रही है। समस्त यूनान पर इटली का अधिकार हुआ।

११ जून—ब्रेस्ट पर ब्रिटिश हवाई हमला हुआ। डोवर में नाजी टैंकर जहाज में ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब द्वारा आग लगा दी।

१२ जून—सीरिया में मित्र सेना ५० मील भीतर की ओर बढ़ी। फ्रांसीसी जल सेना ने पूर्वी रूमसागर की ओर प्रस्थान किया।

१३ जून—उत्तरी सागर में अलप्पो की ओर मित्र सेना बढ़ने लगी। ब्रिटिश विमानों ने आक्रमणकारी जर्मन तटीय नगरों पर हवाई हमला किया।

१४ जून—सीरिया में सभी स्थानों पर मित्र सेना की विजय हुई। पामीरा की ओर मित्र सेना बढ़ी। नार्वे के तट के समीप ब्रिटिश विमानों ने एक पाकेट बैटिल शिप (जहाज) पर हवाई आक्रमण किया। रूह्र प्रान्त पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण हुआ। जर्मन विमानों ने जिब्राल्टर बन्दरगाह पर हवाई आक्रमण किया।

१५ जून—रूस पर हिटलर ज़ोर डाला कि वह युद्ध में उतरे। सोवियट सीमा पर १२० जर्मन सैनिक डिवीजन लगाये गये। रूमसागर में ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज़ ने इटली के दस जहाज़ डुबा दिये। मित्र सेना सोदन के पार पहुँच गई।

१६ जून—अमरीका के जर्मन कौंसलेट बन्द किये गये। ब्रिटिश चेनल के बन्दरगाहों पर हवाई आक्रमण हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ११ जर्मन विमान गिराये गये। कपूज़ो पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार किया। मित्र सेना सीदन के आगे बढ़ी।

१८ जून—ब्रिटिश सेना ने लीबिया में प्रवेश किया। सीरिया में फ्रान्सीसी और मित्र सेना में भी युद्ध हुआ। अँकारा में जर्मनी और टर्की के बीच आर्थिक संधि हुई। फिनलैंड में नाज़ी सेना पहुँची।

१९ जून—सोलम प्रान्त से ब्रिटिश सेना हटी। कुछ इटली के जहाज़ डुबाये गये। दमिश्क़ पर ब्रिटिश सेना ने हमला किया।

२० जून—दमिश्क के बाहरी भाग पर मित्र सेना ने अधिकार कर लिया। सोलम प्रान्त जर्मन हाथों में है। १३ जापानी जहाज़ों ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। अमरीका कौंसलेट जर्मनी और इटली में बन्द किये गये।

२१ जून—रूज़वेल्ट ने राबिन मूर जहाज के डुबाने पर जर्मनी का घोर विरोध किया। पूर्वी योरुप में जर्मन सेना का जमघट हुआ। रूमानिया में जर्मन सेना बढ़ी।

२२ जून—जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया। हिटलर ने आक्रमण की घोषणा किया। १५०० मील लम्बी सीमा पर आक्रमण हुआ। फिनिश और रूमानियन लोग जर्मनी के सहायक हैं। दमिश्क में ब्रिटिश सेना का अधिकार हुआ।

२३ जून—रूसी पोलैण्ड में जर्मन सेना बढ़ी। तीन गाँवों पर अधिकार किया। चर्चिल ने रूस को सहायता देने के लिये बचन दिया।

२४ जून—रूसी पोलैंड के गांवों पर जर्मन सेना ने अधिकार किया। १२७ जर्मन विमान गिराये गये। लिथ-वानिया रूस से अलग हो गया।

२५ जून—सोवियट हवाई सेना ने कान्स्टेञ्ञा, वार्सा, लबलिन और डंज़िग नगर पर आक्रमण किया। समस्त सीमा पर युद्ध हुआ। जर्मन पैराच्यूट सेना युद्ध लाइन पर उतारी गई। बृटेन ने नाज़ी लोगों को परास्त करने के हेतु रूस के साथ होकर लड़ना स्वीकार किया और ब्रिटिश सैनिक तथा आर्थिक राजदूत मास्को गये। फिनलैंड भी युद्ध क्षेत्र में उतरा। हेल्सिंकी पर बम्ब वर्षा की गई।

२६ जून—आठ स्थानों में जर्मन सेना ने रूसी सेना की लाइन को तोड़ दिया। विजना प्रान्त में जर्मन सेना रूसी लाइन तोड़ कर घुस गई। लेनिनग्राड पर बम्ब वर्षा करके आग लगा दी गई। जर्मनी तथा फ्रान्स के नगरों पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब बर्षा किया। रूस में टैंकों का भीषण युद्ध हुआ। नाज़ी सेना ने लवाव और रीगा पर अधिकार कर लिया।

२७ जून—उत्तरी सीमा से रूसी सेना हटाई गई। मिन्स्क की ओर नाज़ी टैंक सेना का आक्रमण हुआ। प्रथ नदी को नाज़ी सेना नहीं पार कर सकी। हँग्री ने रूस के साथ युद्ध छेड़ दिया।

सीरिया से पामीरा नगर की ओर ब्रिटिश सेना बढ़ी। इटली के दक्षिण की ओर शत्रु जहाज़ों पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण करके २० हज़ार टन के व्यापारिक जहाज़ डुबा दिये।

दमिश्क पर नाज़ी हवाई आक्रमण से ७० मरे। २९ घायल हुये और १०० से ऊपर घर नष्ट हुये।

२८ जून—मित्र सेना दमिश्क के उत्तर की ओर बढ़ी नेबरेक पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार किया। अबीसीनिया में जिम्मा के उत्तर पश्चिम ब्रिटिश सेना बढ़ी।

२९ जून—मिन्स्क प्रान्त में टैंकों का भीषण संग्राम हुआ जिसमें जर्मन टैंक पीछे हटा दिये गये। लवाव से ८५ मील उत्तर पश्चिम लक स्थान पर और मिन्स्क से २५० मील दक्षिण की ओर घोर संग्राम हुआ। वियालस्टोक में भीषण युद्ध हुआ।

३० जून—पामीरा को ब्रिटिश सेना ने घेरा डाल दिया। बीरट पर ब्रिटिश विमानों ने भीषण हवाई हमला किया। हैम्बर्ग और ब्रेमेन के डाकों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा करके आग लगा दी। विची सरकार ने रूस से अपना सम्बन्ध तोड़ दिया।

१ जुलाई—उत्तरी रूस में जर्मन सेना की विजय हुई। रूसी मैदान में घोर युद्ध हुआ। रूसी लोगों ने प्रतिकूलता आरम्भ किया।

२ जुलाई—रूस के तीन प्रान्तों में युद्ध हुआ। मास्को पर हवाई आक्रमण किया गया। अबीसीनिया में दो शत्रु जनरलों ने हथियार रख दिये।

३ जुलाई—जर्मन सेना ने मुर मिन्स्क पर अधिकार कर लिया। जर्मन सेना मास्को से २५० मील की दूरी पर पहुँची। जर्मन सेना ने बियालिस्टाक के पूर्व एक लाख रूसी सेना को पकड़ा और बहुत सी युद्ध सामग्री उनके हाथ लगी। चीन ने धुरी राष्ट्रों से अपना सम्बन्ध तोड़ दिया।

४ जुलाई—जर्मन सेना ने नया आक्रमण आरम्भ किया। द्वीना नदी को पार करके जर्मन सेना कीव की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ी। रूसी लोग मज़बूती के साथ सामना कर रहे थे। पामीरा नगर पर मित्र सेना को १३ दिन घेरे के बाद अधिकार हुआ। उत्तरी जर्मनी में ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा और ११ शत्रु विमान नष्ट किये।

अलान्द द्वीप पर फिनिश सेना ने अधिकार कर लिया।

५ जुलाई—उत्तरी रूसी सेना में युद्ध हुआ। शत्रु सेना लैटविया की सीमा पर पहुँची। लेपेल प्रान्त में रूसी सेना पीछे हटी। नाज़ी सेना यूक्रेन की ओर बढ़ी।

डाला सिदामो में इटली की अबीसीनियन सेना ने हथियार रख दिये। एक आस्ट्रेलियन डिस्टाएर डुबाया गया।

६ जुलाई—लैटविया की सीमा पर नाज़ी सेना पीछे हटाई गई। स्टोनिया की राजधानी तल्लिन पर जर्मन अधिकार हो गया। नीपर नदी पर जर्मन सेना पहुंच गई। हंग्री की सेना ने कोलामी, स्टानिस्लाक नगरों पर अधिकार किया।

७ जुलाई—लेनिनग्राड पर आक्रमणकारी जर्मन सेना पीछे हटा दी गई। रूसी सेना ने प्रतिकूल धावा मारा। ब्रिटिश विमानों ने जर्मन कारखानों पर धावा मारा और भीषण हानि पहुँचाई।

८ जुलाई—स्टैलिन लाइन पर नाज़ी सेना पीछे हटा दी गई। समस्त नाज़ी सेना की हार हुई। रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। रीगा की खाड़ी में रूसियों ने दो नाज़ी विध्वंस कारी जहाज़ों और एक यूबोट को नष्ट कर दिया। ब्रिटिश विमानों ने शत्रु पथ रक्षक सेना पर धावा मार कर हानि पहुँचाई।

९ जुलाई—बेसारबिया में नाज़ी सेना पीछे हटाई गई। समस्त सीमा पर युद्ध हुआ। लिले और बिलियम्स हेविन पर ब्रिटिश हवाई हमला हुआ।

१० जुलाई—लेपेल पर सोवियट सेना ने प्रतिकूल धावा मार कर जर्मन सेना को पीछे हटा दिया। फिन तथा हंगेरियन सेना आगे बढ़ी।

११ जुलाई—नाज़ी सेना का आक्रमण रोक दिया गया। बियालिस्टाक और मिन्स्क प्रान्त में जर्मन सेना ने ३,२३,००० रूसी सैनिक पकड़े और बहुत ज्यादा युद्ध सामग्री उनके हाथ लगी।

१२ जुलाई—अस्सी लाख रूसी सेना ने प्रस्थान किया। रूसी लोगों के अनुसार १० लाख नाज़ी सेना मारी गई। जर्मन बास फोरस पर अधिकार करने की तयारी में था। विची सरकार ने क्षणिक संधि शर्तें नाज़ी प्रभुत्व के कारण अस्वीकार कर दीं।

१३ जुलाई—जर्मन पंजेर सेना पीपस झील के पूर्व लेनिनग्राड की ओर बढ़ने लगी।

प्रीपेट दलदल के समीप जर्मन सेना ने रूसी सैनिक लाइन तोड़ दिया। नीस्टर के पूर्व जर्मन सेना कीव नगर के सामने पहुँच गई। दक्षिणी पूर्वी जर्मन तथा रूमानी सेना ने नीस्टर नदी के समीप रूसी सेना को हराया। रूस और इँगलैंड के बीच सहायता देने का समझौता हुआ।

१४—जुलाई—दो नगरों पर रूसी सेना ने फिर अधिकार कर लिया। १३१ नाज़ी विमान नष्ट किये गये। सीरिया में क्षणिक संधि हो गई। रूसी लोगों ने १०० नाज़ी टैंक नष्ट किये। दो जर्मन विध्वंस कारी जहाज़ डुबाये गये। फिन सेना आगे बढ़ी। शत्रु डाकों पर ब्रिटिश विमानों का हमला हुआ। शत्रु विमानों ने सिकन्दरिया पर हमला किया।

१५ जुलाई—कामन्स सभा में चर्चिल ने बतलाया। कि रूसी ब्रिटिश लोगों के साथी हैं।

१६ जुलाई—मध्यवर्ती रूस में भीषण युद्ध हुआ दोनों ओर बड़ी हानि हुई। बुखारेस्ट पर रूसी विमानों ने हवाई आक्रमण किया।

१७ जुलाई—नाज़ी टैंक सेना पीछे हटाई गई। लाल बम्ब वर्षक विमानों ने नाज़ी सेना पर आक्रमण किया। जापानी मन्त्री मण्डल ने त्याग पत्र दिया।

१८ जुलाई—जर्मन सेना स्मोलिन्स्क पर पुनः अधिकार कर लिया। मास्को की ओर जर्मन सेना बढ़ी। लेनिनग्राड को नाज़ी सेना ने खतरे में डाल दिया। भूमध्य सागर में ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज़ ने शत्रु पथ-रक्षक सेना के जहाजों को डुबा दिया।

१९ जुलाई—जर्मन नगरों पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण हुआ।

२० जुलाई—बाल्टिक सागर में युद्ध हुआ जिसमें ११ नाज़ी जहाज डूब गये। नोवांगाड और ओलीन्स्क नगरों पर जर्मन अधिकार हुआ।

२१ जुलाई—जर्मन सेना के हाथों से रक्षा करने के लिये रूसी लोगों ने अपने नगरों को जला देने की नीति अपनाया। लेनिनग्राड तथा रूसी जलसेना खतरे में थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ जुलाई—स्मोलेंस्क प्रान्त में रूसियों तथा जर्मनों के मध्य भीषण युद्ध हुआ। लैनिनग्राड और लाल जहाज़ी बेड़ा खतरे में था। नीस्टर नदी के पूर्व घोर संग्राम हुआ।

आर० ए० एफ० के ब्रिटिश वायुयानों ने जर्मनी के हवाई अड्डों पर धावा मारा।

२३ जुलाई—मास्को पर हवाई आक्रमण हुआ। कीव के ८० मील पश्चिम युद्ध हो रहा था। उत्तर की ओर से लेनिनग्राड पर चढ़ाई हो रही थी। नाज़ी लाइन के पीछे रूसी पैराचूट सेना उतारी गई।

२५ जुलाई—जापानी जल सेना ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। विची सरकार ने जापानी शर्तों को स्वीकार कर लिया। इन्डोचीन में जापानी हवाई अड्डे बनेंगे। नाज़ी सेना यूक्रेन प्रान्त में बढ़ी। स्मोलेंस्क प्रदेश की ओर बढ़ने से जर्मन सेना रोकी गई। बाल्टिक सागर में रूसी सेना ने जर्मन पथ रक्षक जल सेना पर बम्ब गिराये और १० जहाज़ डुबा दिये। मास्को पर तीसरा जर्मन हवाई आक्रमण हुआ नागरिकों के घरों में आग लगी और बहुत से नागरिक स्त्री-पुरुष मरे तथा घायल हुये।

२८ जुलाई—जापान ने थाई देश के सामने अपनी शर्तें पेश कीं। कम्बोडिया में जापानी सेना उतरी। कोरिया और मंचूरिया में जापानी सेना एकत्रित हुई।

युद्ध में रूस सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। १०४ जर्मन विमान गिराये गये।

२९ जुलाई—इँडोचीन में जापानी सेना ने ८ हवाई अड्डों पर अधिकार किया। जापान इण्डोचीन की नवीन संधि हुई। रूसी युद्ध में रूसी सेना ने डट कर जर्मन सेना का सामना किया। स्मोलिन्स्क का युद्ध अन्त होने का था। लन्दन पर शत्रु विमानों ने एक मास के पश्चात् पुनः रात को आक्रमण किया।

३० जुलाई—स्मोलिन्स्क के समीप नाज़ी तथा रूसी सेना में घोर संग्राम हुआ। ७४ जर्मन विमान गिराये गये। नाज़ी सेना कीव पर एकत्रित होने लगी।

कमरान्द की खाड़ी पर जापान ने अधिकार कर लिया दक्षिणी इन्डोचीन में जापानी सेना उतारी।

३१ जुलाई—मास्को से नाज़ी आक्रमण कारी विमान भगाये गये। नार्वे के एक बन्दरगाह पर ब्रिटिश तथा रूसी विमानों ने आक्रमण किया। बाल्टिक सागर में नाज़ी समुद्री सेना तितर वितर हो गई उस पर रूसी टारपीडो बोट ने धावा मारा था।

३ अगस्त—दो जर्मन डिवीज़नों को रूसी सेना ने नष्ट किया और ३०० नाज़ी टैंक बर्बाद किये। बाल्टिक सागर में जर्मन जहाज़ों पर रूसी विमानों ने धावा मारा।

५ अगस्त—कीव की ओर नाज़ी सेना का बढ़ना रोक दिया गया। स्मोलिन्स्क के दक्षिण पूर्व जर्मन सेना बढ़ी। खोलम पर जर्मन अधिकार हुआ।

सारडीनिया के हवाई अड्डों तथा बन्दरगाहों पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। स्वेज़ नहर प्रान्त पर नाज़ी हवाई हमला हुआ जिससे ६० व्यक्ति मर गये।

६ अगस्त—ब्रिटिश वायुयानों ने पश्चिमी जर्मन नगरों पर तथा सोवियट विमानों ने बर्लिन पर हवाई आक्रमण किये। यूक्रेन में जर्मन सेना को सफलता प्राप्त हुई। कीव और ओडेसा के मध्य रेलवे लाइन काट दी गई। जर्मन सेना ओडेसा की ओर बढ़ने लगी। जर्मन समाचार के अनुसार यूक्रेन में एक लाख ३० हज़ार रूसी सैनिक पकड़े गये, २ लाख मारे गये और ३१७ रूसी टैंक जर्मन सेना के हाथ लगे।

थाई लैंड ने आक्रमण होने पर युद्ध करने का निश्चय किया। मंचूको सीमा पर जापानी सेना एकत्रित की गई।

१० अगस्त—मास्को पर जर्मन हवाई आक्रमण हुआ और ८ नाज़ी विमान गिराये गये। यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ। कोरोस्टेन नगर पर जर्मन अधिकार हो गया और सोवियट वायुयानों ने जर्मन हवाई अड्डों पर बम्ब वर्षा किया।

११ अगस्त—जर्मन सेना कालासागर के ओडेसा तथा निकोलीन बन्दरगाहों पर पहुँचने का भरसक प्रयत्न किया। उत्तर की ओर फिनलैंड की सेना ने कई स्थानों पर रूसी सैनिक लाइन को तोड़ दिया। रूसी सेना ने जर्मन टैंक सेना को नष्ट किया। मास्को पर जर्मन हवाई आक्रमण हुआ जिससे ५ जर्मन वायुयान नष्ट हुये।

१४ अगस्त—उत्तर की ओर से रूसी सेना हटाई गई। सोलट्सी के दक्षिण पूर्व युद्ध हो रहा है। ओडेसा की ओर जर्मन सेना बढ़ रही थी।

१५ अगस्त—रूसी सेना ने यूक्रेन के किरोओग्राड, पेरओमेस्क आदि नगरों को खाली कर दिया। बुडनी रूसी प्रधान सेनापति ने कारखाने वाले प्रदेश की रक्षा के लिये नई रक्षक लाइन बनाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्टर चर्चिल और प्रेसीडेंट रुज़वेल्ट ने प्रस्ताव किया कि मास्को में स्टैलिन से संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन के उच्च पदाधिकारी दूत बात चीत करें।

१६ अगस्त—स्टैलिन ने मास्को में तृतीय शक्ति सभा का होना स्वीकार किया। इंडोचीन में एक लाख के समीप जापानी सेना पहुंची। रूम सागर में दो जर्मन जहाज डुबाये गये।

१७ अगस्त—यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ। रूसी सेना ने नये स्थानों पर अड्डा जमाया। नाज़ी सेना ने कारखाने वाले प्रदेशों पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया। समस्त सीमा पर घोर युद्ध हुआ। ऐंग्लो सोवियट संधि हुई।

१८ अगस्त—निकोलीव और क्रोओइरोग नगर पर जर्मन सेना ने अधिकार कर लिया। सोवियट तथा ब्रिटिश सरकार ने ईरान को चेतावनी दिया। जर्मन मन्त्री ने भी ईरान को चेतावनी दिया कि यदि जर्मन नागरिक ईरान से निकाले जावेंगे तो जर्मनी ईरान के साथ अपने सम्बंध तोड़ देगा। सिसली पर हवाई आक्रमण हुआ।

जर्मन सेना ने लैनिनग्राड से ७० मील पश्चिम की ओर किङ्गीसेप नगर पर अधिकार जमा लिया। रूसी सेना नीपर नदी पर थी और वह प्रतिकूल आक्रमण कर रही थी।

१६ अगस्त—यूक्रेन के दक्षिणी पश्चिमी भाग पर जर्मन अधिकार हो गया। बुडनी की सेना ने नीपर नदी पार किया। यूक्रेन में ६० हज़ार जर्मन सेना, ८४ हैंक, ३५ हज़ार टन का बैटिल शिप जहाज़, १० हज़ार टन का क्रूशियर जहाज़, ४ विध्वंसकारी जहाज़ और २ सबमरीन जर्मन सेना के हाथ लगे।

ब्रिटिश विमानों ने फ्रान्स और जर्मनी के नगरों पर हवाई आक्रमण किया और रूम सागर में कई जर्मन जहाज़ डुबाये।

२० अगस्त—नीपर नदी पर घोर संग्राम हो रहा था। नीपर नदी के कारण जर्मन सेना को आगे की ओर बढ़ने में कठिनाई हो रही थी। गौमल स्थान पर जर्मन लोगों को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। मार्शल और शिलोव उत्तरी जर्मन सेना के प्रधान सेनापति ने लैनिनग्राड प्रान्त के नागरिकों से लेनिनग्राड की रक्षा की अपील की।

२१ अगस्त—नीपर नदी पर जर्मन सेना रोक दी गई गोमेल में नाज़ी सेना को विजय प्राप्त हुई। लेनिनग्राड पर तीन ओर से आक्रमण हुआ। १० लाख सेना नगर की रक्षा के लिये लगाई गई। रूसी विमानों ने बर्लिन पर धावा किया।

२२ अगस्त—हैलीफाक्स इँगलैंड लौटे। ईरान ने संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। ब्रिटिश चैनल पर दो जहाज़ गिराये गये।

२३ अगस्त—लेनिनग्राड पर आक्रमण करने वाले बम्ब वर्षक विमान भगा दिये गये। ओडेसा के समीप घोर संग्राम हुआ। सोवियट सेना ने नाज़ी समुद्री बेड़े पर धावा मारा, दो जहाज़ों को डुबा दिया, एक को जला दिया। नौ गांवों पर रूसी सेना ने पुनः अधिकार कर लिया।

ईरान ने आक्रमण का सामना करने की तयारी किया।

२४ अगस्त—नीपर नदी का संग्राम आरम्भ हुआ मध्यवर्ती भाग में प्रतिकूल आक्रमण नाज़ी सेना पर हुये। ईरान में रूस और ब्रिटिश सेना ने मिल कर कार्य आरम्भ किया।

२५ अगस्त—रूसी लोगों ने नोवोग्राड खाली कर दिया। नाज़ी लोग नदी नहीं पार कर सके। स्पैनिश तट पर ७ ब्रिटिश जहाज़ डुबाये गये। वर्षा के कारण जर्मन सेना को आगे बढ़ने में रुकावट हो रही है। सोवियट और ब्रिटिश सेना आगे बढ़ रही हैं।

२६ अगस्त—ईरान पर दो ओर से आक्रमण हुआ। एक ओर से ब्रिटिश सेना और दूसरी ओर से रूसी सेना बढ़ी। ईरान की सेना ने बढ़ कर सामना किया।

२७ अगस्त—ईरान के बादशाह ने संधि करने के लिये और जर्मन लोगों को निकालने के लिये कहा। ब्रिटिश तथा रूसी दूतों से प्रस्ताव किया गया।

लेनिन ग्राड के समीप नाज़ी सेना रोक दी गई। मुख्य रेलवे जंकशनों पर नाज़ी अधिकार हो गया। रूसी लोगों ने अपने सबसे बड़े बांध को जला दिया।

२८ अगस्त—ईरान के युद्ध का अन्त हुआ और नई सरकार बनाई गई। मित्र सेना शान्ति पूर्वक आगे बढ़ी। तेहरान में जर्मन लोगों ने अपने कागज़ात जला दिये।

२६ अगस्त—नीपर ओपेटरास्क से रूसी सेना हटा ली गई। यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ। ईरान के युद्ध सम्बन्धी अड्डों पर मित्र सेना का अधिकार हो गया। तेहरान स्वतंत्र रक्खा गया। लेनिनग्राड मास्को के मार्ग काट दिये गये। कई स्थानों पर रेलवे को जर्मन सेना ने पार किया। लेनिनग्राड और बाड़ बार्ग पर जर्मन अधिकार हो गया। नीपर नदी पर रूसी सेना ने प्रतिकूल धावा मारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसी सीमा पर हिटलर मुसोलनी सम्मेलन हुआ।

३० अगस्त—सोवियट सेना ने ईरान में शेद, पहले वी मेहराबेद पर अधिकार कर लिया।

१ सितम्बर—ब्रिटिश विमानों ने ब्रेमेन (जर्मन) पर बम्ब वर्षा किया धुरीराष्ट्रों की सेना टर्की सीमा पर काला सागर में प्रवेश करने के लिये एकत्रित हुई। ईरान में ब्रिटिश तथा रूसी सेना एक दूसरे से मिली। रूसी सेना ने ईरान के नगरों पर अधिकार किया दक्षिणी ईरान में क्षणिक संधि के पश्चात् अहवाज़ में भारतीय सेनाओं ने प्रवेश किया।

यूक्रेन के युद्ध में नाज़ी सेना नीपर नदी नहीं पार कर सकी। जर्मनी पर सोवियट हवाई आक्रमण हुये।

२ सितम्बर—तुर्की सीमा पर धुरी राष्ट्रों की २० डिवीज़न सेना एकत्रित हो गई। टोकियो सेनापति के प्रधान ने घोषणा किया कि जापान को अमरीका, ब्रिटेन, चीन और हालैंड के पूर्वी द्वीप समूहों के घेरे को तोड़ देना चाहिये। जर्मन सरकार ने तुर्की सरकार से प्रार्थना किया कि वह तेहरान के जर्मन लोगों को अपने यहां स्थान दे दे।

लेनिनग्राड को बाहरी रक्षक लाइन को जर्मन सेना ने तोड़ दिया। नाज़ी सेना ने लेनिनग्राड का घेरा डाला रूसी सेना ने टैलिन नगर को खाली कर दिया।

३ सितम्बर—जापान में नाज़ी-प्रतिकूल प्रचार के कारण जापानी मन्त्री मण्डल में परिवर्तन होने की सम्भावना हुई। जर्मनी ने फ्रान्स को संधि के प्रस्ताव दिये। डंकिर्क के समीप ब्रिटिश विमानों ने जर्मन सामान ले जाने वाले जहाज़ों पर बम्ब बर्षा की।

जापान के प्रधान मन्त्री ने घोषणा की कि मलय द्वीप में अधिक भारतीय सेना पहुँचने के कारण झगड़ा उत्पन्न होने की सम्भावना है। थाई-देश के प्रधान मन्त्री वहां की सेना का प्रधान अफसर बना। सर्विया में जर्मनी ने नई सरकार का निर्माण किया।

४ सितम्बर—मास्को, कींव, स्मोलिंस्क और लेनिनग्राड में रूसी सेना के अधिक एकत्रित हो जाने से जर्मन सेना का आगे बढ़ना रुक गया। लेनिनग्राड अपनी तयारी के कारण लम्बे युद्ध का सामना करने के लिये तयार हुआ।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने अपने प्रचारक मास्को के लिये तयार किये। हरीमन उनका नेता बनाया गया। ब्रिटिश बम्ब वर्षकों ने बर्लिन पर बम्ब वर्षा किया।

५ सि०—लेनिनग्राड के १२ मील पश्चिम जर्मन सेना पहुँच गई। मध्यवर्ती भाग में रूसी सेना ने जर्मन सेना के प्रतिकूल धावा किया। नीपर लाइन की रक्षा रूसी सेना ने बहादुरी से किया।

आइसलैण्ड के मार्ग में संयुक्तराष्ट्र के विध्वंसकारक जहाज़ पर नाज़ी पनडुब्बे जहाज ने आक्रमण किया परन्तु टारपीडो जहाज पर नहीं लगा। लेनिनग्राड में रूसी सेना की स्थिति बड़ी शोचनीय हो गई परन्तु लेनिनग्राड और ओडेसा में नाज़ी सेना आगे बढ़ने से रोक दी गई। मध्यवर्ती भाग से रूसी सेना प्रतिकूल आक्रमण करती आगे बढ़ी। इटली के तट के समीप ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज ने इटली के लाइनर जहाज को डुबा दिया।

६ सि०—ब्रिटेन ने सभी प्रकार रूस को सहायता पहुँचाने की घोषणा की। फिनलैण्ड ने घोषणा की कि वह अपनी सीमा के आगे युद्ध करने के लिये न गढ़ेगा। त्रिपोली के समीप ब्रिटिश सबमरीन ने एक दूसरा इटैलियन जहाज डुबा दिया। यह जहाज ११६६८ टन का था।

७ सि०—जर्मन सेना नीपर नदी को पार करने में असफल रही। लेनिनग्राड नगर की रक्षा में ब्रिटिश विमानों ने भाग लिया। रूसी सेना ने कुछ नगरों पर दोबारा अधिकार कर लिया। जर्मनी ने अमरीका के ग्रियर नामक जहाज पर आक्रमण होने का उत्तर दिया और कहा कि ग्रियर ने जर्मन सबमरीन पर आक्रमण किया इसलिये जर्मन सबमरीन ने अपनी रक्षा हेतु उस पर आक्रमण किया।

८ सि०—लेनिनग्राड क्षेत्र से जर्मन पीछे हटा दिये गये। गोमेल प्रान्त में भी जर्मन सेना को पीछे हटना पड़ा। डच तट पर ब्रिटिश विमानों ने हवाई आक्रमण करके जर्मन जहाज डुबा दिया। जर्मन के राइन प्रान्त के रबड़ के कारखानों पर ब्रिटिश बम्बबर्षकों ने बम्ब गिराये।

९ सि०—स्पिटवर्जेन पर ब्रिटिश जलसेना ने अचानक अधिकार कर लिया। स्मोलिंस्क के समीप नाजी सेना तितर बितर कर दी गई। लेनिनग्राड के लिये घोर युद्ध हुआ। नार्वे तट पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब गिराये।

ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने चर्चिल रुज़वेल्ट सम्मेलन के सम्बन्ध में भाषण दिया और बतलाया कि अटलांटिक सागर का चार्टर भारत पर लागू नहीं हो सकता।

१० सितम्बर—आइसलैण्ड जाते समय दूसरा अमरीकन भोजन ले जाने वाला जहाज़ डुबोया गया। स्मोलिंस्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समीप रूसी तथा जर्मन टैंक सेना में भीषण युद्ध हुआ। एलमा नगर पर रूसी सेना ने अधिकार कर लिया। कोरिंथ नहर पर ब्रिटिश विमानों ने हवाई आक्रमण किया।

११ सि०—सोवियट सेना ने तीन ओर से आक्रमण किया। पांच दिन तक लगातार टैंक युद्ध हुआ। नीपर नदी पार करने में ४ हज़ार जर्मन सेना डूब गई। लेनिनग्राड में बम्ब वर्षा के कारण समस्त नगर में आग लग गई। तिमोशेनको की सेना आगे बढ़ी।

तटस्थता नियम को भङ्ग करने के लिये रूज़वेल्ट ने प्रधान अफसरों से बात चीत किया। जर्मनो ने अमरीका को उत्तर दिया कि ब्रिटेन सामान ले जाने वाले अमरीका जहाज़ों का मार्ग खतरे से खाली नहीं है।

१२ सि०—प्रेसीडेण्ट रुज़वेल्ट ने चेतावनी दिया कि धुरी राष्ट्र के जहाज़ अमरीका के रक्षक कटिबंध में प्रवेश नहीं कर सकते। रूस में धुर उत्तर की ओर नाज़ी सेना आगे बढ़ी। लेनिनग्राड का युद्ध पहले की भांति जारी रहा। रूसी सेना ने लोवर नीपर नदी को पुनः पार किया। और जर्मन सेना को पीछे हटाया, मध्यवर्ती भाग में तिमोशेनको की सेना आगे बढ़ी।

१३ सि०—आइसलैण्ड को सामान ले जाने वाला एक और अमरीकन जहाज डुबोया गया। दक्षिणी यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ जिससे कीव नगर के लिये नया खतरा उत्पन्न हो गया है।

ब्रिटिश वायुयानों ने रूम सागर में शत्रु पथरक्षक सेना पर आक्रमण किया और सामान से लदे हुये तीन जहाज़ डुबो दिये।

१४ सि०—रूसी तथा जर्मन सेनाओं का मुठभेड़ हुआ। रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया और गुस टैंकों का प्रयोग किया। ओडेसा के समीप रुमानी सेना की बड़ी हानि हुई। सोफिया के समाचार से विदित हुआ कि बल्गेरिया के मन्त्रियों ने अपनी सेना को देश की रक्षा के लिये हथियार उठाने की आज्ञा दे दी।

१५ सि०—कीव की भीषण परिस्थिति हुई नाज़ी सेना आगे बढ़ी। रूसी लोगों ने क्रेमेनचग खाली किया। मास्को में हवाई युद्ध हुआ। ओडेसा और लेनिनग्राड में पहले की भांति युद्ध जारी है।

१६ सि०—संयुक्तराष्ट्र अमरीका की जल सेना को आज्ञा दी गई कि धुरी राष्ट्र का जो भी युद्धकारी जहाज दिखाई पड़े उसे पकड़ ले या डुबा दे। पनामा नहर में धुरी राष्ट्र का आक्रमणकारी जहाज़ दिखाई पड़ा जिसका पता लगाया जा रहा है।

ईरान के राजा ने गद्दी छोड़ी। नाज़ी सेना लोअर नीपर नदी पार किया। कीव प्रान्त में नाज़ी सेना बढ़ी। बाल्टिक सागर के द्वीपों के लिये युद्ध हुआ।

१७ सि०—जर्मन गोला वर्षाने वाली तोपों ने इंगलिश तट पर गोला वर्षाया। ईरान के नये राजा ने शपत उठाई रूसी और ब्रिटिश अफ़सर तेहरान नगर में पहुँचे। मध्य वर्ती रूस के युद्ध में रूसी सेना को विजय हुई। १०००० नाज़ी सैनिक मारे गये।

१८ सि०—ओसेल द्वीप के युद्ध में नाज़ी सेना की हार हुई। स्मोलिंस्क नगर के पश्चिम की ओर रूसी सेना ने डेरा डाला। अमरीका की जल सेना ने इङ्गलैण्ड जाने वाले सामान की रक्षा का भली भाँति प्रबन्ध किया।

१९ सि०—क्रीमिया यूक्रेन का मार्ग काट दिया गया जर्मन सेना रूस में दक्षिण की ओर बढ़ी। लेनिनग्राड के चारों ओर युद्ध हुआ। दो धुरी राष्ट्र के सुरंग उठाने वाले जहाज़ नार्वे के तट-के समीप डुबा दिये गये।

२० सि०—रीगा खाड़ी के समीप नाज़ी सेना ने वर्मस और मून दो द्वीपों पर अधिकार कर लिया। कीव में भीषण युद्ध हुआ।

२१ सि०—जापान ने रूस को चेतावनी दिया। ब्रिटिश चैनेल में हवाई युद्ध हुआ। आर० पू० एफ० के विमानों ने डच तट के समीप दो पथ रक्षक शत्रु जहाज़ों पर आक्रमण किया। कीव नगर को रूसियों ने खाली कर दया।

२२ सि०—बल्गेरिया का राजा बोरिस हिटलर से मिलने गया जिससे सम्भावना है कि रूस तथा बल्गेरिया के मध्य युद्ध छिड़ जाय। मिस्र सीमा पर तीन दिन तक युद्ध होने के बाद धुरी राष्ट्रों की सेना को पराजय हुई। रूस की समस्त युद्ध सीमा पर युद्ध हुआ।

२३ सि०—रूसी सेना नीपर नदी के पूर्व की ओर हट गई। जर्मन लड़ाका विमानों ने रूसी जहाज़ी बेड़े पर आक्रमण किया। आइसलैंड के पास एक और दूसरा अमरीकन जहाज़ डुबाया गया।

जापान ने मंचूको प्रान्त में १० लाख सेना भेजा। रूस में दक्षिण की ओर जर्मन सेना रोस्टोव और कार्कोव की ओर बढ़ी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४ सि०—लेनिनग्राड के चारों ओर संग्राम हुआ। जर्मन सेना ७ मील पीछे हटा दी गई। फिनलैण्ड की सेना ने लडोगा झील के द्वीपों पर अधिकार कर लिया। कीव के युद्ध में रूस की बड़ी हानि हुई और पञ्चम लाल रूसी सेना का प्रधान सेनापति पकड़ लिया गया। साइबेरिया की ओर रूसी सेना बढ़ी।

२५ सि०—जर्मन समाचार के अनुसार पता चला कि जर्मन सेना लेनिन ग्राड नगर के बाहरी भाग में प्रवेश कर गई। पश्चिमी डवीना नदी पर घोर संग्राम हुआ। नाज़ी सेना को प्रतिकूल रूसी आक्रमण के कारण पीछे हटना पड़ा। २,५०० जर्मन सैनिक मारे गये।

२६ सि०—लेनिनग्राड के चारों ओर लगातार युद्ध हुआ। नगर की प्रथम रक्षक लाइन तोड़ दी गई। मध्यवर्ती रूसी प्रान्त में नाज़ी सेना के विरुद्ध आक्रमण हुआ। नाज़ी सेना खरकोव नगर से ३५ मील की दूरी पर पहुँची।

२८ सि०—हूनान में चीनी-जापानी सेना में युद्ध हुआ जिससे जापानी सेना का आगे बढ़ना रुक गया।

२९ सि०—रूसी सेना ने १० गांवों पर अधिकार कर लिया। लेनिनग्राड पर रक्षक लाइन सुदृढ़ हुई। कई नाज़ी जहाज़ डुबाये गये। उत्तरी फ्रांस के रेलवे लाइनों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। जर्मन सेना ने क्रीमियां पर विद्वत युद्ध आरम्भ करने की तयारी किया।

देश-दर्शन्

अब तक इस पुस्तक-माला में लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिश्र भाग १, मिश्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैंड, रूस, थाई देश (स्याम), बल्गेरिया, अल्सेस-लारेन, काश्मीर और जापान आदि अंक निकल चुके हैं। आगे भी एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होती रहेगी। पुस्तक चित्रों और नकशों से खूब सुसज्जित रहती है और निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जाती है। काग़ज, कवर छपाई-सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ है। फिर भी लगभग सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।=) है। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) है। इस पुस्तक-माला (देश-दर्शन) के ग्राहक बन कर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने का श्रेय लीजिये। आशा है लौटती डाक से ही अपना आर्डर भजने की कृपा करेंगे।

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jumna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।-)

सितम्बर १९४१

सम्पादक—रामनारायण मिश्र बी० ए०

ANNUAL SUBSCRIPTION
Indian: Rs. 3/-
Foreign: Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक सूचना

अभी हाल ही में हमारे यहां से 'अनोखी दुनियाँ' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें मिट्टी का तेल, जहाज़, रेलगाड़ी, भोजन, लोहा और फौलाद, हवाई जहाज़, सोना, वाहन या बारबरदारी, घर और पहिये वाली गाड़ी की दस कहानियां दी गई हैं। प्रत्येक कहानियों के साथ एक तिरंगी तस्वीर है और प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस से बालकों को शिक्षा आसानी से मिल जाती है। इस पुस्तक का लागत मूल्य ।।≈) रक्खा गया है। डाक व्यय सहित ।।।) का टिकट भेज कर पुस्तक मँगा लें।

सीधी पढ़ाई प्रथम व द्वितीय भाग का दूसरा संस्करण छप गया है। प्रत्येक भाग का मूल्य -)।।

भौगोलिक कहानियां—मूल्य चार आना। डाक व्यय अलग। यह बालकों के लिये उपयोगी पुस्तक है।

तीनों पुस्तकों के मँगाने के लिये १।) भेजिये।

मैनेजर, 'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—अटलांटिक का युद्ध	१
२—ईजियन सागर से काला सागर का जल मार्ग	४
३—जावद की झलक	७
४—युद्ध काल में जहाजों का उपयोग	१२
५—रूसी परराष्ट्र दफ्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल	१६
६—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, विहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] आश्विन, सं० १९९८, सितम्बर, १९४१ ई० [अङ्क ५

अटलांटिक का युद्ध

प्राचीन समय में युद्ध के अवसर पर शत्रु सेना प्रधान नगरों और क़िलों को घेर लेती थी और उनके भीतर बाहर से लड़ाई का सामान और भोजन नहीं पहुँचने पाता था। घिरे हुये लोग अक्सर भाग भी नहीं सकते थे। भोजन न मिलने और हथियारों की कमी होने के कारण घिरे हुये लोग शत्रु से संधि कर लेते थे और अक्सर शत्रु बिना लड़े हुये ही विजय पा जाता था।

कुछ कुछ यही ढंग समुद्री घेरे का है। इस घेरे का विस्तार कुछ मीलों के बदले सैकड़ों मील है। अटलांटिक सागर के बड़े भाग में ब्रिटिश बेड़े ने वर्तमान युद्ध के आरम्भ में ऐसा पहरा दिया कि जर्मनी के भीतर अटलांटिक मार्ग से कोई सामान न पहुँच सके। अगर कोई जहाज समुद्री घेरे से बच कर भागने की कोशिश करता तो वह पकड़ लिया जाता था और छीन लिया जाता था। पिछली लड़ाई में कुछ बन्दरगाह नियत कर लिये गये थे जहां उदासीन राज्यों के जहाजों की तलाशी ली जाती थी। पिछली लड़ाई में पनडुब्बे जहाज (सबमेरीन) बड़े थे। वर्तमान समय की छोटी छोटी पनडुब्बी नावों का आविष्कार नहीं हुआ था। उस समय हमला करने का साधारण ढंग यह था कि पनडुब्बा जहाज समुद्रतल पर उछल कर बन्दूक छोड़ता था और उसके कर्मचारी व्यापारी जहाज पर चढ़कर मल्लाहों और दूसरे लोगों को नावों द्वारा बचा लेते थे। फिर वे जहाज के निचले भाग में बम्ब रख कर उसे डुबा देते थे। आगे चल कर जब सभी जहाज सशस्त्र कर दिये गये तो उनको डुबाने के लिये टारपीडो और माइन (बम्ब वाली सुरंगों) का प्रयोग होने लगा।

संसार के सभी भागों से लन्दन और लिवरपूल के लिये जहाज आया करते थे। जर्मन पनडुब्बे जहाज इन्हीं संकोचित भागों में छिप कर जहाज डुबाते थे। पहले जहाजों को सुरक्षित रखने के लिये समुद्री गश्त में लड़ाका जहाज अपने नियत स्थानों पर चक्कर लगाया करते थे। व्यापारी जहाज स्वतंत्र रूप से एक बन्दरगाह से दूसरे बन्दरगाह को जाया करते थे। लेकिन गश्त से जहाजों का डुबाना बन्द न हुआ तब १९१७ ई० से कन्वाय (पहरे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रथा चली। इस प्रथा के अनुसार लड़ाका जहाज व्यापारी जहाजों को इस प्रकार घेर कर चलते थे कि सबमेरीन उन पर आक्रमण न कर सके। ३० जहाजों का बेड़ा काफी बड़ा समझा जाता था। लेकिन इस ढंग से चलने में जहाजों को बहुत देरी लगती है। इसी से आरम्भ में कुछ लोग इसके विरुद्ध थे। पिछली लड़ाई में अँग्रेजी जहाज आयरलैण्ड और फ्रांस के तट पर स्थित बन्दरगाहों का

संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने ब्रिटेन को सैनिक सामान बढ़ती हुई मात्रा में देना आरम्भ किया वैसे वैसे हेलीफैक्स बन्दरगाह पर कनवाय के जहाजों की भीड़ बढ़ती गई। इस कनवाय में कुछ सामान वाले जहाज बहुत धीमी चाल से ,चलते थे। इसलिये तेज जहाजों को भी धीमी चाल से चलना पड़ता है।

शत्रु के भूले भटके जहाजों के आक्रमण से बचने के लिये ब्रिटिश बेड़े को गश्त लगाने का कार्य

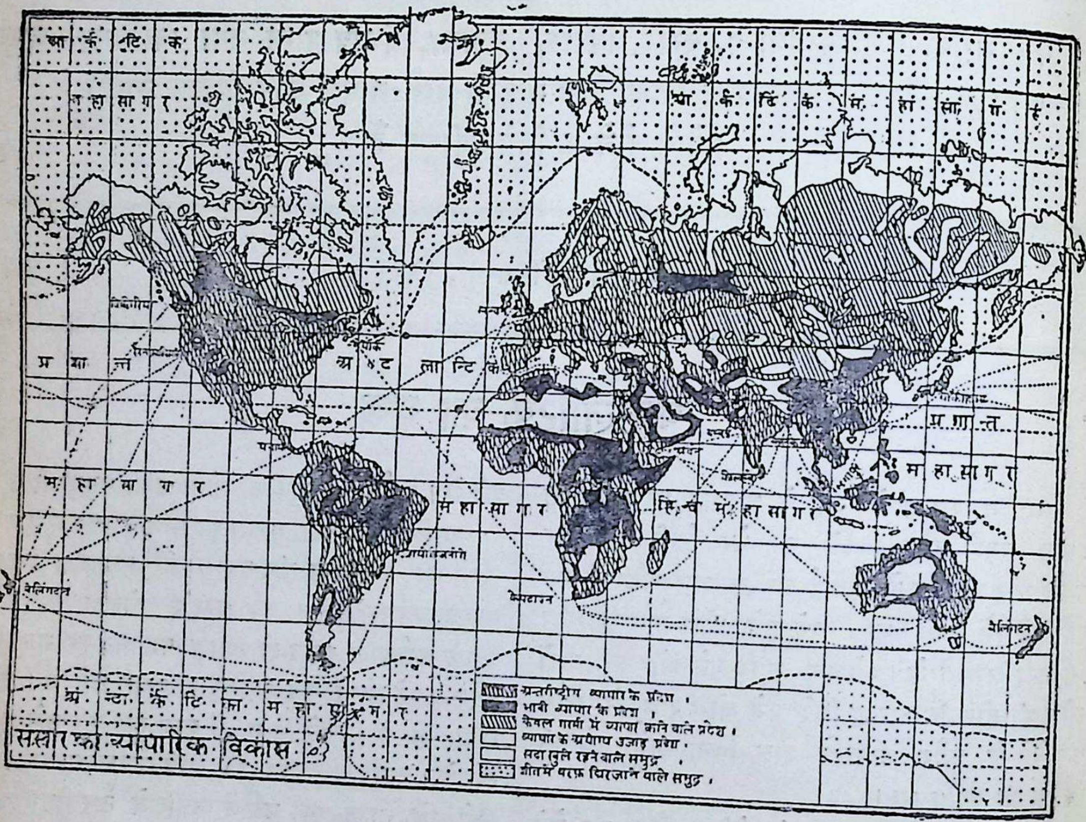

संसार का व्यापारिक विकास

प्रयोग कर सकते थे। इसलिये उस समय समुद्री रक्षा का अधिक सरल था। वर्तमान युद्ध में पनडुब्बी नावों के आक्रमण के साथ साथ हवाई जहाज भी समुद्री जहाजों पर आक्रमण करते हैं।

वर्तमान युद्ध के छिड़ते ही ब्रिटेन ने अपने जहाजों को शत्रु के आक्रमण से बचाने के लिये कनवाय प्रथा का अनुसरण किया। लेकिन संयुक्त राष्ट्र अमरीका तटस्थ है। इसलिये अमरीकन तट पर केवल नोवा स्कोशिया के बड़े बन्दरगाह हेलीफैक्स से ही ब्रिटिश कनवाय प्रस्थान कर सकता था। जैसे जैसे

फिर भी जारी रखना पड़ा। माएटी विडियो के पास जर्मन जेबी जहाज़ ग्राफस्पी के नष्ट हो जाने से दूर के भागों में शत्रु के आक्रमण का भय जाता रहा।

इस बार बाल्टिक सागर में जर्मनी के जहाज़ी बेड़े का भय न था। इसी से बहुत से ब्रिटिश लड़ाका जहाज़ उधर से मुक्त होकर पहरे के काम में लग गये ब्रिटेन के पास आरम्भ में छोटे छोटे लड़ाका जहाज़ों की कमी थी। इसलिये जब तक फ्रान्स स्वाधीन रहा तब तक भूमध्यसागर रक्षा के लिये फ्रान्स से बड़ी सहायता मिली। वर्तमान समुद्री लड़ाई ठीक उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान से आरम्भ हुई जहां पहली लड़ाई समाप्त हुई थी। जर्मन जहाज़ों ने उत्तरी (नार्थ) सागर में ब्रिटेन के पड़ोस में पनडुब्बी नावों से आक्रमण आरम्भ किये। पहली लड़ाई और बर्तमान लड़ाई के बीच में टारपीडो के वेग और निशाने पर गोली छोड़ने में बड़ी उन्नति हुई। उनके वजन में कोई विशेष अन्तर न पड़ा। दोनों ओर शब्द सुनने वाले मन्त्रों में बड़ी उन्नति हुई। पिछली लड़ाई में जर्मन पनडुब्बा जहाज प्रायः लड़ाका जहाजों पर आक्रमण करते थे। इस बार वे व्यापारी जहाजों पर विशेष रूप से आक्रमण करने लगे। नार्वे पर अधिकार जमाने के पहले जर्मन हवाई जहाज़ों के अड्डे बहुत दूर पड़ते थे। वहां स वे अपनी अपनी पनडुब्बी नावों को कोई बड़ी सहायता हवाई जहाज़ों द्वारा नहीं पहुँचा सकते थे। जब जर्मनी ने फ्रान्स, वेल्जियम और हालैण्ड के तट पर अधिकार कर लिया। तब से जर्मन हवाई जहाज़ अपने भीषण आक्रमणों से पनडुब्बी नावों को बड़ी सहायता पहुँचाने लगे।

ब्रिटेन डोवर प्रणाली (स्ट्रेट) के द्वार को इस बार भी जर्मन हवाई जहाज़ों के लिये बन्द कर दिया। स्काटलैण्ड और इंगलैण्ड के समस्त पूर्वी तट पर जहाजों ने सुरंगें बिछा दीं। अपने और मित्रों के जहाजों को आने जाने के लिये यह द्वार छोड़ दिये। खुले हुये द्वार पर मेंग्नेटिक (चुम्बकीय) सुरंगों को छोड़ने वाले हवाई जहाजों को पकड़ने के लिये इंगलैण्ड वालों ने हवाई जाल फैला दिये। इँगलैण्ड ने इस प्रकार अपने तट की ऐसी रक्षा की कि जर्मनी की पनडुब्बी नावों को भारी हानि उठानी पड़ी।

फ्रांस के हार जाने से ब्रिटेन को फ्रांसीसी बेड़े की सहायता न मिल सकी। उधर इटली का जहाजी बेड़ा जर्मनी के हाथ में आ गया। जब से फ्रांस के समुद्री अड्डे जर्मनी के हाथ में आ गये तब से जर्मनी सीधे अटलांटिक तट से ब्रिटेन पर आक्रमण करता है। नाजी लोगों ने बड़े पैमाने पर (प्रति मास २५) सबमेरीन या पनडुब्बी नावों का बनाना आरम्भ कर दिया है। ब्रिटिश हवाई हमलों से इसमें कुछ बाधा अवश्य पड़ रही है। फिर भी जर्मन पनडुब्बी जहाजों ने हमला करने के ढंग में उन्नति कर लिया है। पहले एक एक पनडुब्बा जहाज़ अलग अलग हमला करता था। आजकल पनडुब्बे जहाज़ झुंड बना कर एक साथ हमला करते हैं। एक बड़ा जहाज़ उनका (सरदार) नेता होता है। वे रेडिओ द्वारा एक दूसरे से बातें कर लेते हैं। ऊपर हवाई जहाज़ भी रेडियो द्वारा उन्हें आदेश देता रहता है। इससे आजकल हवाई जहाज़ों को अपना पेरस्कोप (जिसके द्वारा वे पहले अपने पड़ोस में शत्रु के जहाज़ का पता लगाते थे) काम में लाना नहीं पड़ता है। वे शत्रु के कनवाय (जहाज़ों के समूह) की ताक में नीचे छिपे रहते हैं। संकेत पाते ही वे कनवाय पर हमला करते हैं। ऐसी दशा में सबमेरीन को समूल नष्ट करना कठिन हो जाता है। लड़ाका जहाज़ों की संख्या बढ़नेसे ही उनका नियन्त्रण हो सकता है। आजकल ब्रिटिश जहाज़ों के लिये सब से अधिक भयानक क्षेत्र आयरलैंड के पश्चिम में ३०० मील से ७०० मील तक फैला हुआ है। उत्तर में यह आयसलैंड से इंगलिश चैनल तक चला गया है। जब अमरीका की ओर से आने वाले ब्रिटिश कनवाय के जहाज़ इस युद्ध क्षेत्र में प्रवेश करते हैं तब उन पर हवाई जहाज़ बम्ब वर्षा करते हैं। जैसे जैसे जहाज़ ब्रिटिश तट के पास पहुँचते हैं वैसे वैसे बम्ब-वर्षा का वेग बढ़ता जाता है। फ्रांसीसी तट पर अधिकार हो जाने के कारण केपटाउन और भूमध्य सागर की ओर से आने वाले जहाज़ों पर भी नाज़ी आक्रमण होते हैं। कुछ नाज़ी पनडुब्बे दूर जाकर हमला करते हैं और फिर अपने नियत स्थान पर लौट आते हैं। कुछ जर्मन व्यापारी जहाज़ भी ऐसे लुटेरे बन गये हैं कि वे दूर के समुद्रों में पहुँच कर लूट मार करते हैं। ब्रिटेन को सदा जर्मन आक्रमण का भय लगा रहता है। इससे छोटे छोटे जहाज़ों को सदा तट के पास रखना पड़ता है। इसी से जर्मन हवाई जहाज़ों की और भी अधिक हिम्मत बढ़ गई। वे दिन रात ब्रिटिश जहाज़ों पर आक्रमण करते हैं।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका और दक्षिणी अमरीका के कुछ स्वतन्त्र राष्ट्रों ने अमरीका के पास वाले समुद्र को लगभग १००० मील तक उदासीन घोषित किया है। इसके अनुसार वे युद्ध में सम्मिलित राज्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(जर्मनी और इंगलैंड) को लड़ने से तो नहीं रोक सके हैं लेकिन वे इन राज्यों के जहाज़ों को इस ओर देख कर तुरन्त लड़ने वाले घोषित कर देते हैं। इससे प्रायः जर्मनी को हानि होती है क्योंकि जर्मन जहाज़ की सूचना पाते ही ब्रिटिश बेड़े के जहाज़ उसका पीछा करने को चल देते हैं। जर्मन जहाज़ को यह लाभ होता है कि वह अपने को बचाने के लिये सतर्क हो जाता है और स्थान बदल देता है।

ईजियन सागर से कालासागर का जलमार्ग

भूमध्य सागर डार्डनेलस, मारमोरा और वास्फोरस जलसंयोजकों द्वारा कालासागर से मिले हुये हैं। इस समुद्री मार्ग में कुस्तुन्तुनिया (स्तम्बूल) का प्रसिद्ध हार्बर गोल्डन हार्न है। पनामा और स्वेज़ नहर के बाद युद्ध सम्बन्धी दृष्टि से इसी की गणना है। व्यापारिक दृष्टि से यह उतना प्रसिद्ध नहीं है तो भी यह काला सागर की कुँजी का काम करता है।

कुछ समय तक ये जलसंयोजक योरुपीय राजनीति में कांटे का कार्य करते रहे। अँग्रेज़ जाति इन सब को डार्डेनलस के नाम से पुकारती है, यद्यपि डार्डेनल इस लम्बे जलमार्ग का केवल एक भाग है। १९१४ की बड़ी लड़ाई में यहां बहुत आदमी मारे गये।

मारे जाने वाले अँग्रेज़ सैनिकों की कब्रें गेल्ली पोली स्थान पर बनी हुई हैं। अँग्रेज सैनिक इन जल संयोजकों को रूसी जहाज़ों के लिये खोलना चाहते थे। स्कुतारी स्तम्बूल के दूसरी ओर स्थित है। वहां पर उन अँग्रेज़ सैनिकों की कब्रें हैं जो रूसी जहाजों को इस जल मार्ग से निकालने में मारे गये थे।

ये जलसंयोजक टर्की का हैं। रूम सागर में बलगेरिया, रूमानिया और रूस के जहाज़ इसी मार्ग हो कर जा सकते हैं। १९३६ ई० में इनके मोरचा बन्दी करने के लिये इस से सम्बन्ध रखने वाले राज्यों की आपस में सभा हुई थी। काला सागर के तट उपजाऊ हैं और समीप ही संसार प्रसिद्ध मिट्टी के तेल के कुएँ हैं। वर्तमान युद्ध में जर्मनी ने इस ओर अपना प्रभुत्व बढ़ा लिया है।

मिट्टी के तेल और अनाज का व्यापार काला सागर होकर काफी मात्रा में होता है। इसके वृद्धि होने की भी बहुत सम्भावना है, किन्तु यह काला सगर के चारों ओर के राजनैतिक तथा आर्थिक नीति पर निर्भर है। टर्की स्वयं कोई बड़ा जहाज़ी देश नहीं है। १९३५ ई० में टर्की के जहाज़ों की संख्या १८२ थी, जिसमें बहुत से प्राचीन ढङ्ग के जहाज़ भी थे।

ईजियन सागर होकर डार्डेनलस में आते हैं। इसकी लम्बाई ४७ मील और चौड़ाई ३ से ४ मील

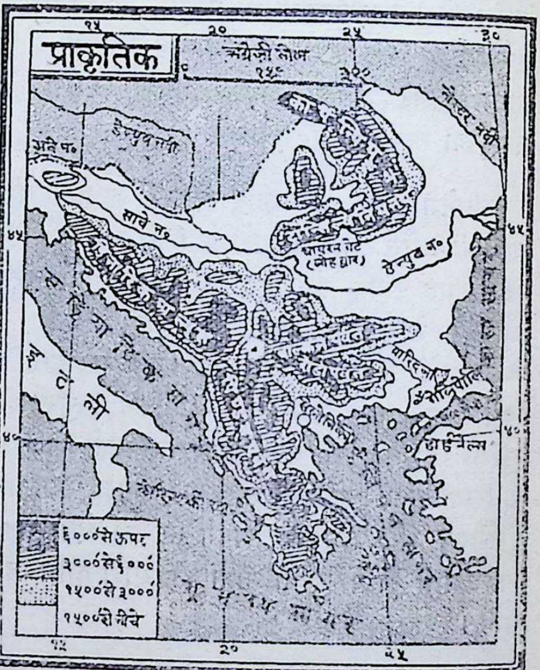

तक है। इनमें होकर मारमोरा सागर को मार्ग जाता है जिसकी लम्बाई १७५ मील और चौड़ाई लगभग ५० मील है।

उत्तर की ओर मारमोरा संकरा हो गया है और बासफोरस के नाम से प्रसिद्ध है। इसके योरुपीय तट पर स्तम्बूल और गोल्डन हार्न तथा एशियाई तट पर स्कुतारी स्थित हैं। बास फोरस की लम्बाई लगभग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८ मील है। यह अधिक से अधिक तीन मील और कम से कम ½ मील चौड़ा है।

स्तम्बूल अब टर्की की राजधानी नहीं है। टर्की की वर्तमान राजधानी अंकारा या अँगोरा है। स्तम्बूल की जनसंख्या ७४०००० और अंगोरा की १२३००० है। कुछ सालों पहले स्तम्बूल की जनसंख्या १० लाख से अधिक थी। यहां का मुख्य व्यापार यूनानी, यहूदी और आर्मिनियन लोगों के हाथों में है।

लन्दन से स्तम्बूल समुद्री मार्ग से ३१०७ मील की दूरी पर है। बासफोरस तट के निवासी स्तम्बूल नावों पर आया जाया करते हैं। गोल्डन हार्न बासफोरस की एक भुजा है और चार या पांच मील लम्बा है। इसमें एक मीठे पानी की नदी आकर गिरती है।

स्तम्बूल गोल्डन हार्न के दक्षिण की ओर स्थित है। यह नगर तुर्की है। हार्बर के उत्तर की ओर गलाटा और पेरा की बस्तियां हैं। गलाटा में में व्यापारी लोग और पेरा में विदेशी लोग रहते हैं। हार्बर में दो नावों के पुल बने हुये हैं। यह हार्बर तीन भागों में बँटा है (१) बाहरी पोर्ट (२) गलाटा पोर्ट और तीसरा भीतरी पोर्ट है। बाहरी बन्दरगाह सेरागलियो के आगे स्थित है।

गलाटा बन्दरगाह के घाटों की लम्बाई २४८० फुट है। इस बांध के दूसरी ओर स्तम्बूल का बांध है जिसकी लम्बाई १२४० फुट है। बास फोरस के एशियाई तट पर हैदर पाशा स्टेशन है। यहां पर समुद्री घाट है। इन घाटों पर सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाएं प्राप्त हैं। इन घाटों पर तैरती हुई क्रेन भी हैं जो ५० टन (१४० मन) तक सामान उठा सकते हैं।

यहां पर तीन जहाज बनने वाले घाट हैं जिनमें सबसे बड़े घाट की लम्बाई ५१० फुट है। जहाज उतारने वाले घाट चार हैं और सब से बड़ा घाट १७६ फुट लम्बा है। योरुप और एशिया के बीच सारा व्यापार बासफोरस होकर होता है। स्तम्बूल और कान्सटान्टा के बीच सवारी वाले स्टीमर आया जाया करते हैं। कान्सटान्टा काला सागर पर रोमानिया का एक बन्दरगाह है।

यद्यपि स्तम्बूल में बड़े बड़े जहाज कभी कभी आते हैं तो भी यहां पर हैम्बर्ग, गोथेनबर्ग, राटर्डम, माल्मोरोएन और ऐन्टवर्प आदि बन्दरगाहों से जहाज आया जाया करते हैं। कभी कभी स्वेज नहर होकर चीन जापान से भी जहाज आते हैं।

भूमध्य सागर और काला सागर के जहाजों की मात्रा अधिक रहती है। ये जहाज जनेवा, वेनिस, ट्रीस्टे, सिकन्दरिया, साइप्रेस, ब्रेला, कान्सटैन्टा, गलाटी, वर्नी, ओडेसा और बातूम बन्दरगाहों से आते जाते हैं। इनके सिवा छोटे छोटे बोट तथा सवारी जहाज भी चला करते हैं।

काला सागर का क्षेत्रफल १६४,००० वर्गमील है। काला सागर में ४८० फुट की गहराई से कम वाले भाग में जहाज नहीं रुकते क्योंकि वहां पानी में गन्धक की मात्रा अधिक है। काला सागर का पानी खारा और रूमसागर का पानी नमकीन है, इसका मुख्य कारण यह है कि काला सागर में डैयून्ब, नीपर, डनीस्टर, बग और कूबान आदि नदियां आकर गिरा करती हैं।

काला सागर में ज्वार-भाटा नहीं आता, किन्तु यहाँ तेज धाराएं बहा करती हैं। इस सागर की अधिक से अधिक गहराई ७२०० फुट है। जाड़े की ऋतु में कालासागर में भयानक सर्दी पड़ती है और पानी की ऊपरी तह जम जाती है। क्रीमिया का प्रायद्वीप गर्मी की ऋतु में बड़ा सुहावना रहता है किन्तु जाड़े की ऋतु में यहां कड़ी सरदी पड़ती है। क्रीमिया के उत्तर-पूर्व में ऐजब सागर है, जिसमें कर्च का बन्दरगाह है।

बलगेरिया के मुख्य बन्दरगाह वरगस और वरना, रूमानियो के कान्सटेन्टा, सूफिना, गलाटी और ब्रेला, रूस के ओडेस्सा, पोती और बातम टर्की के टेबी जोन्ड और बासफोरस के तटीय छोटे छोटे बन्दरगाह हैं।

टर्की के बन्दरगाहों में किसी प्रकार की वृद्धि होने की सम्भावना नहीं दिखाई पड़ती, किन्तु ओडेस्सा और बातूम के बन्दरगाह किसी समय पिट्रौल और अनाज के बड़े केन्द्र बन जावेंगे।

बासफोरस को जल डमरू मध्य काफी गहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। कालासागर से यहां को आने वाली समुद्री धारा बड़ी तीव्र होती हैं। इसीलिये प्राचीन काल में यहां पर बहुत से जहाज डूबा करते थे।

बासफोरस का द्वार प्राचीन काल में तटीय तीव्र वायु के कारण इतना खतरनाक था कि लोग कहा कहते थे कि दोनों तटों की चटानें लड़ती हुई जहाज तोड़ने के लिये आया करती हैं। इसके द्वार के रशियाई तट पर अनाटोली कावक और योरुपीय तट पर रोवमेली कावक के किले स्थित हैं। यही दोनों किले बासफोरस के प्राचीन द्वार हैं।

थेरापिया बासफोरस के योरुपीय तट पर स्थित है और राजनीतिज्ञों के हवा खाने का प्रमुख स्थान है। गर्मी के दिनों में उत्तर से शीत हवाएँ आकर सर्द बना देती हैं। बासफोरस की खाड़ियों की रक्षा अनाटोली हिसार और रोवमेली हिसार के किलों द्वारा होती है। बासफोरस के दोनों गहरे तटों पर मकानात इतने समीप के हैं कि बहुधा कुहरे को ऋतु में धुंधलेपन के कारण जहाज मकानों में टक्कर खा गये हैं।

बासफोरस की खाड़ी घुमावदार होने और प्रचंड वायु के चलने के कारण जहाजों को खेने में अधिक कठिनाई हो जाती है।

बास फोरस की भाँति डारडेनलस जल संयोजक भी प्रसिद्ध हैं। गालिपोली का प्रायद्वीप योरुपीय तट पर है यह ५२ मील लम्बा है। प्राचीन समय में इसके दोनों (योरुपीय तथा एशियाई) तटों पर किले थे और उसी के कारण इसका नाम डारडेनलस पड़ा।

१९१५ ई० में गालिपोली प्रायद्वीप में अधिक युद्ध हुआ। प्राचीन समय में एशियाई तट पर ट्राम इन जल संयोजकों की कुन्जी माना जाता था। जब युनानी लोगों ने ट्राम जीता तो उन्होंने कालासागर पर व्यापार करना तथा नई बस्तियाँ बसाना आरम्भ किया। डारडेनलस के खाड़ी की चौड़ाई १२०० गज है। यहां पर धार बड़ी तेज है। चारडक के आगे चलने पर कारा की अंतरीप है और उसके आगे मारमारा का टापू और सागर है।

प्राचीन समय में ६६० वर्ष ईसा के पूर्व बैजनटाइन नगर कुस्तुनतुनिया के स्थान पर बसा था। रोमन बादशाह कान्स्टैन्टाइन ने इस नगर के स्थान को देख कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने फिर से नगर बनाने और रोमन राज्य की उसे राजधानी बनाने का संकल्प किया। कुस्तुन्तुनिया नगर ३०३ ई० में बना। और पूर्वी रोमन राज्य की राजधानी बनाया गया। यह पूर्वी क्रिस्चियंडम और प्राचीन यूनानी चर्च का भी केन्द्र बन गया। यूनानी प्रभाव से प्रभावित होकर यह नगर दुनिया के बड़े नगरों में हो गया और यह एक बड़ा व्यापार, शिक्षा तथा सभ्यता का केन्द्र बन गया।

युद्ध काल में समुद्री मार्ग सब बन्द कर दिया जाता था। गोल्डन हार्न बन्दरगाह के आरपार एक बड़ी लोहे की जंजीर डाल दी जाती थी नगर के चारों ओर बड़ी पुख्ता दीवार बना दी गई थी।

डैन्यूब नदी द्वारा योरुप का सामान रूमसागर द्वारा मिश्र का साम कुस्तुन्तुनिया आता था। धीरे धीरे यह दुनिया में सबसे बड़ा व्यापारिक नगर हो गया। १२०२ ई० में बालडविन की अध्यक्षता में क्रूसेडर्स ने नगर पर धावा मारा और अपने अधिकार में कर लिया। इसके बाद ५७ साल तक कुस्तुन्तुनिया में इटली का राज्य रहा।

इटली के पश्चात् तुर्क लोगों ने ३०० जहाजों के साथ नगर पर धावा मारा। तुर्क लोगों ने १४५३ ई० में कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार जमाया। तुर्क लोगों के आक्रमण का प्रभाव दो विस्तृत रूप में दुनिया पर पड़ा। पहला यह कि विद्वान लोग कुस्तुन्तुनिया छोड़ कर इटली चले गये और वहां उन्होंने रिनायसा (नवीन शिक्षा) पर जोर दिया, जिसके कारण लोगों के मस्तिष्क प्रकाशित हो गये। दूसरे इस्लाम ने पूर्व जाने का प्राचीन मार्ग रोक दिया, जिससे स्पेन और पुर्तगाल निवासियों ने भारत जाने का नया मार्ग अफ्रीका के दक्षिण होकर निकाला और अमरीका का पता लगाया।

उस काल में रूमसागर एक मुसलमानी सागर हो गया था। मुसलमान समुद्री डाकू बन गये थे। उनमें कुछ बहुत प्रसिद्ध थे। प्रसिद्ध समुद्री डाकुओं में बरोस्सा (लाल डाढ़ी वाले) प्रधान थे। खैर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्दीन बारबरोसा ने अलजीयर्स को स्पेन वालों से छीन लिया था।

यद्यपि अलजीयर्स और टर्की के बीच बहुत कम सम्बन्ध था, तो भी उन्नीसवीं शताब्दी तक अलजीरिया के समुद्री डाकुओं ने जहाजी व्यापार नहीं होने दिया। मिश्र देश भी टर्की के आधीन हो गया था और लगभग सारा रूमसागर का तट तुर्कों के अधिकार में था।

अर्थोडाक्स ईसाइयों का सेन्ट सोफिया का बड़ा चर्च मसजिद बना दिया गया और कुस्तुन्तुनिया के केन्द्रीय भाग तुर्की स्तम्बूल बनाया गया। गलास और पेरा में दूसरे धर्म के व्यापारियों ने भाग कर अपने अड्डे बनाए। यूनानी, आर्मेनियन और यहूदी लोग जो ईसाइयों द्वारा स्पेन से भगा दिये गये थे, उन्होंने गोल्डन हार्न के उत्तरी किनारे पर आकर अपने निवास स्थान बनाए। मुसलमानों ने ईसाइयों को अपना गुलाम बनाया और ईसाई बच्चों को जबरदस्ती मुसलमान बनाया।

यदि तुर्क लोग अच्छे मल्लाह होते तो अवश्य ही वे कुस्तुन्तुनिया के मालिक होते हुए संसार में एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करते, किन्तु वे न तो अच्छे मल्लाह ही थे और न व्यापारी ही थे, वे केवल सैनिक थे। बहुत समय तक कुस्तुन्तुनिया तो उनके अधिकार में केवल योरुपीय राज्यों में आपस की फूट के कारण रहा।

रूसी व्यापार की उन्नति के कारण १९१४ की लड़ाई के पहले यह एजियन से काला सागर तक का समुद्री मार्ग बहुत उन्नति कर या था, किन्तु लड़ाई काल में और उसके पश्चात् व्यापार बहुत कम हो गया था। अब फिर से व्यापारिक उन्नति होने लगी हैं और आशा है कि शीघ्र ही यह जलमार्ग अपने प्राचीन प्रधानता को प्राप्त कर लेगा।

जावद की झलक

(ले०—गोविंदराव शङ्करराव नाड़कर्णी 'विशारद')

प्रत्येक स्थान में एक न एक ऐतिहासिक घटना छिपी रहती है। कोई विशेष महत्व की होती है और कोई कम। बहुत से ऐतिहासिक स्थानों को महत्ता भूगर्भ स्थित हो जाने से वह संसार में विशेष गण्यमान्य नहीं हो सकती। परन्तु शोध करने पर प्रतीत हो जाता है कि प्रत्येक स्थान में एक न एक महत्वपूर्ण घटना छिपी हुई है। यही हालत 'जावद' की है।

जावद की गणना बड़े शहरों में तो नहीं हो सकती क्योंकि यहाँ न तो विशाल भवन हैं और न प्रेक्षणीय कलात्मक बाजार हैं। परन्तु यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि 'जावद' किसी समय में मेवाड़ के इतिहास में अग्रगण्य शहर बना हुआ था। कारण यह कि इसके चारों ओर सुन्दर कँगूरेदार परकोटा बना हुआ है। इसी परकोटे के अन्दर की तरफ एक चबूतरा सा चारों ओर बना हुआ है और जगह-जगह चढ़ने-उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस परकोटे में स्थान स्थान पर सूराख भी हैं। इससे सिद्ध होता है कि यह -गाँव किसी समय किलेबन्दी का काम करता था।

मेवाड़ का इतिहास विशेष कर वीर राजपूतों के शौर्यमय रक्त से रंगा हुआ है। इसके अनुसार हम कह सकते हैं कि मेवाड़ के सब स्थान ऐतिहासिक महत्व रखते हैं। प्राचीन राजाओं को यवन सेनाओं से घोर युद्ध एक बार नहीं बल्कि हजारों बार करने पड़े थे। अनेक बार वीर राजपूत अपनी मातृभूमि की रक्षा के हित केसरिया बाना पहिन कर प्राण झोंक दिये थे। उन वीर सैनिकों की वीर माताओं ने अपने हाथ से अपने पुत्रों तथा पतियों को केसरिया बाना पहिना कर रणाग्नि में प्रवेश करने को उद्यत किया था तथा अपनी मान-रक्षा के लिये स्वतः अग्निकुण्ड में कूद कर जौहर कर बैठी (जल गई) थीं। इसका परिणाम ही यही कि आज संसार का प्रत्येक व्यक्ति मेवाड़ के इतिहास का एक एक पृष्ठ सगौरव पढ़ता है। इन राजपूतों को एक क्षण के लिये भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली के बादशाहों ने आराम से नहीं बैठने दिया था। तभी तो उन्हें नगर अथवा गाँवों की रचना सुरक्षित ढंग से करनी पड़ी थी। आज मेवाड़ में हम घूमें तो छोटे से छोटा गाँव भी परकोटे से घिरा हुआ है। इस चिन्ह को लेकर यदि जावद के क्षेत्र-फल पर विचार किया जाय तो कहना होगा कि 'जावद' उस काल में एक उन्नतिशील नगर था।

'जावद' नगर की स्थिति बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे की केसरपुरा स्टेशन से ठीक पूर्व की ओर ७ मील दूर है। उक्त स्टेशन से एक पक्की सड़क जावद तक गई है। तथा उसी कम्पनी के विख्यात नीमच स्टेशन से यह शहर १२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां से भी एक पक्की सड़क जावद तक गई है। इस शहर के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में चार दरवाजे तो हैं ही परन्तु दक्षिण-पूर्व में भी एक दरवाजा और है जिसे रामपुरा दरवाजा कहते हैं। अन्य दरवाजों को क्रमानुसार नावल, खोर, अठाना और नीमच दरवाजा कहते हैं। ये नाम उसी दिशा में बसे हुये मुख्य नगरों द्वारा पड़े हुये हैं।

बावल एक टांका है जो पहाड़ की तरेटी में बसा हुआ है। यहां के महाराज रियासत ग्वालियर में आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। तथा यहाँ के प्रमुख कार्य-कर्ताओं में से हैं। यहां के महाराज राजपूत जाति के हैं जो चितौड़ के राणाओं से सम्बन्ध रखने वालों में से हैं। यहां एक विशाल राजभवन बना हुआ है तथा इसके पूर्व में एक पहाड़ी तंग घाटियों को लिये हुये खड़ी है। यह जावद से तीन मील दूर है। यहां तक कोई सड़क नहीं गई है। अब एक नई योजना के अनुसार जावद से मोरवन तक सड़क निकाली जा रही है जो घाटे पर (मेवाड़ के मध्य में) जाने वाली सड़क से सम्बन्ध रक्खेगी। बावल इसी सड़क के किनारे पर रहेगा।

इधर के करीब करीब सब गांवों की रचना नदी या नालों के किनारे ही पर हुई है। अर्थात् चाणक्य नीति का पालन हुआ है। इसी के अनुसार बावल भी एक नदी के किनारे बसा हुआ है जिसे 'गम्भीरी नदी' कहते हैं। इसी नदी के किनारे 'अठाना' नामक राजपूत सरदार का टांका बसा हुआ है। यह भी चित्तौड़ के राणाओं के सम्बन्धियों में से हैं। यहां के महल व बाग बगीचे विशेष प्रेक्षणीय हैं और नदी तट पर होने के कारण इनकी शोभा में विशेष सौंदर्य मिल गया है। यहां के भवन की बनावट में सुन्दरता व कला का प्रदर्शन कारीगर ने बड़ी चतुराई से किया है प्रमाणतः एक कहावत बन गई है 'अठाना' के महल, विनोता की बावड़ी यहां के निवासी जब जब किसी सुन्दर महल का वर्णन करते हैं तो उसकी सुन्दरता को इन्हीं महलों की सुन्दरता से तोलते हैं।

वह टांका (जागीर) जावद से तीन मील उत्तर में स्थित है। अभी दो तीन साल हुये अठाने के महाराज ने करीब दो मील तक एक जावद की ओर सड़क बना दी है। शेष हिस्से में, जो स्टेट ग्वालियर में है कच्चा मार्ग बना हुआ है परन्तु इस हिस्से में भी सड़क बनाई जाने की योजना हो रही है। इस जागीर के उत्तर में उन्हीं पहाड़ों के सिलसिले आ गये हैं जो कि बावल में हैं। ये अरवली पर्वत की प्रशाखाएँ हैं। इन पर्वतों में प्रकृति-सौंदर्य युक्त स्थानों पर शिवालय बने हुये हैं। ये तीर्थ स्थान से बन गये हैं। यहां साल भर में एक बार बैशाखी पूर्णिमा पर मेले लगा करते हैं। इनके नाम 'सुखानन्द' 'सांडेश्वर' 'बहावाडेश्वर' आदि हैं। यहाँ हर साल दूर दूर के लोग आते हैं। इनके नाम पर एक दंत कथा भी बन गई है। यहाँ के हरे जंगलों तथा अनेक स्थानों में प्रकृति अठखेलिया करके सर्व प्राणियों को आकर्षित किया करती है। इन स्थानों पर पहुँचने के बाद मानव के हृदय में संसार से अरुचि उत्पन्न हो ईश्वर से लगन लग जाती है तथा उसकी अनुपम रचना पर सब के नेत्र तथा हृदय जिधर जाते हैं वे वहीं ठिठक जाते हैं।

यदि हम अठाने दरवाजे या बावल दरवाजे जाकर खड़े हो जांय तो प्रातःकाल से शाम तक भील तथा अन्य पहाड़ी जातियां अपने सिरों, गधों, पाड़ों अथवा ऊँटों की पीठ पर लकड़ा के गट्ठर या घास लादे जावद की ओर आते हुये दीख पड़ते हैं। साथ ही साथ शहद, गोंद, कोयला, टीबरू के पत्ते, करोंदे आदि भी इन पहाड़ों से यहां लाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि यहां के निवासियों का जीवन इन्हीं पर्वतीय पैदावारों पर निर्भर है। अब ऐसे ही हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य तीन दरवाजों पर जाकर देखेंगे तो गेहूँ, जौ, ज्वार आदि नाज को बैलगाड़ी में लादे कृषक इधर की ओर आते हुये दीख पड़ेंगे अर्थात् जावद के उत्तर-पूर्व में पर्वत हैं तथा अन्य दिशाओं में कृषि योग्य मैदान हैं।

जावद के आसपास उपजाऊ जमीन होने से चारों ओर खेत ही खेत दिखाई देते हैं। परिणामतः यहाँ विशेष चरागाहें नहीं हैं। इसलिये जावद के मानानुसार यहाँ चौपाये (गाय-भैंस) कम ही पाले जाते हैं। तभी तो शाम सुबह इन दरवाजों की ओर से बड़े बड़े दूध के मटके लिये पहाड़ निवासी यहाँ बेचने आते हैं। दिन को चमड़ा भी यहां बिकने को आता है और इसके बदले में अन्न, कपड़ा, तेल, दवाइयाँ, काँच, गुड़, शक्कर, नमक, गरम मसाला, करलरी सामान आदि खरीद कर ले जाते हैं।

गंभीरी नदी के किनारे बसे हुये उम्मेदपुरा (तारापुरा) में जो जावद के उत्तर-पूर्व में बसा हुआ है रंगाई तथा धुलाई का काम बहुतायत से होता है। इसलिये रंगे हुये थान के थान भी अठाने से जावद में आते हैं। यह काम हिन्दू छिप (जाति) करते हैं। इसलिये ये लोग उम्मेदपुर में बहुत रहते हैं। यहाँ का रंगा हुआ कपड़ा इंदौर, उज्जैन, रतलाम, मन्दसौर, अजमेर, उदयपुर आदि शहरों के बाजारों में बिकता है। ये लोग इस कार्य में पूर्ण दक्ष हो गये हैं। उम्मेदपुर में जगह जगह नदी किनारे रंग के कुण्ड बने हुये हैं। तथा अठाने में चरखा सिस्टम द्वारा मजबूत कपड़ा बुना जाता है। जो जावद में तो बहुत ही बिकता है। तिस पर भी आजकल लड़ाई की वजह से इस कपड़े की कद्र इतनी बढ़ गई है कि घर घर में 'अठाने की पछेवड़ी' बिराजी हुई है।

जावद के दक्षिण में खोर दरवाजा है। इधर से एक पक्की सड़क गई है जो 'खोर' होती हुई केसरपुरा स्टेशन को गई है तथा 'बाम्बे-आगरा रोड' की एक शाखा 'महू-नसीराबाद रोड' को जोड़ती है। इस दरवाजे पर हमें दस-बारह तांगे राह देखते हुये मिलेंगे जो यात्रियों को खोर और कसरपुरा ले जाते हैं।

खोर का महत्व अभी तक प्रगट हुआ था परन्तु अब से आर्केऑलॉजीकल डिपार्टमेन्ट ने यहां खुदवाई की है तब से यह स्थान उल्लेखनीय बन गया है। यहाँ के खँडहरों को देखते हुये चित्तौड़ की प्राचीन इमारतों का स्मरण हो आता है। यहां से एक मार्ग भूगर्भ से होकर २६ मील के फासले पर चित्तौड़ के किले में जा निकला है। इस मार्ग का दरवाजा एक विशाल चबूतरे पर बना हुआ है। इस चबूतरे की बनावट तथा आस पास के पत्थरों की कारीगरी देखते हुये हमें महल का ज्ञान हो आता है। जगह जगह दरवाजों के स्तंभ स्मारक-स्वरूप खड़े हुये हैं। आज कल यह 'खोर-चित्तौड़' मार्ग चोरों एवं ठगों को विशेष सहायक बन जाने के कारण, बन्द कर दिया गया है परन्तु अन्दर उतर कर देखने से पता चलता है कि यह मार्ग पक्का पत्थर का बना हुआ है। बीचोबीच पत्थर के सुन्दर खम्बे भी लगे हुये हैं। इस गांव के आस पास और भी मन्दिर बने हुये हैं जिन्हें 'नौतोरण' कहते हैं। मेवाड़ में 'तोरण' शादी के वक्त लकड़ी के अर्धचंद्राकार वस्तु को कहते हैं जिसे दूल्हा अपनी तलवार से खंडित कर 'भांवर' में बैठता है। वास्तव में इन तोरणों के दरवाजों की बनावट भी 'तोरण' जैसी ही है। इसी कारण से यहां के लोगों ने यह मत कायम कर लिया है कि ये श्री रामचन्द्र जी की शादी के समय बने थे। यद्यपि यह मत अक्षरशः असत्य हो सकता है परन्तु इतना जरूर कह सकते हैं कि ये १३वीं या १४वीं सदी के बने हुये होंगे। इनकी दशा दिन प्रति दिन बिगड़ती जा रही थी परन्तु दो साल से सरकार की इधर दृष्टि गई। इससे इनका उचित सुधार हो गया है। इनमें से एक 'तोरण' में जो बिलकुल सड़क के किनारे है सूकरावतार-स्मारक विशाल सूकर मूर्ति पत्थर की बनी हुई है। क्षत्रियों के शिव उपासक होने से यहां शिव मूर्ति भी है। वैसे तो हर एक गांव में जगह २ शिवलिंग तथा नंदी की मूर्तियां स्थापित हैं। आशा है इनकी खोज पुरातत्ववेत्ता पूर्ण रूप से करके इनकी महत्ता पुनः इतिहास में चमका देंगे।

इसके आगे नयागांव जाते हैं जिसे एक दूसरे छोटे से गाँव केसरपुरा के नाम से केसरपुरा स्टेशन भी कहते हैं। यहां 'बारह पत्थर' नाम से गांव और रेलवे लाइन के बीच में एक चौरस मैदान है। इस स्थान का उल्लेख 'मेवाड़ गौरव' नामक पुस्तक में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी तरह से हो चुका है। यह चौरस मैदान फ़ौजों के ठहरने का काम देता था। केसरपुर स्टेशन का महत्व 'जावद' नगर पर ही है। यहां का माल गोदाम जावद की पैदावार तथा जावद को मांग की बदौलत ही चमक रहा है अन्यथा यहां कुछ भी नहीं मिल सकता।

जावद के वे व्यापारी जो मेवाड़ से व्यापार करते हैं। यहीं होकर आते जाते हैं और मालवे से व्यापार करने वाले व्यापारी 'नीमच-स्टेशन' द्वारा आते जाते हैं। इससे हम कह सकते हैं कि नीमच दरवाजे पर भी तांगे राह देखते हुये मिलेंगे। नीमच के माल गोदाम पर मालवे का वह माल जो जावद, बघाना, नीमच खास व नीमच कैंट, मनासा, सिंगोली आदि को जाने वाला है और उक्त स्थानों से आने वाला माल पाया जाता है। जैसे जौ, ज्वार, मक्का, उरद, गेहूँ, दालें, तिलहन, लकड़ो, पत्थर, गोंद, गन्ना, कपास आदि यहाँ की पैदावार हैं। बाहर से आने वाला तम्बाकू, शक्कर, कपड़ा, गरम मसाले, नमक की बोरियाँ, लोहे, काँच का सामान, रबर का सामान, दवाइयाँ आदि हैं।

नीमच केन्ट में अँग्रेजों की छावनी होने से बड़ी बड़ी इमारतें फौज के लिये बनी हुई हैं। ये दो साल पूर्व जन-शून्य थीं परन्तु आजकल लड़ाई के कारण यहां पंजाबी सैनिकों की भीड़ सी लगी हुई है। इस कारण से नीमच कैंट का बजार भी उन्नति पर है। सड़कों का प्रबन्ध भी ठीक है। इन सैनिकों की वजह से पाश्चात्य खेल जैसे हाकी, फुटवाल आदि के टूर्नामिन्ट्स हुआ ही करते हैं। जावद का दूध, घो, भी रोज साइकिल द्वारा यहां पहुँचाया जाता है। जिससे जावद में दूध घी आदि वस्तुएँ महँगी हैं।

अब रामपुरा दरवाजा और रह गया है। इस दरवाजे से भी सड़क गई है जो थोड़ी दूर जाकर नीमच रोड से मिल जाती है। इस सड़क के किनारे दो कपास के जोन तथा एक तेल का कारखाना बने हुये हैं जो आज कल तो बन्द हैं परन्तु सरदी तथा बसंत ऋतु में कार्य करने लग जाते हैं तथा प्रति दिन पांच बजे रात को प्रातःकाल इनका भोंपा जावद वासियों को जगा दिया करता है। इन दिनों में आस पास के देहातों की तिलहन, कपास आदि वस्तुएँ गाड़ी में खिंचे चले जाते हैं। म्युनिसिपल्टी के कर्मचारी जगह जगह एक एक पेटी लेकर घूमते हुये दिखाई देते हैं और आमदनी बढ़ाते हैं। जीनों का काम आरम्भ होते ही ऊँटों के झुंड के झुन्ड लकड़ी लदे हुये जीनों की ओर चले आते हैं।

हां ! तो रामपुरा दरवाजे से निकलने वाली सड़क आगे मनासा होकर रामपुरा को जाती है जो इन्दौर स्टेट का बड़ा शहर है। रामपुरा यहां से सोधे मार्ग द्वारा ४० मील से भी अधिक दूर है परन्तु यह सिद्ध होता है कि जब यह दरवाजा बना था तब उन्नतिशील नगर इस दिशा में रामपुरा ही था। तथा यहां के लोग इस (रामपुरा) शहर तक आया जाया करते थे। यही कारण है कि इस दरवाजे का नाम रामपुरा दरवाजा रक्खा गया परन्तु आज कल इस दरवाजे से जो० एन० आई० टी० कम्पनी की मोटर रोज प्रातः काल नीमच जाकर दोपहर को आती है तथा एक घंटे के बाद पुनः नीमच जाकर रात को आठ बजे वहां आकर विश्राम करती है। इस मोटर के चालू होने से मालवे से जावद आने वाले व्यापारियों को बड़ी सुविधा हो गई है।

आस पास का वर्णन करने के पश्चात् अब मुझे जावद खास का वर्णन भी शुरू कर देना चाहिये। हां ? तो जावद एक व्यापारिक मंडी है। आस पास के देहातों में होने वाला माल जैसे ज्वार, मक्का, गेहूँ, जौ, चना, मूँग, उड़द, चावल, अरहर, तिल्ली अलसी, कपास, सनादि यहां के बाजार में मौसमानुसार बिकने को आते हैं। यहां हाल ही में एक गुड़ का कारखाना खोला गया है। इसलिये सर्दी के मौसम में असंख्य गाड़ियाँ आस पास के गाँवों से गन्ना ले लेकर आती हैं। शेष गन्ना केसरपुरा स्टेशन कुछ से कुछ मेवाड़ में करेड़ा स्टेशन पर तथा कुछ मालवे में 'जावरा' बिकने को जाता है। कारण कि यहां शक्कर के कारखाने बन गये हैं। नाज सारा "धान मंडो" बाजार में जो गांव के पूर्व दिशा में तथा लक्ष्मी नाथ के चौक के सामने जाने से मिल सकता है। इकट्ठा होता है। सर्दी के मौसम में तथा बसंत ऋतु में यहां की धान मन्डी गरम रहती है। फसलें दो और ... होने से साल में उक्त वर्णित दो ही बार खास कर बिकने को आती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि हर फसल के वक्त राज्य निर्मित भूमि कर वसूली का अड्डा रहने से तथा साहूकारों का लेनदेन होने से दीन कृषक अपना अपना माल घर में आते ही यहां बेचने को चले आते हैं। इनके चेहरों पर इन दिनों चमक तथा प्रसन्नता छाई रहती है। परन्तु यहां के व्यापारियों की वाक्चातुरी के जाल में फँस कर जब सस्ते दामों पर माल बेच चुकते हैं और सब कर चुका कर कंगाल बन जाते हैं तब फिर मुर्दाई छा जाती है। इन दिनों व्यापारी लोग अपना गल्ला भर लेते हैं। फिर महँगे दामों विदेशों को भेजकर मालामाल हो जाते हैं। इस प्रकार इसे केन्द्रस्थ-मंडी कहा जाय तो कोई अत्योक्ति नहीं होगी। दीन कृषक इसके बदले में बिनोले, तेल, कपड़ा, लोहा, चूड़ियां लकड़ी के पाट तथा नमक खरीद कर ले जाते हैं। इस गाँव के चारों ओर कच्चे मार्ग इन देहातों तक गये हुये हैं।

यह गाँव एक टेकरी (पहाड़ी) पर बसा हुआ है। और इसके दो ओर एक नाला, जो रामपुरा दरवाजा तथा खोर दरवाजों की सड़क पर बनी हुई पुलियाओं के नीचे होकर बहता है और आगे जाकर गम्भीरी नदी में मिल जाता है। यहां की वस्ती अधिकतर कृषि-प्रधान है। शिक्षित लोग अँगुलियों पर गिने जा सकते हैं परन्तु धाकड़, वैश्य, ब्राह्मण, सिलावट, सुनार, मोची, छिपे, बोहरे, गाड़री (ग्वाले), तेली आदि अधिक हैं। किसानी बस्ती होने से यहां की दूकानों में सादा माल ही बिकता है। जैसे मोटा कपड़ा, किसानी जूते, साधारण रंग, कटलरी का सामान तथा लोहे का सामान, तम्बाकू, नमक आदि। परन्तु दिन ब दिन शहर वासियों का रहन-सहन फैशन की ओर झुकने से हर बात में नवीनता आती जा रही है। फिर भी धर्मावलंबी विशेष होने से तथा पुराने विचार होने से मकानों की बनावट वायु रहित है तथा मोरियों के बनिस्वत पालों तथा कुंडों में सड़ा जल, पेशाब आदि इकट्ठा करके सड़कों पर फेंकने का आम रिवाज सा बन गया है। इसी कारण यहां की गलियां खरंजेदार होने पर भी पेशाब तथा टट्टी से गन्दी ही रहती हैं। परन्तु कहीं कहीं वैज्ञानिक ढंग के वायुदार मकानात बन रहे हैं। वह भी इसलिये कि यहां तहसीलदार, न्यायाधीश आदि जैसे शिक्षित पुरुष रहने लगे हैं। यहाँ पर सर्वोत्तम एवं पुरानी इमारत, 'आवाजी की हवेली' तथा "सिपार्णा की हवेली" है। ये कला की दृष्टि से तो इस शहर भर में अपना मस्तक सब से ऊँचा रखती है। पहिली इमारत तो भग्नावस्था में है परन्तु दूसरी इमारत अब भी तल घर लिये ज्यों की त्यों खड़ी है। तीसरी 'श्रीराम बलदेव जी की हवेली' भी प्रेक्षणीय है।

यहां पर दो मन्दिर मुख्य हैं। पहिला गांव के दक्षिण की ओर लक्ष्मीनाथ मन्दिर के नाम से विख्यात है तथा दूसरा खोर दरवाजे से उत्तर पश्चिम की ओर है जिसे 'भूतेश्वर महादेव का मन्दिर' कहते हैं। पहिले मन्दिर के नाम से लक्ष्मीनाथ का चौक भी यहां विख्यात है। नीमच दरवाजे से अठाने दरवाजे तक एक लंबा बाजार दक्षिण से उत्तर को लगा हुआ है।

यहां सरकारी अस्पताल, पाठशाला पुलिस स्टेशन, तहसील, पोस्टआफिस, डाक बँगला आदि का प्रबन्ध है। एक बात और है वह है यहाँ की छपाई जो चारों ओर प्रख्यात है। चूड़ियों का काम भी यहाँ विशेष होता है। परन्तु यह काम मुसलमानों के हाथ में है। ये लोग अठाने दरवाजे की ओर रहते हैं। इसलिये चूड़ियों तथा छपाई का काम भी उधर ही होता है।

यहाँ के लोगों की भाषा 'मेवाड़ी-मालवी' मिश्रित है। उदाहरणार्थ नीचे कुछ वाक्य लिखे जाते हैं:—

वह न मालूम कहाँ 'गया' इसके बदले में बूनी मालम कठेगयो। इसी को मेवाड़ी में 'वू मालम जी खाणा खड़े ही ग्यो, इन तीन वाक्यों में एक दूसरे का एक न एक शब्द अपभ्रंश रूप में आ गया है।

इस प्रकार 'जावद' की भूगोल है। परन्तु इतिहास में इसके कितने पृष्ठ रंगे जावेंगे यह कार्य तो पुरातत्व वेत्ताओं के हाथ में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध काल में जहाज़ों का उपयोग

अपने मार्ग में शान्ति के समय में जहाज़ों को कोई विशेष बाधा नहीं पड़ती है। युद्ध काल में शत्रु के हवाई जहाज और पनडुब्बे जहाज़ लगातार व्यापारी जहाज़ों को डुबाते रहते हैं। आज कल अटलाँटिक महासागर में जहाज़ों के डूबने का यह फल होता है कि बटेविया जैसे दूरस्थित बन्दरगाह की गोदामों में भी सामान की निकासी न होने से भीड़ लग जाती है।

जर्मन लोगों का कथन है कि अप्रैल १९४१ तक उन्होंने ब्रिटेन के एक करोड़ टन से ऊपर जहाज़ डुबा दिया है। अँग्रेज़ों का कथन है कि अप्रैल सन् १९४१ तक उनके केवल ६ लाख टन के जहाज डुबाये गये हैं। युद्ध आरम्भ होने के प्रथम ६ मासों में एक लाख नब्बे हजार टन के जहाज़ प्रति मास डुबाये गये थे। स्कैण्डीनेविया के युद्ध काल में जहाजों का डुबाया जाना कुछ कम हुआ था परन्तु मई मास में फिर एकाएक वृद्धि हो गई थी। जुलाई से १९४० ई० के अंत तक जर्मन सबमरीन योरुप के पश्चिमी तट के जहाजी अड्डों से आक्रमण करते रहे। और अप्रैल से प्रतिमास तीन लाख ९० हजार टन के जहाज डूबते रहे। जहाजों के डूबने के कारण संसार के जहाज़ों में कमी हो गई है।

१९३९ ई० में जब युद्ध आरम्भ हुआ तो संसार में १०० टन से ऊपर वाले व्यापारिक जहाजों की मात्रा ६ करोड़ ६५ लाख टन (अमरीका की बड़ी झीलों के जहाजों को छोड़ कर) थी। २० मास के पश्चात् धुरी राष्ट्रों के प्रभुत्व वाले देशों को छोड़ कर संसार में व्यापार के लिये केवल ५ करोड़ २० लाख टन के जहाज शेष रह गये थे। युद्ध तथा ब्लाकेड (घेरे) के कारण व्यापारिक कार्य कुछ रुक गये थे। परन्तु ग्रेट ब्रिटेन के युद्ध की तयारी के कारण फिर भी जहाजों की बड़ी आवश्यकता थी। इसलिये जहाजों की कमी प्रतीत हुई।

जब से युद्ध आरंभ हुआ है तब से ब्रिटिश अधिकार वाले स्थानों में जहाजों की संख्या अधिक हो गई है। जून १९३९ ई० में संयुक्त राष्ट्र इंगलैण्ड में २ करोड़ ६० लाख टन के जहाज और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में लगभग २ करोड़ २८ लाख टन के जहाज ठहरे थे। अँग्रेजों ने जर्मनी तथा इटली के ४ लाख टन के जहाज पकड़े हैं। योरुप के देशों को अधिकार में करने से जर्मनी को ७० लाख टन के जहाज मिले हैं। ८ लाख टन से अधिक जहाज संयुक्त राष्ट्र अमरीका से योरुप आये। युद्ध के प्रथम २० मासों में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर लगभग १६ लाख टन के जहाज तयार किये गये। कुछ तटस्थ राष्ट्रों के जहाज भी ब्रिटिश की सहायता के लिये काम कर रहे थे। यदि डूबे हुये जहाजों की संख्या कम कर दी जावे तो गत अप्रैल मास में ब्रिटेन के पास २ करोड़ ६० लाख टन के जहाज शेष रह गये थे जो युद्ध आरम्भ होने के पहिले की मात्रा से अधिक हैं।

इस संख्या के सभी जहाज व्यापार में काम नहीं कर रहे हैं। इनमें से कुछ तो टूटे फूटे हैं और कुछ इतने टूटे हैं। जो समुद्र पार नहीं जा सकते हैं। कुछ सवारी ले जाने वाले जहाज भी हैं। डाकों पर मरम्मत के लिये इंगलैण्ड के १५ लाख टन के जहाज पड़े हैं।

रायल नैवी ने काफी व्यापारिक जहाज युद्ध में प्रयोग करने के लिये ले लिये हैं। १९४० ई० तक इँगलैण्ड में ४५ लाख टन के व्यापारिक जहाज सेना ने अपने हाथ में ले लिये थे। अफ्रीका तथा पूर्व की ओर लड़ाई बढ़ने के कारण और अधिक व्यापारिक जहाज सेना में लिये गये और इस प्रकार सेना में लिये जाने वाले जहाजों की मात्रा ७० लाख टन हो गई है।

इँगलैण्ड के पास व्यापार के लिये एक करोड़ ६० लाख या एक करोड़ ८० लाख पौंड के जहाज हैं। संयुक्त राष्ट्र के सिवा संसार के दूसरे भागों में इँगलैण्ड के २० टन के व्यापारिक जहाज व्यापार में लगे हैं। अब यह संख्या घट कर बहुत कम हो गई है। क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने अपने व्यापारिक जहाज़ वापस बुला लिये हैं। फिर भी चीन, पूर्वी द्वीप समूह और अफ्रीका तथा दक्षिणी अमरीका में अँगेज़ी जहाज़ हैं। बृटेन का सामान पहुँचाने में लगभग एक करोड़ ५० लाख टन के जहाज़ लगे हैं। आज युद्ध काल में सामान का पहुँचना बड़ा कठिन हो रहा है। पथरथाक सेना के कारण जहाज़ों को अपनी चाल कम करनी पड़ती है। वह ६ नाट प्रति घन्टे की चाल से ही चल सकते हैं। फिर जब वे इँगलैण्ड के बन्दरगाहों पर पहुँचते हैं तो बम बर्षा तथा रात को अँधेरा रहने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण वह अपने सामान भी नहीं उतार सकते हैं। उन्हें ऐसे बन्दरगाहों पर शरण लेनी पड़ती है जहां बम्ब गिराये जाने की सम्भावना न हो। सामान उतारने में भी काफी समय लग जाता है क्योंकि केवल दिन में ही सामान उतारा जाता है।

जिस मात्रा में इस समय जहाज़ डुबाए जा रहे हैं उस मात्रा में अँग्रेज़ लोग ज़हाज नहीं तयार कर सकते हैं। २७ मई १९४१ ई० को प्रेसीडेण्ट रूज़वेल्ट ने घोषणा करते हुये कहा था कि वर्तमान समय में नाज़ी लोग जितने जहाज डुबा रहे हैं। उसका ½ भाग भी बृटेन के अन्दर तयार नहीं हो सकता। इंगलैंड और संयुक्त राष्ट्र अमरीका मिल कर डुबाये जाने वाले जहाज़ों की मात्रा के आधे से भी कम जहाज़ तयार कर सकते हैं। इँगलैंड में प्रति साल लगभग दस लाख टन के जहाज़ तयार किये जाते हैं। बम्ब वर्षा तथा रात को अँधेरा रहने के कारण जहाज़ बनाने का काम पूर्ण रूप से नहीं हो सकता है अब की साल १५ लाख टन के जहाज़ इंगलेंड में तयार करके समुद्र में उतारे गये हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे भागों में बहुत कम जहाज़ तयार किये जाते हैं। १९३८ ई० में ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे देशों में २८,००० टन के जहाज बने और समुद्र में उतारे गये। कनाडा हांग कांग में जहाज बनाने के लिये इंगलैण्ड ने मांग पेश की है। आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड और दक्षिणी अफ्रीका में जहाज़ बनाने के लिये डाक बनाये जा रहे हैं फिर भी ब्रिटिश साम्राज्य में अधिक से अधिक इस वर्ष एक लाख टन के जहाज़ तयार हो सकेंगे। इंगलैंड के अन्दर अधिक से अधिक डुबाये जाने वाले जहाज़ों का केवल १ भाग तयार किया जा सकता है। पूर्व की ओर जर्मन पराजय होने पर शायद कुछ जहाज़ खाली हो सकें। परन्तु अफ्रीका और हिन्दमहासागर की रक्षा करने के लिये वहां जहाजों का रखना बृटेन के लिये आवश्यक होगा।

जर्मनी, इटली और उनके अधिकार में हो गये देशों के जो जहाज पश्चिमी गोलार्द्ध के तट पर हैं उनका प्रयोग किया जा सकता है परन्तु वह सब मिलकर लगभग १० लाख टन के ही होगें।

जापानी जहाजी बेड़े का ७५ प्रतिशत भाग जो विदेशी व्यापार में लगा था वह अब एशिया के समुद्र में काम कर रहा है बहुत थोड़े जापानी जहाज़ विदेशों में शेष रह गये हैं और जो हैं भी वह जापान के लिये आयात का सामान ले जाने में लगे हैं। जापान के व्यापार में नार्वे और हालैंड के जहाज़ लगे हैं। यदि उन्हें वापस बुलाया जाता है तो जापान के रुष्ट हो जाने की सम्भावना है। राजनैतिक कारणों के कारण इंगलैंड और अमरीका जापान को अधिक रुष्ट करना नहीं चाहते हैं।

जब १९३९ ई० में संयुक्त राष्ट्र ने तटस्थता का नियम बनाया तो उसने ५ लाख टन के जहाज़ चलने से रोक दिये थे अब वह दूसरे मार्गों में लगे हैं।

१९३९ में अमरीका के जहाज़ी कमीशन ने ८ लाख टन के जहाज़ कनाडा और इङ्गलैंड के हाथ बेचने की आज्ञा निकाली थी। उनसे इङ्गलैंड को कुछ सहायता मिली थी साथ ही अमरीका के साढ़े चार लाख टन के जहाज़ जो दक्षिणी अमरीका तथा योरुप में थे उनसे भी सहायता प्रथम डेढ़ साल के युद्ध में मिली थी।

फरवरी सन् १९४१ ई० में अमरीका के जहाजी कमीशन के अफसरों ने कहा, "अमरीका के जहाज दूसरे देशों को अब भेजना सम्भव नहीं है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र में जहाज़ों की बहुत कमी हो रही है।"

१९३६ ई० से संयुक्त राष्ट्र ने जहाज बनाने वाली योजना के अनुसार नये जहाज बनाने आरम्भ किये हैं। बृटेन ने ६० सामान ले जाने वाले जहाजों (प्रत्येक जहाज एक हजार टन का) के बनाने की मांग अमरीका के सामने रक्खी है। इस प्रकार अधिक शीघ्रता करने पर १९४१ में १० लाख टन से अधिक के जहाज और १९४० में २३ लाख टन के जहाज़ संयुक्त राष्ट्र में तयार हो सकेंगे।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रेसीडेण्ट ने अप्रैल मास में घोषणा की है कि वह ५६ नये प्रकार के जहाज़ और २१२ और दूसरे जहाज़ इंगलैंड के लिये तयार कर रहे हैं परन्तु यह जहाज़ १९४२ ई० के पहले नहीं तयार किये जा सकते। इनमें से अधिकांश जहाज़ १९४३ ई० में तयार हो सकेंगे। अमरीका को जहाज़ों के तयार करने में बड़ा परिश्रम उठाना पड़ेगा।

नाज़ी सबमेरीन (पनडुब्बे जहाज) इतने अधिक जहाज़ डुबा रहे हैं कि उनका सामना करने के लिये अमरीका और इङ्गलैंड को या तो और अधिक संख्या में जहाज़ तयार करने पड़ेंगे या डुबाये जाने वाले जहाज़ों की संख्या किसी प्रकार कम करनी होगी।

डूबते हुये जहाज़ों की समस्या की शीघ्रता शीघ्र तय करने की आवश्यकता है नहीं तो फिर और अधिक कठिनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा संकट पड़ने की सम्भावना है। जहाज़ों की कमी हो जाने के कारण संयुक्त राष्ट्र को दक्षिण अफ्रीका से सन, पाट, चमड़ा, शाक के तेल और दूसरे कच्चे सामानों के मँगाने में बड़ी रुकावट पड़ रही है। युद्ध के लिये जो सामग्री इकट्ठी करनी आवश्यक है उसमें भी बाधा पड़ रही है। यदि यही दशा चलती रही तो भविष्य में युद्ध-सामग्री की बहुत कमी हो जावेगी। जहाज़ों के किराये बढ़ जाने से घरेलू प्रयोग की वस्तुओं का मूल्य संयुक्त राष्ट्र में बढ़ गया है जिससे संयुक्त राष्ट्र की रक्षक नीति के भंडाफोड़ हो जाने की संभावना प्रतीत हो रही है।

इस बात को संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सभापति महोदय भली भांति समझ रहे हैं इसी कारण उन्होंने १० फरवरी १९४१ ई० को संयुक्त राष्ट्र के व्यापारिक विभाग के सभापति ऐडमिरललैंड को पत्र लिख कर बतलाया था कि संयुक्त राष्ट्र की रक्षा के लिये जहाज़ों की कितनी अधिक आवश्यकता है और उनसे सलाह मांगी थी कि अधिक से अधिक कितने व्यापारिक जहाज़ों का प्रयोग रक्षक नीति से किया जा सकता है व्यापारिक कमीशन के सभापति ने शीघ्र ही कुछ जहाज़ रवाना किये थे परन्तु फिर भी आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाई थी। इसी कारण पूर्वी द्वीप समूह तथा फिलीपाइन द्वीप को सेना ले जाने वाले जहाज़ों के लिये लौटते समय युद्ध सामग्री संयुक्त राष्ट्र अमरीका को लानी पड़ी थी। मई १९४१ ई० तक संयुक्त राष्ट्र अमरीका के ४ लाख टन के सवारी ढोने वाले जहाज़ और कुछ व्यापारिक जहाज़ (जिनकी संख्या अप्राप्त है) सेना द्वारा ले लिये गये हैं। जिस भाव से व्यापारिक जहाज़ संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सेना विभाग द्वारा जल सेना में मिलाये जा रहे हैं उससे व्यापारिक जहाज़ों के मध्य जटिल समस्या के उत्पन्न हो जाने की पूर्ण सम्भावना प्रतीत हो रही है।

३० अप्रैल १९४१ ई० को प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के मैरीटाइम कमीशन को लिखा कि २० लाख टन के जो व्यापारिक जहाज़ मौजूद हैं उनसे प्रजातंत्रिक राष्ट्रों की सहायता सम्भवतः अधिक से अधिक पहुंचाई जावे। शीघ्र ही २८ टैंकर और भेजे गये। यह टैंकर दक्षिणी अमरीका से तेल संयुक्त राष्ट्र के पूर्वी तट को बन्दरगाहों पर ले आते हैं और वहां से वह तेल इङ्गलैंड को ब्रिटिश जहाज़ों द्वारा भेजा जाता है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपने यहां के धुरी राष्ट्रों के जहाज़ों के प्रयोग करने की बात भी सोच रहा है। वह दक्षिणी अमरीका के बन्दरगाहों पर बेकार पड़े जहाजों को खरीदने की योजना भी कर रहा है। युद्ध आरम्भ होने से १९४० ई० तक में संयुक्त राष्ट्र ने अपने तटीय व्यापारिक जहाज़ों में से ४ लाख टन के जहाज़ बाहर किये और उन्हें इङ्गलैण्ड को सामान पहुँचाने के कार्य में लगाया। जहाज़ों की कमी होने के कारण ही संयुक्त राष्ट्र के सभापति ने कांग्रेस से अपील की थी कि वह टेक्स तेल की खानों से मध्यवर्ती अटलांटिक के तेल साफ करने वाले कारखानों तक लोहे की नालियाँ लगवाने का बिल स्वीकार कर दे जिससे कुछ और जहाज खाली हो जावें।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के तटीय व्यापारिक जहाज़ों तथा बड़ी झीलों के जहाज़ों और भीतर की ओर चलने वाले व्यापारिक जहाज़ों में कमी करने से संयुक्त राष्ट्र को और अधिक रेलवे लाइनें तथा सड़कें बनवानी पड़ेंगी। इसलिये संयुक्त राष्ट्र को और अधिक फौलाद तयार करना होगा। किराये में भी अधिकता हो जावेगी साथ ही घरेलू सामान का मूल्य भी बढ़ जावेगा।

संयुक्त राष्ट्र के अन्दर अब और अधिक व्यापारिक जहाज़ खाली नहीं किये जा सकते जिनसे इङ्गलैन्ड आदि देशों की सहायता की जाय यदि और जहाज़ विदेशी मार्गों से हटाये जाते हैं तो दूसरी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसलिये संयुक्त राष्ट्र ने तय किया है कि जो सामान उसे खरीदना है वह निकटतम स्थानों से मंगावेगा। इसी कारण (किराया बढ़ जाने के कारण भी) से फिलीपाइन से संयुक्त राष्ट्र को चीनी जानी बन्द हो गई है। संयुक्त राष्ट्र ने यह बात भी सोची है कि एशिया से सामान खरीद कर वह अपने पश्चिमी तट पर उतारेगा और वहाँ से फिर रेलों द्वारा वह सामान पूर्व की ओर पहुँचाया जावेगा। इस प्रकार व्यापारिक जहाज़ों का काम घट जावेगा।

संयुक्त राष्ट्र को रबर, सन, पाट, मैंगनीज़, केला, काफी, चाय और मसाला आदि सामान विदेश से मंगाना पड़ता है। इन सामानों के लाने वाले जहाज़ों को छोड़ कर शेष बचे हुये व्यापारिक जहाज़ों का प्रयोग जिस प्रकार सोचा जाय किया जा सकता है।

संयुक्त राष्ट्र की जहाज़ी नीति उसकी रक्षक नीति पर ही निर्भर है। क्योंकि रक्षक नीति, जहाजी नीति का एक भारी अंग है। जहाज़ी नीति के आदर्श को पाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये संयुक्त राष्ट्र को राजनैतिक समस्याओं की ओर भी ध्यान देना होगा उसे समीपवर्ती राष्ट्रों के साथ मैत्री रखनी होगी, चीन की सहायता करनी होगी, संसार के दूसरे देशों को भोजन सामग्री पहुंचानी होगी और जहाज़ों पर पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त करना होगा जिससे व्यापारिक तथा आर्थिक युद्ध में सहायता मिल सके।

यदि संयुक्त राष्ट्र इङ्गलैण्ड की सहायता करना चाहता है और युद्ध में भी नहीं आता तो भी तटस्थता नियम के अनुसार अपने जहाज ब्रिटिश अथवा अन्य दूसरे देशों में लिखा पढ़ी करके भेज सकता है। वह इङ्गलैण्ड को ही चार्टर द्वारा जहाज़ दे सकता है जिससे कि वह युद्धक्षेत्र के बाहर इङ्गलैण्ड का काम कर सकें।

कुछ समय व्यतीत हुए सर आर्थर सल्टेर ने कहा था कि "मुझे पूर्ण आशा है कि अभी अमरीका में इतने जहाज़ बाक़ी हैं कि उनसे अमरीका तथा इङ्गलैण्ड के मध्य जहाज़ों का पुल बनाया जा सकता है और जब तक इनमें और अधिक कमी होगी तब तक इङ्गलैण्ड तथा अमरीका मिल-कर जहाज़ बनाने लगेंगे।" हम नहीं कह सकते कि यह बात कहाँ तक सम्भव तथा सत्य है फिर भी जहाँ तक इंगलैण्ड तथा अमरीका के मिल कर जहाज बनाने की योजना है वहाँ तक तो यह बात अवश्य ही कथन योग्य है कि यदि इस कार्य में अमरीका के पूँजीपतियों की सहायता ली जाती है तो वह अवश्य ही अपनी सहायता के लिये कुछ न कुछ विशेषाधिकार मांगेंगे जिसकी स्वीकृति स्वतंत्र नीति में असम्भव है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के मर्चेण्ट मरीन एक्ट की ९०२ धारा के अनुसार मैरीटाइम कमीशन अथवा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सभापति को अधिकार दिया गया है कि वह आवश्यक समय पर राष्ट्र की रक्षा के लिये जहाज़ों की मांग कर सकते हैं। यदि अमरीका के सभी व्यापारिक जहाज़ों की मांग की जावे तो फिर उसके मार्गों, सामान और चलने का निश्चय सरकार को करना होगा। जहाज़ों के मालिकों को केवल हर्जाने की रकम दी जावेगी जिसका निश्चय पहले ही कर लिया जावेगा। जहाज़ों के किराया का निश्चय भी सरकार ही करेगी।

अमरीका के जहाज़ों की मांग पर बहुत से प्रश्न उठ खड़े होते हैं। १—जहाज़ों के मालिकों को किस प्रकार से चुकता किया जावेगा? भिन्न भिन्न सरकारी विभागों की जहाज़ी मांग किस प्रकार पूरी की जावेगी? रक्षक आवश्यकता के समय कूटनीति का क्या प्रभाव होगा? क्या जहाज़ों के मालिकों को जहाज़ों में नौकरी दी जा सकेगी? जहाज़ी मज़दूरों को जहाज़ में कितना स्थान दिया जावेगा? यह सभी प्रश्न बड़े कठिन हैं परन्तु फिर भी जहाज़ों की मांग वाली नीति बड़ी कुशल है क्योंकि इसके अनुसार सभी जहाज़ सरकार के अधिकार में होंगे और फिर अमरीका की सरकार अपने आयात निर्यात और राजनैतिक परिस्थिति के अनुसार जहाज़ों को नियत संख्या में कार्य में लगा सकेगी।

अमरीका और इङ्गलैण्ड के व्यापारिक जहाज़ी विभागों के मध्य सहयोग होना बड़ा आवश्यक है। वर्तमान समय में अमरीका अपने जहाज़ों को अपने काम से छुट्टी देकर ब्रिटेन के कार्य में लगा रहा है। परन्तु इससे अच्छी नीति समस्त अमरीकन जहाज़ों की संगठित मांग की है। ब्रिटिश अमरीकन जहाज़ी सहयोग की नीति से अन्तर्राष्ट्रीय जहाज़ी सहयोग के बीज पड़ जावेंगे और फिर संसार के सभी जहाज़ों को एक नीति पर सम्भव हो सकेगा क्योंकि युद्ध के पश्चात भी बहुत सी कठिन समस्यायें उत्पन्न होंगी।

आधुनिक युग में जहाजों की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। संसार का काम बिना जहाजों के प्रयोग के चलना असम्भव है। इसी कारण जर्मनी इङ्गलैण्ड के अधिक से अधिक जहाजों को डुबाने का प्रयत्न कर रहा है। सामुद्रिक जहाज कई प्रकार के होते हैं। सामान ले जाने वाले जहाज़ लड़ाका जहाज़ों से भिन्न होते हैं। साधारण रूप के सामुद्रिक जहाज़ों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक तो वह जहाज़ है जो सामान और सवारी ढोने वाले हैं दूसरे लड़ाका जहाज़ हैं। लड़ाका जहाज़ भी कई प्रकार के होते हैं। यह जहाज़ युद्ध-अस्त्र-शस्त्रों से परिपूर्ण रहते हैं। इनमें तोपें आदि लगी रहती हैं। स्थली युद्ध की भांति सामुद्रिक युद्ध भी होता है। सामुद्रिक युद्ध में स्थली युद्ध से अधिक हानि होती है। युद्ध काल में व्यापारिक तथा सवारी जहाज़ सभी खतरे में रहते हैं। सभी जहाज़ों को यात्रा करने में अचानक संकट पड़ने की सम्भावना रहती है इसीलिये युद्ध काल में अधिक उपयोगी लादने वाले जहाज़ के साथ पथ-रक्षक सेना चलती है जो आक्रमण के समय सहायक होती है। आज यदि इङ्गलैण्ड के पास जहाज़ी शक्ति न होती तो शायद उसे जर्मन सत्ता के सामने अपना सिर झुका देना पड़ता परन्तु जहाज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति होने के कारण ही वह जर्मनी का शिकार नहीं हो सका और उसके छक्के छुड़ाया है। सामुद्रिक जहाज़ों द्वारा ही युद्ध काल में संसार के एक भाग से दूसरे भाग को युद्ध के लिये सामग्री तथा रसद पहुँचाना सम्भव हो रहा है। गत महायुद्ध में इङ्गलैण्ड को सामुद्रिक शक्ति होने के कारण विजय प्राप्त हुई थी। आज भी उसे उसी शक्ति के कारण विजय प्राप्त होने की आशा है। यदि इङ्गलैंड के पास सामुद्रिक शक्ति न होती तो वह भूखों मर जाता लड़ाई का कहना ही क्या है।

जब तक किसी दूसरी और विशेष उन्नति नहीं होती तब तक संसार में उसी जाति का पताका फहराता रहेगा जिसके पास अधिक से अधिक समुद्री जहाज़ होंगे।

रूसी परराष्ट्र दफ़्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल

रूस के विदेशी दफ़्तर को नार्कोमिरण्डेल और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल को कमिंटर्न कहते हैं। संयुक्त राष्ट्र सोवियट रूस के साम्यधादी दल का ध्येय क्रान्ति द्वारा संसार का सोवियट सामाजिक प्रजातांत्रिक संघ शासन की स्थापना करना है। ऐतिहासिक रूप से उनके कार्य हम तीन कालों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम काल १९०३ से १९१७ के मार्च क्रान्ति तक का है जिससे उसने जार शाही का अंत किया। दूसरा समय मार्च से नवम्बर १९१७ तक का है इस काल में साम्यवादी दल ने रूस से साम्राज्यवादी दल का अंत किया और साम्राज्यवादी युद्ध से रूस को अलग किया। नवम्बर १९१७ इ० का क्रान्ति के बाद से उसका तीसरा काल आरम्भ होता है जब कि उसने रूस में एकाधिपत की स्थापना की और उसे संसार के दूसरे देशों से साम्राज्यवाद को निकालने में प्रयोग किया। दूसरे देशों के साम्राज्य के अंत करने में रूस के साम्यवादी दल ने परराष्ट्र के किसानों तथा कारखानों के मजदूरों की शरण ली। उसे साम्राज्यवाद के अधिकार देशों और कालोनियों (बस्तियों) से भी सहायता मिली।

रूस के साम्यवादी दल पर व्यवहारिक राजनीति का प्रभुत्व है। वह अपनी संसार क्रान्ति वाली नीति को समय समय पर बदलना भली भांति जानता है जिससे उसकी नीति रूस की भीतरी स्थिति तथा दूसरे शक्ति शाली राज्यों की बदलती दशा के साथ समान रूप से चलती रहे। पर राष्ट्र सम्बन्धी कार्य चलाने के लिये रूसी साम्यवादी दल के दो खास अंग हैं। १—नार्कोमिरण्डेल (पर राष्ट्र दफ़्तर) यह संसार के दूसरे देशों से साधारण संबन्ध रखता है और इसने रूस में समाजवाद की स्थापना के समय क्रान्ति का प्रचार किया। २—कमिंटर्न (अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्था) इस ने रूस के बाहर सब कहीं वर्ग-युद्ध फैलाया, साम्राज्यशाही युद्ध को गृह-युद्ध में बदला और संसार क्रान्ति के अभिप्राय को उन्नतिशील बनाया।

रूसी परराष्ट्र दफ़्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल के झगड़े को समझने के लिये हमें उनकी साधारण योजना को कूटनीति और कलाओं की घटनाओं के उपायों का अध्ययन करना पड़ेगा। यद्यपि उनके उपायों में भिन्नता है फिर भी उनका ध्येय एक ही है। बोल्शेविक दल ने अपने विदेशी दफ़्तर की सहायता से दूसरे देशों की सरकारों को संतुष्ट रखा और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी संस्था द्वारा उन्हीं सरकारों के उलट देने का प्रयत्न किया। इस प्रकार बोल्शेविकों ने संसार-राजनीति में अपने लिये विशेष अधिकार के स्थान बना लिये। बोल्शेविकों को संसार के सभी क्रान्तिकारी तथा उदार आदर्शवादी दलों की सहायता मिल गई।

रूस ने पर राष्ट्रों में अपनी नीति का प्रचार चार उपायों से किया।

१९१७-१९२१ ई० तक की सांसारिक क्रान्ति की कला

जब ८ नवम्बर १९२१ ई० को बोल्शेविक दल ने अपनी शान्ति-घोषणा किया तो उन्हों ने रूस में किसी दूसरे राष्ट्र को नहीं मिलाया और न किसी से किसी प्रकार का हर्जाना लिया। वह स्वयम अपना निर्माण करने में लगे रहे। उनको आशा थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्राज्यवादी युद्ध गृह-युद्ध में परिवर्तित हो जावेगा जिससे संसार-क्रान्ति स्वयम् उत्पन्न हो जावेगी। इसी लिये ३ मार्च १९१८ ई० को जब रूस ने ब्रेस्ट-लिटोवस्क की सन्धि जर्मनी के साथ किया तो लेनिन ने कहा था कि क्रान्तिकारी नीति का मुख्य साधन रूसी वैदेशिक दफ़्तर था। जुलाई १९१८ ई० को रूसी वैदेशी कमिश्नर ने कहा था कि क्रान्तिकारी नीति का मुख्य कार्य निर्धन तथा मजदूर वर्ग की सहायता करना है। उसी नीति के अनुसार यूक्रेन के जर्मन सैनिकों के मध्य लाखों की संख्या में नोटिसें बांटी गईं।

मार्च १९१९ ई० में लेनिन ने कमिंटर्न नामक संस्था स्थापित किया और उसने रूसी 'वैदेशिक दफ़्तर के प्रचार कार्य को अपने हाथ लेलिया। कमिंटर्न संस्था में व्यवसायी क्रान्तिकारी लोग हैं। उसमें एक शासक कार्यकारिणी समिति है जो कमिंटर्न कांग्रेस के प्रस्ताव तथा लेख बनाती है। यह समिति रूस की साम्यवादी दल के अधिकार में है। रूसी साम्यवादी दल कार्यक्रम तयार करता है। वह कार्यकारिणी समिति के सामने आता है और फिर वहां से संसार के सभी साम्यवादी दलों को भेजा जाता है। समाजवादी दल की आशाओं तथा व्यवसायी क्रान्तिकारी लोगों की हिंसात्मक युद्धकारी भावों की सहायता लेकर क्रान्ति को अन्तर्राष्ट्रीय रूप देना था। इसका कार्यक्रम का एक अंग यह भी था कि समस्त समाजवादी संसार का नैतृत्व रूस के हाथ में आ जाय। इसी कारण संयुक्त मोर्चे की ओर ध्यान दिया गया और दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय सभा करने की व्यवस्था की गई।

१९१७-२१ ई० तक क्रान्ति की लहर बराबर चलती रही। उस समय रूसी वैदेशिक दफ़्तर और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी दल में किसी प्रकार का मतभेद न था। रूसी वैदेशिक नीति के अनुसार बाल्टिक राज्यों और पोलैंड के साथ १९२० ई० में संधि की गई परन्तु रूमानिया की बेसार्बिया प्रान्त की मांग को रूस ने ठुकरा दिया। सुदूर पूर्व की ओर जापान और रूस के मध्य एक छोटा राज्य बनाया गया जिसकी राजधानी चीता बनाई गई। १९२१ ई० के अंतिम काल तक रूस की क्रान्तिकारी लहर में क्षीणता आ गई। रूस में विदेशी मध्यवर्तन का अंत हो गया। रूस खास में गृह-युद्ध छिड़ गया साथ साथ वहां काल पड़ गया और महामारी आदि की बीमारियाँ फैल गईं। युद्ध समय के साम्यवादी मत ने रूस के आर्थिक जीवन को एकाएक रोक दिया इस प्रकार रूस की नीति में परिवर्तन हो गया।

पूंजीवाद राष्ट्रों के साथ थोड़े दिनों की संधि १९२१-२७

संसार में साम्यवाद के प्रचार तथा प्रसार के लिये आवश्यक था कि रूस को शक्तिशाली बनाया जावे। क्रान्ति की सफलता के पश्चात् ही रूस के साम्यवादियों को सोवियट रूस की नई व्यवस्था की रक्षा की चिंता उत्पन्न हो गई इसलिये उन्होंने अपने देश की आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति के लिये योजनाएँ बनाईं। सब से पहले रूस में साम्यवाद को व्यवहारिक स्वरूप देने की व्यवस्था की गई। औद्योगिक तथा आर्थिक विकास के लिये उसे दूसरे देशों की सहायता तथा सहयोग की आवश्यकता पड़ी। इस प्रकार पूंजीवादी देशों के साथ उसे अपना सम्बन्ध स्थापित करना पड़ा।

लेनिन ने अपनी नवीन आर्थिक नीति के कार्य क्रम को १९२१ ई० में आरम्भ किया। वह निजी उद्योग तथा वैदेशिक धन से अपने देश का आर्थिक सुधार करना चाहता था। रूसी वैदेशिक विभाग को आज्ञा दी गई कि वह पूंजीवाद देशों के साथ मित्रता का व्यवहार रखे और कुछ अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का भी पालन करें। १९२३ में सोवियट संघ का निर्माण हुआ। उसी साल संयुक्त राष्ट्र अमरीका को छोड़ कर शेष संसार के सभी शक्तिशाली देशों ने सोवियट रूस के राज्य को स्वीकार कर लिया।

सोवियट रूस के सम्बन्ध वाइमर जर्मनी के साथ बड़े अच्छे रहे। १९२२ ई० में रपालो की संधि हुई जिससे दोनों राष्ट्र एक मार्ग पर चलने लगे। ११२५ ई० में जर्मन रूसी व्यापारिक सन्धि हुई। इस सन्धि से पूंजी वादियों और समाज वादियों के मध्य सम्बन्ध स्थापित हो गये। १९२६ ई० में जर्मनी ने रूस के साथ सन्धि किया और रूस को विश्वास दिलाया कि राष्ट्र-सन्ध की सेना जर्मनी होकर रूस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्रवेश नहीं करेगी। सेवरेस तथा लासेने की संधि में रूस ने टर्की का समर्थन किया। उसके बाद रूस ने अपने पड़ोसी राज्यों के साथ आक्रमणिक सन्धियाँ किया। जर्मनी ने रूस का खूब साथ दिया और उसे फ्रान्स तथा इंगलैंड का सामना करने का अस्त्र बनाया।

जब कि रूसी वैदेशिक नीति इस प्रकार परिवर्तित हो रही थी तो साम्यवादी क्रान्तिकारी दल पहले की भांति ही अपनी नीति पर चल रहा था। १९२२ ई० में लेनिन बहुत बीमार हो गया। वह बीमारी की दशा में भी साम्यवादी क्रान्तिकारी दल और रूसी वैदेशिक विभाग के मध्य मध्यस्त का काम करता रहा।

२१ जनवरी १९२४ ई० को लेनिन की मृत्यु हो जाने पर ट्राटस्की और स्टैलिन में रूस के नेतृत्व के लिये झगड़ा छिड़ा। १ अक्तूबर १९२४ ई० को स्टैलिन ने सर्वप्रथम घोषणा किया कि "मजदूर क्रान्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं और शान्तिप्रिय तथा प्रजातन्त्रवादी दोनों साधारण जनता को धोका दे रहे हैं। समाजवादी प्रजातंत्रवाद फैसिज्म का नर्म पक्ष है। फैसिस्ट लोग सो नहीं रहे हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम पहले ही उनपर अक्षेप करें जिससे समस्त मजदूर दल साम्यवाद की ओर मिल जावें। हमें जहां तक समाचार मिला है हम कह सकते हैं कि जर्मनी में फैसिस्ट मत निर्बल अवस्था में है। मेरा अपना मत है कि हमें जर्मनी की ओर से शान्त रहना चाहिये और उसे जगाना न चाहिये।"

साम्यवादी क्रान्तिकारी दल ने १९२३ ई० में पहले जर्मनी में क्रान्ति करने की आज्ञा दी थी और फिर उसे रोक दिया था। साम्यवादी क्रान्तिकारी दल तथा स्टैलिन जर्मनी में समाजवादी प्रजातन्त्रवाद का नाश करना चाहते थे और नाजी लोगों को शक्तिशाली बनाना चाहते थे क्योंकि उन्हें आशा थी कि वह साम्यवाद को शीघ्र ही जर्मनी में सफलता प्राप्त हो जावेगी। उस समय ग्रेटब्रिटेन रूस का मुख्य वैरी माना जाता था।

१९२५ ई० में स्टैलिन ने कहा कि पूंजीवाद की प्रगति शिथिल हो गई है और क्रान्तिकारी लहर उठ रही है। इस पर साम्यवादी क्रान्तिकारी दल ने चीन में बड़े वेग के साथ अपना कार्य आरम्भ किया। १९२४-२७ ई० तक कैण्टन-मास्को सन्धि रही। उसके अनुसार बोल्शेविक सलाहकार निकाल दिये गये और बहुत बड़ी संख्या में चीनी साम्यवादी क्रान्तिकारी फांसी पर लटका दिये गये। उसी पर रूस के साम्यवादी क्रान्तिकारी दल ने रूसी वैदेशिक नीति के कार्य में दखल दिया जिससे १९२७ ई० में रूस ने इंगलैंड और चीन से अपने सम्बन्ध तोड़ दिये।

नवम्बर १९२७ ई० तक ट्राटस्की और स्टैलिन का झगड़ा बहुत बढ़ गया था। उस पर ट्राटस्की रूस से निकाल दिया गया। बोल्शेविकों ने अनुभव किया कि क्रान्तिकारी लहर के कम होने और पूंजीवाद के जड़ के पकड़ने से रूस की आर्थिक दशा सुधर गई है इसलिये सोवियट नीति को समाजवादी नीति की ओर बढ़ाना आवश्यक है। कुछ वर्षों से तेजी के साथ कारखानों के बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा था। इस लिये रूस को अपनी नीति में भारी परिवर्तन करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

पूंजीवाद राष्ट्रों के साथ रूस के समान सम्बन्ध १९२८-३४

१९२८ ई० में रूस ने अपनी नीति को बदल दिया। रूस की देशी नीति समाजवादी हो गई। रूस अपने देश में समाजवादी नीति का अनुसरण करना चाहता था और विदेशों में साम्यवादी क्रान्तिकारी नीति चलना चाहता था। समाजवाद को संगठन करने तथा रूस ऐसे बड़े राज्य के कारखानों को उन्नति प्रदान करने के लिये आवश्यक था कि देश में शान्ति रखी जावे। इस लिये रूसी वैदेशिक नीति को आज्ञा दी गई कि वह पूंजीवाद राज्यों के साथ मित्रता का व्योहार रखे। रूस ने प्रथम पञ्चवर्षीय योजना आरम्भ किया और विदेशी धन तथा कलाकारों को अपने देश में स्थान दिया। इस प्रकार प्रथम पञ्चवर्षीय योजना के समाप्त होने पर रूस के कारखानों ने काफी उन्नति कर ली। रूस ने अपने सैनिक अड्डे बना लिये और वह विदेशी व्यापार स्वतंत्र राष्ट्र बन गया।

समाजवादी व्यवस्था के सफल होने पर रूस के विदेशी सचिव लिटविनाव ने फिर कई राष्ट्रों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ आक्रमणिक सन्धि किया और जेनेवा की राष्ट्रसंघ की बैठक में उसने पूर्ण-निःशस्त्रीकरण की मांग की। १९३३ ई० में लन्दन की आर्थिक सभा में रूस ने भाग लिया। उसके बाद संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने भी सोवियट राज्य का स्वीकार कर लिया।

इस काल में साम्यवादी क्रान्तिकारी दल बिल्कुल चुप रहा। सब कहीं मजदूर बर्ग ने समाजवादी मात्र भूमि की रक्षा का आवाज उठाई। जर्मनी में साम्यवादी लोग नाजी लोगों की भांति ही कार्य करते रहे।

जर्मनी के साथ काम करने में रूसी विदेशी विभाग तथा रूसी साम्यवादी दल में संहर्ष चलता रहा। विदेशी विभाग जर्मनी के समाजवादी राष्ट्र के साथ रहकर काम कर रहा था।

बोल्शेविक लोगों को नाजी लोगों की युद्ध की तयारी की सूचना भलो भांति प्रकट थी। जब जनवरी १९३४ में साम्यवादी दल की १७वीं कांग्रेस हुई तब उसके समक्ष दल की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये स्टेलिन ने कहा था "युद्ध अवश्य ही क्रान्ति की पट्टी खोल देगा और कुछ राज्यों के पूँजीवाद की जड़ को उखाड़ने की चुनौती देगा"। स्टैलिन ने यह भी कहा था "हम विदेशी भूमि का एक टुकड़ा भो नहीं चाहते हैं परन्तु साथ ही हम अपनी भूमि का एक इंच भाग भी दूसरों को नहीं लेने देंगे।"

जब हिटलर शक्तिशाली हुआ तो उसने साम्यवादियों और यहूदियों के साथ अत्याचार किया और उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया। वह दिन प्रति दिन यूराल तथा यूक्रेन पर धावा मारने के लिये अपना मत प्रकट करने लगा तो बोल्शेविकों को अपनी नीति बदलने की फिर आवश्यकता प्रतीत हुई। कारखानों तथा रक्षक अड्डों के बना लेने के कारण उस समय रूस की गणना पश्चिम के बड़े राष्ट्रों में होने लगी थी।

फैसिज़्म के विरुद्ध संगठित निश्चितता १९३४-३९

संगठित निर्भयता की नीति के अनुसार रूसी वैदेशिक विभाग को आज्ञा दी गई कि वह राष्ट्र संघ में रूस के सम्मिलित होने की बातचीत करे। १९३५ ई० में रूस ने फ्रांस और चेकोस्लोवेकिया के साथ मित्रता की संधियां किया। लिटविनफ ने इटली के विरुद्ध रोक लगाने की नीति का ज़ोरों से समर्थन किया और टर्की जलसंयोजक को सैनिक बनाने वाली नीति का भी उसने समर्थन किया। उसने लीग की सभा में बड़े प्रभावशाली भाषण दिये परन्तु म्यूनिक की संधि के समय उसकी नीति के असफल होने का प्रमाण मिला और म्यूनिक सम्मेलन तथा परामर्श में रूस को सम्मिलित नहीं किया गया।

१९३५ ई० की कॉंग्रेस में साम्यवादी दल ने सभी स्थानों के राष्ट्रीय साम्यवादियों को आज्ञा दिया कि वह फैसिज़्म और युद्ध का विरोध करें। इसी नीति के कारण फ्रांस में ब्लम सरकार स्थापित हुई और स्पेन में गृह युद्ध छिड़ा। फ्रांस में पूँजीवाद और मज़दूर बर्ग के झगड़े के कारण फ्रान्सीसी प्रजातंत्र राज्य का अंत हो गया। प्रत्येक स्थान के साम्यवादी क्रान्तिकारी लोग "समाजवादी मातृभूमि की नीति का प्रचार करने लगे और फैसिस्ट नीति का विरोध करने लगे। साम्यवादी दल की रिपोर्ट में उस समय निकला कि ५ सालों के बीच में साम्यवादियों की संख्या ८ लाख ६० हजार से बढ़ कर १२ लाख हो गई है और साम्यवादी दल से मिली हुई संस्थाओं के सदस्यों की संख्या एक लाख दस हज़ार से बढ़ कर सात लाख छियालिस हजार हो गई है। स्टैलिन जैसे जैसे शक्तिशाली होता गया वैसे वैसे पुराने साम्यवादी दल के नेताओं का बलिदान चढ़ता गया और आख़िरकार स्टैलिन रूस का एकाधिपत बन गया परन्तु रूस की संगठित निर्भयता वाली नीति असफल हो गई। उसके शत्रु राष्ट्रों (जर्मनी तथा जापान) ने चारों ओर से उसका घेरा डाल दिया। इसलिये रूस को फिर अपनी नीति बदलने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

घेरा तोड़ने के लिये तटस्थता की नीति १९३९-४१

म्यूनिक सम्मेलन और उसके कुछ समय बाद तक रूस ने किसी प्रकार की भी आवाज नहीं उठाई। म्यूनिक सम्मेलन के बाद राजनीतिज्ञों का ख्याल था कि जर्मनी रूस पर आक्रमण करेगा। स्वयम् रूस को भय था कि उस पर पूर्व की ओर से जापान और पश्चिम की ओर से जर्मनी आक्रमण करेगा।

जनवरी १९३९ ई० में म्यूनिक सम्मेलन के बाद सर्व प्रथम स्टेलिन ने आवाज उठाई और जर्मन द्वारा सुडेटन प्रान्त छीने जाने की स्वीकृति की। १५ मार्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९३९ ई० को जर्मनी ने प्रयाग छीना। इससे समस्त योरुप की शक्तियों में खलबली पड़ गई। इतना होने पर भी मित्र-राष्ट्रों ने पोलैंड की रक्षा का भार उठाया और लिटविनोव (रूस का भूतपूर्व वैदेशिक मन्त्री) के त्याग पत्र पर भी उन्होंने रूस से सुलह की बात चीत चलाई। पोलैण्ड ने पोलैंड की रक्षा के लिये रूसी सेना को पोलैंड में होकर जाने से इन्कार कर दिया। रूस चाहता था कि मित्र-राष्ट्र बाल्टिक राज्यों की रक्षा का भी भार उठावें परन्तु मित्रराष्ट्रों ने इस जिम्मेदारी को नहीं उठाया इस पर रूस के साथ मित्रता नहीं हो सकी।

तटस्थ रहने के कारण जर्मनी ने पोलैण्ड में रूस को भाग देना स्वीकार किया और २३ अगस्त १९३९ ई० को रूस तथा जर्मनी के बीच संधि हुई। लिटविनाव के स्थान पर मोल्टाव रूस का वैदेशिक मन्त्री बनाया गया वह साम्यवादी दल के राजनैतिक विभाग का सदस्य था इस कारण साम्यवादी दल तथा रूसी वैदेशिक विभाग की नीति फिर समान हो गई।

साम्यवादी दल के नेता मैनविल्स्की ने घोषणा किया कि इंगलैंड क्रान्ति का मुख्य बैरी है वह छोटे राज्यों का बलिदान करके जर्मनी से रूस पर आक्रमण कराना चाहता है और चीन का बंटवारा करना चाहता है इस प्रकार वह सुदूर पूर्व में दूसरा म्यूनिक सम्मेलन कराने का इच्छुक है। अतः रूस ने पुनः अपनी साम्यवादी क्रान्तिकारी नीति का अनुसरण किया और समीपवर्ती राज्यों से बातचीत आरम्भ की। फिनलैण्ड ने रूस की शर्तें नहीं स्वीकार कीं इसी कारण फिनलैंड और रूस में युद्ध हुआ। जुलाई १९४० ई० तक एस्टोनिया लैटविया, लिथुवानिया, बेसार्बिया और उत्तरी बुकोवीना आदि राज्य रूस में मिला लिये गये। इस प्रकार साम्यवादी नीति ने रूसी समाजवादी-मातृ भूमि की शक्ति को बढ़ाया।

जब से रूस ने पोलैंड के बँटवारे में भाग लिया तब से संसार के सभी साम्यवादी तथा क्रान्तिकारी संस्थाएँ तथा पत्र फैसिज्म के विरुद्ध आवाजें उठानी बन्द कर दीं और तटस्थता के मार्ग पर चलने लगे। फ्रांस के साम्यवादी लोग डाल्डियर और रीनाड की सरकार को नष्ट करने में लगे थे जब कि वह युद्ध में फंसा था।

पश्चिम की भांति रूस पूर्व की ओर भी संधि करके अपना लाभ उठाने का इच्छुक था इस लिये ३ अप्रैल १९४१ ई० को उसने जापान के साथ तटस्थता की संधि किया। जर्मनी ने इस संधि कराने में अच्छा भाग लिया वह चाहता था कि जापान को पश्चिमी खतरे से छुटकारा मिल जाय जिससे प्रशांत महासागर में वह संयुक्त राष्ट्र अमरीका का ध्यान बंटा दे ताकि संयुक्त राष्ट्र इंगलैण्ड की भली भांति सहायता न कर सके।

रूसो-जापानी संधि से रूस अथवा जापान को कोई खास लाभ नहीं हुआ। रूस जानता था कि यदि युद्ध अधिक समय तक चलता रहा तो जर्मनी को तेल चर्बी आदि की आवश्यकता बहुत होगी और उसे वह रूस की मर्जी से या अप्रसन्नता से भी लेने की कोशिश करेगा। इसलिये उसका यूक्रेन, लोवर वाल्गा और बाकू तथा क्रोज्नी के तेल के कुवों पर अधिकार होना अनिवार्य है। साथ ही साथ रूस को यह भी आशा थी कि अधिक समय तक युद्ध चलने से इंगलैण्ड तथा जर्मनी दोनों शक्तिहीन हो जावेंगे और तब फिर संसार-क्रान्ति की सम्भावना सरल हो जावेगी।

रूसो-जापानी संधि का अर्थ सभी लोग भिन्न-भिन्न लगाते हैं। साराँश रूप में यह बात सभी मानते हैं कि इस संधि से इटली, जर्मनी, रूस और जापान एक नीति के मानने वाले हो गये। उन्होंने नव-युग की स्थापना करने का मार्ग निकाल लिया। इस संधि से ब्रिटिश साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करने के लिये उत्तरी सागर से पैसिफिक सागर तक एक यूरेशियन ब्लाक बन गया था। इसी बीच चीन में वयोमिंटग और साम्यवादियों में झगड़ा हो गया। इस झगड़े से चीन की स्थिति और अधिक जटिल हो गई यदि यह झगड़ा और अधिक बढ़ जाता है तो फिर चीन जापान का सामना न कर सकेगा वरन् स्वयम् उसके तीन भाग हो जाने की सम्भावना है। (१) उत्तरी चीन से दक्षिण की ओर याँग्जे तक जिसमें समुद्री बन्दरगाह भी शामिल है जापान के अधिकार में हो जावेगा। (२) उत्तरी-पश्चिमी चीन जिस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस का प्रभुत्व होगा। (३) पश्चिमी और दक्षिणी-पश्चिमी चीन जिस पर क्योमिंटग का अधिकार होगा और उसे ब्रिटेन और अमरीका की सहायता प्राप्त रहेगी।

युद्ध की भीषणता होने से जापान को अवसर मिला और उसने इण्डोचीन पर अधिकार कर लिया है। वह पूर्वी द्वीप समूह में अपना प्रभुत्व भली भांति जमा लेना चाहता है। आज योरुप और एशिया में क्रांति के बादल घुमड़ रहे हैं और इस क्रान्ति को रोकने के लिये किसी बड़ी असाधारण घटना की आवश्यकता है।

हम जानते हैं कि रूस के साम्यवादी दल का कभी भी खात्मा नहीं हुआ है। रूसी साम्यवादी दल के ध्येय संसार-क्रान्ति तथा संसार सोवियट समाजवादी प्रजातंत्र संघ है। सोवियट की वैदेशिक नीति में जो परिवर्तन हुये हैं वह केवल उसकी भीतरी देशी संगठन के कारण हुये हैं।

६ मई १९४१ ई० को स्टेलिन रूस की पीपुल्स कमीशर की सभा का सभापति बना है। इसी स्थान पर पहले लेनिन था। उस समय रूस के समाजवादी दल तथा विदेशी विभाग की नीति एक थी और संसार क्रान्ति का प्रचार हो रहा था। आज भी वही स्थिति है। एक बार रूस का वैदेशिक विभाग तथा साम्यवादी दल मिल कर काम कर रहा है और क्रांति की लहरें चल रही हैं। रूस की बैदेशिक नीति संसार-क्रान्ति की है।

जब रूस ने फिनलैण्ड पर आक्रमण किया था तो उसकी नीति का विरोध समस्त संसार में हुआ था। भारत के विश्वविख्यात समाजवादी पंडित जवाहरलाल नेहरू ने फिन रूस के फिनिश आक्रमण की बड़े तीव्र शब्दों में निन्दा की थी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि भारत को रूस के समाजवाद से सहानिभूति है परन्तु फिनलैंड के युद्ध में हमारी सहानुभूति फिनलैंड के साथ है। रूस के इस आक्रमण ने उसके गौरव को बड़ा धक्का पहुँचाया है। यदि वह इसी मार्ग पर रहा तो इसका परिणाम उसके और संसार के लिये बड़ा खतरनाक होगा।

बाल्कन प्रान्तों पर जर्मन आक्रमण के समय रूस ने जिस नीति पर अनुसरण किया था वह भी बड़ी सोचनीय थी। ईश्वर जाने क्यों रूस जर्मनी के आक्रमणों की तरफदारी करता रहा और चुपचाप बैठा तमाशा देखता रहा।

पूर्व की ओर युद्ध बढ़ने पर यह भली भांति प्रकट हो चुका था कि यदि जर्मनी ने एशिया को रण-क्षेत्र बनाया तो अवश्य ही रूस, जर्मनी और जापान में संहर्ष होगा। आखिर वही बात हुई भी जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया और ऐसा भीषण धावा मारा जिसका संसार में कोई भी उपमा नहीं है। यह आक्रमण १५ सौ मील लम्बी सीमा पर हुआ है। तटस्थ रहने और सरकारी होने पर भी रूस को आखिर जर्मनी का शिकार बनना पड़ा। आक्रमण होने के कारण रूस को अपनी नीति पुनः बदलनी पड़ी है। उसने इंगलैंड और अमरीका आदि देशों की सहायता लेनी स्वीकार की है। मास्को में इंगलैण्ड, अमरीका और रूस के राजनैतिक दूतों का सम्मेलन भी हो चुका है। इंगलैंड और रूस ने मिल कर ईरान पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार भी जमा लिया है।

ब्रिटिश तथा अमरीकन सहायता मिलने पर भी जर्मनी रूस के अन्दर बढ़ता जा रहा है। यद्यपि जर्मनो को रूसी आक्रमण में बड़ी हानि उठानी पड़ी है तो भी वह अब तक सफल रहा है। यदि रूस पहले से अपनी नीति को बदले रहता तो शायद आज उसे यह दिन न देखने पड़ते। फिर भो सोवियट नीति इतनी रहस्यमय है। इसमें शक नहीं कि वह नाजीवाद, साम्राज्य वाद और फैसिज्म तीनों के विरुद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ मई सन् १६४१—इटैलियन सेना ने कैपहाजो-निया, जन्ते और ल्यूकस द्वीपों पर अधिकार कर लिया और यूनानी द्वीप समूह में अपने हवाई अड्डे बनाने आरम्भ किये।

इटली की सेना ने तोब्रक पर धावा मारा और नगर की बाहरी रक्षक रेखा को तोड़ दिया। बसरा में ब्रिटिश सेना उतरी।

२ मई—माल्टा पर हवाई आक्रमण हुआ। लन्दन में मर्सी साइड पर शत्रु वायुयानों ने आक्रमण किया।

एम्डेन, हैम्बर्ग, कील और बर्लिन पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा और बम्ब वर्षा किया।

३ मई—इराक में ब्रिटिश सेनाएँ आगे बढ़ी। यूगो-स्लाविया के उत्तरी-पश्चिमी भाग पर इटली ने अधिकार जमा लिया। तोब्रक में इटली के सेना तथा ब्रिटिश सेना के मध्य युद्ध हुआ। हैम्बर्ग पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया। यूनान से ब्रिटिश सेना हटाई गई।

४ मई—इराक की सेना ने मोसल के तेल के मैदान में पानी भर दिया। किर्कुक, हनीकिम और गौरा के तेल के कुओं पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया।

ब्रिटिश हवाई स्थली और जल सेना ने बसरा से इराकी सेना को भगा दिया और इराक की हवाई शक्ति का लगभग आधा भाग नष्ट कर दिया। इराकी सेना ने हब्बानियाह हवाई अड्डे पर गोलेबारी किया। माल्टा तथा लन्दन पर शत्रु के हवाई आक्रमण हुये।

५ मई—इराकी सेना बसरा से बाहर भगा दी गई और ब्रिटिश सेना ने बसरा पर अधिकार कर लिया। २५ इराकी विमान नष्ट किये गये।

६ मई—टर्की ने इराक में मध्यस्थ बनने के लिये कहा। इराक की हवाई शक्ति का सत्यानाश हो गया। ब्रिटिश सरकार ने संधि करने से इनकार किया।

बेलफास्ट पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

७ मई—इराक के अधिकांश पम्प लाइनों पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया। हब्बानियाह की स्थिति में कुछ सुधार हुआ। कुछ इराकी सेना ने अपने हथियार डाल दिये। लन्दन पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

८ मई—कामन्स सभा में प्रधान मन्त्री चर्चिल ने तोब्रक और क्रीट की रक्षा भली भाँति करने का विश्वास दिलाया। इराक में रुतबाह पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार जमा लिया। इंगलैंड के कई स्थानों पर जर्मन विमानों का हवाई आक्रमण हुआ मोरक्को और सीरिया में जर्मन हवाई अड्डे स्थापित हुये।

९ मई—रशीद अली बगदाद छोड़ कर भाग गया। ब्रिटिश सेना ने ४०० इराकी सैनिकों को गिरफ्तार किया। अबीसीनिया में ब्रिटिश सेना को सफलता प्राप्त हुई। इंगलैंड के उत्तरी और पश्चिमी भाग पर शत्रु वायुयानों ने हवाई आक्रमण किया जिससे बहुत हानि हुई और बहुत से लोग मारे गये। २४ शत्रु विमान गिराये और १४ विमान नष्ट किये गये।

१० मई—पश्चिमी रूम सागर में ब्रिटिश सेना ने आक्रमण किया। हब्बा निपाह से इराकी सेना को हटने पर बाध्य होना पड़ा।

११ मई—स्वेज़ प्रान्त और इंगलैण्ड पर शत्रु बाब वर्षक विमानों ने हवाई आक्रमण किया जिसके फल स्वरूप ५ अस्पताल एक सिनेमा घर, कुछ गिरजा घर और बहुत से मकान नष्ट हुये। शत्रु बम्ब वर्षक विमान गिराये गये।

१२ मई—शत्रु हवाई आक्रमण के कारण पार्लियामेन्ट के भवन नष्ट हो गये। वेस्टमिनिस्टर अबे में आग लगा दी गई। ब्रिटिश म्यूजियम पर आग वाले बमों की झड़ी की गई। ७ आक्रमणकारी विमान गिराये गये। तोब्रक और सोलम प्रान्त में शत्रु की सेना बहुत बड़ी संख्या में मारी गई। त्रिपोली और देना पर ब्रिटिश वायुयानों ने आक्रमण किया।

१३ मई—रूडोल्फ हेस, जर्मनी के डिप्टी फ्यूहरर का विमान ग्लासगो के समीप फट गया। वह घायल दशा से ग्लास्गो के अस्पताल में रक्खा गया है। जर्मनी से वह अचानक भाग निकला और अपने पीछे एक पत्र छोड़ गया। बङ्गाजी पर गोलेबारी हुई और जर्मन विमानों में आग लगा दी गई। अबीसीनिया में ब्रिटिश सेना आगे बढ़ी।

१४ मई—चीनी और जापानी सेना में भीषण युद्ध हुआ। जापानियों ने तंगफेंग किले पर अधिकार कर लिया बेंगाजी पर बम्ब वर्षा की गई। मेन्दीप, आस्टेएड और डंकिर्क पर ब्रिटिश वायुयानों ने बाम्ब वर्षा किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ मई—रुडोल्फ हेस लन्दन के समीप एक अस्पताल में रक्खा गया। उसने होमल्टन के ड्यूक से भेंट किया। वान पेपन जर्मन राजदूत ने टर्की के प्रेसीडेन्ट से भेंट की विचो सरकार ने हिटलर की शर्तें स्वीकार कर लीं। सोलम प्रान्त से शत्रु सेना हटाई गई। हेलीगोलैंड पर ब्रिटिश विमानों ने बम वर्षा किया। इँगलैण्ड पर जर्मन वायुयानों ने धावा मारा।

१६ मई—शत्रु विमानों के आक्रमण से लन्दन के लैम्बेथ महल (कंटरबरी के आर्क बिशप का घर) क्वींस हाल सेंट जेम्स महल, ओल्डबैली (न्यायालय) और साल्वेश आर्मी हेड क्वाटर्स आदि ऐतिहासिक भवन नष्ट हो गये।

सीरिया और इराक में जर्मन विमान पहुँचे। फिरोशियन द्वीप में शत्रु पथरक्षक सेना पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। माल्टा पर शत्रु का हवाई आक्रमण हुआ।

१७ मई—ब्रिटिश विमानों ने सीरिया के जर्मन हवाई अड्डों पर धावा मारा इराक में और अधिक ब्रिटिश सेना पहुँची। सोलम को ब्रिटिश सेना ने फिर ले लिया। हनोवर पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण हुआ चंगफिंग पर जापानियों ने बम वर्षा किया।

१८ मई—अबीसीनिया के युद्ध में १५००० सेना के अबोस्ता के ड्यूक ने हथियार डाल देने की शर्तें मांगीं। सोलम प्रान्त में शत्रु सेना को कुछ विजय प्राप्त हुई। इराक में हवाई युद्ध हुआ। मसूल में जर्मन विमानों पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। बेंगाजी पर हवाई आक्रमण हुआ।

१९ मई—ब्रिटेन में हवाई युद्ध हुआ। कील और एम्डेन पर ब्रिटिश विमानों ने हमला किया। अम्बा अलागी ने ब्रिटिश सेना को आत्मसमर्पण किया और ब्रिटिश शर्तें स्वीकार की।

२० मई—सोलम प्रान्त में जर्मन सेना को परास्त हुई। शत्रु टैंकों को ब्रिटिश विमानों ने पीछे हटा दिया। इराक को जर्मनी ने युद्ध सामग्री रवाना किया। क्रीट द्वीप पर जर्मन विमानों ने हमला किया और १५० सैनिक पैराश्यूट से उतार दिये। फौलजाद नगर पर ब्रिटिश अधिकार हुआ।

२१ मई—७००० जर्मन सेना क्रीट में उतर गई। क्रीट पर हवाई तथा समुद्री आक्रमण जर्मन सेना ने किया। वहां पर भीषण हवाई तथा समुद्री युद्ध हुआ। अबोस्ता के इटैलियन ड्यूक ने हथियार डाल दिये। स्वतंत्र फ्रांसीसी सेना ने सीरिया में प्रवेश किया।

२२ मई—क्रीट से ब्रिटिश विमानों की सेना हटा ले गई। हलीमी हवाई अड्डे पर जर्मन सेना का अधिकार हो गया। क्रीट के युद्ध में दो शत्रु विध्वंसकारी जहाज डुबाये गये। छोटी नावों तथा विमानों द्वारा जर्मन सेना ने क्रीट पर धावा किया।

ब्रिटेन ने विची सरकार को चेतावनी की। अटलांटिक सागर में फ्रांसीसी टैंकर जहाज को रोका।

२३ मई—ब्रिटिश सेना ने क्रीट में शत्रु के प्रतिकूल आक्रमण किया। और समुद्र द्वारा जर्मन सेना का उतारना रोक दिया। क्रीट के रेटीमो और हेराक लिअोन स्थान पर जर्मन अधिकार हो गया।

२४ मई—मलीमी में भीषण स्थित हो गई। क्रीट में और अधिक जर्मन सेना पहुँची और ब्रिटिश तथा जर्मन सेना में भीषण युद्ध हुआ। एच० एम० एस० नामक ब्रिटिश जहाज ग्रीनलैण्ड के समीप डुबा दिया गया जिसमें १३०० आदमी थे। वह सबसे बड़ा क्रूशियर जहाज था जिसमें १५ इंच वाली आठ तोपें लगी थीं। सोलम प्रान्त के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने ८ जर्मन टैंक नष्ट किये।

२५ मई—स्वेज नहर पर हवाई आक्रमण हुआ। अटलांटिक सागर में नाजी जहाजों का पीछा किया गया और एक जहाज डुबाया गया और कोलम्बस पकड़ा गया।

२६ मई—क्रीट के मलीमी प्रान्त में सैनिकों में हाथों हाथ युद्ध हुआ। नाजी विमानों ने बम वर्षा करके क्रीट के नगरों को सत्यानाश किया। इराक की सरकार मसूल नगर को भाग गई।

२७ मई—डेनमार्क के तट के समीप ब्रिटिश तथा जर्मन समुद्री जहाजों में भीषण युद्ध हुआ। विस्मार्क नामक नाजी जहाज का पीछा किया गया और टारपीडो बम्बो ने उस पर हमला भी किया। क्रीट के युद्ध में जर्मन विमानों की हानि हुई परन्तु जर्मन सेना को सफलता हुई। ब्रिटिश स्थानों पर जर्मन सेना घुस गई।

३० मई—इँगलैंड के दक्षिणी तट पर जर्मन विमानों ने बम गिराये क्रीट में भीषण युद्ध हुआ। अबीसीनिया में गोंदर स्थान पर युद्ध हुआ। इटली की सेना पीछे हटी। रूमसागर में कोरीसो नामक इटली का जहाज टारपीडो द्वारा डुबाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१ मई—रशीद अली इराक भाग गया। ब्रिटिश सेना बगदाद के समीप पहुँचो। अमीर अब्दुल्ला ने इराक की सरकार बनाई।

क्रीट की भीषण स्थिति हो गई। वहां भीषण युद्ध हुआ। क्रीट में इटैलियन सेना भी पहुँच गई।

१ जून—ईराक में क्षणिक संधि हुई। डबलिन पर हवाई आक्रमण हुआ जिसमें २३ आदमी मरे। क्रीट की शोचनीय स्थिति हो गई। मित्र सेना समस्त शक्ति के साथ लड़ी।

२ जून—क्रीट से १५ हज़ार ब्रिटिश सेना हटा कर मिश्र पहुँचाई गई। इराक के युद्ध का अंत हुआ।

३ जून—सीरा में २०० जर्मन विमान पहुँचे। केरो से सीरिया का मार्ग काट दिया गया। मानचिस्टर नगर पर जर्मन विमानों ने बम वर्षा करके बड़ी हानि की। ब्रेनर घाट (दर्रे) पर हिटलर मुसोलनी सम्मेलन हुआ और नये साम्राज्य के स्थापना की बातचीत हुई।

४ जून—डाकर, अल्जियर्स और वीरट के विची बन्दरगाह जर्मनी को दिये गये। बर्लिन पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। एक नाज़ी जहाज डुबाया गया। सीरिया की जटिल समस्या उत्पन्न हो गई। पैलेस्टाइन सीमा पर ब्रिटिश सेना एकत्रित की गई।

५ जून—विची सरकार ने सीरिया की रक्षा की तयारी किया और जनरल वेगांड को सेनापति बनाया गया। मसूल पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया। जर्मनी के भूतपूर्व सम्राट की मृत्यु हुई।

६ जून—अमरीका ने विची सरकार को जर्मनी को सैनिक सहायता प्रदान करने के लिये चेतावनी दी। सिकन्दरिया पर भीषण हवाई आक्रमण हुआ जिससे एक सौ से अधिक आदमी मरे। ब्रिटिश विमानों ने बेङ्गाजी पर आक्रमण किया। दो शत्रु जहाज डुबाये गये।

७ जून—दमिश्क के हवाई बन्दरगाह पर जर्मन अधिकार हो गया और समस्त सीरिया पर जर्मन प्रभुत्व हो गया। फ्रान्स के तटीय बन्दरगाहों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। डोवर तट पर दोनों ओर से गोलाबारी हुई। विदेशी जहाज़ों को छीनने के लिये प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट ने आज्ञा दिया। स्वतंत्र फ्रान्सीसी सेना ने सीरिया पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटिश सेना ने सहायता किया। जनरल कैट्राक्स ने सीरिया और लेबानोन को स्वतंत्रता का बचन दिया। हालैंड तट के समीप समुद्री युद्ध हुआ। दो शत्रु जहाज ब्रिटिश विमानों द्वारा जला दिये गये।

८ जून—सीरिया पर तीन ओर से आक्रमण किया गया। मित्र सेना बेरूत, अलप्पो और दमिश्क की ओर बढ़ने लगी। ब्रिटिश लड़ाका जहाजों ने बेरूत के समीप सेना उतारी। सिकन्दरिया पर समस्त रात नाजी विमानों का हमला हुआ। ५४७ आदमी मरे और बहुत से घायल हुये।

९ जून—मित्र सेना सीरिया में ४० मील भीतर घुसी। टाएर और डेरा नामक स्थानों पर मित्र सेना ने अधिकार किया। विची सरकार ने ब्रिटिश तथा अमरीकन सरकार को सीरिया पर आक्रमण होने के लिये विरोधी पत्र लिखा।

१० जून—जर्मन पनडुब्बे जहाज ने अमरीकन जहाज डुबाया। क्रीट से सेना हटाते हुये तीन ब्रिटिश जहाज डूबे। ब्रिटिश सेना दमिश्क से १० मील दूरी पर पहुँच गई। अलप्पो की ओर मित्र सेना बढ़ रही है। समस्त यूनान पर इटली का अधिकार हुआ।

११ जून—ब्रेस्ट पर ब्रिटिश हवाई हमला हुआ। डोवर में नाजी टैंकर जहाज में ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब द्वारा आग लगा दी।

१२ जून—सीरिया में मित्र सेना ५० मील भीतर की ओर बढ़ी। फ्रांसीसी जल सेना ने पूर्वी रूमसागर की ओर प्रस्थान किया।

१३ जून—उत्तरी सागर में अलप्पो की ओर मित्र सेना बढ़ने लगी। ब्रिटिश विमानों ने आक्रमणकारी जर्मन तटीय नगरों पर हवाई हमला किया।

१४ जून—सीरिया में सभी स्थानों पर मित्र सेना की विजय हुई। पामीरा की ओर मित्र सेना बढ़ी। नार्वे के तट के समीप ब्रिटिश विमानों ने एक पाकेट बैटिल शिप (जहाज) पर हवाई आक्रमण किया। रुह प्रान्त पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण हुआ। जर्मन विमानों ने जिब्राल्टर बन्दरगाह पर हवाई आक्रमण किया।

१५ जून—रूस पर हिटलर ज़ोर डाला कि वह युद्ध में उतरे। सोवियट सीमा पर १२० जर्मन सैनिक डिवीजन लगाये गये। रूमसागर में ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज़ ने इटली के दस जहाज़ डुबा दिये। मित्र सेना सीदन के पार पहुँच गई।

१६ जून—अमरीका के जर्मन कौंसलेट बन्द किये गये। ब्रिटिश चैनल के बन्दरगाहों पर हवाई आक्रमण हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ११ जर्मन विमान गिराये गये। कपूज़ो पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार किया। मित्र सेना सीदन के आगे बढ़ी।

१८ जून—ब्रिटिश सेना ने लीबिया में प्रवेश किया। सीरिया में फ्रान्सीसी और मित्र सेना में भी युद्ध हुआ।

अँकारा में जर्मनी और टर्की के बीच आर्थिक संधि हुई। फिनलैंड में नाज़ी सेना पहुँची।

१९ जून—सोलम प्रान्त से ब्रिटिश सेना हटी। कुछ इटली के जहाज़ डुबाये गये। दमिश्क पर ब्रिटिश सेना ने हमला किया।

२० जून—दमिश्क के बाहरी भाग पर मित्र सेना ने अधिकार कर लिया। सोलम प्रान्त जर्मन हाथों में है। २३ जापानी जहाज़ों ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। अमरीका कौंसलेट जर्मनी और इटली में बन्द किये गये।

२१ जून—रूज़वेल्ट ने राबिन मूर जहाज के डुबाने पर जर्मनी का घोर विरोध किया। पूर्वी योरुप में जर्मन सेना का जमघट हुआ। रूमानिया में जर्मन सेना बढ़ी।

२२ जून—जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया। हिटलर ने आक्रमण की घोषणा किया। १८०० मील लम्बी सीमा पर आक्रमण हुआ। फिनिश और रूमानियन लोग जर्मनी के सहायक हैं। दमिश्क में ब्रिटिश सेना का अधिकार हुआ।

२३ जून—रूसी पोलैण्ड में जर्मन सेना बढ़ी। तीन गाँवों पर अधिकार किया। चर्चिल ने रूस को सहायता देने के लिये बचन दिया।

२४ जून—रूसी पोलैंड के गांवों पर जर्मन सेना ने अधिकार किया। १२७ जर्मन विमान गिराये गये। लिथ-वानिया रूस से अलग हो गया।

२५ जून—सोवियट हवाई सेना ने कान्स्टेञ्जा, वार्सा, लबलिन और डञ्जिग नगर पर आक्रमण किया। समस्त सीमा पर युद्ध हुआ। जर्मन पैराच्यूट सेना युद्ध लाइन पर उतारी गई। बृटेन ने नाज़ी लोगों को परास्त करने के हेतु रूस के साथ होकर लड़ना स्वीकार किया और ब्रिटिश सैनिक तथा आर्थिक राजदूत मास्को गये। फिनलैंड भी युद्ध क्षेत्र में उतरा। हेल्सिंकी पर बम्ब वर्षा की गई।

२६ जून—आठ स्थानों में जर्मन सेना ने रूसी सेना की लाइन को तोड़ दिया। विलना प्रान्त में जर्मन सेना रूसी लाइन तोड़ कर घुस गई। लेनिनग्राड पर बम्ब वर्षा करके आग लगा दी गई। जर्मनी तथा फ्रान्स के नगरों पर ब्रिटिश वायुयानों ने बम्ब वर्षा किया। रूस में टैंकों का भीषण युद्ध हुआ। नाज़ी सेना ने लवाव और रीगा पर अधिकार कर लिया।

२७ जून—उत्तरी सीमा से रूसी सेना हटाई गई। मिन्स्क की ओर नाज़ी टैंक सेना का आक्रमण हुआ। प्रथ नदी को नाज़ी सेना नहीं पार कर सकी। हँगरी ने रूस के साथ युद्ध छेड़ दिया।

सीरिया से पामीरा नगर की ओर ब्रिटिश सेना बढ़ी। इटली के दक्षिण की ओर शत्रु जहाज़ों पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण करके २० हज़ार टन के व्यापारिक जहाज़ डुबा दिये।

दमिश्क पर नाज़ी हवाई आक्रमण से ७० मरे। २९ घायल हुये और १०० से ऊपर घर नष्ट हुये।

२८ जून—मित्र सेना दमिश्क के उत्तर की ओर बढ़ी नेबरेक पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार किया। अबीसीनिया में जिम्मा के उत्तर पश्चिम ब्रिटिश सेना बढ़ी।

२९ जून—मिन्स्क प्रान्त में टैंकों का भीषण संग्राम हुआ जिसमें जर्मन टैंक पीछे हटा दिये गये। लवाव से ८५ मील उत्तर पश्चिम लक स्थान पर और मिन्स्क से २५० मील दक्षिण की ओर घोर संग्राम हुआ। वियालस्टोक में भीषण युद्ध हुआ।

३० जून—पामीरा को ब्रिटिश सेना ने घेरा डाल दिया। क्रीट पर ब्रिटिश विमानों ने भीषण हवाई हमला किया। हैम्बर्ग और ब्रेमेन के डाकों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा करके आग लगा दी। विची सरकार ने रूस से अपना सम्बन्ध तोड़ दिया।

१ जुलाई—उत्तरी रूस में जर्मन सेना की विजय हुई। रूसी मैदान में घोर युद्ध हुआ। रूसी लोगों ने प्रतिकूलता आरम्भ किया।

२ जुलाई—रूस के तीन प्रान्तों में युद्ध हुआ। मास्को पर हवाई आक्रमण किया गया। अबीसीनिया में दो शत्रु जनरलों ने हथियार रख दिये।

३ जुलाई—जर्मन सेना ने मुर मिन्स्क पर अधिकार कर लिया। जर्मन सेना मास्को से २५० मील की दूरी पर पहुँची। जर्मन सेना ने बियालिस्टाक के पूर्व एक लाख रूसी सेना को पकड़ा और बहुत सी युद्ध सामग्री उनके हाथ लगी। चीन ने धुरी राष्ट्रों से अपना सम्बन्ध तोड़ दिया।

४ जुलाई—जर्मन सेना ने नया आक्रमण आरम्भ किया। द्वीना नदी को पार करके जर्मन सेना कीव की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ी। रूसी लोग मज़बूती के साथ सामना कर रहे थे। पामीरा नगर पर मित्र सेना को १३ दिन घेरे के बाद अधिकार हुआ। उत्तरी जर्मनी में ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा और ११ शत्रु विमान नष्ट किये।

अलान्द द्वीप पर फिनिश सेना ने अधिकार कर लिया।

५ जुलाई—उत्तरी रूसी सेना में युद्ध हुआ। शत्रु सेना लैटविया की सीमा पर पहुँची। लेपेल प्रान्त में रूसी सेना पीछे हटी। नाज़ी सेना यूक्रेन की ओर बढ़ी।

डाला सिदामो में इटली की अबीसीनियन सेना ने हथियार रख दिये। एक आस्ट्रेलियन डिस्टाएर डुबाया गया।

६ जुलाई—लैटविया की सीमा पर नाज़ी सेना पीछे हटाई गई। स्टोनिया की राजधानी तल्लिन पर जर्मन अधिकार हो गया। नीपर नदी पर जर्मन सेना पहुंच गई। हंग्री की सेना ने कोलामी, स्टानिस्लाक नगरों पर अधिकार किया।

७ जुलाई—लेनिनग्राड पर आक्रमणकारी जर्मन सेना पीछे हटा दी गई। रूसी सेना ने प्रतिकूल धावा मारा। ब्रिटिश विमानों ने जर्मन कारखानों पर धावा मारा और भीषण हानि पहुँचाई।

८ जुलाई—स्टैलिन लाइन पर नाज़ी सेना पीछे हटा दी गई। समस्त नाज़ी सेना की हार हुई। रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। रीगा की खाड़ी में रूसियों ने दो नाज़ी विध्वंस कारी जहाज़ों और एक यूबोट को नष्ट कर दिया। ब्रिटिश विमानों ने शत्रु पथ रक्षक सेना पर धावा मार कर हानि पहुँचाई।

९ जुलाई—बेसारबिया में नाज़ी सेना पीछे हटाई गई। समस्त सीमा पर युद्ध हुआ। लिले और बिलियम्स हेविन पर ब्रिटिश हवाई हमला हुआ।

१० जुलाई—लेपेल पर सोवियट सेना ने प्रतिकूल धावा मार कर जर्मन सेना को पीछे हटा दिया। फिन तथा हंगेरियन सेना आगे बढ़ी।

११ जुलाई—नाज़ी सेना का आक्रमण रोक दिया गया। बियालिस्टाक और मिन्स्क प्रान्त में जर्मन सेना ने ३,२३,००० रूसी सैनिक पकड़े और बहुत ज्यादा युद्ध सामग्री उनके हाथ लगी।

१२ जुलाई—अस्सी लाख रूसी सेना ने प्रस्थान किया। रूसी लोगों के अनुसार १० लाख नाज़ी सेना मारी गई। जर्मन बास फोरस पर अधिकार करने की तयारी में था। विची सरकार ने क्षणिक संधि शर्तें नाज़ी प्रभुत्व के कारण अस्वीकार कर दीं।

१३ जुलाई—जर्मन पंजेर सेना पीपस झील के पूर्व लेनिनग्राड की ओर बढ़ने लगी।

प्रीपेट दलदल के समीप जर्मन सेना ने रूसी सैनिक लाइन तोड़ दिया। नीस्टर के पूर्व जर्मन सेना कीव नगर के सामने पहुँच गई। दक्षिणी पूर्वी जर्मन तथा रूमानी सेना ने नीस्टर नदी के समीप रूसी सेना को हराया। रूस और इँगलैंड के बीच सहायता देने का समझौता हुआ।

१४—जुलाई—दो नगरों पर रूसी सेना ने फिर अधिकार कर लिया। १३१ नाज़ी विमान नष्ट किये गये। सीरिया में क्षणिक संधि हो गई। रूसी लोगों ने १०० नाज़ी टैंक नष्ट किये। दो जर्मन विध्वंस कारी जहाज़ डुबाये गये। फिन सेना आगे बढ़ी। शत्रु डाकों पर ब्रिटिश विमानों का हमला हुआ। शत्रु विमानों ने सिकन्दरिया पर हमला किया।

१५ जुलाई—कामन्स सभा में चर्चिल ने बतलाया। कि रूसी ब्रिटिश लोगों के साथी हैं।

१६ जुलाई—मध्यवर्ती रूस में भीषण युद्ध हुआ दोनों ओर बड़ी हानि हुई। बुखारेस्ट पर रूसी विमानों ने हवाई आक्रमण किया।

१७ जुलाई—नाज़ी टैंक सेना पीछे हटाई गई। लाल बम्ब वर्षक विमानों ने नाज़ी सेना पर आक्रमण किया। जापानी मन्त्री मण्डल ने त्याग पत्र दिया।

१८ जुलाई—जर्मन सेना स्मोलिन्स्क पर पुन: अधिकार कर लिया। मास्को की ओर जर्मन सेना बढ़ी। लेनिन ग्राड को नाज़ी सेना ने खतरे में डाल दिया। भूमध्य सागर में ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज़ ने शत्रु पथ-रक्षक सेना के जहाजों को डुबो दिया।

१९ जुलाई—जर्मन नगरों पर ब्रिटिश हवाई आक्रमण हुआ।

२० जुलाई—बाल्टिक सागर में युद्ध हुआ जिसमें ११ नाज़ी जहाज डूब गये। नोवोग्राड और ओलीन्स्क नगरों पर जर्मन अधिकार हुआ।

२१ जुलाई—जर्मन सेना के हाथों से रक्षा करने के लिये रूसी लोगों ने अपने नगरों को जला देने की नीति आरम्भ किया। लेनिन ग्राड तथा रूसी जलसेना खतरे में थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ जुलाई—स्मोलेंस्क प्रान्त में रूसियों तथा जर्मनों के मध्य भीषण युद्ध हुआ। लैनिनग्राड और लाल जहाज़ी बेड़ा खतरे में था। नीस्टर नदी के पूर्व घोर संग्राम हुआ।

आर० ए० एफ० के ब्रिटिश वायुयानों ने जर्मनी के हवाई अड्डों पर धावा मारा।

२३ जुलाई—मास्को पर हवाई आक्रमण हुआ। कीव के ८० मील पश्चिम युद्ध हो रहा था। उत्तर की ओर से लेनिनग्राड पर चढ़ाई हो रही थी। नाज़ी लाइन के पीछे रूसी पैराचूट सेना उतारी गई।

२४ जुलाई—जापानी जल सेना ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। विची सरकार ने जापानी शर्तों को स्वीकार कर लिया। इन्डोचीन में जापानी हवाई अड्डे बनेंगे। नाज़ी सेना यूक्रेन प्रान्त में बढ़ी। स्मोलेंस्क प्रदेश की ओर बढ़ने से जर्मन सेना रोकी गई। बाल्टिक सागर में रूसी सेना ने जर्मन पथ रक्षक जल सेना पर बम्ब गिराये और १० जहाज़ डुबा दिये। मास्को पर तीसरा जर्मन हवाई आक्रमण हुआ नागरिकों के घरों में आग लगी और बहुत से नागरिक स्त्री-पुरुष मरे तथा घायल हुये।

२८ जुलाई—जापान ने थाई देश के सामने अपनी शर्तें पेश कीं। कम्बोडिया में जापानी सेना उतरी। कोरिया और मंचूरिया में जापानी सेना एकत्रित हुई।

युद्ध में रूस सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। १०४ जर्मन विमान गिराये गये।

२९ जुलाई—इँडोचीन में जापानी सेना ने ८ हवाई अड्डों पर अधिकार किया। जापान इण्डोचीन की नवीन संधि हुई। रूसी युद्ध में रूसी सेना ने डट कर जर्मन सेना का सामना किया। स्मोलिन्स्क का युद्ध अन्त होने का था। लन्दन पर शत्रु विमानों ने एक मास के पश्चात् पुनः रात को आक्रमण किया।

३० जुलाई—स्मोलिन्स्क के समीप नाज़ी तथा रूसी सेना में घोर संग्राम हुआ। ७४ जर्मन विमान गिराये गये। नाज़ी सेना कीव पर एकत्रित होने लगी।

कमरान्द की खाड़ी पर जापान ने अधिकार कर लिया दक्षिणी इन्डोचीन में जापानी सेना उतारी।

३१ जुलाई—मास्को से नाज़ी आक्रमण कारी विमान भगाये गये। नार्वे के एक बन्दरगाह पर ब्रिटिश तथा रूसी विमानों ने आक्रमण किया। बाल्टिक सागर में नाज़ी समुद्री सेना तितर वितर हो गई उस पर रूसी टारपीडो बोट ने धावा मारा था।

३ अगस्त—दो जर्मन डिवीज़नों को रूसी सेना ने नष्ट किया और ३०० नाज़ी टैंक बर्बाद किये। बाल्टिक सागर में जर्मन जहाज़ों पर रूसी विमानों ने धावा मारा।

५ अगस्त—कीव की ओर नाज़ी सेना का बढ़ना रोक दिया गया। स्मोलिन्स्क के दक्षिण पूर्व जर्मन सेना बढ़ी। खोलम पर जर्मन अधिकार हुआ।

सारडीनिया के हवाई अड्डों तथा बन्दरगाहों पर ब्रिटिश विमानों ने धावा मारा। स्वेज़ नहर प्रान्त पर नाज़ी हवाई हमला हुआ जिससे ६० व्यक्ति मर गये।

६ अगस्त—ब्रिटिश वायुयानों ने पश्चिमी जर्मन नगरों पर तथा सोवियट बिमानों ने बर्लिन पर हवाई आक्रमण किये। यूक्रेन में जर्मन सेना को सफलता प्राप्त हुई। कीव और ओडेसा के मध्य रेलवे लाइन काट दी गई। जर्मन सेना ओडेसा की ओर बढ़ने लगी। जर्मन समाचार के अनुसार यूक्रेन में एक लाख ३० हज़ार रूसी सैनिक पकड़े गये, २ लाख मारे गये और ३१७ रूसी टैंक जर्मन सेना के हाथ लगे।

थाई लैंड ने आक्रमण होने पर युद्ध करने का निश्चय किया। मंचूको सीमा पर जापानी सेना एकत्रित की गई।

१० अगस्त—मास्को पर जर्मन हवाई आक्रमण हुआ और ८ नाज़ी विमान गिराये गये। यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ। कोरोस्टेन नगर पर जर्मन अधिकार हो गया और सोवियट वायुयानों ने जर्मन हवाई अड्डों पर बम्ब बर्षा किया।

११ अगस्त—जर्मन सेना कालासागर के ओडेसा तथा निकोलीन बन्दरगाहों पर पहुँचने का भरसक प्रयत्न किया। उत्तर की ओर फिनलैंड की सेना ने कई स्थानों पर रूसी सैनिक लाइन को तोड़ दिया। रूसी सेना ने जर्मन टैंक सेना को नष्ट किया। मास्को पर जर्मन हवाई आक्रमण हुआ जिससे ५ जर्मन वायुयान नष्ट हुये।

१४ अगस्त—उत्तर की ओर से रूसी सेना हटाई गई। सोलट्सी के दक्षिण पूर्व युद्ध हो रहा है। ओडेसा की ओर जर्मन सेना बढ़ रही थी।

१५ अगस्त—रूसी सेना ने यूक्रेन के किरोवोग्राड, पेरवोमेस्क आदि नगरों को खाली कर दिया। बुडनी रूसी प्रधान सेनापति ने कोरोसेन वाले प्रदेश की रक्षा के लिये नई रक्षक लाइन बनाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्टर चर्चिल और प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट ने प्रस्ताव किया कि मास्को में स्टैलिन से संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन के उच्च पदाधिकारी दूत बात चीत करें।

१६ अगस्त—स्टैलिन ने मास्को में तृतीय शक्ति सभा का होना स्वीकार किया। इंडोचीन में एक लाख के समीप जापानी सेना पहुंची। रूम सागर में दो जर्मन जहाज डुबाये गये।

१७ अगस्त—यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ। रूसी सेना ने नये स्थानों पर अड्डा जमाया। नाज़ी सेना ने कारखाने वाले प्रदेशों पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया। समस्त सीमा पर घोर युद्ध हुआ। ऐंग्लो-सोवियट संधि हुई।

१८ अगस्त—निकोलीव और क्रोओइरोग नगर पर जर्मन सेना ने अधिकार कर लिया। सोवियट तथा ब्रिटिश सरकार ने ईरान को चेतावनी दिया। जर्मन मन्त्री ने भी ईरान को चेतावनी दिया कि यदि जर्मन नागरिक ईरान से निकाले जावेंगे तो जर्मनी ईरान के साथ अपने सम्बंध तोड़ देगा। सिसली पर हवाई आक्रमण हुआ।

जर्मन सेना ने लैनिनग्राड से ७० मील पश्चिम की ओर किङ्गीसेप नगर पर अधिकार जमा लिया। रूसी सेना नीपर नदी पर थी और वह प्रतिकूल आक्रमण कर रही थी।

१६ अगस्त—यूक्रेन के दक्षिणी पश्चिमी भाग पर जर्मन अधिकार हो गया। बुडनी की सेना ने नीपर नदी पार किया। यूक्रेन में ६० हज़ार जर्मन सेना, ८४ टैंक, ३५ हज़ार टन का बैटिल शिप जहाज़, १० हज़ार टन का क्रूशियर जहाज़, ४ विध्वंसकारी जहाज़ और २ सबमरीन जर्मन सेना के हाथ लगे।

ब्रिटिश विमानों ने फ्रान्स और जर्मनी के नगरों पर हवाई आक्रमण किया और रूम सागर में कई जर्मन जहाज़ डुबाये।

२० अगस्त—नीपर नदी पर घोर संग्राम हो रहा था। नीपर नदी के कारण जर्मन सेना को आगे की ओर बढ़ने में कठिनाई हो रही थी। गौमल स्थान पर जर्मन लोगों को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। मार्शल और शिलोव उत्तरी जर्मन सेना के प्रधान सेनापति ने लैनिनग्राड प्रान्त के नागरिकों से लेनिनग्राड की रक्षा की अपील की।

२१ अगस्त—नीपर नदी पर जर्मन सेना रोक दी गई गोमेल में नाज़ी सेना को विजय प्राप्त हुई। लेनिनग्राड पर तीन ओर से आक्रमण हुआ। १० लाख सेना नगर की रक्षा के लिये लगाई गई। रूसी विमानों ने बर्लिन पर धावा किया।

२२ अगस्त—हैलीफाक्स इँगलैंड लौटे। ईरान ने संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। ब्रिटिश चैनल पर दो जहाज़ गिराये गये।

२३ अगस्त—लेनिनग्राड पर आक्रमण करने वाले बम्ब वर्षक विमान भगा दिये गये। ओडेसा के समीप घोर संग्राम हुआ। सोवियट सेना ने नाज़ी समुद्री बेड़े पर धावा मारा, दो जहाज़ों को डुबा दिया, एक को जला दिया। नौ गांवों पर रूसी सेना ने पुनः अधिकार कर लिया। ईरान ने आक्रमण का सामना करने की तयारीकिया।

२४ अगस्त—नीपर नदी का संग्राम आरम्भ हुआ मध्यवर्ती भाग में प्रतिकूल आक्रमण नाज़ी सेना पर हुये। ईरान में रूस और ब्रिटिश सेना ने मिल कर कार्य आरम्भ किया।

२५ अगस्त—रूसी लोगों ने नोवोग्राड खाली कर दिया। नाज़ी लोग नदी नहीं पार कर सके। स्पैनिश तट पर ७ ब्रिटिश जहाज़ डुबाये गये। वर्षा के कारण जर्मन सेना का आगे बढ़ने में रुकावट हो रही है। सोवियट और ब्रिटिश सेना आगे बढ़ रही हैं।

२६ अगस्त—ईरान पर दो ओर से आक्रमण हुआ। एक ओर से ब्रिटिश सेना और दूसरी ओर से रूसी सेना बढ़ी। ईरान की सेना ने बढ़ कर सामना किया।

२७ अगस्त—ईरान के बादशाह ने संधि करने के लिये और जर्मन लोगों को निकालने के लिये कहा। ब्रिटिश तथा रूसी दूतों से प्रस्ताव किया गया।

लेनिन ग्राड के समीप नाज़ी सेना रोक दी गई। मुख्य रेलवे जंक्शनों पर नाज़ी अधिकार हो गया। रूसी लोगों ने अपने सबसे बड़े बांध को जला दिया।

२८ अगस्त—ईरान के युद्ध का अन्त हुआ और नई सरकार बनाई गई। मित्र सेना शान्ति पूर्वक आगे बढ़ी। तेहरान में जर्मन लोगों ने अपने कागज़ात जला दिये।

२६ अगस्त—नीपर ओपेटरोस्क से रूसी सेना हटा ली गई। यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ। ईरान के युद्ध सम्बन्धी अड्डों पर मित्र सेना का अधिकार हो गया। तेहरान स्वतंत्र रक्खा गया। लेनिनग्राड मास्को के मार्ग काट दिये गये। कई स्थानों पर रेलवे को जर्मन सेना ने पार किया। टैलिन, बालिस्की और नाइगर्ग पर जर्मन अधिकार हो गया। नीपर नदी पर रूसी सेना ने प्रतिकूल धावा मारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसी सीमा पर हिटलर मुसोलनी सम्मेलन हुआ।

३० अगस्त—सोवियट सेना ने ईरान में शेद, पहले वी मेहराबेद पर अधिकार कर लिया।

१ सितम्बर—ब्रिटिश विमानों ने ब्रेमेन (जर्मन) पर बम्ब वर्षा किया धुरीराष्ट्रों की सेना टर्की सीमा पर काला सागर में प्रवेश करने के लिये एकत्रित हुई। ईरान में ब्रिटिश तथा रूसी सेना एक दूसरे से मिली। रूसी सेना ने ईरान के नगरों पर अधिकार किया दक्षिणी ईरान में क्षणिक संधि के पश्चात् अहवाज़ में भारतीय सेनाओं ने प्रवेश किया।

यूक्रेन के युद्ध में नाज़ी सेना नीपर नदी नहीं पार कर सकी। जर्मनी पर सोवियट हवाई आक्रमण हुये।

२ सितम्बर—तुर्की सीमा पर धुरी राष्ट्रों की २० डिवीज़न सेना एकत्रित हो गई। टोकियो सेनापति के प्रधान ने घोषणा किया कि जापान को अमरीका, ब्रिटेन, चीन और हालैंड के पूर्वी द्वीप समूहों के घेरे का तोड़ देना चाहिये। जर्मन सरकार ने तुर्की सरकार से प्रार्थना किया कि वह तेहरान के जर्मन लोगों को अपने यहां स्थान दे दे।

लेनिनग्राड को बाहरी रक्षक लाइन को जर्मन सेना ने तोड़ दिया। नाज़ी सेना ने लेनिनग्राड का घेरा डाला रूसी सेना ने टैलिन्न नगर को खाली कर दिया।

३ सितम्बर—जापान में नाज़ी-प्रतिकूल प्रचार के कारण जापानी मन्त्री मण्डल में परिवर्तन होने की सम्भावना हुई। जर्मनी ने फ्रान्स को संधि के प्रस्ताव दिये। डंकिर्क के समीप ब्रिटिश विमानों ने जर्मन सामान ले जाने वाले जहाज़ों पर बम्ब वर्षा की।

जापान के प्रधान मन्त्री ने घोषणा की कि मलय द्वीप में अधिक भारतीय सेना पहुँचने के कारण झगड़ा उत्पन्न होने की सम्भावना है। थाई-देश के प्रधान मन्त्री वहां की सेना का प्रधान अफसर बना। सर्विया में जर्मनी ने नई सरकार का निर्माण किया।

४ सितम्बर—मास्को, कीव, स्मोलिंस्क और लेनिनग्राड में रूसी सेना के अधिक एकत्रित हो जाने से जर्मन सेना का आगे बढ़ना रुक गया। लेनिनग्राड अपनी तयारी के कारण लम्बे युद्ध का सामना करने के लिये तयार हुआ।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने अपने प्रचारक मास्को के लिये तयार किये। हरीमन उनका नेता बनाया गया। ब्रिटिश बम्ब वर्षकों ने बर्लिन पर बम्ब वर्षा किया।

५ सि०—लेनिनग्राड के १२ मील पश्चिम जर्मन सेना पहुँच गई। मध्यवर्ती भाग में रूसी सेना ने जर्मन सेना के प्रतिकूल धावा किया। नीपर लाइन की रक्षा रूसी सेना ने बहादुरी से किया।

आइसलैण्ड के मार्ग में संयुक्तराष्ट्र के विध्वंसकारक जहाज़ पर नाज़ी पनडुब्बे जहाज ने आक्रमण किया परन्तु टारपीडो जहाज पर नहीं लगा। लेनिनग्राड में रूसी सेना की स्थिति बड़ी शोचनीय हो गई परन्तु लेनिनग्राड और ओडेसा में नाज़ी सेना आगे बढ़ने से रोक दी गई। मध्यवर्ती भाग से रूसी सेना प्रतिकूल आक्रमण करती आगे बढ़ी। इटली के तट के समीप ब्रिटिश पनडुब्बे जहाज ने इटली के लाइनर जहाज को डुबा दिया।

६ सि०—ब्रिटेन ने सभी प्रकार रूस को सहायता पहुँचाने की घोषणा की। फिनलैण्ड ने घोषणा की कि वह अपनी सीमा के आगे युद्ध करने के लिये न गढ़ेगा। त्रिपोली के समीप ब्रिटिश सबमरीन ने एक दूसरा इटैलियन जहाज डुबा दिया। यह जहाज ११६९८ टन का था।

७ सि०—जर्मन सेना नीपर नदी को पार करने में असफल रही। लेनिनग्राड नगर की रक्षा में ब्रिटिश विमानों ने भाग लिया। रूसी सेना ने कुछ नगरों पर दोबारा अधिकार कर लिया। जर्मनी ने अमरीका के ग्रियर नामक जहाज पर आक्रमण होने का उत्तर दिया और कहा कि ग्रियर ने जर्मन सबमरीन पर आक्रमण किया इसलिये जर्मन सबमरीन ने अपनी रक्षा हेतु उस पर आक्रमण किया।

८ सि०—लेनिनग्राड क्षेत्र से जर्मन पीछे हटा दिये गये। गोमेल प्रान्त में भी जर्मन सेना को पीछे हटना पड़ा। डच तट पर ब्रिटिश विमानों ने हवाई आक्रमण करके जर्मन जहाज डुबा दिया। जर्मन के राइन प्रान्त के रबड़ के कारखानों पर ब्रिटिश बम्बवर्षकों ने बम्ब गिराये।

९ सि०—स्पिटबर्जेन पर ब्रिटिश जलसेना ने अचानक अधिकार कर लिया। स्मोलिंस्क के समीप नाजी सेना तितर बितर कर दी गई। लेनिनग्राड के लिये घोर युद्ध हुआ। नार्वे तट पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब गिराये।

ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने चर्चिल रुज़वेल्ट सम्मेलन के सम्बन्ध में भाषण दिया और बतलाया कि अटलांटिक सागर का चार्टर भारत पर लागू नहीं हो सकता।

१० सितम्बर—आइसलैण्ड जाते समय दूसरा अमरीकन भोजन ले जाने वाला जहाज़ डुबोया गया। स्मोलिंस्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समीप रूसी तथा जर्मन टैंक सेना में भीषण युद्ध हुआ। एलमा नगर पर रूसी सेना ने अधिकार कर लिया। कोरिंथ नहर पर ब्रिटिश विमानों ने हवाई आक्रमण किया।

११ सि०—सोवियट सेना ने तीन ओर से आक्रमण किया। पांच दिन तक लगातार टैंक युद्ध हुआ। नीपर नदी पार करने में ४ हज़ार जर्मन सेना डूब गई। लेनिनग्राड में बम्ब वर्षा के कारण समस्त नगर में आग लग गई। तिमोशेनको की सेना आगे बढ़ी।

तटस्थता नियम को भङ्ग करने के लिये रूज़वेल्ट ने प्रधान अफसरों से बात चीत किया। जर्मनो ने अमरीका को उत्तर दिया कि ब्रिटेन सामान ले जाने वाले अमरीका जहाज़ों का मार्ग खतरे से खाली नहीं है।

१२ सि०—प्रेसीडेण्ट रूज़वेल्ट ने चेतावनी दिया कि धुरी राष्ट्र के जहाज़ अमरीका के रक्षक कटिबंध में प्रवेश नहीं कर सकते। रूस में धुर उत्तर की ओर नाज़ी सेना आगे बढ़ी। लेनिनग्राड का युद्ध पहले की भांति जारी रहा। रूसी सेना ने लोवर नीपर नदी को पुनः पार किया। और जर्मन सेना को पीछे हटाया, मध्यवर्ती भाग में तिमोशेनको की सेना आगे बढ़ी।

१३ सि०—आइसलैण्ड को सामान ले जाने वाला एक और अमरीकन जहाज डुबोया गया। दक्षिणी यूक्रेन में भीषण युद्ध हुआ जिससे कीव नगर के लिये नया खतरा उत्पन्न हो गया है।

ब्रिटिश वायुयानों ने रूम सागर में शत्रु पथरक्षक सेना पर आक्रमण किया और सामान से लदे हुये तीन जहाज़ डुबो दिये।

१४ सि०—रूसी तथा जर्मन सेनाओं का मुठभेड़ हुआ। रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया और गुप्त टैंकों का प्रयोग किया। ओडेसा के समीप रुमानी सेना की बड़ी हानि हुई। सोफिया के समाचार से विदित हुआ कि बल्गेरिया के मन्त्रियों ने अपनी सेना को देश की रक्षा के लिये हथियार उठाने की आज्ञा दे दी।

१५ सि०—कीव की भीषण परिस्थिति हुई नाज़ी सेना आगे बढ़ी। रूसी लोगों ने क्रेमेनचग खाली किया। मास्को में हवाई युद्ध हुआ। ओडेसा और लेनिनग्राड में पहले की भांति युद्ध जारी है।

१६ सि०—संयुक्तराष्ट्र अमरीका की जल सेना को आज्ञा दी गई कि धुरी राष्ट्र का जो भी सबमरीन जहाज़ दिखाई पड़े उसे पकड़ ले या डुबा दे। पनामा नहर में धुरी राष्ट्र का आक्रमणकारी जहाज़ दिखाई पड़ा जिसका पता लगाया जा रहा है।

ईरान के राजा ने गद्दी छोड़ी। नाज़ी सेना लोअर नीपर नदी पार किया। कीव प्रान्त में नाज़ी सेना बढ़ी। बाल्टिक सागर के द्वीपों के लिये युद्ध हुआ।

१७ सि०—जर्मन गोला वर्षाने वाली तोपों ने इंगलिश तट पर गोला वर्षाया। ईरान के नये राजा ने शपत उठाई रूसी और ब्रिटिश अफ़सर तेहरान नगर में पहुँचे। मध्य वर्ती रूस के युद्ध में रूसी सेना को विजय हुई। १०००० नाज़ी सैनिक मारे गये।

१८ सि०—ओसेल द्वीप के युद्ध में नाज़ी सेना की हार हुई। स्मोलिंस्क नगर के पश्चिम की ओर रूसी सेना ने डेरा डाला। अमरीका की जल सेना ने इङ्गलैण्ड जाने वाले सामान की रक्षा का भली भाँति प्रबन्ध किया।

१९ सि०—क्रीमिया यूक्रेन का मार्ग काट दिया गया जर्मन सेना रूस में दक्षिण की ओर बढ़ी। लेनिनग्राड के चारों ओर युद्ध हुआ। दो धुरी राष्ट्र के सुरंग उठाने वाले जहाज़ नार्वे के तट के समीप डुबा दिये गये।

२० सि०—रीगा खाड़ी के समीप नाज़ी सेना ने वर्मस और मून दो द्वीपों पर अधिकार कर लिया। कीव में भीषण युद्ध हुआ।

२१ सि०—जापान ने रूस को चेतावनी दिया। ब्रिटिश चैनेल में हवाई युद्ध हुआ। आर० ए० एफ० के विमानों ने डच तट के समीप दो पथ रक्षक शत्रु जहाज़ों पर आक्रमण किया। कीव नगर को रूसियों ने खाली कर दया।

२२ सि०—बल्गेरिया का राजा बोरिस हिटलर से मिलने गया जिससे सम्भावना है कि रूस तथा बल्गेरिया के मध्य युद्ध छिड़ जाय। मिस्र सीमा पर तीन दिन तक युद्ध होने के बाद धुरी राष्ट्रों की सेना को पराजय हुई। रूस की समस्त युद्ध सीमा पर युद्ध हुआ।

२३ सि०—रूसी सेना नीपर नदी के पूर्व की ओर हट गई। जर्मन लड़ाका विमानों ने रूसी जहाज़ी बेड़े पर आक्रमण किया। आइसलैंड के पास एक और दूसरा अमरीकन जहाज़ डुबाया गया।

जापान ने मंचूको प्रान्त में १० लाख सेना भेजा। रूस में दक्षिण की ओर जर्मन सेना रोस्टोव और कार्कोव की ओर बढ़ी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४ सि०—लेनिनग्राड के चारों ओर संग्राम हुआ। जर्मन सेना ७ मील पीछे हटा दी गई। फिनलैण्ड की सेना ने लडोगा झील के द्वीपों पर अधिकार कर लिया। कीव के युद्ध में रूस को बड़ी हानि हुई और पञ्चम लाल रूसी सेना का प्रधान सेनापति पकड़ लिया गया। साइबेरिया की ओर रूसी सेना बढ़ी।

२५ सि०—जर्मन समाचार के अनुसार पता चला कि जर्मन सेना लेनिनग्राड नगर के बाहरी भाग में प्रवेश कर गई। पश्चिमी डवीना नदी पर घोर संग्राम हुआ। नाज़ी सेना को प्रतिकूल रूसी आक्रमण के कारण पीछे हटना पड़ा। २,५०० जर्मन सैनिक मारे गये।

२६ सि०—लेनिनग्राड के चारों ओर लगातार युद्ध हुआ। नगर की प्रथम रक्षक लाइन तोड़ दी गई। मध्यवर्ती रूसी प्रान्त में नाज़ी सेना के विरुद्ध आक्रमण हुआ। नाज़ी सेना खरकोव नगर से ३५ मील की दूरी पर पहुँची।

२८ सि०—हूनान में चीनी-जापानी सेना में युद्ध हुआ जिससे जापानी सेना का आगे बढ़ना रुक गया।

२६ सि०—रूसी सेना ने १० गांवों पर अधिकार कर लिया। लेनिनग्राड पर रक्षक लाइन सुदृढ़ हुई। कई नाज़ी जहाज़ डुबाये गये। उत्तरी फ्रांस के रेलवे लाइनों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। जर्मन सेना ने क्रीमिया पर विद्रुत युद्ध आरम्भ करने की तयारी किया।

देश-दर्शन.

अब तक इस पुस्तक-माला में लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिश्र भाग १, मिश्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैंड, रूस, थाई देश (स्याम), बल्गेरिया, अल्सेस-लारेन, काश्मीर और जापान आदि अंक निकल चुके हैं। आगे भी एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होती रहेगी। पुस्तक चित्रों और नकशों से खूब सुसज्जित रहती है और निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जाती है। काग़ज, कवर छपाई-सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ है। फिर भी लगभग सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।≈) है। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) है। इस पुस्तक-माला (देश-दर्शन) के ग्राहक बन कर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने का श्रेय लीजिये। आशा है लौटती डाक से ही अपना आर्डर भजने की कृपा करेंगे।

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd. No. A-556.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol"**,

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jumna Road, Allahabad.

56.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

भूगोल विषयक हिन्दी का एकमात्र सचित्र मासिक पत्र

वार्षिक मूल्य ३)
विदेश में ५)
एक प्रति का ।=)

अक्टूबर १९४१

ANNUAL SUBSCRIPTION
In.. : Rs. 3/-
Foreign : Rs. 5/-
Single Copy: As. 5.

सम्पादकः- रामनारायण मिश्र बी० ए०

भूगोल-कार्यालय प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

हमें अत्यन्त खेद है कि कई कारणों से 'भूगोल' के प्रकाशन में देरी हो गई। आशा है पाठक गण क्षमा करेंगे।

कागज़ और छपाई का सामान इतना महँगा हो गया है कि 'भूगोल' को उसी मूल्य में प्रकाशित करना असम्भव हो गया है। साथ ही मूल्य बढ़ाने में पाठकों को जो असुविधा होगी वह भी हमें भली भांति विदित है। अतः हमने यह निश्चय किया है कि लड़ाई की अवधि तक 'भूगोल' के केवल २४ पृष्ठ रहें। आशा है पाठक और 'भूगोल' के सहायक हमारी इस योजना से सहमत होंगे और 'भूगोल' के संचालन में पूरा सहयोग प्रदान करेंगे।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१—अलास्का के मार्ग	१
२—योरुपीय दुर्भिक्ष	५
३—नवयुग में स्कैण्डिनेविया	८
४—उदबिलाव (बीवर)	१३
५—दक्षिण अफ्रीका का डर्बन बन्दरगाह	१५
६—संसार की जनसंख्या	१९
७—वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें	२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] कार्त्तिक, सं० १९९८, अक्टूबर, १९४१ ई० [अङ्क ६

अलास्का के मार्ग

पश्चिमी गोलार्द्ध की रक्षा में अलास्का एक बहुत बड़ा भाग लेगा। आधुनिक योजना के अनुसार उसे सैनिक रूप से दृढ़ बनाने में १७,५०,००,००० रुपये की आवश्यकता है। इस धन से वहां की स्थल सेना, जलसेना, वायुयान तथा सबमरीन आदि का निर्माण होगा। इस धन में से १२०१३७०० रु० लगाया जा चुका है जिसमें से ६,०२,००,००० रु० सेना में और ५,९९,३७,५०० रु० जल सेना में लगाया गया है। परन्तु जब तक अलास्का संयुक्त राष्ट्र से मार्गों द्वारा नहीं मिला दिया जाता है तब तक यह सभी तयारियां निरर्थक हैं। अलास्का के निवासियों के प्रयोग की प्रायः सभी वस्तुओं का सम्बन्ध है वहां तक अलास्का को अस्त्र शस्त्र बाहर से ही मंगाने पड़ेंगे। अभी अलास्का को सामान समुद्री मार्ग तथा पैन-अमरीकन हवाई मार्ग से ही जा सकता है।

अलास्का का उत्तरी तट जुलाई, अगस्त और सितम्बर तीन महीनों तक खुला रहता है। बरों से दक्षिण प्वाइन्ट पोप तक का तट जुलाई से कुछ पहले खुलता है और सितम्बर से कुछ बाद को बन्द होता है।

पश्चिमी तट के नोमे बन्दरगाह पर मई मास में स्टीमर जाने आरम्भ होते हैं और अंतिम स्टीमर नोमे बन्दरगाह को २५ अक्तूबर और ५ नवम्बर के बीच छोड़ देता है। क्लेरेन्स बन्दरगाह बहुत बड़ा है वहां पर संयुक्तराष्ट्र अमरीका का समस्त जहाजी बेड़ा ठहर सकता है परन्तु इस बन्दरगाह पर बहुधा तूफान आया करते हैं। यह बन्दरगाह नोमे के बाद खुलता है और उस से पहले बन्द हो जाता है। क्लेरेन्स बन्दरगाह के सिरे पर टेल्लेर नामक छोटा परन्तु बहुत सुन्दर बन्दरगाह स्थित है। इस बन्दरगाह पर छोटे जहाज ठहर सकते हैं परन्तु इसका प्रयोग बहुत कम समय तक किया जा सकता है सेंटमिकेल का बन्दरगाह और अधिक दक्षिण की ओर है और वह उसी समय तक खुला रहता है जब कि नोमे का बन्दरगाह खुला रहता है। सेंटमिकेल का बन्दरगाह यूकोन नदी के मुहाने के समीप है। यूकोन का डेल्टा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में जम जाता है।

उपरोक्त बातों से सिद्ध है कि अलास्का का उत्तरी और पश्चिमी तट साल के केवल कुछ ही महीनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक खुला रहता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिये विशेष उपायों का प्रयोग करना आवश्यक है।

सोवियट सरकार ने अपने तट पर कुछ स्थान ऐसे बना रक्खे हैं जहां बरफ की चट्टानों की चाल की देख भाल की जाती है। वायुयान इस कार्य में बड़े सहायक होते हैं। रूसी लोगों ने बरफ तोड़ने वाले विशेष जहाज निर्माण किये हैं। इन्हीं उपायों का प्रयोग अलास्का में भी किया जा सकता है। इन उपायों से शायद यूकोन के दक्षिण के बन्दरगाह प्रायः साल भर खुले रह सकेंगे।

दक्षिणी अलास्का के मुख्य बन्दरगाह स्कागवे जुनीव, कोर्डोव और सीवर्ड हैं। पनहांडले के बन्दरगाहों में किसी प्रकार का कष्ट नहीं है। अलास्का का मुख्य बन्दरगाह ऐंकारेज है। यह बन्दरगाह बरफ के कारण शीतकाल में कई महीने तक बरफ से ढका रहता है। ऐंकारेज का बन्दरगाह कुक की खाड़ी पर स्थित है जहां से संसार में सब से ऊँची लहरें उठती रहती हैं। तीव्र लहरों के कारण बरफ के टुकड़े इधर उधर फैल जाते हैं जिससे बन्दरगाह ६ महीनों तक बन्द रहता है। कुछ लोगों का कथन है कि आधुनिक साधनों के प्रयोग करने से एन्कारेज़ का बन्दरगाह वर्ष भर खुला रह सकेगा।

अलास्का की खाड़ी में सेवर्ड का बन्द गाह है। यह एन्कारेज से ८० मील दक्षिण की ओर है और अलास्का रेलवे के बनने के कारण यह शीतकाल का मुख्य बन्दरगाह बन गया है।

केनाई प्रायद्वीप के पूर्व पोर्टेज की खाड़ी को बन्दरगाह बनाया जा रहा है। अभी तो अलास्का का सब से आवश्यक बन्दरगाह एन्कारेज ही है। इसके ठीक पीछे रिचार्डसन का किला है। यह अलास्का का सब से बड़ा सैनिक स्थान है। एन्कारेज से सरकारी रेलवे लाइन उत्तर की ओर जाती है और फेअर बैङ्क में खतम हो जाती है। फेअरबैङ्क से मतनुस्का घाटी तक एक रेल की सड़क जाती है।

अलास्का के बन्दरगाहों को उसके भीतरी भाग से मिलाने के लिये सेवर्ड-फेअरबैङ्कस रेलवे लाइन है। यह ४७० मील लम्बी है। इसकी कई छोटी शाखाएँ हैं। कार्डोवा से जो रेलवे लाइन कोपर नदी के किनारे किनारे जाती थी वह १६३८ ई० में बन्द कर दी गई है परन्तु वह पुनह खोली जा सकती है। यूकोन प्रान्त की रेलवे लाइन सब से बड़ी है यह स्कागवे से ह्वाइट दर्रे से होकर ह्वाइट हार्स को जाती है। ह्वाइट हार्स से सामान तथा सवारियां नाव द्वारा यूकोन नदी हो कर डावसन और अलास्का के बेसिन को जाती हैं। अलास्का रेलवे लाइन की भांति ह्वाइट दर्रे की लाइन साल भर खुली रहती है।

अलास्का के भीतरी भाग की सब से प्रसिद्ध लाइन रिचर्डसन है। यह वल्डेज़ से फेअर बैंक्स को जाती है और ३७१ मील लम्बी है। दर्रों पर यह सड़क शीतकाल में बरफ से बन्द हो जाती है परन्तु आधुनिक उपायों के प्रयोग करने से यह साल भर चालू रह सकती है। फेअर बैंक्स से एक सड़क सर्किल को जाती है। जिसे स्टीसे मार्ग कहते हैं। बहुत सी सड़कें जंगलों में होकर जाती हैं और शीत काल में खुली रहती हैं परन्तु ग्रीष्म काल में कीचड़ होने के कारण बन्द हो जाती हैं। इसलिये अलास्का को आने जाने तथा सामान ढोने के लिये वायुयानों को ही मुख्य साधन बनाना पड़ेगा।

अलास्का में सामान तथा सवारी ढोने के लिये विमान का ही अधिक प्रयोग करना पड़ता है। १९३८ ई० में अलास्का में उतना ही सामान विमानों द्वारा ढोया गया जितना समस्त संयुक्तराष्ट्र के विमानों में ढोया गया था। अलास्का में तीन मुख्य हवाई मार्ग हैं। (१) पैन अमरीकन हवाई मार्ग यह मार्ग सीट्टले से वानकूवर को जाता है। दूसरा मार्ग वानकूवर से और तीसरा एडमोनटन से आरम्भ होता है। इन मार्गों को संगठित रूप से प्रयोग में लाने से न्यूयार्क से फेअर बैंक की यात्रा २० घंटे में समाप्त की जा सकती है दूसरे तीन घंटे की हवाई यात्रा के बाद संयुक्त राष्ट्र और रूस की सीमा तक की यात्रा।

१९३९ ई० में अलास्का में १७५ विमान हवाई लाइनों में काम कर रहे थे। अब उनकी संख्या और अधिक बढ़ गई है। यूकोन और कुस्कोक्विम अलास्का की दो बड़ी नदियाँ हैं। यूकोन नदी उत्तरी अमरीका में तीसरी बड़ी नदी है। इस नदी में इसके मुहाने से डावसन नगर तक स्टीमर चल सकते हैं। मुहाने से डावसन की दूरी ११०० मील है। डावसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्हाइट हार्स तक छोटे तथा छिपले स्टीमर चलते हैं जिसकी दूरी ३०० मील है। कुस्कोक्विम नदी में २३० मील तक जहाज चलते हैं। यह दोनों नदियां मई से अक्तूबर तक खुली रहती हैं। यह प्रस्ताव किया गया है कि यदि बेरिंग सागर के समीप कूकोन और कुस्कोक्विम को नहर द्वारा मिला देने से व्यापारिक मार्ग में बड़ी वृद्धि हो जावेगी। नहर का बनाना सरल है और व्यय भी अधिक न पड़ेगा साथ ही साथ अलास्का के भीतरी आने जाने के मार्ग में एक बड़ी वृद्धि हो जावेगी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका से अलास्का को समुद्री मार्ग होना परमावश्यक है। यूगेट साउण्ड से पन्हण्डेल के बन्दरगाहों को जाने वाले जहाज प्राकृतिक रूप से भीतरी मार्ग का ही अनुसरण करते हैं। इस मार्ग में छोटे छोटे द्वीप ब्रिटिश कोलम्बिया और अलास्का का पर्वतीय तट पड़ता है। यह बहुत ही आवश्यक यात्रा मार्ग माना जाता है। अलास्का को जाने वाले दूसरे जहाज खुले समुद्री मार्ग में होकर जाते हैं इस लिये युद्ध काल में उन पर आक्रमण होना अनिवार्य है। तटीय मार्ग होकर जाने वाले जहाज भी खतरे से खाली नहीं रह सकते क्योंकि द्वीपीय तथा पहाड़ी तट पर पनडुब्बे जहाजों के ठहरने को विशेष सुविधाएँ प्राप्त हैं।

अलास्का की जन संख्या ७० हज़ार है। शान्ति के समय में यहां के जल तथा स्थल मार्ग वहां के निवासियों के लिये काफी हैं परन्तु युद्ध काल के लिये यह मार्ग काफी नहीं हैं। यदि अमरीका को प्रशांत महासागर में पराजय होता है तो फिर अलास्का के निवासी अलास्का में क़ैद हो जावेंगे और फिर वह मूकों मर जावेंगे क्योंकि उन्हें भोजन सामग्री भी प्राप्त नहीं हो सकेगी। इन कारणों से पश्चिमी कनैडा होकर अलास्का के लिये एक नये मार्ग की बड़ी आवश्यकता है।

इस प्रस्ताविक मार्ग के लिये कई मार्गों का प्रस्ताव हुआ है जिनमें से चार ऐसे हैं जिन पर काफ़ी वादा-विवाद हुआ है वह अ, ब, स, द मार्गों के नाम से सूचित किये गये हैं। अ मार्ग के सम्बन्ध में काफी लिखा पढ़ी हुई है। यह मार्ग सीट्टले, वानकूवर, प्रिंसजार्ज, हेजेल्टोन व्हाइट हार्स और फेअर वेंक्स होकर जावेगा। सीट्टले से हेजेल्टोन तक इस मार्ग में सड़क बनी है परन्तु इस मार्ग का बहुत थोड़ा भाग सैनिक प्रयोग के योग्य है। यह मार्ग बड़ा ही सुन्दर है परन्तु पहाड़ी तथा टेढ़ा होने के कारण इस मार्ग होकर रेलवे बनाने में खर्च अधिक पड़ेगा। यह मार्ग तट के समीप पड़ेगा जिससे मार्ग के बन जाने पर यह खूब चालू रहेगा। इस मार्ग में कई एक प्रसिद्ध स्थान भी पड़ेंगे साथ ही साथ यह मार्ग समस्त साल खुला रहेगा शीत काल में भी यह बरफ से नहीं ढकेगा।

इस मार्ग का प्रधान पक्षपाती मिस्टर डोनल्ड मैक्डोनल्ड और अलास्का के अनथनीजे डाइमँड (संयुक्तराष्ट्र के कांग्रेस का सदस्य) के कथन के अनुसार इस मार्ग को तयार करने में लगभग १०८ करोड़ रुपये खर्च होंगे। यह व्यय एक लड़ाका जहाज बनाने के व्यय का केवल तिहाई है। लड़ाका जहाज को चट्टान में टक्कर खाकर टूट जाने की सम्भावना है और उसकी एक नियमित आयु भी है परन्तु मार्ग तो बहुत समय तक चलेगा इस मार्ग के विरोधियों का कहना है कि तट के समीप होने के कारण इस पर शत्रु का हवाई आक्रमण हो सकेगा और विजयी होने की दशा में वह इसे बन्द कर देगा या काट देगा।

ब मार्ग प्रिंस जार्ज तक उसी मार्ग होकर है जिससे होकर अ है परन्तु उसके बाद वह अधिक भीतरी भाग होकर जावेगा। इस सड़क को बनाने में अधिक समय लगेगा और खर्च भी अधिक पड़ेगा। अ और ब दोनों मार्गों के दक्षिणी सिरे प्रशांत महासागर पर हैं इस लिये बहुत से लोगों का कहना है कि यह मार्ग ठीक नहीं है क्योंकि कनैडा के कारखाने दक्षिण पूर्व की ओर और संयुक्तराष्ट्र के कारखाने मिसीसिपी नदी के पूर्व स्थित हैं। इस लिये सामान लादने वाली लारियों को इन मार्गों पर आने के लिये त्रिभुजाकार मार्ग की यात्रा करनी पड़ेगी। लोगों का मत है कि सड़क का आरम्भ शिकागो से होना चाहिये जिसमें विनीपेग आदि स्थान पड़ें।

स मार्ग अधिक सीधा है और अ, ब की अपेक्षा इसमें खर्च कम पड़ेगा। यह मार्ग उपजाऊ प्रदेश में होकर गुज़रता है। यह मार्ग शीत काल के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा ही सुगम होगा जब कि और दूसरे मार्ग बरफ से ढक जाते हैं। इस मार्ग का नोटीकोविन से बड़ी झीलों के पश्चिमी किनारे तक का भाग २ वर्ष पहले बना है।

द मार्ग मैकेन्जी नदी के समानान्तर कीले नदी के मुहाने तक जाता है। मैकेन्जो नदी उत्तरी अमरीका की दूसरी बड़ो नदी है। यह सड़क कई भागों में बाँट कर बनाई जा सकती है। यह सड़क लगभग प्रत्येक स्थान पर रेलवे लाइन के समानान्तर रहेगी इसलिये सड़क बनाने के लिये सामान सरलता पूर्वक पहुँच सकेगा। अल्बर्टा प्रान्त के कोष मंत्री का कहना है कि द सड़क के तयार करने में ४ या ५ करोड़ रुपया खर्च होगा। स मार्ग की भांति द मार्ग में दक्षिणी अल्बर्ट और एमसी मूरे के तेल के सोते पड़ते हैं। इसी सड़क पर कनैडा की इम्पीरियल आएल कम्पनी का कारखाना है। नार्मन के तेल सोतों से बहुत ज्यादा तेल निकाला जा सकता है। १९३८ ई० में इम्पीरियल कम्पनी ने ३७,६६७ बैरेल तेल निकाला था। नार्मन क्षेत्र के तेल से यूकान और अलास्का के भीतरी भाग के तेल की आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है।

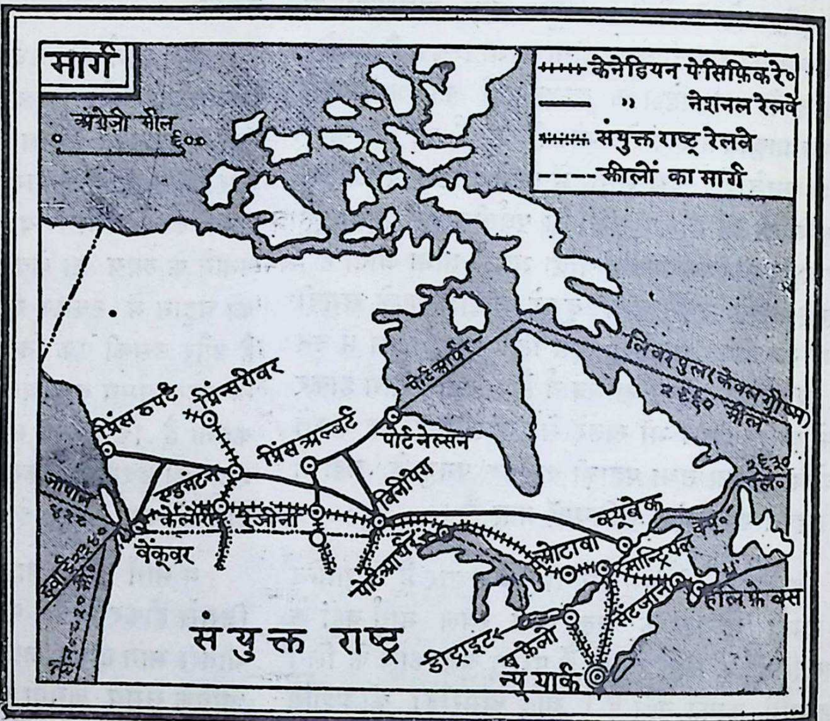

डी मार्ग बनाने में नार्मन क्षेत्र को तेल केवल सहायक ही न होगा वरन् उ के कारण सड़क सदैव चालू रहेगी। केअर बैंक्स से नार्मन के समाप तक सब ऋतुओं में काम आने वाली सड़क के तयार करने से अलास्का की रक्षा करने में बड़ी सहायता मिलेगी।

द मार्ग पर शत्रु के हवाई आक्रमण की सम्भावना बहुत कम रहेगी। शीत काल में द मार्ग में शिकागो से पीसे नदी तक (१००० मील) तक बरफ पड़ने से अवश्य ही कष्ट पहुँचने की सम्भावना है।

पैन अमरीकन हवाई कम्पनी संयुक्तराष्ट्र अमरीका और अलास्का के बीच हवाई मार्ग बनाना चाहती है। व्हाइटहार्स पैन अमरीकन मार्ग यूकोन को दक्षिणी लाइन से मिलाता है। यह वानकूवर और एडमोन टन को जाती है।

अलास्का की स्थल तथा जल सेना अपने अपने हवाई अड्डे बना रही है। जल सेना सित्का, कोडियक द्वीप समूह और डच हार्बर वाले मार्ग में पिट्रोल द्वारा विमानों को चलाने का प्रबंध किया जा रहा है। सबसे बड़ा हवाई अड्डा ऐङ्कारेज में है। संयुक्त राष्ट्र से अलास्का तक पहुँचने के लिये विमानी मार्ग बन रहे हैं। बड़े विमान अब भी संयुक्त राष्ट्र से उड़कर अलास्का पहुँचते हैं परन्तु छोटे वायुयान नहीं पहुँचते हैं इसी कारण मार्ग में स्थान पर हवाई स्टेशन बन रहे हैं जिससे मार्ग में ठहरते हुये वह अलास्का जा सकें। जब ये मार्ग पूर्ण रूप से तयार हो जावेंगे तो फिर कनैडा और संयुक्तराष्ट्र से लड़ने वाले विमान सभी ऋतुओं में अलास्का जा सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरुपीय दुर्भिक्ष

पत्रों के शीर्षक पंक्तियों द्वारा पता चलता है कि योरुप में अकाल पड़ रहा है अथवा निकट भविष्य में भोजन सामग्री के अति कमी होने की सम्भावना है।

पहले योरुप में बहुधा अकाल पड़ता था परन्तु उसके पश्चात् बर्तमान युग में योरुपीय राष्ट्रों ने ऐसा प्रबंध किया कि वहां अकाल की सम्भावना जाती रही अब वहां पर युद्ध के समय ही दुर्भिक्ष पड़ने की सम्भावना है जैसा कि गत महायुद्ध के समय हो चुका है।

भारतवर्ष, रूस और चीन आदि देशों में अब भी सदैव दुर्भिक्ष पड़ा करते हैं परन्तु योरुप में नहीं पड़ते इसका मुख्य कारण यह है कि वहां पर लोग तथा देशों की सरकारें काफी भोजन सामग्री एकत्रित रखती हैं जो समय पड़ने पर शीघ्र ही प्रजा की सेवा में उपस्थित कर दी जाती हैं। आधुनिक कृषि कला तथा नवीन कलाओं के कारण वहां की उपज बहुत बढ़ गई है फिर वहां पर ऐसे पशु पाले जाते हैं जो नाज के कमी के समय भोजन का काम देते हैं। योरुप में बचपन से ही लोगों को शिक्षा दी जाती है कि भोजन सामग्री ख़राब न की जावे नहीं तो फिर उसकी कमी हो जाने की सम्भावना है। वहां प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ भोजन सामग्री का भण्डार रखने का अभ्यस्त हो गया है। योरुप की जनसंख्या ३३ करोड़ और किसानों की संख्या १२ करोड़ है। १२ करोड़ किसान भोजन सामग्री तयार करने में ही लगे रहते हैं। सभी भोजन बचा कर रखते हैं।

योरुप के देशों में इस समय भोजन नियंत्रण की नीति चल रही है। इस नीति का अर्थ यह कदापि नहीं है कि वहां भोजन की कमी है अथवा दुर्भिक्ष पड़ गया है वरन् इसका मतलब यह है कि वह देश दुर्भिक्ष से बचने और प्रजा तथा सेना को सदैव समान रूप से भोजन पहुँचाने का प्रबंध कर रहा है।

आज योरुप के सभी राष्ट्रों ने भोजन नियंत्रण करने की नीति का अनुसरण किया है इंगलैंड को छोड़ कर योरुप के सभी देश ६ प्रति शत भोजन सामग्री (नाज, आलू और चीनी) विदेश से मंगाते हैं। वे २० प्रतिशत चर्बी और तेल बाहर से खरीदते हैं। बर्तमान युद्ध के आरम्भ होने पर बाहर से आने वाले सामानों में कमी हो गई इसी लिये पोलैंड पर अधिकार जमाने के साथ ही जर्मनी ने भोजन नियंत्रण नीति का अनुसरण किया था। उसके बाद दूसरे राष्ट्रों ने भी वही नीति अपने देशों में चलाई। स्वीडन, फिनलैंड, स्विटज़रलैंड, स्पेन और पुर्तगाल को छोड़ कर लगभग सभी योरुपीय राष्ट्रों में युद्ध काल के आरम्भ होते ही भोजन नियंत्रण नीति चल पड़ी थी। जर्मनी में प्रत्येक भांति की भोजन सामग्री नियंत्रित है। स्विटज़रलैंड, पुर्तगाल, स्पेन और इटली में रोटी पर नियंत्रण नहीं है। डेनमार्क और नार्वे में मांस तथा मछली पर नियंत्रण नहीं है। जर्मनी बेल्जियम और हालैंड को छोड़ कर सभी योरुपीय राष्ट्रों में आलू का नियंत्रण है।

इस वर्ष अप्रैल मास में स्पेन के साधारण भोजन करने वाले को ४३ औंस रोटी दी जाती है बेल्जियम में ५६ और फ्रान्स में प्रति सप्ताह ५९ औंस रोटी दी जाती है। डेनमार्क में ८० औंस और जर्मनी में ८५ औंस रोटी दी जाती है। पेशे वालों के लिये कुछ मुख्य नियंत्रण लगाये गये हैं। मक्खन और चर्बी हालैंड में ३ औंस, अधिकार में किये हुये फ्रान्स में ३ औंस, बोहेमिया और मोराविया में ५ औंस, इटली में ७ औंस हालैंड में ९ औंस, जर्मनी में ९ औंस नार्वे में ११ औंस और डेनमार्क में १२ औंस प्रति-सप्ताह प्रति व्यक्ति को मिलने का नियंत्रण है। इसी प्रकार चीनी का नियंत्रण सवा दो औंस से १३ औंस तक है।

पोलैंड की मुख्य भोजन सामग्री आलू तथा राई की रोटी है। फ्रान्स में मुख्य भोजन गेहूँ की रोटी है। कुछ देशों में भोजन नियंत्रण नीति जल्दी जल्दी बदलती रहती है और जर्मनी आदि में यह नीति लगभग स्थाई सी है। जहां कहीं आलू की अधिक उपज है वहां यदि रोटी का नियंत्रण कठिन है तो इस का अर्थ यह नहीं है कि वहां के लोग पेट भर भोजन नहीं खाते हैं। वह आलू से ही अपना पेट भरते हैं। पोलैंड, चकोस्लोवाकिया, नार्वे, डेनमार्क और हालैंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आलू अधिक होता है। मांस की कमी की पूर्ति मछली, मक्खन, मटर, सेम और मसूर से होती है।

गत वसन्त ऋतु तक योरुप के सभी राष्ट्रों ने अपने यहां की भोजन सामग्री के भण्डार पर अधिकार पा लिया है। इसी लिये जिन वस्तुओं के कमी की शङ्का थी उन पर आवश्यकतानुसार नियंत्रण नीति लागू कर दी गई है। इस कार्य में योरुप के भोजन प्रबन्ध कर्ता शासकों ने अपनी विशेष योग्यता का परिचय दिया है। जर्मनी के बाद भोजन प्रबन्ध के शासन में स्विटजरलैंड, हालैंड, डेन्मार्क, स्वीडन और फिनलैंड का नम्बर है।

योरुप के कुछ देशों ने युद्ध के बादल घुमड़ते देखकर १९३८-३९ से ही भोजन सामग्री एकत्रित कर लिया था। नार्वे, हालैंड, बेल्जियम और फ्रांस में जर्मन सेना ने अधिकांश भोजन सामग्री के भण्डारों पर अधिकार कर लिया था परन्तु राजनैतिक, सैनिक या कारखानों के सहयोग उनमें से कुछ वापस कर दिये गये हैं।

योरुप के सभी देशों के सुयोग्य भोजनशासकों ने अपने अपने यहां भोजन बचाने के नियम लागू कर दिये हैं। पहले गेहूँ अथवा राई आदि से १०० पौंड में ७० पौंड आटा तयार होता था परन्तु अब मिल के मालिकों को सरकारी नियम के अनुसार ८० या ९० पौंड आटा तयार करना पड़ता है। इस प्रकार जहां ३० या ४० पौंड प्रतिशत चोकर निकलता था वहां अब १० या १५ पौंड चोकर निकलता है। इसी प्रकार रोटी की भी बचत की गई है। जो रोटी पहले चरनी में जाती थी और पशु खाते थे वह अब मनुष्यों के सामने मेज पर आती है। गेहूँ और राई के आटे में जौ, ज्वार, नाज और आलू की माड़ी आदि मिलाए जाते हैं।

जर्मनी, इटली, बेल्जियम, नार्वे, स्पेन, हँग्री, यूगोस्लाविया और रूमानिया में गेहूँ के आटे में दूसरे प्रकार के आटे मिलाये जाते हैं। स्पेन में गेहूँ के आटे में आधा दूसरी वस्तुओं का आटा रहता है।

इसी प्रकार और दूसरे प्रकार के भोजनों की बचत की गई है। योरुपीय देशों में जितना दूध होता है वह समस्त पहले बच्चों के लिये इकट्ठा होता है। बच्चों से जो बचता है उसका मक्खन, मलाई तथा पनीर बनाया जाता है। मक्खन तथा मलाई का बचा दूध भोजन के लिये प्रयोग होता है। जर्मनी में युद्ध सम्बन्धी "मिगेटी" भोजन बांटा जाता है जिसमें छांछ, आलू की माड़ी और दूसरी वस्तुएं मिली रहती हैं। सोयाबीन से तेल निकाला जाता था और उसकी खली जानवर खाते थे परन्तु अब वह जर्मन सैनिकों को भोजन के लिये दिया जाता है।

योरुपीय देशों में ३५ प्रतिशत नाज खाया जाता था और ६५ प्रतिशत पशुओं को खिलाया जाता था। अब लोगों ने मांस की अपेक्षा रोटी खाना अधिक अच्छा समझा है इसलिये उन्हों ने नाज खाने वाले पशुओं का पालना कम कर दिया है। नाज मुर्गियों और सुअरों को अधिक दिया जाता था। अंडे की खपत अधिकतर इंगलैंड में होती थी। डेनमार्क में पहले १५० लाख मुर्गियां थीं अब वहां ७ लाख रह गई हैं। हालैंड में ३८० लाख के स्थान पर अब २०० लाख मुर्गियां रह गई हैं। सुअर पालने वाले देश सुअरों के लिये नाज विदेश से मंगाते थे। इसी कारण डेनमार्क ने अपने सुअर जर्मनी के हाथ वेंच दिये हैं और अब वहाँ पर ३१ लाख के स्थान पर केवल १५ लाख सुअर रह गये हैं।

डेनमार्क ने अपनी १६ लाख गायों में २ लाख गाएँ डेअरी फार्म ठीक रखने के लिये चुन ली हैं। हालैंड ने अपने यहां के पशुओं में १८ प्रतिशत की कमी कर दी है। फ्रांस में ८ प्रतिशत पशुओं की हानि हुई है।

पशुओं को जहाँ खली, दाना आदि भोजन को दिया जाता था वहाँ अब भूसा, खली, दाना दिया जाना कम कर दिया गया है और उसके स्थान पर समुद्र से प्राप्त वस्तुएँ (घास, काई आदि) दिया जाता है। वृक्षों की पत्तियां तोड़ कर सुखाई जाती हैं और मशीन द्वारा तयार कर जानवरों को दिया जाता है।

विज्ञान शास्त्र द्वारा जंगल से प्राप्त वस्तुओं से पशुओं के हेतु भोजन तयार किया जाने लगा है। सेल्यूलोस कारखानों में तयार किया जाता है। इसके कारखाने दिन प्रति दिन बढ़ रहे हैं। कार्ड लकड़ी की लुब्दी तयार करके जानवरों को खाने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी जाती है। इन वस्तुओं का मूल्य कम रक्खा गया है जिससे सभी लोग खरीद सकें।

शीतकाल में योरुप में चारे की अधिक कमी हो जाती है इसलिये गर्मी के दिनों का चारा जो पहले नष्ट हो जाता था अब सुखा कर रक्खा जाता है। जर्मनी, दक्षिणी फ्रान्स, हालैंड, स्विटजरलैंड और बेल्जियम आदि देशों में चारा रखने के लिये जल्दी जमाने वाले और शीतल स्थान बनाए जा रहे हैं। नमक मिला कर सामग्री रक्खी जाती है जिससे उसका प्रयोग हो सके।

योरुप में बहुत सी ऐसी वस्तुएँ पैदा होती हैं जो अब तक भोजन सामग्री का काम नहीं देती थीं। अब उन्हें भोजन सामग्री बनाने की योजना बनाई जा रही है परन्तु इस कार्य में अभी एक साल तक कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता।

पश्चिमी योरुप में युद्ध के कारण कृषि को बहुत हानि नहीं पहुँची है जो हानि भी हुई थी उसको पुनः ठीक कर लिया गया है। हालैंड ने अपने यहां पुष्पों की खेती मना कर दी है और उसके स्थान पर छोटे बाग बना कर उसमें छोटे छोटे फल पैदा करने के लिये कहा है। बेल्जियम ने ६० प्रतिशत और अधिक गेहूँ तथा २० प्रतिशत और अधिक आलू पैदा करने का निश्चय किया है। फ्रान्स तथा विची सरकार ने ५ लाख एकड़ भूमि में आलू पैदा करने का ठीका दिया है। ठीकेदारों के कार्य पूरा न करने पर तावान देना पड़ेगा।

आलू तथा गुड़ की उपज पर अधिक जोर दिया जा रहा है क्योंकि इनमें नाज से कई गुना शक्ति होती है। योरुप के सभी राष्ट्र इन्हीं वस्तुओं की उपज की कोशिश कर रहे हैं।

जर्मनी अपने देश की उपज अधिक करने के लिये जोर दे रहा है। वह गुड़ तथा आलू की उपज के हेतु चरागाहों तथा परती की भूमि को भी खेत बना रहा है १९४० ई० में अच्छी वर्षा होने के कारण वहाँ एक अरब अड़तालीस करोड़ चालीस लाख मन आलू अधिक हुआ है। ईख पैदा करने की भूमि जर्मनी में १९३२ ई० की अपेक्षा दूनी कर दी गई है। वहां प्रत्येक एकड़ में चीनी तो और अधिक तयार की ही जाती है साथ ही साथ उसमें पशुओं के लिये चारा भी बहुत होता है। नाज की अपेक्षा ईख के खेतों में आठ गुना चारा अधिक होता है।

योरुप में चर्बी की बहुत कमी है। चर्बी की कमी को पूरा करने के लिये सुअरों को अधिक मोटा बनाने के लिये रस निकाली ईख दी जाती है। तेलहन की उपज पर भी बहुत अधिक ध्यान दिया जा रहा है। सूर्यमुखी, सरसों, अलसी, जूट, पाट, तिल, पोस्ता आदि की खेती बढ़ाई जा रही है। सोयाबीन और कपास की उपज दक्षिणी योरुप में बढ़ाई जा रही है।

जिन देशों में खेती कम होती थी वहां खेती की भूमि बढ़ाई जा रही है। हालैंड, नार्वे, स्विटजरलैंड आदि देशों में खेती के लिये नई भूमि खाली की गई है। ज्वेडरजी के पोल्डर्स को पानी से खाली करके खेती के योग्य बनाया जा रहा है। नार्वे में भी इसी प्रकार काम हो रहा है। स्विटजरलैंड ने अपने यहाँ एक लाख एकड़ भूमि खेती के लिये तोड़ी है। फिनलैंड ने ७ लाख ४० हज़ार एकड़ जङ्गली भूमि खेती के लिये खाली की है। वहाँ पर जौ, जई और आलू की खेती की जावेगी। इन देशों में भेड़ों का गल्ला बढ़ाया जा रहा है। भेड़ तथा बकरियां पहाड़ी स्थानों की घास सुगमता से चर सकती हैं।

सभी देशों में नगरों के अन्दर मुर्गी के बच्चे अधिक पाले जा रहे हैं।

समुद्री तट की भूमि जो खाली पड़ी रहती थी वहां पर भी अब खेती का काम आरम्भ हो गया है। डेनमार्क, नार्वे, हालैंड, बेल्जियम आदि देशों में अब तक मछली मारने वाले जहाज बन्दरगाहों पर पड़े थे वह ब्रिटिश बम्बाजी अथवा जर्मन सरकार की मनाही के कारण समुद्र नहीं जाते थे परन्तु अब वह समुद्रों में जाने लगे हैं। वह अब मछली का शिकार करते हैं जिससे काफी तेल मिलता है।

गत ग्रीष्म काल से नार्वे तथा डेनमार्क में जितनी मछली मारी जाती है वह नार्वे भेज दी जाती है १९४० ई० में नार्वे के निवासियों ने १० लाख ७०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजार टन (१ टन=लगभग २८ मन) मछली का शिकार किया। १९११ के बाद से १९३९ तक इतनी अधिक मछली नहीं मारी गई थी। शिकार की हुई मछली का कुछ भाग स्थानीय कार्य में लग जाता है कुछ बाहर जाती है और शेष का तेल निकाला जाता है। तेल निकालने के पश्चात् जो कुछ बाकी रह जाता है उसकी खाद तयार की जाती है और मछलियों को चारा बनाया जाता है।

जर्मनी ने अपने अधिकार में किये हुये देशों के मध्य व्यापार चलाने में बड़ी चतुरता दिखलाई है। योरुपीय देशों के बीच उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम को जहाजों द्वारा सामान आता जाता रहता है। तटीय व्यापार में ब्रिटिश बम्ब वर्षा के कारण कठिनाई पड़ती है फिर भी व्यापार बिल्कुल बन्द नहीं है।

बल्गेरिया को जर्मनी से पास बिना चुङ्गी के मिलता है और वह पास के बदले में नाज, गेहूँ, सोयाबीन सूर्यमुखी आदि सामान भेजता है। हंग्री और रूमानिया दोनों जर्मनी के हाथ व्यापार करते हैं। डेनमार्क और इटली के मध्य सामान परिवर्तन होता है। चावल, फल, शराब और तम्बाकू इटली डेनमार्क भेजता है। डेनमार्क से मांस अंडा, डेअरी की कलें और दूसरी कलें इटली आती हैं।

फिनलैंड, स्वीडन, स्विटजरलैंड, पुर्तगाल, स्पेन और फ्रांस में विदेशों से भोजन सामग्री जाती है। इन देशों को भोजन सामग्री ले जाने वाले जहाज ब्रिटिश सरकार द्वारा नहीं रोके जाते हैं। लिस्बन और जेनोआ के बीच जहाज आते जाते हैं। फिनलैंड को रूस, अर्जनटाइन और संयुक्तराष्ट्र अमरीका से भोजन सामग्री आती है (परन्तु रूस से युद्ध छिड़ने के कारण अब बन्द है) स्पेन को नाज अर्जनटाइन से मिलता है। फ्रान्स को मोरक्को, अल्जीरिया, ट्यूनिस और अर्जनटाइन से काफी मात्रा में नाज आता है। योरुप के भीतरी व्यापार में बड़ी कठिनता हो रही है। सड़कें, रेलें, नदियां और नहरें सामान ढोने वाले जहाजों तथा गाड़ियों से भरी रहती हैं। तटीय व्यापार को ब्रिटिश, बम्ब बाजी तथा ब्लाकेड (घेरा) के कारण हानि हो रही है।

बर्तमान साल की उपज का हाल अभी ठीक ठीक ज्ञात नहीं है। बर्षा अच्छी हुई है इसलिये उपज के अच्छे होने की पूर्ण सम्भावना है।

यद्यपि बेल्जियम, मध्यवर्ती पोलैंड और स्पेन में भोजन सामग्री की कुछ कमी है फिर भी मालूम होता है कि बर्तमान युद्ध में अभी योरुप को भोजन सामग्री की इतनी कमी न होगी कि वहां दुर्भिक्ष पड़ जावे। यदि युद्ध अभी दो तीन बर्ष तक चलता है और संयुक्तराष्ट्र अमरीका तीव्रता के साथ युद्ध में भाग लेता है तो अवश्य ही कुछ न कुछ परिवर्तन योरुप की स्थिति में होगा नहीं तो जब तक हिटलर का निरंकुश शासन योरुप में है तब तक योरुप में भोजन सामग्री के कारण किसी प्रकार की गड़बड़ी होने की सम्भावना नहीं है। हां यदि वहां पर विशेष बम्ब बर्षा की गई तो फिर सामान के आने जाने के साधनों में गड़बड़ी पड़ जावेगी तब फिर वहां आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक गड़बड़ी फैलने की सम्भावना हो जावेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवयुग में स्कैण्डीनेविया

युद्ध के पहले स्कैण्डीनेविया के देश भौगोलिक, ऐतिहासिक, भाषा, शासन तथा जातीय रूप से एक साथ संगठित थे आज वे जर्मन सत्ता में एक साथ संगठित हैं। जर्मनी ने उनकी रक्षा करने का भार उठाया है।

साल भर युद्ध चलने के पश्चात् स्कैण्डीनैविया के देशों को शान्ति प्राप्त हुई है। हिटलर का विजय रथ उत्तरी देशों को छोड़ दक्षिण की ओर गया और पूर्व की ओर जा रहा है। उत्तर में फ्लेन्सबर्ग की खाड़ी से उत्तरी अंतरीप तक और उसके आगे स्पिटबर्जेन तक हिटलर की सत्ता स्थापित है वहां से ब्रिटिश सत्ता उठ गई है। स्कैण्डीनैविया प्रान्त में जो ब्रिटिश आक्रमण हुये हैं उन्हें बड़ा महत्व दिया गया है परन्तु उन आक्रमणों से बर्तमान सैनिक कार्य में किसी प्रकार की हानि नहीं हुई है।

नार्वे

नार्वे ने जर्मन आक्रमण का सामना करने के लिये साहस किया इसी कारण उसे उसका शिकार होना पड़ा। आज उसकी स्थिति राजनैतिक दृष्टि से अच्छी नहीं। वहां पर राएच के कमिश्नर जोजेफ तेबोंवेन का शासन चल रहा है।

जब नार्वे के राजा हैकेन इंगलैंड चले गये तो उनके सभी मन्त्री उनके साथ नहीं गये। उन प्रतिनिधियों और जर्मन सत्ता के बीच सुलह की बातचीत चल रही थी। २५ सितम्बर १९४० ई० में उस सुलह का अंत हो गया। उसके बाद से नार्वे में (तेबोंवेन और उसके साथी विडको क्विशलिंग के नियम के सिवा) किसी प्रकार का नियम नहीं है। सभी प्रकार के वैधानिक नियमों तथा कामों का अंत हो गया है। सभी कानून के अनुसार बनाये गये जज हटा दिये गये हैं। सब से बड़े न्यायालय को राएच के कमिश्नर के अधिकार कर दिया गया है। नाजी जर्मनी अथवा रूस के मजदूरों की भांति वहां के मजदूरों को भी चारों ओर आने जाने की आज्ञा नहीं है उन्हें जर्मन सत्ता के अनुसार काम करना तथा मजदूरी ग्रहण करनी पड़ती है। वह गुलामों की भांति बना दिये गये हैं। नार्वे में जितने राजनैतिक दल थे क्विस्लिंग के दल को छोड़ कर सभी दल छिन्न भिन्न कर दिये गये हैं। हैकन राजसिंहासन जब्त कर लिया गया है और पार्लियामेंट की बैठक रद्द कर दी गई है। जिस सरकार ने नार्वे के शासन की बागडोर ९ अप्रैल से २५ सितम्बर १९४० ई० तक अपने हाथ में रक्खी थी उसे रद्द कर के राएच की ओर से एक कमिश्नर नियुक्त किया है। कमिश्नर ने १३ सचिव बनाए हैं जो नार्वे के एक एक भाग के एकाधिपत बने हैं और मनमाना शासन कर रहे हैं। हिटलर की सहायता से क्विस्लिंग ने नार्वे की सरकार का संगठन किया है। युद्ध के पहले नार्वे में सभी दल आपस में लड़ा करते थे परन्तु आज सभी दलों का नाश हो गया है।

विडकुनक्विस्लिंग नार्वे का एकाधिपत बनना चाहता है उसने फ्युहरर अथवा ड्यूस की भांति फोरेरेन की उपाधि ग्रहण की है। क्विस्लिंग मंत्री-मंडल का नियंत्रण करता है। नार्वे की प्रजा क्विस्लिंग से प्रसन्न नहीं है। सभी लोग उसके विरुद्ध हैं फिर भी हिटलर का पात्र होने के कारण वह नार्वे का सब से बड़ा अफसर बन रहा है। ओस्लो-बर्लिन लिखा-पढ़ी क्विस्लिंग के सम्बन्ध में हो रही है क्योंकि नार्वे के पदाधिकारी मानते हैं कि नार्वे की प्रजा क्विस्लिंग से बहुत घृणा करती है। नार्वे में केवल ५ प्रतिशत प्रजा उसके साथ है।

नाजी सत्ता में नाजी सेना और उसके सहायक सैनिक नाजी सत्ता के विरोधियों को दबाने में सफल हुये हैं। शासक कौंसिल के रद्द होने के पश्चात् नार्वे में बड़ा अत्याचार तथा दमन हुआ। राजनैतिक नेता जेलों में ठोंसे गये, कनसनट्रेशन कैम्प में डाले गये तथा उन्हें प्राणदण्ड की सजायें दी गईं। बहुत से लोगों को गोलियों से उड़ा दिया गया। ओसलो में अब राजनैतिक कैदियों के लिये तीन जेलें हैं जिन की रखवाली जर्मन सैनिक तथा किराये वाले सैनिक करते हैं। मोलेगटन नामक जेल सब से कठिन है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वहां राजनैतिक कैदियों पर भांति भांति के अत्याचार किये जाते हैं।

यह सब व्यवस्थाएं होते हुये भी नार्वे निवासी अपनी कठिनाइयों का सामना बहादुरी के साथ कर रहे हैं। अब भी नार्वे के निवासी ब्रिटेन के सच्चे मित्र बने हैं। नार्वे के जहाजी बेड़े में ९०० जहाज हैं जो ३६ लाख टन के हैं और जिसमें २५ हजार मल्लाह काम करते हैं। वे जर्मन अधिकार में नहीं हैं वरन् ब्रिटिश सहायता से स्वतन्त्र ब्यापार कर रहे हैं। उसका ब्यापार नार्वे के लिये हो रहा है। उन जहाजों पर नार्वे का झण्डा लगा हुआ है। उसी जहाजी बेड़े की आय से नार्वे का युद्ध सम्बन्धी वजट चल रहा है। अटलांटिक सागर पार कनैडा में टोरोण्टो नामक द्वीप (छोटा नार्वे) है। वहां पर नार्वे की आकाश सेना तयार हो रही है और ब्रिटिश देख रेख में शत्रु सेना देखने के लिये हवाई बेड़ा तयार हो रहा है।

डेन्मार्क

दो वर्ष पहले नार्वे और डेनमार्क के राज्यों में बहुत कुछ समानता थी। दोनों राज्यों के राजे भाई भाई थे इसी कारण उनके राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक बातें भी एक सी थीं। भाषा भी उनकी बहुत कुछ मिलती जुलती थी। आज उनमें बहुत कुछ अन्तर है। डेनमार्क ने जर्मनी का सामना नहीं किया इसलिये डेनमार्क अब भी अपने राजा के आधीन है वहां पर पार्लियामेंट, प्रधान मन्त्री और दूसरे मन्त्री गण हैं। डाक्टर गोबेल्स ने स्टाकहाल्म में एक भाषण देते हुये कहा था कि "डेनमार्क अधिकार में किया हुआ देश नहीं है। हमसे डेनमार्क से युद्ध नहीं हुआ। हमसे डेनमार्क से सैनिक अड्डे देने के बारे में संधि हुई है। इसलिये डेनमार्क की स्वतंत्रता पहले की भांति अब भी कायम है।"

यह बात कहनी शायद ठीक नहीं है कि डेनमार्क पर जर्मन अधिकार नहीं है। हाँ वहां पर जर्मन शासक नार्वे की भांति नहीं हैं फिर भी वह जर्मन प्रभुत्व में है। चूँकि उसने जर्मनी का सामना नहीं किया इसी कारण और दूसरे देशों की भांति वहाँ पर जर्मन शासन नहीं है। वहाँ पर खुले तौर पर बहुत कम परिवर्तन हुये हैं। वहां का राजा अब भी अपने मन्त्रीगणों की सलाह से राज्य कर रहा है परन्तु डेनमार्क का भविष्य नार्वे, फ्रान्स और पोलैंड आदि देशों की भांति ही अंधकारमय है। वह स्वतंत्र कदापि नहीं कहा जा सकता क्योंकि जब एक दिन डेनमार्क के ब्यापारिक मन्त्री क्रिस्मरन पूलर ने कहा कि डेनमार्क का जो रुपया जर्मनी के जिम्मे है उसमें से एक पैसा भी न मिलेगा तो नार्वे के जर्मन कमिश्नर ने उसे त्याग पत्र देने पर वाध्य किया और उसे त्याग पत्र देना ही पड़ा। आज वह गेस्टापो पुलीस के हाथों में एक कैदी की भांति अपना जीवन बिता रहा है।

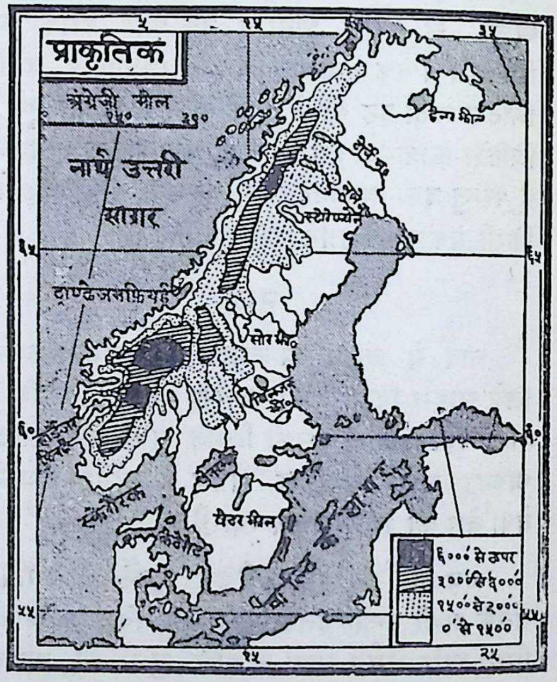

दूसरी बात यह है कि डेनमार्क के संयुक्तराष्ट्र अमरीका के सचिव ने जब ग्रीनलैण्ड के सम्बन्ध में अमरीका और डेनमार्क की संधि का जिक्र किया और अपनी प्रसन्नता प्रकट की तो वह कोपेनहेगेन सरकार द्वारा वापस बुला लिया गया। उसके पश्चात् इसी सम्बन्ध में न्यूयार्क, शिकागो और सैनफ्रन्सिस्को में जो डैनिश प्रतिनिधि थे उन्हें भी वापस बुलाया गया परन्तु जब उन्होंने आने से इन्कार किया तो वह अपने स्थानों से निकाल बाहर किये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जर्मनी ने डेनमार्क को मिलाकर उसे लूटा है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां का मांस, मक्खन, पनीर, अंडा सब कुछ जर्मनी जाता है। जर्मनी उसका मूल्य नहीं चुकाता वरन् डेनमार्क के रिज़र्व बैंक को उसका दाम चुकाना पड़ता है। डेनमार्क में मक्खन आदि की कमी हो गई है और उसे उसका नियन्त्रण करना पड़ा है। डेनमार्क के बैंकों का जर्मनी लगभग १५ करोड़ क्रोनर का ऋणी है। डेनमार्क के किसान को जो रुपया मिलता है उसका वह कच्चा सामान किसी प्रकार का भी नहीं खरीद सकता है उसे जर्मनी की बनी वस्तुओं को ही खरीदना पड़ता है। बनावटी खाद तथा जानवरों का बनावटी भोजन उसे जर्मनी का ही लेना पड़ता

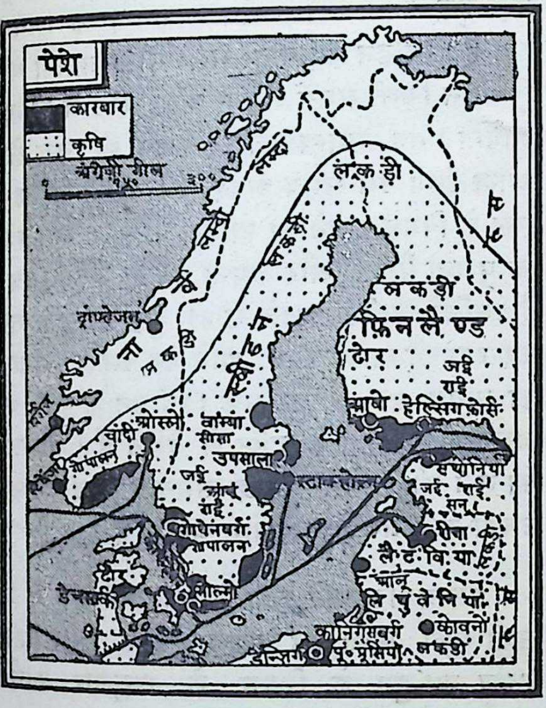

है। ब्रिटिश ब्लाकेड (घेरे) के कारण डेनमार्क चारों ओर से घिरा है। वहाँ किसी प्रकार का विदेशी सामान समुद्र होकर नहीं पहुँच सकता है इसी कारण डेनमार्क में पशुओं की कमी हो गई है। वहां सुअरों की ५० फी सदी, पशुओं की १८ फीसदी, और मुर्गियों की ६० फीसदी कमी हो गई है। इस युद्ध में चाहे जर्मनी की विजय हो या पराजय डेनमार्क को हानि ही पहुँचेगी। उसने जर्मनी को जो ऋण दिया है या दे रहा है उसे वह कदापि वापस नहीं कर सकता।

स्वीडन

जर्मन नव-युग में स्वीडन की क्या स्थिति है यह निर्णय करना बहुत कठिन है। स्वीडन के सरकारी अफसरों का कहना है कि उनका देश पूर्ण स्वतंत्र है परन्तु उसे योरुप की स्थिति देखते हुये अपनी नीति बदलनी पड़ी है वह अब भी पहले की भांति तटस्थ है।

जर्मनी के अल्फर्ड रोजेन बर्ग नामक अफसर ने कहा था कि समस्त स्कैण्डीनेविया प्रान्त हमारी रक्षा के अन्तर्गत है। यह बात उस समय की है जब कि ५ जुलाई सन् १६४० ई० को स्वीडन और जर्मनी के मध्य संधि हुई थी कि जर्मनी स्वीडन होकर अपनी सेना तथा सामान ले आ जा सकता है।

वाशिंगटन से प्राप्त हुये समाचारों से पता चलता है कि अमरीका स्वीडन को कदापि स्वतंत्र मानने के लिये तयार नहीं है। गत अक्तूबर १९४० ई० में अमरीका ने उसे ११० वायुयान देने से इंकार कर दिया जिसका आर्डर स्वीडन की सरकार ने एक वर्ष से अधिक पहले दिया था। एक बार प्रेसीडेण्ट रुज़वेल्ट ने कहा था कि स्वीडन को सामान देना तटस्थता के विरुद्ध है क्योंकि उसका सामान जर्मन प्रयोग में आता है। उसके बाद संयुक्त राष्ट्र में सरकारी अफसरों ने प्रस्ताव किया था कि जो स्वेडिस धन अमरीका में है वह जब्त कर लिया जाय क्योंकि वह धुरी राष्ट्रों के काम में आवेगा।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने-धुरी-राष्ट्रों तथा उनके अधिकार में किये देशों पर जो व्यापारिक रोक लगाई है वह स्वीडन पर भी लागू है। न्यूयार्क में स्वीडन के राजदूत मिस्टर ओलमार एफ० बोस्ट्रोम ने कहा था कि अमरीका ने स्वीडन पर बड़ी कड़ी रोक लगाई है। स्वीडन को कच्चा सामान तथा आधा तयार किया हुआ सामान अमरीका से मिलता था वह अब बन्द कर दिया गया है।

आर्थिक तौर पर इस समय स्वीडन जर्मनी का एक भाग बना हुआ है। गत वर्ष उत्तरी योरुप में जो घटनायें घटीं उनके कारण स्वीडन को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है कि वह क्यों जर्मनी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी बना है। उसे मजबूर होकर नवयुग में मिलना पड़ा है।

आज स्वीडन की राजनैतिक तथा सैनिक रूप से क्या स्थिति है इसका निर्णय करना कठिन है। कुछ लोगों का कथन है कि वह मित्र राष्ट्रों का साथी है और कुछ का कहना है कि वह जर्मनी का साथी है।

आज स्वीडन की स्थिति बड़ी शोचनीय है। एक ओर प्राचीन प्रजातांत्रिक विधान के नियमों का पालन करना चाहता है दूसरी ओर उसे जर्मनी की चेष्टा भी पूर्ण करनी पड़ती है। स्वीडन की ८० फीसदी प्रजा जर्मनी की पराजय चाहती है। स्वीडन के प्रधान मन्त्री हैनसन तथा परराष्ट्र मन्त्री गुनथेर जर्मनी से मेल रखना चाहते हैं और वह उसके मित्र बने हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या शीघ्र भविष्य में जर्मनी स्वीडन पर अधिकार जमावेगा या नहीं और कहां तक स्वीडन उसका सामना कर सकेगा। डाक्टर गोबेल ने कहा था "हमें स्वीडन पर अधिकार करने का कोई कारण नहीं है और न हमें वहाँ सैनिक अड्डों की ही आवश्यकता है और यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि स्वीडन जर्मन सेना का कितना सामना कर सकेगा"।

जर्मनी ने स्वीडन पर आक्रमण क्यों नहीं किया? इसके कई कारण हैं—(१) स्वीडन ब्रिटिश युद्ध क्षेत्र से बाहर है इसलिये उस पर जर्मन आक्रमण की आवश्यकता नहीं है। (२) सोवियट रूस ने स्वीडन की स्थिति जैसी की तैसी रखने पर ज़ोर दिया था। (३) स्वीडन सरकार ने संधि के अनुसार जो सुविधाएँ जर्मनी को दीं वह बर्लिन में संतोषजनक समझी गई। (४) स्वीडन की सेना सुदृढ़ तथा सुसंगठित है इसलिये उसको पराजय करना कठिन है। स्वीडन ने अब तक युद्ध की तयारी में तनिक भी शिथिलता नहीं की है। उसने अपने युद्ध व्यय को १४ करोड़ ८० लाख क्रोनर से बढ़ाकर २ अरब ५० करोड़ क्रोनर कर दिया है। इसके सिवा कर आदि से भी युद्ध के लिये बहुत रुपया एकत्रित किया गया है। वहाँ की प्रजा ने एक अरब ५० करोड़ क्रोनर की सहायता की है।

यह समझना एक बड़ी भूल है कि स्वीडन इतनी बड़ी युद्ध की तयारी जर्मन आक्रमण के लिये कर रहा है। स्वीडन यह बात भली भाँति जानता था कि किसी न किसी समय जर्मनी और रूस में झगड़ा हो जावेगा। तब समस्त उत्तरी योरुप को युद्ध क्षेत्र में आना होगा उस समय अवश्य ही जर्मनी स्वीडन को रूस के विरुद्ध लड़ने का आदेश करेगा। रूस स्वीडन का पुराना बैरी है और जर्मनी उसका सदैव मित्र रहा है इसलिये स्वीडन पहले से ही युद्ध की खूब तयारी कर रहा है ताकि समय आने पर उसकी सेना शत्रु का सामना डट कर कर सके। स्वीडन के लोग नाज़ी जर्मनी को आदर्श की दृष्टि से देखते हैं। वह जर्मनी को रूस की अपेक्षा अच्छा समझते हैं इसी कारण उनका रुख जर्मनी की ओर अधिक है।

इस प्रकार हमने देखा कि स्कैण्डीनैविया में जर्मन सत्ता भली भाँति जड़ पकड़ चुकी है और वहाँ पर जर्मन नव-युग के नियम के अनुसार कार्य हो रहे हैं।

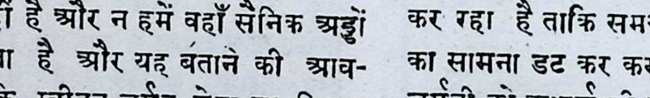

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदबिलाव (बीवर)

उदबिलाव (बीवर) अमरीका का एक पशु है। वहां यह बहुत होता है। इसके रूप का ठीक वर्णन करना कठिन है। इसका आकार एक बोरे की भांति होता है जिसके एक सिरे पर मुख तथा दूसरे सिरे पर रबड़ की काली पतवार सी रहती है।

यह अपने चार छोटे पैरों पर चलता है। इसे चलते समय अपनी पीठ को कूबड़ को उठाना पड़ता है जिससे इसका पेट धरती पर रगड़ न खा जाय परन्तु जब यह पानी पर चलता है तो इसकी दशा धरती की अपेक्षा बहुत भिन्न हो जाती है। यह अपने को पानी के ऊपर तेल की भांति फैला देता है और बड़ी सरलता के साथ तैरता रहता है। बीवर बड़ा तैराक होता है। यह पानी में गोते भी बड़ी कुशलता के साथ लगाता है। इसकी पिछली टांगें कुछ लम्बी होती हैं और पैर के पञ्जे में झिल्ली होती है जिससे शीघ्रता के साथ पानी काट सकता है।

तैरते समय उदबिलाव की पूंछ पानी में पतवार की भांति पानी के धरातल में तैरती है इसके सहारे से यह बड़ी शीघ्रता के साथ घूम सकता है। यह अपनी पूंछ को मिट्टी अथवा पत्थर पर बहुत कम रखता है। हां जब इसकी इच्छा होती है तो यह उसे पानी के ऊपर धम से पटक देता है उसके पटकने का शब्द पिस्तोल के शब्द की भांति होता है।

उदबिलाव अपनी पूँछ क्यों पटकता है इसका मुख्य कारण नहीं बतलाया जा सकता है परन्तु शायद वह अपने दूसरे भाइयों को खतरे की सूचना देता है। जिस प्रकार अजनबी को देख कर कुत्ते दाँत निकालते तथा गुर्राते हैं उसी प्रकार मनुष्य को देख कर बीवर भी अपनी पूंछ पटकता है। जब देखता है कि मनुष्य ने उसे देख लिया है तो यह पानी पर अपनी पूंछ पटकता है परन्तु जब यह देखता है कि मनुष्य ने उसे नहीं देखा है तो यह चुपके से शीघ्रता पूर्वक डुबकी लगा जाता है।

उदबिलाव एक शान्त प्रिय जानवर है। यह कभी किसी प्रकार का उपद्रव नहीं करता है परन्तु यदि उसके सामने कोई मुश्किल आ जाती है तो फिर यह उसका डट कर सामना करता है। यह अपनी जान व माल तथा अधिकार की रक्षा के लिये मरते दम तक लड़ाई करता है।

कुछ लोगों का कथन है कि उदबिलाव बोल नहीं सकता है परन्तु यह अपने हृदय की बात भली भांति प्रकट कर सकता है। जब यह क्रुद्ध होता है तो मनुष्य की भांति जोरों से सांस लेता है। उसके सांस का शब्द भली भांति सुनाई पड़ता है। उससे भली भांति प्रकट हो जाता है कि वह क्रुद्ध है। भूक की दशा में भी यह एक अद्भुत आवाज से अपनी भूक बतलाता है। उसके भूक की आवाज बिल्ली के बच्चे की म्याऊँ म्याऊँ की भांति होती है।

उदबिलाव बड़ा हास्यप्रद पशु है। यह जीवन को एक गम्भीर वस्तु समझता है। उदबिलाव अपने अगले दोनों पैरों से उसी प्रकार काम लेता है जिस प्रकार हम अपने हाथों से लेते हैं। यह उनसे लकड़ी की छड़ी पकड़ कर उसकी छाल बड़ी खूबी से खाता है। इसके बड़े बड़े नाखून होते हैं। जब यह अपने पिछले पैरों पर बैठ कर मनुष्य की ओर देखता है तो एक वृद्ध नागरिक की भांति प्रतीत होता है उदबिलाव लकड़ी को बहुत कुतरते हैं। लकड़ी कुतरना उनकी आदत है।

यह पशु जब वन में रहता है तो अपने लिये छोटे तालाब बना लेता है। यह अपने रहने के स्थान को बाड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से घेर लेता है इसके बाड़े की लकड़ियां साफ सुथरी रहती हैं। यह अपने लिये बड़े (१०० फुट तक लम्बे और मनुष्य की ऊँचाई तक के) बांध बनाते हैं। यह अपने घर बड़े सुन्दर बनाते हैं जिनसे इनकी अद्‌भुत कारीगरी का पता चलता है। इनके बनाये बांध बड़े मजबूत होते हैं। वर्षा काल में जब कि मनुष्य के बांध बह जाते हैं इनके बांध उसी तरह बने रहते हैं।

यह गलती भी करते हैं। बहुधा यह अपने बांध ऐसे स्थानों में बनाते हैं जहां पर बहुत कम पानी रहता है या इनके लिये भोजन की कमी रहती है। जब इसे अपनी त्रुटि मालूम हो जाती है तो यह उसे छोड़ दूसरे स्थान पर चले जाते हैं।

इसके कुछ मिट्टी और लकड़ी के गोले घर बड़े सुन्दर होते हैं। ऐसे घरों की ऊँचाई ७ या ८ फुट होती है और घेरा १२ फुट या अधिक होता है।

एक बार एक अंग्रेज को कुछ काले मनुष्यों ने खदेड़ा वह भाग कर उदबिलाव के घर में घुस गया भीतर जाकर उसने देखा कि वह एक साफ सुथरा उदबिलाव का घर था।

उदबिलाव भीटों या बांधों में सूराख करके अपने घर बनाते हैं। इनके प्रवेश का द्वार बहुधा पानी के अन्दर से होता है। यह बांध के ऊपर अपने घर के द्वार पर लकड़ी तथा कीचड़ इकट्ठा करते रहते हैं। इस प्रकार यह अपने घर की दीवार को एक एक फुट मोटा बना लेते हैं। जब बरफ पड़ती है तो उनकी एक मजबूत ठोस दीवार बन जाती है। शीतकाल में रीछ या भेड़िये उसे खोद कर अपना शिकार बनाने का प्रयत्न करते हैं परन्तु उनका परिश्रम बेकार होता है।

उदबिलाव का घर जैसे जैसे बड़ा होता जाता है यह अपने द्वार भी बढ़ाते जाते हैं। कभी कभी उनके घरों में ६ द्वार होते हैं। यह द्वार पानी के अन्दर ही बने रहते हैं। कोई कोई द्वार तो पानीदार लम्बी सुरंग होकर रहता है। यह भली भांति जानता है कि इसे किस प्रकार सुख मिल सकता है वह अपने लिये सोने का स्थान भी बहुत अच्छा तयार करता है। मुलायम लकड़ी के तख्ते फाड़ कर चटाई की भांति एक फुट मोटा बिछा लेता है। इसके बाल बड़े तथा मुलायम होते हैं जो कम्बल का काम देते हैं। इसका बाल बड़ा गरम होता है। ऊपर रखवाली करने वाले लम्बे बाल होते हैं जिनका रंग सोनहरा भूरा होता है। इनके नीचे रेशमदार छोटे बाल होते हैं। यह बाल काले भी होते हैं। (यह शीतकाल की बिल्कुल चिंता नहीं करता है।

जब बहुत अधिक शीत होती है और तालाब का पानी बहुत ठंडा रहता है तो वह बड़े आनन्द के साथ तैरता दिखाई पड़ता है और इसे जरा भी कपकपी नहीं मालूम पड़ती। यह कभी नहीं भीगता क्योंकि इसके शरीर में तेल की भांति चिकनाहट रहती है जिससे पानी उसके अन्दर नहीं भिद सकता है। वह घंटों अपने तेल को अपने बालों से रगड़ रगड़ कर मलता रहता है। उसके तेल से बहुत सुन्दर बूट (जूते) की पालिश बनती है।

उदबिलाव मनुष्य तथा अन्य जङ्गली पशुओं का बड़ा मित्र होता है। उसके बांधों में मछलियां अपने बच्चों का पालन पोषण करती हैं। दूसरे बिल में रहने वाले जानवर उसके बांध में बिल खोद कर वहीं इसी के साथ रहते हैं।

बन में बनैले पशु तथा मनुष्य अपना प्राण इन के घर में भाग कर बचाते हैं। जो नदियां गरमियों में सूख जाती हैं वह उदबिलाव के बांधों के पानी से ही भरी रहती हैं।

कभी कभी उदबिलाव कष्टदायक भी होता है। उसे ऊँचा बांध बनाने से कोई मना नहीं कर सकता परन्तु इन्हीं बांधों के कारण नदी के पानी में वर्षा ऋतु में बाढ़ आ जाती है और सड़कों तथा चरागाहों में पानी भर जाता है। जब कभी ऐसा होता है तो लोग जा कर उनके बांधों को तोड़ देते हैं। उदबिलाव चुनौती स्वीकार कर के अपना बांध फिर बना लेता है। उसके बाद केवल एक ही मार्ग बचता है कि उसे फुसला कर किसी दूसरे स्थान पर हटा दिया जावे।

बसंत ऋतु में वह अपने स्थान छोड़ कर किसी ओर चले जाते हैं। इसके चले जाने पर उसके बच्चे रोते रहते हैं और फिर उसकी मादा उसे घर में प्रवेश नहीं करने देती है। वसन्त काल में जब कि सभी जङ्गली पशु बेचैन रहते हैं तो वह भ्रमण करने के लिये निकलता है। वह नदी के बहाव तथा उतार में लम्बी चौड़ी यात्रायें करता है। मार्ग में वह अपनी याद के लिये छोटे बांध बनाता जाता है।

कभी कभी गरमी की ऋतु में भी वह यात्रा करता है। सितम्बर में वह शीत काल की प्रतीक्षा करने लगता है तब वह यात्रा से अपने घर को वापस चला आता है या कोई नया घर बना लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदबिलाव अपना घर बनाते समय सब से पहले बांध बांधता है। कुछ लोगों का कहना है कि वह नदी के तटीय वृक्ष को काट कर नदी के आरपार गिरा देता है फिर उसी पर मिट्टी तथा लकड़ी डालता जाता है। वह ऐसे स्थान को चुनता है जहां पहले से ही नदी का धरातल ऊँचा रहता है उसके बाद उस पर वह भी मिट्टी और लकड़ी इकट्ठा करता जाता है। जब तक घर उसके योग्य नहीं होता तब तक वह अपना घर बनाता रहता है।

वह अपना काम बहुधा प्रातःकाल करता है। वह झुण्ड के झुण्ड रहते तथा घर बनाते हैं। कुछ लोग घर बनाते कुछ घर में मिट्टी लगाते और सामान रखने वाले कमरे के लिये हरी छड़ियाँ ले आते हैं। उदबिलाव शीत काल के लिये अपने घर में सामान रख लेता है। प्रत्येक बांध में पानी के नीचे एक स्थान रहता है जहाँ वह पानी के नीचे लकड़ी का एक बड़ा ढेर इकट्ठा कर देता है।

उसका भण्डार घर उसके रहने के स्थान के समीप रहता है। जब बरफ की मोटी तहें जम जाती हैं तो वह तैर कर लकड़ी के ढेर के पास जाता है और फिर वहाँ से जिस सामान की जरूरत होती है उसे ले जाता है और फिर घर जाकर शान्ति पूर्वक जाड़े भर बैठा रहता है।,

वह लकड़ी की छड़ियों को इस प्रकार पानी के नीचे ले जाता है कि जिन छड़ियों को वह पानी के नीचे लेजाता है वह हरी होती हैं और रस से भरी रहती हैं। वह आप से आप डूब जाती हैं। वह छड़ियों के एक किनारे को पकड़ कर पानी के अन्दर ले जा कर कीचड़ में गाड़ देता है जहां वह छोटे खम्भे की भांति गड़ जाती हैं।

बीवर का जीवन बड़ा सुखमय होता है मनुष्य अभी उनके बारे में बहुत कम जानता है परन्तु धीरे धीरे मनुष्य को उनके सम्बन्ध में काफी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

दक्षिणी अफ्रीका का डर्बन बन्दरगाह

डर्बन का बन्दरगाह अफ्रीका के पूर्वी तट पर स्थित है। १०० वर्ष से कुछ पहले इसके स्थान पर बन के सिवा कुछ भी न था। मानव जाति ने आज उसी स्थान पर एक बड़ा नगर तथा बन्दरगाह बना दिया है। दक्षिणी अफ्रीका यूनियन के बन्दरगाहों में डर्बन सबसे बड़ा व्यापार करने वाला बन्दरगाह है।

इस बन्दरगाह पर २५००० टन (लगभग ७ लाख मन) से अधिक भार वाले जहाज आते जाते हैं। किसी समय में इस बन्दरगाह के मुहाने पर मिट्टी का एक बड़ा खतरनाक ढेर था, प्रत्येक तूफान के पश्चात् यह ढेर कम या अधिक होता रहता था। विज्ञान कला द्वारा उस स्थान पर एक झील बना दी गई है, जिससे सारा भय जाता रहा है। ३१ मार्च सन् १९३५ ई० में डर्बन बन्दरगाह में ४,२३३,८७५ टन (लगभग १२ करोड़ १३ लाख मन) का व्यापार हुआ। इस संख्या में कोयला गल्ला आदि सभी वस्तुएँ सम्मिलित हैं।

डर्बन नगर की जन-संख्या २२५,००० है। इस नगर और इस नगर के आस पास कुल ९०,००० योरोपियन रहते हैं। शेष सभी यहां के निवासी, ... हैं। यह बन्दरगाह नैटाल के प्रान्त में स्थित है। जब १४९८ ई० में वास्कोडिगामा भारत का मार्ग ढूँढता हुआ यहां आया था, तभी उसने इस प्रान्त का नाम नैटाल रक्खा था।

पुर्तगाली लोग यहां नहीं गये। डर्बन नगर की उन्नति अँग्रेजों तथा अँग्रेज व्यापारियों के कारण हुई है। अँग्रेज जाति डर्बन हार्बर को नैटाल पोर्ट के नाम से पुकारती है। क्योंकि यही एक स्थान यहां के लम्बे चौड़े तट में है जहां जहाज खड़े हो सकते हैं।

१८३५ ई० में जब सर बेनजामिन डी अर्बन केप का गवर्नर था तो नैटाल के बन्दरगाह के रहने वालों ने एक नगर बसाने का विचार किया। उसी गवर्नर के नाम पर इसका नाम डर्बन पड़ा। १९३५ ई० में डर्बन का बरा डर्बन नगर बन गया। डर्बन खाड़ी पर स्थित व्हार्फ्स (घाट) के लिये अब भी नैटाल बन्दरगाह का नाम प्रयोग किया जाता है।

डर्बन नगर पर केपटाउन से समुद्री मार्ग से ८०० पोर्ट एलिज़बेथ से ४०० मील और ईस्ट लन्दन से २५३ मील की दूरी पर है। इसके उत्तर की ओर समीपवर्ती बन्दरगाह डेलेगोवाबे है जो ३०० मील की दूरी पर है। ... से केप होकर ६७६० मील और स्वेजनहर होकर ८२८० मील है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डर्बन का बड़ा बन्दरगाह ७½ वर्ग मील में है। इसकी लम्बाई ३॥ मील और चौड़ाई २ मील है। यह नाशपाती की शकल का है। खाड़ी का पूर्वी दक्षिणी भाग में ब्लफ है। यह हिन्द महासागर में घुसा हुआ है। ब्लफ की ऊँचाई १९५ फुट है। इसकी चोटी पर एक प्रकाश घर है जहां पर ३० लाख बत्तियों की रोशनी होती है।

ब्लफ से लम्बाकार रेखा में प्वाइन्ट नामक भूमि की पट्टी है जो यहां की खाड़ी को समुद्र से अलग करती है। प्वइान्ट के भीतरी भाग में घाट हैं जहां पर जहाज ठहरा करते हैं। भीतर की ओर जाने का मार्ग ब्लफ और प्वाइन्ट के मध्य में है। इसकी रक्षा उत्तरी घाट तथा दक्षिणी ब्रेकवाटर द्वारा होती है। दक्षिणी ब्रेकवाटर बढ़ा कर २३०० फुट लम्बा कर दिया गया है। उत्तरी घाट प्वाइन्ट से मिला कर बनाया गया है। इन दोनों के बीच की कम से कम चौड़ाई ६०० फुट है।

चैनल को खोद कर साफ कर दिया गया है। इसकी गहराई २ फुट से ६ फुट तक थी और यहां पर मल्लाह लोग अपने जहाज टूट जाने के भय से नहीं लाते थे।

ब्लफ तथा प्वाइन्ट प्रायद्वीप प्राकृतिक बन्दरगाह का काम देते हैं। यहां पर ३ मील तक बांध तथा घाट बने हुये हैं। इन घाटों के पानी की गहराई २३ से ३८ फुट तक है। इन घाटों में संसार के प्रत्येक भाग से जहाज आकर ठहरते हैं।

ब्लूफनेल लाइन, हाल लाइन, यूनियन कैसिल लाइन (इन्गलिश) हालैंड-अफ्रीका लाइन, नैवीगाजिओने लिबेरा ट्रस्टीना, निपन यूसेन केशा, जर्मन इटैलियन और जापानी आदि लाइनों के जहाज डर्बन बन्दरगाह पर आते हैं। थेसेन्स स्टीम शिप कम्पनी की ओर से केपटाउन तथा दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका तट के बीच जहाज चलते हैं।

बड़े जहाज जो डर्बन के बन्दरगाह पर आते हैं, उनमें अथलोनेकैसिल का वज़न २५,५६४ टन, क्लान अर्कुहार्ट ६९६४ टन, हालैंड अफ्रीका लाइन के जागर्स फान्टीन का वज़न १०,०७७ टन है। इनके सिवा और भी दूसरे बड़े जहाज डर्बन बन्दरगाह का प्रयोग करते हैं।

इस बन्दरगाह का अधिकांश काम प्वाइन्ट स्थान पर होता है। कम्पनियों तथा लाइनों के जहाज यहीं पर ठहरते हैं। यहां पर एक मील से अधिक दूरी में घाट बने हैं। वहां पर सामान रखने उतारने के लिये उत्तम प्रबन्ध है। क्रेनों का काम बिजली द्वारा होता है। सबसे बड़ी क्रेन ८० टन (२२४० मन) बोझ उठा सकती है।

फलों के रखने के लिये ठंडे कमरे बनाये गये हैं, जहां पर योरुप भेजे जाने के पहले फल रक्खा जाता है। इन कमरों में ३३,२८० फल वाले संदूक रक्खे जा सकते हैं। जहाजों की मरम्मत के लिये घाट बने हैं। प्वाइन्ट के दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर तैरता हुआ घाट है। इस घाट की लम्बाई ४७५ फुट और भीतरी चौड़ाई ७० फुट है। यह घाट ५००० टन (१४०,००० मन) का बोझ सँभाल सकता है।

इस घाट के बाद विक्टोरिया के बाँध हैं। यह नगर का खाड़ी की ओर का किनारा है और अलबर्ट पार्क तक फैला हुआ है। इसके पश्चिम की ओर मेडन का घाट है। यह घाट कंगेला के व्यवसाई जिले का बन्दरगाह है। यहां पर पहुँचने का मार्ग मेडन खाड़ी होकर है। यह खाड़ी साफ करके गहरी बना दी गई है। घाटों पर खाड़ी की गहराई २५ फुट से ३८१ फुट तक है।

इस भाग में गल्ला रखने के लिये एलिवेटर (बखार) बने हैं। इन बखारों में ४०,००० टन (१,१७६,००० मन) अनाज भरा जा सकता है। इनमें एक हजार टन (२८००० मन) प्रति घंटे के हिसाब से अनाज भरा जा सकता है। यहां से मक्का दूसरे देशों को भेजी जाती है।

मेडन घाट के अन्त में प्रिन्स एडवर्ड ग्रेविंग डाक है। यह घाट १९२५ ई० में खोला गया था। उस समय विश्वत रेखा के दक्षिण यह घाट सबसे बड़ा था। यह घाट नीचे ११५० फुट लम्बा और द्वार पर ११० फुट चौड़ा है। इस घाट में ३८,११८,००० गैलन पानी आता है। यह घाट ४७ मिनट में भर दिया जाता है और ४ घंटे या इससे कम समय में खाली कर दिया जाता है।

जो बड़े जहाज तैरते हुये डाक पर नहीं खड़े हो सकते वे प्रिन्स एडवर्ड ग्रेविन्ग डाक में आ कर खड़े होते हैं। यह डाक दो भागों में बँटा है और प्रत्येक भाग का प्रयोग स्वतंत्रता पूर्वक किया जा सकता है।

डाकों की गहराई मामूली ज्वार आने पर ४१ फुट रहती है। इस घाट को आठवें एडवर्ड ने (जब वे वेल्स के राजकुमार थे) खोला था। इस ओर अब बहुत से कारखाने बन गये हैं।

तेल लाने वाले टैंकर जहाज ब्लफ में ठहरते हैं और वहां तेल वाले हौजों में अपना तेल भरते हैं। यहाँ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ पिट्रौल रखने वाले हौज़ हैं जहां पर कुल १८०,००,००० टन (४०,४०,००,००० मन) तेज़ भरा जाता है। तेल वाले घाटों की लम्बाई १००० फुट है।

ठंडे कमरे खाड़ी के मुहाने पर ब्लफ में स्थित हैं। डर्बन से बहुत से कोयला बाहर भेजा जाता है और उसके कारण डर्बन की माली स्थिति अच्छी हो गई है। यूनियन सरकार की ओर से यह कोयला पूर्वी अफ्रीका, लाल सागर और दूसरे देशों को भेजा जाता है। दक्षिणी अफ्रीका में कोयला भेजने के लिये डर्बन मुख्य बन्दरगाह है। वहां पर ५ जहाज एक साथ कोयला भर सकते हैं। कोयला १००० टन (२८००० मन) प्रति घण्टे के हिसाब से भरा जा सकता है। कोयला भरने वाले घाट की लम्बाई २३६५ फुट है।

कोयले के सिवा यहां से चीनी, ऊन, चमड़ा, मक्का, फल आदि भी बाहर भेजे जाते हैं।

खाद, लकड़ी, लोहा, फौलाद, कलें और दूसरी तयार वस्तुएं बाहर से डर्बन बन्दरगाह होकर आती हैं। यहां पर मछली मारने का रोजगार भी काफी होता है। डर्बन नगर दक्षिणी अफ्रीका का ह्वेल मछली के तेल निकालने का भी केन्द्र है। १९३१ ई० में यहां से ४,०००,००० गैलन (४६२५०० मन) ह्वेल का तेल बाहर भेजा गया था। ह्वेल मछली का मांस खाद बनाने तथा कारखानों में काम आता है।

सन् १९२० ई० में दक्षिणी अफ्रीका के यूनियन की स्थापना हुई तब से डर्बन तथा दक्षिणी अफ्रीका के दूसरे बन्दरगाह दक्षिणी अफ्रीकन रेलवे तथा हार्बर ऐडमिनिस्ट्रेशन के अधिकार में हैं।

डर्बन के बन्दरगाह में टग आग बुझाने वाले जहाज और दूसरे भांति भांति के छोटे जहाज भी हैं। रील बांक नामक हायर डजर (जालवाला जहाज) दुनिया के बड़े जहाज़ों में से है। यह १९३० ई० में रेनफ्रयु में बना था। इसका तौल ४५३८ टन है। इस की लम्बाई ३७४ फुट, चौड़ाई ५७ फुट ८ इञ्च है।

डर्बन बन्दरगाह में हरसाल हजारों की संख्या में यात्री आते हैं। यहां की जलवायु बड़ी अच्छी है। न तो यहां अधिक गर्मी पड़ती है और न अधिक शीत ही पड़ती है। जाड़े के दिनों में यहाँ का सब से नीचा तापक्रम ३३ फा० हा० और गर्मी में सब से ऊँचा तापक्रम ८१ डिगरी फा० हा० रहता है।

ब्लफ का ऊँचा हरा प्रदेश दक्षिण पश्चिम से आने वाली तेज हवाओं को रोकता है, जिस से छोटे छोटे जहाज आनन्दपूर्वक हार्बर के अन्दर चल सकते हैं। आधुनिक उन्नति के कारण डर्बन का समुद्री तट बड़ा सुहावना बन गया है। यहां की जलवायु भी स्वास्थ्य के लिये अच्छी है यहां पर हर साल हज़ारों जवान बूढ़े तथा बच्चे अपने स्वास्थ्य सुधारने के लिये आते हैं।

डर्बन के टाउन हाल तथा म्यूनिसिपैलिटी के मकान नगर के केन्द्रीय भाग में वेस्ट स्ट्रीट पर स्थित हैं। यह सड़क विक्टोरिया बांध के समानान्तर है। नगर के पीछे बेरिया की पर्वतीय श्रेणियां हैं जिनके ऊपर नगर के मुख्य बाहरी भाग स्थित हैं। गर्मी के दिनों में यहां की वाटिकाओं और पार्कों में हरे भरे पेड़ दिखाई पड़ते हैं। नगर के भीतर चौड़ी सायादार सड़कें हैं, जिन का दृश्य बड़ा ही मनोहर है। जो लोग डर्बन पोर्ट को एक बार घूम आये हैं वे उसे वाटिका-नगर के नाम से याद करते हैं।

डर्बन में समुद्र के किनारे पर सामान लादने वाले तथा सवारी वाले जहाज अपने कार्यों में व्यस्त दिखाई पड़ते हैं। ह्वेल मछली लादने वाले जहाज़ भी रहते हैं। यह जहाज छोटे बड़े कई प्रकार के होते हैं। दक्षिणी अफ्रीका के निवासी जो सैकड़ों मील तटों से दूर रहते हैं वे भी समुद्री जीवन के प्रेमी होते हैं। तैराक, मल्लाह तथा सैर सपाटे वाले यात्री सभी जहाज़ों पर बैठ कर मछलियों का शिकार करते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका के किनारों पर खनिज पदार्थ तो बहुत है किन्तु प्राकृतिक गहरे हार्बर नहीं हैं। हार्बर बनाने वाली योजना के अनुसार डर्बन एक सुन्दर हार्बर बन गया है।

पहले भारतवर्ष, ईस्ट इन्डीज़ (पूर्वी द्वीप समूह) चीन आदि देशों से आने वाले जहाज और उनके मल्लाह यहां के जङ्गली किनारों पर आकर बहुत परेशान होते थे। बहुधा उनके जहाज टूट जाते थे और यदि किसी न किसी भांति वे बच भी गये तो भूखों मर जाते थे। जो लोग लोवरेनको मारक्वीस (पुर्तगाली बस्ती) को पहुँचना चाहते थे, उनको अफ्रीका के असभ्य निवासी मार्ग ही में मार डालते थे।

डर्बन हार्बर के तट के आदि निवासी और दूसरे निवासियों से कम जङ्गली थे। यह लोग औरों की अपेक्षा क्रोधी भी कम थे। सत्रहवीं शताब्दी में गुडहोप, बोना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेन्चुरा, स्टावनीसे नामक तीन जहाज़ यहां आकर किनारे पर टूट गये। उन के कुछ आदमी डूब गये और कुछ बच गये। जो लोग बच गये थे उन लोगों ने मिलकर एक जहाज़ ५० फुट लम्बा और १४ फुट चौड़ा बनाया। लगभग २० आदमी इस जहाज को केप ले गये और वहां डच गवर्नर के हाथ जहाज बेच दिया। डच गवर्नर ने इस जहाज को और दूसरे टूटे हुये जहाजों की सहायता के लिये अफ्रीका के किनारे पर भ्रमण करने के लिये भेजा। इस प्रकार यहां पर आने वाले योरुप निवासियों ने बड़ी बड़ी कठिनाइयां सह कर डर्बन हार्बर बनाने का कष्ट उठाया था।

सैलिसबरी नामक नौका से डर्बन बन्दरगाह का इतिहास आरम्भ होता है। यह नौका तूफान चलने के कारण डर्बन खाड़ी में आ कर टूट गई। इसी की याद में खाड़ी के अन्दर एक द्वीप का नाम सैलिसबरी द्वीप रक्खा गया है। यह नौका जेम्स साउन्डर्स किङ्ग की अध्यक्षता में थी। फ्रान्सिस जार्ज फेअरवेल उसका एक साथी था। यह दोनों युवक बड़े साहसी थे, इन लोगों ने नैपोलियानिक युद्ध के पश्चात् केप टाउन गये और वहां पर छोटी छोटी नावें बना कर अफ्रीकन तट की पड़ताल करनी आरम्भ कर दी। यह लोग यहां के आदि निवासियों के साथ वस्तुओं की अदला बदली करने का व्यापार आरम्भ किया। डर्बन खाड़ी का कार्य समाप्त कर किंग लन्दन वापस लौट गया। फेअरवेल दूसरी बार फिर नैटाल के बन्दरगाह पर आया। इसके साथ में दो जहाज थे।

पहला जहाज हेनरी फ्रान्सिस फीन की अध्यक्षता में था। हेनरी आयरलैंड का निवासी था और बड़ा कूटनीतिज्ञ था। जब यह जहाज डर्बन खाड़ी में पहुँचा तो उस समय खाड़ी और उसके चारों ओर का इलाका चाका के आधीन था। चाका ज़ुलू जाति का नेता था। इसने अपने साथियों को लड़ाकू सैनिक बना रक्खा था। चाका अफ्रीका के नैपोलियन के नाम से प्रसिद्ध था। चाका से फीन से दोस्ती हो गई। फीन ने चाका को एक चोट से अच्छा किया था। यह चोट चाका की प्राण घातक थी।

चाका के ऊपर इस (चोट के अच्छा करने की) दवा का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने पोर्ट नैटाल और उसके आस पास की हज़ारों बर्गमील भूमि अँग्रेजों को सौंप दिया। उसने एक इक़रारनामा भी इसी भूमि के देने का लिख दिया।

जब किंग ने अपने मित्र की सफलता का हाल सुना तो नैटाल बन्दरगाह के लिये रवाना हुआ किन्तु बन्दरगाह के उत्तरी सिरे पर आकर उसकी नौका टूट गई। चाका ने किंग को भी भूमि प्रदान की। १८२८ ई० में किंग की मृत्यु हो गई।

चाका को अँग्रेज लोग मरहम तेल और दवा की गोलियाँ देते थे, वह इसी की बदौलत स्वेत चमड़े वालों के कहने के अनुसार बड़ा अत्याचार करने लगा। हज़ारों की संख्या में उसने अपने आदमियों को मरवा डाला। चाका को भी अन्त में मार डाला गया और उसका भाई डिङ्गान गद्दी पर बैठा। फेअरवेल भी मार डाला गया। अलेन फ्रान्सिस गर्डनर ज़ूलू जाति वालों को ईसाई बनाना चाहता था, इसलिये उसने १८३५ ई० में वहां नये बसने वालों की एक सभा बुलाई। सभा में डर्बन नामक टाउन स्थापित करने की राय पास हुई।

जब इस नगर की स्थापना की गई तो इस पर बड़ी बड़ी कठिनाइयां आईं। एक बार ज़ूलू लोगों ने इस पर आक्रमण किया और सारे स्वेत लोगों को मार डाला केवल १२ आदमी बच रहे।

कुछ सालों के बाद बोर लोगों ने डिग्रान को निकाल कर डर्बन पर अधिकार जमा लिया। अँग्रेजों ने एक सेना बाद में डर्बन लेने को भेजी। कांगोला नामक स्थान पर बोर लोगों ने अँग्रेजों का सामना किया और अँग्रेजों को बुरी तरह घेर लिया। डिक राजा एक आदि निवासी के साथ बोट पर भाग कर ब्लफ आया और वहां से घोड़े पर यात्रा करके ६०० मील की दूरी पर ग्राहम्स टाउन पहुँचा। वहां जा कर सार हाल कह सुनाया। बाद में नैटाल प्रान्त भी अंग्रेजी सेना द्वारा ब्रिटिश राज्य में मिला लिया गया।

डर्बन हार्बर बनाने की बड़ी बड़ी योजनायें की गईं किन्तु आपस में ही मतभेद होने के कारण कार्य आरम्भ नहीं हुआ। जब ईस्टइन्डिया कम्पनी के सामने यह प्रश्न उठा तो उसने (यह कह कर कि डर्बन बन्दरगाह के मुहाने पर बालू का एक बड़ा ढेर है जिसमें बिना ठोकर खाये कोई जहाज अन्दर नहीं जा सकता) इंकार कर दिया।

बीसवीं शताब्दी में डर्बन बन्दरगाह के बनाने के बारे में बड़ी लिखा पढ़ी हुई। आज लगभग सौ साल के बाद वही डर्बन दक्षिणी अफ्रीका का सबसे बड़ा बन्दरगाह है।

जब नैटाल का व्यापार उन्नति करने लगा तो डर्बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्दरगाह बनाने की बड़ी आवश्यकता प्रतीत हुई। सबसे पहले प्वाइन्ट नामक स्थान पर घाट बनाया गया। इसके बनाने में सफलता प्राप्त हुई और तेज़ी से काम आरम्भ हुआ किन्तु जब इस बात की खबर हुई कि मुहाने की रेती में एक बड़ी चट्टान है और वहां १८ फुट से अधिक गहराई नहीं हो सकती तो काम बन्द कर दिया गया।

जब अफ्रीका की खानें तथा हीरे की खानों का पता चला तो फिर मुहाने की चट्टान को साफ करने का प्रयत्न किया गया। इस बार पड़ताल होने पर पता चला कि वहां की चट्टान बड़ी लगातार चट्टान न थी वरन् छोटी छोटी चट्टानें तथा रोड़े थे। अंत में वे चट्टानें साफ कर दी गईं।

१८९६ ई० में प्रथम बार डर्बन हार्बर में जहाज बनाये गये। दूसरे साल डर्बन नगर से प्वाइंट तक रेल बनाई गई। दक्षिणी अफरीका में यह पहली रेल बनाई गई थी। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में खाड़ी की गहराई २० फुट हो गई थी। तबसे बराबर गहराई बढ़ती जा रही है और आज तक गहराई लगभग ४० फुट हो गई है। सबसे बड़ा जहाज पेलागोस (१२०६७ टन) १९३० ई० में डर्बन बन्दरगाह पर गया। यह ३६ फुट ८ इञ्च गहरा पानी खींच रहा था।

कनजेला एक रोज़गारी जिला है। नैटाल के अधिकांश कारखाने डर्बन नगर या उसके इधर उधर स्थित हैं।

डर्बन में आज रेलों का जाल सा बिछा है और सभी डाक्स साउथ अफ्रीकन रेलवे से रेल द्वारा मिले हुये हैं। इस प्रकार देश के अन्दर का सारा माल सीधे डर्बन में आकर उतरता है। यह सामान सीधे घाटों पर उतार दिया जाता है।

रोडेशिया, ट्रान्सवाल आदि देशों से डर्बन बन्दरगाह और दूसरे बन्दरगाहों की अपेक्षा समीप पड़ता है। डर्बन से रोडेशिया १,१७० मील है इसकी यात्रा लगभग ७ घंटे में हो जाती है।

संसार की जन-संख्या

आवागमन के साधनों के उन्नति करने और भांति भांति के परिवर्तनों के होने तथा नवीन युग के लोगों के जनमत बढ़ने के कारण अब दिन प्रति दिन समस्त संसार को एकादृष्टि से देखने का मत बढ़ रहा है। ऐसी दशा में अध्यापकों और खास कर भूगोल के अध्यापकों को अपनी शिक्षा के प्रचार का अच्छा समय है। स्कूल में प्रान्तीय शिक्षा तथा संसार की मानव सम्बंधी शिक्षा भली भांति दी जा सकती है। इस योजना का कुछ भाग एक समय में पढ़ाया जा सकता है। सबसे पहला भाग जनसंख्या और उसका प्रत्येक स्थान पर बराबर न होने का हो सकता है। संसार की जनसंख्या लगभग २ अरब २० करोड़ है। संसार की जनसंख्या लगभग २ करोड़ सालाना के हिसाब से बढ़ रही है। यह बढ़ती भिन्न भिन्न भागों की भिन्न भिन्न है और इसी भिन्नता के कारण संसार में जातीयता, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

संसार की जनसंख्या २ अरब २० करोड़ है। यह अंक कल्पित है क्योंकि कुछ देशों में बहुत वर्षों से जन गणना नहीं हुई है। संसार की जनसंख्या का $\frac{1}{5}$ भाग कभी भी गणना में नहीं आया। दक्षिणी अमरीका के कुछ भीतरी भाग ऐसे हैं जो अब भी उतने ही अपरिचित हैं जितने कि पुर्तगालियों अथवा स्पेन वालों के जाने के पहले थे। अफ्रीका के उष्ण भागों की जनसंख्या केवल अनुमान पर लगाई गई है। दक्षिणी पश्चिमी एशिया की जन-संख्या का भी ठीक ठीक कोई हिसाब नहीं है। सब से बड़ी कठिनाई चीन में पड़ती है जहां कि कभी भी ठीक ठीक जन गणना नहीं हो सकती। चीन की जन-संख्या संसार की जनसंख्या का पाँचवां भाग है।

संसार के तीन चौथाई लोग कर्क रेखा के उत्तर में और केवल तीन प्रतिशत लोग मकर रेखा के दक्षिण निवास करते हैं। एशिया में संसार की समस्त जनसंख्या का आधा भाग और योरुप में चौथाई भाग निवास करता है। दक्षिणी अमरीका और आस्ट्रेलिया की जनसंख्या बहुत कम है। एशिया के मानसूनी प्रदेश में जनसंख्या की सघनता २५० प्रति वर्ग मील है। योरुप में प्रति वर्ग मील में १२५ मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अमरीका में प्रति वर्ग मील में केवल ४२ मनुष्य रहते हैं। प्रत्येक महाद्वीप में कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ आबादी बहुत घनी है कुछ ऐसे हैं जहां औसत दर्जे की आबादी है और कुछ स्थान ऐसे भी हैं जो बिल्कुल निर्जन हैं।

संसार में बहुत कम ऐसे भाग हैं जहाँ लोग नहीं बसे हैं और उससे भी कम ऐसे भाग हैं जहां मनुष्य नहीं रह सकता है। आज कल संसार में जो पांच प्रदेश हैं उनमें टुंड्रा और उष्ण मरुप्रदेशों में रहने में बड़ी कठिनाई होती है। अमरीका में कर्क रेखा और मकर रेखा के मध्य तथा बाहर वाले प्रदेशों में काफी अन्तर है परन्तु यूरेशिया में भी उसी प्रकार अन्तर है। स्विटज़रलैंड और अफग़ानिस्तान में बहुत बड़ा अन्तर है। वर्तमान समय में टुंड्रा के रहन-सहन तथा निवासियों में बहुत कुछ अन्तर आ गया है। जिन स्थानों में एक भी मनुष्य नहीं रहते हैं अब वहां लोग आते जाते और रहते हैं। रूस ने उत्तर की ओर ४० हज़ार आदमी आर्कटिक वृत्त में रहने के लिये भेजे हैं। उष्ण मरुस्थलों में लोग सूर्य के प्रकाश को बुरा समझते हैं और उन्हें पानी की कमी रहती है। यह सम्भव है कि पञ्जाब की पाँच नदियां किसी समय भारत के उत्तरी-पश्चिमी प्रदेश को हरा भरा बना दें। सहारा का रेगिस्तान खेती में बदला जा सकता है परन्तु उसके लिये काफी पानी मिलना दुर्लभ है। एक विदेशी इंजीनियर ने अपनी राय दी है कि रूम सागर को दोनों किनारों पर बांध द्वारा बांध दिया जावे उसके बाद वहाँ का पानी भाप बन कर स्वयम् सहारा में वर्षा कर के उसे हरा भरा कर देगा।

रेगिस्तानों के अलावा जंगल और दूर वाले भीतरी मैदान हैं जो निर्जन हैं। जब से भाप का सहारा मनुष्य को मिला है और रेलवे लाइनें खुली हैं तब से प्रेरीज़ तथा उत्तर और दक्षिण के बनों में जाकर उन्हें बनस्पति उगाने के योग्य बनाया गया है।

साधारण आबादी वाले स्थानों की शिक्षा में अधिक कठिनाई पड़ती है क्योंकि उनकी दशा मध्यम है। इस लिये वहां की शिक्षा देने के लिये वहाँ के ताप, वर्षा और कृषि का मानचित्र तयार कर लेना चाहिये। पहले शीतोष्ण और उष्ण कटिबंध को अलग कर लेना चाहिये। शीतोष्ण कटिबंध में भूमि की भिन्नता के अनुसार विभाजन किया जा सकता है। पहाड़ी स्थान मैदानों तथा चरागाहों से सुगमता पूर्वक अलग किये जा सकते हैं। जिन देशों में एक प्रकार की खेती होती है वह देश उन देशों से भिन्न हैं जहां कई प्रकार की खेती होती है फिर साधारण खेती वाले भाग और व्यापारिक खेती वाले भागों में भी भिन्नता है। उनकी सघनता में भी महान अन्तर है। अफ्रीका के उष्ण प्रदेश में भी प्राचीन निवासियों तथा स्वेत खेती करने वालों के काम और सघनता में भारी अन्तर है। प्रत्येक स्थान में खेतों में मज़दूरों की आवश्यकता है साथ ही साथ उन्हें अपने जीवन के निर्वाह करने वाली वस्तुओं की भी आवश्यकता है। एशिया के मानसूनी प्रदेश के निवासी संसार के सब से सघन भागों के रहने वाले हैं।

यदि हम संसार की जनसंख्या के मानचित्र पर दृष्टि डालें तो हमें जनसंख्या की सघनता के तीन भाग भली भांति दृष्टिगोचर होंगे। यह तीनों भाग एशिया के मानसूनी प्रदेश, योरुप और उत्तरी अमरीका के पूर्वी भाग हैं। एशिया का मानसूनी प्रदेश सबसे बड़ा है और उसमें संसार की जनसंख्या का आधा भाग निवास करता है। इस प्रदेश के अधिकांश निवासी छोटे खेतों में कार्य करते हैं। इस भाग में कारखानों का काम अभी हाल में ही आरम्भ हुआ है इस लिये बड़े बड़े कारखाने नहीं हैं। जापान में भी अभी बहुत कम कारीगर तथा कारखाने में काम करने वाले लोग हैं। जापान के कारखाने अभी इंगलैण्ड जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कारखानों से बहुत पीछे हैं। इस बड़े प्रदेश के कई भाग हैं। प्रत्येक भाग के निचले मैदानों में सघनता अधिक है और वहां वर्षा तथा गर्मी भी अधिक होती है। भारतवर्ष में जनसंख्या की सघनता में बड़ी भिन्नता है। राजपूताने में प्रति वर्गमील में १३० और बंगाल में प्रति वर्गमील में ६०० मनुष्य निवास करते हैं। उत्तरी तंजौर के मैदान में सघनता और भी अधिक हो जाती है। चीन में सघनता के जो ६ प्रान्त हैं उनमें से ५ प्रान्त नदियों के बेसिन में स्थित हैं। उत्तरी, मध्यवर्ती और दक्षिणी भाग क्षेत्रफल में बराबर हैं परन्तु उत्तरी भाग की जनसंख्या केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ करोड़ है और मध्यवर्ती तथा दक्षिणी भाग की जनसंख्या १८ करोड़ है। जापान के अधिकांश निवासी ३७° अंश उत्तरी अक्षाँश के दक्षिण में रहते हैं। उस भाग में सबसे धनी तथा सघन प्रदेश डेल्टों में हैं। जापान के बड़े राष्ट्रीय नगर दक्षिण की ओर ही स्थित हैं।

योरुप और पूर्वी उत्तरी अमरीका में खेती मशीनों द्वारा होती है। वहां खेती व्यापार तथा रोजगार के ध्यान से की जाती है। योरुप में कोयले की खानों के साथ ही साथ उपजाऊ भूमि भी है। यह दोनों पट्टियां मध्यवर्ती ऊँचे प्रदेश, राइन प्रान्त, स्विटज़रलैंड, बेल्जियम और इंगलैंड में फैली हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जन-संख्या की सघनता शिकागो से न्यूयार्क तक है। इस प्रदेश में तीन बड़ी कोयले की खानें हैं। इस भाग में संयुक्तराष्ट्र के कारखानों का तीन चौथाई माल तयार होता है। इस भाग में बहुत अधिक रेलवे लाइनें हैं जो अटलांटिक सागरी बन्दरगाहों की ओर जाती हैं। अमरीका में योरुप की अपेक्षा आबादी की सघनता कम है। इस भाग में ५० नगर ऐसे हैं जिनकी जन-संख्या १ लाख से अधिक है। इस प्रकार की जन-संख्या इंगलैंड और जर्मनी में है। इसलिये प्राकृतिक रूप से इन तीनों देशों में किसी न किसी प्रकार का अन्तर्राष्ट्रीय संबन्ध होना आवश्यक है।

केवल आबादी की कमी के कारण ही कठिनाई नहीं है वरन् आबादी अधिक होने के कारण भी कठिनाई पड़ जाती है। यह कठिनाई जातीयता, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता की होती है।

समस्त संसार की जन संख्या में एक प्रतिशत की बढ़ती होती है। यदि इसी प्रकार बढ़ती होती रही तो १०० वर्षों में वर्तमान की दुगुनी आबादी हो जावेगी। क्या संसार इस बढ़ती के भार को संभाल सकेगा। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में माल्थून ने अपनी जन-संख्या के नियम संबन्धी विज्ञान में कहा था कि जब जन-संख्या में बराबर वृद्धि हो रही है और धरती की मात्रा अचल है तो फिर मनुष्य को भोजन कहां से प्राप्त होगा? इसमें शक नहीं कि विज्ञान शास्त्र के द्वारा अद्भुत नई खोजें की जा सकती हैं फिर भी कोई न कोई समय ऐसा आवेगा जब कि जन-संख्या की अधिक बढ़ती को रोकना पड़ेगा।

गत दो सौ वर्षों में श्वेत लोगों की जन-संख्या में अधिक वृद्धि हुई है। १७७० ई० में श्वेत वर्ग वालों की जन-संख्या एक करोड़ ५५ लाख थी। १९४० ई० में उनकी संख्या बढ़ कर ७ करोड़ ३० लाख हो गई। पश्चिमी राष्ट्रों में १९११ ई० तक जन संख्या में वृद्धि पैदा होने के कारण थी। भांति भांति की उन्नति होने के कारण इंगलैंड की आबादी १८०१--१८५१ ई० के बीच में दोगुनी हो गई। १९११ के बाद से पैदा होने वाले बच्चों की कमी हो गई है फिर भी पैदा होने वालों की संख्या मरने वालों से अधिक है, यही दशा और दूसरे पश्चिमी राष्ट्रों की भी है।

पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी योरुप में पैदा होने वालों की वृद्धि है और मरने वालों में कमी है। रूस की जन-संख्या १७ करोड़ है। इसमें ३० लाख प्रति वर्ष वृद्धि हो रही है। यदि यही दशा २०वीं सदी के अन्त तक जारी रही तो रूस की जन-संख्या ५० करोड़ हो जावेगी और पश्चिमी योरुप की जन संख्या में १५ करोड़ की कमी हो जावेगी परन्तु अब बढ़ने वालों की संख्या आधी हो गई है। प्रोफेसर कार सौंडर्स के अनुमान से भविष्य में इंगलैंड की जन-संख्या में घटती होती रहेगी।

सभी पश्चिमी राष्ट्रों की जनसंख्या परिवर्तनशील नहीं है। फ्रान्स की जनसंख्या लगभग समान थी। १९३१ ई० तक सीमा में परिवर्तन होते हुये जर्मनी की जनसंख्या में ६ करोड़ ४० लाख की वृद्धि हुई है जिसमें तीस लाख विदेशी भी शामिल हैं। फ्रांस ने अपनी कमी को पूरी करने के लिये विदेशियों को अपने यहां स्थान देना आरम्भ कर दिया। प्राकृतिक रूप से भी उन्होंने जन-संख्या बढ़ानी चाही परन्तु १९३२—३६ ई० के बीच केवल ६ हजार की वृद्धि हुई है। यदि हम इस वृद्धि की समानता कनैडा के फ्रान्सीसियों से करें तो हमें बड़ा विस्मय होगा। १७६७ ई० में क्यूबेक प्रान्त में ५० हजार फ्रान्सीसी थे आज उनकी संख्या ३० लाख है।

१७०० ई० में आयरलैंड की जनसंख्या २ लाख थी १८४५ ई० में उसकी जन संख्या ८० लाख हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई थी । उसके बाद वहां दुर्भिक्ष पड़ा और नाज की उत्पत्ति न होने के कारण ६ वर्ष में १० लाख गरीब किसान भुकों मर गये । भूक के भय से लोग आयरलैंड छोड़ कर भाग गये । १७ वर्ष के भीतर २० लाख आदमी संयुक्त राष्ट्र अमरीका चले गये । उसके बाद फसल के खराब होने से और लोग भी वहां गये । उन्नीसवीं सदी के अन्त में वहां की जन संख्या में ४० लाख की कमी हो गई थी । जब कि इँगलैंड की जन संख्या बढ़ रही थी । उसके बाद ब्रिटिश तथा आयरिश सरकार ने वहां की दशा में सुधार करने का प्रयत्न किया और अब वहां जन संख्या में बृद्धि हो रही है ।

योरुप वालों ने जो वस्तियां बसाई उनमें भी युद्ध, बीमारी और दूसरे कारणों से जन संख्या में कमी हुई है । तस्मानिया के निवासियों का अंत हो गया । एस्किमो, अमरीकन, इंडियन और आस्ट्रेलियन आदि में वृद्धि हुई है । मओरिस लोगों की संख्या•५० वर्षों में ६० हजार से घट कर ४५ हजार हो गई है । मर्क्वेसस की जन संख्या १०० वर्षों के भीतर• १६ हजार से घट कर ६०० हो गई है । गुलामों के व्यापार के कारण अफ्रीका की जन-संख्या में १० करोड़ की कमी हो गई है । अब अमरीकन इंडियन और अफ्रीका के निवासियों के बीच भी वृद्धि हो रही है ।

जन संख्या की तुलना करने में कठिनाई का उत्पन्न होना कोई आवश्यक बात नहीं है जैसा कि अमरीका और कनैडा के आपसी व्यवहार से साबित हो चुका है परन्तु फिर भी जब उसमें दूसरी बातें मिला दी जाती हैं तो अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े बढ़ जाते हैं । फ्रांस जर्मनी से भय खाता रहा है । जर्मनी को रूस से भय बना रहा है । आयरलैंड के प्रश्न तथा आयरलैंड की जन संख्या की बृद्धि और उन्नति के कारण अँग्रेज़ों को चिन्ता बनी रही है ।

प्रत्येक देश को अपनी बढ़ती हुई जन संख्या के कारण सालाना अपने राष्ट्रीय कार्यों का ब्योरा लगाना पड़ता है । सोवियट यूनियन को अपनी बढ़ती प्रजा के रखने के लिये स्वयम् अपने देश में काफी स्थान है । जापान और इटली में पर्वतों के कारण रहने योग्य स्थान प्राकृतिक रूप से कम हैं वहां अधिक उपज करने तथा सामान तयार करने की कोशिश की गई । विदेशी व्यापार बढ़ाया गया फिर भी उन्हें अपने लिये विदेशों में स्थान ढूंढ़ने की आवश्यकता प्रतीत हुई ।

इटली में गेहूँ की अधिक उपज होने के कारण आन्दोलन किया गया जिससे वहां की आवश्यकता की पूर्ति के लिये गेहूँ की उपज होने लगी है । दूसरी वस्तुओं की उपज बढ़ाने के लिये भी प्रयत्न किया गया है । वहाँ कारखानों की वृद्धि की गई जिससे इटली की गणना आज संसार के बड़े कारखाने वाले देशों में हो गई । फिर इटली ने विदेशों में अपना अधिकार जमाया और वहां अपने यहाँ के लाखों मनुष्यों को रहने का स्थान दिया ।

२० वर्ष पहले इटली के लोग अमरीका में जाकर बस जाते थे परन्तु अमरीका की सरकार ने एक कानून बना कर विदेशी लोगों का अपने देश में घुसना बन्द कर दिया है । इटली की सरकार ने भी एक नियम बना कर अपने यहां के निवासियों का विदेशों में जाकर बसना रोक दिया है । अब इटली के निवासी केवल अफ्रीका के इटैलियन प्रान्तों में जा सकते हैं । इस नियम का आशय यह है कि इटली की जनसंख्या में बृद्धि हो । इटली में ब्रह्मचारी मनुष्य पर कर लगा दिया गया है । जिन वंशों में कम बच्चे पैदा होते हैं उन्हें जुर्माना किया जाता है । अधिक बच्चे उत्पन्न करने वाले घरों को सरकार की ओर से सहायता मिलती है । १९३६ ई० में मुसोलनी ने घोषणा की थी कि यदि इटली को संसार में अपनी गणना करानी है तो उसकी जनसंख्या १९५० ई० तक ६ करोड़ अवश्य हो जानी चाहिये ।

मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई कारणों से जाता है । अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दफ्तर के विभाजन के अनुसार दो मुख्य कारण हैं । पहला तो यह कि मनुष्य मजदूरी अथवा खेती का काम करने के लिये अपने महाद्वीप के भीतर ही एक देश से दूसरे देश को चला जाता है और ऋतु के समाप्त होने पर फिर वापस चला आता है दूसरा कारण यह है कि जब मनुष्य को अपने देश में भोजन प्राप्त नहीं होता तो वह अपने देश को छोड़ कर दूसरे देश में जाकर अपने रहने के लिये घर बना लेता है । लोग सोना, धन और मुफ्त धरती तथा दूसरी लालचों के कारण भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना देश छोड़ कर दूसरे देश में जाकर अपना निवास स्थान बना लेते है। ब्रिटिश द्वीप समूह से जो लोग दूसरे देशों में जाकर बसे हैं उसके कई कारण हैं।

बर्तमान काल में योरुप और एशिया के मानसूनी प्रदेश के लोगों ने अपने देश छोड़ कर दूसरे देशों में अपने घर बनाए हैं। यह लोग प्रशांत महासागर के देशों में ही जाकर बसे हैं। यद्यपि बर्तमान समय में यह प्रयत्न किया जा रहा है कि कोई भी देश अपने यहां के निवासियों को दूसरे देश में न बसावे फिर भी यह काम पूर्ण रूप से रोका नहीं जा सकता। मानव जाति अपनी प्रकृति के अनुसार सदैव घूम-फिर लगाए ही रहेगी।

दूसरे देशों में जाकर बसने के साथ ही साथ नई बस्तियों का भी घनिष्ट सम्बंध हो जाता है। ब्रिटिश, डच, फ्रांसीसी आदि जातियों ने किस प्रकार अपनी बस्तियां बसाईं यह इतिहास से भली प्रकार विदित है। नव बस्तियों की नीति समय समय पर बदलती रही है। सब से उन्नति शील नीति आज कल वेस्ट-मिनिस्टर के इन्स्टीट्यूट की है। इस नियम के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत रह कर स्वतंत्र रूप से अपना काम करते हैं। उन्हें डोमीनियन राष्ट्र नाम दिया गया है।

नई वस्तुयों के बसाने में जिन उपायों का प्रयोग किया जाता है उनका अध्ययन करना भी प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। नई बस्ती बसाने के लिये अच्छे शासन धन और मजदूरों की आवश्यकता है। सरकार को नई बस्ती में आने जाने के साधनों की बृद्धि करनी पड़ती है उसे सस्ता और सरल बनाना पड़ता है, खेती के लिये सिंचाई का प्रबंध करना पड़ता है, सिंचाई भी सस्ती करनी पड़ती है। सरकार को शिक्षा विज्ञान आदि का भी भली प्रकार प्रचार करना पड़ता है।

इस प्रकार भूगोल की शिक्षा प्रदान करने के लिये अध्यापकों को आवश्यक है कि वह भारत के मान-चित्र के साथ ही साथ संसार का मानचित्र भी अपने साथ रक्खें और फिर संसार के मान चित्र में भारत का स्थान समझाते हुये विद्यार्थियों को भूगोल की शिक्षा प्रदान करें। सब से पहले भूगोल के विद्यार्थी को स्थान का ज्ञान होना आवश्यक है उसके बाद वहां की भूमि तथा जनसंख्या का बनाना जरूरी है क्योंकि इन्हीं बातों पर संसार के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रश्न निर्भर रहते हैं।

वर्तमान महासमर की प्रमुख घटनायें

१ अक्टूबर—१९४१ रूम सागर में जर्मन बम्बवर्षक विमानों ने ब्रिटिश पथरक्षक सेना पर आक्रमण किया। मास्को पर जर्मन विमानों ने आक्रमण किया जिसमें उसकी बड़ी हानि हुई।

२ अक्टूबर—नाज़ी सेना क्रीमिया की ओर बढ़ी। फिन सेना ने पेट्रोज़ावाडस्क पर अधिकार प्राप्त कर लिया। ईरान के भूतपूर्व राजा ने इरान छोड़ दिया। उसके सामान की तलाशी बन्दरअब्बास पर हुई। खरकोव रूसी नगर जर्मन आक्रमण द्वारा खतरे में हो गया। पोलटावा के मध्य भीषण युद्ध हुआ।

३ अक्टूबर—नाज़ी विमानों ने उजाली रात में ब्रिटिश तट पर आक्रमण किया। हिटलर ने रूसी युद्ध सम्बन्ध में अपना वक्तव्य दिया और बतलाया कि २५ लाख रूसी सेना गिरफ़्तार हो चुकी है। हिटलर ने अपने सहायक राष्ट्रों से शीतकाल के आक्रमण में सहायता के लिये अनुरोध किया।

४ अक्टूबर—लेनिनग्राड के सामने रूसी सेना जर्मन सेना का डटकर सामना किया। उत्तरी-पश्चिमी मोर्चे की ओर रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। इंगलिश चैनल ने नाज़ी पथरक्षक सेना तथा आसटेण्ड बन्दरगाह पर ब्रिटिश बम्बवर्षकों ने आक्रमण किया और एक जहाज़ को जला दिया। इंगलैंड के पूर्वी जिलों पर जर्मन बम्बवर्षकों ने आक्रमण किया।

५ अक्टूबर—दक्षिणी यूक्रेन में रूसी सेना ने आक्रमण किया। नीप्रोपेट्रोव्स्क स्थान पर भीषण टैंक युद्ध हुआ। करेलियन स्थमस पर नाज़ी सेना को विजय प्राप्त हुई। मास्को और लेनिनगाड पर भीषण बम्बवर्षा की गई।

६ अक्टूबर—उत्तर और दक्षिण रूसी सेना में धावा मारा। लेनिनग्राड से नाज़ी सेना पीछे हटा दी गई। दक्षिणी यूक्रेन ने रूसी सेना ने प्रत्याक्रमण किया।

७ अक्टूबर—खारकोव और खारकोव रूसी नगरों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर भीषण नाजी सेनायें बढ़ीं। उत्तर तथा दक्षिण दोनों ओर से जर्मन सेनायें मास्को की ओर बढ़ीं। हिटलर ने शीत काल के पहले ही वालगा तक पहुँचाने का निश्चय किया। रूम सागर में तेरह शत्रु जहाज डुबाये गये।

८ अक्टूबर—जर्मन सेना ने नया आक्रमण आरम्भ किया। मास्को की ओर नाजी सेनायें बढ़ीं। मध्यवर्ती क्षेत्र में भीषण युद्ध हुआ। रूज़वेल्ट ने कांग्रेस के नेताओं को सलाह दिया कि तटस्थता के नियम को बदल कर अमरीकन व्यापार के जहाज़ों को हथियार बन्द करना चाहिये।

जर्मन सेना का भीषण आक्रमण हुआ। व्याज़मा और ब्रीयन्स्क नगरों में लड़ाइयां हुईं। कई रूसी सेनायें घेर ली गईं। रूसी लोगों ने ओरेल को खाली कर दिया। टिमोशिन-को रूसी जनरल ने प्रत्याक्रमण करने की तयारी किया।

९ अक्टूबर—इंगलैंड, अमरीका और डच पूर्वी द्वीप समूह ने मिल कर जापान को तेल भेजना बन्द कर दिया। मध्यवर्ती रूसी सीमा पर भीषण संग्राम हुआ। जर्मन समाचार के अनुसार टिमोसिनको रूसी जनरल की सेना घेर ली गई। रूसी पूर्वी सीमा की स्थिति जटिल हो गई। नाज़ी समाचार के अनुसार ७० डिवीजन रूसी सेना घेर ली गई।

टर्की और जर्मनी के मध्य सामान परिवर्तन करने वाली संधि हुई।

१० अक्टूबर—अजब सागर के बन्दरगाहों पर नाज़ी अधिकार हो गया। जर्मन सेना मास्को की सड़क पर मास्को की ओर बढ़ी। व्याज़मा रण-क्षेत्र में नाज़ी सेना को सफलता प्राप्त हुई। लेनिनग्राड क्षेत्र में रूसी सेना ने प्रत्याक्रमण किया। रूस को सहायता देने के लिये अमरीका में बिल तयार करके सेनेट के सामने रक्खा गया।

११ अक्टूबर—तूला नगर (जो मास्को और ओरेल के मध्य में है) पर नाज़ी सेना का अधिकार हो गया।

२०० ब्रिटिश बम्ब वर्षक वायुयानों ने रुह प्रान्त पर धावा मारा। राटर्डम आस्टेएड और डंकिर्क के डाकों पर ब्रिटिश विमानों ने बम्ब वर्षा किया। तोबरक प्रान्त में नाज़ी टैंकों ने भ्रमण किया।

१२ अक्टूबर—मास्को नगर पर अधिकार करने के लिये रात दिन लगातार युद्ध होता रहा। ओरेल व्याज़मा और ब्रीयन्स्क के चारों ओर युद्ध हुआ। नवीं तथा अठार-हवीं रूसी सेना नष्ट कर दी गई। रूस की स्थाई सेना का अधिकांश भाग मध्यवर्ती क्षेत्र की ओर भेजा गया।

१३ अक्टूबर—जर्मन सेना ने रूस के रण स्थान में १४ हजार टैंकों का प्रयोग किया। जर्मन सेना सफलता पूर्वक मास्को नगर की ओर बढ़ती गई। २ लाख रूसी सेना पकड़ी गई। यूक्रेन में रोस्टोव नगर की ओर नाज़ी सेना बढ़ी। ब्रीयन्स्क नगर को रूसियों ने खाली कर दिया। लेनिन-ग्राड रणक्षेत्र में जर्मन सेना ने पुनः आक्रमण किया परन्तु आक्रमण रोक दिया गया। रूस की परिस्थिति जटिल हो गई।

१४ अक्टूबर—व्याज़मा नगर को रूसियों ने खाली कर दिया। मास्को रण स्थल से रूसी सेना पीछे हट गई। नाज़ी लोगों का कहना है कि उन्होंने ३ लाख ५० हज़ार रूसी सैनिकों को गिरफ्तार किया। लेनिनग्राड रणक्षेत्र में जर्मन आक्रमण तथा रूसी प्रत्याक्रमण हुआ।

बवेरिया, राइनलैंड तथा और दूसरे प्रान्तों पर ३०० ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया। अटलांटिक सागर में एक पुर्तगाली जहाज़ डुबाया गया।

ब्राएंस्क प्रान्त में कुछ जर्मन टैंक नष्ट कर दिये गये। मास्को से ६३ मील की दूरी पर नाज़ी सेना रोक दी गई। जर्मन तोपें मास्को रक्षक सेना की तोपों की पहुँच में आ गईं। रूम सागर में शत्रु के सामान ले जाने वाले जहाज़ों पर ब्रिटिश सबमेरिनों ने धावा मारा और तीन जहाज़ डुबा दिये।

१५ अक्टूबर—नार्वे तट के समीप शत्रु जहाजों पर ब्रिटिश विमानों ने आक्रमण किया। डच तट के लेहेवरे शत्रु डाक पर ब्रिटिश विमानों का आक्रमण हुआ। जापान के प्रधान मन्त्री ने एक सभा किया जिसमें जटिल राजनैतिक प्रश्नों पर विचार किया गया। भूमध्य सागर में ब्रिटिश जहाजों पर शत्रु हवाई टारपीडो ने धावा मारा परन्तु कुछ हानि नहीं हुई।

१६ अक्टूबर—मास्को की दशा शोचनीय हो गई। बहुत सी मशीनें आदि फौजी सामान नाजी सेना के हाथ लगा। जर्मन सेना मास्को से ६५ मील पश्चिम १०० पश्चिम और २०० मील दक्षिण की ओर तक पहुँच गई। कलीनिन, व्याजमा, ब्रीयन्स्क, ओरेल और यूक्रेन आदि रण-क्षेत्रों में घोर संग्राम हुआ।

१७ अक्टूबर—सोवियट सरकार ने मास्को छोड़ दिया नगर के बाहरी रक्षक क्षेत्र में आग लगा दी गई। जर्मन तथा रूस दोनों की बड़ी हानि हुई। रूमानिया की सेना ने ओडेसा बन्दरगाह में प्रवेश किया। ओडेसा की गलियों में युद्ध हुआ। काज़न रूस की नई राजधानी बनाई गई। लेनिनग्राड में रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान की सरकार में परिवर्तन हुआ। जापान की नई सरकार बनाई गई और कोनोये की सरकार ने स्तीफा दिया। नई सरकार के बनने से अमरीका पर आक्रमण की सम्भावना है। आइसलैंड के दक्षिण पश्चिम अमरीकन विध्वंशकारी जहाज़ डुबाया गया।

१८ अक्टूबर—जनरल तोजो ने जापान की नई सरकार बनाई। साइबेरिया अथवा दक्षिण की ओर जापानी आक्रमण की सम्भावना है। मन्चूरिया में दस लाख जापानी सेना एकत्रित की गई। ओडेसा नगर को रूसियों ने खाली कर दिया। मध्यवर्ती रणक्षेत्र की सीमा को तोड़ दिया। कलीनिन क्षेत्र में नाज़ी सेना का आगे बढ़ना रोक दिया।

१९ अक्टूबर—मास्को के चारों ओर दृढ़ किलेबन्दी की गई। रूसी सेना ने बड़ी बहादुरी के साथ शत्रु का सामना किया जिससे नाज़ी सेना की बड़ी हानि हुई। जर्मन सेना ने भीषण आक्रमण किया। रूस जवांमर्द बहादुरों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा अपना बलिदान चढ़ाकर किया। ओडेसा नगर बम्ब वर्षा के कारण अंगारों का ढेर बना दिया गया।

२१ अक्टूबर—मास्को नगर के सामने नाज़ी सेना रोक दी गई। रूसी सरकार कुजीरोव चली गई। रूसियों ने प्रत्याक्रमण करके कई नगरों पर अधिकार कर लिया। जर्मन सेना काकेशस की ओर बढ़ने लगी। उसका लक्ष्य रोस्टोव नगर पर है। मेलेसाइड प्रान्त में नाज़ी बम्ब वर्षकों ने आक्रमण किया। आइसलैण्ड के समीप उत्तरी अटलांटिक सागर में और दक्षिणी अटलांटिक में अफ्रीका के तट के समीप जर्मन सबमेरीन द्वारा अमरीकन जहाज डुबाये गये।

२२ अक्टूबर—मध्यवर्ती रणक्षेत्र में जर्मन सेना ने मोजिस्क स्थान पर रूसी लाइन तोड़ दिया। स्टालिनो नगर पर जर्मन सेना ने अधिकार कर लिया। मास्को का युद्ध पहले की भांति होता रहा। कलीनिन पर रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। जर्मन सेना का कहना है कि बाल्टिक सागर के डगोये द्वीप पर उन्होंने अधिकार कर लिया।

२३ अक्टूबर—तगनेराग नगर को रूसियों ने खाली किया। मास्को सीमा पर जर्मन सेना रोक दी गई। रूसियों का प्रतिकूल आक्रमण हुआ। डोनेज़ बेसिन की ओर जर्मन सेना बढ़ी।

जापानी सेना ने थाई सीमा के किलेबन्दी वाले स्थानों पर अधिकार कर लिया।

२४ अक्टूबर—मास्को की रक्षक सीमा को नाज़ी सेना ने तोड़ दिया। नाज़ी सेना मास्को से ६८ मील की दूरी पर रह गई। कलीनिन नगर की गलियों में युद्ध हुआ। क्रीमिया में नया आक्रमण आरम्भ हुआ।

जापान ने संयुक्त राष्ट्र से लड़ने की तयारी किया। जापान अपना घेरा डलवाने के लिये तयार नहीं है वह उसका विरोध अपनी पूरी शक्ति के साथ करेगा।

२५ अक्टूबर—संयुक्त राष्ट्र के पर राष्ट्र मन्त्री कर्नल नाक्स ने भाषण दिया कि जापान के दूसरे देशों में फैलाव की नीति के कारण सुदूर पूर्व में युद्ध की पूर्ण सम्भावना है। जर्मन सेना रोस्तोव नगर की ओर बढ़ी। मास्को नगर के लिये घोर संग्राम हुआ। क्रीमिया में नाज़ी सेना का प्रवेश रोक दिया गया। डोनेज प्रान्त जर्मन अधिकार में चला गया।

२६ अक्टूबर—नाज़ी सेना के समाचार के अनुसार खारकोव नगर पर नाज़ी अधिकार हो गया। डोनेज़ बेसिन में घोर संग्राम हुआ। मास्को सीमा पर नवीन नाज़ी सेना पहुँची। मोजेस्क प्रान्त में रूसी सेना ने प्रतिकूल आक्रमण किया। क्रीमिया में रक्षक लाइन तोड़ने के लिये नाज़ी सेना ने भरसक प्रयत्न किया।

आर० ए० एफ० (ब्रिटिश) विमानों ने नैपुल्स के ऊपर आक्रमण किया और हज़ारों पौण्ड के बम्ब गिराये।

२७ अक्टूबर—डोनेज़ बेसिन के लिये रूसी सेना तथा जर्मन सेना में घोर संग्राम हुआ। मालो-यारोस्लावेज़ के समीप रोक दिये गये। रोस्टोव और खारकोव नगर से रूसी सेना हटाई गई।

२८ अक्टूबर—खारकोव के समीप से सेना हटाई गई। मास्को से ४० मील की दूरी पर घोर संग्राम हुआ।

लेनिनग्राड रणक्षेत्र सीमा में स्थानीय विजय रूसियों को प्राप्त हुई।

ईरान होकर युद्ध-सामग्री ब्रिटिश सरकार द्वारा रूस भेजी गई। फिनलैंड की खाड़ी में दो सोवियट विध्वंसकारी जहाज़ डुबाये गये।

प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के जल सेना दिवस (नैवी डे) के दिन भाषण में कहा कि हिटलर का अमरीका सम्बन्धी गुप्त मानचित्र उसे मिल गया है जिससे हिटलर की अमरीका सम्बन्धी भावना का साफ तौर पर पता चलता है। रूज़वेल्ट ने अमरीकन तटस्थता नियम के रद्द करने की घोषणा की और कहा कि व्यापारिक जहाज़ों की रक्षा के लिये आवश्यक है कि जैसे ही शत्रु जहाज़ दिखलाई पड़े उस पर गोलों की बौछार आरम्भ कर दी जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order or British Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

ALLAHABAD.

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.) and Printed by K. P. Misra at the Bhugol Press, 243, Jumna Road, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

..., उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर,
...ग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में
...लिये स्वीकृत है।

...सम्बर, १९४१ ई० [अङ्क ८

...की विजय

बर्फीली पहाड़ियों, कंदराओं, तैरती बरफ की विशाल चट्टानों तथा बर्फीले तूफानों आदि का सामना करना पड़ा था। उसी ने पता लगाया कि उत्तरी अक्षांशों में उत्तरी ध्रुव से १२०० मील की दूरी पर एस्किमो जाति के लोग निवास करते हैं जो शिकार करने और मछली मारने पर ही अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

पीरी की वीरता का पता इसी से चलता है कि जब उसके जहाज़ ने एक बड़े बरफ के चट्टान से टक्कर खाया और उसी दुर्घटना में उसका पैर टूट गया तो भी उसने अपनी योजना नहीं बदली और डाक्टरों के मना करने पर भी वह अपनी उत्तरी ध्रुव की यात्रा जारी रखने पर ही डटा रहा। कुछ दिनों के पश्चात् वह स्मिथ साउण्ड में मेविल्ले की खाड़ी में पहुँचाया गया। उसके बाद उसने अपने जहाज़ को वापस कर दिया और अपना शीत काल एस्किमों के मध्य व्यतीत करने के लिये रहने लगा।

जैसे ही पीरी बाहर निकलने योग्य हो गया वह शिकार करने के लिये जाने लगा। वह दरियाई घोड़ों से किस प्रकार [illegible] उसका वर्णन उसने स्वयम् किया है। जब पीरी अपनी बोट पर शिकार के लिये जा रहा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHU

The only Geographical

Purpose : "Bhugol" aim
of Hindi literature and to stimula
Hindi language.

Contents : Articles are
graphical interest : Current Histo
Surveys, Travel and Exploration,
Animal Life. Climatic charts,
questions and answers are regular f
serial articles on regional and topica
of "Bhugol" any teacher of geo
reference material.

Travel Department :
gol" annually arranges tours which
for geography teachers and students
in India, Burma and Ceylon. Fu
application (with a stamped and ad

Use in Schools : The u
the geography instruction in high s
schools, is specially sanctioned by t
United Provinces, the Central P
and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah a

Remittances : Make all re
or British Postal Order, payable to the

Publishe l by the Editor (Pt. Ram Narain M
Bhugol Press, 243,

श्यक सूचना

कि अब भूगोल कार्यालय का निजी भवन कराह
है। अब तक भूगोल कार्यालय जमुना क्रिश्चिय
नम्बर पर था। कार्यालय का उद्घाटन बसन
स्थान पर होगा। अतएव भविष्य में पत्र व्यवहा
5, इलाहाबाद के पते पर करना चाहिये।

भवदीय
मैनेज

षय-सूची

	पृष्ठ
... ...	१
... ...	६
तें	७
... ...	८
... ...	९
... ...	१०
... ...	
... ...	१७
... ...	१८

यह
वर्ष
सौभ
उस
तक
और
पता
से
आ
उत्त
च्या
जिस
खो
उस
लग
ने
एक
है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूगोल

यह पत्र संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रान्त, बरार, बिहार, उड़ीसा, पंजाब प्रान्त तथा ग्वालियर, जैपुर, जोधपुर और कोटा राज्य के शिक्षा-विभाग द्वारा हाई, नार्मल और मिडिल स्कूलों में प्रयोग होने के लिये स्वीकृत है।

वर्ष १८] पौष, सं० १९९८, दिसम्बर, १९४१ ई० [अङ्क ८

उत्तरी ध्रुव की विजय

रिअर ऐडमिरल पीरी को उत्तरी ध्रुव की विजय का सौभाग्य प्राप्त है। राबर्ट पीरी अमरीका का निवासी था। उसका जन्म १८५६ ई० में हुआ और वह १९२० ई० तक जीवित रहा। उसने आर्कटिक वृत्त की खोज किया और उत्तरी ध्रुव में ६ अप्रैल सन् १९०९ ई० को पहुँचा।

जब राबर्ट पीरी ३० वर्ष का हुआ तो उसे ध्रुव की पता लगाने की चिन्ता उत्पन्न हुई। तेईस वर्ष की अवस्था से ५३ वर्ष की अवस्था तक में उसने आर्कटिक प्रान्त की आठ बार यात्रा की। प्रत्येक बार वह कुछ न कुछ अधिक उत्तर की ओर गया और खोज करके वापस हुआ। आठवीं बार उसने अंतिम यात्रा उत्तरी ध्रुव की किया जिसमें उसे सफलता प्राप्त हुई।

पीरी का मुख्य ध्येय उत्तरी ध्रुव की खोज थी परन्तु खोज के साथ ही साथ उसने और भी बहुत सी खोजें कीं। उसने हज़ारों मील लम्बे चौड़े आर्कटिक प्रान्त का पता लगाया और उसका मानचित्र तयार किया। राबर्ट पीरी ने ही आइसलैंड की खोज की और मालूम किया कि वह एक बड़ा द्वीप है जिसका क्षेत्रफल [illegible] वर्गमील है। आइसलैण्ड द्वीप के तटों के भ्रमण करने में उसे बर्फीली पहाड़ियों, कंदराओं, तैरती बरफ की विशाल चट्टानों तथा बर्फीले तूफानों आदि का सामना करना पड़ा था। उसी ने पता लगाया कि उत्तरी अक्षांशों में उत्तरी ध्रुव से १२०० मील की दूरी पर एस्किमो जाति के लोग निवास करते हैं जो शिकार करने और मछली मारने पर ही अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

पीरी की वीरता का पता इसी से चलता है कि जब उसके जहाज़ ने एक बड़े बरफ के चट्टान से टक्कर खाया और उसी दुर्घटना में उसका पैर टूट गया तो भी उसने अपनी योजना नहीं बदली और डाक्टरों के मना करने पर भी वह अपनी उत्तरी ध्रुव की यात्रा जारी रखने पर ही डटा रहा। कुछ दिनों के पश्चात् वह स्मिथ साउण्ड में भेविल्ले की खाड़ी में पहुँचाया गया। उसके बाद उसने अपने जहाज़ को वापस कर दिया और अपना शीत काल एस्किमों के मध्य व्यतीत करने के लिये रहने लगा।

जैसे ही पीरी बाहर निकलने योग्य हो गया वह शिकार करने के लिये जाने लगा। वह दरियाई घोड़ों से किस प्रकार [illegible] इसका वर्णन उसने स्वयम् किया है। जब पीरी अपनी बोट पर शिकार के लिये जा रहा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कुछ दरियाई घोड़े बरफ पर सो रहे थे। पीरी की नाव पर एस्किमो थे। एक एस्किमो ने भाले द्वारा एक दरियाई घोड़े पर वार किया इतने में सभी दरियाई घोड़ों ने नाव को चारों ओर से घेर लिया। वह अपने दांतों से उलटना चाहते थे। यदि वह नाव के उलटने में सफल होते तो शायद ही कोई व्यक्ति जीवित बचता परन्तु जो दरियाई घोड़े नाव के समीप आते थे उन पर पीरी और उसके साथी गोली चलाते जाते थे। चोट खाकर वह पानी के बाहर भाग जाते थे और उनके स्थान पर दूसरे दरियाई घोड़े आ जाते थे। इसी प्रकार लड़ाई कुछ स्थान तक चलती रही। आखिरकार पीरी की नाव किनारे लगी और उनकी जान बची।

वसंत ऋतु के आते ही पीरी एक नार्वे निवासी साथी के साथ ग्रीनलैण्ड के बर्फीले मैदान को पार करने के लिये चल पड़ा। उस समय तक एस्किमो लोग भी ग्रीनलैण्ड के आरपार का पता न लगा सके थे। २७ दिन तक यात्रा करने के बाद पीरी की भोजन सामग्री समाप्त हो गई। वह दूसरे तट की ओर शीघ्रता पूर्वक बढ़ रहे थे जिससे वहां पर सील मछलियां मिलें और वह अपनी भूक को शान्ति करें आखिरकार वह बरफ की पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गये। वह चोटी पर खड़े विस्मय पूर्ण दृष्टि से बरफ के मरुप्रदेश का अवलोकन करने लगे। उन्हें नीचे एक बड़ा विशाल मैदान दिखाई पड़ा। वह मैदान पौदों तथा वृक्षों से भरा था और बीच बीच में बरफ की सफेद चट्टानें दिखाई पड़ रही थीं। बनस्पति के मैदान में लोमड़ियों का समूह चर रहा था।

यह ग्रीनलैंड का उत्तरी भाग था। इस भाग में बरफ की चोटियों और विशाल हिमानियों के बीच में एक उपजाऊ घाटी थी। इस घाटी को एस्किमो लोग भी न जानते थे।

इस खोज से पता चल गया कि ग्रीनलैण्ड एक द्वीप है और उसके तथा उत्तरी ध्रुव के मध्य बरफ से ढका हुआ समुद्र है।

ध्रुव की यात्रा

जुलाई १६०८ ई० को पीरी उत्तरी ध्रुव की यात्रा के लिये रूज़वेल्ट नामक ज़हाज़ में रवाना हुआ। शेरीडन अंतरीप में उसने अपना शीतकाल व्यतीत किया। यह स्थान उत्तरी ध्रुव से केवल ४५० मील दूर है। इस स्थान पर तट से १५० गज़ की दूरी पर जहाज़ बरफ के मध्य फँसा था। तट, जहाज़ और चारों ओर वहां के जगत में बरफ ही बरफ थी। शीत हवाओं के झोंके तथा तूफान चलते थे। वहां का ताप शून्य तथा शून्य से ६० अंश नीचे था। ज्वार की चाल के साथही साथ खाड़ी में बरफ की विशाल शिलाओं के घरघराहट की भयानक आवाज़ होती थी।

जब बसंत ऋतु आया तो वहां से ६० मील की दूरी पर कोलम्बिया अंतरीप में अड्डा बनाया गया। वहां ७

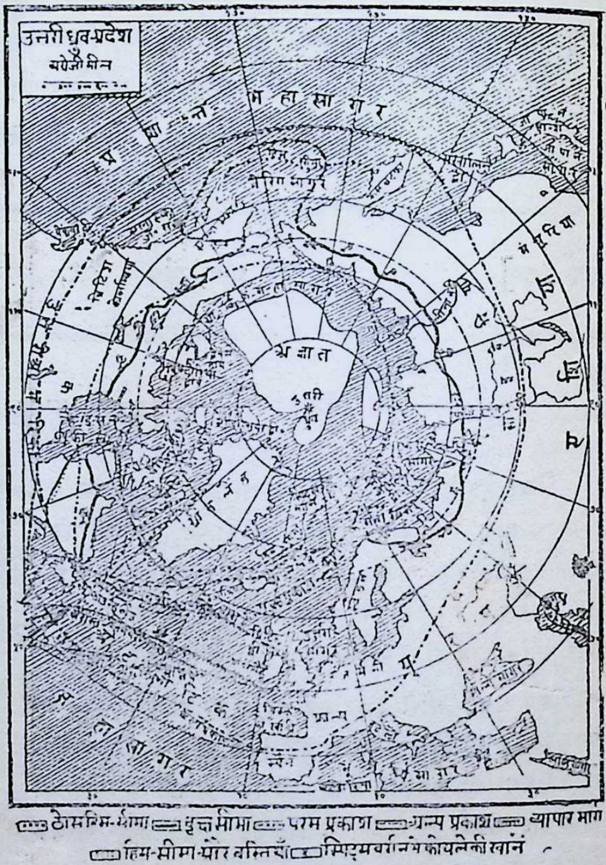

पीरी के आदमी, ५६ एस्किमो, १४० कुत्ते और २८ स्लेज (बरफ पर चलने वाली) गाड़ियां इकट्ठा की गईं। प्रत्येक स्लेज़ गाड़ी में भोजन बनाने के बर्तन, कुत्ते, ४ मनुष्य और ५० या ६० दिन के भोजन का सामान रक्खा गया।

पहली मार्च को बरफ का तूफान आया और उड़ती बरफ, आदमी तथा कुत्ते आंखों से ओझल हो गये। धीरे धीरे यह समूह अनेकों कठिनाइयों का सामना करता हुआ आगे बढ़ता गया और ८७ उत्तरी अक्षांश पर पहुँचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां ६ महीने तक दिन रहता है। इस प्रकार एक मास तक यात्रा जारी रही और एक के बाद दूसरा समूह रोज़ाना लौटता गया। आखिर पीरी उसका नौकर हेनसन और चार एस्किमो रह गये। उसके पास पांच स्लेज़ गाड़ियां, चालीस चुने कुत्ते और चालीस दिन के लिये भोजन सामग्री थी जब कि वह ध्रुव के अंतिम १३३ मील की यात्रा के लिये चला था।

दूसरी अप्रैल को आधी रात के बाद उन लोगों ने यात्रा आरम्भ किया। पीरी सबसे आगे चल रहा था। शीत ध्रुव प्रदेश की हवा चल रही थी। बरफ पर ही यात्रा करनी थी दूसरे दिन मार्ग में कुछ पानी होने के कारण उनकी यात्रा रुक गई थी। दो दिन के बाद वह एक ऐसे खुले जलाशय में पहुँचे जहां बरफ की एक विशाल

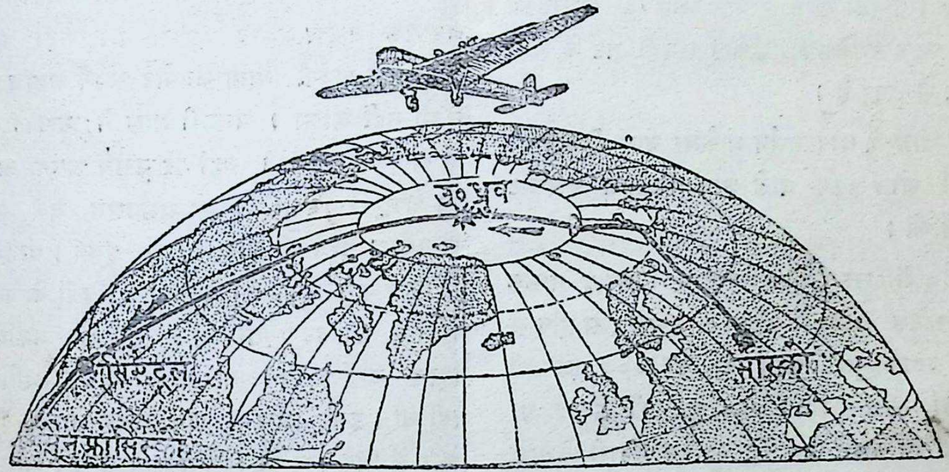

चट्टान थी। उस विशाल हिमानी को पार करके जैसे ही अंतिम स्लेज गाड़ी पार हुई वैसे ही धड़ाके के साथ हिमानी चकनाचूर हो गई। यदि एक मिनट पहले हिमानी चकनाचूर होती तो एक भी व्यक्ति जीवित न रहता। फिर भी वह २५ मील प्रति दिन की चाल से बढ़ते ही चले गये।

६ अप्रैल १६०६ ई० को पीरी और उसके साथी पोल पर जा खड़े हुये। यह उत्तरी गोलार्द्ध का वह स्थान था जिसका उत्तर, दक्षिण और पश्चिम संसार में नहीं है। आर्कटिक प्रदेश की यात्रा में पीरी एक रेशमी झंडा अपने शरीर में लपेटे था। यह झण्डा उसकी स्त्री ने उसे दिया था। इस झण्डे को निकाल कर पीरी ने ध्रुव की ऊँची बरफ की चट्टान पर गाड़ दिया।

ध्रुव के समीपवर्ती स्थानों में पीरी ने अपने ३० घंटे व्यतीत किये। ध्रुव से पांच मील की दूरी पर उसने सूराख करके ६००० फुट की गहराई की आवाज़ सुनी फिर भी तह का पता न चला। इस चार सौ वर्षों के कठिन परिश्रम के पश्चात् पीरी उत्तरी ध्रुव पर पहुंचा। चार सौ वर्ष के बीच में ७५५ आदमी उत्तरी ध्रुव के पता लगाने वाले नष्ट हो चुके थे।

वायुयान द्वारा ध्रुव की यात्रा

यूं तो वायुयान द्वारा भी कितने ही सज्जनों ने उत्तरी ध्रुव पहुंचने का प्रयत्न किया परन्तु सबसे पहले आर० ई० बोर्ड वायुयान द्वारा वहां पहुँचा था। वह स्पिट बर्गेन से ६ मई १६२६ ई० को उड़ा था। वह उत्तरी ध्रुव पहुँच कर १५ घंटे में वापस चला आया। उसके दो दिन के पश्चात् रोल्ड अमंडसेन अम्बेर्टो नोबाइल और लिंकन एल्सवर्थ स्पिटबर्गन से नोर्गे नामक इटली के विमान पर रवाना हुये और १६ घंटे में ध्रुव पर पहुँचे। उसके तीन घंटे के बाद अलास्का में उन्होंने प्वाइन्ट बैरो बनाया।

सर हर्बर्ट विल्किन्स ने अलास्का के अधिकांश अनजान स्थानों की खोज की थी। वह १६२८ ई० में अलास्का से स्पिटबर्गन को उड़ा और वहां २४ घंटे में पहुँचा था। यह दूरी १२०० मील की थी। उसी साल इटैलो नामक विमान में जनरल नोबाइल ध्रुव के लिये उड़ा। वह ब्रिडजेमन के अंतरीप ग्रीनलैण्ड के सबसे अधिक उत्तरी भाग में है। उसने बहुत से अजनबी प्रदेश का भ्रमण किया था। वह ध्रुव पर सरलता पूर्वक पहुँच गया था। लौटती बार अचानक दुर्घटना हुई और उसके जीवन का अन्त हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणी ध्रुव और अंटार्कटिक

जब पीरी के उत्तरी ध्रुव को खोज करने का समाचार संसार को विदित हो गया तो दक्षिणी ध्रुव की खोज करने की प्रबल इच्छा लोगों के हृदय में उत्पन्न हुई खोज करने वाले अँग्रेज़ों ने पहले ही विशाल अंटार्कटिक प्रदेश के किनारों की खोज कर ली थी।

१९०१ ई० में कैप्टन आर० एफ० स्टाक अपने समूह के साथ डिस्कवरी नामक जहाज़ में रवाना हुआ। यह जहाज़ बर्फीले प्रदेश की यात्रा के लिये खास तौर से तयार किया गया था। स्काट ने अंटार्कटिक में अपनी दो ऋतुयें व्यतीत कीं और किंग एडवर्ड सप्तम लैण्ड का पता लगाया और जहां पर ठहरा था वहां से ४०० मील तक की यात्रा किया। उसकी खोज से पता लगा कि अंटार्कटिक प्रदेश में एक पठार है जिसकी ऊँचाई समुद्री तट के आगे १० हज़ार फुट से ऊपर है।

स्काट की खोज के बाद जर्मन प्रोफेसर वान ड्रियाल्स्की तथा फ्रान्सीसी खोज करने वाले जान बैपटाइज़ चारकाट ने अपनी खोजें कीं।

१९०७ ई० में सर एर्नेस्ट शेक्लेटन निमरोद नामक जहाज़ में अंटार्कटिक प्रदेश में पहुँचा। उसने रास द्वीप के राइस नामक ज्वालामुखी पर्वत का १६,७०० फुट की ऊँचाई तक पता लगाया। १३,७०० फुट की ऊँचाई पर जब यह पहुंचा तो उसने देखा कि वह एक भीतरी विशाल प्राचीन ज्वालामुखी पर्वत के मुख पर खड़ा है। उसने दक्षिणी ध्रुव की ओर प्रस्थान किया और ८८°२३ दक्षिणी अक्षांश तक पहुँचा यह स्थान दक्षिणी ध्रुव से १२० मील की दूरी पर था। भोजन की कमी और बर्फीली आँधियों के कारण उसे विवश होकर लौटना पड़ा। इस यात्रा से सिद्ध हो गया कि उनकी पूरी तयारी के साथ यात्रा की जावे तो दक्षिणी ध्रुव का पता लगाया जा सकता है।

उसके बाद नार्वे के रोल्ड अमंडसन तथा इंगलैंड के कैप्टन स्काट ने दक्षिणी ध्रुव की यात्रा की और उसका पता लगाया। अमंडसन १४ दिसम्बर १९११ ई० को और स्काट १६ जनवरी १९११ ई० को दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचा।

अमंडसन को स्टाक की ध्रुव यात्रा की योजना का भली भांति पता लग चुका था। उसने शेक्लटन आदि के भूतपूर्व यात्राओं का भी भली भांति अध्ययन किया था इसलिये उसने समझ लिया था कि सबसे आसान मार्ग उसके लिये हेल्स की खाड़ी और रास बैरियर की खाड़ी होकर है। यह स्थान शेक्लेटन वाले मार्ग से १०० मील अधिक ध्रुव के समीप है। अमण्डसन के लिये केवल एक खतरा था कि कहीं उसका अड्डा बर्फीली चट्टान की भांति बह न जावे। स्काट ने शेक्लेटन की भांति शंचूरिया के छोटे घोड़ों को अपनी यात्रा के लिये उपयुक्त समझा था परन्तु अमंडसन पीरी की उत्तरी ध्रुव की यात्रा से प्रभावित था इसलिये उसने कुत्तों की स्लेज गाड़ियों पर अपनी यात्रा निर्भर किया।

अगस्त १९१० ई० को अमंडसन दक्षिण की ओर फ्रिडजोफ नेनसन के पुराने फ्रोम नामक जहाज पर चला। जब तक उसका जहाज मदीरा पार नहीं कर गया तब तक उसने अपनी यात्रा का भेद अपने जहाज के मल्लाहों से भी नहीं खोला। जनवरी मास में उसका जहाज ह्वेल की खाड़ी में पहुँचा। वहां पर उसने अपना अड्डा जमाया। १९ अक्तूबर १९११ ई० को अमंडसन चार स्लेज गाड़ियों पर दक्षिण ध्रुव की ओर रवाना हुआ। प्रत्येक गाड़ी में १३ कुत्ते जुते हुये थे। बर्फीली आंधियों के कारण उनकी यात्रा में रुकावट पड़ती थी। एक बार बर्फीले तूफान के कारण उन्हें ५ दिन तक अपनी यात्रा स्थगित भी करनी पड़ी थी। इसी बीच में उनकी एक गाड़ी हिमागार को दरार में गिर पड़ी थी। अमंडसन ने उसे शीघ्र ही निकाला यदि थोड़ी भी देर की जाती तो उसके आदमी तथा कुत्ते सदैव के लिये वहीं बरफ़ की तह में सो जाते। इस स्थान तक में वह शेक्लेटन के दक्षिणी स्थान को पार कर चुके थे।

खोज करने वालों के मुँह बरफ से ढक रहे थे। शीत इतनी विकराल थी कि हवा के लगते ही मुंह पर बरफ जम जाती थी। जैसे जैसे वह ध्रुव के समीप होते जाते थे उन्हें चिंता ग्रसित करती जाती थी कि कहीं वह अपनी महान यात्रा में असफल न हो जांय और घर भी लौट कर न जा सकें। १४ दिसम्बर १९११ ई० को दोपहर के बाद तीन बजे स्लेज गाड़ी के कोचवान के मुख से अचानक आवाज़ निकली "हम दक्षिणी ध्रुव पर पहुंच गये"। यह सुनते ही समूह के सभी लोग आनन्द से उछल पड़े। यह प्रथम खोज करने वाले थे जो दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमँडसन के चलने के पहले ही जून १९१० ई० में कैप्टन स्काट तेरानोवा नामक जहाज पर दक्षिणी ध्रुव की यात्रा के लिये चल चुका था। भयानक बर्फीले तूफान का सामना करने के पश्चात् वह इवान्स की अंतरीप (रास द्वीप) में पहुँचे। वहीं पर उन्होंने अपना शीतकाल का अड्डा बनाया। कैप्टन स्काट विज्ञान सम्बन्धी खोज करने में लग गया। पहली नवम्बर १९११ ई० को वह ध्रुव की ओर चला। १५ नवम्बर को वह वनठान कैम्प नामक स्थान पर पहुँचा। यह स्थान इवाँस अंतरीप से १३० मील की दूरी पर है। इस स्थान पर वह एक दिन तक रुक रहे। खोज करने वालों के पास भोजन की कमी हो गई थी इसलिये उन्हें अपने घोड़ों को मार कर खाना पड़ा। ५ दिसम्बर को बर्फीले तूफान के कारण चार दिन तक यात्रा स्थगित रखनी पड़ी। जब यात्रा आरम्भ हुई तो गहरी, मुलायम बरफ के कारण स्थिति और भी अधिक जटिल हो गई थी। ६ दिसम्बर को बियर्डमोर हिमागार के समीप उन्हें अपने बचे हुये टट्टू भी मार डालने पड़े।

उस हिमागार पर चढ़ना बड़ा कठिन प्रतीत हुआ। हिमागार की दरार बड़ी खतरनाक थी। बड़े दिन के दिवस उनका एक साथी ५०फुट गहरी और ८ फुट चौड़ी दरार में जा गिरा। उसे उन्होंने अलपाइन की रस्सी से बाहर निकाला। पठार समाप्त होने के पश्चात् सहायक समूह वापस लौट पड़ा।

अब खोज करने वाले समूह में कैप्टन स्काट, डाक्टर ई० एच० विलसन, लेफ्टीनेन्ट एच० जी० बोवर्स, कैप्टन एल० ई० ई० ओट्स और इवान्स शेष रह गये थे। ६ जनवरी १९१२ ई० को उन्होंने शैक्लटन के पहुँचे हुये सबसे दक्षिणी स्थान को पार किया और १६ जनवरी को वह दक्षिणी ध्रुव पर जा पहुँचे। उस स्थान पर जैसे ही वह पहुँचे उन्होंने विस्मय और निराशापूर्ण एक स्लेज गाड़ी पर नार्वे के लोगों का काला झंडा देखा। यह झंडा अमँडसन का था। इस प्रकार स्काट दक्षिणी ध्रुव के प्रधान पारितोषिक से वंचित रहा और अमँडसन को दक्षिणी ध्रुव पर सर्व प्रथम पहुँचने का गर्व प्राप्त हुआ।

लौटते समय अंग्रेज़ महाशयों को ८०० मील तक अपनी गाड़ियाँ खींच कर लानी पड़ीं। इवाँस और ओटस पाले तथा बरफ के कारण परेशान थे। फिर भी वह बियर्ड मोर हिमागार तक चले आये। ... इवाँस को इतना कष्ट पहुँचा कि उसकी मृत्यु हो गई। १८ दिन के बाद थके हुये लोग मध्यवर्ती बैरियर पर पहुंचे और उन्हें मालूम हुआ कि उनके पास तेल की कमी है। ओट्स को बरफ की सरदी के कारण बड़ी परेशानी थी। वह बहुधा बीमार रहता था। उसने देखा कि उसके कारण यात्रा में बाधा पड़ रही है और देरी होती जाती है। शायद उसके कारण अधिक देरी हो जावे और कैम्प पर आये हुये सहायक कुत्ते पुनः अड्डे को वापस चले जावें।

दूसरे दिन ओट्स सबेरे उठा। बर्फीला तूफान चल रहा था उसी दशा में वह बाहर घूमने चला गया। उसके साथियों ने मना किया परन्तु वह नहीं माना और वह फिर लौट कर नहीं आया और इस प्रकार उसके जीवन का अंत हो गया।

उसके बाद शेष व्यक्ति अपनी यात्रा कठिनाइयों का सामना करते हुये तय करते रहे। जब वह १६ मार्च को टोन कैम्प से ११ मील की दूरी पर पहुँचे तो एक बड़ा भयानक बर्फीला तूफान आया। आठ दिन तक लगातार तूफान चलता रहा और वह अपने डेरे से बाहर नहीं जा सके। २६ मार्च को स्टाक ने अपनी अंतिम डायरी लिखी आठ महीने के बाद डेरे के अन्दर उनके मृतक शरीर तथा डायरी मिली। डायरी में लिखा था "यदि हम जीवित रहते तो हम अपने परिश्रम, कठिनाई, साहस और सहनशीलता का ऐसा इतिहास अंगरेज़ जाति को सुनाते जिससे उसका हृदय उछल पड़ता। यह पत्र तथा हमारे मृतक शरीर हमारी कहानी की कथा सुनायेंगे।"

यद्यपि दक्षिणी ध्रुव पर लोग पहुँच चुके थे फिर भी अन्टार्कटिक प्रदेश के बहुत से भाग का बिलकुल पता न था। १९११ ई० में सर डगलस मासन ने भ्रमण किया और विक्टोरियालैण्ड तथा कैसर विलियम द्वितीय लैण्ड के मध्यवर्ती प्रदेश की खोज की। आजकल उस भाग को जार्ज पञ्चम तथा क्वीन मेरी लैंड कहते हैं।

१९११ ई० में शैक्लटन ने अंटार्कटिक प्रान्त का भ्रमण किया। उसने ३८०० मील लम्बे प्रान्त की खोज की। वह एक द्वीप में पहुँचा जिसका पता संसार को न था। उस द्वीप का नाम उसने केर्ड तट रक्खा। उसके बाद उसका इडयोरेंस जहाज बरफ में फँस गया। उसका जहाज वेडेल सागर में फँसा था। वहीं जहाज़ नष्ट हो गया और वह लोग एलीफेण्ट द्वीप में पहुँचे। यह द्वीप शेटलैंड के दक्षिण की ओर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्लेटन ने सोचा कि वहां पर वह अपनी शीतकाल की ऋतु न व्यतीत कर सकेगा इसलिये वह एक नाव पर अपने कुछ चुने साथियों के साथ ७५० मील तक तूफानी समुद्र में दक्षिणी जार्जिया तक गया। मौसम खराब होने के कारण द्वीप के दक्षिणी भाग में उसे नाव ठहरानी पड़ी। वह उस द्वीप के तट का भ्रमण करते हुये उत्तर की ओर जाना चाहते थे। नाव खड़ी करके शैक्लेटन अपने दो साथियों को साथ लेकर द्वीप को पार करने के लिये चल पड़ा। वह ४००० फुट की ऊँचाई पर हिमागार और बरफ के मैदानों के मध्य ३६ घंटे तक लगातार चलता रहा।

३० मील की यात्रा के बाद उन्हें स्ट्रोमनेस ह्वेलिंग स्टेशन मिला। स्टेशन पर पहुँचते ही उन्होंने दो बालकों को देखा जो उन्हें देख कर भाग खड़े हुये। शैक्लेटन आदि की सूरत बाल बढ़ने तथा कपड़ों की गंदगी आदि के कारण बिगड़ गई थी इसी कारण स्टेशन के प्रबन्धकर्ता ने भी नहीं पहचाना यद्यपि वह शैक्लेटन से परिचित था। शैक्लेटन के बोलने पर प्रबन्धकर्ता ने उसे पहिचाना और फिर उसे तथा उसके साथियों को भोजन तथा कपड़े दिये और एलीफेण्ट द्वीप में रुके लोगों को भी सहायता पहुँचाने का प्रबन्ध किया।

१९२१ ई० में शैक्लेटन फिर दक्षिण की ओर गया परन्तु इन्फ्लूएँज़ा से बीमार होगया और जार्जिया के दक्षिण जनवरी में उसकी मृत्यु हो गई। वहीं द्वीप में उसकी समाधि है।

उसके बाद से अंटार्कटिक प्रदेश का मानचित्र तथा चार्ट बनता चला आ रहा है। उसके बाद बिमानों की सहायता से १९२८-२९ में दक्षिण की चार यात्रायें की गईं। उनकी खोज से पता चलता है कि किंग एडवर्ड सप्तम के लैण्ड के पोछे बीर्डलैंड है। एडमिरल बीर्ड विमान द्वारा दक्षिणी ध्रुव गया था और वापस भी चला आया था। सर हबर्ट विल्किंस ने बतलाया कि ग्राहमलैंड के दक्षिण हर्स्टलैंड है। सर डगलस मासन ने पता लगाया कि हैम्पलैंड के पूर्व मेकराबर्टसन लैंड हैं। इस प्रकार अंटार्कटिक प्रान्त का मानचित्र धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

हिटलर के इंजीनियर

समाचार पत्रों से विदित होता है कि समीपवर्ती भविष्य में हिटलर का जो आक्रमण रूस पर होगा वह सबसे अधिक विकराल तथा भयानक होगा। इस प्रकार के आक्रमण के लिये अधिक सैनिक तयारी की भी आवश्यकता है और इसी लिये रूसी आक्रमण में हिटलर का काफी समय लग रहा है।

इस आशय का ठीक ठीक पता जर्मन इंजीनियरिंग पत्र से पता चलता है। यह पत्र टाड-संस्था का समाचार विदित करता है। इंजीनियरों की टाड संस्था ने ही हिटलर की बड़ी मोटर वाली मजबूत सड़कें तयार की। फ्रान्स के पतन होने के पश्चात् इस संस्था ने चीन तट पर क़िलों की जंजीर बनाई है। पूर्वी सीमा पर युद्ध होने के कारण यह संस्था जर्मन सेनाओं के साथ ही साथ पूर्व की ओर चली गई है।

यह संस्था इस समय मास्को तथा लेनिनग्राड को जर्मनी से मिलाने के लिये नई सड़कें तथा रेलवे लाइनें बना रही है। यह सड़कें तयार हो जाने पर लेनिनग्राड और मास्को का युद्ध फिर आरम्भ हो जावेगा।

लाखों की संख्या में चतुर सड़क बनाने वाले काम कर रहे हैं। उनकी सहायता के लिये बाल्टिक राज्यों के मजदूर तथा स्वयम् सेवक हैं। सभी काम करने वालों को सड़क बनाने के आधुनिक औजार दिये गये हैं। सड़क बनाने वाले बमें, बिजली के हथौड़े और स्टीम रोलरों द्वारा नई सड़कें बनाई जा रही हैं।

यह संस्था रूसी रेलवे लाइनों को नैरो गाज (एक गाड़ी चलने वाली रेलवे) लाइन में बदल रही है। बर्लिन और स्मोलिंस्क के मध्य सड़क तयार होने के कारण रात दिन रेलगाड़ियां चला करती हैं। जर्मन लोगों का कहना है कि पूर्वी युद्ध के समाप्त होने के पहले ही वह जर्मनी और रूस के मध्य कई रेलवे लाइनें बना सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ रक्षक जहाज़ों (केनवाय) की कुछ गुप्त बातें

पथ रक्षक सेना रायल नैवी द्वारा बनाई हुई योजना के अनुसार कार्य करती है। यह सेना नियत किये हुये बन्दरगाहों पर रक्खी जाती है। जिस मार्ग से होकर पथ रक्षक सेना को जाना होता है उस मार्ग पर पथ रक्षक सेना के जहाज़ अपने नियत बन्दरगाहों से धीरे धीरे एकत्रित होते हैं। पथ रक्षक सेना के जहाजों को ज्वार भाटा को गड़बड़ी के कारण एकत्रित होने में काफी समय लग जाता है और कभी कभी तो उन्हें तयार होने में महीनों का समय लग जाता है।

पथ-रक्षक सेना के जहाजों की चाल सब से कम चलने वाले जहाज के बराबर रखनी पड़ती है। इस लिये किसी भी पथ-रक्षक सेना के सभी जहाजों की चाल बराबर होनी आवश्यक होती है। इसी कारण ब्रिटिश जहाजी बेड़े के पास तेज़ और सुस्त दोनों प्रकार की पथ-रक्षक जल सेनाएँ हैं। तेज़ चलने वाले पथ-रक्षक सेना के तेज जहाज १५ नाट वाले लाइनर जहाजों के साथ चलते हैं और सुस्त चलने वाले पथ रक्षक जहाज ९ नाट वाले जहाजों के साथ चलते हैं।

पथ रक्षक सेना वाले जहाजों में रोशनी के ऊपर पर्दे पड़े रहते हैं, प्रकाश किसी प्रकार भी बाहर से देखा नहीं जा सकता है। कैबिनों (छोटे कमरों) के भीतर जो लाइट (रोशनी) रहती है उससे और कैबिन के द्वार से बिजली की स्वीच का कुछ ऐसा सम्बन्ध रहता है कि द्वार खोलते ही कैबिन के भीतर का प्रकाश आप से आप बुझ जाता है।

पथ रक्षक जहाजों के पुल, पहिये वाले घर, इंजिन के स्थान आदि की रक्षा के लिये वहां पर बालू के बोरे रक्खे जाते हैं। जहाज के मालिक और उनकी स्त्री को टीन की टोपी दी जाती है। जहाज के समस्त मल्लाहों के पास गैस-मास्क (गैस से बचने का यंत्र) रहता है। उन लोगों के पास आग लगाने वाले बमों से बचने और हवाई आक्रमण से रक्षा करने के लिये प्रत्येक भांति के सामान रहते हैं।

पथ रक्षक जहाजों के अगले और पिछले भागों में जहाज का नाम लिखा रहता है जिससे जब डाक में जहाज ठहरता है तो बन्दरगाह के अफसर उसे भली-भांति जान सकें। जहाज का नाम काले तख्ते पर लिखा रहता है। जब जहाज चलने लगता है तो यह तख्ता उतार कर रख लिया जाता है।

पथ-रक्षक वाले जहाजों में एक प्रकार की खतरे की घड़ी रहती है। इस घड़ी के चेहरे पर कुछ रुकने के चिन्ह लगे रहते हैं। इन रुकावट वाले चिन्हों का हिसाब ऐसा होता है कि प्रत्येक १० मिनट या जितने समय में इच्छा हो घंटी बजाई जा सकती है। सभी जहाजों की घड़ियां एक सी होती हैं। इस लिये जब पथ रक्षक सेना के जहाज घूमते हैं तो प्रत्येक जहाज के कप्तान को घंटी द्वारा संकेत कर दिया जाता है कि उसके जहाज को किस समय घूमना पड़ेगा। इस प्रकार से सभी जहाज सरलतापूर्वक बिना एक दूसरे से टक्कर खाये हुये घूम जाते हैं।

कुहरे के समय में जहाज अपने सामने वाले जहाज को भी नहीं देख सकते हैं इस लिये ऐसी दशा में एक दूसरे से लड़जाने का बड़ा भय रहता है। जहाजों के अपने बीच में लड़ने से बचने के लिये काफी दूरी रखनी पड़ती है। इसके लिये प्रत्येक जहाज के पिछले भाग में चमकदार रंग से रंगी हुई लकड़ी का एक लम्बा पीपा होता है। इस पीपे को फाग ब्वाय कहते हैं। पीछे वाला प्रत्येक जहाज इस फाग-ब्वाय के समीप रहने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार प्रत्येक न दिखलाई पड़ने वाले जहाजों का स्थान नियत रहता है। इस प्रकार जहाजों को रखना सरल कार्य नहीं है परन्तु प्रत्येक जहाज के कैप्टन को मालूम है। कि यदि ऐसे समय उसका जहाज अकेला हो जावेगा तो वह यू-बोट का शिकार अवश्य ही हो जावेगा।

प्रत्येक जहाज के ऊपर धुयें फेंकने के लिये खास यंत्र जहाज के डेक पर होते हैं। जब शत्रु जहाज पीछा करता है तो इनके द्वारा घना धुंवा बाहर जहाज के पीछे फेंका जाता है जिससे शत्रु के जहाज से बचने में सहायता होती है।

पथ रक्षक सेना के साथ विध्वंस कारक और दूसरे बचाने वाले जहाज भी रहते हैं जो शत्रु-जहाज के आने पर उसका सामना करते हैं और पथ-रक्षक सेना को बचाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ रक्षक सेना पर शत्रु के आक्रमण का अधिक भय रहता है परन्तु फिर भी सामान ले जाने वाले जहाजों की रक्षा और किसी दूसरे रूप होनी कठिन है। अकेले जहाज की इस प्रकार रक्षा करना असम्भव है।

ब्रिटेन के कुछ व्यापारिक जहाजों में उनकी रक्षा के लिये युद्ध सामग्री तथा हथियार रहते हैं। बचाने वाले जहाजों की तोपों के साथ साथ व्यापारिक जहाज जब अपने बचाने वाले अस्त्रों का प्रयोग हवाई आक्रमण के समय करते हैं तो बम वर्षक वायुयानों के लिये कठिन हो जाता है कि वह जहाज पर ठीक निशाने पर बम गिरा सकें। इसी कारण बहुत से जल सेना के विशेषज्ञों का कहना है कि पथ रक्षक सेना से यू-बोटों और हवाई आक्रमण दोनों का भय कम हो गया है।

जीवन नौका

प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि जीवन नौका किसे कहते हैं। यह एक बड़ी मजबूत नाव होती है जो तूफान या समय या संकट काल में मल्लाहों को डूबे हुये या फटे हुये जहाजों से बचाने के काम आती है।

शायद तुम्हें कभी ऐसा अवसर प्राप्त हो कि जब तुम देखो कि जीवन नौका समुद्र में उतारी जाती है। वह समुद्र में पहले अभ्यास के लिये उतारी जाती है। उसका दृश्य बड़ा सुहावना होता है।

यह नाव इतनी बड़ी है कि नाव खेने वालों के अलावा इसमें और भी बहुत से मनुष्यों का समावेश हो सके। जीवन नौका को बहुत मजबूत भी होना चाहिये जिससे वह उन बड़ी लहरों के धक्के को संभाल सके जिनके धक्के से बड़े बड़े जहाज चकनाचूर हो जाते हैं।

जीवन नौका बड़ी हल्की होती है। हल्के होने के कारण यदि यह उलट जाती है या इसमें बड़ी लहरों से पानी भर जाता है तो यह पुनः ठीक हो सकती है और डूबती नहीं है।

इस नाव के चारों ओर रस्सी के फंदे लगे रहते हैं। वह रस्सी द्वारा नाव में बँधे रहते हैं जिससे कि वह नाव से गिर न सकें। इस नाव की पालें छोटी परन्तु बड़ी मजबूत बनाई जाती हैं जिससे तेज हवा में भी फट न सकें।

जीवन नौका के मल्लाह चौड़ी पेटियां या जाकेट पहिनते हैं। पेटियों या जाकेट में कार्क के टुकड़े लगे रहते हैं। यदि कोई व्यक्ति समुद्र में अचानक गिर जाता है तो वह कार्कों के कारण डूबता नहीं है वरन् पानी पर तैरता रहता है।

कभी कभी जीवन नौका के मल्लाह उसे बन्दरगाहों पर यह दिखलाने के लिये उलट देते हैं कि वह स्वयम् कितनी जल्दी फिर ठीक सीधी हो जाती है। उस समय तुम देखोगे कि उसके आदमी पानी में भीग जाते हैं, उनके कपड़ों तथा शरीर से पानी चूता रहता है परन्तु फिर भी वह अपने स्थानों में चिपके रहते हैं। यह वहाँ देखने वाले बच्चों के लिये एक बड़ा उपहास होता है।

क्या तुम शीत काल की अँधेरी तूफानी रात में जीवन नौका के बहादुर मल्लाहों की दशा का अनुमान कर सकते हो? सचमुच ही वही समय होता है जब कि उनकी कुशलता तथा वीरता की पूर्ण परीक्षा होती है।

अँधेरी भयानक रात में जब कि किसी खतरे में पड़े हुये जहाज की रोशनी किनारे पर दिखाई पड़ती है तो शीघ्र ही जमामर्द मल्लाह जीवन नौका को निकालते हैं। वह अपनी कार्क वाली जैकेट पहिनते हैं, अपनी नौका को पानी में उतारते हैं और तूफान में अपना मार्ग समाप्त करके संकट में पड़े हुये जहाज के पास जा पहुँचते हैं।

जहाज़ के पास जाकर वह डूबते हुये जहाज़ के आदमियों को अपनी नावों में उतार उतार कर बैठाते हैं। तूफान के समय यह कार्य करना बड़ा कठिन है। जहाज़ के मनुष्यों को अपनी नावों में बैठा कर वह फिर किनारे की ओर अपनी नावें खे कर लाते हैं। इस प्रकार वह डूबते जहाज़ के मनुष्यों को बचाते हैं।

यह सोचने की बात है कि जीवन नौका के मल्लाह कितने बहादुर होते हैं जो अपना जीवन खतरे में डाल कर दूसरों का जीवन बचाते हैं। जिन लोगों के लिये वह अपना जीवन खतरे में डालते हैं शायद उन्हें कभी वह अपनी आंखों से भी नहीं देखे रहते हैं। जीवन नौका के मल्लाह आदर तथा कृपा के पात्र होते हैं।

जब हम किसी जीवन नौका के मनुष्य के अच्छे कर्मों (दूसरों के जीवन बचाने) का वर्णन पढ़ते हैं तो हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालूम होता है कि जीवन नौका के मनुष्य वैसे ही सूरमा होते हैं जैसे कि रण क्षेत्र के विजई सूरमा होते हैं।

मल्लाह अपने मोटे कपड़े तथा भारी बूट, जूतों के कारण शायद हमें सूरमा न प्रतीत हो तो यह सम्भव है क्योंकि किसी भी सूरमा को हम देखते ही नहीं पहिचान सकते हैं, किसी भी वस्तु को केवल देखने मात्र से ही उसके गुणों की पहिचान नहीं कर सकते हैं। गुणों की पहिचान तो परीक्षा के समय ही होती है।

जर्मनी के तेल का व्यय

जर्मनी रूस के तेल के कुओं पर अधिकार प्राप्त करने के लिये बढ़ रहा है और उसमें अपने तेल का व्यय कर रहा है। जर्मनी रूस में अपनी मशीन वाली सेना में कितना तेल व्यय कर रहा है इसका लेखा पहले कभी भी नहीं लगाया गया। उसके पास कितना तेल है वह कम है या अधिक, इस बात को किसी भी विदेशी (जर्मनी के भी कुछ गिने चुने लोगों को छोड़ कर) के लिये ठीक ठीक कहना असम्भव है।

फिर भी प्राप्त समाचारों पर अनुमान लगाना सम्भव है। यहां पर उन्हीं प्राप्त समाचारों पर अनुमान लगाये गये हिसाब का ब्योरा दिया जाता है।

इस समय जर्मनी अपनी पूर्वी सेना में ६ हजार ३ सौ टैंक, ७० हज़ार से अधिक लारियाँ तथा दूसरी गाड़ियाँ, ३७५० मोटर साइकिलें का प्रयोग कर रहा है। सेना को युद्ध सामग्री और रसद पहुँचाने के लिये भी बहुत सी लारियों का प्रयोग हो रहा है।

हिसाब लगाने से पता चलता है कि टैंकों के लिये ८,४०,००० मन और हथियार बन्द गाड़ियों, लारियों तथा मोटर साइकिलों के लिये ४६,००,००० मन माहवार लकड़ी की आवश्यकता है।

विमानों के खर्च का ब्योरा लगाने में इस बात का ध्यान रक्खा जा रहा है कि लफ़्टवाफ़े के केवल ४००० विमान पूर्वी सीमा पर लड़ रहे हैं। इनमें से प्रत्येक विमान का प्रति घंटे आधा पौंड खर्च है।

यदि इनमें से एक हजार द इंजिन वाले बम्ब वर्षक और एक हजार एक इंजिन वाले लड़ाका विमान हैं और वह तीन घन्टे प्रति दिन आते हैं तो उनका माहवारी खर्च २८,८०,००० मन होगा। २,८०,००० मन इसके अलावा लगभग २,८०,००० मन मोटर लकड़ी का प्रयोग लफ़्टवाफ़े दूसरे सामान ले जाने वाले जहाजों का होगा।

इसी के साथ साथ बाल्टिक सागरी तथा काला सागरी जर्मन जहाजी बेड़े और रूमानी, हंगेरियन और फिनिश सेना का खर्च मिला कर लगभग १४,००,००० मन प्रति मास होगा। रूमानी, हंगेरियन और फिनिश सेनाओं को भी जर्मनी द्वारा सामग्री मिलती है।

रूसी आक्रमण में जर्मनी का माहवारी तेल का खर्च ८४,००,००० मन प्रति मास है। इसी में ४२०,००० मन लुब्रिकेटिंग तेल भी शामिल है।

जर्मनी ने जिन योरुपीय देशों पर अधिकार जमा रक्खा है वहाँ से उसको प्रति मास २५२,००,००० मन तेल प्राप्त हो सकता है। इस मात्रा में कच्चे तेल, Synthetic तेल और तेल के स्थान पर जलाई जाने वाली लकड़ी की मात्रा भी शामिल है।

इस प्रकार नाज़ी योरुप के पास १६८,००,००० मन तेल प्रति मास शेष रह जाता है। यह तेल वहां के नागरिकों के खर्च के लिये भी काफी नहीं है। फिर हिटलर को अधिकार किये हुये देशों की जर्मन सेना को भी तेल देना पड़ता है। उसे अटलांटिक सागरी युद्ध के लिये भी तेल पहुँचाना पड़ता है।

इससे प्रतीत होता है कि वह अपने जमा किये हुये तेल के भंडार से तेल निकाल रहा है। नाज़ी संस्था के प्रधान अफ़सरों ने कहा है कि हमारी आवश्यकता के लिये हमारे पास काफी तेल है अब भविष्य में चल कर यही देखना है कि उनके पास आवश्यकता के लिये काफी तेल है अथवा नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेंकूवर का बन्दरगाह

वेंकूवर ब्रिटिश कोलम्बिया का व्यापारिक केन्द्र है। यह कनाडा का तीसरा बड़ा नगर है। यह नगर एक प्रायद्वीप पर स्थित है और जार्जिया जलडमरूमध्य के भीतर की ओर घुसा है। इस की बस्ती एक ओर और मुख्य नगर दूसरी ओर हैं। दोनों भागों के बीच में इंगलिश खाड़ी है। यहीं पर ९०० एकड़ लम्बा एक पुराना बन है जो स्टैनली पार्क के नाम से प्रसिद्ध है।

वेंकूवर की उत्पत्ति तथा उत्थान का इतिहास बड़ा अनोखा है। सोलहवीं सदी के अन्त में फ्रान्सिस ड्रेक उत्तरपूर्व के मार्ग का पता लगाता हुआ वाशिंगटन और ओरेगन खाड़ी के किनारे आ पहुँचा। उसने इस तट का नाम "नवीन अल्बियन" रक्खा था। १६७८ ई० में केप्टन कुक नूटका नामक स्थान पर (जो वेंकूवर द्वीप के पश्चिमी तट पर है) पहुँचा। इस समुद्री तट के पता लग जाने से फर (नमदा) का व्यापार होने लगा और उत्तरी प्रशांत महासागर में व्यापारिक जहाजों की दौड़ होने लगी। १७८८ ई० में कैप्टन जान मिअरेस ने फर (नमदा) के व्यापार का एक केन्द्र नूटका स्थान में खोला। कुछ समय के पश्चात् स्पेन वालों ने इस पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार नूटका स्पेन के जहाजी बेड़े का अड्डा होगया किन्तु १७९० ई० की नूटका की संधि के अनुसार यह अँग्रेजों के हाथ में आ गया।

इसके दूसरे वर्ष कैप्टन जार्ज वेंकूवर डिसकवरी और चैथम नामक जहाज ले कर वेंकूवर तट की ओर चला। वेंकूवर अप्रेल १७८९ को रवाना हुआ। इस सरकार की ओर से आज्ञा मिली थी कि वह किनारे किनारे पता लगावे कि कौन कौन से देश, नगर अथवा जगहें अँग्रेजों के पास हैं और उनपर अधिकार भी करता जावे। १३ जून १७९२ ई० को वेंकूवर प्रास्पेक्ट प्वाइन्ट नामक स्थान पर पहुँचा। इसका नाम वेंकूवर ने बुर्रार्ड खाड़ी रक्खा। यह खाड़ी २० मील लम्बी है। आज बर्तमान समय में इस खाड़ी होकर १७००० जहाज प्रति वर्ष संसार के प्रत्येक भाग से आते जाते हैं।

बर्तमान समय में वेंकूवर बन्दरगाह में ५५ समुद्री जहाजी लाइनें हैं। १९३४ ई० में इस बन्दरगाह में १,१४,८८,३५२ टन (लगभग २१ करोड़ मन) सामान उतारा गया। यह हार्बर ४८ बर्गमील क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यह दुनिया के बड़े प्राकृतिक बन्दरगाहों में गिना जाता है। इस बन्दरगाह का समुद्री तट ९८ मील है। समुद्री जहाजों के घाट, टर्मिनल्स (जहाजी तथा रेलवे अड्डे) गल्ला उतारने रखने के स्थान, सामान सुरक्षित रखने के लिये ठंडे स्थान, चीनी साफ करने के कारखाने, जहाजों के मरम्मत करने के स्थान, ड्राई डाक्स (सूखे घाट) आदि जगहें सभी तट पर स्थित हैं। इसके सिवा तेल साफ करने के कारखाने, लोहे के कारखाने, रेल तथा जहाजों के सामान तयार करने के कारखाने आदि भी हैं। वेंकूवर में रसाइन, कागज, तार आदि बनाने के भी बड़े बड़े कारखाने हैं।

बुर्रार्ड खाड़ी के जङ्गली तट १८६२ ई० तक बेकार पड़े रहे। १८६२ ई० में जानमार्टन, सामब्राईहाऊस और विलियम हेलस्टोन नामक युवक यार्कशायर से आये। यह लोग ग्रेटईस्टर्न नामक स्थान पर उतरे। यह लोग ब्रिटिश कोलम्बिया की सोने की खानों में काम करने के लिये आये थे। मार्टन ने किनारे पर रात बिताई और वहीं रहने का पक्का इरादा किया। १८६३ में दो व्यक्ति वेस्ट मिनिस्टर बन्दरगाह से आये और बुर्रार्ड खाड़ी के उत्तर की ओर बिजली द्वारा एक काठ कबार का कारखाना खोला। इस कारखाने के चारों ओर मूडी वाइल नामक गांव बस गया। दो वर्ष बाद कैप्टन स्टैम्प ने हेस्टिङ्गज नामक आरी से लकड़ी चीरने का कारखाना दक्षिणी किनारे पर स्थापित किया और ग्रैनवाइल नामक गांव बसाया। ग्रैनवाइल मूडीवाइल और हेस्टिङ्गज आज वेंकूवर के मुख्य जिले हैं।

मिस्टर विलियम सी० वान हार्न कैनेडियन पैस्फिक रेलवे के उपसभापति तथा जनरल मैनेजर जुलाई सन १८८४ ई० में प्रशान्त महासागर के तट पर रेलवे के भूमि के लिये आए। वेंकूवर स्थान को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हों ने रेलवे का अन्तिम स्टेशन बनाने के लिये बहुत उपयुक्त समझा। इस रेलवे के आने के कारण यह बन्दरगाह बहुत उन्नति कर गया। ब्रिटिश कोलम्बिया १८७१ ई० में संयुक्त कनैडा में शामिल हो गया और इस प्रकार डोमीनियन का एक प्रान्त बन गया। जब यह रेल मूडी बन्दरगाह पर पहुँची तो इसको पूरा करने की बात तै हुई। उसी समय वेंकूवर नगर बनाने की बात भी तै की गई और उसके लिये स्थान भी निर्णय किया गया।

१८८४ ई० में लाचलान ए० हेमिल्टन नामक युवक ने जङ्गल के बीच में सड़कें बनानी आरम्भ किया। जान डब्ल्यू स्टेवर्ट सिविल इञ्जीनियर की अध्यक्षता में पड़ताल आरम्भ हुई। तीन दिन के कठिन परिश्रम के बाद एक मील लम्बा मार्ग जङ्गल काट कर बनाया गया। एक मनुष्य के जीवन काल के भीतर ही वेंकूवर एक जङ्गल से एक व्यापारिक उन्नति शील नगर की अवस्था में बदल गया। अप्रैल ६ सन् १८८६ ई० के पार्लियामेंट के कानून के अनुसार वेंकूवर नगर को बनाने का निश्चय किया गया। १३ जून को जंगल के साफ करने को आग लगाई गई, वह आग कटे हुये बन से ३०० एकड़ के फासिले पर थी। गर्मी की आंधी चलने के कारण अग्नि का प्रकोप बढ़ा और कटी हुई लकड़ी भी जलने लगी। मीलों तक के हरे वृक्ष, डाल और पत्तियां सभी जल कर राख हो गई। वेंकूवर के निवासी अपने अपने घरों को छोड़ कर पानी की ओर भागे। जो लोग पानी तथा नावों की ओर भागे वे तो बच गये शेष लोग जिन्होंने पांच मिनट की भी देरी की वे गर्मी और धुएँ के कारण बेसुध हो गये। ४० मिनट के भीतर ही सारा वेंकूवर जल कर राख हो गया। पत्थर और ईंटों के सिवा और कुछ न रहा। पश्चिम की ओर हेस्टिङ्गज मिल, एक या दो रहने के मकान और फाल्स खाड़ी पर आठ या दस झोपड़े रह गये। इस अग्निकांड के चार दिन के बाद ही वेंकूवर नगर के घर बनने आरम्भ हो गये।

इसी बीच कैनेडियन पैसिफिक रेलवे लाइन तयार हो गई और २३ मई सन १८८७ को पहली रेलगाड़ी मांट्रीयल नगर से वेंकूवर को आई। वेंकूवर के घाट बाद में बनाये गये। मूडीवाइल उत्तरी वेंकूवर का जिला बनाया गया प्रशान्त महासागर के प्रसिद्ध जहाज इम्प्रेस आफ इन्डिया, इम्प्रेस आफ चाइना और इम्प्रेस आफ जापान वेंकूवर बन्दरगाह को उन्नतिशील बनाने में बड़े सहायक हुये हैं।

वेंकूवर का बन्दरगाह कई भागों में बंटा है। बाहरी बन्दरगाह इंगलिश खाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। भीतरी भाग में प्रथम नैरोज़ (संकरी खाड़ी) हो कर जाना पड़ता है। यह लाएन्सगेट (शेर द्वार) के नाम से प्रसिद्ध हैं क्योंकि यहाँ से दो पर्वतीय चोटियाँ दिखाई पड़ती हैं जो शेरों की तरह हैं। इस के और द्वितीय नैरोज़ के मध्य में बन्दरगाह का मुख्य भाग है। यह भाग ५ मील लम्बा तथा २ मील चौड़ा है। द्वितीय नैरोज पर एक कल द्वारा उठने वाला पुल है। इस बन्दरगाह के आठ मील उत्तर की ओर मूडी बन्दरगाह है। बुर्रार्ड खाड़ी ११ मील और आगे की ओर फैली है। फाल्स की खाड़ी के ऊपर भी एक पुल बना है।

वेंकूवर हार्बर कमीशन १९१३ ई० में स्थापित हुई। यह इंगलिश खाड़ी पर अटर्किंसन से प्वाइन्ट ग्रेतक के तट का प्रबन्ध करती है।

इस बन्दरगाह के अधिकांश कारखाने तथा घाट बुर्रार्ड खाड़ी के उत्तरी तथा दक्षिणी किनारे पर हैं। टर्मिनल्स में डाक (घाट) गोदाम घर और सामान लाने ले जाने के साधन हैं। वर्तमान समय में फायर प्रूफ (जिसमें आग न लग सके) घाट तथा गोदाम बनाये गये हैं। मुख्य मुख्य घाटों में मिला कर १६६९६४ वर्गफुट भूमि में छत है। दक्षिणी किनारे पर बी० सी० घाट कैनेडियन पैसिफिक रेलवे के घाट बन्दरगाह के कमिश्नर के अधिकार में हैं। इन घाटों में आधुनिक सामान उतारने तथा चढ़ाने वाली मशीनें हैं।

किनारे पर ७ गल्ला उठाने वाली कलें और १९ पृथ्वी के भीतर गल्ला रखने वाली कोठरियां (खत्ती) है। इन खत्तियों में १७०४३००० बुशेल १४०२४४०० मन व्यापारिक गल्ला तथा ६२५,००० बुशेल ५०००० मन खाने पीने का गल्ला रहता है। इन खत्तियों में साफ करने, सामान अन्दर रखने तथा बाहर लाने के लिये भी कलें हैं। अलबर्ट पूल एलिवेटर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गल्ले वाली लारियों के गल्ला उतारने के लिये मशीन है। यह मशीन १ घंटे में २१ मोटरों का गल्ला उतारती है। ला प्वाइन्ट में मछली के तेल रखने की टङ्की है। इस में १,७१,११२ टन (४६ लाख मन) तेल भरा जा सकता है। एक नया डाक (घाट) गरी, लकड़ी तथा साग (सरसों, अलसी आदि) के तेलों को उतारने चढ़ाने के लिये बनाया गया है। यहां पर ७ टङ्कियां हैं। उनमें ३०००० गैलन (८१००००० मन) तेल आ सकता है। यहां पर तेल भरने तथा निकालने के लिये दो पम्प लगे हैं। इन पम्पों का काम बिजली द्वारा होता है। इनमें प्रत्येक पम्प ६७५००० प्रति घंटा के हिसाब से भर सकता है।

फिश डाक का प्रबन्ध बन्दरगाह के कमिश्नर के हाथ में है। प्रशान्त महासागर तट पर यह घाट सब घाटों से अधिक आधुनिक है। यहां पर धुवां घर, बरफ के कारखाने पानी जमाने तथा बरफ रखने वाले कमरे हैं। यहां के कमरे कम्पनियों को मछली का व्यापार करने के लिये ठीके पर उठाये जाते हैं। इस घाट पर ६ बिजली की क्रेनें बोझ उठाने वाली मशीनें) हैं।

बेलएटाइन का घाट ठोस पक्का बना हुआ है इस के कमरों की लम्बाई २६१० फुट है। बाहरी कमरों की गहराई ४५ फुट भीतरी कमरों की गहराई ३२ फुट है। लाप्वाइन्ट घाट भी पक्का है। उसके २५०० फुट कमरों की लम्बाई और भीतरी कमरों की गहराई ३५ फुट है।

कनेडियन पैस्फिक रेलवे के घाटों के कमरों की लम्बाई १४३० फुट से अधिक है। वी०सी० घाट के कमरों की लम्बाई २५१० फुट और गहराई ३५ फुट है। इसी प्रकार चीनी आदि दूसरे सामानों के रखने के लिये भी गुदाम बने हैं।

पिट्रौल पहुँचाने के लिये बन्दरगाह पर प्रबन्ध है। एक अग्निबोट (प्लूविथस) हर समय तयार खड़ा रहता है। इस की लम्बाई ९४ फुट चौड़ाई १७ फुट चार इञ्च है। इसमें चार फेंकने वाली मशीनें हैं जो २०० फुट ऊँचा पानी फेंक सकती हैं।

उत्तरी वेंकूवर की बुर्रार्ड ड्राई डाक (सूखे घाट) में १०००५ टन के दो जहाजों के तयार करने के लिये स्थान है। इस सूखे में २०००० टन (५४००००) मन का बोझ सँभालने वाला तैरता हुआ घाट है। इसकी लम्बाई ५५६ फुट ६ इञ्च और चौड़ाई ६८ फुट है। मुख्य घाट की लम्बाई सात सौ फुट और उसके सहायक की ४५ फुट है। इसमें दो हजार सात सौ मन वाली एक क्रेन है।

वेंकूवर बन्दरगाह लकड़ी का तेल सागौन का तेल और पिट्रोल भलीभांति पहुँचा सकता है। इन तेलों के पहुँचाने का प्रबन्ध जगह जगह पर भली भांति है। बुर्रार्ड खाड़ी के उत्तरी तट पर इओको स्थान पर तेल साफ करने का इम्पीरियल कारखाना है। यहां पर १२७०५०० बैरेल (१२३६८७०००० मन) तेल रखने के टैङ्क बने हुये हैं और प्रति दिन १६००० बैरेल (१७५२४०० मन) तेल का काम होता है। ब्रिटिश कोलम्बिया शेल आयल कम्पनी के कारखाने ७० एकड़ भूमि में हैं। इसके सामने १७ सौ फुट गहरा पानी का समुद्र तट है।

स्टैनली पार्क की पूर्व की ओर जहाजी बेड़ों का अड्डा तथा जहाजी स्टेशन है। कोल बन्दरगाह पर तेलों के पाइप हैं इसके सिवा बोंडेड आएल तथा ड्यूटीपेड टैंक्स से कैनेडियन पैस्फिक रेलवे के घाटों तक तेल के नल लगे हुये हैं और चार जहाज एक के पश्चात् दूसरे भरे जा सकते हैं।

वेंकूवर से तीन फ्रीटकार (केराये पर चलने वाले जहाज) चला करते हैं। ये जहाज कनैडियन पैस्फिक तथा ग्रेट नदर्न पैस्फिक, ग्रेट ईस्टर्न रेलवे की ओर से चला करते हैं। पहले दो रेलों के जहाज बुर्रार्ड खाड़ी तथा वेंकूवर द्वीप को जाते हैं। पैस्फिक ग्रेट ईस्टर्न का जहाज स्क्वैमिश (वेंकूवरद्वीप के उत्तरी किनारे पर) को जाता है। वेंकूवर बन्दरगाह से उत्तरी अमरीका की लकड़ी संसार भर में भेजी जाती है। बुर्रार्ड खाड़ी के उत्तर की ओर ये लकड़ी के लट्ठे 'लूमर बूमिंग ग्राउन्ड' (लकड़ी सीखने की भूमि) में बन्दरगाह के मालिक की आज्ञा द्वारा रक्खे जाते हैं। इन लट्ठों के रखने में ब्रान्टन नामक नावें सहायता होती है। यह बन्दरगाह के कमिश्नर के अधिकार में है।

प्रास्पेक्ट प्वाइन्ट पर एक सिगनल स्टेशन है। यहीं पर समुद्री सेना के पुराने रौटिंग (अफसर) रहते हैं जो जहाजों की देख भाल करते हैं। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई जहाज भीतर की ओर आने को होता है तो यहां लोग बन्दरगाह के मालिक के दफ़्तर में सूचना देते हैं।

वेंकूवर बन्दरगाह में जहाज समुद्री उथल पुथल होने पर भी आ सकते हैं। यह बन्दरगाह ऐसे स्थान पर स्थित हैं कि हर दशा में सुरक्षित रहता है और छोटे से छोटा जहाज सरलतापूर्वक आकर खड़ा हो सकता है। लहरों के होते हुये जहाजों पर बोझ लादा जा सकता है।

यद्यपि वेंकूवर बन्दरगाह को सभी प्राकृतिक सुविधाएं प्राप्त हैं तो भी बहुत समय तक वह योरुपीय व्यापारिक मार्ग से अलग रहा। १९१५ ई० में पनामा नहर खोली गई जिसके कारण वेंकूवर संसार भर का बन्दरगाह बन गया। पहले लिवरपूल से हार्न अंतरीप हो कर वेंकूवर की दूरी १४,५५८ मील थी किन्तु पनामा के खुल जाने से यह दूरी ५४७ मील कम हो गई है। इस कमी के हो जाने से कनैडा का गेहूँ बहुत बड़ी मात्रा में बाहर भेजा जाता है।

फरवरी सन् १६०९ ई० में पहले पहल मैक्सिको का गेहूँ आठ सौ बुशल (६४०० मन) वेंकूवर से रवाना किया गया। पनामा नहर के बन जाने पर १९१७ में ६९,०२९ बुशल (७९,३६७ मन) रवाना किया गया। जनवरी १९२१ में पहले पहल व्यापार का हिसाब लगाया गया तो मालूम हुआ कि कुल ५,७२,५४७ बुशल (४,५८,१९२ मन) गेहूँ बाहर गया। १९३२ के पश्चात् वेंकूवर बन्दरगाह से ९६८७२७२२ बुशल (७७४९८१७५ मन) गेहूँ बाहर भेजा जाने लगा। गेहूँ तथा दूसरे अनाज मिलाकर यह मात्रा १०५००६६२५ बुशल (८४२०५५४० मन) हो जाती है। यह उत्तरी अमरीका के सब से बड़ा गल्ले के व्यापार का बन्दरगाह है।

वेंकूवर बन्दरगाह से आठ समुद्री व्यापारिक मार्ग दुनिया के भिन्न भिन्न भागों को जाते हैं। पहला मार्ग योरुप को, दूसरा प्राचीन देशों (पूर्वी देश, चीन जापान आदि) को, तीसरा आस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड हवाई तथा फिजी द्वीपों को, चौथा संयुक्तराष्ट्र तथा कनैडा के अटलांटिक तट को, पाँचवाँ मध्य तथा दक्षिणी अमरीका और पश्चिमी द्वीप समूह को, छठां कैलीफोर्निया को, सातवां दक्षिणी अफ्रीका को, और आठवाँ मार्ग अमरीका के तटीय बन्दरगाहों को जाता है।

संसार की सभी समुद्री जहाजी लाइनें वेंकूवर बन्दरगाह का प्रयोग करती हैं। ब्लूफेनल लाइन, ब्लू स्टार, कनैडियन पैस्फिक, फर्नेस डानाल्डसन, हरीसन और रायल मेल लाइनें प्रसिद्ध ब्रिटिश लाइने हैं जो वेंकूवर बन्दरगाह का प्रयोग करती हैं। नार्थ जर्मनलाएड, निपनयूसेनकैसा, कम्पेन जनरेल ट्रान्सअटलांटिक, नैवीगेजीओन लिबेरा ट्रीस्टना, हालैंड अमरीका, फ्रेडओलेसेन आदि लाइनों से जहाज भी आते जाते हैं। फ्रूट एक्सप्रेस लाइन और इम्पीरियल आयल लिमिटेड और बहुत सी अमरीकन तथा तटीय जहाजी लाइनों के जहाज भी जाते आते हैं।

इम्प्रेस आफ जापान (२६,०३२ टन) कनैडियन पैस्फिक लाइन के जङ्गी जहाजी बेड़े के झंडे का जहाज और प्रशान्त सागर का ब्लूरिबन्ड नामक सब से बड़े जहाज हैं जो इस बन्दरगाह का प्रयोग करते हैं इस प्रकार योरुप अमरीका, जापान न्यूयार्क के सभी बड़े तथा छोटे जहाज इस बन्दरगाह का प्रयोग करते हैं।

ये सभी जहाज इस बन्दरगाह में लाएन्सगेट (शेर द्वार) होकर आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

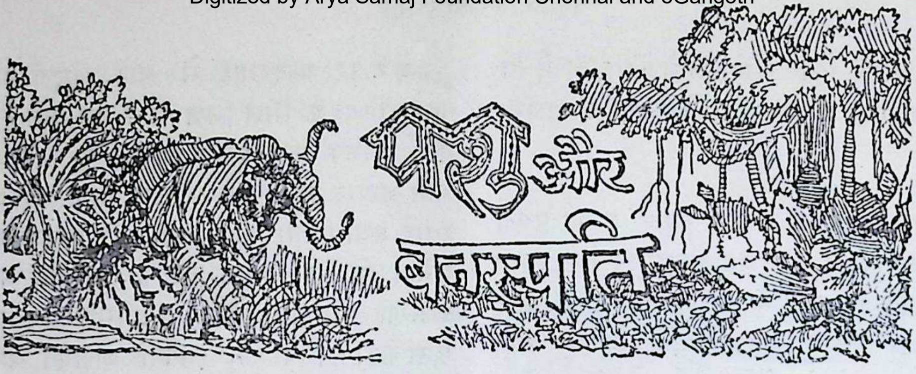

अफ्रीका का गैंडा

गैंडा अफ्रीका के बनों का एक प्रसिद्ध पशु है। यह बड़ा मोटा लम्बे थूथुन वाला होता है। यह झाड़ियों के बीच रहना पसंद करता है। गैंडे की सींगें छोटी और नुकीली होती हैं। सींगें सचमुच गुथे हुये बालों की होती हैं और वज़नी होती हैं। उनका मूल्य बहुत होता है। वह १५ रुपये प्रति पौंड के भाव से बिकती हैं। गैंडे की सींगों को पीस कर चीन में मादक पदार्थों में मिलाते हैं।

गैंडे के रहने के स्थान के चारों ओर घने झाड़ झंकाड़ तथा बनस्पति होती है। वह कंटीली झाड़ियों और पत्तियों तथा टहनियों को खाता है। शिकार मार कर खाना कभी पसंद नहीं करता है। जहां वह रहता है वहां बन में पत्तियों का सर्वनाश हो जाता है।

गैंडा बड़ा डरपोक जानवर होता है। उसे जैसे ही खतरे की आहट होती है वह या तो आक्रमण करता है या भाग निकलता है। वह भागने में अपनी थकाई का परिचय नहीं देता है।

पहिले अफ्रीका के बनों में बहुत गैंडे रहते थे परन्तु अब गैंडों की संख्या बहुत कम हो गई है। लोग इसका शिकार बहुत करते हैं। अफ्रीका के निवासी इसको एक बेकार पशु समझते हैं इसलिये वह इसका मारा जाना अच्छा समझते हैं। यदि गैंडों के मारे जाने का यही क्रम चलता रहा तो फिर अफ्रीका के बनों में उनका पाया जाना दुर्लभ हो जावेगा। गैंडा अफ्रीका निवासियों के माल को बड़ी हानि पहुँचाता है इसी कारण वह चाहते हैं कि गैंडों का नाम संसार से मिट जावे। गैंडे को अफ्रीका निवासी कफारू कहते हैं। इनकी संख्या तेजी के साथ घट रही है।

यदि किसी मनुष्य के गैंडे के जीवन का अध्ययन करना है तो उसे घने बन के भीतर जहां पर अभी मनुष्य लोग निवास नहीं करते हैं वहां जाकर करना होगा। गैंडा अपने स्वभाव का बड़ा पक्का होता है। वह दिन प्रति दिन लगभग एक ही समय अपने नियमानुसार काम करता है। गर्मी के समय दिन में वह वृक्षों की छाया में पड़ कर आराम करता है। अधिक गरम होने पर उठ कर पानी अथवा कीचड़ में नहाता है। दोपहर के पश्चात् जब गर्मी का समय व्यतीत हो जाता है तब वह भोजन की खोज में जाता है। चरने के लिये अपने नियमित २ फुट चौड़े मार्ग से होकर जाता है और अपने घर से पानी पीने के स्थान तक मार्ग बनाये रहता है। वह इसी मार्ग पर अपने पाखाना फिरने के लिये भी एक नियत स्थान बनाए रखता है। पानी पीने जाते समय ही नियमित स्थान पर पाखाना फिरता है। कभी कभी तो उसके पानी पीने का स्थान उसके रहने वाले स्थान से ५ या ६ मील की दूरी पर होता है। वह अपने मार्ग से दूर कभी न जावेगा और जिस स्थान पर रहेगा उसी के चारों ओर घूम घूम कर चर कर अपना पेट भरेगा। भोजन करने अथवा पानी पीने के पश्चात् वह शीघ्र से शीघ्र अपने घर को वापस लौट आना पसन्द करता है।

गैंडा डर जाने अथवा भय का कारण ज्ञात करने पर तेजी से भाग निकलता है और जब तक दूर नहीं निकल जाता है तब तक वह मुड़ कर नहीं देखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैंडे के मार्ग पर अथवा मार्ग के समीप मनुष्य का निवास स्थान बनाना ठीक नहीं है क्योंकि वह उसे उजाड़ डालने अथवा मनुष्य के मार डालने का प्रयत्न अवश्य करता है। रेना (गैंडे) के क्रोध का अन्दाज़ लगाना कठिन है। वह बड़ा नासमझ होता है। जब उसे किसी ख़तरे की आहट चिड़ियों द्वारा मालूम होती है तो उसका विश्वास न करके स्वयं उसके पता लगाने का प्रयत्न करता है। वह दूर तक सूंघ सकता है और किसी भी वस्तु को सूंघ अथवा सुन कर पता लगाने का प्रयत्न करता है। ठीक पता लगाने के लिये ख़तरे के समीप आता है और यदि उसे गंध द्वारा ख़तरे का पता लग जाता भी कर जाता है परन्तु पार करने पर जैसे ही उसे मानव गंध मिलती है वह आक्रमण न करके अपने पैरों को सिर पर रख कर अपनी प्राण रक्षा के लिये भागता है। गैंडा अपने शरीर को चोट खाने से बहुत बचाता है। परन्तु यदि वह घायल हो गया तो फिर बड़ा भयानक रूप धारण कर लेता है और अवश्य हमला करता है।

एक बार एक अंग्रेज़ महिला अफ्रीका के बन में घूम रही थी उसने अपने मित्रों से कहा कि मुझे तो बन में कोई भी ख़तरा नहीं मालूम होता। दो तीन दिन बाद एकाएक उससे एक गैंडे से भेंट हो गई। उस समय उसने एक छोटी रायफ़ल से (जिसकी

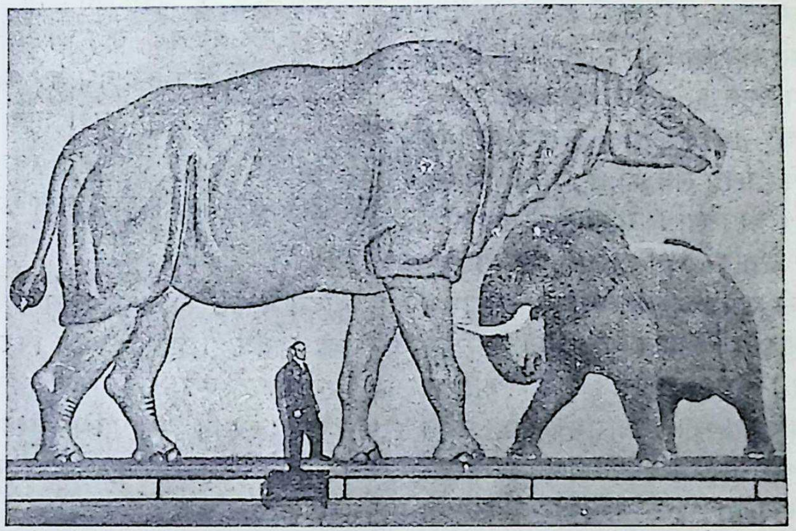

गैंडे का पूर्वज (गैंडे की जाति का एक जानवर)

है तो फिर वह हमला करने तथा भाग जाने की चिंता में कुछ समय आगा पीछा सोचता रहता है। कभी कभी मनुष्य के समीप लगभग १२ गज़ पर आ जाता है और फिर भाग निकलता है और कभी कभी दूर से ही आक्रमण कर बैठता है। इसका शायद यह मतलब होता है कि यदि वह ख़तरे वाली वस्तु का ज्ञान कर लेता है तो आक्रमण करने का साहस करता है और यदि उसे ख़तरे वाली वस्तु का ज्ञान नहीं होता है तो फिर वह आक्रमण करने का साहस नहीं करता है।

कभी कभी गैंडा विपरीत वायु में आदमी के बिलकुल समीप आ फटकता है और मनुष्य को पार

चोट से गैंडा मर नहीं सकता था) गैंडे पर चोट की गैंडा घायल होकर उस पर टूट पड़ा और उसे मार डाला। उसके दूसरे दिन उसी मार्ग से मोटर द्वारा एक अंग्रेज व्यक्ति पत्नी सहित यात्रा कर रहे थे। गैंडे ने मोटर देख उस पर आक्रमण किया महिला की जान तो भाग्यवश बच गई परन्तु उसने अंग्रेज़ को मार डाला। इससे मालूम होता है कि घायल होने पर गैंडे का क्रोध बहुत बढ़ जाता है और वह बिना आगा-पीछा सोचे ही मनुष्य पर आक्रमण कर देता है।

यदि मनुष्य के पास बन्दूक नहीं होती तो गैंडे से बचने के लिये उसके पास केवल यही उपाय होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वह पास वाले वृक्ष पर चढ़ जावे। वह बहुत तेज़ दौड़ता है और मनुष्य को गिराकर अपने सींगों से मार डालता है। गैंडा बहुधा आगे की ओर देखता हुआ भागता है इस लिये यदि मनुष्य चाहे तो किसी सथन पर सीधा लेट कर छिप सकता है और अपनी जान बचा सकता है। हाथी की तरह गैंडे से बचने के लिये भी वायु का ध्यान रखना चाहिये कि वायु द्वारा मनुष्य की गंध उसकी ओर न जावे यदि गंध न पावेगा तो कभी भी मनुष्य के होने का विश्वास न करेगा।

एक बार एक अंग्रेज़ व्यक्ति अफ्रीका के बन में गैंडे का चित्र खींचने के ध्यान से गया वह एक स्थान पर कमरा खड़ा करके उसका चित्र लेना चाहता था। उस समय गैंडा सो रहा था। एका एक चिड़ियों के शब्द से गैंडा जाग उठा और कुछ समय तक इधर उधर देखने के बाद फिर लेट गया परन्तु जैसे ही अंग्रेज महाशय फिर चित्र लेने को थे वैसे ही फिर चिड़ियों ने शोर मचा दिया। गैंडा इस बार उठा और स्वयम् पता लगाने के लिये चल पड़ा। वह अंग्रेज़ महाशय की ओर आया। अंग्रेज महाशय मैदान में थे। समीप कोई वृक्ष भी न था पास में बन्दूक भी न थी। वह बड़े हैरान हुये। आख़िर उन्होंने मरने की बात सोची। उस समय गैंडा उनसे १५ गज़ की दूरी पर था। अंग्रेज़ महाशय ने, अपने कमरे को सामने करके किरकिराना आरम्भ किया। किरकिराहट का शब्द सुन कर गैंडा डरा और बाईं ओर भागा परन्तु फिर निश्चय करने की इच्छा से घूमा और अर्द्ध गोलार्द्ध बनाता हुआ फिर उतनी ही दूरी पर आ गया। अंग्रेज़ महाशय ने फिर उसी प्रकार किया वह फिर भागा इसी प्रकार गैंडे ने तीन बार किया। आख़िरकार अंग्रेज़ महाशय की भाग्य से वह भाग निकला और लगभग आध मील बेतहाशा भागने के बाद जंगल में जा रुका।

जब गैंडा अधिक गरम हो जाता है तो फिर वह पानी अथवा कीचड़ की ओर भागता है। वह कीचड़ में नहाना अधिक पसंद करता है। कीचड़ लगाने के बाद वह उसे साफ नहीं करता वरन् उसे सुखाने के लिये धूप में आकर सोने लगता है। वह अधिक तर लाल भूमि में लेटता है इस लिये सोते समय वह टूटी हुई चींटियों की पहाड़ी सा प्रतीत होता है।

गैंडों के बच्चे अपनी माता के साथ घर पर रहते हैं। जब तक वह बड़े नहीं हो जाते हैं घर से बाहर नहीं जाते हैं। जब तक बच्चे बड़े नहीं हो जाते हैं तब तक नर मादा के समीप नहीं जाता है और दिन भर घर के बाहर जंगल में घूमता रहता है। उस समय वह केवल रात में ही कुछ समय के लिये घर आता है।

दिन में गैंडे को सदैव शंका लगी रहती है। रात को वह स्वतंत्र हो जाता है और फिर खूब मौज उड़ाता है। गैंडे कई एक साथ साथ चलते हैं। वह पानी पीने वाले स्थानों पर रात में खुशी के साथ खेलते हैं। खेलते समय वह कुत्तों की भांति एक दूसरे को पकड़ने का प्रयत्न करते हैं और गुर्राते तथा चिल्लाते हैं, उस समय वह सभी प्रकार भय भूल जाते हैं। तड़के पहर वह फिर घर की ओर चले जाते हैं। स्वेत गैंडे काले गैंडों से अधिक बड़े होते हैं और बहुत कम दिखाई पड़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

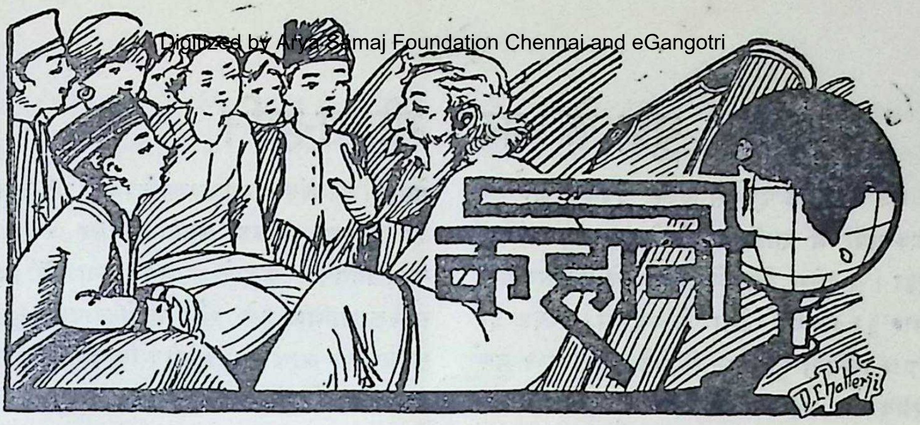

नार्वे की एक कहानी

पवन-देव

बहुत पुराने समय की बात है कि नार्वे में ओलफ नाम का एक राजा रहता था। एक दिन वह अपने महल से बाहर टहलने के लिये गया। टहलते टहलते वह मीलों दूर निकल गया। उसे मार्ग में बहुत से जंगल, ऊँचे पर्वत, घाटियां और झरने मिले।

यद्यपि मार्ग में उसे बहुत से सुन्दर स्थान मिले किन्तु उसने किसी को भी नहीं देखा। वह अपनी धुन में लगा हुआ था। वह सोच रहा था कि मैं ऐसा चर्च बनाऊँ जैसा संसार भर में न हो। उसके पास धन नहीं था। उसकी प्रजा बड़ी ग़रीब थी। इस कारण वह कर नहीं लगाना चाहता था।

चलते चलते उसे एक बड़ा देव मिला। वह बड़ा भयानक शरीर वाला तथा कुरूप था। राजा उससे डरा नहीं और वीरता के साथ उससे नमस्कार किया।

देव ने राजा से पूछा तुम बड़े दुखी तथा सोच में क्यों हो? मालूम होता है कि तुम स्वप्न देख रहे हो।

राजा ने अपने हृदय की बात देव से कही। देव राजा की बात सुन कर बड़े ज़ोर से हँसा और कहा महाराज मैं तुम्हारा बड़ा चर्च १ साल और १ दिन में बना सकता हूँ परन्तु तुम्हें मेरे यहां नौकरी करनी होगी।

यह सुन राजा चुप हो रहा। देव ने फिर कहा मैं स्वयम् उस बड़े गिरजाघर को तुम्हारी इच्छा के अनुसार बनाऊँगा तुम्हें उसमें कुछ व्यय न करना होगा। गिरजाघर इतना बड़ा होगा कि उसमें सात पादड़ी एक साथ अलग अलग बोल सकेंगे। तुम्हें केवल मेरी नौकरी करनी होगी और राज्य छोड़ देना होगा।

राजा अपनी प्रजा का बड़ा हितैषी था। उसने सोचा इतना बड़ा चर्च प्रजा के लिये बनवाना बड़ा ज़रूरी है। इस लिये उसने देव की बात मान ली।

थोड़े समय पश्चात् राजा को प्रतीत हुआ कि वह देव बड़ा बदमाश है। इसलिये वह उससे बचने का उपाय सोचने लगा।

एक दिन जब चर्च बन कर तयार होने का समय आया तो राजा फिर भ्रमण के लिये निकला। चलते चलते वह एक हरी पहाड़ी पर पहुँचा। पहाड़ी पर उसने एक नन्हें बच्चे के रोने का शब्द सुना। लड़के की माता ने कहा चुप रहो। कल तुम्हारे पिता पवन-देव घर लौटेंगे। वह तेरे लिये एक नौकर लावेंगे। वह नौकर ओलफ राजा है। ओलफ तेरा पलना झुलाया करेगा।

राजा समझ गया कि बोलने वाली देव की स्त्री है। वह देव का नाम सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। बात यह थी कि जो मनुष्य देव का नाम जानता था उस पर देव का कोई बश न रह जाता था।

राजा घर लौटा। गिरजाघर पूरा बन गया था। दूसरे दिन देव आया।

राजा ने देव को देखते ही कहा। ओ पवन देव गिरजे घर का गुम्बद सीधा नहीं है।

अपना नाम सुनते ही देव गिरजे की छत पर ज़ोर से गिरा। उसके गिरने से चर्च टूट गया। इस प्रकार राजा का गिरजा तो बर्बाद हो गया किन्तु उसकी स्वतंत्रता बनी रही। उसने बहुत समय तक सुख से राज्य किया। प्रजा भी उसके राज्य में बड़ी सुखी रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध के कारण भीषण-हानि

१४६६ वर्ष ईसा के पूर्व से लेकर १९३० ई० तक में केवल २८७ वर्षों में शान्ति रही शेष ३११२ वर्षों में युद्ध होता रहा। बुखारेस्ट विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पेला के कथनानुसार १५०० वर्ष ईसा के पूर्व से १८६० ई० तक में ८ हज़ार संधियां हुईं इन में कोई भी संधि २ वर्ष से अधिक समय तक नहीं चल सकी।

योरुपीय तीस वर्षीय युद्ध के आरम्भ होने के बाद १७०० बड़ी लड़ाइयां हुईं जिनमें सबसे अधिक भाग फ्रान्स ने लिया। फ्रान्स के साथ ही साथ आस्ट्रिया-हंग्री, ग्रेटब्रिटेन और १७४० ई० के बाद से प्रूशा ने युद्ध में भाग लिया। इस काल में फ्रान्स ने इंगलैंड के साथ १७३ वर्ष, प्रूशा और जर्मन साम्राज्य के साथ ८३ वर्ष और स्पेन के साथ ६२ वर्ष तक युद्ध किया। इस काल में सब से अधिक कालीन युद्ध फ्रान्स और इंगलैंड का सौ वर्षीय युद्ध हुआ। यह युद्ध १३३७ ई० में आरम्भ हुआ था। सब से अल्प कालीन युद्ध ६ दिन का हुआ जो सार्डीनिया और आस्ट्रिया के मध्य १८४८ ई० में हुआ था।

सभ्यता के कारण युद्ध का अंत नहीं होता

५०० वर्ष ईसा के पूर्व से लेकर १९२५ ई० तक में यूनान रोम, मध्य योरुप, जर्मनी, इटली, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, निदरलैंड्स, स्पेन और रूस ने ९०२ लगातार युद्धों में भाग लिया। बारहवीं और तेरहवीं सदी में रूम सभी राष्ट्रों से अधिक युद्धों में ग्रसित था। चौदहवीं सदी में इंगलैंड, पन्द्रहवीं-सोलहवीं-सत्रहवीं और अठारहवीं सदी में आस्ट्रिया (होली रोमन साम्राज्य) और उन्नीसवीं सदी में फ्रान्स युद्ध में अधिक ग्रसित रहा। आधुनिक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि सभ्यता के उत्थान के साथ साथ युद्ध में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हो रही है। इस बात का सब से बड़ा प्रमाण १९१४ ई० तथा वर्तमान समय का महासमर है। आज पश्चिमी राष्ट्र अपने को संसार में सब से अधिक सभ्य समझते हैं परन्तु युद्ध की भीषण अन्यायपूर्ण, रोमाञ्चकारी तथा निर्दयता पूर्ण घटनाओं से सिद्ध होता है कि उनमें सभ्यता का लेश मात्र भी अंश नहीं है।

रसायनिक युद्ध

असभ्य जातियों के आक्रमण (३७५ ई०) और तीस वर्षीय युद्ध (१७१८-४८) के समय युद्ध में सम्मिलित सेनाओं की संख्या साधारण रूप से १५ हज़ार होती थी। १८ वीं सदी में यह संख्या बढ़कर ४० हज़ार हो गई। नैपोलियानिक युद्ध के समय सेना में ८० हज़ार तक सैनिक शामिल हुये और रूसो-जापानी युद्ध में सेना की संख्या एक लाख हो गई थी। लिप्ज़ाग के युद्ध (१८१३) में ५ लाख सैनिकों ने और सेदान के युद्ध (१८७० ई०) में तीन लाख २० हजार मनुष्यों ने भाग लिया था। गत महायुद्ध के समय विटोरियो वेनेटो के चालीस मील इटैलियन रणस्थल में ४८४० तोपें लगाई गई थीं जिन से १६ दिन में ३० लाख बार गोले चलाये गये और उनमें ४५ करोड़ रुपया खर्च हुआ।

चीन में ग्यारहवीं सदी में धुआं तथा चिनगारियां फेंकने वाले अस्त्रों का प्रयोग आरम्भ हुआ। मुग़ल लोगों ने योरुप में आक्रमण करते समय तेरहवीं सदी में धुआं और चिनगारी फेंकने वाले अस्त्रों का प्रयोग किया था। प्राचीन कालीन कलों के द्वारा दुर्गन्ध पूर्ण वस्तुओं के वर्तन शत्रु के बीच फेंके जाते थे और उनकी दुर्गन्ध के कारण शत्रु सेना पीछे हटने पर बाध्य होती थी। यही वास्तविक रसायनिक युद्ध का आरम्भ था।

आधुनिक रसायनिक वस्तुओं का वास्तविक व्यवहार गत महायुद्ध के समय हुआ था। गत महायुद्ध में ६ हज़ार भांति के रसायनों का प्रयोग हुआ था जिनमें केवल १२ भांति की रसायनें सफल सिद्ध हुईं। यद्यपि १९२१ ई० में वाशिंगटन की सभा में गैस सम्बन्धी युद्ध की अवहेलना सभी राष्ट्रों ने एक मत से की फिर भी प्रत्येक राष्ट्र भांति भांति की विषैली गैसों के तयार करने में व्यस्त रहा है। इटैली—अबीसीनियन युद्ध के समय (१९३५-३७) इटली ने विषैली गैसों का प्रयोग किया और जापान ने चीन में (१९३८-३९) में किया और अब भी कर रहा है।

बारूद तथा तोपों का आविष्कार

चीन ने छठीं सदी में बारूद का आविष्कार किया था परन्तु यह पहले केवल अग्निक्रीड़ा में प्रयोग की गई थी। १३२२ ई० में सर्व प्रथम मुग़ल सरदार कुबला खां ने हाथ से प्रयोग किये जाने वाले बारूद के गोलों का निर्माण किया। बारूद तयार करने की बिधि का उल्लेख नवीं सदी में मार्कस (बैज़नटाइन) नामक व्यक्ति ने कर दिया था। तेरहवीं सदी में रोगेर बैकन नामक व्यक्ति ने बारूद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाई उसके बाद १३१३ ई० में फ्रीबर्ग नगर के बर्थोल्ड नामक साधु ने इसका पुनः निर्माण किया। "यूनानी अग्नि (ग्रीक-फायर) आधुनिक बारूद की भांति ही एक वस्तु थी।

सेविले के घेरे में फ्रान्स में सर्व प्रथम १२४७ ई० में बारूद का प्रयोग किया गया। बारूद के निर्माण होने तथा तोपों के आविष्कार होने के कारण शूरवीरता और साहसपूर्ण युद्ध में भीषण रुकावट पड़ गई। क्रेसी (१३४६) के युद्ध में सर्व प्रथम बारूद का प्रयोग रणक्षेत्र में खुले तौर पर किया गया। दूसरी बार बारूद का प्रयोग जर्मनी में ईन्बेरु (१३६५) की आध्यक्षता में किया गया। १८८२ ई० में बिना धुआं वाली बारूद तयार की गई।

१३३८ ई० में सर्वप्रथम समुद्री युद्ध में तोपों का प्रयोग गोलेबारी में किया गया। बेस्ट (१५१२) का युद्ध पहला युद्ध था जिसमें दोनों ओर से तोपों का प्रयोग हुआ। ब्रिटिश तथा फ्रांसीसी दोनों जहाज़ों में आग लग गई और उनमें ९०० फ्रांसीसी तथा ५०० अँग्रेज़ों ने अपने प्राण गवांए। टर्की के राजा मुहम्मद द्वितीय ने एड्रियानोपुल के घेरे में गोलेबारी पर बहुत व्यय किया था। कहा जाता है कि उसने ३०० पौंड के वज़नी पत्थर तोपों में भरे थे जिनके धड़ाके का शब्द १३ मील घेरे में सुनाई पड़ता था। जब यह तोप बैलों द्वारा खींच कर कुस्तुन्तुनिया पहुँची तो फट गई जिससे उसका बनाने वाला मर गया"।

१५९७ ई० में इटली के लोरिनी नामक व्यक्ति ने तोपों में पेंदों की ओर से गोले भरने की विधि का उल्लेख किया। १८५६ ई० में क्रूप ने फौलाद फेंकने वाली तोप बनाई। १९०१ ई० तक में ऐसी तोपें तयार हो गईं जो ६ मील तक गोले फेंक सकती थीं। इन तोपों के प्रक्षेप-पथ की ऊँचाई ३ मील थी। गत महासमर में बिगवर्थ नामक बड़ी तोप (जर्मन) ने ३०० बार गोले फेंके जो ८ मील ऊपर जाते थे और २५ मील की दूरी तक पहुँचते थे। यह तोप ३० पौंड का गोला फेंकती थी। जो ५००० फुट प्रति सेकेंड की चाल से तोप की नली को छोड़ता था। उसके १६ इञ्च के गोले फटने का धक्का उतना ही भीषण होता था जितना कि ६ मील प्रति घंटा चलने वाले चार रेल के डिब्बों का किसी ठोस पक्की दीवार पर हो सकता है। शायद संसार की सबसे बड़ी तोप संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पास है जो ३० मील तक गोले फेंक सकती है।

गत महायुद्ध में अस्त्र-शस्त्रों का बहुत व्यय हुआ था। १ जनवरी १९१७ ई० के बाद से केवल फ्रान्स के कारखानों में १ लाख ७५ हज़ार छोटे तथा ४० हज़ार बड़े बम्ब के गोले प्रति दिन तयार होते थे। जर्मन सीमा रण-स्थल पर ३० करोड़ हाथ से फेंकने वाले बम्ब के गोले पहुँचाये गये थे और वर्डून के ३० दिन के युद्ध में १३ लाख टन के फौलाद के गोले बर्साये गये थे।

आजकल युद्ध में टैंकों का प्रयोग बहुत हो रहा है। प्राचीन काल में महाभारत के भीषण संग्राम में ऐसे रथों का प्रयोग हुआ था जो भांति भांति के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थे और आग पानी आदि उगलते थे। असीरिया की हीक्सोस नामक (घूमने वाली) जाति ने एक ऐसा रथ बनाया था जिसमें छुरी तथा भाले लगे थे। उसने मिस्री लोगों पर अधिकार प्राप्त करने के लिये उसका प्रयोग किया था। आज उन्हीं रथों को टैंक का रूप दिया गया है। १८८५ ई० में कोरेस ने एक अस्त्र-शस्त्र धारी गाड़ी बनाई। यह असफल रही क्योंकि इसमें बहुत अधिक जलाने की लकड़ी लाद कर चलना पड़ता था। १९०४ ई० में डैमलर की आर्मर्ड कार संसार के सामने आई। १९१४ में फ्रान्सीसी लोगों ने सर्वप्रथम आर्मर्ड मोटर कार का प्रयोग किया।

१९३७ ई० के आरम्भ में रूस के पास ६ हज़ार से १० हज़ार तक और जर्मनी के पास ५ हज़ार टैंक थे। उस समय फ्रान्स के पास ४,५००, इङ्गलैंड और पोलैंड में से प्रत्येक के पास ६००, चेकोस्लोवाकिया के पास ३५०, इटली के पास ३२०, यूगोस्लावाकिया के पास १२० और रूमानिया के पास ९० टैंक थे।

युद्ध द्वारा विध्वंस

तीस वर्षीय युद्ध (१६१८-१६४८) में जर्मनी के १ करोड़ २० लाख आदमी मारे गये। फ्रान्स की क्रान्ति और नैपोलियन युद्ध में फ्रांस की जन-संख्या बहुत घटी। नैपोलियन के रण-स्थल में एक करोड़ से अधिक मनुष्य मरे। नैपोलियन की ६ लाख की बड़ी सेना जो रूसी विजय के लिये चली थी उसमें से केवल २० हज़ार सैनिक लौट कर फ्रान्स पहुँचे थे। उस युद्ध में फ्रान्स के खज़ाने का १८ अरब ७५ करोड़ रुपया खर्च हुआ था।

अमरीका के गृह युद्ध (१८६१-६५) में ४० लाख सेना रणस्थल पर थी जिसमें उत्तरी राज्यों के ५ लाख आदमी मारे गये थे। इस गुलाम सम्बन्धी युद्ध में ११ अरब १० करोड़ रुपया खर्च हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीमिया की लड़ाई (१८५४-५६) में ५ अरब ५ करोड़ के लगभग रुपया खर्च हुआ था। इस युद्ध में १ लाख ५० हज़ार ब्रिटिश सैनिकों ने भाग लिया था जिनमें बीस हज़ार व्यक्ति मारे गये। भारतीय विप्लव (१८५७) और १८६० के चीनी युद्ध में ५२००० मनुष्य मारे गये। फ्रैंको-इटैलियन युद्ध (१८५६) में ४५ हज़ार और आस्ट्रो-प्रूशन युद्ध (१८६६) में ४ लाख मनुष्य मारे गये तथा घायल हुये। १८५६ ई० के रूस और टर्की के युद्ध में १२ लाख ५० हजार मनुष्य मारे गये थे। १८७०-७१ ई० के फ्रांस तथा प्रूशा की लड़ाई में २ लाख ६० हजार आदमी मारे गये और ७ अरब ५६ करोड़ रु० खर्च हुआ। १८६८ ई० के स्पेन और अमरीका के युद्ध में संयुक्त राष्ट्र अमरीका को ७५ करोड़ और स्पेन को ४ लाख २५ हजार रुपया प्रति दिन व्यय करना पड़ता था।

गत महायुद्ध का व्यय

कुछ लोगों के अनुमानानुसार गत महासमर में १२ खरब रुपये का व्यय हुआ था। एक करोड़ से अधिक मनुष्य रणस्थल में खेत रहे थे। २ करोड़ मनुष्य घायल हुये थे और एक करोड़ मनुष्य इन्फ्लूएञ्जा की बीमारी में मरे थे (जो युद्ध के कारण ही उत्पन्न हुई थी। गत महासमर में ७ करोड़ व्यक्तियों ने रणक्षेत्र में भाग लिया था)।

युद्ध काल में सामान तयार न होने के कारण जो हानि हुई उसका लेख लगाना कठिन है। १९१६-२७ तक में सामान तयार न होने के कारण छः खरब ३७ अरब पचास करोड़ रुपये की हानि का अनुमान किया जाता है। युद्ध कालीन वर्षों में जर्मनी में पैदा होने वाले बच्चों में तीस लाख की कमी हुई। क्षणिक संधि होने के ५ वर्ष बाद मध्यवर्ती राष्ट्रों ने सत्तर लाख व्यक्तियों को युद्ध सम्बन्धी पेन्शन दी।

गत महायुद्ध समाप्त होने पर ब्रिटिश सरकार ने युद्ध की बची हुई सामग्री को बेंच दिया और उसे ६ अरब ६७ करोड़ पचास लाख रुपये मूल्यरूप में प्राप्त हुये।

१९३५-३६ ई० में इटली ने अबीसीनिया की विजय के लिये ३ लाख पचास हजार सेना भेजी। सेना के साथ ही साथ ५ करोड़ तीस लाख फुट डेरे बनाने का कनवस, ६ करोड़ बीस लाख फुट कपड़ा, ८७ हजार घोड़े-ऊँट, १३५०० मोटरगाड़ियां, ग्यारह हजार पांच सौ मशीन गनें, चार लाख पचास हजार राइफलें, आठ सौ तोपें और ३ सौ टैङ्क आदि सामान भेजे गये थे। अबीसीनिया के युद्ध में पचपन सौ टेलीफोन (दो हजार मील तार) और १८१ बेतार के तार के सेट प्रयोग किये गये थे।

संसार के बड़े राष्ट्रों की सैनिक शक्ति

जनवरी १९३८ ई० में ब्रिटिश सेना में ५ लाख सैनिक तथा अफसर थे। सभी स्थाई सैनिकों को मिलाकर यह संख्या ६ लाख २१ हजार थी। ब्रिटिश भारत में उस समय २ लाख दस हजार सेना थी जिसमें एक लाख ५५ हज़ार के लगभग भारतीय सैनिक थे।

१९३८ ई० के आरम्भ में रायल हवाई सेना में १५०० से १७५० के लगभग विमान थे। उस समय ब्रिटिश हवाई सेना में ६२.६०० मनुष्य काम कर रहे थे।

१९३८ ई० में राएल जल सेना में १ लाख २० हज़ार व्यक्ति काम कर रहे थे जिनमें जहाज चलाने वालों की संख्या ६० हजार थी। उस समय उसके जहाज़ों की संख्या २८० थी जिसमें १५ लड़ाका (बैटिल क्रूशियर) जहाज, ६ विमान ढोने वाले जहाज, ५४ (क्रूशियर छोटे लड़ाका जहाज १९३ विध्वंसकारक जहाज और ५२ सबमरीन (पनडुब्बे) जहाज थे। सभी प्रकार के जहाज़ों का सामूहिक भार १२ लाख ग्यारह हजार ४२० टन था। जहाजों में सत्रह सौ पचीस तोपें और १८०६ टारपिडो ट्यूब थे।

सेना पर ब्रिटिश सरकार ने १९३७-३८ में ३ अरब ६३ करोड़ रुपया और १९३८-३९ ई० में ४ अरब ६० करोड़ ४० लाख रुपया व्यय किया। इस व्यय में पेन्शन का रुपया शामिल नहीं है। १९३७ ई० में इंगलैंड के खज़ाने को आज्ञा मिली कि वह ६ अरब रुपया ऋण ले कर ब्रिटेन की रक्षा में व्यय कर सकता है।

१९३७ में फ्रांस की सेना में ६ लाख ६२ हजार आठ सौ साठ सैनिक थे जिनमें से चार लाख ८६ हजार सेना फ्रान्स में, ८५ हजार अलजीरिया और ट्यूनिस में, ४८ हजार मराक्को में बारह हजार लेवान्त में और ६० हज़ार कालोनीज और चीन में थी। हवाई सेना में ८ लाख तीस हजार आदमी थे। विमानों की संख्या ठीक ठीक ज्ञात नहीं है परन्तु हवाई शक्ति पर १९३९ ई० में १० करोड़ रुपया खर्च किया गया। फ्रान्स के कारखानों ने पांच सौ विमान प्रति दिन तयार करने का वचन किया। १९३८ ई० में फ्रांस की जलसेना में १७४ जहाज थे जिनका भार ५ लाख ५२ हजार टन था। १९१९ ई० में फ्रान्सीसी घाटों में १३० जहाज बनने के लिये पड़े थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी की शक्ति

१६१३ ई० में जर्मनी के पास आठ लाख सेना और १० लाख टन के जहाज थे। वह सेना पर एक अरब ३५ करोड़ सालाना व्यय कर रहा था। १६३८ ई० में जर्मनी के पास ३७ पानी पर चलने वाले जहाज ७२ सबमरीन (पनडुब्बा जहाज) थे। १६३८ ई० में जर्मन सरकार ने घोषित किया कि वह अपने लड़ाका तथा सबमरीन जहाजों की संख्या बढ़ावेगी। अब जर्मनी की शक्ति का अन्दाज़ करना कठिन है। कुछ लोगों का कहना है कि उसके पास ३० हजार विमान तथा १५ हजार टैंक हैं।

रूसी सेना

रूस की जनसंख्या १८ करोड़ है। १६३६ ई० में उसके पास काम करने वाली सेना में १३ लाख सैनिक थे। उसके बाद उसके सेना में बड़ी वृद्धि हुई है। १६३५-३८ के मध्य रूस में ५३ लाख ६० हजार मनुष्यों को सैनिक शिक्षा दी गई।

रूसी हवाई सेना में १६३१ ई० में ७५० विमान १६३६ ई० में यह संख्या बढ़ कर तीन हजार होगई। उसकी जलसेना में १८६ जहाज थे जिनका भार २६०, ५८६ टन था। १६३८ ई० में रूसी जहाजों की संख्या बढ़ाने और उन्हें आधुनिक बनाने की घोषणा की गई। आज रूप के पास लगभग तीस हज़ार विमान और लगभग पन्द्रह हजार टैंक है। पर यह संख्या अप्रमाणित हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की शक्ति

१६३७ ई० में संयुक्तराष्ट्र अमरीका की सेना में १ लाख ८० हजार सैनिक थे। जल, स्थल और हवाई सेना मिलाकर हवाई सैनिकों की संख्या १८७४२ थी। संयुक्तराष्ट्र के नैशनल गार्ड की संख्या १ लाख ६० हजार और स्थाई सैनिकों की संख्या १ लाख १२ हजार है। कुल ४ लाख ८५ हजार सेना है।

१६३८ ई० के अंत में अमरीका ने ५३२० विमान अपनी सेना में रखने का निश्चय किया। उसने सोचा कि यदि उसके पास इस संख्या के दूने जहाज हो जायँ तो फिर उसका कोई राष्ट्र कुछ बिगाड़ न सकेगा। १६४२ तक में अमरीका ने जर्मनी के बराबर हवाई शक्ति तयार करने का निश्चय किया है।

संसार में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जलसेना का दूसरा नम्बर है। उसकी जलसेना में ३३४ जहाज हैं (८३ जहाज तयार हो रहे हैं)। सभी जहाजों का भार १४,२७,१२५ टन है। जहाजों में २ हज़ार तोपें और २३५० टारपिडो ट्यूब हैं। २४ तोपें १६ इंच वाली और १२४ तोपें १२ इंच वाली हैं। वहां १७ लड़ाका जहाज, २५१ विध्वंस कारक जहाज १०६ सबमरीन ३७ क्रूशियर और ६ विमान ढोने वाले जहाज हैं।

जलसेना में ५८४ विमानों से अधिक भार वाले समुद्री वायुयान हैं। सबसे बड़ा समुद्री वायुयान "मकोन" ७८५ फुट लम्बा है। उसमें ६५ लाख घन फुट सामान रखने का स्थान है १६३८ ई० में संयुक्त राष्ट्र की जलसेना में १ लाख १५ हज़ार व्यक्ति थे। इसमें जहाज चलाने वालों की संख्या सम्मिलित नहीं है।

राष्ट्र की रक्षा के लिये १६३७-३८ में अमरीका ने ३ अरब रुपया सेना के लिये और बढ़ा दिया। संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जनसंख्या १४ करोड़ है इसलिये स्वतंत्र राज्यों में वह रूस को छोड़ कर सब से बड़ी सेना तयार कर सकता है।

चीन-जापान

१६३७ ई० में जापान ने चीन पर आक्रमण किया। युद्ध आरम्भ होने के परचात् से जापान की सैनिक शक्ति का पता नहीं लग पाया है। १६३६ ई० में उसके पास २ लाख ५० हजार स्थाई सेना थी परन्तु उसी वर्ष ६ लाख ३० हज़ार ८०२ मनुष्य सैनिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये बुलाये गये थे। जुलाई १६३८ में चीन में जापान की १० लाख सेना थी। उस समय तक उसके ६० हज़ार सैनिक मर चुके थे और १ लाख घायल हो चुके थे। उस समय चीन की सेना में २५ लाख सैनिक थे।

१६३५ ई० में जापान की हवाई सेना में १ हज़ार २५ विमान थे। तीन साल के भीतर विमानों की संख्या ४ हज़ार हो गई होगी। १६३७ ई० में वहां की जलसेना में २४२ जहाज थे (११ जहाज बन रहे थे) उन जहाजों का सामूहिक भार ६ लाख ६ हज़ार ४ सौ ३० टन था। उस समय उसके १० लड़ाका जहाजों में १६ इँच वाली तोपें और ७८ जहाजों में १४ इंच वाली तोपें लगी थीं। क्रूशियर जहाजों की संख्या ४२, विध्वंसकारक की १३३ और सबमरीनों (पनडुब्बों) की ६२ थी।

इटली

इटली के पास ५ लाख सेना थी। उसने अबीसीनिया और स्पेन के गृह युद्ध की लड़ाइयों में अपनी सेना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक बढ़ा ली है। १९३४ ई० में इटली के पास १८६० विमान और उनमें २५,८६० काम करने वाले सैनिक थे। युद्ध के कारण उसकी हवाई शक्ति में भी वृद्धि हुई है।

१९३८ ई० में इटली के पास २७२ जहाज थे जिनमें ६ लड़ाका जहाज, २२ क्रूशियर (छोटे लड़ाका जहाज) एक विमान ढोने वाला जहाज, १३८ विध्वंसकारक जहाज और १०५ पनडुब्बे जहाज थे। इन सब जहाजों का भार ५ लाख ६० हज़ार टन था।

शस्त्रधारी सेना पर व्यय

१९३२ ई० में शस्त्रधारी सेना का व्यय १५ देशों में बढ़ा, ६ देशों में समान रहा और ३७ देशों में घटा। १९३५ ई० में शस्त्रधारी सेना पर ४१ देशों में व्यय बढ़ा, दो में समान रहा और १५ में कम हुआ। १९३७ ई० में ४९ देशों में सेना का व्यय बढ़ा, एक में समान रहा और आठ में कम हुआ।

१९३२ ई० में ग्रेट ब्रिटेन संसार के शस्त्रधारी सेना के लिये एक तिहाई शस्त्र दे रहा था। इस प्रकार संसार की शस्त्रधारी सेना का व्यय २१ अरब ८१ करोड़ रुपये (१९३२ ई० में) से बढ़ कर ३६ अरब रुपया १९३८ ई० में हो गया। यह व्यय १९१३ ई० के सेना के व्यय का तिगुना था।

१९३२ ई० में योरुपीय सेना का व्यय संसार की सेना के व्यय का ३० प्रतिशत था, १९३७ ई० में यह व्यय बढ़ कर कुल का ६३ प्रतिशत हो गया। १९३२-३७ ई० के मध्य ब्रिटिश सैनिक व्यय बढ़कर तिगुना हो गया था। रूस में १९३२ और १९३७ के बीच में सेना का व्यय १५०० प्रतिशत बढ़ गया था। फ्रान्स में सेना के व्यय में कमी हुई परन्तु जर्मनी, इटली, जापान और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में सैनिक व्यय बहुत बढ़ा। संयुक्त राष्ट्र की सेना का खर्च १९३२-३३ ई० में १ अरब ८५ करोड़ था। १९३७ और १९३८ ई० में यह बढ़ कर ३ अरब हो गया।

१९३८ ई० में शस्त्रधारी सेना का सालाना व्यय प्रति मनुष्य जर्मनी में १८० रु०, ब्रिटेन में १०५ रु०, रूस में ९० रु०, फ्रान्स और जापान में ७५ रु० इटली में ४५ रु० और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ३० रु० के लगभग था। उस वर्ष जर्मनी ने इंगलैण्ड के सैनिक व्यय का ढाई गुना और रूस ने तीन गुना अपनी सेना पर खर्च किया।

नीचे दी गई तालिका से पता चलता है कि योरुपीय राष्ट्रों का सैनिक व्यय उनकी राष्ट्रीय आय का कितना प्रति शत १९१३ और १९३८ ई० के मध्य बढ़ा :—

देश	१९१३	१९३८
रूस	५ प्रति शत	२२ प्रति शत
जर्मनी	४ ,,	१५ ,,
फ्रान्स	६ ,,	१० ,,
इटली	३ ,,	९ ,,
इँगलैण्ड	५ ,,	७ ,,

१९३१ ई० में संसार, शस्त्रधारी सेना पर २१०,००० रुपये प्रति मिनट व्यय कर रहा था। इस व्यय के ⅙ भाग का उत्तरदायी इङ्गलैंड था। उसके बाद सभी राष्ट्रों की सेना में वृद्धि हुई। संसार की जलसेना के जहाजों का भार ५२ लाख ९९ हज़ार टन (१९३२) से बढ़ कर १९३७ ई० में ६६ लाख ७७ हज़ार टन हो गया।

गत महायुद्ध के २५ वर्ष पूर्व इंगलैण्ड, फ्रान्स, जर्मनी, आस्ट्रिया-हँग्री, रूस और इटली का सालाना सैनिक व्यय १ अरब ९५ करोड़ था। बाद को वह बढ़ कर ६ अरब ७५ करोड़ रुपया हो गया था। उपरोक्त राष्ट्रों ने १८८९-१९१४ ई० के मध्य ९१ अरब ५० करोड़ रुपया व्यय किया था।

१९१४ ई० के महासमर के पश्चात् संसार के प्रधान राष्ट्रों ने सोचा कि वह शस्त्रधारी सेना में कमी करें। इसी कारण १९१९ ई० की वर्साई की संधि तथा समझौते में सेना घटाने की शर्तें रक्खी गईं परन्तु किसी राष्ट्र ने भी अपनी सेना को बढ़ाने में कमी नहीं की। जर्मनी वर्साई की संधि के कारण सेना बढ़ाने से मजबूर था। उसके बाद अशस्त्रीकरण सम्मेलन हुआ जिसमें कहा गया कि सभी राष्ट्र अपनी सैनिक शक्ति को कम करें परन्तु किसी ने ध्यान न दिया।

जर्मनी ने १९१९ ई० के पश्चात् से अपनी शक्ति बढ़ानी आरम्भ की। नाजी दल वहां धीरे धीरे शक्ति पकड़ रहा था। हिटलर नाज़ी दल का प्रधान है। ३० जनवरी १९३३ ई० को हिटलर जर्मनी का चान्सलर बना। २१ अक्तूबर को जर्मनी राष्ट्र संघ से अलग हो गया। २५ जुलाई १९३४ ई० को हिटलर जर्मनी का चान्सलर और सभापति बना। १६ मार्च १९३५ ई० को हिटलर ने वर्साई की संधि का भंग करके जर्मनी में अनिवार्य सैनिक शिक्षा का संचालन किया। ७ मार्च १९३६ ई० को हिटलर ने लोकार्नो संधि भंग की और जर्मन सेनाओं ने राइन प्रान्त पर अधिकार जमाया। २५ नवम्बर १९३७ को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान और जर्मनी के मध्य संधि हुई। ६ नवम्बर को इटली भी उन्हीं के साथ मिल गया। उसके पश्चात् १२ मार्च सन् १९३८ ई० को आस्ट्रिया पर, ३० सितम्बर को सुडेटनलैंड पर और १४ मार्च को चेकोस्लोवेकिया के समस्त भाग पर हिटलर ने अधिकार जमा लिया।

१ सितम्बर १९३९ ई० को जर्मनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण किया। ३ सितम्बर को फ्रान्स और इङ्गलैण्ड ने जर्मनी पर युद्ध घोषणा की। इस प्रकार दूसरे महासमर का श्रीगणेश हुआ।

आज इंगलैण्ड, रूस, जापान, संयुक्त राष्ट्र अमरीका आदि की सैनिक शक्ति का अन्दाज लगाना कठिन है। जर्मनी की सैनिक शक्ति का अन्दाज़ लगाना तो और भी कठिन है। उसने धीरे धीरे समस्त योरुप पर अधिकार जमा लिया है। फ्रान्स जैसा शक्तिशाली राष्ट्र उसके पैरों से कुचला जा चुका है। पोलैण्ड, लक्सेमबर्ग, नार्वे, हालैंड, बेल्जियम, यूगोस्लाविया, रूमानिया, यूनान आदि देशों पर उसका अधिकार जम चुका है। पहले रूस जर्मनी का सहायक सा था परन्तु आज उसी रूस और जर्मनी के मध्य युद्ध चल रहा है। बर्तमान युद्ध के रहस्य का पता लगाना कठिन है। इसमें मित्र शत्रु तथा शत्रु मित्र होते दिखाई पड़ रहे हैं।

बर्तमान महासमर की भीषणता का अनुमान लगाना कठिन है। इसके द्वारा जो हानि हुई है उसका अनुमान लगाना तो और भी अधिक कठिन है। गत महायुद्ध में विमानों तथा टैंकों का प्रयोग बाद में हुआ परन्तु आधुनिक महासमर में पहले बम्बबर्षक विमान ही आक्रमण करते हैं उसके बाद टैंकों की सेना बढ़ती है।

लगभग सभी योरुपीय राजधानी वाले नगरों पर बम्ब बर्षा हो चुकी है और हो रही है। कारखाने वाले नगरों का सत्यानाश हो रहा है। सहस्रों वर्ष की नागरिक संस्कृति तथा सभ्यता बमों द्वारा मिटाई जा रही है। समुद्र में भी समुद्री युद्ध चल रहा है। करोड़ों टन के सामान तथा जहाज डुबाये जा चुके हैं और प्रति दिन डुबाये जा रहे हैं। जर्मनी का कहना है कि युद्ध आरम्भ होने से अप्रैल १९४१ तक में उसने इंगलैंड मित्र राष्ट्र तथा तटस्थ राष्ट्रों के एक करोड़ १० लाख टन के जहाज डुबोये हैं।

मैजिनो, सीजफ्रीड, मैनरहीम तथा मास्को और लेनिनग्राड आदि लाइनों के बनाने में बड़ा धन व्यय किया गया है। केवल चेकोस्लोवेकिया की मैजिनो लाइन के बनाने में ७५ करोड़ रुपया खर्च हुआ है।

इंगलैंड के लन्दन, लिवरपूल, साउथहैम्पटन, लीथ यार्कशायर, लंकाशायर, डोबर, न्यूकैसिल आदि नगर बम्बबर्षा कर के नष्ट कर दिये गये हैं। ब्रिटिश बम्बबर्षक वायुयानों ने भी जर्मन तथा जर्मन अधिकार किये हुये नगरों को बम्ब बर्षा कर के खण्डहर बना दिया है। युद्ध से रक्षा करने के लिये प्रत्येक योरुपीय राष्ट्र ने अपने अपने देश में करोड़ों रूपये खर्च में लगा दिये परन्तु कोई भी अपनी रक्षा न कर सका और सभों को जर्मन सत्ता के सामने सिर झुकाना पड़ा। आज युद्ध काल में संसार के जिस किसी राष्ट्र के बजट का अध्ययन किया जाय उसी से पता चलता है कि अधिक से अधिक रूपया सेना की तयारी में लगाया जा रहा है। उदाहरण के रूप में अलास्का को ही ले लीजिये। अभी हाल में अलास्का में युद्ध की कोई सम्भावना नहीं है फिर भी वहां १२ करोड़ ५० लाख रूपया सेना की तयारी तथा रक्षा सम्बन्धी कार्यों के लिये दिया गया है। स्वीडन देश अब तक तटस्थ बना है और नार्वे तथा फिनलैंड में युद्ध होते हुये भी उसने अपनी तटस्थता नहीं छोड़ी परन्तु आज वह भी अपनी सेना की तयारी में लगा है और उसने सेना के लिये २ अरब ११ करोड़ २७ लाख पचास हजार रूपया इस वर्ष व्यय करने का निश्चय किया है। स्वीडन की प्रजा ने भी अपनी सरकार की तयारी में हाथ बटाया है और सेना के लिये १ अरब २६ करोड़ ५६ लाख रूपया दिया है।

अलास्का तथा स्वीडन के सैनिक व्यय को देखकर ही हम दूसरे राष्ट्रों के फौजी खर्च का अन्दाज भलीभांति लगा सकते हैं। आधुनिक महासमर में विमानों, टैंकों और बम्बर्षकों और गोलों की बड़ी आवश्यकता है। साथ ही साथ मोटर लारियों को रसद तथा अस्त्र-शस्त्र लेकर सेना के साथ चलना पड़ता है। मोटर साइकलों की भी सेना चलती है। टैंकों की एक एक टोली में हज़ारों टैंक रहते हैं। इससे केवल तेल के व्यय का अनुमान किया जा सकता है। तेल के सिवा और भी भिन्न भिन्न खर्च हैं। प्रत्येक बम्ब के गोले तयार करने में सैकड़ों रूपये लग जाते हैं। आज करोड़ों गोले केवल रूस में गिराये जा चुके हैं।

रूसी मैदान में रूस और जर्मनी की सेनाओं का जोड़ लगभग २ करोड़ के है। जापान की दस लाख सेना थाई देश और इण्डोचीन में है। इसलिये ऐसी ब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113723
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना को केवल खिलाने पिलाने में बहुत अधिक धन की आवश्यकता है।

आधुनिक महासमर में मरने वाली सेना की अनुमान करना बहुत कठिन है। यह संख्या युद्ध के पश्चात् ही बताई जा सकती है फिर भी मरने वालों की संख्या कम से कम एक और दो करोड़ के बीच में होगी। युद्ध के लिये रूस, जर्मनी, इङ्गलैंड, अमरीका और जापान ने नये नये जहाज तथा विमान बनाये हैं। आठ आठ इञ्जिन के विमान रूस तथा जर्मनी में तयार किये गये हैं। इन विमानों में आगे, पीछे, दाएं और बाएँ मशीन गनें अथवा छोटी तोपें लगी रहती हैं। एक बड़े सेना ले जाने वाले विमान में १८ या २० सुसज्जित सैनिक आ सकते हैं। इन विमानों के तयार करने में बड़ा धन लगाया गया है।

यदि युद्ध पर आर्थिक दृष्टि डाली जाय तो पता चलेगा कि आज संसार के प्रायः सभी कारखाने युद्ध के लिये किसी न किसी प्रकार की सामग्री तयार कर रहे हैं। यह समस्त सामग्री संसार के सर्वनाश के हेतु तयार की जा रही है जिससे प्रायः किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं है। इसके विपरीत साधारण जीवन निर्वाह की बहुत कम वस्तुएँ तयार हो रही हैं और थोड़ी बहुत जो कुछ तयार भी होती हैं वह सामुद्रिक तथा हवाई युद्ध की भीषणता के कारण समस्त संसार में नहीं पहुँच सकतीं। इसी कारण समस्त वस्तुओं का मूल्य दुगुना तिगुना हो गया है। कितने ही कारखानें टूटे जा रहे हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि युद्ध से आरम्भ काल से ही भीषण हानि होती चली आ रही है और जैसे जैसे संसार में कला कौशल की उन्नति होती है और विज्ञान का विकास होता जाता है वैसे वैसे युद्ध की भीषणता भी बढ़ती जाती है और अधिक हानि भो होती जाती है। इस लिये अब भी यदि मानव जाति अपनी सभ्यता और संस्कृत की रक्षा चाहती है तो उसको चाहिये कि वह ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय नियम निर्माण करे जिससे युद्ध की सम्भावना सदैव के लिये जाती रहे।

देश-दर्शन

अब तक इस पुस्तक-माला में लंका, इराक़, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेको-स्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिश्र भाग १, मिश्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेन्मार्क, हालैंड, रूस, थाइ देश (स्याम), बल्गेरिया, अल्सेस-लारेन, काश्मीर और जापान आदि अंक निकल चुके हैं। आगे भी एक देश पर एक पुस्तक हर महीने प्रकाशित होती रहेगी। पुस्तक चित्रों और नकशों से खूब सुसज्जित रहती है और निजी यात्रा के आधार पर रोचक ढंग से सरल भाषा में लिखी जाती है। काग़ज, कवर छपाई-सफाई में हिन्दी में एक अनूठी चीज़ है। फिर भी लगभग सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र ।≈) है। साल भर का ४) और पूरी ग्रन्थमाला का केवल ५०) है। इस पुस्तक-माला (देश-दर्शन) के ग्राहक बन कर हिन्दी में एक नये साहित्य को लाने का श्रेय लीजिये। आशा है लौटती डाक से ही अपना आर्डर भेजने की कृपा करेंगे।

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसिक शिक्षा के लिये उपयोगी निम्न पुस्तकें पढ़िये

बाल-संसार—बाल-संसार में १११ देशों के बालकों का रोचक वर्णन है। प्रत्येक देश के प्रचलित नामों में से ही बालक का नाम है। यात्रा के आधार पर बालक के घर, भोजन, वस्त्र, खेल-कूद, काम-काज और रहन-सहन द्वारा प्रत्येक देश के जीवन की झाँकी दिखलाई गई है। भाषा एकदम सरल है जिसे छोटे बच्चे बड़ी आसानी से समझ लेते हैं। नामों का बोझ बिल्कुल अलग कर दिया गया है। इस पुस्तक में लगभग तीन सौ चित्र हैं, जिनसे इसकी रोचकता और भी अधिक बढ़ गई है। बाल-संसार के प्रत्येक लेख में आप आश्चर्य और आनन्द में डालने वाली नवीनता देखेंगे। रोचकता की दृष्टि से भौगोलिक बाल-साहित्य पर यह प्रथम और अपूर्व प्रयास है। तीन सौ चुने हुए चित्रों के अतिरिक्त प्रत्येक लेख में एक शीर्षक चित्र है। शिक्षा-विभाग द्वारा बेसिक स्कूलों के लिये स्वीकृत है। बड़े आकार (१० × ७॥) के २१० पृष्ठ, मूल्य केवल १॥)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

अनोखी दुनिया—इस पुस्तक में दस कहानियाँ हैं। १—मिट्टी का तेल, २—जहाज, ३—रेलगाड़ी, ४—भोजन, ५—लोहा और फौलाद, ६—हवाई जहाज, ७—सोना, ८—वाहन या बारबरदारी, ९—घर, १०—पहिये वाली गाड़ी। प्रत्येक कहानी में एक तिरंगा चित्र दिया गया है। कहानी में इतने चित्र हैं कि केवल चित्र ही देख कर बच्चे उस कहानी को सहज ही में समझ लेते हैं। भाषा भी बहुत साधारण है और मोटा टाइप होने से छोटे बच्चे भी बड़ी आसानी से पढ़ लेते हैं। प्रत्येक कहानी में यह बतलाया गया है कि उस चीज़ का आविष्कार कैसे हुआ और किस प्रकार उसकी उन्नति हुई। एकरंगे चित्र १२९, पृष्ठ-संख्या १६७, तिरंगे चित्र १०। फिर भी मूल्य केवल १० आने।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सचित्र भौगोलिक कहानियाँ—छोटे बालकों को कहानियों में स्वाभाविक आनन्द आता है। इसी से इस छोटी सी पुस्तक में कुछ कहानियों का संग्रह किया गया है। इन कहानियों में प्रायः भौगोलिक रूप मिलेगा। उनकी भाषा सरल है। अधिक शिक्षाप्रद और रोचक बनाने के लिये आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। बच्चों की अवस्था को ध्यान में रख कर कहानियाँ बहुत छोटी रक्खी गई हैं। इन कहानियों से बच्चों में भूगोल-विषय के प्रति अवश्य रुचि बढ़ेगी। इस पुस्तक में लगभग ५८ चित्र और ६६ पृष्ठ हैं। मूल्य केवल चार आने।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

प्राचीन जीवन—इस पुस्तक में प्राचीन जातियों के जीवन पर बहुत संक्षेप में प्रकाश डाला गया है जिससे बच्चों को समझने में कुछ भी कठिनाई न हो। आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं। इसमें संसार का एक बड़ा नक़्शा दिया गया है जिसमें उन जातियों का निवास-स्थान दिखाया गया है। इसमें प्राचीन आर्य, प्राचीन मिस्री, चीनी, सुमेरियन, बेबिलोनियन और असीरियन, फोनिशियन, ईरानी, यूनानी, [illegible] दुनिया की पुरानी इन्का जाति आदि जातियों का वर्णन है। मोटे टाइप में होने से [illegible] लेते हैं। चित्र-संख्या ११६, तिरंगे कवर की ८० पृष्ठ की पुस्तक का मू[illegible]

पुस्तक मिलने [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"BHUGOL"

The only Geographical Monthly published in India

Purpose : "Bhugol" aims to enrich the geographical section of Hindi literature and to stimulate geographical instruction in the Hindi language.

Contents : Articles are published on varied topics of geographical interest : Current History, Astronomy, Industry and Trade, Surveys, Travel and Exploration, Fairs and Exhibitions, Plant and Animal Life. Climatic charts, a brief diary of the month, and questions and answers are regular features. Successive numbers contain serial articles on regional and topical subjects so that by preserving file of "Bhugol" any teacher of geography can accumulate invaluable reference material.

Travel Department : The Travel Department of "Bhugol" annually arranges tours which provide an excellent opportunity for geography teachers and students to visit regions of special interest in India, Burma and Ceylon. Full information will be supplied on application (with a stamped and addressed envelope).

Use in Schools : The use of "Bhugol" in connection with the geography instruction in high schools, normal schools and middle schools, is specially sanctioned by the Educational Departments of the United Provinces, the Central Provinces, Berar, the Punjab, Bihar and Orissa, Gwalior, Jaipur, Kotah and Jodhpur.

Remittances : Make all remittances, cheque, money order ... itish Postal Order, payable to the manager, **"Bhugol",**

दर्शन) के ग्राह...

आशा है लौटती डाक से ...

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

...A.) and Printed by K... Misra at the

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar